लोक महाकाव्य

लोरिकायन

श्याम मनोहर पाण्डेय

लोक महाकाव्य
लोरिकायन

लोक महाकाव्य लोरिकायन

(लोरिक और चंदा की लोक-गाथा)

मूल पाठ, भावार्थ तथा टिप्पणियाँ

डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय
ओरियंटल विश्वविद्यालय, नेपुल्स, इटली
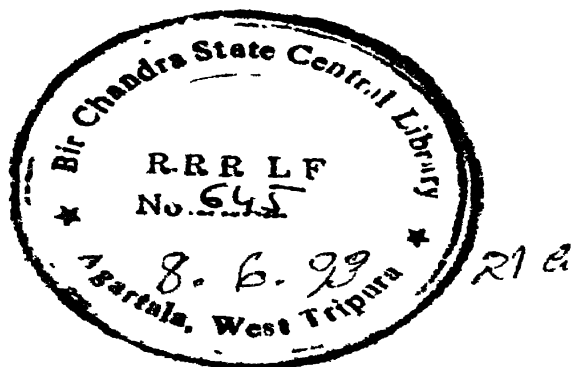
साहित्य भवन [प्रा०] लिमिटेड
के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद-२११००३

LOK MAHAKAVYA LORIKAYAN

By

DR. SHYAM MANOHAR PANDEY
Isiituto Universitario Orientale,
Naples, ITALY

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद द्वारा
प्रकाशित तथा स्टार प्रिण्टर्स, २८७, दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

विषय-सूची

□ □

प्राक्कथन

'लोकमहाकाव्य लोरिकायन' लारिक कथाचक्र का तृतीय पाठ है। 'लोकमहाकाव्य लोरिकी' (१९७९) तथा 'लोकमहाकाव्य चनैनी' (१९८२) की ही भाँति यह पाठ अपने आप में स्वतन्त्र है। सच बात ता यह है कि मेरे संग्रह के सभी पाठ अपने आप में पूर्ण है। सभी गायक मूलकथा को लेकर अपने ढंग से लोरिकायन की कथा को गाते हैं। सभी पाठ परस्पर भिन्न है। इसीलिए मुझे सभी पाठों को स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित करने का निर्णय लेना पड़ा। यह संपूर्ण योजना दस भागों में पूर्ण होगी। एक भाग में लोरिकायन का विस्तृत अध्ययन और विषयवस्तु का विवेचन होगा; एक भाग में शब्द कोश होगा।

प्रस्तुत लेखक ने 'लोकमहाकाव्य लोरिकी' और 'लोकमहाकाव्य चनैनी' की भूमिकाओं मे लोकमहाकाव्यों की सूत्र शैली तथा रचना प्रक्रिया आदि पर विस्तार से विवेचन किया है। इस जिल्द में लोरिकायन की कथा का उद्गम और भौगोलिकता पर विचार किया गया है। विद्वानों और पाठकों ने जिस प्रकार लोरिकी और चनैनी को अपनाया है उससे इस कार्य को आगे बढ़ाने मे बड़ा बल मिला है। आशा है यह भाग भी सबको पसंद आयेगा।

भाई नामवर सिंह, श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, डॉ० पारस नाथ तिवारी, श्री त्रिलोकी नाथ पांडेय, आदि ने इस कार्य में रुचि ली है। इसके लिए मैं इन विद्वानों का आभारी हूँ।

श्री अमीन अंसारी, श्री उमानाथ तिवारी तथा साहित्य भवन के कर्मचारियों विशेषकर श्री रामनाथ लाल 'दीवान' जी और श्री रामचन्द्र शर्मा ने इस कार्य में दिलचस्पी ली। इन सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरी पत्नी श्रीमती कृष्णबाला पांडेय, एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत) ने इस पाठ को टेप से सुनकर प्रथम प्रतिलिपि तैयार की। उनकी सहायता के बिना यह कार्य और समय लेता।

अमेरिकन इंस्टीच्यूट आफ इंडियन स्टडीज की फेलोशिप पर १९६६ में इस महाकाव्य का संग्रह संभव हुआ। प्रकाशन के लिए मेरे विश्वविद्यालय इस्तीत्यूतो यूनिवर्सितारियो ओरियंताले (ओरियंटल विश्वविद्यालय) नेपुल्स, इटली ने सहायता दी। इन सबको धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। साहित्य भवन प्राइवेट

लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर भाई गिरीश जी भवानी पेपर मिल्स के कार्य में व्यस्त रहते हुए भी मेरे इस कार्य की प्रगति के बारे में हमेशा पूछताछ करते रहते हैं। उनका मेरे ऊपर सहज स्नेह है। उनकी सहायता के बिना यह कार्य कितना आगे बढ़ पाता यह कहना कठिन है। मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूँ।

श्याममनोहर पांडेय
ओरियंटल यूनिवर्सिटी
नेपुल्स, इटली

भूमिका

'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर[1] जिले में अगोरी[2] के पास अक्तूबर १९६६ ई० में संगृहीत किया गया था। संभवत: इसी अगोरी में मंजरी के साथ लोरिक का विवाह सम्पन्न हुआ था। अत: अगोरी के पास का यह पाठ स्वाभाविक रूप से महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसके गायक भी ददई केवट हैं, अहीर नहीं। मेरे आठ गायकों में ददई केवट ही ऐसे गायक हैं जो अहीर नहीं हैं। अन्य सभी गायक अहीर हैं। ददई केवट के गुरु भी ददई अहीर थे जो गायक के गाँव कुरहुल के रहने वाले थे। प्रस्तुत गायक ददई केवट का गाँव कुरहुल अगोरी से लगभग पाँच मील की दूरी पर है। चोपन से यह स्थान सोन नदी पार करके दो मील पड़ता है।

प्रस्तुत पाठ का कथानक

१. अगोरी, लोरिक का विवाह

'लोरिकायन' की कथा अगोरी से प्रारम्भ होती है जहाँ लोरिक और मंजरी का विवाह सम्पन्न होता है। मेरे अन्य कतिपय गायक 'संवरू का विवाह' या 'सुहवल' से कथा प्रारम्भ करते हैं। अगोरी का राजा मोलागत है वह मंजरी को अपने रनिवास में रखना चाहता है क्योंकि जब मंजरी गर्भ में ही थी तब उसका पिता महर जुए में उसे हार चुका था।[3] महर वीर लोरिक के पास संदेश भेजता है। वह मंजरी से विवाह करने के लिए सवा लाख बारातियों को लेकर आता है जिनमें अनेक वीर योद्धा सम्मिलित हैं। अनेक प्रकार की कठिनाईयों और लड़ाईयों के बाद लोरिक मंजरी से विवाह करता है तथा मोलागत का संहार कर अपने घर गउरा वापस आता है। इस अंश को गायक 'अगोरी' या 'लोरिक का विवाह' कहते हैं।

अगोरी की कथा के निम्नलिखित तत्व हैं :

अगोरी की कथा प्रारम्भ करने के पूर्व गायक अनेक देवताओं का सुमिरन करता है। गायक रामनाम का स्मरण करता है। धरती, डीह के देवता, श्मशान की आत्माएँ तथा गोरइया[4] देवता की प्रार्थना करता है जिन्हें पूजा में सूवर चढ़ाया जाता है। गायक बघौता[5] का भी स्मरण करता है जिन्हें टोना टटका करने वाले ओझा स्मरण करते हैं। फिर गायक राम-लक्ष्मण, गौरी-गणेश, दुर्गा आदि की प्रार्थना करता है। दुर्गा से गायक यह भी कहता है "ऐ दुर्गा, तूं मेरी जिह्वा के लिए अलंकार हो। तुम मेरे भूले हर्फ़ों को जोड़ देने वाली हो। ऐ देवी, यदि कहीं एक भी शब्द मंद पड़ गया तो मैं फिर तुम्हारा नाम नहीं स्मरण करूंगा।"[6]

अगोरी की कथा के तन्तु :

प्रार्थना के बाद गायक अगोरी का वर्णन करता है जहाँ बारह पल्लियाँ हैं। तिरपन गलियाँ और बाजार हैं। वहाँ का सूबा राजा मोलागत है।

(१) एक दिन अगोरी का राजा मोलागत अपने राज्य की परिक्रमा करने जाता है और देखता है कि उसके राज्य में महर अहीर है जो बड़ा धनी और शक्तिशाली है। वह राजा मोलागत की उपेक्षा कर देता है। अपनी उपेक्षा से राजा अत्यन्त दु:खी होता है।

(२) मंत्री राजा मोलागत को सलाह देते हैं कि वह महर से जुआ खेले और उसे पराजित करे।

(३) राजा के सिपाहियों का महर के यहाँ जाना और मोलागत की चाँदनी में उसे ले आना।

(४) राजा मोलागत का महर के साथ जुआ खेलना। जुए में राजा की पराजय। राजा का राज्य त्यागना।

(५) ब्राह्मण के वेश में ब्रह्मा का प्रकट होना और मोलागत को सहायता का आश्वासन देना।

(६) मोलागत और महर का फिर जुआ खेलना। इस बार महर जीते हुए राजपाट, धन, पशु, नौकर-चाकर आदि को खो बैठता है। सब कुछ हार जाने पर वह अपनी पत्नी की कोख दाँव पर रख देता है। राजा मोलागत महर की पत्नी की कोख भी जीत लेता है।

(७) महर की पत्नी को कन्या उत्पन्न होती है जिसका नाम मंजरी रखा जाता है। उसके जन्म के अवसर पर सोने की वर्षा होती है।

(८) गायक ने मंजरी के जन्म के साथ ही साथ लोरिक के जन्म की कथा भी गायी है। भादों का महीना था। आधीरात थी उसी समय बोहा में खोइलनि के गर्भ से लोरिक का जन्म होता है। गायक उसे कृष्ण कन्हैया की संज्ञा देता है।[७]

(९) मोलागत को नोनवा चमारिन से पता चलता है कि महरिन के गर्भ से मंजरी पैदा हुई है और उसके जन्म पर स्वर्ण की वर्षा हुई है।[८]

(१०) मंजरी का नित्य प्रति बढ़ना तथा विवाह करने का प्रण करना—अपने भावी पति के सम्बन्ध में मंजरी का संकेत देना—ब्राह्मण, नाऊ आदि का लोरिक के यहाँ गउरा में तिलक चढ़ाने के लिए आना।

(११) लोरिक का तिलक सम्पन्न होना—सवा लाख बारातियों के साथ लोरिक का मंजरी से विवाह करने के लिए अगोरी प्रस्थान करना।

(१२) अगोरी पहुँचने के पूर्व की बाधाएँ :

(क) गउरा के राजा सहदेव द्वारा विघ्न उपस्थित किया जाना। स्मरणीय है कि सहदेव की लड़की चनवा (चंदा) है जिससे बाद

में चलकर लोरिक का प्रेम हो जाता है। फिर दोनों गउरा छोड़ कर हल्दी भाग जाते हैं। चनवा का पिता लोरिक की बारात में जाने वालों को दण्डित करने के लिए घोषणा करता है। बाद में लोरिक और उसके परिवार से सहदेव का समझौता हो जाता है।

(ख) लोरिक की बारात का आगे बढ़ना तथा उसका कोटवा[१] भदोखरि नामक स्थान पर डेरा डालना। कोटवा के ग्वालों का लोरिक की बारात के लिए भोजन बनाना—लोरिक के बूढ़े पिता द्वारा कोटवा के ग्वालों का अपमान—ग्वालों का राजा बामदेव के पास जाना—अपमान का बदला लेने के लिए राजा बामदेव का लोरिक से झगड़ा मोल लेना—लड़ाई में लोरिक द्वारा बामदेव पराजित।

(१३) बारात का अगोरी के निकट पहुँचना—बाजे-गाजे की तुमुल ध्वनि और बारात की कोलाहल सुनकर अगोरी का राजा मोलागत चिंतित।

(१४) सोन नदी में बाढ़—लोरिक के अनुनय-विनय पर झीमल मल्लाह का बारात को अगोरी के पार उतारना।

(१५) मंजरी की माँ द्वारा बारातियों की परीक्षा लिया जाना—अगोरी में कँटीली झाड़ी और गन्दे खेत में बारात के टिकने के लिए महरिन द्वारा जगह दिलवाया जाना—लोरिक के पिता कठइत द्वारा कँटीली झाड़ियों को साफ़ कराया जाना और बारात का टिकना।

(१६) बारातियों को खाने के लिए चावल, घी तथा सवालाख बकरे भेजना—मंजरी की माँ यह संदेश भेजती है कि बाराती सब कुछ नहीं खा जायेंगे तो बारात वापस कर दी जायगी और मंजरी का विवाह सम्पन्न नहीं होगा। बारात का भरपेट भोजन करना तथा शेष सामग्री को सोन नदी में चुपके से फेंकवा देना।

(१७) मंजरी की माँ द्वारा समधी की बुद्धि की परीक्षा लिया जाना :

(क) मंजरी की माँ महरिन समधी की अक्ल की परीक्षा लेने के लिए मिट्टी के कुल्हड़ से रस्सी बनाने का आग्रह करती है।

(ख) समधी द्वारा उलटी चलनी में पानी मँगाना—कठइत की बुद्धि पर महरिन चकित।

(ग) समधी कठइत द्वारा महरिन से सोलह चूचियों वाली भैंस की माँग करना—माँ की परेशानी देखकर मंजरी का सोलह टोटियों वाला गिलास भेजवाया जाना—इस बुद्धि-कौशल पर कठइत का आश्चर्य में पड़ जाना।

(१८) बारात का द्वारचार करना—मंजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न।

लोरिक और मंजरी के विवाह के उपरान्त लोरिक को अपनी वीरता का

परिचय देना पड़ता है। वह मंजरी को बार-बार आश्वासन देता है कि उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। वह सिंहनी का पुत्र है। किन्तु मंजरी की चिन्ताएँ कम नहीं होतीं। लोरिक अनेक वीरों को परास्त करता है और मंजरी को गउरा लाता है।

विवाह के उपरान्त 'लोरिकायन' में निम्नलिखित घटनाएँ घटती हैं :

(१९) मंजरी की विदाई होती है तब अगोरी का राजा मोलागत अपने सहायकों के साथ आकर मंजरी की डोली छेंकता है। लोरिक की मार से मोलागत तथा अन्य सभी सहायक भाग खड़े होते हैं।

(२०) मंजरी की डोली उठने पर मोलागत का क्रन्दन—सिपाहियों का वीर भांट के यहाँ जाना। मोलागत का आधा राज्य पाने के लोभ में वीर भांट का लोरिक से लड़ने के लिए उद्यत होना।

(२१) लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ होना और मैदान छोड़ कर भाग जाना।

(२२) मोलागत ने पश्चिम में बघेल राजाओं को पत्र लिखा जो तुपकी (छोटी तोप) चलाने में कुशल थे। उसने दक्षिण के कोल राजाओं को पत्र लिखा जो तीर चलाने में प्रवीण थे। पूर्व के राजाओं को भी उसने पत्र लिखा जो लोहा में (तलवार चलाने में) पटु थे। उसने उत्तर के रक्सेल राजाओं को पत्र लिखा जो सेला चलाने में तेज थे। यहाँ यह भी प्रकट होता है कि मोलागत क्षत्रिय था। उसकी लड़ाई ग्वाल अहीर लोरिक से थी। मोलागत लिखता है "यदि कोई क्षत्रिय है तो पत्र पाते ही अन्न खाना छोड़ दे। अन्न उसके लिए हराम है तथा पानी पीना रुधिर पीने के समान है। (पृष्ठ १११) परदेशी अहीर चढ़ आया है तथा अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है।"[१०]

(२३) लोरिक के हाथों समस्त सेनाओं की पराजय। दुर्गा सदैव गाढ़े समय में लोरिक की सहायता करती हैं।

(२४) लोरिक को मारने के लिए मोलागत द्वारा इन्द्रावत[११] हाथी भेजा जाना। हाथी का प्रबल आक्रमण—इन्द्रावत हाथी का सूँड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना।

(२५) लोरिक को परास्त करने के लिए मोलागत के भांजे निरम्मल का आना—निरम्मल द्वारा बार-बार आक्रमण किया जाना। दुर्गा की सहायता से लोरिक का बच जाना।

(२६) लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने से लोरिक युद्ध में आहत और मृत।

(२७) दुर्गा के प्रयास से लोरिक जीवित।

(२८) लोरिक द्वारा बार-बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल[12] का जीवित हो उठना।

(२९) निरम्मल का अन्त में धराशायी होना तथा उसकी पत्नी का शव के साथ सती होना।

(३०) मंजरी के साथ लोरिक का गउरा वापस आना।

अगोरी की कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नायक अहीर जाति की गरिमा की रक्षा के लिए मंजरी से विवाह करता है और दुष्ट राजा मोलागत को, सहायकों को अपने पौरुष, शक्ति और पराक्रम से नष्ट करता है। किन्तु युद्ध के समस्त प्रसंगों से यह बात उभर कर आती है कि देवी दुर्गा की शक्ति और सहायता के बिना अन्य वीरों के समक्ष लोरिक का पौरुष निर्बल पड़ने लगता है। वह कई बार श्रीहत हो जाता है। यदि दुर्गा को उसके जीवन से निकाल दिया जाय तो वह उच्च-कोटि का वीर नहीं रह जाता। चाहे उसका युद्ध निरम्मल से हो या इनरावत (इन्द्रावत) हाथी से हो या भांट से हो, सर्वत्र दुर्गा ही लोरिक को विजय का श्रेय दिलाती हैं, यद्यपि बार-बार लोरिक अपनी वीरता का कथन करता है तथा अपनी प्रबल शक्ति का परिचय देता है। शायद यह इसलिए भी होता है कि लोरिक जिन वीरों से युद्ध करता है उनमें कई सामान्य चरित्र नहीं हैं। निरम्मल में देवी शक्ति का प्रकाश है, उसे देवी वरदान प्राप्त है। हाथी इनरावत भी देवी शक्ति से सम्पन्न है। देवी कृपा से सम्पन्न वीरों का पराभव भी देवी शक्ति या पराक्रम से होना चाहिए। लोरिक की तुलना गायक कृष्ण से अवश्य करता है और कहता है कि जब भादों का महीना था, आधी रात थी, तब कृष्ण कन्हैया लोरिक का जन्म हुआ। पर लोरिक में कृष्ण के चरित्र के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते। दुर्गा की सहायता से ही वह असम्भव कार्य सम्भव बना लेता है।

२. सुहवल—मलसांवर का विवाह

पटना, बलिया, गाजीपुर, बनारस आदि के गायक सर्वप्रथम सुहवल की लड़ाईयाँ तथा मलसांवर के विवाह के प्रसंग गाते हैं जिनमें मलसांवर से बमरी की पुत्री सतिया का विवाह अनेक युद्धों के बाद सम्पन्न होता है। इलाहाबाद के मेरे गायक रामअवतार जिनका पाठ मैं प्रकाशित कर चुका हूँ[13] अगोरी तथा लोरिक के विवाह के प्रसंग ददई केवट की ही भाँति पहले गाते हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि वे अगोरी और नायक लोरिक के विवाह के प्रसंगों को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। बनारस और उसके पूर्व के क्षेत्रों, गाजीपुर, बलिया, पटना आदि के गायक संवरू या मलसांवर का विवाह पहले इसलिए गाते हैं कि बड़े भाई का विवाह पहले होना चाहिए। मलसांवर लोरिक के बड़े भाई थे अत: उनके विवाह के पहले ही लोरिक का विवाह करा देना इन गायकों की दृष्टि में उचित नहीं है। मलसांवर खोइलनि के पालित पुत्र हैं। खोइलनि के गर्भ से लोरिक बाद में उत्पन्न हुआ था।

ददई केवट का 'सुहवल' या मलसांवर के विवाह का यह अध्याय अन्य गायकों की अपेक्षा बहुत ही संक्षिप्त है। ददई केवट न तो लोरिक के जन्म की परिस्थितियों को विस्तार देते हैं और न तो मलसांवर के जन्म की कहानी बताते हैं। खोइलनि बंध्या थीं। संवरू की माता एक ब्राह्मणी थी जिसने पैदा होते ही बच्चे को फेंक दिया था। खोइलनि ने उस फेंके हुए बच्चे को घर लाकर उसका पालन-पोषण किया था। मेरे गायक शिवनाथ चौधरी[१४] ने मलसांवर की कहानी विस्तार से कही है। खोइलनि की तपस्या करने पर सूर्य की कृपा से लोरिक बाद में उत्पन्न हुआ, यह कथा भी शिव नाथ चौधरी ने विस्तार से गायी है। संवरू के जन्म की कथा को शिवनाथ चौधरी ने इस प्रकार गाया है—

"एगो आजु बाम्हनि लड़किया बीतल बारह बरिस रहलीं
अ गउरा में परलि रहलिन बरिया रे कुंवारि
....
आजु रनियां चोहुँकिय के अंखिया आपन खोलि जो देले
आगे डीठि सुरुज के मिलल लेलकार—
इहे आज सुरुजइ ना लड़िकी के डीठिय मिलल
ओ रनियां के सांचो के गरभवे रहिन जाइ"

(मेरे संग्रह के अप्रकाशित पाठ से उद्धृत)

("एक ब्राह्मण की लड़की थी। वह बारह वर्ष की हो चुकी थी तथा गउरा में बालकुमारी थी। उसने अचकचाकर आँख खोली तो सूर्य की दृष्टि लग गयी। सूर्य से दृष्टि मिल जाने पर रानी लड़की को सचमुच गर्भ रह गया।")

नवें महीने में उसके दो वीर पुत्र, मलसांवर और सुबच्चन, उत्पन्न हुए। उसने दोनों बच्चों को एक पात्र में भरवा कर एक छोटे गड्ढे में फेंकवा दिया। बंध्या खोइलनि दही बेचने गयी थी। उसने एक बच्चे को उठा लिया और घर लाकर उसका पालन-पोषण किया। बच्चे का नाम मलसांवर पड़ा। दूसरे बच्चे को पिपरी के एक दुसाध की बंध्या स्त्री ले गयी। उस लड़के का नाम सुबच्चन पड़ा।

"आजु पंचे संवरू पी लेहलनि छीर खोइलनि के
गउरा में अहीर के बाल भइलन कहाय
सुबच्चन जाइ के पी लेहलनि छीर—
बरम्हदे दुसाधिनि के परि गइलन दुसाध कहार"

(मेरे द्वारा संग्रहीत शिवनाथ चौधरी के अप्रकाशित पाठ से)

शिवनाथ चौधरी कहते हैं "संवरू ने खोइलनि का दूध पी लिया अतः गउरा में वे अहीर कहलाये। सुबच्चन ने दुसाध स्त्री बरम्हदे का दूध पी लिया अतः वह दुसाध कहे गये।"

मलसांवर के जन्म तथा खोइलनि द्वारा पालित-पोषित होने की कथा न तो बनारस के पाँचू भगत के पाठ में पाई जाती है और न इलाहाबाद के रामअवतार

यादव के पाठ में। ददई केवट के पाठ में भी केवल यही संकेत मिलता है कि वे बोहा में रहते थे और लोरिक से उनका प्रगाढ़ प्रेम था। जैसा बताया जा चुका है ददई केवट लोरिक के विवाह के बाद संवरू के विवाह का प्रसंग गाते हैं। अपने विवाह के उपरान्त लोरिक एक दिन गउरा में होली खेलने जाते हैं। वह राजा सहदेव की लड़की चनवा पर रंग फेंक देते हैं। ग्रामीण प्रथा के अनुसार गाँव की लड़की पर रंग फेंकना वर्जित है। चनवा की माँ सेल्हिया लोरिक का अपमान करती है। इस अपमान से ही मलसांवर या संवरू के विवाह की प्रस्तावना बनती है।

'मलसांवर का विवाह' की कथा के तत्व

(१) मंजरी से विवाह करके लौटने के बाद लोरिक का होली के अवसर पर अपने मित्रों के साथ गउरा होली खेलने जाना और चनवा पर रंग फेंकना।

(२) चनवा की माँ सेल्हिया द्वारा लोरिक को अपमानित किया जाना— "ऐ लोरिक तुमने अगोरी में दुर्बल राजा को मारा, गरीब किसानों को मारा तो तुम्हारा मन बढ़ गया है। तुमको मैं मर्द तब समझूंगी जब सुरहुल (सुरवलि) में जाकर बमरी की पुत्री सतिया से संवरू की शादी सम्पन्न करा लाओगे।"

(३) अपमानित लोरिक का अन्न-जल त्यागना तथा भाई संवरू का विवाह कराने का प्रण करना।

(४) गुरु अजयी धोबी द्वारा लोरिक की सहायता का आश्वासन दिया जाना। प्रस्तुत पाठ के अनुसार अजयी मूलतः सुरवली[१५] (सुरहुल) का था। वह गउरा आकर बस गया था। उसने सतिया, उसके भाई भीमली तथा सतिया के पिता बमरी आदि के बारे में लोरिक को सूचना दी।

(५) गांगी नाऊ का बोहा जाना तथा संवरू को गउरा लाना। दूल्हा सांवर का परछावन[१६] होना—सवा लाख बारातियों का सुरहुल के लिए प्रस्थान करना।

(६) संवरू की बारात चलने से ब्रह्मा का इन्द्रासन तथा विष्णु का सुरधाम प्रकम्पित हो उठा। ब्रह्मा द्वारा बारात को निगल जाने के लिए एक दानव दूत भेजना—सारी बारात दानव के पेट में।

(७) ब्रह्मा द्वारा भेजे गये दानव द्वारा बारात निगल जाने पर लोरिक का चिंतित होना और पाताल लोक में नाग के यहाँ जाना। नाग का सूचना देना कि ब्रह्मा के कोप से बारात को दानव निगल गया है। नाग का कहना कि ब्रह्मा अपने को शक्तिशाली समझते थे। तुम उनसे बढ़ कर हो गये हो। तुम्हारे गाजे-बाजे की तुमुल ध्वनि से धरती

कांपने लगी है। उससे ऋषि-मुनियों का ध्यान टूट गया है, विष्णु का सुरधाम कांप उठा है। ब्रह्मा चिंतित हो गये हैं।

(८) दुर्गा की सहायता से लोरिक द्वारा दानव का वध किया जाना तथा बारात को उसके पेट से बाहर निकालना।
सूर्य द्वारा चारों ओर बादल-बादल कर देना। बारात शीत लहरी की चपेट में।

(९) लोरिक द्वारा क्रमशः गांगी नाऊ तथा अगुवा अजयी धोबी को आग लाने के लिए भेजना। ब्रह्मा द्वारा डाइन का सृजन करना। डाइन द्वारा गांगी नाऊ तथा अजयी धोबी को निगल लिया जाना।

(१०) दुर्गा की सहायता से लोरिक द्वारा डाइन का वध किया जाना तथा अजयी धोबी और गांगी नाऊ को उसके पेट से निकालना।

(११) बारात का आगे बढ़ना—बरईपुर में बारातियों द्वारा फल के बागीचों को नष्ट करना। खटिकों की प्रार्थना पर बरईपुर की रानी का पुरुष वेश में लोरिक से लड़ना—हार जाने पर अहीर से प्रेम प्रस्ताव करना।

(१२) सवा लाख बारातियों का सुरवली पहुँच कर शंभू सागर पर डेरा डालना। खाद्य सामग्री की कमी हो जाने पर अगुवा अजयी धोबी का अपने नगर सुरवली में महीचन साह के यहाँ जाना।

(१३) महीचन साह के आदेश पर महाजनों द्वारा शंभू सागर पर बाजार लगा देना तथा बारात को उधार खाद्य सामग्री देना।

(१४) बारात के आगमन का समाचार पाकर बमरी को चिन्ता। यहाँ गायक बमरी के पुत्र वीर भीमली को कुम्भकर्ण की भांति चित्रित करता है जो छः महीने सोता था और छः महीने जागता था।

(१५) लोरिक और भीमली का युद्ध—भीमली की मृत्यु।

(१६) सतिया का अपने सत से छत्तीस नाग उत्पन्न करना। नागों का बारात को डंस लेना। दुर्गा का सतिया के पास जाना। दुर्गा के आग्रह पर सतिया द्वारा बारात को जिलाया जाना।

(१७) सात समुद्र पार जाकर बमर-सिन्दूर लाये बिना मलसांवर का विवाह संभव नहीं। सतिया का दुर्गा से कथन।

(१८) हंस-हंसिनी के पंखों पर बैठकर लोरिक का अमर सिन्दूर लाने के लिए सात समुद्र पार जाना। दुर्गा का साथ में होना।

(१९) डाइन अगिया कोइलिवा के देश से लोरिक का सौभाग्य का सिन्दूर लाना। रास्ते में लोरिक का अपनी जांघों से मांस काट कर हंस-हंसिनी को खिलाना। दुर्गा द्वारा लोरिक को यथापूर्व कर देना।

(२०) बारात का शंभू सागर पर जश्न मनाना। कस्बी और पातुरियों का नाच-गान होना—भांड़ों का चुटुकियों पर ताल देना।
(२१) मलसांवर और सतिया का विवाह सम्पन्न।
(२२) बारात सतिया को लेकर गउरा वापस—मलसांवर और सतिया का कोहबर में जाना।
(२३) सतिया और मलसांवर का बोहा में निवास।

लोरिक के विवाह के प्रसंग में दैवी हस्तक्षेप अधिक नहीं है। यह सच है कि दुर्गा सदैव लोरिक की सहायता करती हैं पर संवरू के विवाह में ब्रह्मा स्वयं बाधक के रूप में हैं। लोरिक की बारात चल रही है। उसके कोलाहल से ब्रह्मा का आसन डोल उठा है, विष्णु का सुरधाम कांप उठा है। ब्रह्मा एक दानव दूत भेजकर बारात को निगलवा लेते हैं। दुर्गा की सहायता से बारात की रक्षा होती है। ब्रह्मा एक घर की रचना करते हैं, आग की सृष्टि करते हैं तथा एक डाइन को वहाँ बैठा देते हैं। गांगी नाऊ और अजयी धोबी ठंड़ खायी हुई बारात को गर्मी दिलाने के लिए आग लेने जाते हैं तब डाइन उन्हें निगल जाती है। लोरिक भी वहाँ जाता है पर दुर्गा की सहायता से वह बच जाता है। डाइन का वधकर वह उसके पेट से अजयी तथा गांगी नाऊ को निकालता है। बरईपुर की रानी बरइनि लोरिक से लड़ती है और हार जाने पर प्रेम प्रस्ताव करती है। लोरिक बारात की वापसी पर उसे गउरा ले चलने का वचन देता है। पर लौटते समय वह उसको बरईपुर में ही छोड़ देता है। सुरवली के पास भी बारात मुसीबत में फँसती है क्योंकि सवा लाख बारातियों के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री नहीं थी। अजयी धोबी की मध्यस्थता पर महीचन साहु वहाँ के महाजनों से बाजार लगवाते हैं, और बारात को खाद्य सामग्री उपलब्ध होती है। लोरिकायन के अन्य पाठों में सतिया के पिता बमरी का यह प्रण बार-बार दुहराया गया है कि—

"नाहि देसे में हम ससुरा कहाबै, नाहिं मोरि लरिका कहइहैं सार"[१७]

[न तो अपने देश में मैं ससुर कहलाऊँगा और न मेरे लड़के साले कहे जायेंगे]

इलाहाबाद के पाठ में भी इस प्रण की पुनरावृत्ति हुई है।

"एहं क राजा बा अड़बंगी, नात जतनी जाति पाति कां लड़की
सुरवलि राखेबा बारि कुंवारि।
आपन बेटवा बियहि के ले आवइ
कहवावइ ना ससुर अउ सार"[१८]

[वहाँ का राजा टेढ़ा है। सुरवलि की सभी जातियों की लड़कियों को उसने कुंवारा रखा है। उसका प्रण है—मैं अपने लड़कों का विवाह कर लाऊँगा। पर मैं ससुर और मेरे लड़के सार नहीं कहे जायेंगे।]

बमरी अपने राज्य की कन्याओं का विवाह नहीं होने देना चाहता था। पर

दूसरे देश की कन्याएँ उसके राज्य में आयें, इस पर उसको आपत्ति नहीं थी। अपनी पुत्री सतिया का विवाह भी वह इसीलिए नहीं होने देता था। ददई केवट के पाठ में यह बात नहीं दुहराई गई है। सतिया के भाई भीमली और लोरिक का विवाह यहाँ संक्षिप्त है। भीमली के अन्य भाई वीर दसवंत की लड़ाई का उल्लेख यहाँ नहीं है। यहाँ सतिया का एक ही भाई भीमली है। बनारस के पाठ में सतिया के सात भाई हैं। गायक ने मलसांवर के विवाह के प्रसंगों में अलौकिक तत्वों का समावेश अधिक किया है। लोरिक के विवाह में गायक के चित्रण अधिक यथार्थ हैं। सांवर के विवाह में यहाँ घटनाएँ अधिक अलौकिक और चमत्कारपूर्ण हैं। दुर्गा सदैव लोरिक की सहायता करती हैं।

३. हल्दी-चनवा का उढ़ार

लोरिक के विवाह के उपरान्त ददई केवट 'चनवा का उढ़ार' गाते हैं। मलसांवर के विवाह का प्रसंग अन्य गायकों द्वारा विस्तार से गाया गया है। ददई केवट ने इस प्रसंग को अत्यन्त संक्षिप्त कर दिया है। अपने विवाह तथा भाई सांवर के विवाह के अवसर पर अनेक युद्धों और आपदाओं का सामना करने के बाद लोरिक के जीवन में एक नया मोड़ आता है। वह सहदेव की लड़की चनवा के प्रेम में फंस जाता है और उसके साथ हल्दी भाग जाता है। वहाँ एक अन्य स्त्री जमुनी कलारिन के प्रेम में फँसता है। उसकी विवाहिता पत्नी[१९] मंजरी गउरा में अनेक विपत्तियाँ सहती है। लोरिक हल्दी से नेउरी (नेउरापुर) जाता है, हरेवा परेवा को हराता है, अनेक आपदाओं पर विजय प्राप्त करने के बाद गउरा वापस आता है।

'चनवा का उढ़ार'[२०]. में निम्नलिखित प्रसंग हैं। गायक प्रारम्भ में सुमिरन करता है; देवी दुर्गा का स्मरण करता है। वह कहता है कि "हे माता, मेरी जीभ पर बैठो ताकि भूली हुई शृंखला या कड़ी को मैं जोड़ लूं। हे देवी, यदि एक भी शब्द भूल जायेगा तो मैं तुम्हारा नाम नही लूंगा। सतयुग में जितनी कीर्ति गायी गयी है, उस सबको तुम जोड़ दो, तब तुम्हारी शक्ति को मैं पहचान सकूंगा।" गायक के अनुसार प्रस्तुत कथा सतयुग की है। इस प्रार्थना के बाद गायक ने 'चनवा के उढ़ार' के प्रसंगों को विस्तार दिया है।

'चनवा का उढ़ार' की कथा के तंतु :

(१) चनवा का सिवहरिया से विवाह—सिवहरिया का चनवा की उपेक्षा करना—चनवा का पति को छोड़कर गउरा आने का उपक्रम।

(२) रास्ते में चमार बांठा का छेड़खानी करना।

(३) चनवा द्वारा अपने सत का सुमिरन करना—बांठा का पेड़ की लताओं में बंध जाना तथा चनवा से छेड़खानी करने में असफल रहना।

(४) बांठा का उत्पात—गउरा के सागर पर घेरा डालना तथा सारे कुंवों

में हड्डियाँ और गोबर फेंक देना—गउरा में पीने का पानी नहीं रहा—लोग अन्न और पानी के लिए तबाह ।

(५) चनवा की माँ सेल्हिया का लोरिक के यहाँ जाना—चनवा को पाने के लिए बांठा द्वारा ढाई गई विपत्ति का हाल कहना ।

(६) लोरिक का सागर के तट पर जाना तथा बांठा का हाथ पांव तोड़कर उसे मार डालना । दुर्गा की सहायता से लोरिक के शरीर की रक्षा होना । चनवा का बांठा को देखने जाना ।

(७) चनवा के अपराध के लिए जाति बिरादरी के चौधरी द्वारा चनवा के पिता सहदेव को दंडित किया जाना । सहदेव द्वारा भोज का आयोजन ।

(८) चनवा और लोरिका का प्रेम बढ़ना—बरहा (रस्सी) की सहायता से लोरिक का रात में सहदेव के महल की ऊपरी चौखंडी में चढ़ना तथा चनवा के साथ प्रेमालाप करना ।

(९) चनवा और लोरिक के मिलन की सर्वत्र चर्चा फैलना—मंजरी को लोरिक के गुप्त प्रेम की खबर मिलना—झगड़ू कोईरी के कोड़ार में चनवा और मंजरी की लड़ाई ।

(१०) चनवा के आग्रह पर लोरिक हल्दी भाग जाने के लिए उद्यत ।

(११) लोरिक और चनवा का हल्दी के लिए प्रस्थान करना ।

(१२) प्रथम पड़ाव बोहा में—लोरिक संवरू की भेंट ।

(१३) बेवरा नदी के तट पर चनवा के पति सिवहरिया का आना तथा लोरिक पर आक्रमण करना तथा पराजित होना ।

(१४) लोरिक और चनवा का बेवरा पार कर हल्दी पहुँचना ।

(१५) लोरिक और कलवारिन जमुनी का प्रेम सम्बन्ध । चनवा एक नयी सौत के कारण दुःखी ।

(१६) पशुओं को चराने के लिए हल्दी के राजा महुअरि का लोरिक को चरवाहा नियुक्त किया जाना ।

(१७) चरवाहा के रूप में लोरिक का उत्पात--पशुओं को किसानों के खेत में छोड़ देना---फसल नष्ट हो जाने से किसान परेशान ।

(१८) राजा महुवरि का तंग आकर लोरिक को नेउरापुर कर वसूलने के लिए भेजना ।

(१९) लोरिक द्वारा कट्टाह और भयंकर घोड़े को वश में किया जाना । लोरिक को महुवरि ने यह घोड़ा इसलिए दिया था कि वह लोरिक को मार डालेगा ।

(२०) नेउरापुर (नेउरी) में लोरिक का बचपन के एक साथी से मिलना—

साथी का लोरिक को नेउरी की कठिनाईयों के बारे में बताना तथा सहायता करना ।

(२१) लोरिक द्वारा नेउरी के राजा हरेवा परेवा पर चढ़ाई—हरेवा परेवा द्वारा लोरिक को मारने के लिए विषैली कुतियों तथा ब्रह्म फांस का उपयोग करना—लोरिक का दुर्गा की सहायता से बच निकलना—लोरिक द्वारा पांच सौ कैदियों को मुक्ति दिलाना—मुक्त कैदियों का लोरिक को सहायता पहुँचाना । लोरिक का एक अपराध—नेउरी में स्त्रियों का वध करना—उनमें गर्भिणी स्त्रियां भी थीं । लोरिक का हल्दी का राजा बनना ।

(२२) पिपरी के कोल चंड़ार, गाजनगढ़ के तुर्क, परानापुर के निवासी सभी लोरिक के शत्रु बन गये थे—सबका एक जुट होकर गउरा तथा बोहा पर आक्रमण करना ।

(२३) बोहा में मलसांवर का वध ।

(२४) मंजरी पर विपत्ति—गउरा का सारा धन लुट लिया जाना—चिथड़े पहन कर मंजरी का जीवन यापन करना ।

(२५) गांगी नाऊ का गउरा से मंजरी का संदेश लेकर लोरिक के पास हल्दी जाना—चनवा के बर्गलाने पर मंजरी की विपत्ति, मलसांवर की मृत्यु तथा गउरा की सारी सम्पत्ति लुट जाने की खबर लोरिक को न देना—शोभा नायक द्वारा लोरिक को मंजरी की विपत्ति, सांवर की मृत्यु, तथा गउरा के सारे धन के लुट जाने का समाचार देना ।

(२६) लोरिक का गउरा वापस आने की तैयारी ।

अगोरी की लड़ाईयां तथा सुहवल के संघर्षों के बाद लोरिक के जीवन में एक प्रकार का विश्राम आता है । इस विश्राम की अवधि में नायक के जीवन में चनवा आती है । चनवा से प्रेम सम्बन्ध बढ़ जाने पर वह उसे लेकर हल्दी जाता है । यह नायक के लिए एक प्रकार से प्रवास (देस-निकाला) है । जिसमें नायक के जीवन में शिथिलता आती है । हल्दी में लोरिक कुछ दिनों के लिए चरवाहा बनता है । नायक के चरित्र की यह अधोगति है । विवाहिता पत्नी से विछोह, एक नयी स्त्री से सम्पर्क, चरवाहे का काम यह सब कुछ वीर योद्धा की मर्यादा के प्रतिकूल है । किन्तु शीघ्र ही नायक अपना गौरव फिर प्राप्त कर लेता है । वह हल्दी में भयंकर घोड़े को वश में करता है, नेउरापुर में जाकर वहाँ के राजा को परास्त करता है, फिर हल्दी का राजा बनता है । महुअरि स्वयं हल्दी का राज्य लोरिक को सौंप देता है । इसी बीच शोभा नायक[२१] मंजरी का संदेश लेकर पहुँचता है । वह लोरिक को बताता है कि कैसे कोलों तथा अन्य शत्रुओं ने मिलकर गउरा का धन लूट लिया तथा कैसे सांवर मारे गये । शोभा नायक मंजरी की दारुण विपत्ति की कहानी भी कहता है । यह सुनकर लोरिक दुःखी होता है और गउरा वापस आने की तैयारी करता है ।

चनवा के उद्धार के लगभग सभी प्रसंग थोड़े अन्तर के साथ सभी पाठों में पाये जाते हैं। अन्तर इतना ही है कि ददई केवट वर्णन-विस्तार नहीं करते। उनमें घटनाओं के चित्रण को संक्षिप्त कर देने की प्रवृत्ति है।

४. हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी—पिपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

लोरिक भाई सांवर की मृत्यु, मंजरी की विपत्ति तथा शत्रुओं के अत्याचार की कहानी सुनकर बोहा वापस आता है। वहाँ बाजार लगवाता है। मंजरी वहाँ मट्ठा बेचने जाती है। चनवा उसकी टोकरी में चुपके से सोना-चांदी भरवा देती है तथा उसके ऊपर से चावल रखवा देती है। मंजरी बेवरा नदी पार कर जब घर आती है तब उसकी सास को उसके चरित्र पर सन्देह होता है। उसको लगता है कि मंजरी ने अपना सत गँवा दिया है, उसके बदले में उसे सारा धन मिला है। सास खौलती कड़ाही में सारा द्रव्य, रुपये आदि रखवा देती है। सती मंजरी तेल से भरी खौलती कड़ाही में हाथ डालकर रुपये निकाल लेती है और उसका हाथ नहीं जलता। पुनः केवट मंजरी को बेवरा नदी पार नहीं कराना चाहता तब वह अपने सत के सुमिरन से नदी की धारा को दो भागों में रोक देती है और नदी पार कर जाती है। लोरिक को मृत समझ कर वह सती होना चाहती है तब लोरिक प्रकट होकर उसकी रक्षा करता है तथा धधकती चिता को बिखेर देता है। लोरिक गउरा आता है। पिपरी के कोलों से युद्ध करता है फिर अपने सारे पशुओं को वापस करा लेता है। वह देवसिया कोल के बाण से आहत होता है। घोड़ा मंगर लेकर उसे गउरा उड़ जाता है। लोरिक का पुत्र अभोरिक देवसिया को पराजित करता है, आहत करता है। लोरिक को अभोरिक देवसी के पास ले जाता है। लोरिक के बाण से देवसी मर जाता है। अन्त में लोरिक चिता बनवाता है और उसमें जलकर भस्म हो जाता है। लोरिक की बोहा वापसी, पिपरी का युद्ध और लोरिक के अग्निदाह के प्रसंग में निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण हैं :

(१) हल्दी से सारा सामान, धन-दौलत लादकर लोरिक और चनवा का बोहा आना—तम्बू और कनात खड़ा करवाना तथा उर्दू बाजार लगवाना।

(२) लोरिक का घूम-घूम कर बोहा देखना—अपने पशुओं को न देखकर दुःखी होना।

(३) लोरिक का सिपाहियों से गउरा में डुग्गी पिटवाना कि बोहा का राजा दूध-दही खरीदेगा।

(४) मंजरी का अन्य ग्वालिनों के साथ बोहा में मट्ठा बेचने जाना—मंजरी का फटे चिथड़ों में होना तथा अपना मट्ठा और टोकरी दूर रख देना।

(५) लोरिक के कहने पर चनवा द्वारा मंजरी की टोकरी में सोना, द्रव्य

रुपये आदि रख देना तथा ऊपर से दस-पाँच सेर चावल रखकर द्रव्यों को ढक देना।

(६) मंजरी की सास को उसके चरित्र पर सन्देह होना—मंजरी का तेल से भरी हुई खौलती कड़ाही में हाथ डाल कर द्रव्य निकालना तथा अपने सत की परीक्षा देना।

(७) मंजरी का मट्ठा लेकर फिर बोहा जाना—लोरिक की आज्ञा पर बेवरा नदी के तट पर मल्लाह का मंजरी को रोकना और बोहा न जाने देना। मंजरी के सत के सुमिरन से दुर्गा का प्रकट होना तथा बेवरा नदी की धारा का दो भागों में विभक्त हो जाना तथा बीच में मैदान बन जाना। मंजरी का पैदल उस पार चला जाना।

(८) मंजरी का लोरिक की बिजली वाली तलवार देखकर चिन्ता में पड़ जाना कि शायद मेरे पति लोरिक को मार कर इस राजा ने तलवार छीन ली है।

(९) पति की तलवार लेकर मंजरी द्वारा सती होने की तैयारी। मंजरी का सुलगती चिता में बैठना—लोरिक का आकर आग को बिखेर देना तथा मंजरी का हाथ पकड़ कर बाहर निकालना।

(१०) ग्वालिनों का घर आकर खोइलनि को सारी कहानी बताना।

(११) लोरिक की माँ खोइलनि का धोबी अजयी के यहाँ जाना और कहना कि मेरी बहू बोहा में हर ली गयी है। अजयी का खोइलनि को सहायता करने से इन्कार करना। पत्नी विजवा की चुनौती पर अजयी का बोहा में जाना।

(१२) अजयी का जाकर लोरिक से लड़ना—लोरिक का गुरु अजयी को पहचान लेना तथा गले लगकर दोनों का फूट-फूट कर रोना।

(१३) अजयी द्वारा लोरिक को बताया जाना कि संवरू कैसे कोलों द्वारा मारे गये। कैसे गायों को कोल हर ले गये। नान्हूँ चरवाह (लोरिक का साला, और मंजरी का भाई) कैसे आजकल भाड़ झोंक रहा है।

(१४) लोरिक का नान्हूँ को भड़भूजे के यहाँ से बुलवाना—नान्हूँ का लोरिक पर क्रुद्ध होना—फिर विपत्ति की सारी कहानी कहना। लोरिक के कहने पर नान्हूँ चरवाह का पिपरी जाना—कोलों के यहाँ जाकर गायों के बारे में यह पता लगाना कि कुछ ही दिनों में कोलों की बेटियों का गौना होगा और शीघ्र गायें दहेज में बाहर चली जायँगी।

(१५) लोरिक का पिपरी के कोलों पर आक्रमण—कोलों से सारा धन और पशु वापस ले लेना तथा पिपरी में आग लगा देना।

(१६) देवसिया के बाण से लोरिक घायल—घोड़ा मंगर का लोरिक को लेकर गउरा उड़ जाना—लोरिक के पुत्र अभोरिक के बाणों से कोल

देवसिया आहत—अमोरिक के कहने पर लोरिक का जाकर घायल देवसिया का सिर काट लेना।

(१७) दो पात्रों में दूध लेकर लोरिक का पीपल के पेड़ से कूदना—दूध हिल जाने से लोरिक को अपनी दुर्बलता का आभास होना।

(१८) लोरिक द्वारा गउरा[२२] में गड्ढा खुदवाया जाना—चिता सजवाना—उसमें हविष्य डलवाना—अग्नि तेज होने पर अहीर का उसमें कूद जाना तथा 'सीताराम' कहते हुए अपने शरीर को जलाकर राख कर देना।

चनवा के उद्धार के बाद लोरिक का पतन प्रारम्भ हो जाता है। एक स्त्री का अपहरण, नेउरापुर में स्त्रियों का वध आदि ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो नायक को दुर्बल बना देती हैं। हल्दी में घोड़ा मंगर उसको सहायक मिलता है। उसकी सहायता से वह नेउरापुर की लड़ाई में विजय प्राप्त करता है। विवाहिता पत्नी की विपत्ति, भाई सांवर की मृत्यु आदि का समाचार सुनकर वह अपने घर गउरा के लिए प्रस्थान करता है। बोहा में डेरा डालता है। यहाँ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि मंजरी के सत की परीक्षा होती है। मंजरी की विपत्ति और उसका सत गायकों का प्रिय प्रसंग है। बोहा में लोरिक का गुरु अजयी तथा चरवाह नान्हूँ मिलता है जो मंजरी का भाई था। विपत्ति के दिनों में गउरा के एक भड़भूजे के यहाँ भाड़ भूँजने की नौकरी करता था। इन दोनों की सहायता पाकर लोरिक आक्रमण करता है तथा अपने सारे पशुओं तथा धन को वापस लेता है। देवसिया कोल से युद्ध करने में लोरिक आहत होता है। यद्यपि अपने पुत्र अमोरिक की सहायता से वह देवसिया का वध करता है पर यहाँ प्रकट हो जाता है कि लोरिक का पौरुष घट गया है। वह अन्तिम बार अपनी शक्ति की परीक्षा करता है। दो पात्रों में दूध लेकर वह कूदता है पर आशा के विपरीत दूध हिल जाता है। अन्त में वह अपना जीवन समाप्त करने को उद्यत हो जाता है। वह गढ्ढा खुदवाता है, चिता जलवाता है, घी की आहुति दिलवाता है और अग्नि में अपने को स्वाहा कर देता है। एक वीर योद्धा का यह दुःखद अन्त है। उसके अनेक अनैतिक कार्यों और ढलती हुई उम्र की निर्बलता की यह चरम परिणति है।

टिप्पणियाँ

१. मिर्जापुर—यह नगर २३°-५२' तथा २५°-३२' (Latitude) अक्षांश (उत्तर) तथा ८२-०७' और ८३°-३३' पूर्व देशान्तर (Longitude) पर स्थित है।

२. अगोरी—२४°-४१' उत्तर अक्षांश तथा ८२°-५८' देशान्तर पर स्थित है। यह रिहांद तथा सोननदी के संगम पर है। यह स्थान मिर्जापुर

से ६२ मील तथा राबर्ट्सगंज से १४ मील की दूरी पर है।

३. जुए में राज्य हार जाने तथा पांडवों में सर्वश्रेष्ठ युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी को दाँव पर रखने की कथा तो महाभारत (सभापर्व) में भी आती है पर पत्नी की कोख को दाँव में रखना भारतीय साहित्य में मुझे अन्यत्र नहीं मिल सका।

४. गोरइया—'गोरइया' की पूजा शाहाबाद, बक्सर तथा पटना के दुसाध करते हैं। पूजा करने वाले इसको राहु की पूजा से जोड़ते हैं।

५. बघौता—बाघ-देवता (tiger ghost) तथा बनसत्ती माता की पूजा कोल आदिवासियों में प्रचलित है, इसका उल्लेख विलियम क्रूक ने किया है।

देखिये : William Crooke—The tribes and castes. Calcutta, 1896 Vol. III Page 312.

६. सभी गायक देवी को स्मरण करते हैं ताकि उनके गायन का प्रवाह भंग न हो। सभी गायक यह कहते हैं कि देवी की सहायता के बिना इतना बड़ा पंवारा गाया नहीं जा सकता।

७. ददई केवट ने लोरिक के जन्म को विस्तार से नहीं गाया है। शिवनाथ चौधरी के पाठ में सूर्य की आराधना से खोइलनि के गर्भ में लोरिक आता है। इलाहाबाद के राम अवतार के पाठ में खोइलनि शिव की आराधना करती है तब लोरिक पैदा होता है।

८. मंजरी के जन्म के अवसर पर स्वर्ण की वर्षा होती है, इसका उल्लेख लगभग सभी गायक करते हैं।

९. कोटवा भदोखरि—गउरा और अगोरी के बीच का एक गाँव है। इसका ठीक-ठीक पता बताना कठिन है।

१०. आजु कहँ लीखई ना पतियाह् रे बनाई
देख भाई छतिरीय ना जतिया जे जवन रे होईहंय
पतिया में लीखत ना हउवंह रे तीलऽकय
पतियाह् गइलेह् ना बंचियाह् कइ रे देखले
घरवांह् अन्नइ ना खइहंइ जाइ हराम
पनिया पीहइ रुधिरया रे समानऽ

प्रस्तुत पाठ के पृष्ठ १११ पर देखिये।

११. इनरावत—एक हाथी का नाम—ऐरावत हाथी इन्द्र का वाहन है। लगता है 'ऐरावत' की समानता पर इनरावत बन गया है। इनरावत और मंजरी पूर्व जन्म में बहनें थीं।

१२. निरम्मल—ददई केवट के पाठ में निरम्मल की गर्दन बार-बार कटती है और जुड़ जाती है। तब वह ब्रह्मा के यहाँ जाता है। उसकी

प्रार्थना पर ब्रह्मा कहते हैं कि एक बूंद रक्त तुम्हारे शरीर से धरती पर गिर गया तो लोरिक का बचना सम्भव नहीं है, पर दुर्गा लोरिक की सहायता करती हैं और निरम्मल मारा जाता है। वाराणसी के पांचू भगत के पाठ में, दसवंत और लोरिक के युद्ध में ऐसा होता है। यह एक कथानक अभिप्राय (Motif) का स्थानान्तरण मात्र है। दुर्गा से ब्रह्मा कहते हैं कि दसवत अमर है यदि सातवीं बार उसकी गर्दन कटी तथा धरती पर रक्त का बूंद गिर गया तो चाहे जितनी अमर दुर्गा तैयार हो जायें लोरिक नहीं बचेगा।

देखिए : मेरे द्वारा सम्पादित लोक महाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद १९७९ पृष्ठ १२४।

१३. देखिये : श्याममनोहर पांडेय, लोकमहाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद १९८२

१४. मेरे गायकों में सबसे बड़ा पाठ शिवनाथ चौधरी का है। उनका पाठ मैंने १९६६ में संग्रहीत किया था। वे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के उजियार भरौली के रहने वाले थे। लगभग ८५ वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु लगभग दो वर्ष पहले भरौली में ही हुई। इनका पाठ अभी अप्रकाशित है।

१५. लोक परम्परा में एक ही स्थान को सुरवल, मुहवल, सुरहुल, सुरवली आदि कई नाम दिये गये हैं।

१६. परछावन या परछन--विवाह के अवसर पर वर की आरती उतारने की रीति। बारात जाने के पहले भी स्त्रियाँ वर का परछन करती हैं उसके बाद बारात विदा होती है।

१७. श्याममनोहर पाण्डेय, लोकमहाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद, १९७९, पृष्ठ ३।

१८. श्याममनोहर पाण्डेय, लोकमहाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद, १९८२, पृष्ठ २२९।

१९. नेउरापुर, नेउरी एक ही स्थान का नाम है।

२०. चनवा का उढ़ार—चनवा का उढ़ार मौलाना दाउद कृत 'चंदायन' की कथा का आधार है। लोरिक का चनवा से प्रेम हो जाता है। वह अपनी विवाहिता मंजरी को छोड़ कर चनवा के साथ हल्दी भाग जाता है। इस कथा में सूफ़ी दर्शन के अनेक तत्वों को जोड़कर मौलाना दाउद अपनी कथा का ठाट तैयार करते हैं! 'चंदायन' की रचना १३७९ ई० में हुई। विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए :

1. Shyam Manohar Pandey : Maulana Daud and his Contribution to the Hindi Sufi Literature. Istituto Orientale di NAPOLI, 1978, Vol. 38, pp. 75-90.

(2) Shyam Manohar Pandey : Some problems in Studying Candayan, Early Hindi devotional literature in current research, ed. Winand, M. Callewert, Leuven, Belgium 1980, pp. 127-140.

(3) Shyam Manohar Pandey : Love Symbolism in Candayan Bhakti in Current research 1979-1982.
Monika Thiel—Horstmann, Berlin 1983.

२१. शोभा नायक— वाराणसी के पाठ में संदेशवाहक का नाम जग्गू बनजारा है, शिवनाथ चौधरी के पाठ में उसका नाम नायक बनजारा है। इस प्रकार के नामों का परिवर्तन लोककाव्यों में सामान्य बात है।

२२. नायक लोरिक सभी पाठों में अपना जीवन स्वयं समाप्त कर लेता है। कुछ पाठों में वह गउरा में अग्नि की चिता बनाकर अपने को स्वाहा करता है, कुछ में वाराणसी जाकर 'मरण कंडिका' घाट पर चिता बना कर जलता है। गोंडा जिले के पाठ में वह हिमप्रवेश करता है। यह महाभारत का प्रभाव लगता है।

□ □

गायक—ददई केवट

(मृत्यु २२ फरवरी १९७० ई०)

'लोरिकायन' के प्रस्तुत गायक ददई केवट अपने को केवट कहना अधिक पसंद करते थे। भगवान राम को एक केवट ने वन जाते समय गंगा पार कराया था[1] अतः मल्लाह लोग इस घटना का उल्लेख कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ददई केवट ने सदैव इस बात पर बल दिया कि वे केवट हैं। अन्य मल्लाह भी अपने को केवट या निषाद कहते हैं।

१७ अक्टूबर, १९६६ को मैंने ददई केवट के लोरिकायन की रिकार्डिङ्ग प्रारम्भ की थी। गायक ने तब बताया कि इस महाकाव्य का नाम 'लोरिकी' या 'लोरिकायन' दोनों है। गायक प्रायः इसके लिए 'पंवारा'[2] शब्द प्रयुक्त करते हैं। लोकमहाकाव्य ओरल एपिक (oral epic) के आधार पर दिया गया एक साहित्यिक शब्द है। गायक कुरुहुल नामक गाँव में पैदा हुए थे। यह कुरुहुल उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर जिले में अगोरी के पास है। मिर्जापुर की स्थिति २३°-५२ और २५°-३२ अक्षांश उत्तर तथा ८२.०७ और ८३° ३३ देशान्तर पर है। अगोरी २४° ४१ उत्तर तथा ८२° ५८ पूर्व में है। यहाँ एक बड़ा सा किला भी है। अगोरी में सोन और रिहान्द नदी का संगम भी है। मिर्जापुर शहर से यह ६२ मील दक्षिण पूर्व की ओर स्थित है। राबर्ट्सगंज तहसील यहाँ से १४ मील है। गायक का गाँव कुरुहुल अगोरी से लगभग ५ मील पूर्वोत्तर में है। चोपन से कुरुहुल लगभग तीन मील है। जिस समय मैंने १९६६ में चोपन में रिकार्डिङ्ग की थी उस समय वहाँ एक रेलवे कॉलोनी बस चुकी थी। रेलवे कॉलोनी में मेरे सहायक और स्नेही श्री ओम प्रकाश कुलश्रेष्ठ[3] के एक सम्बन्धी ने जो रेलवे में काम करते थे और वहीं रहते थे, मेरे रहने की व्यवस्था कर दी थी। रिकार्डिङ्ग चोपन में १७ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक रात में और अवसर मिलने पर दिन में भी होती रही। गायक पैदल चलकर रोज कुरुहुल से अपने एक मित्र के साथ आया करता था। (कुरुहुल गाँव में उन दिनों बिजली नहीं थी।) उसके यह सहयोगी मित्र गाँजा बनाने, चिलम बोझने तथा गायक के गायन में कड़ी के अन्त में तुक मिलाकर सहयोग करते थे। बिना गाँजा पीये 'लोरिकायन' का गायन गायक के लिए संभव नहीं था। उसके सहयोगी भी गाँजा पीते थे।

गायक की उम्र लगभग सत्तर साल[4] की थी और श्रोताओं के बीच बैठकर वह नहीं गा रहे थे अतः उत्साह की कमी उनमें सहज देखी जा सकती थी। श्रोताओं में मैं, श्री ओमप्रकाश कुलश्रेष्ठ, गायक का सहयोगी केवल यही व्यक्ति थे। कभी-कभी परिवार के बच्चे तथा एकाध पड़ोसी उत्सुकतावश आ जाते थे। पर थोड़ी देर गायकी सुनकर वे वापस चले जाते थे। स्पष्ट है गायक उपयुक्त वातावरण में, अपने उपयुक्त

श्रोताओं के बीच नहीं गा रहा था। अतः उसमें नाटकीयता की कमी थी, प्रवाह में यदाकदा शिथिलता थी, कथाक्रम में भी कभी-कभी त्रुटि हो जाती थी। उस समय गायक का सहयोगी उसे भूली-बिसरी कड़ियों को जोड़ने में सहयोग करता था।

गायक के गुरु

गायक के गुरु का नाम भी ददई था। वे जाति के अहीर थे तथा कुरहुल के रहने वाले थे। गायक ने १९६६ में मुझे बताया कि हम लोग पशु चराने जाया करते थे। पशुओं को खेतों और चरागाहों में छोड़कर हम लोग लोरिकायन गाने बैठ जाते थे। गुरु ददई गाते थे फिर मैं उसको दुहराता था। इसी तरह कड़ी-कड़ी करके मैंने लोरिकायन सीखा। गायक को लोरिकायन सीखने में दो तीन वर्ष लगे थे। गायक ने मुझे बताया कि लोरिकी आदि आमतौर पर चरवाही करते सीखी जाती है अतः वहाँ बाजे का प्रयोग सम्भव नहीं है। स्मरणीय है 'लोरिकायन' के गाने वाले किसी प्रकार का वाद्ययन्त्र नहीं प्रयुक्त करते।

अक्तूबर १९६६ में गायक के गुरु ददई अहीर को मरे दस साल हो चुके थे। ददई अहीर के गुरु मध्य प्रदेश के सरगुजा (छत्तीसगढ़) के थे। अतः लगता है मिर्जापुर जिले के कुरहुल का प्रस्तुत पाठ छत्तीसगढ़ी परम्परा के अधिक पास है। वैसे लोक परम्परा के गायक अनेक परम्पराओं से प्रभावित होते रहते हैं।

गायक का पेशा

ददई मल्लाह या केवट होते हुए भी नाव खेने का कार्य नहीं करते थे। उनके घर में खेती होती है। उन्होंने १९६६ ई० में मुझे बताया कि उनके यहाँ दो बैलों की खेती होती है।[५] उनके दो लड़के खेती-बारी का काम सँभालते थे। ददई मल्लाह स्वयं हलवाहा थे जो अपना खेत स्वयं जोतते थे।

गायक का एक पेशा ओझइती का भी था।[६] वह भूत-प्रेत की झाड़-फूंक करते थे। २१ अक्तूबर १९६६ की रात को मैंने चोपन में गायक और उसके सहयोगी को एक ढाबे में भोजन कराया। गायक के सहयोगी ने या तो कुछ अधिक भोजन कर लिया या उसकी तबियत कुछ पहले से खराब थी। बहरहाल, उसको कय हो गयी। गायक ने झट उसका मस्तक पकड़ा तथा झाड़-फूंक शुरू किया। थोड़ी देर में उसकी तबीयत ठीक हो गयी तो गायक ने बताया कि खाते समय किसी की नजर लग गयी थी अतः उसके मित्र को कय हो गयी। उसके बाद गायक और उसके मित्र मेरे बार-बार आग्रह पर भी चोपन के ढाबे में खाना नहीं खा सके। मैं उन्हें पैसे दे दिया करता था। वे घर से भोजन करके आ जाया करते थे। गायक के सहयोगी मित्र को यह विश्वास था कि वह झाड़-फूंक से स्वस्थ हुआ। मिर्जापुर, चोपन, अगोरी के इलाके में उन दिनों ओझइत झाड़-फूंक करने वाले बहुत सम्मान पाते थे। यद्यपि अब गाँवों में वैद्य और आधुनिक डाक्टर भी पहुँच गये हैं। वहाँ लोगों की जीवन-प्रणाली अब काफी तेजी से बदल रही है।

जीवन के प्रति दृष्टिकोण

ददई केवट ने यह भी बताया कि जब से मिर्जापुर से रिहैंड डैम तक पक्की सड़क बन गयी है तथा यहाँ पढ़े-लिखे बाबू लोग आ गये हैं, तब से हम लोग बेईमान हो गये हैं। पहले यहाँ दूध में कोई पानी नहीं मिलाता था, अब दूध में पानी मिलाकर बेचा जाने लगा है।[७] ददई केवट ने कहा—पहले यहाँ लोग किसी की चीज नहीं छूते थे, अब चोरियाँ बढ़ गयी हैं। ददई केवट ने कहा सारा दोष इस पक्की सड़क का है। इस पर ट्रक, कारें सब कुछ चलने लगी हैं। इनमें आने-जाने वाले बेईमान हैं। उनसे हमने भी बेईमानी, छल, प्रपंच सीखना शुरू कर दिया। अन्यथा इस इलाके के लोग ईमानदार, सादे और बचन के पक्के होते थे। आवागमन के साधनों के विकास के फलस्वरूप जो बुराइयाँ आती हैं उसको ददई केवट कोसते हैं। जन-सम्पर्क, आवागमन के साधन के लाभ बिजली आदि के प्रकाश तथा रहन-सहन के स्तर में उन्नति को वह महत्त्व नहीं दे रहे थे क्योंकि उनकी दृष्टि में इन सबसे इन्सानी मूल्यों का हनन हो रहा था। गायक की दृष्टि में इन्सानी मूल्य अधिक महत्त्वपूर्ण थे।

गायक का बचपन

गायक ने १९६६ में अपनी उम्र लगभग ७० साल बतायी थी। अर्थात् वह १८९६ ई० के आसपास पैदा हुआ होगा। गायक ने बचपन में पशुओं की चरवाही का कार्य किया था। बताया जा चुका है कि गुरु के साथ बैठकर लोरिकायन उसने उसी समय सीखा था। गायक मल्लाहों के गीत के अलावा भजन तथा अन्य पूर्वी गाने भी गा सकता था। युवावस्था में वह नाच की मंडलियों में भाग लेता था तथा नाचने वालों लौंडों का गिरोह भी बनाया करता था। स्पष्ट है ऐसे चरित्रों को गाँव वाले संदेह की दृष्टि से देखते हैं।[८]

गायक पतला दुबला सांवले रंग का था। उसको देशी शराब पीने का शौक था। अगोरी के पास १९६६ में देशी शराब बनाने की भट्टियाँ भी थीं।

गायक का व्यक्तित्व

गायक आमतौर पर विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति होते हैं। उनकी कलात्मक और लोक-दृष्टि प्रखर होती है। ग्रामीण परम्पराओं, लोक-कथाओं, लोक-गीतों तथा लोक-विश्वासों से उनका प्रगाढ़ परिचय होता है। उनकी स्मरण शक्ति भी असाधारण होती है। यद्यपि यह सच है कि कोई गायक लोकमहाकाव्य को कंठाग्र नहीं करता।[९] घटनाओं का क्रम उनके मस्तिष्क में स्थिर रहता है। छंद, लय और कुछ विशेष वर्णनों का नमूना उनके मस्तिष्क में सुरक्षित रहता है। इनके आधार पर गायक हर बार नयी रचना कर लिया करते हैं। गायक समय और परिस्थिति के अनुकूल अपने प्रसंगों को छोटा या बड़ा करते रहते हैं। ददई केवट में भी यह प्रतिभा थी। वे तीस साल से लोरिकी गा रहे थे यद्यपि अहीर समाज ने उनको

मान्यता कम दी। अहीर लोगों की दृष्टि में मल्लाह या अन्य जाति का गायक 'लोरिकायन' ठीक से नहीं गा सकता। गायक 'लोरिकायन' में पहले अगोरी का प्रसंग गाता है क्योंकि अगोरी उसका क्षेत्र है। अगोरी में नायक लोरिक ने अनेक लड़ाइयां कीं और मंजरी से विवाह किया। अगोरी में एक बड़ा किला आज भी विद्यमान है। उसमें एक फारसी लिपि में शिलालेख भी है पर शिलालेख का 'लोरिक' की कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है।[१०]

गायक जातीय गौरव का गायक नहीं

ददई केवट जातीय गौरव के गायक नहीं बन सके क्योंकि वे जाति के अहीर नहीं थे। एक अहीर गायक जिस प्रकार नायक लोरिक अहीर के साथ अपना भावात्मक सम्बन्ध जोड़ लेता है वैसा शायद ददई केवट नहीं कर पाते थे। हो सकता है वह इसलिए भी हो कि मैं उपयुक्त श्रोताओं के बीच बैठ कर रिकार्डिंग नहीं कर रहा था। उनमें ओज की कमी तथा रूप खड़ा करने की कला कम थी। नायक के उत्थान और पतन के साथ वे उतने भाव-विभोर नहीं हो पाते थे जितने मेरे अन्य गायक। मेरे अन्य गायक अहीर हैं अत: उनको अपने गायन में जातीय गौरव का बोध कराना लक्ष्य होता था। ददई केवट यह नहीं कर सकते थे। वे लोगों का मनोरंजन तो खूब करते थे। उनके गायन से लोग आकृष्ट भी होते थे पर उनका प्रभाव या प्रतिष्ठा एक जातीय गौरव के गायक के रूप में नहीं हो सकती थी।

गायक का धर्म

केवट हिन्दू होते हैं। गायक भी हिन्दू था पर उसका व्यक्तित्व धार्मिक नहीं लगता था यद्यपि वह देवी-देवताओं की पूजा करता था, और तंत्र-मंत्र में उसका विश्वास था। गंगा नदी को माँ के रूप में सभी केवट स्मरण करते हैं। ददई केवट के परिवार में शिव, सीता राम आदि हिन्दू देवताओं में विश्वास प्रकट किया जाता है। इनके परिवार में अन्य मल्लाहों की तरह शिवरात्रि, होली, दीवाली आदि मनायी जाती है। भूत, पिशाच, चुड़ैल, डाइन आदि के कुप्रभाव पर गायक ही नहीं उसके संपूर्ण परिवार का विश्वास दीख पड़ता है। ददई केवट जल के देवता 'जलवाह' की पूजा में भी आस्था रखते थे क्योंकि नाव खेते समय जल के देवता नाविकों की रक्षा करते हैं। लगता है जलवाह की पूजा एक प्रकार से वरुण की पूजा होती है।

गायक के शिष्य

गायक ने बताया कि उसके तीन शिष्य हैं। उनमें बुलारक अच्छा गाता है। उसने ढाई-तीन सालों में 'लोरिकायन' सीखा। बुलारक के बारे में मुझे अधिक जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी। उनका एक शिष्य नूरे भी था जिसकी मृत्यु कुछ साल पहले सोन नदी की बाढ़ में नाव चलाते समय डूब कर हो गयी थी।

गायक के केवट होने से लोरिकायन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

गायक के केवट होने के कारण लगता है लोरिकायन में कई ऐसे तत्व जुड़ गये हैं जो उल्लेखनीय हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि नायक लोरिक के साथ गायक का जातीय व्यक्तित्व नहीं जुड़ पाया है अत: उसने उन कई प्रसंगों को संक्षिप्त कर दिया है जिनमें लोरिक की वीरता उभर कर आती है और जहाँ वह अपने शौर्य से एक विशेष छाप छोड़ता है। (१) उदाहरण के लिए मुहवल के प्रसंग में मेरे संग्रह के अन्य पाठों में लोरिक सतिया के दो भाइयों दसवंत और भिम्हली दोनों से भयंकर युद्ध करता है।[११] कई बार लोरिक आहत होता है। दुर्गा उसकी सहायता करती हैं और जीवित होकर वह बार-बार लड़ता है। बमरी के अन्य पुत्रों अर्थात् सतिया के अन्य भाईयों का यहाँ उल्लेख नहीं होता। वाराणसी के पाठ में दसवंत और लोरिक की लड़ाई एक महत्वपूर्ण प्रसंग है।

(२) गायक ददई केवट लोरिक की वीरता के प्रसंगों को संक्षिप्त कर अलौकिक तत्वों तथा चमत्कारिक प्रसंगों को अधिक महत्व प्रदान करता हुआ प्रतीत होता है। लोरिक का हंस हंसिनी के पंखों पर बैठ कर सात समुद्र पार जाना तथा सतिया और मलसांवर के विवाह सम्पन्न कराने के लिए पाताल लोक से सिंदूर लाना आदि प्रसंगों को गायक ने बढ़ा-चढ़ा कर गाया है। ये प्रसंग आकर्षक हैं तथा अन्य पाठों में भी हैं। किन्तु अन्य पाठों में विशेष ध्यान लोरिक की वीरता और युद्धों की ओर दिया गया है। संवरू के विवाह के प्रसंग मे बारात का दानव दूत के पेट में चला जाना, सतिया का माया से छत्तीस नाग उत्पन्न करना तथा सारी बारात को सांप द्वारा डस लिया जाना आदि प्रसंग अन्य पाठो में भी हैं पर अन्य गायकों ने लोरिक की वीरता और युद्धों को गौण नहीं होने दिया है। अहीर गायकों का जातीय नायक सदैव वीर रहता है। ददई केवट का उद्देश्य श्रोताओं का मनोरंजन करना अधिक लगता है। अत: अलौकिक चमत्कार पूर्ण घटनाओं को वह बढ़ा-चढ़ा कर गाते है।

(३) ददई केवट के गायन में मल्लाहों के लोक-गीतों के स्वर का प्रभाव अधिक पड़ गया है।

(४) ददई केवट के पाठ में उस केवट का चरित्र जा मंजरी के साथ आनन्द करना चाहता था और जहाँ मंजरी अपने सत का परिचय देकर नदी सुखा देती है, काफी संतुलित है[१२]। केवट यहाँ लोरिक के कहने से मंजरी को अपने नाव पर बैठा कर नदी पार नहीं कराना चाहता है। यहाँ ददई केवट ने केवट का चरित्र कमजोर नहीं पड़ने दिया है। लगता है यह इसलिए भी है कि ददई केवट की भावात्मक एकता केवट से जुड़ी हुई है। वह उसके चरित्र का हनन नहीं करना चाहते।

सारांश यह है कि लोरिकायन के प्रस्तुत पाठ में लोरिक की वीरता और शौर्य को घटा कर चमत्कारिक प्रसंगों पर गायक द्वारा अधिक बल दिया गया है। ये

अलौकिक प्रसंग कौतूहल की सृष्टि तो करते हैं, श्रोताओं का मनोरंजन भी करते हैं किन्तु यह स्पष्ट है कि लोरिक के विशिष्ट गुणों के साथ भावात्मक एकता स्थापित करना गायक का लक्ष्य नहीं प्रतीत होता। अहीर गायक लोरिक की विजय के साथ उल्लसित होते हैं, गौरव का अनुभव करते हैं, और उसकी हार के साथ करुण और विषाद् मग्न हो जाते हैं।

टिप्पणियाँ

१. देखिये तुलसीकृत 'श्रीरामचरितमानस', गीता प्रेस गोरखपुर, संवत् २०३१, दोहा ८८ से १०४ तक।

२. लोरिकायन के गायक इस महाकाव्य को 'पंवारा' कहते हैं। इस पर डाक्टर नित्यानन्द तिवारी ने अपनी पुस्तक 'मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान' में विस्तार से विचार किया है। डाक्टर तिवारी के अनुसार गाजीपुर जिले के डेहमा ग्राम निवासी सेवक राम यादव नामक गायक ने इस महाकाव्य को पंवारा कह कर सम्बोधित किया। अवधी क्षेत्र के एक चनैनी गायक श्री महावीर ने भी इसे पंवारा कहा। नित्यानन्द तिवारी, मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान, दिल्ली, १९७०, पृष्ठ १००, टिप्पणी २। मेरे अधिकांश गायक इस महाकाव्य को पंवारा कहते थे। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत 'प्रवाद' से है। यह शब्द 'महाभारत' में आया है। पालि में 'पवाद' तथा प्राकृत में 'पवाय' हो गया है। हिन्दी में 'पवाड़ा', गुजराती में 'पवाड़' मराठी में 'पवाड़' शब्द इसके लिए प्रयुक्त है। हिन्दी, मराठी, गुजराती में पंवारा का अर्थ लम्बी कहानी, महाकाव्य, तथा ऐतिहासिक लोकगाथा आदि भी पाया जाता है। देखिये Turner. R. L. : A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages. 1973 (second impression) पृष्ठ ४८४।

३. ओमप्रकाश कुलश्रेष्ठ लोक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय सत्येन्द्र के भांजे हैं। कुरुहुल के गायक के पाठ के संग्रह में उन्होंने मेरी सहायता की थी। कुलश्रेष्ठ उन दिनों आगरा के, आगरा कालेज में विद्यार्थी थे। उन दिनों मैं आगरे में रहता था। हम दोनों साथ ही चोपन गये थे जहाँ लोरिकायन की रिकार्डिङ्ग हुई।

४. मेरे सभी गायक अपनी उम्र अनुमान से बतलाते हैं। अतः गायकों की एकदम ठीक उम्र बता सकना संभव नहीं है।

५. दो बैलों की खेती का अर्थ लगभग १०–१५ बीघे जमीन का मालिक समझना चाहिए। पूर्वी उत्तर प्रदेश में यदि कोई कहता है कि उनके

यहां दो बैलों की खेती होती है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि उस व्यक्ति के पास दस पंद्रह बीघे जमीन है।

६. मेरे सभी गायक एक से अधिक गुणों या कलाओं से सम्पन्न हैं या रहे हैं। इलाहाबाद के स्वर्गीय रामअवतार विरहिया, पशुओं की हड्डी बैठाने से लेकर कठिन परिस्थिति में बच्चा पैदा कराने में भी सहायता करते थे। वे देशी दवाइयों के भी जानकार थे। बनारस के पांचू भगत देवी की पूजा कराने तथा कड़ाहा चढ़वाने अभी भी दूर-दूर तक जाते हैं।

७. ग्वाले या दूध बेचने वाले आमतौर पर बदनाम किये जाते हैं कि वे दूध में पानी मिलाते हैं। ददई केवट का कहना था कि उनके क्षेत्र में पहले दूध बेचने वाले पानी नहीं मिलाते थे। पहले शुद्ध दूध मिलना संभव था।

८. आजकल पूर्वी उत्तर प्रदेश में चमार तथा कुछ अन्य जातियों के लड़के गाना बजाना सीखकर 'विदेसिया' नाच का गिरोह बना लेते हैं। ये विदेसिया नाच पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में काफी प्रचलित हैं। विदेसिया नाचने वाले लड़के तथा गिरोह बनाने वालों ने अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर ली है और अपने समाज में उनकी प्रतिष्ठा काफी बढ़ गयी है। यह बात मुझे गत वर्ष १९८४ में बलिया में बतायी गयी थी। 'विदेसिया' नाच के प्रवर्तक बिहार के श्री भिखारी ठाकुर थे।

९. देखिये—श्याममनोहर पाण्डेय, लोक महाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद, १९८२, भूमिका पृष्ठ ३८ से ५० तक। अधिक विस्तार से अध्ययन के लिए इसका अंग्रेजी संस्करण देखिये—

Shyam Manohar Pandey,
The Hindi Oral Epic Canaini, Allahabad, 1982, pp. 38-82.

१०. अगोरी के किले में जो फारसी का शिलालेख है वह इस प्रकार है।

سرکار چناد ابرمن اعمال پرگنہ اگوری

محل مادھو سنگھ ۔ ہرکی محل بکاند تلاف زن وو دختر بان

بان باشد - ۱۵۲۶

[सरकार चनाद अहदे मन ऐमाल परगना अगोरी महल माधोसिंह हरकि महल बेकानद तलाफ़ ज़न-ओ-दुख्तर बान बाशद १५२६]।

चुनार सरकार के अन्तर्गत परगना अगोरी माधोसिंह का महल। जो व्यक्ति इस महल को गिरायेगा वह अपनी पत्नी तथा लड़की से अलग कर दिया जायेगा। यह सन् १५२६ हिजरी का अर्थात् १६१७ ई० का शिलालेख है। उस समय जहाँगीर का शासनकाल था। जहाँगीर ने १६०५ से १६२८ ई० तक राज्य किया था।

११. विस्तार के लिए देखिये—श्याममनोहर पाण्डेय—लोकमहाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद, १९७९, पृष्ठ १११ से १५१ तक।

१२. श्याममनोहर पाण्डेय—लोक महाकाव्य लोरिकायन, यह ददई केवट का प्रस्तुत पाठ है। देखिये पृष्ठ ३४६ से ३४८ तक। अन्य पाठों में केवट को लोरिक की पत्नी मंजरी पर आसक्त होते दिखाया गया है। इस पाठ में लोरिक के कहने पर वह मंजरी का हाथ पकड़कर उसे नाव से उतार देता है।

□ □

मल्लाह जाति

'मल्लाह'[1] शब्द अरबी का है जिसका अर्थ नाव चलाने वाला होता है। स्पष्ट है यह शब्द भारत में मध्ययुग में प्रचलित हुआ होगा। मल्लाह जाति को नाविक, केवट, निषाद, माँझी आदि नामों से अभिहित किया जाता है। आधुनिक यातायात के साधनों के विकास के पूर्व इस जाति का बड़ा महत्त्व था। सभी प्रकार के सामानों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना इस जाति का काम था। नदियों द्वारा सम्पन्न होने वाले व्यापार में मल्लाह महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। प्रयाग, बनारस आदि तीर्थ स्थानों में तीर्थयात्रियों को नौका मे बैठाकर स्नान आदि कराना आज भी मल्लाह करते हैं। मल्लाह और पंडों का तीर्थ स्थानों पर गहरा सम्बन्ध है। कुछ मल्लाह प्रयाग और काशी में तीर्थ-यात्रियों को सूर्य की पूजा[2] के लिए और गंगा आदि में दूध चढ़ाने के लिए नदी में खड़े होकर दूध भी बेचते हैं।

इन मल्लाहों का दूसरा पेशा मछली मारना भी है। ये आमतौर पर बड़ी नदियों के किनारे रहते हैं अतः जाल से मछली मारने का काम भी करते हैं। ये अच्छे तैराक होते हैं और इनमें से बहुत से मल्लाह नाव बनाने का काम भी करते हैं। किन्तु ट्रेनों, मालगाड़ियों तथा ट्रकों के विकास के कारण इनका नाव से सामान ढोने का काम लगभग ठप सा पड़ गया है। बहुत से मल्लाह खेत खरीद कर अब अच्छी खेती करने लगे है तथा नौका चलाने का पुराना व्यवसाय उन्होंने छोड़ दिया है। नाव से सामान ढोना व्यय साध्य है और समय साध्य भी। अत: मल्लाहों को लोग तभी काम देते हैं जब कोई विकल्प न हो। कुछ गरीब मल्लाहों ने पान, बीड़ी, गल्ला आदि की दूकानें कर ली हैं। कुछ शहरों में जाकर रिक्शा आदि चलाने का काम भी करने लगे हैं।

मिर्जापुर जिले में अगोरी के पास जहाँ रिहान्द तथा सोन नदी का संगम है, मल्लाहों की अच्छी बस्ती है। इलाहाबाद जिले में टोंस नदी के तट पर सिरसा में मल्लाहों का कभी मुख्य स्थान हुआ करता था।[3] सिरसा में गंगा और टोंस का संगम है। यहाँ मिर्जापुर और इलाहाबाद जिले के मल्लाहों में सम्पर्क रहता था। मिर्जापुर जिले में मल्लाहों की निम्नलिखित उपजातियाँ पायी जाती हैं: (१) मुड़िया (मुड़ियारी, (२) बंथवा या बघरिया, (३) चंइ, चैन या चैनी, (४) गुरिया या गोरिया, (५) तियार (६) सुरहिया या सोरहिया। बिंद, खरबिंद भी मल्लाहों की उपजातियाँ हैं।[४]

'लोरिकायन' के गायक ददई केवट ने केवट झीमल को 'बिन' (बिनवा)[५] भी कहा है। वाराणसी जिले में मल्लाह की जो उपजातियाँ पायी जाती हैं वे निम्नलिखित हैं:

(१) चैन (२) तेरा (३) मारवाड़ी (४) तेरुत (५) सरुया (६) गूर्द (७) कहार।[६]

विलियम क्रूक द्वारा दिये गये नामों में से वाराणसी जिले में अब कुछ नाम परिवर्तित हो गये हैं। उदाहरण के लिए अगरवाल को वाराणसी में मारवाड़ी भी कहा जाता है। 'सोरहिया' को सरुया कहा जाता है।

मल्लाहों का उद्गम

मल्लाह अपना सम्बन्ध निषादों से जोड़ते हैं जो विन्ध्याचल की पर्वत-श्रेणियों में निवास करते थे। निषध देश के राजा नल थे जिन्होंने विदर्भ की कन्या दमयंती का वरण किया था। यह निषध शायद विन्ध्याचल की पर्वत शृंखला में स्थित था। यह भी सुझाया गया है कि इन्हीं निषादों का एक वर्ग गंगा तट के श्रृंगवेर में रहता था जिसका उल्लेख रामायण में मिलता है।[७] इन निषादों ने राम की सेवा की थी।

विवाह प्रथा

मल्लाह अपनी जाति और वर्ग के अन्तर्गत विवाह करते हैं। अहीरों की भाँति इनकी जातीय पचायत अभी भी शक्तिशाली है। शादी-विवाह या अन्य प्रकार के जातीय झगड़े पंचायतों में अभी भी तय किये जाते हैं। पंचायत या जाति के निर्णय को न मानने वालों को जाति से बाहर कर दिया जाता है। जाति से बहिष्कृत व्यक्ति के यहाँ खाना-पीना बन्द कर दिया जाता है। विवाह या मृत्यु के अवसर पर बहिष्कृत परिवार का कोई साथ नहीं देता, न तो भोज के अवसर पर दंडित परिवार के यहाँ कोई भोजन करता है। यह दंड कठोर होता है अतः जाति की पंचायत का निर्णय प्रायः सबको मान्य होता है। जाति में मिलने के लिए बहिष्कृत परिवार को एक भोज भी देना पड़ता है।[८]

मल्लाहों में अहीरों की तरह पहले बाल-विवाह प्रचलित था पर यह प्रथा अब कम हो गयी है। जाति या वर्ग में विवाह मल्लाह प्रायः करते हैं पर सगोत विवाह उनमें नहीं होता। एक कुरी या गोत की कन्या या वर का अपनी कुरी या गोत में विवाह सम्पन्न नहीं होता। विवाह के पूर्व मल्लाह पंडितों से वर-कन्या की कुंडली दिखाते हैं। फिर 'वर छेकनी' होती है। 'वर छेकनी' एक प्रकार का वरक्षा या सगाई है। पुरोहित विवाह के पूर्व सगुन निकालते हैं। विवाह के पूर्व वर और कन्या को उबटन भी लगाया जाता है। इसको 'तेल उबटनी' कहते हैं। बारात के प्रस्थान के पूर्व वर के परिवार द्वारा गणेश की पूजा होती है। स्त्रियाँ वर को कुदृष्टि से बचने के लिए परिछन करती है। अन्य जातियों की भाँति मल्लाहों में भी वर-वधू का गठबंधन होता है। विवाह सिंदूरदान के बाद समाप्त होता है। कोहबर की प्रथा होती है। वर खिचड़ी भी खाता है।

सामान्यतः मल्लाहों में विधवा विवाह हो सकता है पर विधवा विवाह कम

होता है। आमतौर पर यदि पति का कोई छोटा भाई होता है तो विधवा की शादी उससे कर दी जाती है।

अन्य संस्कार

मल्लाहों में बच्चा पैदा होने पर छठे दिन छठी का संस्कार होता है। यदि लड़की पैदा होती है तो यह संस्कार आठवें दिन होता है। पुरोहित राशि का नाम देता है। पुकार का नाम घर वाले देते हैं। आठ साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु होने पर मल्लाह उन्हें ज़मीन में गाड़ते हैं। अन्य हिन्दुओं की भाँति मल्लाहों के यहाँ श्राद्ध संस्कार भी होता है।

धर्म

अन्य हिन्दुओं की भाँति मल्लाह राम, हनुमान, शिव, विष्णु आदि की पूजा करते हैं पर गंगा मैया की मान्यता मल्लाहों के यहाँ अधिक है। गंगा पापनाशिनी हैं, भवसागर से पार करने वाली हैं। मल्लाहों की अर्थ-व्यवस्था और आजीविका में गंगा का बड़ा योगदान रहा है। अतः स्वाभाविक रूप से उनकी मान्यता मल्लाहों में विशेष है। मिर्ज़ापुर के मल्लाह काली, भगवती, महावीर, महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा में विश्वास करते हैं।

ग्रामदेवता के रूप में मल्लाह डीह की पूजा करते हैं। मिर्ज़ापुर के मल्लाह पाँचों पीर की भी पूजा करते है। पाँचों पीर मे बहराइच के ग़ाजी मियाँ[१] भी शामिल हैं। कुछ मल्लाह गाज़ीमियाँ की मज़ार पर बहराइच भी जाते है। ओझइती, भूत-प्रेत, डाइन, चुड़ैल आदि में अन्य ग्रामीणों की ही तरह मल्लाह भी विश्वास करते हैं। मल्लाहों के अपने लोकगीत हैं, अपनी लोककथाएँ हैं, इन पर अभी तक किसी ने कार्य नही किया है। ये लोकगीत और कथाएं धार्मिक और लौकिक दोनों हैं।

शिक्षा

मल्लाहों का पारम्परिक व्यवसाय दिनों-दिन कम होता जा रहा है। अतः वे अपने बच्चों को विद्यालयों में शिक्षा के लिए भेजने लगे हैं किन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बहुत से मल्लाह बच्चों का अन्य ग्रामीणों की ही भाँति अच्छी शिक्षा नहीं दे पाते। यद्यपि तीर्थ यात्रियों के सम्पर्क में होने से काशी और प्रयाग के मल्लाह भारत के विभिन्न भागों के लोगों के बारे में काफी अच्छी जानकारी रखते हैं।

अहीर और मल्लाह

मिर्ज़ापुर में अगोरी के पास कुरुहुल, चोपन आदि में मल्लाह और अहीरों का सम्पर्क गहरा है। मल्लाह और अहीर इन इलाकों में साथ-साथ रहते हैं। ददई केवट अपने गुरु ददई अहीर के साथ पशुओं की चरवाही करते रहे। वहीं उन्होंने लोरिकायन सीखा। इसी प्रकार अहीर और मल्लाहों का गठबंधन राजनीतिक चुनावों

के अवसर पर भी हो जाता है। ये दोनों जातियाँ मिलकर काम करती हैं। इसीलिए अहीरों का लोक महाकाव्य या पँवारा सीखने में ददई केवट को कोई संकोच या कठिनाई नहीं हुई।

टिप्पणियाँ

१. देखिए, मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह', उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, हिन्दी समिति, लखनऊ, १९७२, पृष्ठ ४८०।

२. गंगा में स्नान करने के बाद लोग सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। अपनी अंजुलि में दूध और गङ्गाजल लेकर भक्त यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।

३. William Crooke, The tribes and castes of the North Western Provinces and Oudh; Calcutta, 1896, p 461.

४. वही, पृष्ठ ४६२।

५. देखिये 'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ ३४५।
"बिनवा देलेसि नइया रे उतारी"

६. प्रस्तुत सूचना विस्कांसिन विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी जेम्स बी० वेल्फार्ड द्वारा लिखे गये एक निबन्ध से ली गयी है। श्री वेलफोर्ड ने वाराणसी मे जाकर 'फील्ड वर्क' किया था। यह निबन्ध मुझे प्रोफेसर जोसेफ एल्डर के सौजन्य से प्राप्त हुआ था, अतः लेखक उनका आभारी है।

७. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये, William Crooke, The tribes and castes of the North Western Provinces and Oudh Calcutta, 1896 p. 461.

८. 'लोरिकायन' में चंदा का बाँठा के प्रति झुकाव होने के कारण बिरादरी उसके परिवार को दंडित करती है। चौधरी के कहने पर परिवार को क्षमा किया जाता है। चंदा के पिता को इसीलिए बिरादरी को भोज देना पड़ता है (देखिये 'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ २४८ से २५१ तक)। चंदा के माता-पिता अहीर हैं पर बिरादरी की पंचायत मल्लाह तथा अन्य कई जातियों में भी सशक्त है। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों मे यह जातीय पंचायत उतनी सशक्त नहीं है।

९. गाज़ी मियाँ—महमूद गज़नवी (मृत्यु १०३० ई०) के समय में भारत आये थे। वे हिन्दुओं से लड़ते हुए मारे गये थे। उत्तर प्रदेश के बहराइच में उनकी कब्र है। गाज़ी मियाँ सैयद सालार मसूद गाज़ी का संक्षिप्त रूप है। उनके मज़ार पर हिन्दू-मुसलमान दोनों मनौती मनाने जाते हैं।

□ □

'लोरिकायन' की कथा का उद्गम और भौगोलिक विस्तार

लोरिकायन की कथा का उद्गम और विस्तार पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कानपुर से लेकर पूर्व में बिहार में मिथिला तक पाया जाता है। उत्तर में नैपाल की सीमा गोंडा से लेकर दक्षिण में छत्तीसगढ़ तक इसके गायक फैले हुए हैं। भारत में ऐसा कोई अन्य लोकमहाकाव्य नहीं है जिसका इतना विस्तार हो। संभवतः अहीर जाति जहां-जहां जाकर बसती गयी वहां-वहां लोरिकायन का भी प्रचार होता रहा, पर यह कहना कठिन है कि लोरिकायन का उद्गम कहां हुआ। उसके भौगोलिक स्थानों को ठीक-ठीक निर्धारित कर पाना संभव नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि एक ही नाम के कई स्थान उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ में पाये जाते हैं। हर गायक अपने निकट के कतिपय स्थानों को 'लोरिकायन' की कथा से जोड़ देता है। मिर्जापुर जिले के प्रस्तुत गायक ददई केवट ने मुझे बताया कि अगोरी, गउरा, हल्दी, नेउरी आदि सभी स्थान मिर्जापुर जिले में हैं। इसी प्रकार बिहार के पटना जिले के गायक सुक्खूदास यादव ने गया के आसपास के कई स्थानों को 'लोरिकायन' की कथा से सम्बद्ध बताया। इलाहाबाद जिले के गायक रामअवतार यादव के पाठ में सारी घटनाएं बेतवा नदी के तट पर घटित होती हैं। लोकमहाकाव्य के गायकों की भौगोलिक दृष्टि प्रायः सीमित होती है। अधिकांश गायक दूर के स्थान के सम्बन्ध में बस इतना ही बताते हैं कि अमुक स्थान पूरब में है या पश्चिम में है। स्थानों के नाम भी लोकमहाकाव्यों में बदल जाते हैं। उदाहरण के लिए पटना जिले के पाठ में लोरिक का जन्मस्थान गउरा कनउजा हो गया है। लोरिक की पत्नी मंजरी का जन्मस्थान अगोरी अगवढ़ी हो गया है। इन सारी कठिनाईयों के होते हुए भी लोरिकायन के कुछ स्थानों की भौगोलिक स्थिति के सम्बन्ध में कुछ संकेत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए इस बात के सकेत मिलते हैं कि लोरिक का जन्मस्थान गउरा देवहा नदी के तट पर होना चाहिए। यद्यपि इसके लिए निश्चित रूप से ऐतिहासिक अथवा पुरातात्विक प्रमाण दे पाना कठिन है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के गायक प्रायः बलिया जिले में देवहा के किनारे गउरा की भौगोलिक स्थिति इंगित करते हैं। बलिया पूर्वी उत्तर प्रदेश में २५°-४३ उत्तर (अक्षांश) तथा ८४''११ पूर्व (देशान्तर) पर स्थित है। पटना जिले के सुक्खूदास यादव ने बताया

पच्छिम देसवा ओही कासी परयाग
जेकर बगलवा में बहै सरयूजी के धारा रे राम

जेकर बगलवा में बसे कनउजपुर गाँव[१]

यह कनउजापुर अन्य पाठों में वर्णित लोरिक का जन्मस्थान गउरा है। गायक ने स्वयं भी अपने गायन में इस कनउजापुर को गोउरवा[२] कहा है। बलिया के शिवनाथ चौधरी के पाठ में गउरा का उल्लेख अनेक स्थलों पर आया है।

उतर बहल मय देवहा दखिन गंगा दरे ललकार
बीचे झील बहल सरजू के जाके मीलल बलिया मोहान
वलिया भटपुर वसे परगना बोहियापुर डंडार
ऊंचे चउर ब्रम्हाइनि नीचे गजन गउर गढ़पाल[3]

लोरिक की कथा पर आधारित एक आधुनिक पाठ में जिसके रचयिता महादेव सिंह हैं गउरा की स्थिति सुरहा झील के पीछे बतायी गयी है।

बायें बहे सरजू दहीने बहेली गंगा माय
ओही नीचे बसल बा गउरा गुजरात
तेकरा तो पीछे बहेला सुरहा के दरीआव[४]

महादेव सिंह द्वारा रचित पाठ 'चानवाँ का उद्धार' १९३८ में भार्गव पुस्तकालय, गायघाट बनारस से प्रकाशित हुआ था। यद्यपि यह पाठ परम्परागत नहीं है तब भी इतना अवश्य प्रतीत होता है कि महादेव सिंह ने किसी परम्परागत गायक से कहानी सुनकर अपने काव्य की रचना भोजपुरी में की है[५] जिसमें गउरा सरजू और गंगा के बीच में स्थित बताया गया होगा। वास्तव में देहवा और सरजू एक ही नदी के दो नाम हैं।

बनारस के पांचू भगत के पाठ में यह संकेत मिलता है कि लोरिक का जन्म-स्थान देवहा के किनारे था

जव देवहा के किनारे गइलैं
हनि के एड़ा वीर लोरिक मरलैं
आरे करार गिरल भहराय[६]

लोरिक की पत्नी देवहा के तट पर सत का सुमिरन करती है और देवहा का पानी सूख जाता है

'आरे मंजरी घींचि कै मैं मतवा देववहा में मारि रे देलैं
आरे देवहा क पनिया रे मइया मो गयल बाड़ैं ना रे झुराय'[७]

मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ में मंजरी बेवरा नदी में सती होना चाहती है। बेवरा नदी गायक के एक छंद के अनुसार, लगता है, सरजू नदी ही है :

"हमहूँ करीं असननवा बेवरा में
अइसन लेंइय जलवा में नहरेवाइ
जब हम एकइन बपवा के होवइ बिटिया
के फेरि एकइ पुरुसवा के बहुरे यारि

बरम्हाजी छोड़ि दह खंगरवाजे सरजू से
हमहूँ जे लेइ में सतियवा जे होइ रे जाब"[८]

बेवरा नदी पार कर लोरिक चनवा के साथ हल्दी जाता है। इससे भी पता चलता है कि लोरिक की जन्मभूमि के पास बेवरा नदी है।

"अहीरा खेवत ना ओठियन परि रे कइले
बेवरा उतरि गउ्यल बा ओहि रे पार"[९]

बेवरा के तट पर चनवा का पति सिवहरिया लोरिक से लड़ाई करता है।[१०] किन्तु मिर्जापुर के पाठ में एक कठिनाई यह है कि सोन नदी को भी गायक बेवरा नदी कहता है

आजु कहैं बारहना पलिया बा अगोरी
तिरपन कसकलि बानीय ना लिए जाई
तव केनि घुमि घुमि ना खोजिलह्भउ्यने
तब फेरि बेवरवाह बाइ रे सोन।[११]

बेवरा का अर्थ विकट नदी भी हो सकता है विकट से बेवरा बन जाना असंभव नहीं है। किन्तु कठिनाई यह है कि अन्य कुछ गायक भी बेवरा को एक नदी के रूप में चित्रित करते हैं। बेवरा नदी सोनभद्र नदी के पास है इसका संकेत एक स्थान पर शिवनाथ चौधरी के पाठ में भी मिलता है

"सोनभद्दर में जेवन नद्दी बहल रहल ओही बेवरा पर बरात टिकल रहल"।[१२]

यद्यपि बेवरा की स्थिति स्पष्ट नहीं है तथापि इसका उल्लेख प्राय: सभी पाठों में मिलता है। यदि बेवरा की स्थिति का ज्ञान हो जाय तो लोरिकायन की भौगोलिकता पर कुछ अधिक स्पष्टता से प्रकाश पड़ सकता है। पर एक बात अधिक स्पष्ट प्रकट होती है कि गउरा सरजू और गंगा नदी के बीच में कोई स्थान रहा होगा। इस सरजू को देवहा कहा जाता था। १३७९ ई० में लिखे गये मौलाना दाउद कृत चांदायन में भी गोबर (लोकमहाकाव्य का गउरा) देवहा नदी के तट पर है। चंदायन के छन्द ३८१ में गोवर हल्दी से बीस कोस है, एक प्रति में यह तीस कोस है। चंदा के साथ लोरिक वहाँ हल्दी से बीस दिन में वापस आता है। देवहा के तट पर लोरिक के आने का समाचार पाकर लोगों को भय होता है।

कोस वीस तेहिं गोवरां लागइ
उतर देवहाँ लोग डरि भागइ
घर घर गोवराँ बात जनाई
देवहाँ कौन उतरिगा आई[१३]

घाघरा नदी को जिसका एक नाम बड़ी सरयू है, उत्तर प्रदेश के बलिया तथा देवरिया जिले में देवहा कहते हैं। बिहार के कुछ भागों में भी इसको देवहा कहते हैं।

इसका उल्लेख इम्पीरियल गज़ेटियर आफ इंडिया, बंगाल, भाग १, कलकत्ता १९०९, पृष्ठ २१० पर मिलता है।

Gogra (ghagra) Skt (संस्कृत) Gharghara = rattling or laughter; other names Sarju or Saryu (the Sarabos of ptolemy एक ग्रीक यात्री का नाम) and in the lower part of its course Deoha or Dehwa.[१४]

घाघरा नदी तिब्बत ३०'४० उत्तर ८०°-४८ पूर्व से निकलती है। नेपाल में इसे कर्नाली या कोरियाला कहते हैं। यह नदी उत्तर प्रदेश में खेरी या बहराइच में प्रवेश करती है। गोरखपुर, देवरिया के पूर्व में यह सारन (बिहार) और बलिया (उत्तर प्रदेश) में प्रवेश करती है और गंगा में बलिया जिले में २५° ४० उत्तर और ८४° ८२ पूर्व में मिल जाती है।[१५]

बलिया में घाघरा या सरयू को देवहा आज भी कहते हैं। गंगा और देवहा के बीच गउरा की स्थिति अनेक गायक बताते हैं। मौलाना दाउद की कृति 'चंदायन' (१३७९ ई०) से यह बात प्रकट होती है कि गउरा 'देवहा' के तट पर है। अतः गउरा कहीं बलिया जिले में होना चाहिए। बलिया में ब्रह्माइन है, सुरहाताल है जिसका उल्लेख कई गायक गउरा के प्रसंग में करते हैं। बलिया जिले में ब्रह्माइन, बसंतपुर, जीराबस्ती, गोठहुली, बोहा आदि में आज भी लोग लोरिक की कथा से अपने गांवों का सम्बन्ध जोड़ते हैं। बलिया जिले में बोहा में एक संवरूबान्ह है जिसका सम्बन्ध लोरिक के भाई संवरू से जोड़ा जाता है। कहते हैं ब्रह्माइन की भगवती लोरिक की सहायता करती थीं। ब्रह्माइन में भगवती का एक पुराना मन्दिर भी है। लोरिक की कथा से तादात्म्य स्थापित करने वाले गांव बड़ी संख्या में बलिया जिले में पाये जाते हैं। चंदायन, गायक और लोक परम्पराओं के प्रमाणों को एकत्र करने पर यह संभावना अधिक प्रबल हो जाती है कि लोरिक की जन्मभूमि बलिया में रही होगी और यहीं से यह कथा विकसित होते हुए अन्यत्र गयी होगी।

अगोरी

गउरा की भाँति मंजरी की जन्मभूमि अगोरी भी गायक ठीक-ठीक इंगित नही कर पाते। पटना के गायक सुखूदास ने केवल इतना ही मुझे बताया कि अगवढ़ी (अगोरी) भदवखरी नदी पार करके जाया जाता था।[१६] महादेव प्रसाद सिंह के आधुनिक पाठ[१७] के अनुसार अगोरी गंगा नदी के पास था।[१८] बनारस के गायक पांचू भगत मंजरी की कथा के प्रसंग में अगोरी का उल्लेख करते हैं पर वह किस नदी के किनारे है वह इसका संकेत नही करते। इलाहाबाद के गायक राम अवतार[१९] के पाठ के अनुसार वह बेतवा के तट पर था। पर मेरे कतिपय गायक अगोरी के साथ सोनभद्र नदी का उल्लेख करते हैं। प्रस्तुत पाठ में अगोरी की स्थिति का उल्लेख करते हुए गायक ददई मल्लाह कहते हैं "लोरिक की बारात अगोरी जा रही है वह सोनभद्र के उस पार है।"

आजु कहैं जातिय बरतिया जे बाइ अगोरीयाँ
अउ फेरि सोनइ भदरवा जे ओहि रे पार[२०]

ददई मल्लाह अगोरी के पास के थे अतः अगोरी को महत्त्व देना उनके लिए स्वाभाविक ही है। बलिया जिले के शिवनाथ चौधरी के पाठ में अगोरी का उल्लेख सोनभद्र नदी के साथ आता है :

नउ नदी नव गंडा तीन सै तेरह डांके के बाटे पहाड़
नारा नूरी के केवन गनती सोनभदर उतरि जाइ पार
आजु एनियां लमहरि डहरिया रहल कीलवा के
आजु बीरवा के अगोरिया में परलैं विवाह[२१]
....

अब बीर चीन्हि न गइलन सोनभद्दर
चलि गइलें रइनि अगोरिया पाल[२२]

बलराम पुर गोंडा के गायक ओरीलाल के पाठ में मंजरी सोन-सागर पर स्नान करने जाती है किन्तु यह सोन-सागर सोनभद्र नदी है ऐसा प्रतीत नहीं होता।

आरे, चला न चली हो सोने सगरा सगरेकइ करी स्नान[२३]

मिर्जापुर जिले में अगोरी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अगोरी के पास के गायक 'संवरू का विवाह' के बजाय 'लोरिक का विवाह' पहले गाते हैं। उनका कहना है कि मंजरी अगोरी की थी और कथा वीर लोरिक की है अतः हम पहले लोरिक और मंजरी के विवाह का प्रसंग गाते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के गायक पहले 'संवरू का विवाह' गाते हैं, क्योंकि वह लोरिक के बड़े भाई लगते थे।

अगोरी का राजा एक दुष्ट क्षत्रिय राजा था। उसका नाम मोलागत था। वह अपने राज्य की कन्याओं का अपहरण करवाता था। अगोरी और उसके आसपास लोरिक और मंजरी के विवाह की गाथा काफी प्रचलित है। अगोरी में रिहन्द तथा सोननदी का संगम भी है। मिर्जापुर से ६२ मील दक्षिण पूर्व में अगोरी का किला और उसके ध्वंसावशेष अभी भी वर्तमान हैं। किले के एक भाग में फारसी का १०२६ हिजरी (१६१६ ई०) का शिलालेख भी है। इस भाग को माधव सिंह ने बनवाया था जो राजा मदनशाह के भाई थे। हिजरी १०२६ में अगोरी चुनार सरकार के अन्तर्गत था।[२४] कहते हैं कभी अगोरी वाराणसी की भाँति बड़ा था। यहाँ खरवार जाति के बलंद राजाओं का आधिपत्य था। तेरहवीं शताब्दी में महोबा के चंदेलों ने इन्हें भगाकर अगोरी पर अधिकार कर लिया था। बाद में बलंद राजा घाटम ने विजयपुर के गाहड़वाल राजाओं की सहायता से फिर उसे हस्तगत कर लिया।[२५] किन्तु अगोरी के इतिहास में दुष्ट राजा मोलागत का कहीं उल्लेख नहीं आता। यद्यपि वीर लोरिक से लड़ने के लिए 'लोरिकायन' में मोलागत पश्चिम के बघेल, दक्षिण के कोल, उत्तर के रक्सेल तथा पूर्व के राजाओं को अपनी सहायता के लिए आमंत्रित करता है।

हथवा में लेनह् कलमियाह् मसि रे हान
आजु कहैं लीखई ना पतियाह् चारि रे कोने
पहिलेह् भेंजरा ना पतिया बा लेई रे पछिवां
जाइ कनि नेवतइं ना सुबवाह् बाइ बघेला
अब जेन बानह् तुपकिया में बरि रे याऽर
दुसरी पातीय दाखिनवाँह् कइ ए लीखऽ
पतियाह् देलह् दाखिनवां में दव रे राई
आजु भाइ नेवतइ ना सूबवाह् रे कोरइया
जब जेन बानह् ना तं रवा में वरि रे यारऽ
आजु कहैं नेवतइ ना सुववाह् रे पुरुबहा
अब जेन बानह् ना लोहवा में बरि रे याऽरय
आजु कहैं उत्तर ना देसवाँह् पाती रे गइलीं
रजवाह् नेवतइ ना जहियाह् रकरे सेलाऽ
जेनकर बारह ना मनवा के गीरइ रे सेलाऽ[२६]

सोन (शोण) नदी[२७] अभी भी अगोरी के पास बहती है। वह अमरकंटक (२२°४२ उत्तर ८२°४ पूर्व) की पहाड़ियों से निकलती है। मध्य प्रदेश में बिलासपुर से होते हुए रीवा (२३°६ उत्तर ८१°५८ पूर्व) में प्रवेश करती है। सोन महानदी के साथ भी संगम बनाती है। शोण का भारतीय साहित्य में बड़ा महत्त्व था। कभी पाटलिपुत्र (पटना) में गंगा और सोन का संगम था।[२८]

मेरे कुछ गायक अगोरी और सोनभद्र के घाट का उल्लेख करते हैं जहाँ अपने शत्रु मोलागत और उसके सहायकों को पराजित कर लोरिक मजरी के सम्मान की रक्षा करता है। क्षत्रिय राजा मोलागत का संहार कर विवाहिता मंजरी के साथ बीर अहीर लोरिक गउरा वापस आता है। किन्तु इस घटना का किसी इतिहास में या अन्यत्र उल्लेख नहीं है। गउरा के सम्बन्ध में चंदायन (१३७८ ई०) का यह प्रमाण कि वह देवहा के किनारे था, कुछ अधिक पुष्ट है। अगोरी, मोलागत आदि के सम्बन्ध में लोकमहाकाव्य तथा स्थानीय मौखिक परम्पराओं से प्राप्त प्रमाणों के अतिरिक्त लोरिक की अगोरी की लड़ाइयों और उसके मंजरी से विवाह के सम्बन्ध में कोई अन्य प्रमाण नहीं मिलते।

अगोरी से कुछ दूरी पर स्थित मारकुण्डी में एक पत्थर है जिसको लोरिक ने दो भागों में खंडित किया था।[२९] पर यह कथा भी लोक परम्परा में ही प्राप्त होती है। ददई केवट के अनुसार ३ महीने तेरह दिन में अगोरी से लोरिक की बारात गउरा वापस आती है।[३०] इलाहाबाद के पाठ के अनुसार पाँच दिनों में अगोरी से लोरिक गउरा वापस आता है। किन्तु इलाहाबाद के पाठ 'चनैनी' में सारी घटनाएं बेतवा के तट पर घटित होती हैं। पर इसमें संदेह नहीं कि लोरिकायन की कथा का

अगोरी से गहरा सम्बन्ध है। सभी गायक अगोरी और लोरिक-मंजरी के विवाह का प्रसंग उल्लास सहित गाते हैं।

हल्दी

लोरिक सुहवल तथा अगोरी की लड़ाईयों के बाद गउरा वापस आता है तथा पास के राजा सहदेव की लड़की चनवा से प्रेम करने लगता है। फिर उसको लेकर हल्दी भाग जाता है। सर्वे आफ इंडिया की सूची के अनुसार उत्तर प्रदेश में ६ तथा बिहार में २ हल्दी हैं।[३१] लोरिकायन का हल्दी कौन है यह प्रश्न जटिल है। कुछ गायक हल्दी को बंगाल देश में बताते हैं। शिवनाथ चोधरी के अनुसार हल्दी पूरब देश बंगाल में था :

"अब चनवा संगवै ना वीर कान बाटे लगावत
अब चन्नल पुरुबे देसवा रे बंगाल"[३२]

लोरिक कहता है :

"एगो हम तिरिया मंगे लगाय के
जात रहलीं ह पूरब देस बंगाल"[३३]

शिवनाथ चोधरी के पाठ के अनुसार हल्दी पहुँचने के पूर्व चनवा को सांप डसता है।[३४] शिव पार्वती आकर उसकी रक्षा करते हैं। हल्दी पहुँचने के पूर्व लोरिक और चनवा बेवरा नदी पर पहुँचते हैं :

(अ) "अब भइया सुनिलऽ खेला न अलबेल्हा
अब मोर पहुँचत वेवरवा पर बाइ"[३५]

(ब) "ईत अब अंगवा नदी ना परि गईल नाहीं नाव लवकत नदिया में बाय
सइयां तनी बइठि जा वेवरा पर तनी डंफ उगे सुरुज ललकार"[३६]

इसी प्रसंग में गायक इस नदी को खैरी नदी भी कहता है :

"अगवां परि गइल नदिया जो खैरी अवही त साफ होते नाहीं बाय"[३७]

बेवरा नदी से हल्दी की दूरी अधिक नहीं है। चनवा लोरिक से कहती है :

"अव ईहे थोरे दूर गउवां बाटे हरदी,
हरदी क किलवा लेलीं जा नियराय"[३८]

पटना जिले के सुक्खूदास यादव के मगही पाठ के अनुसार हल्दी के पास में बिरजइन नदी थी।[३९] उसको पार करके नेउरापुर जाया जाता था। हल्दी से घोड़ा मंगर पर बैठकर लोरिक नेउरापुर गया था और उसने वहाँ के राजा को पराजित किया था। यह लगभग प्रत्येक पाठ में पाया जाता है। मगही के एक अन्य पाठ में जिसका संग्रह जार्ज ग्रियर्सन ने कराया था खैरा नदी पार करके हल्दी जाया जाता था।[४०]

ददई केवट के प्रस्तुत पाठ में भी बेवरा नदी पार करके लोरिक हल्दी जाता है, किन्तु गायक ने मुझे बताया कि हल्दी मिर्जापुर जिले में है। बलिया के एक गायक श्री रामसकल यादव[४१] के अनुसार हल्दी बलिया जिले का हल्दी है।[४२] बलिया का हल्दी चेर और हैहयवंशी क्षत्रियों का केन्द्र था।[४३] महादेव प्रसाद सिंह के पाठ के अनुसार शिवनाथ चोधरी के पाठ की ही भाँति हल्दी बंगाल देश में था।

नगीचे बसल बा पुरुब हरदी देस बंगाल
उहवां के राजा, महुअरि जतिया के हउवे मसान[४४]

इस आधुनिक पाठ में हल्दी जाने के रास्ते में पहले लोरिक बक्सर में गंगा पार करता है फिर बेवरा नदी पार करता है।

करि दतुअनियाँ नदी बेवरा में बीर नहाय
धोती तो बदलि के सुरूमा हो गइल तइयार[४५]

पटना के गजेटियर के १९०७ के संस्करण में यह उल्लेख मिलता है कि सोननदी हरदी छपरा में गंगा से मिलती है।[४६] हरदी छपरा पटना जिले में दिनापुर और बाँकीपुर के पास है। १७७२ ई० के एटलस के अनुसार गंगा और सोन का संगम मनेर के पास था।[४७] यदि सोन नदी ही बेवरा नदी है तो हरदी-छपरा, मनेर और दिनापुर के पास अर्थात् पटना जिले में कहीं हरदी (हल्दी) होनी चाहिए। यदि घाघरा (देवहा) को बेवरा कहा जाता था तब भी बलिया जिले के पूर्व में हल्दी होनी चाहिए। बिहार और बंगाल मध्य युग में पृथक् नहीं थे। मौलाना दाउद के चंदायन (१३७९ ई०) के अनुसार हल्दी से गोवर (गउरा) बीस कोस है। चंदायन के मैन-चेस्टर वाली प्रति में यह दूरी तीस कोस बतायी गयी है।[४८] 'चंदायन' में हल्दी जाने के लिए लोरिक और चंदा गंगा पार करते हैं। चंदायन में इस गंगा पर ही चनवा का पति बावन (लोकमहाकाव्य का सिवहरिया) आकर लोरिक से युद्ध करता है और वह पराजित होता है। लोक परम्परा के कई पाठों में चनवा का पति बेवरा नदी पर आकर लोरिक से युद्ध करता है और परास्त होकर वापस लौट जाता है। ये सारी परिस्थितियां यह संकेत करती हैं कि लोरिकायन का हल्दी गंगा तथा घाघरा (देवहा) या गंगा-सोनभद्र के संगम के पास कहीं रहा होगा। ये नदियां अपनी धाराएं बदलती रही हैं। उदाहरण के लिए पहले संभवतः घाघरा (देवहा) और गंगा का संगम बलिया जिले में सुरहाताल के पास था।[४९] १८४० ई० में यह संगम बिहार के छपरा जिले से ९ मील पश्चिम हो गया।[५०] इसी प्रकार सोन भी पहले बिहार के मनेर में गंगा के साथ संगम बनाती थी। अब यह संगम पटना जिले में हरदी-छपरा के पास है। जो भी हो इतना तो स्पष्ट है कि गंगा, घाघरा (देवहा) सोन के संगम के आस-पास ही कहीं लोरिकायन की कथा विकसित हुई होगी। सुहवल नेउरापुर, पीपरी तथा अन्य स्थान जिनका उल्लेख लोरिकायन में आता है इन्हीं नदियों के आसपास रहे होंगे।

टिप्पणियाँ

१. सुक्खूदास का मगही का पाठ मैंने १९६७ में संगृहीत किया था। १८ अप्रैल १९६७ को उन्होंने बताया कि सरयू के किनारे लोरिक का जन्मस्थान 'कनउजा' है। गायक अपने पाठ में इसको गोउरवा भी कहता है।

२. तब न तो बुढ़वा कुबजू गोउरवा डगरि नियाहीं चलंल ये जाय [कुबजू लोरिक के पिता का नाम है वे गोउरवा (गउरा) के रास्ते पर जा रहे हैं।]

३. शिवनाथ चौधरी बलिया जिले के उजियार भरौली के रहने वाले थे। उनकी मृत्यु १६८२ में हुई। उनका पाठ मैंने १६६६ में संगृहीत किया था। मेरे संग्रह का टंकित पाठ, भाग १ पृष्ठ २६५.

४. चानवां का उद्धार, लेखक महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १६३८, पृष्ठ १५६। महादेव प्रसाद सिंह का लोरिकायन कई खण्डों में प्रकाशित हुआ था। कुछ भाग श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, कलकत्ता तथा कुछ भाग बनारस के भार्गव पुस्तकालय गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुए थे।

५. महादेव प्रसाद सिंह ने लोरिकायन में स्वयं बताया कि गायकों की कथा सुनकर उन्होंने अपने काव्य की रचना की है। महादेव सिंह ने स्वयं कहा है कि किस्सा पुराना है इसको हम नया विस्तार दे रहे हैं।

जहां जैसन देखेले तहां तैसन देले लाके मिलाय
महादेव सिंह यह पंवारवा लिखे बनाय
अपना जुगुती से रचि के करे ले तइयार
किस्सा ह पुराना लेकिन नया ह विस्तार

—चानवां का उद्धार, बनारस, १६३८ पृष्ठ ५१।

लगता है महादेव सिंह ने किसी इन्द्रासन साहु से लोरिकायन सुना था फिर अपने ढंग से उसे भोजपुरी में लिखकर किताब छपवाई थी—

गावे ले इन्द्रासन साहु लोरिकवा गुन ये बाद
सेहु तो लोरिकवा ये भइया कितबवा दिहीं ले छाप
सब तो पंवरवा ये भइया लिखली हो बनाय
महादेव सिंह ये लिख ले क्षत्रिया अब ये तार

लोरिकायन (प्रथम भाग), महादेव सिंह, मुकाम नाचाप, जिला आरा, श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, सूतापट्टी, कलकत्ता, १६५४ ई० (६ वीं बार), पृष्ठ ६।

६. लोकमहाकाव्य लोरिकी सम्पादक श्याममनोहर पांडेय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, १६७६ ई०, पृष्ठ १८४।

७. वही, पृष्ठ ३४७।

८. देखिये ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ ३५०।

९. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ २८०।

१०. वही, पृष्ठ २८१।

११. वही, पृष्ठ २१।

१२. मेरे संग्रह के टंकित पाठ के भाग २ के पृष्ठ ३७ पर यह उदाहरण है।

१३. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सम्पादक, माता प्रसाद गुप्त, आगरा, १९६७ छंद ३८१।
१४. Imperial Gazetteer of India, Bengal, by L S. S. O'malley, Vol. I, Calcutta 1909 पृष्ठ २१०।
१५. वही, पृष्ठ २१०।
१६. १८ अप्रैल १९६७ को बातचीत के दौरान गायक सुक्खूदास ने यह बात बतायी।
१७. महादेव प्रसाद सिंह के पाठ के लिए देखिये टिप्पणी संख्या ५।
१८. दुःखी मंजरी गंगा में जाकर अपना प्राण त्याग देना चाहती है क्योंकि उसके लिए कहीं योग्य वर नहीं मिल रहा था। मंजरी कहती है—'गंगाजी में प्राणवां तेजे सुरलभवा होई हमार' लोरिकायन, मंजरी का विवाह, कलकत्ता, तिथि नहीं है, पृष्ठ ४१।
१९. देखिये लोकमहाकाव्य चनैनी, सम्पादक श्याममनोहर पाण्डेय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, १९८२।
२०. देखिये ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १४०।
२१. शिवनाथ चौधरी (श्रीनाथ चौधरी) इनका पाठ मेरे संग्रह में है टाइप किये हुए पाठ के भाग २ पृष्ठ १२ पर यह उद्धरण है। १९६६ ई० में मैंने यह पाठ संगृहीत किया था।
२२. वही, पृष्ठ १७।
२३. ओरी लाल, गोंडा जिले के गुजर पुरवा के रहने वाले हैं। बलराम गोंडा में मैंने १९६७ में उनके पाठ की रिकार्डिंग की थी। यह पाठ मेरे संग्रह में है।
२४. विस्तार के लिए देखिये मिर्जापुर का डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर Mirzapur, (A Gazetteer) by Drake Brockman, 1911, में अगोरी सम्बन्धी सूचनाएँ विस्तार से दी गयी हैं, देखिये पृष्ठ २५१ से २५८ तक।
२५. वही, मिर्जापुर गज़ेटियर, पृष्ठ २५२।
२६. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १११।
२७. सोननदी के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए देखिये — Imperial Gazetteer of India, Bengal, Vol. I Calcutta 1909, पृष्ठ २११-१३। सोन नदी के सम्बन्ध में Patna (Bengal District Gazetteers) by L. S. S. O'malley, Calcutta 1907, पृष्ठ ५ भी देखिए। पटना के इस गज़ेटियर को १९२४ में J. F. W. James ने संशोधित किया था।
२८. Imperial Gazetteer of India, Bengal, पृष्ठ २१३।

२६. मारकुंडी में लोरिक द्वारा खंडित किये गये पत्थर का उल्लेख मेरे गायक ददई केवट ने किया है। पत्थर को लोरिक दो टुकड़ों में करता है और मंजरी उस पर अपना सिंदूर छिड़क देती है।

ओहि घड़ी खींचत ना खंड़िया जे बाइ दो गाही
खींचिकनि मारत बीचेह् रे तर रे वारि
....
पलकी से निकललि ना धियवा वा महरे कय
जेकर धिक भयल पसीनवा जे देख रे बाय
उहे भाई सेनूर महितव जे काछिए लिहलेन
घुमि घुमि छिरकति पाथरवा जे पर रे वाय

ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १५७

मारकुंडी के पत्थर का उल्लेख Folksongs of Chattisgarh में वेरियर एलविन तथा The tribes and castes of the North-Westen Provinces and Oudh में W. Crooke ने भी किया है।

३०. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ पृष्ठ १५८
बीति गयल तीनिय महिनवांह् तेर रे रोजय
तेरहे के आइलि ना डंड़ियाह् रे पहुँची।

३१. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सम्पादक परमेश्वरी लाल गुप्त, बम्बई १९६४, पृष्ठ २९६।

३२. मेरे संग्रह के टंकित पाठ से उद्धृत।

३३. शिवनाथ चौधरी का पाठ मेरे संग्रह में है।

३४. सर्पदंश का प्रसंग मौलाना दाउद कृत चंदायन (१३७९ ई०) में भी है। चंदायन में शिव-पार्वती नहीं, गारुड़ी सांप झाड़ने वाला ओझा चंदा का सर्पदंश ठीक करता है।

३५. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३६. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३७. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३८. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३९. सुक्खूदास (जिला पटना) से हुई १८ अप्रैल १९६७ की बातचीत

४०. यह इंडियन आफिस लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित है। इंडियन आफिस की श्रीमती उषा त्रिपाठी से मुझे इस पाठ की सूचना मिली। लेखक उनका आभारी है।

४१. रामसकल यादव बलिया जिले के बरम्हाइन हनुमानगंज के रहने वाले हैं। उनका पाठ मेरे संग्रह में सुरक्षित है। १९६६ में मैंने उनका पाठ संगृहीत किया था।

४२. रामसकल यादव से प्रस्तुत लेखक की बातचीत १६६७ में फिर १६८२ में हुई। उन्होंने यह सूचना दी कि हल्दी बलिया जिले का हल्दी है जो गंगा के तट पर है। हल्दी राज्य मध्ययुग में काफी प्रसिद्ध रहा है।

४३. बलिया जिले के हल्दी के सम्बन्ध में ए० फरर ने लिखा है कि यह बलिया तहसील में गंगा के दाहिने तट पर बलिया से दस मील की दूरी पर है। यहाँ १६४३ ई० का एक किला था, जिसे १६४३ ई० में धीरदेव ने बनवाया था। शाहाबाद जिले में बिहियां के हैहयावंशी और चेर राजाओं के संघर्ष प्रसिद्ध हैं। हैहयवंशी राजपूतों का गढ़ बलिया का हल्दी भी था। हल्दी के एक राजा रामदेव ने भंड़सर की स्थापना ११वीं शताब्दी में की थी। हल्दी और बिहिया के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये—

1. The antiquarian remains in Bihar by D. R. Patil, Patna, १६६३ पृ० १७०, पृ० ५५.
2. The monumental antiquities & inscriptions in the N. W. Provinces & Oudh, by A Furher, (reprint) Varanansi, १६७० पृ० १६२.
3. Ballia (District Gazetteer) by H. R. Nevill, Allahabad १६०७. शाहाबाद के चेरु राजाओं का हरिहोवंश (हैहयवंशी) के राजपूतों से संघर्ष होता रहा। इसका उल्लेख History of Bengal, (Muslim period १२००-१५५७) Jadunath Sarkar, Patna, १६७३ पृष्ठ १७१ पर भी है। इन चेरुओं और हरिहोवंशी क्षत्रियों का सम्बन्ध हल्दी से भी था।

चेरों का सम्बन्ध आदिवासी कोलों से था, इसका उल्लेख मिर्जापुर के गजेटियर में भी आता है। यदि चेर कोल थे तब यह बात महत्त्वपूर्ण बन जाती है। मृत्यु के पहले लोरिक की लड़ाइयाँ कोलों और भीलों से हुई। चेरों शाहाबाद, तथा गंगा के तट पर बलिया, पटना आदि में वर्तमान थे।

चेरों के सम्बन्ध में देखिये Mirzapur (a Gazetteer) by Drake Brockman, Allahabad १६११, पृष्ठ १०८।

४४. चानवाँ का उद्धार, महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १६३८, पृष्ठ ३४।

४५. वही, पृष्ठ ११६।

४६. Patna (Bengal District Gazetteers) by L. S. S. O'malley; Calcutta १६०७, पृष्ठ ५

४७. Imperial Gazetteer of India, Bengal, Vol I, १८६४ by L. S. S. O'malley Calcutta १६०८ पृष्ठ २१३ ।

४८. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सं० परमेश्वरी लाल गुप्त, बम्बई छंद ४३६/४ माता प्रसाद गुप्त के संस्करण में हल्दी से गोवर २० कोस है। चांदायन ३८१/४

४६ Ballia, District Gazetteer, H R. Nevill, Allahabad १६०७ पृष्ठ ११ ।

५०. वही, पृष्ठ ६ ।

चंदायन और लोरिकायन*

चंदायन की कथा लोरिकायन की कथा के एक अंश पर आधारित है। वह अंश है 'चनवा का उद्धार'। मौलाना दाउद ने १३७९ ई० में चंदायन की रचना की थी। इससे स्पष्ट होता है कि चौदहवीं शताब्दी में लोरिकायन या चनैनी पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। 'चंदायन' को सूफ़ी काव्य बनाने के लिए तथा उसे साहित्यिक रूप एवं सौष्ठव प्रदान करने के लिए मौलाना दाउद ने अनेक तत्व जोड़े जो लोक-महाकाव्य की परम्परा में नहीं पाये जाते। जैसे गोवर नगर का विस्तृत वर्णन, चंदा का नख-शिख, विरह और प्रेम का दर्शन आदि। लोरिकायन की कथा की एक विशेषता यह है कि वह वीर गाथा है। उसका नायक लोरिक मलसांवर के विवाह में अनेक युद्ध करता है। अपने विवाह के उपरान्त भी लड़ाइयां करता है। 'चनवा के उद्धार' के प्रसंग में भी हल्दी में, फिर नेउरापुर में युद्ध करता है। कथा के अंत में वह दुःखद मृत्यु का आलिंगन करता है। मौलाना दाउद ने इस शौर्य को उतना महत्त्व नहीं दिया है। चंदायन में युद्ध कम हैं और लोरिक का प्रेमी व्यक्तित्व यहाँ अधिक उभर कर आया है। सूफ़ी कवि की दृष्टि प्रेम-दर्शन की अभिव्यक्ति पर केन्द्रित है अतः लोरिक के शौर्य और युद्धों को उसने गौण कर दिया है तथापि लोरिकायन के 'चनवा का उद्धार' के अनेक प्रसंग चंदायन में सुरक्षित हैं।[1]

'चंदायन' और 'चनवा के उद्धार' के प्रसंगों का तुलनात्मक अध्ययन

[चंदायन में मलसांवर और लोरिक के विवाहों के प्रसंग नहीं आते। 'चनवा का उद्धार' जिसमें लोरिक-चंदा का प्रेम वर्णित है, चंदायन का आधार है।]

चंदायन	लोरिकायन
(१) स्तुति-खण्ड सृजनहार, पैगम्बर मुहम्मद, पैगम्बर के चार मित्रों का उल्लेख फ़ारसी मसनवी परम्परा के अनुकूल है (छंद १-७)	(१) लोरिकायन में नहीं है।
(२) समसामयिक बादशाह फीरोज शाह का उल्लेख (छंद ८)	(२) नहीं है
(३) गुरु शेख जैनुद्दीन का उल्लेख (छंद ९)	(३) नहीं है
(४) वजीर खानजहाँ का उल्लेख (छंद १०-१४)	(४) नहीं है
(५) डलमऊ के प्रशासक मलिक मुबारक का उल्लेख (छंद १५-१६)	(५) नहीं है

चंदायन	लोरिकायन
(६) चंदायन की रचना तिथि संवत् ७८१ (संवत् यहाँ हिजरी सन् का समानार्थी है = सन् १३८१ ई०) तथा डलमऊ का उल्लेख [ये प्रारम्भिक १७ छंद फारसी मसनवी परम्परा का अनुसरण करते हुए मौलाना दाउद संयोजित करते हैं। स्पष्ट है लोक गाथा के लिए इनका कोई महत्त्व नहीं है।]	(६) नहीं है।
(७) गोवर का वर्णन (छंद १८, ३१), विस्तृत है। मैथिली भाषा में लिखने वाले चौदहवीं शताब्दी के आचार्य ज्योतिरीश्वर की कृति 'वर्ण रत्नाकर' के नगर वर्णन से तुलनीय—विद्यापति के जौनपुर नगर वर्णन से समानता (विस्तृत विवेचन आगे किया जायगा)।	(७) लोक गाथा में गउरा का वर्णन अत्यन्त संक्षिप्त है। यहाँ घर-घर में अखाड़ा है यदुवंशी, ग्वाल तथा अन्य जातियाँ यहाँ रहती हैं। वह बारह पल्लियों का है।
(८) गोवर में सहदेव के यहाँ चंदा का जन्म और विवाह, चनवा का पति सिवहर (छंद ३२-४५)।	(८) गउरा में सहदेव के यहाँ चनवा का जन्म—चनवा का पति प्रायः सभी पाठों में सिवधरा या सिवहरिया है।
(९) सिवहर (बावन), गंदा, काना, कुरूप, और शायद नपुंसक भी है। वह चनवा की उपेक्षा करता है। चनवा का पिता के यहाँ वापस आ जाना—चंदा अछूती है उसका पति से सम्पर्क नहीं होता। (छंद ४६)।	(९) 'लोरिकायन' में भी सिवधरा नपुंसक है। बलिया के शिवनाथ चौधरी के पाठ के अनुसार शिव के अभिशाप से वह नपुंसक हुआ था। पति के यहाँ से लौटती हुई चनवा के साथ बांठा (चमार) छेड़खानी करता है यह चंदायन में नहीं है।
(१०) बाजुर (बाजिर) मूर्च्छा का प्रसंग - एक उज्जैन का योगी चंदा के सौन्दर्य को देखकर मूर्च्छित हो जाता है। यही दशा बाद में लोरिक की होती है। यह अंश सूफ़ी प्रेम और सौन्दर्य को अभिव्यक्ति देने के लिए मौलाना दाउद ने गढ़ा है। (छंद ५०-५९)।	(१०) 'लोरिकायन' में ये प्रसंग नहीं हैं।
(११) रूपचन्द के देश में बाजिर का पहुँचना—रूपचन्द का मन्त्री बांठा है। (छंद ६०-६१)।	(११) लोरिकायन में बांठा चमार लोरिक का गुरु भाई है बाद में वह लोरिक का शत्रु बन जाता है। लोरिक

चंदायन	लोरिकायन
	और बांठा दोनों के गुरु अजयी हैं। रूपचंद का उल्लेख लोरिकायन में नहीं है।
(१२) बाजिर द्वारा रूपचन्द से चंदा का 'नखशिख' (शिखनख) निवेदन करना (छंद ६४ से ८५ तक)	(१२) नख-शिख, रूपचंद तथा बाजिर का उल्लेख लोरिकायन में नहीं है।
(१३) रूपचन्द का गोवर पर हाथी घोड़े के साथ चढ़ाई करना (छंद ८६ से १३१ तक)	(१३) लोरिकायन में नहीं है
(१४) बांठा का युद्ध में आगे रहना—लोरिक के शौर्य से रूपचन्द बांठा आदि का पराजित होना, चंदायन में युद्ध बड़े पैमाने पर है। इस युद्ध के प्रसंग में 'डांग', 'ओड़न', 'खांड', 'रमाउलि', 'पागा', 'सारतार का आंगा', 'घन सहरी', टाटर, 'सारंग', 'फरसां', 'कुंत', 'कटारी' आदि अनेक आयुधों का वर्णन है। (छंद १०६)[२]	(१४) लोरिकायन में यहाँ युद्ध का वर्णन नहीं है। बांठा पति के घर से आते हुए चंदा के साथ छेड़खानी करता है। फिर उसके पिता सहदेव का द्वार छेंक लेता है। चंदा को प्राप्त करने के लिए अनेक उपद्रव करता है। लोरिक उसको मार डालता है। लोक गायक यहाँ द्वन्द्व-युद्ध का ही उल्लेख करते हैं।
(१५) विजेता लोरिक का सहदेव द्वारा स्वागत—गोवर मे बधावा—सहदेव द्वारा प्रीति-भोज का आयोजन—यह आयोजन शाही ठाटबाट का है। लोरिक को देख कर चंदा का विमोहित होना—लोरिक का चंदा को देखना और प्रेम का पल्लवित होना।	(१५) लोरिकायन में ये प्रसंग किंचित् भिन्न हैं। बांठा को मारकर लोरिक विजेता होता है पर बंधु बांधव सहदेव पर आरोप लगाते हैं कि चनवा का बांठा चमार के प्रति स्नेह था। पाप से मुक्ति के लिए सहदेव द्वारा भोज का आयोजन—लोरिक भोजन को भूलकर चनवा (चदा) को देखता रहता है। दोनों में प्रेम विकसित होता है। लोकगाथा में ग्रामीण स्तर का प्रीति भोज है।
(१६) चंदा और लोरिक में प्रेम बढ़ता है। लोरिक रस्सी के सहारे राजा सहदेव के महल के ऊपरी भाग में जहाँ चंदा सोती है, रात में चोरी चुपके प्रवेश करने लगता है। इसके पूर्व लोरिक एक वर्ष तक मढ़ी में तप करता है। योगी वेश में रहता है।	(१६) महल के ऊपरी प्रकोष्ठ में रस्सी के सहारे चढ़कर चनवा (चंदा) से लोरिक के मिलने का प्रसंग लोरिकायन में भी है। लोरिकायन में प्रेम-दर्शन की बात नही है। न तो लोरिक योगी बनकर यहाँ तप ही करता है।

चंदायन	लोरिकायन
(१७) लोरिक का चंदा के साथ नियमित रूप से मिलन। लोरिक चंदा के गुप्त प्रेम की सर्वत्र चर्चा होना--मैना मांजरि और चंदा के बीच सोमनाथ के मन्दिर में झगड़ा होता है।	(१७) लोरिकायन में भी है। लोरिकायन में चनवा और मंजरी कोइरी के कोड़ार में झगड़ती हैं। मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ में कोइरी का नाम झगड़ू है। कहीं-कहीं बसावन भी नाम मिलता है।
(१८) चंदा का लोरिक से हल्दी भाग चलने का प्रस्ताव।	(१८) यह लोकगाथा में भी है।
(१९) हल्दी जाने के पूर्व लोरिक अपने भाई कुंवरू (संवरू) से बोहा में भेंट करता है--कुंवरू का लोरिक को हल्दी जाने से मना करना।	(१९) यह प्रसंग लोरिकायन में है। यहाँ भाई का नाम संवरू है। लोकगाथा में लोरिक और संवरू का मिलन बहुत ही मार्मिक है।
(२०) चनवा के पति का गंगा के तट पर आना और लोरिक से युद्ध में पराजित होना।	(२०) यह प्रसंग लोरिकायन में भी है। नदी का नाम मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ में बेवरा है।
(२१) चनवा के पति को परास्त कर लोरिक का हल्दी में प्रवेश करना—हल्दी में प्रवेश के पूर्व सांप द्वारा चंदा को डसा जाना—सर्प दंश का प्रसंग 'चंदायन' में इसके पूर्व भी आता है। लोरिक का हल्दी में प्रवास। यहाँ का राजा क्षेतम है।	(२१) ये प्रसंग लोकगाथा में भी हैं। सर्प दंश का प्रसंग वाराणसी, इलाहाबाद तथा मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ में नहीं है। बलिया, पटना, गोंडा तथा चोपन (मिर्जापुर) के तुलसी यादव के पाठ में सर्पदंश का प्रसंग है। लोकगाथा में हल्दी का राजा महुअरि है। यहाँ लोरिक जमुनी कलवारिन से प्रेम करने लगता है। राजा महुअरि लोरिक की उद्दंडता से तंग आकर लोरिक को लड़ने के लिए, नेउरापुर एक भयंकर घोड़ा 'मंगर' पर भेजता है। लोगों को विश्वास था कि घोड़ा मंगर लोरिक को खा जायगा पर लोरिक का वह मित्र और सहायक बन जाता है।
(२२) मैना का हल्दी में लोरिक के पास संदेश भेजना।	(२२) लोरिकायन में भी यह प्रसंग है। लोकगाथा में लोरिक के भाई संवरू की दु:खद मृत्यु और मंजरी पर आयी हुई विपत्ति का विस्तृत विवरण है जो 'चंदायन' में नहीं है।

चंदायन	लोरिकायन
(२३) लोरिक की बोहा में वापसी—मैना मांजरि का बोहा में दही बेचने जाना—लोरिक और मैना का मिलना—मंजरी के सत की परीक्षा साधारण सी है। मैना के सत का विस्तृत चित्रण साधन कृत 'मैनासत', गव्वासी कृत 'मैना सतवंती' तथा हमीदी के 'अस्मतनामा' (फ़ारसी) में अधिक प्रखर है।	(२३) लोरिकायन में भी यह प्रसंग है। लोकगाथा के गायक इस प्रसंग को बहुत महत्त्व देते हैं। यहाँ मंजरी के सत सुमिरन से नदी सूख जाती है। वह अनेक प्रकार से, जैसे खौलते तेल में हाथ डालकर अपने सत का परिचय देती है।
(२४) लोरिक का घोड़े पर चलकर घर आना—माँ खोइलनि से मिलना—माँ खोइलनि का कुंवरू (संवरू नाम भी आता है, छंद ३८६ देखिए) की मृत्यु का समाचार देना।	(२४) लोरिक का घर वापस आना--माँ तथा गुरु अजयी से मिलना। फिर लड़कर शत्रुओं से सारी सम्पत्ति वापस लेना और अपने दो पुत्रों भोरिक और चंद्राइत को राज्य सौंप कर अग्नि समाधि लेना - ये प्रसंग चंदायन की प्राप्त पांडुलिपियों में नहीं हैं। लोरिक की गाथा समाप्त होने पर अच्छे लोक-गायक उसके पुत्र भोरिक की भी गाथा गाते हैं।

मौलाना दाउद ने 'लोरिकायन' की मूलकथा को लेकर अपने काव्य 'चंदायन' का ठाट खड़ा किया किन्तु लोकमहाकाव्य के सीधे-सादे चित्रण यहाँ कवि द्वारा पर्याप्त साहित्यिक बना दिये गये हैं। कुछ विशेष प्रसंगों से उदाहरण देकर इस बात की पुष्टि की जा सकती है। कवि ने फ़ारसी की मसनवी की परम्परा का पालन करते हुए सृजनकर्ता, पैगम्बर मुहम्मद, चार मित्र, समसामयिक बादशाह आदि का वर्णन किया है। यह एक सामान्य शैली है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नगर वर्णन, भोज, युद्ध और प्रेम के चित्रण को कवि ने सामान्य नहीं रहने दिया है। उसने इन चित्रणों में तत्कालीन मान्य साहित्यिक परम्पराओं का सन्निवेश कर दिया है।

'चंदायन' में चंदा की जन्मभूमि तथा उसके पिता सहदेव का नगर गोवरगढ़ है। लोकमहाकाव्य में यह स्थान गउरा है। लोक-गायक इस स्थान का चित्रण सादगी से करते हैं। मिर्जापुर के पाठ में गउरा का उल्लेख मात्र है, वहाँ एक सागर (तालाब) है। बलिया के शिवनाथ चौधरी के पाठ में गउरा का वर्णन कुछ विस्तार से है। इनके पाठ के अनुसार 'गउरा बलिया में हैं। उसके उत्तर में देवहा हैं। दक्षिण में गंगा हैं। वहाँ ब्रह्माइन का गढ़ है उसके पास ही गढ़ गउरा है। उसमें बाजार हैं। यहाँ उत्तर में ब्राह्मण रहते हैं, दक्षिण में कोइरी हैं। पश्चिम में मुग़ल, पठान तथा जुलाहे रहते हैं। पूर्वी टोले में अहीर रहते हैं। यहाँ सोलह सौ यदुवंशी हैं। खेती-बारी यहाँ नहीं होती। घर-घर में यहाँ अखाड़ा है।'[3]

वाराणसी के पाँचू भगत के पाठ में भी गउरा का वर्णन विस्तृत नहीं है।

'गउरा बारह पल्लियों का है। इसमें तिरपन बाजार हैं। तेली, तमोली, कलवार, तथा भड़भूजे भी यहाँ हैं। रघुवंशी राजपूत यहाँ हैं जिनकी कटि में तलवारें झूलती हैं। यदुवंशी और ग्वाल अहीर यहाँ रहते हैं। गउरा में घर-घर अखाड़ा है। यहाँ दिन रात लेजम घूमता रहता है।'[४]

लोरिकायन के समस्त वर्णन सामान्य हैं और सामान्य श्रोताओं के मस्तिष्क को ये बोझिल नहीं बनाते। सूफ़ी कवि मौलाना दाउद ने चंदा और उसके पिता के नगर गोवरगढ़ को, जहाँ का निवासी लोरिक है, बड़े विस्तार में चित्रित किया है, यद्यपि चदायन का कवि केवल पाठकों के लिए नहीं श्रोताओं के लिए भी अपनी रचना करता जान पड़ता है।[५]

मौलाना दाउद ने गोवरगढ़ का चित्रण लगभग पन्द्रह छन्दों में किया है :

उद्यान-वर्णन[६]

गोवर में कूप, वापी तथा आम्र के कुंज हैं। वहाँ नारियल तथा सुपारी के पेड़ हैं, अनार और अंगूर हैं। नारंगी, कटहल, जामुन के पेड़ के अतिरिक्त वहाँ बाँस, खजूर, बट, पीपल, और इमली के पेड़ भी हैं। बाटिका में वहाँ दिन में भी अंधकार रहता है।

पक्षी[७]

आम्र बाटिका में शुक सारिकाएँ चहचहाती रहती थीं। पपीहा पी पी पुकारता रहता था। मोर भी वहाँ नाचते रहते थे। महर, पंडुक, हारिल, उलूक सभी पक्षी वहाँ रहते थे।

सरोवर[८]

सरोवर, झरनों आदि का उल्लेख भी गोवरगढ़ के चित्रण में है। उनमें कोई स्नान नहीं कर सकता था। दो लाख कुमारियाँ वहाँ पानी भरने के लिए जाती थीं। सरोवर में हंस, मांछ, चकवा, चकवी, तैरते हैं।

गोवर की खाई[९]

गोवर की खाई पचास परोसे की (१७५ हाथ) थी। उसमें हमेशा जल भरा रहता था। उसमें गिर जाने पर मृत्यु अवश्यंभावी थी। खाई पर अधिकार करना बीस-बीस रायों के लिए भी सरल नहीं था।

जातियाँ[१०]

ब्राह्मण, क्षत्रिय, ग्वाल, खंडेलवाल, अग्रवाल, तिवारी, पंचवान, धाकड़, जोशी यज्ञ करने वाले यजमान, गंधी, बनजारे, श्रावक, परमार (पंवार), सोनी, रावत, सभी गोवरगढ़ में बसे हुए थे। विद्वान्, पंडित, भांट, छत्तीस कुलों के राजपूत सभी चंदा के पिता महर की सेवा में थे।

हाट[११]

हाट में बटुक रामायण पढ़ते थे, गीत गाते थे, नृत्य करते थे। वे राधाकृष्ण का अभिनय भी करते थे। फूल, चंदन, अगरु, खस, कर्पूर, पान, जायफल, सोपारी, लवंग, छुहारा सभी चीजें वहाँ बिकती थीं। खांड, चिरौंजी, मुनक्का, खुरहुरी वहाँ के लोग मोल लेते थे। हीरा, प्रवाल, सोना आदि भी वहाँ बिकते थे।

महर का प्रासाद[१२]

महर का धौराहर, प्रासाद सात मंजिलों का था। उसमें सात चौखंडियाँ थीं। चौखंडियों पर सात कलश थे। महल में चौरासी रानियाँ थीं। प्रासाद में हिंडोले भी थे। राज महल अन्न, धन, पाट, रेशमी वस्त्रों से परिपूर्ण था। चंदायन के छन्द २९ में सिंह द्वार का चित्रण है। वीर सिंह द्वार को देखकर भाग जाते थे। पौरी के कपाट बज्र या फौलाद के थे। रात्रि में वहाँ चौकी पर पहरेदार प्रहरी का काम करते थे।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि गोवरगढ़ के चित्रण में कवि ने साहित्यिक परम्परा का निर्वाह अधिक किया है। लोकमहाकाव्य में चित्रित गउरा गाँव का एक सामान्य नगर है जबकि चंदायन में चित्रित नगर में परम्परागत चित्रणों की भरमार है। लोकमहाकाव्य की वास्तविकता से यह चित्रण काफी दूर है।

मिथिला के आचार्य ज्योतिरीश्वर ने 'वर्ण रत्नाकर' में शहर के वर्णन का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। 'वर्ण रत्नाकर' की रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई थी। 'वर्ण रत्नाकर' संभवतः ऐसे लोगों के लिए लिखा गया जो कवि बनना चाहते थे। कवि बनने के लिए कुछ वर्णनों और चित्रणों की परम्परा की रक्षा आवश्यक सी थी। इसीलिए गोवरगढ़ के चित्रणों से मिलता-जुलता 'वर्ण रत्नाकर' का नगर और उपवन का वर्णन है। दोनों एक विशेष परिपाटी का पालन करते हुए जान पड़ते हैं।

'वर्ण रत्नाकर' में उपवन के वर्णन के संदर्भ में कहा गया है कि गुआ, नारिकेर, नारङ्ग, नागकेसर, नमेरु, खीरा, बउर, उतति, दाष, दालिम्ब, छोलंग, करुण, चम्पक, चन्दन, लवङ्ग, अशोक, अनेक पुष्प द्रुम उपवन में होने चाहिए।[१३] वन वर्णन के संदर्भ में ताल, तमाल, रसाल, हिन्ताल, शाल पियाल, पितशाल, शमी, सरल, शल्लकी, सिरिसि, सिम्बलि, सिद्ध, सिसप, सहोल, सोहिजन, पिप्पल, पलाश, पाउल, पनस, प्रियंगु आदि का उल्लेख यहाँ है[१४]। 'चंदायन' और 'वर्ण रत्नाकर' की तुलना से यह विदित हो जाता है कि गुवा (सोपारी), नारिकेल, नारंग, आम (रसाल), दाड़िम (दालिम्ब, अनार) दोनों में हैं। तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों वर्णनों की सूचियाँ भिन्न-भिन्न हैं पर उनमें समानता कम नहीं है। नारियल, सुपारी आदि के पेड़ उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में जहाँ चंदायन की मूलकथा विकसित हुई होगी, नहीं पाये जाते। ये वर्णन परम्परागत ही हैं।

पक्षियों के संदर्भ में चंदायन में शुक, सारिका, पपीहा, हारिल, पंडुक आदि

का उल्लेख है। 'वर्ण रत्नाकर' में भी शुक, सारिका, कोकिल, पांडु आदि पक्षियों का वर्णन है।[१५] 'वर्ण रत्नाकर' की सूची में जल-पक्षियों में हंस, मत्स्य, चक्रवाक आदि का उल्लेख है[१६]। चंदायन के छन्द २२ में भी हंस, मत्स्य, चकवा, चकवी, सरोवर में तैरते हैं। नगर वर्णन में, इन दोनों ग्रंथों में जो लगभग समकालीन हैं, समानता अकस्मात् नहीं है। ये दोनों अपने युग की काव्य परम्पराओं और मान्यताओं की ओर संकेत करते हैं। 'वर्ण रत्नाकर' काव्य ग्रंथ नहीं है। यह काव्य रचयिताओं के उपयोग के लिए लिखा गया एक आदर्श ग्रंथ सा प्रतीत होता है। इसमें आठ अध्याय हैं। इन अध्यायों में नगर, नायक-नायिका, कुट्टनी, वेश्या, वन, उपवन, पुष्कर, पर्वत, नदी, तीर्थ, श्मसान, मरुस्थल, ऋषि, चौरासी सिद्धों की नामावली, नृत्य के प्रकार, राज्य, विवाह के प्रकार, नौका वर्णन तथा वणिक पुत्रों और वैद्यों के सम्बन्ध में विस्तृत सूचनाएँ दी गयी हैं। ये अध्याय संभवत: इसलिए लिखे गये हैं कि एक नया कवि काव्य रचना के लिए आदर्श के रूप में इन्हें स्मरण रखे। चंदायन एक काव्य ग्रंथ है। मौलाना दाउद अपने समय की काव्य-परम्पराओं के आदर्शों की रक्षा करते जान पड़ते हैं। 'चंदायन' में भोज के अवसर पर पशुपक्षी पकड़ कर लाये जाते हैं। मौलाना दाउद स्पष्ट कहते हैं कि मैं पक्षियों का चित्रण वैसे कर रहा हूँ जैसे वे काव्यों में पाये जाते हैं :

जो कवि आइ समाने सरसि बरन गये तेहि
अउर पंखि जे मारे तिन्हकर नाउ को लेहि। छंद १४४।६

['जो काव्यों में आकर प्रवेश पा गये हैं मैं उनको सरस रूप में वर्णित कर गया और जो पक्षी भोज के लिए मारे गये उनका नाम कौन ले' ?]

'चंदायन' में राजपूतों की छत्तीस कुरियों का उल्लेख मात्र है। 'वर्ण रत्नाकर' में इन छत्तीस कुरियों का उल्लेख विस्तार से हुआ है। यद्यपि इस सूची में ३४ वर्गों का ही समावेश किया गया है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं—

(१) डोड (२) पमार (३) बिन्द (४) छीकोर (५) छेवार (६) निकुम्भ (७) राओल (८) चाओट (९) चाञ्जल (१०) चन्देल (११) चउहान (१२) चालुकि (१३) रठउल (१४) करचुरि (१५) करम्ब (१६) बुधेल (१७) वीरब्रह्म (१८) बन्दाउत (१९) वएस (२०) वछोम (२१) वर्द्धन (२२) गुडिय (२३) गुहलउरा (२४) सुरुकि (२५) सहिआउत (२६) शिषर (२७) शूर (२८) खातिमान (२९) सहर ओट (३०) भोण्ड (३१) भद्र (३२) भज्जभटी (३३) कूढ़ (३४) खरसान छत्रीशओ कुली राजपुत्र।[१७]

चंदायन में राजकुमारों की गोष्ठियों में विद्वान्, भाँट, पंडित आदि सम्मिलित हैं। वर्ण रत्नाकर में भी विद्यामंत, वंदीजन तथा पंडित का उल्लेख है।[१८]

मौलाना दाउद के 'चंदायन' के गोवरगढ़ की तुलना विद्यापति की कीर्तिलता में वर्णित जौनपुर से भी की जा सकती है। विद्यापति का समय संभवतः १३६० ई०

से १४५० ई० तक है।[१९] १४०२ से १४०६ ई० तक इब्राहिम शाह शर्की जौनपुर का बादशाह था। विद्यापति ने इब्राहिम शाह का उल्लेख किया है :

इबराहिम साह पआन पुहुवि नरे सर कमनसह
गिरि सा अर पार उँवार नहीं रैअति भेले जीव रह[२०]

['इब्राहिम शाह के प्रयाण को कौन नरेश सह सकता था ? गिरि तथा सागर पार जाने पर भी उससे उबार (रक्षा) नहीं था। रैअत बन जाने पर ही उससे जीवन की रक्षा हो सकती थी।']

'कीर्तिलता' की रचना चंदायन से कुछ ही बाद की है। इसके दूसरे पल्लव में जौनपुर का वर्णन है। जौनपुर नगर मेखला से घिरा हुआ है।[२१] उसके उपवन में आम, चम्पक, सुशोभित हैं।[२२] नगर में पुष्कर और जलाशयों का भी उल्लेख है।[२३] राजप्रासाद पर स्वर्ण कलश हैं।[२४] कपूर, केसर, धूप, गंध का वहाँ बाजार है।[२५] काव्य, नाटक, गीत, खेल-तमाशे का उल्लेख भी विद्यापति करते हैं।[२६] नगर में विभिन्न जातियों जैसे ब्राह्मण, कायस्थ, राजपूतों आदि का उल्लेख है।[२७] सोना हीरे आदि भी जौनपुर में बिकते थे।[२८] कवि यह भी कहता है कि 'नगर विन्यास की कथा क्या कहूँ ? जैसे दूसरी अमरावती का यहाँ अवतार हो गया है।'[२९] जौनपुर नगर के चित्रण और 'चंदायन' के गोवरगढ़ के वर्णनों में बहुत अंशों तक समानता देखी जा सकती है। मौलाना दाउद ने भी गोवरगढ़ की तुलना 'कैलास' (स्वर्ग) से की है।

अगरु चंदन उषटना अछई सुहाई बासु
देवलोक अस भाषहि मकहुँ आहि कबिलासु[३०]

— चंदायन ३०/६, ७

['अगरु, चंदन, और उबटनों की सुगन्ध वहाँ सुहावनी लगती थी। देवलोक के प्राणि कहते हैं जैसे (वह गोवरगढ़ कैलाश (कविलास) हो।']

मध्यकालीन 'वर्णक समुच्चय' नामक ग्रंथ से विदित होता है कि नगर की उपमा 'अमरावती' अलकापुरी आदि से दी जाती थी।[३१] कहने का तात्पर्य यह है कि अहीरों की लोकगाथा को लेकर मौलाना दाउद ने उसमें साहित्यिक रंग भर दिया है। परम्परा से चली आती हुई वर्णन शैली का उपयोग कर उन्होंने लोकमहाकाव्य की सरलता को शिष्ट काव्य की क्लिष्टता में बदल दिया है।

'चंदायन' के रचयिता मौलाना दाउद ने अनेक प्रसंग अपने काव्य में जोड़े हैं। उनका 'शिखनख' चित्रण भी साहित्यिक परम्परा का पालन करता है। 'चंदायन' के इस शिखनख या नखशिख परम्परा पर प्रस्तुत लेखक ने अन्यत्र विस्तार किया है।[३२] चंदा को मौलाना दाउद ने अप्रतिम सौंदर्य प्रदान किया है। चंदा की मांग, केश, ललाट, भौंहों, नयनों, नाक, अधरों, दातों, जिह्वा आदि का सौंदर्य चित्रित करते हुए कवि उसका श्रवण, तिल, ग्रीवा, भुजाएं उरोजों, पेट, पीठ और पगों का वर्णन

करता है और लगभग बाइस छंदों में चंदा का दिव्य स्वरूप प्रस्तुत करता है। चंदा के चरणों के स्पर्श से पुरुषों के पाप मिट जाते हैं। चंदा के चरणों की सुगन्ध से चारों दिशाओं में बसंत ऋतु उपस्थित हो जाती है। उसके अंग के सुवास से नौखंड सुवासित हो जाते हैं। इंद्र, गोपेन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु, मुरारि, गण, गन्धर्व, ऋषि और देवता उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं।[३३] मौलाना दाउद चंदा को दैवी सौंदर्य से अलंकृत कर देते हैं। नायक लोरिक उस सौंदर्य का प्रेमी है। कवि सूफ़ी है अतः सूफ़ी दर्शन के प्राण तत्व कवि चंदायन में भर देता है। लोक-परम्परा में प्रचलित लोरिकायन या चनैनी के किसी पाठ में नखशिख का विस्तार नहीं है। संस्कृत और फ़ारसी साहित्य की परम्पराओं में नखशिख या शिखनख का चित्रण पाया जाता है। मौलाना दाउद का चित्रण सामान्य शरीर के अवयवों का चित्रण नहीं है। रूप की सीमा में सूफ़ी कवि अलौकिक सौंदर्य का दर्शन कराता चलता है। यह लोकसाहित्य की परम्परा में रचे गये काव्य की दृष्टि नहीं। यह एक सचेत साहित्यिक कवि का सृजन है। लोक साहित्य का गायक दर्शन से अपने काव्य को बोझिल नहीं बनाता।

मौलाना दाउद ने प्रेम दर्शन का चंदायन में विस्तार से सन्निवेश किया है। लोरिक एक स्थान पर कहता है कि जिसको प्रेम होता है उसको विरह सताता है। प्रेम का घाव जिसको लग जाता है उस पर कोई औषधि काम नहीं करती।[३४] प्रेम की चिनगारी से धरती, आकाश, पाताल सभी भस्मीभूत हो जाते हैं।[३५] प्रस्तुत लेखक ने अन्यत्र 'चंदायन' के प्रेम दर्शन पर विस्तार से विचार किया है।[३६] इस प्रेम दर्शन की अभिव्यक्ति भी चंदायन की अपनी विशेषता है। लोकमहाकाव्य में चनवा (चंदा) 'चंचल नारि चनैनी' है, वह उच्छृङ्खल है। ददई केवट के मिर्जापुरी पाठ में उसे बार-बार वेश्या कहा गया है।[३७] मैना-मांजरि से विवाह करने के बाद लोरिक चंदा के प्रेम में फंस जाता है। फिर हल्दी में उसका उद्धार करता है। लोकगाथा नैसर्गिक प्रेम की गाथा है। मौलाना दाउद ने उसे एक साहित्यिक सूफ़ी कृति के रूप में बदल दिया है।

इस साहित्यिकीकरण की प्रक्रिया के बावजूद चंदायन के कुछ चरित्र अपने मूल रूप में बहुत नहीं बदले हैं। उदाहरण के लिए अजयी लोकगाथा में लोरिक का गुरु और लड़ाकू वीर तो है पर उसमें भीरुता और जान बचाकर भागने की प्रवृत्ति है। चंदायन में उसका उल्लेख आता है। गोर के युद्ध में लोरिक अजयी की सहायता मांगने जाता है तो वह पहले से ही दांत कंपकंपाने लगता है। "उसने घाव काटकर उसमें गेरू भर रखा था। अपने अंग को ढक कर वह पुकार लगा रहा था—ऐ सृष्टिकर्ता तुमने मुझे किस प्रकार मृत्यु दे दी।"

'पहिलेहिं अबई दोख उपावा, मिसु कइ परिगा दांत कँपावा
घात काटि घसि गेरू भरी, खपरी लइ पुँदोतर धरी
आंग मूँदि असि करइ पुकारा, कवनि मीचु दीन्हीं करतारा'[३८]

['अजई ने पहले से ही दोष उत्पन्न कर रखा था। बहाना बनाकर वह लेट

गया तथा दाँत कँपकँपाने लगा। उसने स्वयं काटकर घाव कर लिया और उसमें गेहूं भर लिया तथा अपने नीचे अंगीठी रख ली थी। अपने शरीर को ढंक कर वह ऐसे पुकार रहा था—ऐ विधाता तूने कैसी मृत्यु दी !']

बाँठा चमार लोकगाथाओं में लोरिक का गुरु भाई है। बाद में वह उसका शत्रु बन जाता है। 'चंदायन' में वह रूपचंद का मंत्री है और जब रूपचंद चंदा को पाने के लिए गोबर पर चढ़ाई करता है तब युद्ध में वह मारा जाता है। लोकगाथाओं में भी लोरिक उसे मारता है। पर बाँठा के उपद्रव यहाँ दूसरे प्रकार के हैं, जैसे कुँवों, तालाबों में हड्डी फेंकना, चंदा के पिता के घर को छेंक लेना आदि। लोरिक द्वंद्व युद्ध में उसे जान से मार डालता है। लोकगाथाओं में लोरिक की माँ खोइलनि है। 'चंदायन' में भी लोरिक की माँ का नाम खोइलनि है। 'चंदायन' में कुँवरू लोरिक के भाई हैं (छंद ३८६ में उन्हें संवरू कहा गया है)। लोकगाथाओं में उन्हें संवरू, सांवर, मलसांवर या धर्मी कहा गया है क्योंकि वह अपना समय भजन और धर्म के पालन में लगाते थे। हल्दी जाने के पूर्व लोरिक उनसे मिलता है। वह लोरिक को परदेश जाने से रोकते हैं और अपनी छलछलायी आँखों से अपरमित प्रेम का परिचय देते हैं। 'चंदायन' में भी यह प्रसंग है। चंदा लोरिक को हल्दी चलने के लिए विवश करती है और लोरिक-चंदा आगे बढ़ जाते हैं। मैना लोक गाथाओं में सतीत्व के लिए एक आदर्श चरित्र है। वह अनेक प्रकार से अपने सत की परीक्षा देती है तथा इन परीक्षाओं में सफल रहती है। 'चंदायन' में उसके सत का चित्रण संक्षिप्त है। साधन कृत 'मैनासत', गव्वासी कृत 'मैना सतवंती', हमीदी कृत 'अस्मतनामा' आदि में उसके सत को अधिक महत्त्व दिया गया है। लगता है 'चंदायन' के बाद की रचनाओं के रचयिताओं को 'चंदायन' में मैना मांजरी की उपेक्षा अच्छी नहीं लगी तो उन्होंने उसके सत को आधार बनाकर स्वतंत्र रचनाएं ही कर डालीं। लोकगाथाओं की चनवा (चंदा) चंचल है, उसे वेश्या तक कहा गया है। 'चंदायन' में वह देवी बन गयी है। लोरिक उसका अप्रतिम प्रेमी है।

संदर्भ

*लोरिकायन के विस्तृत अध्ययन के लिए प्रस्तुत लेखक की कृतियाँ देखिये—लोकमहाकाव्य लोरिकी, साहित्य भवन, इलाहाबाद १९७९, लोकमहाकाव्य चनैनी (१९८२) तथा इनके अंग्रेजी संस्करण The Hindi oral epic Loriki, (Allahabad, 1979) तथा The Hindi oral epic Chanaini (1982).

टिप्पणी

१. मौलाना दाउद ने गोवरगढ़ के वर्णन में नृत्य करने वालों, गीत गाने वालों तथा 'पंवारा कहने वालों' का उल्लेख किया है। 'लोरिकायन' को आज भी 'पंवारा' कहा जाता है।

गावहिं गीत औ कहहिं पंवारा, नट नाचहिं अउ बाजहिं तारा।

['लोग गीत गाते हैं और 'पंवारा' कहते हैं। नट नाचते हैं और ताल बजाते हैं।']

—मौलाना दाउद कृत चांदायन, सम्पादक— माताप्रसाद गुप्त,
आगरा १९६७, छंद २८—४, ५

'चांदायन' के सभी संदर्भ इसी संस्करण से दिये गये हैं। माताप्रसाद जी ने 'चंदायन' की अपेक्षा 'चांदायन' नाम अधिक उपयुक्त समझा है।

२. 'चंदायन' के छंद १०६ में डांग, ओड़न, खांड, रगाउलि, पाग, सारतार, आंगा, घनसहरी, टाटर, सारंग, फरसा, कुंत, कटारी आदि के उल्लेख हैं। इनका परिचय इस प्रकार है—
डांग—इसको डांक भी कहा गया है। यह एक प्रकार का लट्ठ है। अन्यत्र इसको लखौरी या लगुड़ी भी कहा गया। **ओड़न**—ढाल के लिए आया है। **खांड**—खड्ग या तलवार है। चंदायन में 'ओड़न खांड' बहुत बार साथ-साथ आया है जिसका अर्थ है ढाल और तलवार। **रगाउलि** - स्पष्ट नहीं है। **सारतार**—इसको तारसार भी कहते थे। इसका दूसरा नाम 'लौह-जाल' या 'लौह-जालिका' है। यह एक प्रकार का लौह कवच होता था। **टाटर-तातर** – सिरस्त्राण है। **पाग**—पगड़ी जो टाटर के नीचे बंधी होती थी। 'चंदायन' में वर्णित शस्त्र तथा युद्ध उपकरणों के लिए श्री ज्ञानचन्द्र शर्मा की पुस्तक चंदायन का सांस्कृतिक परिवेश, विशाल प्रकाशन, पटियाला, १९७३ देखिये, पृष्ठ १८२ से १८६।

३. देखिये लोकमहाकाव्य लोरिकी, श्याममनोहर पाण्डेय, इलाहाबाद, १९७९ भूमिका पृष्ठ २७।
शिवनाथ चौधरी का पाठ मेरे पास सुरक्षित है। मेरे संग्रह में सबसे बड़ा पाठ उन्हीं का है जो अभी प्रकाशित नहीं हुआ है। उनकी मृत्यु २१ अप्रैल (चैत्र की रामनवमी) १९८२ में हुई।

४. लोकमहाकाव्य लोरिकी, श्याममनोहर पाण्डेय, मूल पाठ, पृष्ठ १।

५. मौलाना दाउद कहते हैं :—

कहहूँ कवितु मन भयो गियानू। कहत सुहावन सुनहु दे कानू

—चांदायन १८।१

['मेरे मन में ज्ञान हुआ है इसलिए कविता कह रहा हूं। यह कहने में सुहावनी है इसे कान देकर सुनो।']

दाउद कवि चांदायनि गाई। जे रे सुना सो गा मुरुझाई।
धनि ते बोल धनि लेखन हारा, धनि ते अखिर धनि अरथु विचारा॥

['दाउद कवि ने चांदायन का गायन किया है जिसने इसे सुना है वह मूर्च्छित हो गया है या मुर्झा गया है। वे धन्य हैं जो इसे बोलते हैं। वे धन्य हैं जो इसको लिखने वाले हैं। वे धन्य हैं जो इसके अक्षरों और अर्थों का विचार करते हैं।']

—चांदायन, ३२९।१,२।

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि 'चंदायन' श्रोताओं के समक्ष गाया जाता था और उसको लिखा भी जाता था।

६. चांदायन, छन्द १८
७. चांदायन, छन्द १६
८. चांदायन, छन्द २१
९. चांदायन, छन्द २३
१०. चांदायन, छन्द २५
११. चांदायन, छन्द २८
१२. चांदायन, छन्द ३०, ३१
१३. ज्योतिरीश्वर ठाकुर, वर्णरत्नाकर, सम्पादक सुनीतिकुमार चटर्जी तथा बबुआ मिश्र, रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल; कलकत्ता १६४० पृष्ठ ३७—३८। ज्योतिरीश्वर चौदहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में विद्यमान थे। (सुनीति कुमार चटर्जी की) भूमिका पृष्ठ २०। ज्योतिरीश्वर मिथिला के जाने-माने संस्कृत आचार्य और लेखक थे। उनकी कृतियाँ 'पञ्च शायक', 'धूर्त समागम' प्रसिद्ध हैं। उनकी एक कृति 'रङ्गशेखर' का भी उल्लेख मिलता है। सुनीति कुमार चटर्जी की भूमिका पृष्ठ १३, १४ देखिये।
१४. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३७
१५. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३७
१६. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ४०
१७. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३१
१८. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ १०
१९. विद्यापति, कीर्तिलता, सम्पादक और व्याख्याकार, वासुदेवशरण अग्रवाल, चिरगाँव, झाँसी १६६२, भूमिका, पृष्ठ १३।
२०. कीर्तिलता, पृष्ठ १८०।
२१. पेखिअउ पट्टन चारु मेखल जओन नीर पखरिया
['उन्होंने सुन्दर खाई (मेखला) से घिरा हुआ नगर देखा।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ५८
२२. पल्लविअ कुसुमिअ फलिअ उपवन चूअ चम्पक सोहिया
['उपवन पल्लवित, कुसुमित, और फलित था। उसमें आम और चम्पक सुशोभित थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ५६
२३. कीर्तिलता, पृष्ठ ५६
२४. धअ धवलहर घर सहस पेखिअ कन अ कलसहि मण्डिया
['धौराहर (राजप्रासाद) ध्वजा से युक्त था, सहस्रों घर वहाँ दिखाई पड़ते थे। राजप्रासाद पर कलश मंडित थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ६२
२५. कीर्तिलता, पृष्ठ ६४

२६. सम्मान दान विवाहु उच्छव गीअ नाटक कव्वहीं
आतिथ्य विनअ विवेक कौतुक समय पेल्लिअ सव्वहीं
['सब लोग सम्मान, दान, विवाह, उत्सव, गीत, नाटक, काव्य, आतिथ्य, शिक्षा, विवेक और खेल तमाशे में समय व्यतीत करते थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ६४, ६५

२७. कीर्तिलता—वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ठ ८०

२८. कीर्तिलता, पृष्ठ ७३, ८४

२९. कौसीस, प्राकार पुर विन्यास कथा कहुजो का
जनि दोसरी अमरावती का अवतार भा
['···कंगूरा, परकोटा पुर विन्यास (नगर निर्माण) की कथा क्या कहूँ ! लगता है दूसरी अमरावती (स्वर्ग) का अवतार हुआ हो'] —कीर्तिलता पृष्ठ ७०, ७१

३०. चांदायन, माता प्रसाद गुप्त ३०।६७

३१. कीर्तिलता, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ट ७१, 'अमरावती' पर टिप्पणी देखिये।

३२. देखिये Shyam manohar Pandey, Maulana Daud and his contributions to the Hindi Sufi literature, Annali, Istituto Orientale, Napoli (Naples) Italy 1978, Vol, 38 pp. 75—90.

३३. श्याममनोहर पाण्डेय, सूफ़ी-काव्य-विमर्श, आगरा १९६८
'चंदायन में नखशिख और उसका आध्यात्मिक स्वरूप' १ से २६ तक।
चांदायन में नखशिख (शिखनख) के लिए छन्द ६४ से ८३ तक देखिये।

३४. पिरम घाउ ओषदि नहिं मानइ। पिरम बान जेहिं लाग सो जानइ
['प्रेम को घाव पर औषधि कारगर नहीं होती। जिसको प्रेम बाण लगता है वही इसे जानता है।'] चांदायन ३२४—४

३५. चिनगि एक जउ बाहेर मारइ एहिं पिरम कइ झार
भसम होइ जरि धरती खिन एक सरग पतार
['प्रेम की यह ज्वाला यदि एक चिनगारी बाहर मार दे तो एक क्षण में धरती, स्वर्ग और पाताल भस्म हो जायँ।'] चांदायन ३२३।६, ७

३६. Shyam manohar Pandey, Love Symbolism in Candayan, in Bhakti in Current Research, (ed) Monikathiel Horstmann, Dietrich Reimer Verlag, Berlin, (Germany) 1983 pp. 269—293.

३७. कुरुहुल (मिर्जापुर) का मेरा पाठ जिसके गायक ददई केवट हैं, प्रस्तुत पुस्तक में है।

३८. चांदायन, छन्द १०।३, ४, ५।

□ □

त्रुटि सुधार—पृष्ठ ३५ पर फ़ारसी में १०२६ हिजरी तथा अन्तिम लाइन में भी उपर्युक्त पढ़ा जाए।

गायक ददई केवट—कुरहुल, मिर्जापुर
मृत्यु २० फरवरी १९७० ई०

गायक ददई केवट—कुरहुन, मिर्ज़ापुर, १९६६ ई०

डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय चोपन में 'लोरिकायन' की रिकार्डिंग करते हुए

लोरिकायन

गायक—बवई केवट
ग्राम—कुरहुल, मिर्जापुर
रिकार्डिंग तिथि—
१७ अक्टूबर से
२३ अक्टूबर, १६६६ तक

सुमिरन

हे राम, राम, राम, राम हो राम, कहलेनि रामइना रामवा जे गुन हो गावऽ (१)
केह्, राम लीहल ना नउवाँ जे देख तोहारऽऽ
केह्, भाई जीनिय ना रामवा जे तू हो बीसरऽऽ
जब तक रहि हइं न मटिया जे राम पराऽनऽ
आजु कहैं नीचवांह्, से सुमीर लीह्, मइया धरती
उपरांह्, सूमिरि लीह, लीह ना भग हो वाऽनऽ
एठियन सुमिरल ना डिहवा जे डीह हो ठाकूर
इहं कर सुमिरल ना मरिया जे बाबा मऽसान
किह्, भाई सुमिरल देवतवा जे बाबा गोरइया
जिन्ह पूजा खइलहं सुवरवा तू दम हो तर (१०)
किह्, भाइ सुमिरल देवतवा जे बाबा बघौता
अब जेन्ह हउवह्, टोनहियन के जय हो आर
तूयं भाइ बान्हह्, ना टोनवा जे टोनहीन कऽय
ओझवा के बान्हह्, भउहवाँ जे तूह लील्लार
अब मारि देहह्, दमदवा जे डऽइनी कऽय
देसवाह्, सुगई भिनउवन मरि रे जाइ
आज कहैं रामईं ना सिरजी जे बा रामायन
लछिमन सिरिजइं ना कठियह्, हो पयार
केह्, फिर सीतइ सीरिजले जे जइये नईहर
जेइ जाइके धनुस तोड़ल बा भग होऽ वा न (२०)
आजु कहैं कंठहि ना बइठह्, माइ कठेसरि
हिरदंह में बइठह्, ना गउरी हो गनेस

जिभिया के तूं गहना मइयाह् मोरि दुल्गा
जे माई भूललि हरफिया न देनी ए जोरि
देबिया जो एक्को हरफिया जे दबि रे जइहंइ
फेरि से न लेबै ना नउवन हो तोहार
जेतनीय गाइलि कीरीतिया अब सतजुग में
जोरि केनि गावत कलउवऽ क बानऽ हो लोग
थनवाह् जोरिदह् ना डीहवह् मोरि भगउती
दुर्गाह् जानइ सकतिया जे भाई तूऽऽहार (३०)

१. अगोरी, लोरिक का विवाह

अगोरी का वर्णन

बारह् न पलिथाह् बा अगोरीऽऽऽ
तिरपन कसकलि ना गलियाह् हो बाऽजारऽ
ओहि घड़ि सूनह् न हलियाह् ओठियन कऽ
जहवां पर मुबह् मोलागति लेइहउं हउवंऽ
ओनकर लागल चाननिया पर दर रे बाऽरऽऽ
ओहि घड़ि मतियाह् न मतवा जे ठठरा लगलंऽ
चुगुलाह् देहलेनि ना बतियाह् अर रे थाई
किह् भाई राजह् ना मुनिलह् महर राजा
एठियन मनबह् काहनवह् रे हमारऽ
देखिलऽ जे एक क पारजवाह् हो तोहाऽरऽ (१०)
अगोरिन जोड़इ ना तोड़वाह् बान देखाऽतऽ
ओहि घरि सबकर अंदजवा जे लइये लेतऽ
परजाह् कवन न कइसन हो तोहारऽ
ओहि घड़ि मूनह् ना हलिया ओठियन कऽऽ

राजा मोलागत का मंत्री की सलाह पर अगोरी की परिक्रमा करना

मतिया थपलेह् मंत्री लेइये बानऽ
सूबा के गयल ना मनवा हो बइऽऽठी
ओहि घरी बिहनह् ना होत बाय भुल्हर
पुरबइ देनह् कऽउअवा देख हो रोरऽऽ
ओहि घरि उठनह् ना मुबवा मोर मोलागत
उठि कर कुल्लाह् मयदनवा होइ रे गइलंऽ (२०)

आजु भाइ कुल्लवह् मूखरिया कइये लेलंऽ
मुखवा में लेलहं ना बिरवा हो दबाई
अब सूबा कूचई मगहिया ढोली रे पानऽ
ओहि घड़ि सुबरन ना छड़िया सूबा ऊठउलेन
गोड़वा में सोनेह् खरउवां हो पहिनी
जउने घड़ि उतरइ ना सिढ़िया कीलवा कऽ
अरे भाई हलत सऽहरिया मेंनि हो गइलं
ओहि घड़ि देखई ना सहुवा हो महाऽऽजग
उठ भाई कालिय कुरूसिया लेइ के दउरं
धइ कइ निहुरि करत बा पर हो नामः (३०)
अब राजा आसिर ना वदिया बा हो देतऽ
आजु भाई परजाह् ना मुनिलऽ हो हमारऽ
आज तुह आखह् अमरवा जे होइये रहब
तुयं भाई जियह् ना लखवाह् रे बरीस
जइसे भाई बाढ़त बा पनिया जे गंगा कऽ
ओइसइ बाढ़इ ना अइयाह् रे तोहार
अब फेरि देतह् ना ओठियन बा रे खातिर
सहुवाह् हलल भीतरिया बा चलि रे जात
ओहि घरि दूधइं न चिनियाह् लेइये लिहलेन
सरबत देलेह बा ओठियन रे बनाइ (४०)
ओहि घरि लोटह् ना पनियाह् रे गिलसिया
लेइ करि सूबह् के अगवांह चलि रे जायं
ओहि घरि ऊठइ ना रिदवह् रे मोलागत
उय भाई पीयत बा पनियह लेइ रे बाय
सुनना हलिया ओठियन कऽ
सूबह् ऊहउ दूअरधा छोड़िये काम
अपने जानह् पऽरजवा के देर रे बारऽ
ओतनह् ऊहउ ना खातिर बात रे कइ कऽ

राजा मोलागत का महर अहीर से भेंट करना—
जुए में राजा की हार

अइसइ गल्लीय घूमतवाह् बाय अगोरी
जउने घरी बावन ना गलिया जे घुमि रे गइलंऽ (५०)
एक नाहि गयनह् पऽरजवाह् रे चिल्लाय
जउने घड़ी तिरपन ना गलिया मे हालि रे गइलंऽ
रेंगल गइनह् अहीरवा के दर रे बार

अंगने में बइठल ना महरा जे बाइये कुरूसी
अउ फेरि जूटल ना सुबवा जेवन रे जात
ओहि घड़ि नाहीं अहिरवा जे बाय रे ताकत
न त सूबा बोलत जऽबनिया से देख रे बाय
ओहि घरी पक्का पहरवा जे ठाढ़ रे भयना
नाहिं भाई मनवाह् ना कइलेनि रे गुलाम
आजु हम कुकुरि का हई दुअरा पर जुटि रे गइलीं (६०)
परजाह् बइठल ना रहिगा जे हमार
आजु भाई सरम के मरवा जे नहिनी ऊठत
अउ चार परग न मुबवा जे जाऽन पछेल
जेहि घरी मरलेनि खंखरिया जे फरके से
महराह् ऊठल कुरूसिया से लेइ रे बाय
आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् न मझवांह् रे लीलार
आजु कहैं……सुनह् न हलिया अहीरे कऽ
गर्राभय बोलल महरवाह् लेइ रे बानं
आजु कहैं हो हो दइयाह् मोर नारायन (७०)
का बरम्हा लिखलह् मंझवाह् रे लीलार (पुन०)
सूबाह् देखत परजवा के बाड रे चूल्हा
कउन हम लेइंय मुलुकवाह् तड़ि रे याइ
एतना जे सुनइ ना रजवा हो मोलागत
उय भाइ ओठिन से उठियं चलि रे गइलंऽ
चुप से रेंगल चाननिया पर जालंऽ
ओहि घरी गोड़ह् ना मुड़वा रे चदरा
लेइ फेरि तानिय मूतल बा लेइ रे बानऽ
आजु सूवा सातइ घरियवा कइ खवइया
दिनवाह् दुपहर चऽढ़लवा बाइ रे जात (८०)
ना त सूबा मानह् ना बोल रे बोलावत
ना त उहै ताकै मऽलकिया रे ओंधारी
ओहि घड़ी मचीय गइलि बा अन रे खानी
ओहि घरि उठनह् ना मुबवाह् मोर मोलागत
जाइ केनि बइठईं कचहरीय में नि हो जाइ
ओहि घड़ी बोलल ना मंतिरिह् लेइ रे बानऽ
आजु कहैं सुनबह् ना राजाह् महरे राजा
एठियन मनबह् कहनवाह् तू हमाऽरऽ

आजु कहैं परजाह् ना (के) महरे के
कहलसि कइसन मूतलवाह् बाड़ रे आजू (९०)
आजु कहैं महराह् के जल्दी बल रे वईब
अह फिर दे दह् चननिया बइ रे ठाई
उनके कूसे के साथरिया देइये देहा
अपने के लेइ ला कुरूसिया मय रे दाना
त ओहि घड़ी खेलह् कउड़िया अऽहीरे से
एहि में मिलीय न बलवा अन रे दाजा
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
मंत्री मतवाह् न ओठियन ठाठिये दीहलेन
मूबा के गयनाह् ना मनवा हो बईठी
ओहि दम छूटनह् ना तुरकीय ये सिपाही (१००)
रेंगल जानह् मऽहरवा केनि रे घऽरऽ
जाइके भाइ ठाड़ा दुअरवां होइ रे गयनऽ
महराह् वानह आंगनवां मेनि रे ठाढ़ऽ
आजु कहें सुनबह् अहीरवा जे बीर रे तू हं
तोहार मुवाह् ना कइलेनि रे बलाव
ओही घड़ी बोलत महरवा न जबन से
हम भाइ नाहिय ना चननीय पर रे जाइबऽ
ए महं जावन ना मनवा जे होइ रे होइ
ओहि घड़ी सुनलह् सीपहियन कइ रे मंसा
ओनके हाथेह् ना गोड़वा जे धइये लें (११०)
टेकीह् टेकह् चननिया पर लेइये चलनऽ
अउ फिर देखत अगोरिया क वाने रे लोग
ओही घरो बालनह् अगोरियाहं कय महाजन
पंचह् मनबह् काहनवह् रे हमार
तव ओही अहीरे के संघवां जे चलि रे चऽलऽ
अब चलि चऽलह् चाननिया पर रहि रे दऽम
आजु भाइ कऽवन कऽमुरवा जे अहीरा कइलेसि
एमकर एतनी जाचनवा जे होत रे बाइ
ओहि घड़ी एतनाह् ना रे हल्लइये रेंगल
परजाह् रेंगल चाननिया पर वान रे जात (१२०)
जाइ केनि छोड़लेनि सीपहिया जे चाननीय पर
अहीराह् ठाढ़ह् ना हथवाह् जोरि रे बाय
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा

एठियन तू मनवह् काहनवाह् रे हमार
आजु हम कऽवन कमूरवा जे अइसन कइलीं
हम्मार कइलह् जाचनवा जे बरि रे यार
ओहि घड़ी बोलनह् ना सुबवा मोर मोलागत
आजु फिर कहत जाबनिया से दोहरे राय
आजु भाइ सुनबह् न अहीराह् तोडए मऽहर
एठियन तूं मनबह् काह न वह् रे हमाऽर (१३०)
अब तुय कवनेह् गऽरमिया से दुअरा पर बोललऽ
उहे गरमी हम्महं ना देतह् रे देखाय
जे अपने धनह् ना सठियंह् के गऽरमिया
आरे मोर बोललह् न बोलियाह् रे कुबोल
जौ अपने सोनह् दरबिया केनी गऽरमिया
अइसन बोलह् लऽ बतियह् रे बनाय
के भाई कवने दंहियह् ना जोमवाह् के रे जोरे
अइसन कइलह् ना वतियाह् ले ल रे कार
जउनेह मानेह् ना तोहरे जे लेइये रहनऽ
उहे हमरा आयल ना वतियाह् लेह् रे वाय (१४०)
आज तुय बऽईठि दुअरवा पर चाननिया पर रे जातऽ
दुइ हाथ चालत न पसवा जे लेल रे कार
जेकि भाइ रामइ ना देतह् देइगे ते के
छन्नेह जातइ झगड़वा जे फरि रे याय
आवत अहीरवा जे सथरीय पर
राजह् बइठल कुरूसियह् पर रे बानऽ
हथवा में ले लह् काउडियह् लेइये महरा
उहे भाइ छावइ ना दानवा बा लेरिये यात
जउने घड़ी छः छः ना दानवाह् लेल रे करलेऽसि
अब खुलि गयल ना दानवाह् छवरे आजऽ (१५०)
आजु भाइ जीतल घऽर्मीहटा ओनकर हो जानंऽ
जवन हइ गोहूँ गोजइयह् कइ रे ठाने
दुसरह ना हथवा जे फेंकिये देहलेन
आधह् जितलेनि अगारियाह् लेइ रे पालऽ
ओहि घड़ी तिसराह् काउड़ियाह् ओहि पवरलेऽ
उन्हें भाइ जीतल ना किलवाह् भई रे नाऽर
आजु कहें पंचवाह् काउड़िया जे बाइये फेंकत
बेलकुल हथिय ना छोड़वाह् घोड़ रे सार

अब सूबा जीतल ना अहीरह् लेइ रे बानऽ
ओहि घड़ी छठईंय काउड़ियाह् रे पवरलेऽ (१६०)
नोकर चाकर हुकुमिया जे आपन चढ़ा देऽ
एतना जे कहत ना बोलियह् बाये ओठियऽन
कान धइके देलेसि कुरूसिया से ओन्हे उताऽऽरि
ओही घड़ी रोवईं ना सुबवाह् मोर मोलागत
जेकर भाई उरदून कवलवा वा बिहरे लातऽ
आजु भाई गलतीय सरीरवा में होइ रे गयनऽ
एमह सरबस गल्तीयाह् बाय हमाऽरऽ
एकतह जबरीय पारजवा जे मंगरेवउले
परजा खेलत ना पसवाह् लेल रे कारी
उहे परजा बेलकुल ना धनवा जे जीनि रे लेहलेन (१७०)
कान धइ के देलेसि ना ओठियन से उताऽरी
ओही घरी उल्टीय हुकुमिया बा लगरेवउलेऽऽ
सुबवा तूं भनबह् काहनवह् रे हमाऽरऽ
इनके भइया के छिन ना धोतिया जे पहिरे रहब
अगोरी से देबह् पुरूबवा रे डहरे राइ
ओही घरी छुटनह् सिपहिया जे सुबवा कऽ
यक छिन देलेनि ना धोतिया जे पहिरे राय

ब्राह्मण के वेश में ब्रह्मा का आगमन और मोलागत को सहायता का आश्वासन देना

ओइ घरी यक छिन ना धोतिया जो सूबा पहिर कऽ
रोवत उतरल चाननिया जे बान रे जात
ओई घरी आगेह् ना नदिया जे बाइ बीजुलिया (१८०)
उअ पार होतइ गयल ना डगमगाइ
ओहि घरि बरम्हा से आसन डगमगाइनंऽ
ओन्हइं देतइ न बानह् बर रे दान
उअ भाई बाभन ना रूपवा जे धइये लिहलेन
जाइकेनि आगेह् डऽहरवा पर भइनं रे ठाढ़
ओइ घड़ि बोलइं न बतियाह् लऽरमें से
सूबाह् कहांह् रेंगलवाजे बाड़ रे जाऽत
आजु भाई कऽउनि मुसीबति परि रे गइली
रोवत जालह् अगोरिया जे ओहि रे पार
ओहि घरी बोलनह् ना सुबवह् लेइये ओठियन (१९०)

आजु भाई मनबह् काहनवह् रे हमार
आजु तोहार जातीय ना हउवे जे बाभने कऽ
जाइकेनि मांगह् दुअरवाह् पर रे भीख
इकाह् जनबह् रोइबवा के हमरे मतलब
अब तूंये धरह् डहरिया जे चलि रे जाय
अब बरम्हा उनहूँ से हट्टू जे परि रे गइनऽ
उअ भाई ले लेनि ना हथवां लेइ रे जात
आजु कहैं सुनबह् ना मुबवाजे मोर मोलागत
कहनां तूं मनबह् ना एठियन रे हमार
आजु भाई आपन मतलबवा जे हमें बतावा (२००)
हमहूंय देइय उपइया जे तोहें बताय
कहत ना रहलीं हम रऽमायन
कइसन परल जियरवाह् बा रे भोरऽ
अब जिनि भूलह् ना संघियाह् मोर समउरी
मति भूलि जायह् दुरूगवाह् मोरि हो माई
ओहि घड़ी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
बरम्हा जी बोलल बां ओठियन लेइये बानऽ
उय राजा देतइ जवाबवाह् ओन्हे हो बानऽ
आजु कहैं मुनबह् बराभन मोर हो देवता
एम्महं अहीरे के कमूरवा तनिको हो नाहिनी (२१०)
गलतीय बा नाइ कामूरवा हो हमाऽरऽ
आजु भाई देखह् ना हलिया परजा कऽ
अब तोहि देलेसि ना देसवा हो निकालि
अब तुयं लवटि अगोरियां तनि हो जाबऽ
अब चढ़ि जाबह् चाननिया केनि रे बांचऽ
जाइकेनि हाथइ ना जोरिया कइ रे बोलऽ
आजु भाई सूनह् ना सुबवा मोर हो माहर
अब तूंय मनबह् काहनवा हो हमाऽरऽ
आजु कहैं आंखिनि अगोरिया बाय जे छूटत
एक हाथ अवरूहं न खेलतह् हो बनाई (२२०)
ओहि घरी गरभीय अहीरवा बाड़ रे महरा
बोलत बानह् गारभवा कइ रे बोलऽ
आजु कहं मुनबह् ना मुवाह् मोर मोलागत
एठियन तूं मनबह् काहनवहं रे हमाऽर
आजु भाइ एक दाइं ना दू दांई कवन रे गनती

तूं हाथ खोलह् ना पसवाह् रे पचास
ओहि घड़ी बोलइं ना मुबवाह् मोर मोलागत
जाके भाई बईठ साथरियाह् पर रे गइनऽ

पुनः महर और मोलागत का पासा खेलना—
सब कुछ हार जाने पर पत्नी की कोख दाव पर रखा जाना

अब राजा बईठि ना अहीराह् कुरूमी पर
सूबाह् ले लेह् काउड़ियाह् हथवां में (२३०)
पहिलेह् छऽवई ना दनवा जे बां खेलावत
उय धन जीतनह् ना ओठियन रे बनाऽई
आपन जीत लेनि घटिहटा लेहि रे गाँवऽ
जवन हइ गोहूँय गोजइयाह् कइ रे खानी
ओहि घड़ी दुसराह् आवरिया बा फेंकि रे दीहले
अब जीति गयल अगोरियाह् अपने पानऽ
ओहि घड़ी तिसराह् काउड़ियाह् बा निकालाऽ
अब जीति गयल ना किलवाह् भईं रे नारऽ
के भाई चउथाह् काउड़ियाह् लेइये फेंक लेनि
हाथीय जीतइं घोड़वा रे आजऽ (२४०)
के भाई पंचवह् कउड़ियाह् फेंकि रे देहलेन
नोकर चाकर ना जितननि अब बनाई
ओहि घड़ी पंचवह् काउड़िया जे फेंकिये दिहलेन
अब जीति गयनह् ना अगोरियाह् सब रे राजऽ
कान धइके देहलनि कूरूसिया से ओन्हे उतारी
ओहि घड़ि छठवंह् ना दानवा जे बा पवरलें
अउ फेर बोलत जाबनियाह् सेनि रे बाय
आजु कहं सुनबह् माहरवा जे तूं ये अहीरू
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु तोर धानइ ना पुंजिया जे कुछ ना धरबय (२५०)
हम तोर धरब बीयहिया के देखु रे कोख
आजु जेतने बिटियाह् ना जतियाह् रे जानमिहैं
ले जाब किल्लाह् भोगब हम रनि रे वास
जेतनिय बेटवाह् ना जतियाह् रे जानमिहैं
हमरे घोड़ह् कऽ होइहइं रे सहीस
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
अहीराह् रोवत चाननियह् पर रे बानऽ

आजु कहैं सूबाह् ना सुनिलह् मोर मोलागत
आजु भाई सोनह् दारबिया के होब रे भूखलऽ
किलवा में देइयं ना हमहूं रे दूसाई (२६०)
नाहिं भाई गइयाह् भइसियां क होबे भूखल
दानवा पर धइलह् लऽछिमियाह् रे हमाऽर
उहे भाई नाहिंय ना दानवाह् पर रे बोलऽ
अब छोड़ि देबह् बीयहियाह् केइ रे कोखऽ
दिनवाह् दिनके बंधकवा के जे परि रे जइहंऽ
जियनह् होइय बीरिथवाह् रे हमाऽरऽ
ओहि घड़ि बाजति थापोरिया जे सूबवा कऽ
अब हंसल बानह् कऽचहरीह् कइ रे लोग
आजु कहैं हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा रखलह् ना बतियाह् रे हमाऽरऽ (२७०)
आजु पूरा भईल ना बतियाह् रे हमाऽरऽ
महरा के चलि दीहें ना घरवा जे दरबार
ओहि घरि बड़ेह् सबेरवा केनि रे जूनऽ
अब फेरि रेंगल माहरवाह् घर रे जालाऽ
एकदम नीकलि आंगनवाह् मेंनि रे गइलंऽ
महरिन दुरि दुरि आंगनवा जे बाड़ बटोरत
जाइके माहर बइठल कूरूसियाह् पर रे बाऽनऽ
ओहि घड़ि बोलति न धनवा जे बाई ए माहरिन
सइयांह् सुनिनह् ना एठियन रे हमाऽरऽ
तोहें भाई धइलेंह सिपहियाह् चलि रे गयनऽ (२८०)
कीलवा पर कऽवन जाचनवा जे भयल तोहाऽरऽ
तब फेरि बोलल ना बतियाह् बाइये ओठियन
बियहीय मनबेह काहनवह् रे हमाऽरऽ
न त राजा मरलेनि ना हमके जे गरि रे यउलेन
न त उहां बोलनह् ना रेहवा रे तूकारऽ
कायदे से हमसेइ ना पसवाह् जुआ रे खललेन
अब हम जितलींय ना बेल्कुल उनकर सामाऽनऽ
आपन देलीं हुकुमियांह् रे चलाईं
अह माई पुरबेह ना देसवा में चलि रे देहलेन
सूबाह् देहलनि बऽचनियाह् रे सूनाई (२९०)
आजु भाई बहुत गारहवा जे डालि रे देहलेन
अब कहं परीय बंधकवा जे कोखिया में

अब फेरि देखह् ना हलियाह् रे ओपाई
ओहि घड़ी लेइकऽ बऽढ़निया जे लेइये हाथवां
महरिन दवरिल महरवा जे ओर रे जाय
ओहि घड़ि भागल कूरूसिया से गिर रे माहरा
सोझइ चढ़ि गयल ना परबत हो पहाऽड़
ओहि घड़ी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
केहि फेरि ओहूय समदयाह् कई ये हालऽ
अइसे अइसे बारह बरीसवा जे बीति रे गऽयल (३००)
चऽढ़ल बानह् तेरहवाह् लेइ रे माऽसऽ
अेकरेह् अंदर ना मुनिला माहरीन कऽ
अेकरे अंदर छवई बीटियवा रे जनमलीं
पारि पारि छवओ लेइ गय नऽ भंवरे नाऽरऽ
आजु कहैं मूनह् ना हलिया सतयें कऽ
आजु भाई देखइं ना हलिया लेइ रे चाऽलऽ

लोरिक का जन्म

आ फेरि मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
के भाइ ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
जवने घड़ी भादवं महीनवा जे रहले चऽढ़ल
अउ फेरि आधीय ना रतिया जे निकरे राऽय (३१०)
जवने घड़ी होल्लाह् जानमवा जे क्रिस कन्हाई कऽ
तेही घड़ी तड़कत पहरवाह् लेइ रे बाय
आजु कहैं देहहि ना बुढ़िया जे बाइ रे खोइलनि
जे फेरि ओहुय ना बिरमी जे कोलु रे बाइ
बोहवा में आगिय ना कठिया जे गोठ लगाइ कऽ
अउ फेरि गांजत गोबरवन कइ रे बाय
ओहि घड़ी तड़कलि ना बिजुली जे लेइ ये ओठियन
अउ फेरि आंचर बूढ़ियवा जे फइ रे लाय
जउने घड़ी ध्यानइ बारम्हवा पर धइये लीहलेन
अउ फेरि गीरत धऽरनिया जे तर रे बाय (३२०)
ओकरेह् ऊपर लोरिकवा जे गिरि रे गयऽनऽऽ
बुढ़िया के गयल आंचरवा जे देख रे बाय
ओकरेह् ऊपर सुबवा जे गीरल सुबच्चन
उय भाइ गीरिय धऽरतिया जे बानऽ फेंकाय
ओहि घरि बिरम्हीय कोलिनिया जे ओठि रे रहलीं
ओन्हे लेइके भगनिय पीपरिया जे लेइ रे पाल

अगोरी में मंजरी का जन्म

ओही घड़ी सूनह न हलिया महरे कऽ
तब भाई सतयेंह् गारभवा रहि रे गऽयल
तब फेरि नागर अगोरिया कइ रे हाऽल
अठयें से नऽवइ महीनवा लेइये चऽढ़ऽ (३३०)
भादवं चऽढ़ल मऽहीनवा बर रे सातऽ
जउने घड़ी कीसुन कन्हइया के जनम रे होला
ओहि घड़ी होलाह् जनमवा मांजरी कऽ
एहि जउ नागर अगोरिया दई रे पालऽ
आजु भाई पूरूब बऽ हलि बा पुर रे वइया
पछुवांह देलेसि ना बड़वा रे झिकोरी
आजु भाई उतराह् मरले बा भवंकिया
दखिन दउ बरसत लोढ़नवा कइ रे धारऽ
ओहि घड़ी सगरउ आगोरिया भर बरसइ रे पानी
महरा के घेरि कह् बाखरिया जे बरसइ रे सोन (३४०)
ओहि घड़ी होलाह् जानमवां जे मंजरी कऽ
ओहि फेरि जानेह् आधी रतियां कऽ सगवाह् रे सबेर
ओहि घड़ी होइ गयल जनमवा जे मंजरी कऽ
धियवाह् गीरल धरतिया लेइ रे बाय
ओहि घड़ी मूनह् ना हलिया जे माहरीन कऽ
अउ फेरि बोलिल भीतरियाह् सेनि रे बाय
आजु कहं सुबचन ना मुबचन बाइ पुकारत
मुबचन अंगने में भइयवा जे ठाढ़ रे बाय
आजु कहैं सुनबह् ना भइयाह् मोर सुबच्चन
एठियन तूं मनबह् काहनवाह् रे हमार (३५०)
चलि जाह् लोनाह् चऽमइनी के दर रे बाऽरऽ
अब लेइ आवह् ना नोनवाह् रे बलाय
आजु भइया जनमलि भऽयनवा जे लेइये घरवां
जल्दी से लेइ आवऽ ना नोनवा के बल रे वाय

नोनवा चमारिन का नाल काटने आना

ओही घरी रेंगल ना मलवा जे बाऽ सुबच्चन
अब फेरि रेंगल चऽमरवा जे घर रे जाय
दुअरा से नोनवाह् ना नोनवा जे बा पुकाऽऽरत
भितरी से बोलति चऽमइनी जे फेरि रे बाय

अब कहैं गरभिन चऽमाइनी बाइ रे नोनवा
भितरी से बोलति गऽरभवा कऽ बानी रे बोल (३६०)
आजु भाई केहू दुअरवा पर लेइ ये एला
बोलत बाड़हू् मेहींयवांहू् कइ रे बोल
ओही घड़ी बोलल ना भइया जे बा सुबच्चन
नोनाहू् मनबहू् काहनवाहू् रे हमार
आजु भरे जनमलि भऽयनवा जे बाइ ये घरवां
ब्रहिन तोहार कइलेहू् पूकरवा जे लेइ रे बाय
चलि केनि नारइ बेवरवा जे छेंकि रे देबऽ
अब तूय लेबहू् ना कमवा जे अपन पुड़ाय
ओहि घड़ि नाहिय ना नोनवा जे बाड़ कुछ बोऽलत
फेरि भाई चारि परग फरकवां जे हटि रे जाय (३७०)
आजु कहैं भइयाहू् न सुनिलाहू् तू सुबच्चन
एठियन मनबहू् काहनवाहू् रे हमार
एठियन बइठइ ना गउवाहू् लेइये घरवां
तब तुहू कारन काहलिया रे हमार
आज तू बइठहू् न ओठियंन वल रे वइबऽ
कइमे नोना बोलति गारभया क बाड़ रे बोल
ओहि घरी मूनहू् ना हलिया जे नोनवा कऽ
मूबचन से कहति ना बतिया बा समुझाय
भइयाहू् तोहरेहू् ना बहिनिय केनि ये कोखिया
ऊहे भई छवइ बीटियवा जो होइ रे जायं (३८०)
छवइ जनमलि गोबरवा क बाइं ये हीना
एहि दाई जनमलि भगमनियाँ जे लेइ रे बाय
आजु कह बीनाहू् दीयना लेइये बतियाँ
जेकरि भइलि सोवरिया बा अजरे रार
तब कहू् सगरउ अगोरिया भर बरसे रे पनिया
महरा के घेरि का बाखरिया जे गोरय रे सोन
······नोनवाहू् बा चमाइनि
सुबचन मनबहू् काहनवाहू् रे हमाऽऽर
देखऽ भाइ छऽवइ बीटियवाहू् महरी के जनमल
छहवई जनमलि गोबरवा कऽ बानी रे हीना (३९०)
एक दाईं जनमलि बा घियवा जे पेट रे पोंछनी
जेकरेहू् जऽरत ना छत्तर लेइये बाऽऽनऽ
तब कह सगरउ आगोरिया जे बरसल बा पनिया

महरा के घेरि कहू बाखरिया जे गिर रे सोना
आजु भाई बीनहू दीयनवा जे बतीया कऽ
जेकर भाई भईल सोवरिया बा अंज रे राऽर
आजु बीना डांड़ीय ना डोलवा जे हमरे चढ़ि कऽ
ना त चलि चलब ना नारवा जे छिनबे वाय
ओहि घड़ी एतनाह् ना बतिया जे सुनऽ सुबच्चन
एकदम लवटल महरवा जे घर रे मयनऽ (४००)
अँगने से बोलत ना मलवा जे बा सुबच्चन
बऽहिन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽरऽ
नोनवाह् भारिय ना ठनगन कइये दीहलेस
आजु भाई बोलल गारभवाह् कइ रे बोलऽ
जउ फेर बेटवाह् ना जतियाह् रे जनमतऽ
अऽऊर आईल साइत नह् लेइ रे खम्मऽ
आजु भाइ बीनह् डंड़िया जे डोलवा कऽ
ना छीने चलव ना नारवाह् रे बेवार
तब फेरि बोललि भीतरिया से बाय रे महरीन
भइयाह् कवन ना डंडियां में बुनि रे यादऽ (४१०)
झट देनी आलर ना बसवांह् कट रे वइवऽ
डोलिया दे दह् न ओठिवन रे फनाऽऽई
उपरा से डालिदह् ओहरवा जे डोलिया पऽर
चमइनि आवइ ना छीनइ नार बेवाऽरा
ओहि घड़ी लेतनह् ना बतिया वाइ रे कऽहत
ढालर देलेसि ना बसंवा कट रे वाई
अब डोली देलेसि ना ओठियां फन रे वाई
आजु भाइ कंहरा ना ले ले बल रे वाई
डोलिया पर डललेह् ओहरवा वाइ रे जाई
उय ले ले जालाह् चामरवा केनि रे घऽर (४२०)
जाइ केनि डांड़ीय जूटलि बा दुअरा पऽर
ओहि घड़ी बइठलि ना नोनवा जे बा चामारिन
उहे भाई देखत नऽजरिया जे भइल पाताल
आज कहँ हो हो न रइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् न मथवांह् रे लील्लार
कवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
केहि फेरि ओहय समइया कइये हाऽल
सुबचन डोलियाह् खऽटोलियाह् रे मँजुसवा

दुअरेह् से हमरेह् ना जल्दी से हट रे वइबा
हम ना छीनब ना नरवाह् रे बेवाराऽ (४३०)
ओहि घड़ी बोललि ना नोनवा बाइ चमाइन
सुबचन मनबह् काहनवां तूं हमाऽरऽ
जवन भाई बाड़इ पालकिया मऽहूरीन कऽ
उंय भाई पीतरीय बा पालकिवा हउ रे ओनकर
जे महं बान्हइ न मोढ़वा रे उरेहाऽ
जेमा भाई बत्तीस कांहरवां देखऽ रे लागंऽ
हुम्मिय हुम्मा ना डंड़िया लेई रे चऽलव
उपरां से डालल ना पंचरंग रे ओहाराऽ
जब भाई ऊहइ ना अइहइं रे पालकिया
तब चलि के छीनव न नरवाह् रे बेवाऽर (४४०)
....बानह् रे सुबच्चन
आइ कनि भवनह आंगनवाह् मंनि रे ठाढ़ऽ
आजु कहैं सुनबेह् बहिनियांह् रे हमाऽरऽ
नोनवांह् भारिय ना ठनगनिया जे कइये देहलेस
आजु तोहार छोटकीय पालकिया जे पितरीय कऽ
जाड़वाइ गयनह् ना माढ़वाह् रे उरेहऽ
जेमहं बत्तिसह् कंहारवा जे लागि रे जानऽ
हुम्मिय हुम्मा मामानियाह् चलि रे देलाऽ
उपराह से पंचरंग ना छोड़नह रे ओहाऽरऽ
जब भाइ उहई पालकिया जे देख रे अइहंऽ (४५०)
तब चलि रे छीनब ना नरवा जे हम बेवार
ओहि घड़ी सूनह् ना हंसिया जे आंठियन कऽय
महरिन बोलनि लारमवाह् कइये बाल
भइया नारीह बेवरबा जे तार भयनवांऽ
आजु भाई बाड़यं बाहरवहं रे झुराऽत
बुजरिय कऽवनि पालकिया कऽ बुनि रे यादऽ
हमरे त लेबजोह् पऽलकिया जे उठरेवाइ
ओहि घड़ि ऊहइ पऽलकिया जे नीकलवाइ कऽ
अउ फेरि देहलनि बाहरवां कढ़ रे वाऽ
अब भाई पंचरग ओहरवा जे छीड़ि रे गऽयनऽ (४६०)
बत्तिसो लागल कांहरवा जे डोंठि रे बाय
जउने घड़ी उड़ी उठि गइल पलकिया जे मऽहरिन कऽ
उहइ ले लह चामरवाह् जे घर रे जाय

मोलागत की नोनवा चमारिन से भेंट—
मंजरी के जन्म के बारे में मोलागत को जानकारी

तउने घड़ी भांभर ना भोरवा जे भयल बीहानवाऽ
उह भाई बड़े सबेरवाह् कइ रे जून
जउने घड़ी उठनह् ना सुबवा मोर मोलागत
उह फेरि बइठल चाननियाह् पर रे बाऽ
सूबह् कुल्लाह् गालालिया जे करत जे रहनऽ
तब तक चमकलि पालकिया जे लेइ रे बाय
तब फिर बोललंह् ना रजवा जे मोर मोलागत (४७०)
सुनबह् हमरउ ना मुंसिय रे देवान
आजु भाई बहुत आदरवा जे होत रे बानऽ
का दउं जनमल माहरवा जे माहरवा जे घर रे बाय
आजु छऽवइ बीटियवा जे देख जऽनमलें
एतनाह् आदर पालकिया जे नाहि रे जाय
चाहि एद बेटवाह् ना जतियाह् बाइ रे जनमल
नोनवाह् घरेह् पालकियाह् बड़ रे जात
अब कह सुनबह् सीपहिया जे ओठियन कऽ
भाई·······करह् न पहराह् पुड़ रे आय
जउने घड़ी बारह ना दीनवा जे बरह्नीय (बीतिहेय)
नोनवा के लवटीय ना डड़िया जे एहि दाम (४८०)
ओहे भाइ डांड़िय साहितवा जे लेइ लीआवले
अब हमरे आवाह् चाननियाह् मय रे दान
ओहि परे पुछि लेब ओठियन कय सबूतऽ
आगवंह् करब उपइया जे हमरे जाय
जेवनी घड़ी जूटलि ना डंड़िया बा लेईये दुअरा
अंगने में गईल महरवाह् के ऊआरी
ओहि घड़ी बोललि ना डंड़िया से बाइ रे नोनवा
महरिन सुनबह न बतियाह् रे हमाऽरऽ
एइं दायें जनमलि बीटियवा बा पेट रे पोछनी
नेगवाह् बढ़ल ना बानह् रे हमाऽरऽ (४९०)
आजु भाइ धरबह् न सोनवाह् सूपऽ भरि कऽ
ओहि पर धरब पयरवाह् देख रे हमऽ
तब तोहे आईब सोअरियाह केनि रे घरऽ
तब हम छीनब ना नरवाह् रे बेवाराऽ

ओहि घरी भरि कह् न सोनहवाह् सूप रे देहलेन
अब धइ देलेनि पालकियाह् के दुवारऽ
नोनवाह् धरऽ ना गोड़वाह् रे दहिनवा
अब फेरि लेलेसि ना सोनवाह् सूपऽ भरि कऽ
पालकी में देलेसि ना नोनवाह् अपने धऽई
अब हलि गईलि भीतरिया वा सोअरियऽ में (५००)
जाइ केनि देखइ न रूपवाह् मंजरीय कऽ
आजु बाबू बीनह् दीयनवाह् बिन रे बतिया
बिटिया क सोअरि भईल बा अंज रे रार
ओही घड़ी जाइ केह् सारूपवा जे बाइ रे देखऽत
नोनवाह् फेरि जाबनियाह् दे मुनाई
जब भाई सोने क हंमुववा जे बनरेवऽवऽ
तब चलि के छीनब ना नरवाह् रे बेवाराऽ
ओन्हें भाऽ सोनइं न हंसुवा पट पिटायाऽ
अब लेट अयनह् ना नानवा के हथ रे देहलेन
नोनवाह् ले लेह् भीतरियो बाऽ रे जातीं (५१०)
जाऽ केनि छीनऽ ना नरवा रे बेवाराऽ
जउने घड़ी देखऽ चेहरवा मंजरी कय
जेतना भइली बऽखरिया अंजरे रारऽ
ओहि समय ओहिय फीकिरिया में नि रे बाड़ऽ
अइसे अऽगे वारह ना दीनवा बीति रे गइना
छठियाह् बरहीय भयल बा मय रे दान
जउने घऽडी डांड़ीह् ना होइगा धन महरिनी
नोनवां क करत वीदइया ओहि रे दऽम्मऽ
ओन्हे भाई सोनेह् कोरहवा कइ रे धोतिया
सोनवाह् देलेनि करधनिया रे बनाई (५२०)
नोनवा के कइलेह् सींगरवा बाऽ रे मऽहरीऽ
पालकी देलेनि चऽमइनी बइ रे ठाई
उह भाई ऊठल पालकिया चमाईनि कऽ
चलि गईल बानह घरवां कऽ रे खोरऽ
खोरिया धइलेह् ना जालइ रे अगोरियां
तब तक छूटल सीपहिया सूबवा कऽ
जाइ केनि छेकलेह् पऽलकिया क बाग रे आय
आजु कहैं सुनबह् काहनवा जे नोनवा कऽ
सूबा कऽ उल्टीय हुकुमिया जे देख रे बाय

चलि कनि पलकीय ना चलनी पतोहड़ जइहंऽ (५३०)
तोहसे पुछिहइं ना सुबवाह् रे हमाऽर
ओहि घड़ी चढ़लि पालकिया बा ओठियन से
एकदम रेंगल चाननियांह् परि रे जाइ
जाइ केनि छिपि गइल पालकिया जे नोनवा कऽ
नोनवाह् देलेसि न पंचरंग फेंकि ओहाऽर
आजु भाई खोलि कह् दुअरिया जे बाइ रे ताकत
मूबाह् बइठल कुरूसियाह् पर रे बाऽ
जउने घड़ी देखइं ना मुबवाह् रे मोलाऽगत
नोनवाह् ऊगलि दुईजिया के बाड़ऽ रे चान
ओहि घड़ी सूनऽह् ना हलियाह् ओठियन कऽ (५४०)
के फेरि ओहूय समइया क देख रे हाल
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
चमइन ताकइ ना सुबवाह् ओर गुरेरी
सूबा क लड़ि गइल नऽजरिया जे कूरूसीय से
चमइनि गइलि ना मुखवा से मुसरे काई
ओनकर चमकलि बऽतीसिया बा दतवा कऽय
ओन्हें आइ गइलींय मूरूछवाह् कइये दाऽरऽ
अब राजा गीरऽल कुरूसिया से भह रे राई
बोलत बानह् लऽरमियाह् कइये बोलऽ
आजु कहें मुनबह् देवनाह् मोर रे मुखिया (५५०)
एठियन मनबह् काहनवाह् रें हमाऽरऽ
आजु हम सुरंतीय सोपरिया जे देख र खइली
उपरांह खइलीय ना जरदाह् रे तुलाऽबऽ
आजु भाई नासाह् न हमहूं के होइये गइली
आजु गिरि गइलींय कुरूसियाह् लेइ रे हम्मऽ
एतनाह् कऽहत न सूबवाह् बा मोलाऽगतऽ
तब फेरि समतुल सरीरवा जे होइ रे गऽयऽनऽ
बोलत बानह् लऽरमिया क बोलऽ
आजु कहँ नोनवह् न सुनि ले मोर चमाऽइन
एठियन मनबेह् काहनवंह् रे हमार (५६०)
देख भाई छवइ बीटियवा जे लेखु रे बानऽ
हमरेह् किल्ला भोगत बाइ रनि रे वासऽ
आज काह् जनमल ना महरा जे घर रे गयऽन
एतनाह् आदर भयल बाह् बड़ रे वार

ओहि घड़ी बोललि ना नोनवा जे बा चामाइनि
दरियाहं कऽरई ना बेड़वाहं रे जवाब
आजु राजा छऽवइ बीटियवा जे जवन रे जनमल
छवइ लेइयल ना कीलवा जे भइं रे नार
उ छवइ जनमलि गोबरवा के बाईं रे हीनऽ
एह दाइं जनमलि ना धियवा जे देख रे बाइ (५७०)
आजु कहैं जनमलि ना धियवा बा पेट रे पोछनी
जेकर भाई दावन मांजरिया जे परी रे नाम
सूनह ना हलियाह ओठियन कऽ
नोनवा के हुकुम ना मूबवा बानऽरे देतऽ
नोनवा ते चलि जोह ना अपने दर रे बारऽ
ओहि घड़ी ऊठलि पऽलकियाह मूबवा से
अब चलि जालई ना नोनवाह दर रे बाऽरऽ
नोनवहं उतरि पालकियाह से नि रे गइलीऽऽ
आपन देनिय सामानयाह रे नीकाऽली
ऊहवां से रेंगलि पालकियाह ओठियन सेऽऽ (५८०)
फेरि रखि गईलि महरवाह केनिरेघऽरऽ

मंजरी का क्रमशः बढ़ना—सहेलियों से खेल में झगड़ा—मंजरी का क्रोध

ओहि दिन सूनह ना हलियाह ओठियन कऽ
जउ भर बाढ़ति बीटियवा घरि से घऽरी
अब फेरि काल्हीय देखह त पर रे देखा
ऊगलि आवति दूइजिया क बाइ रे चानऽ
जउने घड़ी तिनियह महीनवा जे होइ रे गइलीं
धियवाह खेलइ पटहेरिया जे होइ रे जानीं
अब कहैं कुरूईय मउनिया जे लेइये लिहलीं
अब फेरि लेलेह ना ओठियन खेले रे लगली
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा बऽभने कऽ (५९०)
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा बऽनिया कऽ
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा कायथे कऽ
चार पांचि खेलइं लऽड़िकिया गर रे जोरीऽऽ
अइसइ खेलत खेलतवा किछु दिन बीतल
अपने में देलेनि झागड़वा रे भिड़ाई
अब लड़ि गईलि लाड़िकिया लेइये ओठियन
मंजरी से लड़लि कयथवा कइये लड़िकी
बोलत बानिय ना रेहवा रे तुकारऽ

अब त नाहिय न होत बा बर रे दासऽ
लड़कीय लड़ि गईं ना खोलिया मय रे दाऽनऽ (६००)
ओहि घड़ी लड़ईं गऽरदवा रे मेंसानऽ
अब तेजधारिय बिटियवा बा महरे कऽ
जेकर बानऽ दावन मंजरिया पड़ले नाऽपऽ
अब भाई मरलेसि ना दउवां लेइये ओठियन
लड़िकी गीरल धऽ रतियाँ भह रे राईऽऽ
जउने घड़ी उठिकह भईलि बा सम रे तूलऽ
बोलत बानिय ना बोलिया रे कुबोलऽ
महरा के गाड़लि दऽरबिया माटी रे होइजाऽ
गइयाह् भइसींय ना तिलहा रे मनाऽरऽ
एतना बड़ बिटियाह् ना भइनी रे अगोरियांऽ (६१०)
एक नाहिं कइलेसि बऽहिलवा कइ बिवाऽहऽ
मंजरीय अपनेह् ना मंगवा क हम सेनूरवा
तोर हम दरब ना संघट रे लीलाऽरऽ
आजु भाई बारह् ना पलिया जे बाड़ अगोरी
तिरपनि कसकलि ना गलियाह् रे बऽजार
आजु भाई सावति ना लगबे जे मोंह अगोरिया
मंजरी त् मनबेह् काहनवह् रे हमाऽरऽ
......धियवा बा महरे कय
महरा के लीहे ना घरवाह् छाड़ि.ये कानी
अब भाई चऽढ़लि चाननियाह् पर रे जाई (६२०)
गोड़े मूड़ तानति चऽदरियाह् बाई रे ओठियन
घरवा कऽ कोई मावाऽ्बा ना जानत रे बानऽ
तब फिर मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
सातइ घरियवा कइ खबइया
दिनवाह् भयल दुपहरवा बाई रे जाता
दउर दउर खोजइ ना धानवा लेइ रे महरिन
रोवत बानिय ना जरवा रे बेजारऽ
आजु काह् भऽईलि बीटियवा रे हमाऽरऽ
के भाई राजह्ना जितले रहनऽ कोखिया
डांड़ेह घाटेह् लऽड़िकिया गइल भेंटाइ (६३०)
लेइ जन किल्लाह् भोगत बाडनि रनिवाऽसऽ
एहिय जे मुबहें ना धनवा रोइ रे महरी
महरी के रोवत बा नयना हो कुल परासऽ

आजु कहैं जुयावलि जोगावलि मोर विटियवा
गायब भइनीय अगोरिया बाई रे पाऽलऽ
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह् मोर सुबच्चन
एठियन मनबह् काहनवह् रे हमाऽर
आजु कहै नदियाह् ना नारवाह् जे गई खोजइनी
कतनहुँ नाहीय ना पतवा जे बाड़े ठेकाऽन
का जानी जीतल ना कोखिया में बानऽ हो सूबा (६४०)
आजु पाई गऽयनह् डऽहरवा जे मय रे दान
जबरीय धई कह् बीटियया जे लेइ रे गऽयनऽ
उहे भाई किल्लाह् भोगइ नहि रनि रे वास
एतना जब कहत वा बतिया बा जे अर रे थाइ कऽ
ऊ फेरि बोलत ना मलवाजे देखऽ रे बाऽ
आजु कहै सुनबे बहिनिया तैं रे महरी
एठियन मनवेह् काहनवांह् हमाऽ रऽ
आजु कहैं बारह ना पलिया वा अगोरी
तिरपन कसकलि बानीय ना लिये जाई
तब केनि घुमि घुमि ना खोजिलह् भऽयने के (६५०)
तब फेरि नदिया बेवरवाह् बाइ रे सोनऽ
लड़कीय गईलि ना सोनवा में बुड़ि रे धंऽसी
आजु कहाँ भईल भयनवा रे हमाऽरऽ
आजु कहै तीनिय ना रतियाह् तिन रे दीऽनऽ
महरेह् घरेह् मचलि बाड़न अन रे खानि
तब कहं बीनह् ना दऽनवाह् बिन रे पनिया
मरत बानह् ना महरा के घर रे लोग
मुना ना हलियाह् अंठियन कऽ
रावत बाड़ई ना ममवा रे सुबच्चन
हथवा मे लेलेह् रूमलिया मुंह रे देले (६६०)
पोंछत रूमलिया अंऽसुवाह् चऽनने पऽर
जहं भाई बाड़े वहनोइया कइ चाननिया
ओहि पड़े चढ़ल अहीरवाह् बाइ रे जाऽतऽ
जाइ केनि देखइ चऽननियाह् कइ रे हाऽलऽ
भीतरी से जड़लि आगरिया बाइ देखाती
सूबहा भयल ना ममवांह् केनि रे बाऽड़ऽ
आजु भाई केहीय ना घरवां में चाही भयनवां
भितरा से देलेसि आगरियाह् रे चढ़ाय

उहे भाई बानह् ना मंजरी जे नरियाऽतऽ
मंजरीय बोलति ना बतियाह् देखऽ रे बाय (६७०)
कइसइ जइसइ ना हाथवा जे लेइये डालि कऽ
उहे भाई टारति आगरिया जे लेइ रे बाऽ
जउने घरी ऊघरिया अगरी जे होइ रे गइलीं
अब खुलि गयल केवरवा जे मयरे दान
मम्माह् रेंगल खटियवाह् चलि रे गऽयनऽ
जाइ केनि बईठि खटियवाह् पर रे बाऽ
ओहि घरी तानइ चदरिया जे मूहवां कऽ
मंजरी के बऽहति आंसुइयां जे लेइये बाऽ
ओही घरी बोलल ना ममवां जे वा सुवऽच्चन
दरियांह् करई ना बेड़वां रे जबाव (६८०)
आजु कहैं सुनबह् भयनेह् मोर मऽजरिया
एठियन मनबेह् काहनवह् रे हमाऽर
के भाई तोहइं ना मरलेसि गरि रे यवले
के बोल देलेसि अगोरिया में रेह् तुकाऽरऽ
जल्दी से हमरेह् सऽरेखवा मे भयने लगइबऽ
ठड़ ठड़ फारिय अड़ाइ देबऽ हमरे गाल
······घड़ी कवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां

बिना विवाह किये अन्न-जल नहीं ग्रहण करूँगी—मंजरी का प्रण

मंजरिय उठि कइ ना गइली रे बईठी
रोइ रोइ कहति ना बतिया वा मम्मा से
मम्माह् मनबह् काहनवह् रे हमाऽरऽ (६९०)
देख मामा पांचइ लऽड़िकिया जे खेलली रोजऽ
रोज रोज खेलली ना गुडहिय रे कुरूइया
एक दिन मचि गई लड़िकवन में अन रे खानी
बोगड़ि गईल लड़कियाह् कयथे कऽ
हमकेह् मरलेसि मेहनवाह् बड़ि रे याऽरऽ
आजु भई कहै जे सेनुरा जे मंगिया कऽ
मंजरी के दरब ना संघट रे लीलाऽरऽ
बसलि बारह ना पलिया बाइ अगोरिया
एहि छिन लगवह् सावतिया रे हमाऽरऽ
एतनाह् कहति ना बतियाह् बाइ मंजरिया (७००)
मम्माह् मनबह् काहनवांह् रे हमाऽरऽ

आजु भाई झगड़ाह् लड़िकिया जे गुन रे कइलेन
हमसे नाहिय झगड़वा जे मम्मा सहाई ना
आजु हम मारल ना दउवाह् लेऽये घाऽतऽ
लडिकीय गीरलि धऽरतिया में भहरे राई
आजु मम्मा अइसीय मेंहनवा जे मारि रे देहलेसि
मम्माह् आजुह् ना सिरवा में परिहइं सेनुरा
पछवांह् अन्नई गऽरहबई जल रे पाऽन
······ममवा रे सुबच्चन
एकदम ऊतरि चाननिया जे भयं रे ठाड़ (७१०)
आजु कहैं सुनबेह् बहीनिया जे मोरि रे महऽरी
अब जिनि रोवह् ना कलपह् कोऽये जाने
जिन केन पटकऽह् धऽरतिया में नि रे माथ
आजु कहैं भयनेह् चाननिया पर बाडे मऽजरिया
उहे भाई अन्नऽ छोडल बा जल रे पाऽन
ओके भाई अऽसन ना धउवा जे लागि रे गऽयनऽ
उहो भाई हवई ना सथवाजेकऽ लड़िकीया
ओकेह् लागल ना बनिया के घाउ रे बाऽ
जब ओकरे आगेह् बीयहवा जे कऽये देवऽ
पछवा से अन्नऽ गऽरहिहइं जल रे पान (७२०)
आजु कहैं गऽयाह् पांचुलिया जे लिखल बा अन्नइ
पानीय लीखल रूधिरिया जे बाइ सामान
मम्माह आजुह् सेन्हुरवा जे सिर रे परिहऽईं
चलकेनि कऽरब ठऽहरिया पर जेव रे नार
ओहि घरी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
उहे भाई ओहू समझयाह् कई रे हाल
उहे भाइ नीकलि दूवरवा से ना अपना
बहीन बहीन ना कइलेह् रे पूकाऽर
आजु बहिन सगरउ फीकिरिया जे छोड़ि रे देबऽ
ओहू से जब्बरि फीकिरिया जे होइ रे जाऽ (७३०)
भयनेह् अन्नई ना पनिया जे सब तियगलेन
आजु भाई धरनह् अगोरिया में होइ रे जाइ
जब ओकर आगेह् बीयहवा जे बहिन जे करबऽ
पीछे खाइ ना अनवाह् पानि तोहाऽर

सुमिरन

हाँ, राम, राम, राम, राम हो राम

कहलेनि सांझेह् सुमरलींय हम संझेसर
आधीय रातिय अऽरजुन सुनऽल हो बान
अब भिनुसहरां सुमिरली जे हरि ये कारन
इहै तीनि धरम करमवा कहईं रे जून (७४०)

पंडित मोहनिया, नाऊ तथा सुबच्चन का मंजरी के लिए वर खोजने जाना

ओहि दिन एतनाह् ना बतिया जे सुनऽरे महरिन
उह भाई ठाढ़ई धऽरतिया में गिरि रे जाइ
आज कहै हो हो ना दइया जे मोर नारायन
का बरम्हा लीखलह् ना मंझवा जे तक रे दीर
कइ दिन में लगिहइं बीयहवा जे बीटिया कऽय
कइ दिन सिरेह् सेनुरवा जे परि रे जाय
तब ऊत अन्नइ ना खइहंइ जे जल रे पनिया
सहजे में मरि गइल बीटियवा जे देखऽ हम्मार
ओही घड़ी बोललि ना धनवां जे आई ये महरिन
भइयाह सुनबह् सुबच्चन रे हमाऽर
आजु कहै पन्नित मोहनिया के बल रे वइबऽ (७५०)
अन फेरि नउवाह् हजमवाह् ऐहि रे दाम
आपन भाई पोथींय पातरवा जे ले ले रे अइहं
तिलका के देइहंइ मजरिया क वडरे ठाइ
ओहि दिन रेंगल ना भइया जे बा सुबच्चन
एक दम रेंगल पन्नितवा जे घरि रे जाइ
दुअरा से मोहनीय ना मोहनीय पन्नित पुकारऽय
भितरींय बोलत मोहनिया जे पन्नित रे लाग
ओहि घड़ी बोलल ना भइयाह् लेइ रे ओठियन
आजु तोहार कइलेह् बलउवा जे बहिन रे बाय
अब चलि चलबह् बखरिया जे महरी के (७६०)
तोहार बानह् बलउआह् ओहि रे दाम
ओही घड़ी रेंगल ना ओठियन से रेंगावल
ओहि घड़ी ओठियन से रेंगनह् रे रेंगावल (पुन०)
अब चलि गयनह् मऽहरवा के दर रे बार
आजु कहैं सूनह् ना बहिनिया जे मोरि रे महरिन
एठियन मनबेह् काहनवांह रे हमाऽरऽ
उहे भाई पन्नित मोहनियाह् नाऊ रे अयऽनऽ
अब तू कहह् ना बतिया जे अर रे थाई

ओहि घरी नीकलि ना धनवा जे अइली रे महरी (७७०)
अंगने में पन्नित ना नउवा जे बइठल रे बाय
पजरेंह् भइयाह् ना बानह् रे सुबच्चन
अब फेरि बोलति ना धनवा जे देख रे बाय
पन्नित लरिकाह् गऽदेलवनि के खाये के खरचा
नाउ बाभन लेइ जाह् न घरवा द पहुँरे बाय
अपने के बान्हि लह् रोकड़वा जे हथवां में
अब तूंय चऽलीय ना देसवा जे चलिये जा
देखा भाई चारिय ना खुटवा क हवे पिरिथिमी
बरवाह् खोजह् ना जोड़वाह् केनि रे तोड़
आजु कहै मंजरीय ना जोगवा जे बर रे खोजऽ (७८०)
महराह् जोगेह् अहीरवा जे खोजऽ गरार
..........ना रे बाभनवां
पछवांह खोजत मलुकवा बा संवरे साऽरऽ
चारि ओर घूमय ना नउवाह् रे बभनवां
कतउं नाहीं जोड़इ ना तोड़वा के बाति रे बानी
नात भाई मंजरीय ना जोगवांह बर रे मीलऽनऽ
नात फिर समधीय महरवाह् अस गराऽरऽ
कतहूँ घरइ मीलइ तहं बर रे नाही
कतहूँ बरवाह् मीलइ तहं घर ठेकाऽनाऽ
घूमल जानह् मुलुकवाह् लेइये दक्खिन (७९०)
दक्खिन खोजलेनि मूलुकवाह् छिति रे राई
उहउ नाही बइठल ना तिलकठ लेइये बाऽनऽ
एकदम पुरूब ना नऽगरवाह् सोझिरे यवलेन
अउ भाई खोजयं ना देसवाह् रे पईठी
मंजरीय जोगेह् दुलेरवा जे नाहि देखयनऽय
ना त महर जोगेह् अहीरवा रे गराऽर
नउवाह् बभनह् ना दऽढ़ियाह् बढ़ि रे गइनीं
खोजत खाजत ना दिनवांह् बिति रे जानऽ
घूम केनि अयनह् ना देसवाह् रे पंवारो
जउने घरी आईय आगनवां मे दुन्नो बइठयं (८००)
पटकत बानह् ना पोथियाह् लेइये आज
आजु कहैं मंजरी के कऽरमवा जे जरि रे गऽयनऽ
एन्हें नाहीं दुल्लर ना बरवाह् मिलें रे आज
एतनाह् कऽहीय ना देसवाह् लेइ रे ओठियन

आज्रु सुनु घरेह्‌ ना रोदन होइ रे जाय
जवने घड़ी रोवइ ना धनवांह्‌ लेइये महरी
पटकत बानींय धरतियाह्‌ रे कपाऽरऽ
आजु भाई जीयावलि जोगावलि मोरि मऽजरिया
दाना बिना मरि जाई बीटियवाह्‌ रे हमाऽरऽ
एतनेहू फिकिरिय में रोवति बाइ रे महरी (८१०)
अउ फेरि ओहूय समइया क देखऽ रे हाल
ओही घड़ी सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन कऽय
अब मचि गइलि रोवनि सुबड़वारी
सवा लाख रोवइं गोतिनियांह्‌ महरे कऽ
सहजे में गईलि बीटियवा अब रे मऽरी
ओहि दिन सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन कऽ
मम्माह्‌ रोवत ना बानह्‌ लेइ हो जातऽ
फेरि भाई जानह्‌ चाननिया पर दोहराई
जाइ करि पूछइं न वतियाह्‌ अर रे थाई
भयनेह्‌ काहे कहींय नह काये नाहीं (८२०)
कुछ मोरे बूते कऽहलवा बा नाहीं जाऽतऽ
भयनेह्‌ तोहरे जीनिगियाह्‌ केनि रे कऽरने
आजु भाई तीनिय मूलुकवाह्‌ सं रे साऽरऽ
घुमि केनि होऽय गयल ना वांवरे डोलऽ
जोगे तोरे नाहीय ना बरवाह्‌ लेइ रे मीलऽ
अब नाहीं बइठल ना तिलकठ रे तोहाऽरऽ
आजु कहैं सहजे में पऽरनवा जे चलि रे जइहइं
ता तूह अन्नइ छोड़ल तूह जल रे पान
एतना जे सहति ना धनवा जे बाइ रे मंजरी
मंजरी बोलति लरमवा क बाइ रे बोल (८३०)
मम्माह्‌ काहेह्‌ कहीह नह्‌ काये नाही
कुछु मोरे बूते कऽहलवा बा नाही रे जात
आजु भाई कहब ना बतिया लरमें से
अब फेरि जाईय या देसवा में छिति रे राई
एतनाह्‌ जे सूनत ना मम्मवा जे बा सूबच्चन
गरवा में नउछी ना गिरनह्‌ ना रे लपेट

मंजरी द्वारा अपने भावी पति लोरिक के सम्बन्ध में सूचना दिया जाना—ब्राह्मण, नाऊ तथा सुबच्चन का लोरिक के यहाँ तिलक ले जाना

जाइ के गोड़ धइलेह् भयनवाह् कइ रे बाने
अउ फेरि बोलत लऽरमवा क बाइ रे बोल
आजु कहैं भयनेह् ना सुनिलह् मोरि मजरिया
एठियन मनबेह् कऽहनवां रे हमाऽर (८४०)
आजु भाई तिलकठ ना आपन रे बतवते
काहे होति बानी हलकनियाह् रे हमाऽर
तब फेरि बोललि ना धियवा बा महरे कऽ
जेकर भाई दावन मंजरिया जे पड़ल रे नाव
मम्माह् का एह् काहीय नह काहै नाहीं
कुछ मोरे बूतेह् काहलवा बा नाहिं रे जाऽत
आजु कहैं सुनहुऽ ना लोगवा जे एठियन कऽ
निनवाह् करिहइं ना हमरउ रे बनाय
आजु कहैं मंजरीय ना जनमल रे कल रे जुगही
आपन बर अपनेह् ना देहलेरि रे बताय (८५०)
एतना जे सूनत ना ममवा जे बा सुबच्चन
हाथ जोड़ि के बोलत भयनवा ना सेइ रे बाइ
आजु कहै भयनेह् ना सुनिलह् मोरि मंजरिया
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
एठइत हमहीय जानब नह के तुहंइ
दूसर केहुय ना उपग्हं देले बाय
एतना जो कहत ना बतियाह् लेइ रे बानऽ
तब फेरि बोलति मंऽजरिया जे लेइ रे बाय
अब कहें सुनबह् ना मम्मांह् मोर सुबच्चन
धरनी पर टांगल बा पुस्तक लेइ ये बाविल कय (८६०)
अब आनि लेबह् ना हमरेह् आगे रे धर
ओहि घड़ि रेंगल ना भइया जे बाय सुबच्चन
जाइ केनि लेहलेह् पुस्तकवा बा रे ऊताऽर
ओहि घडि खोलत कागदवा जे बाय नीकालत
हथवा में ले लइ कलमियां जे मसि रे हान
मंजरीय लीखति ना अंकवा बिल रे गाई
पहिलेह् उत्तर ना देसवा लिखय कबूतर
एक गांव लीखति गउरवा गुजरे रातऽ

अब कहैं मऽसूर ना लीखती बाइ कठइता
भसूर लीखत संवरूआ बाई रे माऽलऽ (८७०)
ओहि घड़ी लीखई सरूपवा लोरिके कऽ
उहै भाई हवै सेनुरवा कइ रे बऽन्नऽ
अब जइसन रहल सरूपवा सबहिन कऽ
उय छापा रूह रूह ना देहले बाइ उतारी
जइसीय बाढ़इ बदनियां लोरिके कऽ
फोटवाह् देलेसि ना धनवा रे ऊतारी
आजु भाई देलेसि ना कागद मुरि रे हाई
उहे कागद पत्रित मोहनिया केनि रे हाऽथऽ
पत्रित लेइ लह् मोहनिया तुंव रे लाऽल
चल तनी उत्तर न दसवा तड़ि रे आई (८८०)
ओहरउ होइहइं ना तिलकठ जउ रे लीखल
भयने के कइ देइं ना सदिया लेल रे कारी
ओहि घड़ी मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
ए भाई ओहूय समइयन कइयें हाल
अब कहैं लिखिकह् ना पतियाह् धन मंजरिया
मम्माह् के हाथेंह ना देहलेह् बा टेकाऽ
आजु कहैं पातीय ना लेइकह् ओठियन से
धावन के देलेह् ना हथवांह् रे टेकाय
आजु कहैं रेंगल ना पत्रित रे मोहनियां
अब फेरि पीछेह् ना नउवाह् रे हजाम (८९०)
आज तेकरे पीछेह् ना ममवाह् बा सुबच्चन
उत्तर लेहलेनि रस्ताह् तड़ि रे आई
आजु भाई रातिय रेंगत बांय दिन रे दऊरत
कतनउ बदत नाऽकुरवाह् रे मोकाम
तब कह दीनह् अठारहइ क बांय रे पंयड़ा
अब दिन नवयेह् गउलवा बा गोंइ रे ड़ाय
जवने घड़ी जूटल ना नागर बन गउरवा
चढ़ि गयन सेम्भू सागरवा के देख रे भेंट
आजु भाई पूछहं ना घरवा जे लोरिके कय
ओहि गाउं पनिघट ना गयनह् रे बईठि (९००)
ओहि घड़ी मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
गउरा के सहदेउ ना रजवां जे हवं रे अऽहीर
महदेउ बानह् बेटउनाह् लेइ रे आज

आजु भाई ऊहइ ना सुबवाह् बाय……

चनवा द्वारा तिलक चढ़ाने वालों को बर्गलाया जाना

जवने घड़ी चलल तिलकवा बा ओठियन से
उय भाई गयल दुअरवाह् पर रे बा
आजु भाई रहलि ना धनवा जे बा चनइनी
सोरह सइ सहदेउ ना रजवा न पनि रे हार
आग आगे रेगइ ना धधवाह् पनि रे हारिन (९१०)
बिचवा मे चन्नाह ना चलियह् बाइ रे जात
जवने घड़ी परि गइल नजरिया जे चनवा कऽ
अब धिया बोलति लरमवाह् कइ रे बोल
अब कहै सुनबह् ना भइया तूं दूरं देसिया
कहनाह् मनबह् ना एठियन रे हमाऽर
अब तोहार काहेंह ओतनवा जे हउरे गोतन
कहाँ पर टूटीय गईलिया वा बुनि रे याद
कहंवा से कइललह् चढ़इयाह् लोधे एठियन
पूछत बाड़ह् लोरिकवा क तुय रे घऽर
आज्रु हमरे पीठिय ना भइया जे हवं रे लोरिक (९२०)
चलऽ हम घरवाह ना दई जे तोहै देखाइ
आगे आगे रेंगलि ना चनवा बाइ चनइनी
पिछवांह् तीनि मूरतिया बांय हो जातऽ
जवने घड़ी रेंगल दुअरवा आर रे जानऽ
चनवांह् धुमिकह् खीरिकिया हलि रे जालऽ
महदेउ भइयाह् भीतरियां बाइ रे बइठल
ओहि भाई देखह् ना डलिया रे हवाऽल
चनवाह् तेलइ फूलेलवा ओन्हे रे मींजय
सोनहुल देलाह् गाहनवा पहि रे चाई
जवने घड़ी आढ्य ना रखवा तं रे जेऽब (९३०)
उपरां से देलेन ना देहियां पहिरे राई
कन्हवा पर रेसमीय रूमलिया रखि रे देने
दुअरा पर देलेस ना महदेउ के रेंगाई
जउने घड़ी देखइ ना नउवा रे बभना
निकलल बानह् जेवनवा सर रे दाऽरऽ
राव केनि नीहुरि ना मथवा बाइ ओनावत
भरि मुख देतइ ना नउवा असिरे बाऽदऽ

भइया आखेह् अमरवा होइये रऽहऽ
अब तूं जीयह् ना लखवा रे बरीसऽ
आजु कहँ देसइ दूनियवांह् कइ रे अइल्या (६४०)
तोहरेह् घेवरेउ ना जंघियाह् रे सरीर
आजु कईं तवनेह् ना दिनवांह् राम समइया
किह् फिर ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
अउ फेरि रेंगल ना ओठियन रे रेंगवलऽ
अब जूटल जानह् तारि·······
ओकर भाई गयल सलमिया रे ओराई
तब फेरि देखह् ना हलियह् ओठियन कऽ
अब फेरि देखत ना पत्रित रे मोहनिया
जरि मरि भयल ना बेंड़वांह् रे खंगाऽरऽ
इय बीर का येह् जउ गाड़ल बांस अगोरी कऽ (६५०)
की आइ गइहइं गउरवा गुजरे राऽत
का जाइ के छतियहं बसवांह् रे अंगइहंऽ
महराह् क धेरियह् बियहिलइं लेलरे कारी
आजु भाई हथवा में ना छेकनाह् रे उठउतऽ
जाइ केनि छेकतहं मुअरियाह् कइ आगाऽर
एतना जउ कहति ना धनवांह लेइये ओठियन
पत्रित मरलेह् मेहनवा बा बरि रे याऽर
उहवां से रेंगल ना नउवाह् रे बभनवा
अउ फेरि बानह् पत्रितवा जे जकरे रार
आजु कहँ दगियाह् ना लागे गांउ गउरवा (६६०)
चूवत बानह् कोइलवाह् रे खंगार
आजु भाई बहुत ना ठगवा जे चोर रे बाऽनऽ
कइसन ठगत तिलकवा में हमरे रे बाय
ओहि घरि लोरिक क घरवा जे जाइ रे पूछत
अगवांह बानह् आदिमियाह् देखऽ रे ठाढ़
आजु भइया ऊहई लोरिकवा के बाइ घर लवकत
उपरां छत्राह् पीपरवा में फरि रे आय
जिनकर छोटई घंघरवा बा पीतरिय कय
बाइ फेरि भीतर बानइ नह खंड रे हार
अब कहँ बायेंह दाहिनवा जे बाइ रे पीपर (६७०)
दहिनेह् बानीयना दुरूगा क असरे थान
एतनाह् सगरउ ना बतियाह् बायं बतावत

लोरिक के द्वार पर तिलक चढ़ाने वालों का पहुँचना

तीनिउ रेंगलइ मूरतिया जे बान रे जात
एकदम रेंगल लोरिकवाह् घर रे गउ्यनऽ
दुअरा से करत बानइ नह् रे पुकार
दुअरा से लोरिक ना लोरिक बांय पुकारत
बुढ़वाह् मारत हमनियां जे फिरि रे बाय
आजु कहैं हो हो न दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् दा मझवांह् रे लीलार
आजु भइया कंहवाह् ओतनवांह् तोहरे गोतन (९८०)
कहवां पर टूटीय गइलिया बा बुनि रे याद
कहवां से कइलह् चढ़इया जे दूरं देसिया
लोरिक लोरिक ना वाड़ह् ने रि रे यात
ओहि घड़ी बोलनह् ना पन्नित रे मोहनियां
दरियाहं करई ना लगनह् रे जवाब
आजु भइया अगोरी ओतनवा जे हंव गोतन
अगोरिया मं टूटीय गइलीया बा बुनि रे याद
अत्र हम कइलीय चढ़इया जे गउरा के
तोलक लेहलीय दुलेरुवाह् रे तोहाऽर
ओहि घड़ी सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ (९९०)
अब फेरि बोलल न बुढ़वाह् बा कठइता
भइया बइठह् दुअरवांह् हो हमाऽरऽ
आजु कहं पानीय पऽतरवाह सेइ रे पीयऽ
हमहूं देई लोरिकवऽ तोहे देखाई
ओही घड़ी नउवाह् बाभनवांह् बोल रे लागे
भइयाह् नाहि ना पनिया जे अस रे पियबऽ
गउरा मे बहुत बानह् ना ठग रे चोरऽ
आजु भाइ लोरिक ना दूसर रे देखावंऽ
अब नाही मानीय जोनिगियाह् रे हमाऽरऽ
ओहि घड़ी सुनह् ना हलिया ने बूढ़ कठइत (१०००)
गंगियाह् नउवाह् के बानह् नरि रे यात
जउने घड़ी परल सबदिया जे गांगी नउवा
उय भाई दवरल दुअरवा जे भइन रे ठाढ़
ओहि घड़ी बोलल ना बुढ़वा जे कठइता
नउवाह् मनबेह् कऽहनवाह् रे हमाऽर
बेटवाह् गयल अखड़वाह् में देखुरे बाऽनऽ

हथवा में लेइलेह् ना मलवा में तेल रे हाथें
बेटवाह् के वहरेह् ना तेलवाह् रे लगाये
रूखर भूखर बेटवना जे बाड़ हमार
ओहि घड़ी सुनह् ना हलिया जे गंगिया कय (१०१०)
अहे भाई ले लेसि न मलवाह् रे उठाइ
मलवा में तेलइ भरलवा जे एक हाथ लेहलेसि
रेंगल जालाह् अखड़वाह् केनि रे बीच
ओहि घड़ी परि गइल नजरिया जे लोरिके कय
लोरिका दांतन अंगुरिया जे बान चबात
आजु कहैं हो हो ना दिनवांह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवांह् रे लीलार
आजु बाबू एतनाह् ना दिनवां जे बीति रे गयल
नउवा नाहीं देखलसि अखड़वाह् हमारऽर
घरवा पर कवनि मोसीबति परि रे गइली (१०२०)
नउवाह् दवरल न आवत बान हमाऽर
ओही घड़ी जुटल ना संवबाह् लेइ रे बाऽनऽ
जाइ केनि बोलत लरमवा कऽ बान रे बोल
ओही घड़ी सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे भाई ओहू समइया कइ रे हाऽल
लोरिकाह् नीकलि अखड़वाह् से भयन रे ठाढ़ऽ
नउवा देलेसि ना सगरउ बात सुनाई
अब कहैं लोरिक ना भइयाह् सुन हो आजऽ
कऽकाह् मालिनि बाठइता तोहार बलावयऽ
तीलक आयल दुअरवाह् पर हो बानऽ (१०३०)
ओहि घड़ी रेंगल न मलवाह्वा लोरिकाऽ
पीछे-पीछे रेंगल ना नउवाह् जाय हजाऽमऽ
नउवाह् मोलाह् में तेलवाह् बोरि रे लेलाऽ
पीठिया पर ठोकत लोरिकवाह् केनि रे बाऽनऽ
ऊलटि ताकइ अहीरवाह् कइ रे पूतऽ
अब कहैं बाउर ना नउवा बउ रे रइले
तब तो हरि गईलि ना मनिया रे गियाऽनऽ
गंगियाह् खींच कइ मूसुकवा मारि रे देबऽय
तोर झरि जइहइं बतीसवां देखु रे दांऽनऽ
अऽजु मोरे देहह् भोगिया हउ रे धूरऽ (१०४०)
कहें तोहं देह लेहु ना तेलवा रे चुवाई

तब फेरि बोलल ना गंगिया बाइ हजाऽमऽ
मालिक सुनबह् ना लोरिक रे हमाऽरऽ
आजु बइठल ना दुअरवा पर दूरं देसिया
तोहइं रूखर ना भूखरईं देखिहईं दुअरा
कइसे होइहइं ना काजवा रे बिबाऽहऽ
ओहि दिन बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
आजु भाई मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
जेकरे सातइ ना दउंवा जे लेइ रे गऽरज
ओकरेह् होइहइं कपरवा पर नेरि रे थात (१०५०)
उहे भाई झंखइ ना मरिहइ आइ रे गउरा
अब फेरि पुजहइं ना पउवाह् रे हमाऽर
जउने घड़ी रेंगल अहीरवाह् रे रेंगावल
अब चलि गयल भीतरियांह् मय रे दाऽन
जाइकेनि बइठल आंगनवांह मेंनि रे बाऽनऽ
दुअरा पर बइठल बानह् ना दूरनु देसिया
दोहरी बहारइ ना सुनिलह् एकर मतलब
अब फेरि देलेसि ना हुकुम रे लगाई
आजु भइया आयल दुअरवा पर महि रे माऽनऽ
उहे भाई निकलल अहीरवा रे रेंगवलस (१०६०)
जाइ कनि निकलल दुअरवा पर बाइ रे ठाढ़ऽ
पन्नित लेइ लेइ कगदवा जे हंथवा में
जइसइ देखइं ना छपवा जे कगदे में
ओइसइ सनमुख लोरिकवाह् रे देखाऽनऽ
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
जाइ के फेरि नीहुरि ना मथवा बाइ नेवरले
पन्नित भरिमुख देतइ बा असि रे बाऽदऽ
आजु लोरिक आखेह् अमरवा होइ रे रहबऽ
अब तू जीयह् न लखवाह् रे बरीसऽ
जइसेह् बाढ़इ ना पनिया जमुनी कऽ (१०७०)
ओइसइ बाढ़इ ना अइया हो तोहाऽर
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
तिलक आयल ना दुअरा बाइ तोहाऽरऽ
तब फेरि बोलल ना भइयाह् बाइ लोरिकवा
अबहींय कइसेह् तिलकठवा जे मोर रे बाय

आजु हम जोड़ह् ना भइयाह् बाड़ रे एठियन
धरमीय जेठह् ना बोहवा में मोर रे बाय
जब हम धरमीय ना भइया के करब रे सदिया
पिछवांह् सादीय ना होइहइं रे हम्मार
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवांह राम समइया (१०८०)
बोहह् देलेनि ना गंगिया के दवरे राई
संवरू क होतइ ना बानह् रे बलावा
तब तक सूनह् ना हलियाह् सहदेव कऽ
चनवाह् के नाऊ बभनवाह् भेज रे वउले
लोरिका के संघेह् ना करई के विवाह
अब फेरि अपने ना बुधिया से बायं रे राखत
आजु हम चनवा के बीयहि देइं लोरिके के
जवन भाई अगोरी के तिलकवा जे लेइ रे आयल बा
झंख मारि हमरेह् बेटवना के देइ चढ़ाई
एहि फेरि देलेनि ना तीलक भेज रे वाई (१०९०)
दुदुय बानह् तिलकहरू टेय रे टीकल
तब सेनि दुदुय बेटवनाह् अहीरे कऽ
ऊहे भाई लेहलेन ना ऊहइ बल रे वाई
तब फेरि बोलल ना बाड़इ बूढ़ कऽठइता
बेटवाह् मनबह् संवरूवा हो हमाऽर
आजु हमरे दुइय बेटवना देख रे बाड़ऽ
दुन्नो संघे ना कइ देईं हम विवाहऽ
आजु कहैं एकइ खरचवा केनि रे लगले
दुन्नोह् जइहंइ ना सदिया रे निपटी
तब फ़ेरि बोलल न मलवा बाइ रे धरमी (११००)
सांवर बोलल ना बतिया अर रे थाई
आजु भाई सुनबह् बाबिलवा रे हमाऽर
अबहिन करब ना सदिया हमरे आऽपन
जबसे हमें लछमीय हुकुमिया नाहि रे देइहंऽ
तबसेन करब ना कजवा रे विवाऽहऽ
एतनाह् बाड़ई परनवा संवरू कऽयऽ
आजु भाई बोलल धरमिया दोह रे राई
आजु भाई अगोरी कऽ तीलकवा जवन रे बाऽड़ऽ
हमरेह् लोरिक दुलेरूवा के चढ़ि रे जाऽला
आजु कहैं चनवा क तिऽलकवा फेर रे वइबऽ (१११०)

तीलक चलि जाइ न सहदेउ दर रे बाऽरऽ
आजु भाइ करब बीबाहवा न हमरे गउवां
दिनवांह् दिन कइ होइय रे कल रे काऽनऽ
कउनों घड़ी खातिर आपदवा होइ रे जइहंऽ
सेल्हियाह् धंगिहइ दुअरवा रे हमाऽर
ओहि दिन मारब भूवनवा जे होइ रे जइहंऽ
एतना तूं मनबह् काहनवां जे देख हमाऽर

लोरिक का तिलक सम्पन्न—सवा लाख बारातियों का अगोरी के लिए प्रस्थान करना

अब घूमऽल तिलकवा वा सेल्हिया कऽ
तीलक बइठल अगोरियाह् कइ रे बाऽनऽ
तब फेनि बोलल ना मलवांह बाड़ऽरे सांवर (११२०)
कक्काह् मनबह काहनवाह् रे हमाऽरऽ
अन्नहींय भइयाह् लोरिकवा क करऽ रे सादी
चलि के नगर अगोरियाह् दइ रे पाऽलऽ
जवने घड़ी ठीयल तिलकवा वा सहदेव कऽ
चलि गयल लड़केह् ना किलवाह् भंवरे नाऽर
जब फेरि बचल तीलकवा बा अगोरीय कऽ
उय भाई बइठल अंगनवां में रहि रे जाऽनऽ
ओनकेह् दीनइ मोकमवांह् बान रे देखऽत
पत्तरा में बांचइ ना अंकवाह् बिर रे गाई
आजु कहैं नीनह् ना दिनवांह् परत बाइ सुक रे वाऽरऽ (११३०)
जातराह् कऽहहति सइतियाह् लेइ रे बानी
दखिनेह् चलीय मुलुकवाह् सं रे साऽरऽ
सदियाह् मंगर ना दिनवांह दखिन रे चलिहंऽ
देसवा में होंइहइं नीहलवा रे बऽनाई
ओऊ भाई देहलनि सइतियाह् रे सुनाई
ओहि घड़ी बारह् बरदवा रे सोपाऽरी
लोरिका लेलेह् बऽजरियां बाइ रे जाऽत
जाइ केनि कसलेसि कसइली रे सोपाऽरी
उय भाई ले लेह् गिरिहियां चलि रे अयऽनऽ
वादिय छटकलि दुअरवां पर रे बाने (११४०)
ओहि घड़ी बानह् ना वोहवा में चलि रे गऽयऽल
छकि करि लेहलेन घबडुवा रे जेवाऽनय

आजु भाई चउबिस जेवनवा रे बनाई कऽ
कांखि तरे देहलनि ना जोरवा दब रे बाई
जोड़वन क मोहड़ाह् न खोलिया बांय ओघारी
नेवताह् बांटत सोपरिया बान रे जाऽतऽ

गउरा भी बारह पल्लियों का है

आज कहें बारह ना पलियाह् बा गउरवा
कसमसि कऽसीय बानइ नाह् रे बऽजार
आजु भाई सबकेह् नेवतवा जे बायं रे बांटत
तीलक चढ़त दुअरवाह पर रे बाऽय (११५०)
आजु भाई आजुय न दीनवा जे बीति रे जइहइं
बिहनाह् दीनई बारिय ना सुक रे वाऽर
ओहि दिन चढ़िहइं तिलकवा जे लोरिके कऽ
मंगर के दक्खिन बऽरतिया जे रंगि रे दे
जउनेह् ना दिनवांह् राम समइया,
के फेरि ओह् समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
जउने घड़ी बिहनह् न भयनऽह् रे भूरूहूर
पूरबई देहले कउववाह् बान रे रोरऽ
ओहि घरी ऊठल ना बुढ़वाह् बाइ कऽठऽता
दुअरा पर देलेसि जाजिमवाह् गिर रे वाई (११६०)
आजु ठाढ़ दलइ वा दरवा बा कर रे वाऽयऽ
झम्पुर लेतई ना गेसिया रे वनाऽईऽ
ऊहे भाई कऽलेसि ना दुअराह् अज रे राऽर
जउ धीरे धीरे जूटई नेवतहरू जे लेइ हो लगऽनंऽ
ओहि घरी दूरी से दूलहियाह् दर रे बाऽरऽ
ओही घरी बांट गयल नेवताह् जेनही के
सब जाति जूटत बानय नाह् पर रे जाऽत
दुअरा जलसा ना होत बाह् अहीरे के
अऊ फेरि नाचीय ना कंचियाह् रे मंगाऽवंयं
भंड़वाह् तोरइं चिट्ठकियाह् पर रे ताऽलऽ (११७०)
ओहि घड़ी चाढ़त तिलकवा बा मूबवा कय
लोरिके के चढ़त तिलकवाह् लेइये बाऽनऽ
आजु कहें थानह् पऽगरिया रे दियाऽवऽ
सोनवाह् चढ़ई करधनियांह् रे पिटाड़ा
ऊय भाई धइ गयल नरियरवाह् लेइये चूंदर

अहीरे के चढ़ि गयल तिलकवा ओहि रे दम्मऽ
पतिया में लीखल ना बानह् लेऽये आऽजऽ
तीलक संगेह् बरतियाह् चलि रे अइहइं
हमरेह् नगर अगौरियांह् दई रे पाऽलऽ

चनवा के पिता सहदेव द्वारा विघ्न उपस्थित किया जाना

अउ भाई साजलि बरतिया बा ओठियन से (११८०)
दुअराह् भयल बानह् नह लेइ रे ठाढ़
तब तक सूनह् ना हलिया जे रजवा कय
सहदेउ राजाह् ऊठलवा जे ऊंह ले बाय
ओहि घड़ी डांटत न आवत बान दरेरत
अउ फेरि बोलत ना रेहवा जे बान तूकार
अब सारे सुनबह् परजवा जे हमरे गउरा
गउरा के सुनिलह् परजवाह् रे हमाऽर
जिनि भाई जावह् बारातिया जे लोरिके के
बाल बच्चा देबई कोल्हुइया में पेर रे वाइ
एतनाह् सूनई पारजवा जे गउरा कऽय (११९०)
ऊय भाई डगमग सरीरवा जे होइ रे जाय
केहुय पानीय बहनवां जे घर रे भऽगनऽ
केहुय ओढ़ना के बहनवां जे चलि रे जाय
केतनाह् दीसाह् मयदनवाह् के जानऽ वऽहनवां
बेरकूल भरि जाऽ दूअरवा जे मय रे दाऽन
ओहि घड़ी थोड़ाह् ना अदमी जे रहि रे गऽयऽन
जउन भाई रहनह् ना बजवा के बज रे गेग
एक ठेनि बंचल ना गुरूआ जे बाइ अजइया
एकठेनि बचल धरमिया जे बाइ रे भाय
एक ठेनि बुढ़वाह् कठइताह् लेई रे बाऽनऽ (१२००)
एक ठेनि दुल्लर दूलेरवा जे बाइ देखाऽत
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
अब फेरि दुल्लर रोवतवा जे लेइ रे बाय
अब कहैं हो हो ना दइबा जे मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवांह् रे लीलार
आजु कहैं सादीय बिबहवा जे छप्पर फारय
ई का होलइ पंयड़वाह् कइ रे राह्
कइसन खड़बड़ि ना होतियाह् बाइ रे पहिले

अबहीं जाइके दूरन देस लेइ रे बाई
अब कइसन गड़बड़ पहिलवां जे होइ रे गयलीं (१२१०)
कुछु मोरे बूते काहलवा बा नाहि रे जात
ओहि दिन बोलल ना बुढ़वा बाइ कठईता
दरियइं करई ना बेड़वां हो जबाऽबऽ
आजु कहैं सुनबेह् बेटवना जे मोर रे लोरिका
एठियन ते मनबेह् काहनवाहं रे हमाऽर
बेटवा तें संचेह पलकिया में बइठल रऽहऽ
अब देखि लेबेह ना बुढ़वा क मनु रे सा इ
ओहि घड़ी लेलेसि छेकनवा जे हांथवा में
अब फेरि रेंगल खऽरकवा पर चलि रे जात
जाइ केनि तिन सई ना सठिया बा चर रे वाऽइऽइ (१२२०)
ऊहे फेरि ले लेह् ना संगवा जे बान ले आय
अब कहैं ले लेह् ना चलि गयन करत बजरियाँ
सब केनि कीनत सामनियां जे लेइ रे बाइ
आजु कहैं एक्कई ना चालवाह् उदि फरेसिया
एक्कइ चालइ सीयवले बा पत रे लोक
एक्कइ सारइ ना बूटवा जे गोड़वा कय
एक चाल देलेह पगरिया जे लेइ रे बाय
जउने घरी पहीर ना ओढ़ि के तइये यारय
जइसे भाई जालइं तिलंगवन कइ रे गोल
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय (१२३०)
अब फेरि रेंगल ना एठियन रे रेंगवलन
अब चलि गयल ना घरवांह् रे दुआऽर
ओहि घरी ऊठई पालकिया जे लोरिके कऽ
अउ धइ लेलह् डहरियाह् ओहि रे दम्मऽ
लोरिकाह् ऊधमध बाजनवा बा बजरे व उतयऽ
अब दक्खिन रेंगल दिहतिया में चलि रे जाऽनऽ
तब फेरि बोलय ना रनियांह् बाइ ये सेल्हिया
राजाह् सहदेउ ना सुनबह् हो हमाऽरऽ
अब तोहार अकसर परजवा जे निकलल जातइ बा
अब फेरि जालह् दूर न वाह् बाइ रे देसऽ (१२४०)
जात भाई जातइ बंदूहवां जूझि रे जइहंऽ
दिनवांह् दिनकइ झगड़वाह् टुटि रे जइहंऽय
नहि जउ सादीय बिबहवाह् कइये लेइ हंऽय

लोरिकाह् लउटीय गउरवाह् गुजरे राऽत
उहे भाई नेईय ना देइहईं खुद रे वाईं
सरसऊ राई ना देइहईं छिट रे वाई
एतना कहत ना बतियाह् ओहि रे दम्मऽ
सब के नि देलेह् हुकुमियांह् लेई रे बाने
आजु कहैं मुनबह् ना रजवा मोर रे सहदेव
आज तुव पांचइ रूपियवा हांथवा में लेइ कऽ (१२५०)
अपने त हलि जाह् गउरवाह् लेइये गांव
जउन तोहार हंवहं ना जतिया कइ चउधरी
उनके नं देबह् ना डंड़वा हाथ से दे दे
हाथ जोरि के करवह् बीनितिया लेइ रे आऽज
देख भाई राजीय करजवा तुह रे हऽवऽ
जतिया क राजाह् चऽउधरी हव तोहाऽरऽ
तवई ऊहई ना देहईं रे नीकाली
अहीरे के जाईय सोझई ना वरि रे याऽतइ
एतना जब कहत ना ओठियन लेई रे बाऽनऽ
ओहि दिन सजल बरतिया बा अहीरे कऽ (१२६०)
अब फेरि देनह् दूअरवांह् बइरे ठाई
सब कोई खानह् पीयनवांह् होइ रे गऽयनऽ
परिछन होइय गईल बा तई रे याऽरऽ
अब धई ले लई रहतवा जे दखिने कय
रानीय झंखति ना ओठियन लेइ रे बानी
सूबाह् जाइ के दोहइयाह् बान रे देतऽ
चउधरीय सुनबह् मलिकवाह् रे हमाऽरऽ
जेतनाह् रोकल परजवाह् जे बान हमाऽरऽ
संगेह् चलि जा करइ नाह् बरि रे याऽत
हुकुम देलेह् ना बानह् रे लगाऽई (१२७०)
पंऽच रूपिया देलेनि ना डंड़वाह् चउधुरी के
ऊहे भाई रेंगल सकलवा बा बरि रे याऽत
ओहि दिन रातिय रेंगत बा दिन रे दऊरऽत
कतहीं बऽदत ना कुरवाह् रे मोकाम
आजु भाई भारीय सीवनवाह् परि रे गयऽनऽ
जहंवाह् टघाह् परलबाह् मय रे दाऽनऽ
ओहि फेर ठाढ़िय बरतिया जे सब रे भइलीं
लोरिकाह् नीकल पऽलकिया से बान रे ठाऽढ़

दस बीस नीकलि जेवनबा जे अब रे बहरे
गनतीय एक ओर से लेबह् रे चढ़ाई (१२८०)
केतनाह् बानीय बरतियाह् रे हमाऽर
ओहि घड़ी देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अउ फेरि गन्तीय मऽरदवा जे वा लगावऽत
गऽनत गऽनत टोटरवा जे लेइ मीलाई
ओहि घड़ी एकइ ना दरवंह जू मीले कइ
अंकवाह् बानह् ना लीखत बिल रे गाई
आज़ु सवा लाखइ बऽरतिया बा अहीरे कय
निकललि जाति बाह् गउरवा जे छोड़ि रे गाँव
आजु कहैं जातिय बरतिया जे बाइ अगोरियां
अउ फेरि सोनई भदरवा जे ओहि रे पाऽर (१२९०)
कहैं तवनेह दिनवांह् राम समइयां
अब फेरि रेंगलि बरतिया बा अहीरे कय
लकड़ीय बाजत बा बजवाह् अन रे हट्टइ
आज़ु कहैं रातिय रेंगत बा दिन रे दउरऽत
कतों दिन बऽढत ना कुरवा रे मोकाऽम
एकदम धइलेनि दऽखिनवांह् कइ रे गऽहऽ
उहे भाई दखिनो मुलुकवाह् तड़ि रे यावऽइ
अब चलि अयनह् ना कोटवाह् रे भदोखा
ओहि दिन बोलल लोरिकवाह् पुनि रे बाऽनऽ
आजु कहै कयकाह् ना मुनिलऽ मोर कटइता (१३००)
एठियन मनवेह् कहनवांह् रे हमाऽर
जेतनाह् बानह् घोरइया बोहवा कऽय
उह भाई बाडेह् सबेरवा कइ खवइया
अब फेरि खानह् ना डिलडिलिया दूधवा कऽय
आजु भाई बाड़ेह् सबेरवा कइये जूनऽ
तेनि केनि दू दुय ना दिनवा रे बीतल
ओन्हें अन्नई मीलल ना जल रे पानी
अब कइका देइदऽ परोठवा जे एहि रे कोटवां
सवा लाख लाऽ लेइ बरतिया जे देखऽ हमाऽर
आजू कहैं खाईय ना पीअइ जे सम रे तूलऽ (१३१०)

कोली घाट पर बारात का उतरना

अब चलि के ऊतरल कोलियवा के देख रे घाट
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ

ओहि दाँव कोटवाह् भदोखरी के लेइ रे बाऽत
तब फेनि लादलि बरतिया जे अहीरे कऽ
रऽसदि लादलि बरदवा पर बानि रे जाती
अब जूटि गइल रऽसधिया बा अहीरे कय
बायांह् दस बीस ना गयनह् रे बईठी
सब केनि देनह् रऽसधिया रे तऊली
जेतनाह् रह्नह् ना जतियाह् पर रे जाऽत
आजु कहै बचि गयलं अहिराह् रे गुअरवा (१३८०)
आजु बूढ़ा मारत हूमनियां जे देख रे बाय
आजु भाई एतनेह् मऽरदवन कइ रे खाई
के फेरि जइहंइ रसोइंह् रे बनाइ
कहतत गउवांह् ना कोटवा में चलि रे जाई
हमहुँय खोजित ना जतियाह् अपने पांत
ओनकेह् भेज ल्न रसधिया लेइये घरवां
ठाटि केनि कइय देतीय नह जेवरेनार
ठाटि केनि कइ लेइ भोजनवा जे मोर बरतिया
तब फेरि चलीय अगोरिया जे दइ रे पाऽल
सूनह् ना हलियाह ओठियन कय (१३३०)
केह् फेरि ओहूय समझयाह् कइ रे हाऽल
उहवां से रेंगलि बरतिया बा अहीरे कय
आपन आपन भोजनवांह् कई रे खाई
जाइ केनि चाभ्रइं ना बिरवा जे लेइये ओठियन
कूचइं लगनह् मगहिया ढोलि रे पाऽनऽ
आज जेतनाह् बचि गयें अहीरवाह् रे गुवाऽल
उय भाई बानह् जाजिमवा पर पट पटाऽतय
तब तक रामइ रसोइयां केनि रे ठाऽरऽ
अब फेरि रेंगल ना बूढवा बाइ रे जाऽतऽ
अब हलि गयल कंकोटवा लेइ रे गाँऽवऽ (१३४०)
जाइ केनि खोजत बाड़इ ना अहिरे राना
दसबीस बानह् ना घरवां गोपि गुआ लऽ
ऊय भाई गयनह् ना ऊहइ कवि रे होई
ओनकर रामइ रसोइयां के तइरे याऽरऽ
कठइत पुछि कह् ना लवटल बाइ रे जाऽतय
जाइ के लदि देलाह् बरदवा ओठियन से
ऊहे भाई रसदि दूअरवा पर गिरि रे जाला

आजु भाई खातइ ना अहिरा लेइये ओठियन
अब फेरि बइठल मेंड़रिया के बान रे बात
आज कहैं कसबिन पातुरिया जे वाइं रे ढूरत (१३५०)
भड़ंवाह् तोरत त्रिदुकिया पर बान रे तान
सूनह् ना हलिया ओठियन कय
अब फेरि भईलि रसोइयां बा तइरे याऽर
लड़िकाह् देलेनि ना इहवां से दव रे राई
उय लड़िका रेंगल बरतिया में चलि रे गयऽनऽ
जाइ केनि हाथइ ना जोरिया क भल रे ठाऽढ़ऽ
पंचह् सुनिलह् ना जतियाह् रे हमाऽरऽ
जेतनाह् होवह् ना गोपियाह् मोर गुआऽलऽ
पंचह् बीजई भईलि वाह् तइरे याऽरऽ
ओहि घड़ी गईलि ना गोलिया खड़भड़ाई (१३६०)
केनहुय नरखह ना धोतियाह् वा संकेलत
केनहू क उतरत बाचनवांह् देख रे वाऽनऽ
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया कठईत कऽय
अब बूढ मारत हूमनियां देख रे वाऽनऽ
कऽय लड़िका गयलंह् तोहन ना खर भराई
अउ कहैं दूरन ना देसवा वाई अगोरिया
अब हीं परदेसइ गउरवा वाइ रे घऽरऽ
का जानीं नूनइ ना खरवा बाई रे सेवय
अब कइसे होइहंइ नीमकवा कइ रे ख्याऽलऽय
आजु कहैं देखल ना पनियां पत रे नहिनीं (१३७०)
जउने घड़ी लागिय पियसिया पयंड़े में
पानी बिना आलर पऽरनवा चलि रे जाऽनऽ
लड़िकाह् हमइं तियनवा जे चीखइ देवह्
तब जाइके कऽरह् ठहरिया पर जेवरेनार
उहवां से रेंगल ना बुढ़वा जे बाइ कठईता
आज बूढ़ऽ मारत हूमनिया बा चलि रे जात
आजु कहैं जाइ कह् भोजनवांह् किह् रे गइऽनऽ
लोटाह् धयल दुअरियाह् पर रे वाय
आज बूढ़ जोडइ ना हथवा जे धोइये लेहलेन
कठइत रेंगल ठहरिया पर देख रे जाय (१३८०)
जाइके बूढ़ा बइठल ना पिढ़वाह् पर रे बाऽनऽ
अब फेरि सुनह् भीतरियाह् कइ रे हाऽल

आजु भाई सेनुर काजरवा जे अहिरी पहीर ले
टठिया परोसलेह् ना बूढ़वाह् ओर रे जाय
जउने घड़ी नीहुरि टांटठिया जे बाई रे धऽरत
अब बूढ़ कई परलि नजरिया जे देखऽ बाय
बूढ़वाह् बांयेह् ना लतवा जे मारे थऽरियवा
अब बूढ़ गयल ना ओनहूँ पर लपरे टाऽय
आजु भाई धइ कह् सांपेटवाह् रे गिरावइं
आपन ऊतरि गयलवा बा ओहि रे पाऽर (१३९०)
उहवां से भागल ना बुढ़वा जे बाई कठईता
अब हल्ला कइलेनि गुवालेनि ओहिं रे दाम
आजु कहैं सूनह् ना सुबवाजे बाम रे देवाऽ
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर

राजा बामदेव और लोरिक की लड़ाई

ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
अउ फेरि ओहय समइया क देख रे हाऽल
जब सूनह् ना हलियाह् कठईत कऽय
उहै बूढ़ नीकल जाजिमवाँह् पर रे अइंनऽ
तब तक मारूय डंकवा जे बाजि रे गइनऽ
लकड़ीय बोलल ना ओठियन रे गोहाऽरऽ (१४००)
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
जवन भाई सूबाह् बानइं ना कोटवा कऽय
अब बामदेवह् ना रजवाह् लेइये ओठियन
उय भाई बयठल ना बानह् लेइये चऽननी
उय भाई गऽयल गुपलवन कइ सवाऽलय
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् तूं बम देवा
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
एकतह् तूंहई जबरवा जे सूबा रे रहऽलऽ
तोहरे से जाबर न देसवा में नाहि रे कोय
का जानी काहां के जऽबरवा जे आइ कऽ टीऽकल (१४१०)
हमरउ बनि कह् ना गोपियाह् रे गुवाऽल
अपने रसधिथा हीरवा जे भेंज रे वउलेनि
अब फेरि रेलीय रसोइया जे बन रे वाइ
उहे भाई रामइ रसोइयां जे नहिं रे खइलेनि
ईजति कइलेनि ना एठियन रे हमाऽर

आजु राजा हमरीय ईजतिया जे नाहिं रे गईलीं
सुबवाह् गईलि ईजतिया जे देखऽ तोहाऽरऽ
एतना जे सूनइं ना रजवाह् बम रे देवा
रन पर देइलनि लाकुड़िया जे ठोक रे वाय
ओहि घड़ी सूनह् न हलियाह् ओठियन कय (१४२०)
फउदि साजल ना ओठियन सेनि रे जाला
आजु कहैं बइठल जाजिमवांह् पर रे सांवर
एक ओरि बइठल ना बानह् ए लोरिकवा
बिचवां में बइठल ना बुढ़वाह् बा कठइता
उह भाई बोलत लोरिकवाह देख रे बाऽनऽ
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह् बीर रे सांवर
एठियन तूं मनबह काहनवांह् रे हमाऽर
जहाँ जहाँ ककवाह् ना जइहइं रे कठइता
तेहं तेहं देइहइं झगड़वाह् मच रे वाई
जेकरह् जांघह् ना बलवाह् कहुं रे रहिहंऽइ (१४३०)
केकरेह् भूजाह् रहीय ना बउ रे साई
कइसेह् देबई झागड़वाह् बर रे काऽई
एतना जे कहत अहीरवा जे बाई रे लोरिकाऽ
बुढ़वाह् जरि मरि ना भयनहं रे खंगार
आजु कहैं बाउर बेटवना से बउरे रइले
हरि तोरि गईलि ना मतियाह् रे गियाऽन
बेटवा तू बइठल जाजिमवा पर रहले लोरिका
एठियन देखिलह् ना बुढ़वा क मनु रे साई
बुढ़वा लेइ कह् छेकनवा जे बाड़ऽ रे डांकऽय
ओहि घड़ी तड़कल बयालीस जाला रे हांथ (१४४०)
ओहि घड़ी बोलल ना मनवां जे बानऽ रे सांवर
दरियांह् करई ना बेड़वांह् रे जऽवाब
आजु कहैं भइयाह् ना सुनि लेह् बीर रे लोरिका
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
जेकर भाई दू दूय ठे ललवा जे बाड़ी रे बईठल
जेकर पिता दूरत ना खेतवा जे मेंनि रे बाय
कतहूं जो खालेह् ना गोड़वांह् ऊँच रे परिहइं
कक्काह् देइहइं ना मथवा रे गोंवाइ
ओहि घड़ी धीरिक जोनिगिया जे होइ रे जइहइं
आजु डूबि जाईय बंसवा क देख रे ओर (१४५०)

एतना जे कहत ना अहीरा जे बीर रे बानऽ
तब फेरि सूनह् ना ओठियन कनि रे हाऽल
ओह घरी कवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
अहिरांह् बोलत लऽरमियाह् कइ रे बोऽलऽ
लोरिके के गयल ना मनवाह् रे बईठी
सांचइ बूढ़ई ना ककवा जे गिरि रे जइहंइ
हंसीय होइहइं बारतियांह् रे हमाऽरऽ
जेकर भाई दुद् य ठे ललवा जे बाड़ि रे बईठल
अब हरखूरत ना बुढ़वा जे टेक रे बाऽनऽ
एतनह् कहि कह् ना ओठियन बिर रे लोरिकाऽ (१४६०)
अब फेरि गऽयल ना बकसेह् केनि रे पाऽसय
जाइकेनि जामह् जोरवा बाड़ नीकालऽत
अब अपन देहे के धइले वा दुल रे हाई
उहे भाई धरतेस कुजहऽया देहियां कऽय
जाइ केनि खोल्हत बाकसवा अपने बाऽनऽ
ओहि घड़ी अंगवाह् ना पहिरत बाड़ अंगरऽखा
गोड़वा में गूलऽ बऽदनियांह् रे तमाऽय
आजु कहैं तरकुस ना गुजवा वा पऽनहीं कऽय
ऊहै बीर बांधऽ ना एड़वई रे चढ़ाऽर
आजु भाई साठिय न गजवा क बाइ दुपऽट्टा (१४७०)
उहै बीर बान्हत ना पटियाह् रे सम्हाऽर
आजु कहै धारइ ना पगिया जे लऽरमे कय
जवने भाई मेघह् डंवरूया जे घह रे राऽय
आजु कहै छप्पन ना छूरिया जे पवन कटारी
अहिरे के टूकालि वऽगालया में तर रे वार
आजु कहै बायेह् ना हथवा जे लेइ ओड़निया
दहिनेह् हाथेह् बीजुलिया बा तर रे वाऽर
जवने घड़ी मरगस ना मरगस वीर रे रेंगनऽ
जइसे भाई दोमति हथिनियां बा चलि रे जात
सूनह् ना हलिया ओठियन कय (१४८०)
अब फेरि छेंकलेह फउदियाह् बाइ रे जाती
अहीरा नीकलि डहरवंह् भयन रे ठाढ़ऽय
आपन छोड़ि साकलवाह् बरि रे यातऽ
जवने घड़ी चारिय ना कोनवाह् चारि रे चोबाऽ
अब फेरि रहनह् दूपटिया बरि रे याऽरऽ

अब पलटनियाह् चढ़लि बा बीचवां में
हुकुमि देतई बानह् ना लेल रे कारी
आजु कहँ बीचिय ना अहिरा के छेकि रे लेब्या
कांड़ि केनि कइ दह् सेतुववा कई रे लूनऽ

लोरिक द्वारा दुर्गा का स्मरण

ओहि घड़ी सूनह् न हलियाह् अहीरे कऽ (१४८०)
सूरत बानह् आपन पुज रे माऽनऽ
आजु कहँ कहवां ना भइयाह् मोर दुरूगाऽ
एठियन लागह् ताकतियाह् रे गोहाऽरी
देबियाह् तोहरेह् न बलवांह् बलु रे सइयां
चऽलिहं दारून मा देसवाह् रे खंगारऽय
फिनि छोड़ि मइयाह् दुरूगवा जे भागि रे गईंलीं
आफति पऽरलि जीनिगियाह् रे हमाऽरऽ
एतनाह् सुमिरत भाँवनियांह् लेइ दुरूगा
राजाह् मारत टिकसहवा लेइ रे बानऽ
जउने घरी चऽलईं पंयतराह् खेतवा पऽ (१५००)
अइसेइ भादवं भइंसवा मकरे राऽनऽ
दांव परि अयनह् मऽरदवाह् नियरे राई
तब फेरि बोलल ना रजवा बा बम रे देवा
अब सूबा मनबेह् कहनवांह् रे हमाऽर
अब भाई मरबेह् ना मरबे जे तोईं रे सूबवा
दम भाई तोरेह् आवरिया में आई रे जाय
तब फेरि बोलल मऽरदवा बा बिर रे लोरिका
सुबवा के मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई आगेह् ना घंउवन ना चलइबऽ
नात घाउ पीछेह् ना रखबइ रे गावाऽय (१५१०)
आगेह् मारे के कीरियवा जे गुरू अजइया
पतिया में लिखियह् ना देहले जे बाड़े तीलाक
नात हम आगेह् आवरिया जे अपने छोड़बऽ
नात हम पाछेय ना रखबईं रे गोवाय
ओहि घड़ी सूरूकि ना फेंकले जे बा मीयनवां
अब फेरि मारइ अहिरवा के टिक रे हाथ
ओहि घड़ी खेलल अहिरवा बा बीर रे लोरिकाऽ
चम्फाह् डांकिय आकासवा में देख रे जाय

ऊहे भाई गीरल ना तेगवा जे धरतीय में
तेगवा उनकर चूरई ना चुरवा होइ रे जाय (१५२०)
तवने घरी दू दू अवरिया छुटि रे गइनीं
अब नाही आगुनि आवरियाह् देखऽ रे भइनीं
ओहि दिन सूरूकि ना देहले बाय रे दोहं तिहराऽ
अब फिर मारई अहिरवा के सिर रे हाऽनाऽ
अब भाई खेलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
ऊहे फेरि बांवउ तिरिछवाजे होइ रे गयऽनऽ
खंड़ियाह् गईलि ना दहरह् रे फेंकाऽई
तब तक मुनह् ना हुलिया अहीरे कऽय
दबकेनि नोकलि भयल बा मय रे दाऽन
अब जोड़ो मनवेह् काहनवांह् रे हमाऽर (१५३०)
देख भाई पक्काह् आवरिया तोर रे थाम्हल
अब कचलुइगाह् ना थाम्हउ रे हमाऽर
ओहि घड़ी मुरूकि ना फेंकले जे बाइ मीयानवां
अब दहतग्गिय तानत बाह् तर रे वार
जइसे भाई चारिय अंगुरवा जे भइनी रे बहरे
जकर भाई तड़क अऽकसवा मे चलि रे जा
आजु कहैं निचवांह् ना मरले जे बा दवन्हरा
पोरसन गइलीय लर्वारिया जे गूरे याइ
आजु घूमि गईलि पऽनकिया जे बमदेव कऽ
खंड़िया गइलींय गरद में रे त्रिसाय (१५४०)
आजु कहैं पुरूब काटतवा जे पछू रे घूमऽनऽ
पछूवे के काटत दाखनवा में घुमि रे जाय
जइसेह् काटई कोइरिया जे कोइ रे रड़वाऽ
ओइसइ काटत अहीरवा क बाड़इ रे पूत
ओहि घड़ी सूनह् ना हुलियाह् ओठियन कय
उय भाई खींचत बीजुलियाह् बाइ रे खाँड़ऽ
अब रखि देलेह मीयनवां मेंनि रे बान
उहवां से सजलि बरतिया बा अहीरे कऽ
कोटवा के गयलं झगड़वा फरि रे वाई
अहीराह् बीनह् ना दनवांह् बिन रे पनियां (१५५०)

बाजे-गाजे की ध्वनि अगोरी में सुनाई पड़ना—
झीमल मल्लाह का बारात को अगोरी में उतारना

मारत रेंगनह् दखिनवा के धइये राह्
ओहि धरी रातिय रेंगइं ना दिन रे दवरऽ
कतों नाहि बदत ना कोलिया रे मोकाऽम
एकदम रेंगलि बऽरतियाह् रे रेंगावल
अब चलि अइलींय कोलियवा क ऽ देखऽरे घाट
ओहि घड़ी बाजलि लकुड़िया बा कोलिया पर
सबदि नीकलि अगोरिया जे गइली रे पाऽल
आजु सूनह् ना हलिया मूबवा कय
जेकर बइठल बानइ नह दर रे बाऽरऽ
ओही घड़ी कानेह् सबदिया सबके गइली (१५६०)
राजाह् बोलत मोलागत देख रे बानऽ
चाहे सारे महरह् मूदइया होइ रे गऽयनऽ
चाहे रन्दा मूबाह् चढ़वले बा बरि रे याऽर
का जानी कवनेह् सहरिया में बाड़ बऽरतिया
लकड़िय बाजति वाड़इ नह अन रे हह
आजु कहै मुनबह् ना नोकर रे सिपाही
अब तुव जाबह् ना सोनवाह् छिति रे राई
जेननाह् बानइ ना सोनवाह् कइ रे घाऽट
······अगोरियाँ दई रे पाऽलऽ
जवने घड़ी घाटइ ना ऊतरि चलि रे अइनऽ (१५७०)
एकदम अइनह् कासीयवा केनि रे घाऽटऽ
अब छपि गईलि बऽरतिया अहीरे कय
नदियाह् दूनोहं कररवा फुफुरे कर ले सि
कहि नहि बाड़इ रे ओठियन रे उताऽरऽ
ओहि पार टहरई ना झिमलाह रे केवटवा
नइयाह् घाटेह् ना घटवाह् जे बोर रे वाइ
ओहि दिन बोलल दुलेरुवा बा लेइये लोरिका
अब तुय सुनबह् ना सुबचन समु हमार
आई के हुवई ना घटवा कऽ ठीक रे दाऽरइ
के फेरि हुवई ना नइया के मल...... (१५८०)
सूनह् ना मलवाह् रे सुबच्चन
उय फेरि देवइ सऽरखवा में बान रे लाख

आजु कहैं झीमल ना हवह ठीक रे दाऽरऽ
झिमलाह् हवं ना नइया के मल्ले लाह्
ऊये भाई झीमल ना झीमल बाइ पुकारत
लोरिकाह् करई पुकरवाह् नेरि रे या ई
झीमल बोलत बानइ नह ओहि रे पाऽर
तब फेरि बोलल दुलेरूवाह् अहिरे कऽय
अब जेकर लोरिक दुलेरूवाह् बाई रे नाऽम
आजु भाई सुनवह् ना झीमल मोर केंवटवा (१५६०)
अब तुय लेइ आवा ना नइयाह् रे करा रे
छेकनि करतह् अगोरियाह् ओहि रे पाऽरऽ
तब फेरि बोलल झीमलवाह् बाइ रे केंवट
आजु भाई मनवह् काहनवाह् तू हमाऽरऽ
मुववा के उल्टी हुकूमियाह् बाइ रे लगले
अब जे दिन उतारहे बरातिया जे अहीरे कऽ
बाल बच्चा देवई कोल्हुइया में पेर रे बाई
के आपन जानऽ ना देइहंइ लेइये एठियन
के कऽ देइहइं ना ओठियह् लेइ ये पाऽरऽ
ओही घड़ी बोलल मरदवा जे बीर रे लोरिक (१६००)
झीमल मनवह् काहनवां जे देखऽ हमाऽरऽ
देखा हम नागर गउरवां जे बाड़ी रे टीकल
सुनलीं ज बल्लीय ना रजवा जे बाडे अगोरी
ओनकर कोई खोजलेह् जोड़ियवा जे नाहीं रे बाऽनऽय
तब हम बीयहइ मांजरिया के देख रे अइली
देर देख अइलींय हऽ मुववा क मनु रे साई
झीमल छेइंकाह् लगवतऽ तूं ओही रे पाऽर
आजु झीमल जाहंह पसीनवा जे तोहार रे गिरिहंऽय
तहां गिरि जइहंइ लोरिकवा के देखा रे खूनऽ
जब आगे लोरिक कोल्हुइया में देखऽ पेरइहंऽय (१६१०)
तब पीछे बालउ ना बचवा जे झीमल तोहाऽर
एतना जे सूनई झीमलवाह् लेइये केवटा
एकदम दवरल गीरिहियां बा लेइये जात
जाइ केनि डोकीय थारियवा जे घरे उठवलेस
बाल बच्चाह् ले लेह् ना नदिया में चलि रे जाय
आजु कहैं हाथें मे गाहनिया जे लेइ झीमलवा

नइयाह् गहत ना पनियाह् में नि रे बाय
पनियांह् ठँउकि ना कइलेनि तइरेथरिया
नइया गईलि ना जलवा में उति रे राऽइ
तब फेरि मारइ ना लगीले हो झीमल (१६२०)
अब फेरि कइलेसि उपरा ओहि पाऽरऽ
आजु कहँ सवइ पचासइ खेप चऽलऽ
अब फेर भारी ना नइया झीमला कय
खेइ केनि करत अगोरिया जे पाऽरऽ
आजु सवा लाखइ बऽरतिया अहीरे कय
राति दीनेह् ना कइलेसि एहि रे पाऽरइ
तब फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अउ फेरि लवटल ना नइयाह् एहि पार से
फेन भाई गईलि कररवां ओहि लगाई
ओहि घरी ऊठल ना बुढ़वा जे बाइ कऽठइता (१६३०)
आजु बुढ़ ठेघत ना ठेघनवां वा चलि रे जात
जवने घड़ी नइया के करीबवा में चलि रे गयनऽ
नइयाह् पर धरत डंड़ट्याह् देख रे बाय
नइयाह् तरेह् ना गइलींय रे दवाई
झिमलाह् गीरल ना छतियाह् रे ठठाय
आजु कहँ हो हो ना दइया जे मोर नरायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् तक रे दीर
आजु कहँ सवाह् ना लखवा जे अहीरे के बातऽय
खेइ केनि कइलीय अगोरिया जे ओहि रे पाऽर
एक ठेनि बुढ़वाह् बांचलऽ बाह् लेइ ये एठियन (१६४०)
अब लेइ अइलीह नइया जे एहि रे पाऽर
आजु बाबू डड़ईय ना धरतइ नइया डूब ने
आजु भाई बुढ़वाह् चऽढ़ई के बाकी रे बाय
अब सुना ना हलिया ओठियन कय
आज बूढ़ मारत हूमनियां जे बानऽ
ओहि घड़ी डबा ना हथवा में उठाइ कय
अब बुढ़ ले लेसि ना फरके ले रेंगाई
अपनेह् नइयाह् पर चढ़ि कइ रे बईठा
डंड़ई पानी ना पनियां वह व उले
खेइ केनि कइलेह् अगोरिया जे एहि रे पाऽर (१६५०)
आजु बूढ़ उतरि ना नइया सेनि गयऽनऽ

जाइ केनि भयनहू कारवां लेइ रे ठाढ़
ओहि घड़ी सुनहू ना हलिया जे कठईत कय
समधीय सुनबहू सूवच्चन रे हमाऽर
आजु जाइके पूछि आवा खबऽरिया जे घरवां जे
कहवांहू ठाढ़ीय बारातिया जे मोर रे बाय
कहवांह रहीय जनवसिया जे मोर वारतिया
हमैं भाई देतँहू जागहियांह बई रे ठाई
ओहि घड़ी रेंगल ना मलवाहू वा सुबच्चन
एकदम रेंगल गीरिहिया बा चलि रे जात (१६६०)
जाइ केनि वहिन वहीनिया जे बा पुकरऽले
महरिन नीकलि आंगनवां में भइनी रे ठाढ़
आजु कहैं सुनबेहू वहीनिया जे मोरि रे महरिन
समधी क उलटीय हूकुमिया जे सुनि रे ले
कहवां पर ठीकऽ वऽरतिया जे आहीरे कय
कहवंह जाजिम गीरऽ न ओहि रे दाम
कहवंहू रहिहइं वऽरतियाहू अहीरे कऽय
ओन्हइ अहटुल ना दरियां जे द्यहू वताय
तव फेर वोलल ना धनवा बा महरी
महरिन करइ ना बेड़वां जवावऽ (१६७०)
आजु कहैं भइया ना सुनऽ मोर सुबच्चन
कहना मनब्यऽ नऽ एठिन रे हमारऽ
तनी सुनहू ना हलिया जे ओठियन कय
के फेरि ओहुऽअ समइयाहू कइ रे हाऽल
महरिनि बोललि नऽ बतिया बा लऽरमें से
भइयाहू मनवहू काहनवांहू रे हमाऽर
देखऽ इहाँ कुछुय तइयरिया जे नहि रे कइली
बिचहिय अयलहू वऽरतियाहू तूअं लिआऽय
कहि दहू दस दिन के अहीरवा जे लवटि जाऽतऽ
आपन कइ लेइति ना हमहूंअ रे समाऽन (१६८०)
देखऽ भाई गोतिय ना भयवा जे नाहि नेवतले
न त आपन नेवतल कुटुमवा जे पलि रे वार
ना त आपन नेवतल आजम ना गढ़वा क देखऽ वऽढ़इया
जवन फेरि दंनहूं खम्हियवा जे सुगा ऊरेह
अवहींय देरीय वऽरतियाहू केनि रे रऽहने
दस रोज के मोकहू सऽमधिया जे देइ रे दे

जिरवा खेतार पर कंटीली झाडियों में बारात टिकाने का महर की पत्नी का उपक्रम

······मोकाह् समधिया का देइ रे देतां
ठाटि केनि लगतहं दुअरवाह् दर रे बार
तब फेरि रेंगल ना ओठियन जाइ सुबच्चन
कहत बाड़इं न ओठियन अर रे थाई (१६६०)
आजु कहैं समधी ना सुनिलह् बूढ़ कठईता
एठियन मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
इय बहिन कुछुय इतजमवा जे नाहिनी कइले
वाड़ह् बिगड़ति वहिनिया जे मोर रे बाय
कहति बाड़ें दस रोज के दिनवा तरि रे जातऽ
तब आइ ठठिकह् ना करतह् सादि रे बिबाह्
ओहि घड़ी बोलल ना बुढवा जे बाइ कठइता
समधी तूं मनबह् कहनवांह् रे हमाऽर
आजु हम दस पांच ना दिनवा जेका मुनवलेन
हम टिकि रहब पुहुतिया जे दुइ रे चार (१७००)
हम केनि रहइ के जगहियां जे तनो वतउती
आपन ठठिकह् ना करतीयं रे बिबाह
कहैं तवनेह न दिनवांह राम ममइयां
केहि फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
ओहि घड़ी दवरल सुबच्चन वन रे जाऽनऽ
आजु मोर मुनवेह् बहिनियांह् लेइ रे बाऽत
समधी के उल्टी हुकुमियांह् मुनि रे लेइबेऽ
ओन्हके तू देबह् जागहियाह् रे बताई
तूंय का दस पांच ना दिनवां जे आन्हें सुनउल्या
ऊय टिकि के रहिहइं पुहुतियाह् दुइ रे चारी (१७१०)
ओहि घड़ी बोललि ना धनवां जे बाइ ए महरीन
भइयाह् मनबह् काहनवांह रे हमाऽरऽ
अब लेइ जावह् बारातियाह् जिरवा खेते
जहवां पर नउ सइ ना गोभियाह् बा घमोई
जेनकर चारि चारि अंगुरवाह् कइ रे कांटऽ
उहे भाई तनिकउ बऽदनियांह् ले छुअइहंय
खुनवाह् देइहंइ ना देहियांह् रे निकाली
ओठिन देबह् जागहियाह् रे बताई

ओहि घरी रेंगल ना भइया बाइ सुबच्चन
एकदम रेंगल ना तिरवां चलि रे अइनऽ (१७२०)
समधीय सुनबहू कठइता हो हमाऽर
चम हम देईं जऽगहिया रे बताई
ओहि दिन परि जाउ बारतिया जन रे बासा
आगे आगे रेंगल ना मलवा बा सुबच्चन
पिछवांह सवाह ना लखवा बा बरि रे यात
जउने घड़ी बिरवा खेतरवा पर चढ़ि रे गयऽनऽ
जहवांह नउ सइ ना गोभियाह रे घमोय
ओहि ठाड़ होइ गयन ना मलवाह रे सुबच्चन
अउ फेरि देखह ना हलियाह रे हवाल
जउने घड़ी सवा ना लखवह बरि रे यतिया (१७३०)
गोभिया के ठाडेह देखतवा जे सग रे बाय
आजु बाबू एकक ना भइया क बानऽरे दूल्लर
आजु कहै एकक सूघरवा जे सर रे दार
आजु कहै लोरिकाह के रितियांह रे मोहबते
एकक बानह दईयवा कऽ ओन्ह रे लाल
आजु कहैं उपरेह बऽदनिया में खुन रे नाचय
ते कइसे सहीय ना कटवांह कइ रे धार
एतनाह सोचत अहीरवा जे बाइ रे लोरिका
अउ फेरि बइठत जाजिमवाह पर रे जाय
आजु सुनह ना हलिया कठइत कऽय (१७४०)
बुढ़वाह मारत हूमनियां लेइ रे बाऽनऽ
रेंगल जालह पलकियाह के नगीचय
अब ढिगरायल सरीरवाह लोरिके कऽय
देखत बाड़इ ना बुढ़वाह रे घुमारी
ओहि घड़ी डांटत अहीरवा जे बुढ़ रे कठईत
बेटवाह मारद गुनवलह कनऊज के
चढ़ल तूं दारून ना देसवांह रे खंगाऽर
चननी के देखत ना सूबवाह नाई कुरइया
थर थर कांपतिया जंघियांह रे तोहाऽर
एतनाह कहत ना बतियाह लेइ ये ओठियन (१७५०)
जरि मरि भयल ना बेड़वांह रे खंगाऽर
कहैं सुनह बेटवनाह रे हमाऽर
आजु कहैं बायेंह ना हथवांह लेइ चकतिया

डंड़वा दहिनेह् ना हथवाह् लेइ उठाई

लोरिक के पिता कठइत द्वारा कंटीली झाड़ियों की सफाई कराया जाना और बारात का टिकना

बुढ़वाह् चलल पयंतराह् ओटियन ते
चम्फाह् डांकत बयालिस जाइये हाऽथ
ओहि दिन पूरूब डांकतवा जे पछु रे गयऽनऽ
पंछुवे के डांकत दखिनवा जे घुमि रे जाऽन
जउने भाई डंडाह् ना संगवा जे गोभि घमोइया
जाइ केनि आधेह् सोनवा के गिरऽ रे धाऽरऽ (१७६०)
एक दम बहलि पुरूबवाह् वाइ रे जाती
उंह बुढ़ दरीयना घुमियाह फेरि रे देह्लेन
जइसे खेलइं लरिकवाह् बद रे गउगाऽ
ओइसइ होई गयल बा मय रे दाऽन
ओहि पर गीरल जाजिमवा बा अहीरे कऽ
ओहि दिन दलइ बदरवा जे रेइ रे ठाढ़ऽ
आजु कहँ झम्पू ना गेसिया लट रे कउले
कोने कोने भयल ना मुबवाह् दिन रे राऽतय
जलसाह् होतइ न बानह् ए अगोरियां
मऽउज कऽरति बरतियाह् लेइ रे बानी (१७७०)
आजु भाई कसबिन ना ढूरति वायं पतूरिया
भड़वाह् तोरत चिटिकुयाह् पर रे ताऽनऽइ
ओहि जउ जीरवाह् ना बहतरि रे खेताऽर
आजु कहँ बइठल अहिरवा जे खेतवा पर
अउ फेरि सुनह् ना अगवांह कइ रे हाल
ओही घरी बोललि ना धनवा जे बाड़इ रे महरीन
भइयाह् सुनवेह् सुबच्चन हो हमाऽर
केतनीय बाड़इ बारतिया जे अहीरे कऽय
हमके तू देवह् सारेखवां जे देखऽ लगाई
ओहि दिन बोलल ना मलवा जे बा सुवच्चन (१७८०)
दरियांह् करई ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु सवा लाखइ बऽरतिया बा अहीरे कय
सगरउ जातीय लेहलया बा पर रे जात
सवा लाख आईलि बऽरातिया बा जीरवा पर
बइठल बानह् मेंड़रिया जे देख रे माऽर

ओही घड़ी सुनह् ना हलिया जे महरीन कय
महरिन बोलति लरमवा के बाइ रे बोल
आजु भइया चलि जाह् ना गलियांह् रे अगोरिया
सहुवाह् आनह् महिचना जे बड़ रे बार
ओनसेंह बयल ना गड़ियाह् लेइ ये हांकी (१७९०)
अब लेइ लेवह् ना बोरवाह् रे उठाय
आजु सवा लाखइ ना मनवां जे कसि दा चाउर
अब फेरि जिरवाह् ना कहतरि देब गीराइ
आजु सवा लाखइ ना मनवां जे लेइला चउरा
अब सवा लाखइ पसेरिया जे भल रे गेह
एक रे मोतऽबिल ना हरदिय रे मसाला
अउ फेरि बेलकुल सामनियां जे लेइ रे लऽ
अब फेरि एकरेह् ना बदवाह् लेइ ये खटिया
सवा लाखे लेइलह ना खटियाह् रे सिगार
जाइकनि बांटि दह् रासधिया जे जीरवा पर (१८००)
सवा लाख बइठल अहीरवा कइ बारि रे याति
कहि दह् एककइ अउरवा का इहई ह भोजन
ए मह एकउ चाउरवा न बचि रे जाय
नाइ भाई थोड़उ न रासधि बचि रे जइहइं
आपन धरिहंइ डाहरियाह् ओहि रे आज
अउ धइलेहइं डहरिया जे गउरा कय
चलि जइहैं नगर गउरवा जे गुज रे रात
ओही घरी रेंगल ना मलवाह् बा सुवच्चन
अब चलि गउयल ना खोरियांह् रे अगोरियाँ
अब चलि गयनह् सहुववन क दर रे बाऽर (१८१०)
जाइ केनि देलेनि हुकुमियाह् रे लगाई
आजु भइया गाड़िय ना देइ दा बयल रे गड़िया
हम देइ देबह् ना बोरवा रे सहीऽतऽ
दस पांच हकलेनि ना गड़िया ओठियन से
कसइ लगनह् ना बयंवाह् रे तऊली
तऊलि कनि कइलनि ना बोरवाह् सब रे बन्नऽय
उय भाई लदि गइलि ना गड़िया चऽउरे कऽ
आजु लादि गईलि न गड़ियाह् चाउरे कय
ओहि में कसि गईलि ना बेलकुल रे समाऽन
ओहि घरी जोतलि ना गड़ियाह् कीलवा से (१८२०)

चलि गईल जिरवाह् ना बहतरि रे खेतार
फरके भारिय जाजिमवाह् रे गिराई कऽ

चावल, घी तथा सवा लाख बकरे आदि बारातियों के भोजन के लिए महर की पत्नी द्वारा भेजा जाना

चाउर उझिलत (दरियंह्) पर रे बाय
उय भाई रासधि ना गंजिया के सवा लाखई मन
अब सवा लाखइ पसेरिया जे भरऽ रे घीउ
अब सवा लाखइ ना खंसियाह् अउ सिंघारा
सब केनि होलइ भोजनवा जे एहि रे दाम
जउने घड़ी गंजि गयल चाउरवा जे लेइ जाजिमवा
सम्मइ परबत पऽहरवा जे लगि रे जाय
उहे भाई लगनह् ना देखि कह् रे मरदवा (१८३०)
हंहरत बानह् गउरवा क सब रे लोग
आजु बाबू एकक ना मइया के बाऽनऽ ए दूल्लर
एकक बानह सूधरवा जे सर रे दार
आजु भाई पावइ ना भरवा के बाँड़ खवइया
कइसे एक मनई चाउरवा जे खाइ रे जायं
कइसे एक खइहंइ पसेरिवा जे भर रे घीउवा
कइसेह् खसीय सिघरवा जे खाइ रे जायं
आजु भाई फीरय क ना पंहलेंह् डहरि देखाति बा
आजु भाई होइहइ ना काजवा जे इहंइ बीवाह्
एतना जो कहत ना बतियाह् बांय ए ओठियन (१८४०)
हहरल बानह् गउरवा क सब रे लोग
..........जवने ना दिनवाह राम समइया
अउ फेरि झंखत अहीरवाह् बाय रे लोरिका
उहे भाई दांतेह् अंगुरियाह् बांय रे दाबी
आजु बाबू नाहिय रामधिया रे खवइहंय
कुछ मोरे बूतेह् कहलवा बा नाहीं जातय
ओहि दिन धूमत ना बूढवा बाइ कठईता
आजु घूमि के गऽयल अहिरवा केनि रे आगे
आजु कहैं बेटवाह् ना सुनि ला बीर रे लोरीक
एठियन मनवह् काहनवांह् तू हमार (१८५०)
कइसेह् बइठल जाजिमवा पर बेटा हो रहऽबऽ
एठिन देखिलहू ना बुढ़वा क मनु रे साई

जउने घड़ी तउलि रसधिया रे धरतिहा
अब चलि गयनह् अगोरिया लेइं रे घऽरऽ
बचि गयनह् खालीय गउरवाह् कइ बरतिहा
अब बूढ़ देलेसि ना मतवा रे सुनाई
आजु भाई सुनिलह् बारतिया सवा रे लाऽख
अपनेह् पेटे के खोरकवा रे तउलि कय
खाये खाये भरे क रासधिया लऽखनाई
जेतनाह् फल्तूय रासधिया रे जो बचिहंइ (१८६०)
ओहिजा सोनइ भदरवा मे बहि रे जालऽय
खाये भरेह् क घीउवा रखि रे लेवय
सोनवाह् में देबह् ना घीउवा रे लड़ाई
अब वहि जातइ पुरुबवा केनि रे देखे
जेतनाह् बानीयना खसिया रे सिधारऽ
जउन भाई भरे क ना होइहऽ ना दुइ एक रेता
अब फेरि खावह् ना खसिया रे अमोचा
जेतनाह् फलतूय ना खसियां बचि रे जइहंइ
काटि केनि देवह् ना सोनवा में बह रे वाइ
एतना जो कहत न बतिया जे बाइ कठइता (१८७०)
सब केनि खूललि नाजरिया जे उहं रे बाय
जवने ना दिनवांह् राम समइयां
अब खात बानह् मारदवाह् रे बनाई
ओहि घरी सूनह् ना हलिया कठइत कय
नउवाह् मुनबेह् हाजमवाह् रे हमाऽर
देखु भाई वेलकुलि रासधिया जे बनि रे गईनी
इहां पर एक्कउ अछतवा जे नाहि रे बाऽनऽ
एक ठेनि लीहेइ लऽरिकवा जे तोंय बराति कय
लेलेह् जायेह् माहरवा केनि रे घरे
जाइ केनि दीहे सबदियाह् रे सुनाई (१८८०)
कहि दीहे सांझेह रसदिया जे कम रे होइनीं
लरिका के बासिउ तिवनवा जे नाहि रे बाऽनऽ
आजु भाई भींतरीय ना जुठवा रे काठ रे होतं
अब तुंय देतह् लरिकवाह् जे मोर रे खाऽत
एतनाह् कहि कह् ना बुढ़वाह् रे कठइता
उहे भाई सूतल जाजिमवाह् पर रे बाय
अबु सवा लाखइ बारतिया जे अहीरे कऽ

सूतल बानीयं ना जिरवाह् देख खेताऽर
जउने घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे सइयां
के फेरि ओहूय समइयाह् केनि रे हाल (१८९०)
आजु भाइ रेंगल ना ओठियन सेनि रे नउवा
अब फेर उठल ना बहुतइ रे सबेर
एक ठेनि सूतल लरिकवा जे धइये लेहलेनि
नेटुवाह् धनेलेह् माहरवा जे घरे रे जाय
आजु कहँ बड़ेह् सबेरवाह् केनि ऐ जुनियां
महरिन बहारति दुअरवाह् पर रे बाय
अब जुटि गयल ना नउवा जे बाने रे गंगिया
लरिका के धइलेह चेबुरवा जे चलि रे जात
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बा हाजमवा
महरिन गंवहिनि ना सुनिलह् रे हमाऽर (१९००)
जइसे हम लागीय ला नउवा जे लोरिके कऽय
ओइसय लागब ना नउवा जे देख तोहार
संझवाह् कम्मइ रासधिया जे होइ रे गइली
लड़िका क बासिउ तिवनवां जे नाहि रे बाय
भितरीं में जूठउ ना कठवां जे बचल रे होतां
अब तुय देतह लरिकवा जे मोर रे खात
एतना जे सूनति ना धनवा जे बाइये महरिन
उहे भाई दातनि आंगुरिया जे बानी चबात
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
महरिन बोललि ना बानीह् ओहि रे दम्म (१९१०)
नउवाह् सुनवह् ना गंगियाह् रे हमाऽर
भइयाह् पानीय मुखरिया जे लेइये लेबऽ
आंख मुंह धोवह मुखरिया तुंय रे काई
अब हम बासीय न कुसियाह् कये देई
तातइ देबइ खिचड़ियाह् उतरे बाई
दुनो मीला कइकह् भोजनवांह् तब रे जाब्याऽ

गायक द्वारा देवी का स्मरण
(रामायण से तुलना)
राम राम राम राम हो राम

आजु हम कहत ना रहलींय हो राऽमायन
कइसन परल जियरवा बाइ ए मोरऽ

अब जिनि भूलहू् ना संगियाहू् मोर समउरी (१९२०)
जिनि भूलि जायहू् दुरूगवाहू् मोरि रे माई
ओहि दिन सूनहू् ना हलिया ओठियन कऽय
आजु भाई नउवाहू् लरिकवा केनि रे धय कऽय
एकदम ले लेहू् बारातिया बाइ रे जाऽत

महर की पत्नी द्वारा समधी की अक्ल की परीक्षा लिया जाना कुल्हड़ से रस्सी बनाने का आग्रह

ओहि दिन सुनहू् ना हलिया जे महरीन कऽय
महरिन लेलेहू् चउकियाहू् बाइ रे जात
आजु कहैं भइयाहू् ना सुनिलहू् मोर सुवच्चन
एठियन मनबहू् काहनवांहू् रे हमार
आजु भाई एक भरुका ना लेइलहू् कुट रे नउसी
लेइजा जिरवाहू् ना बहतरि रे खेतार (१९३०)
जाइकेनि धइदहू् अगवांहू् समधी के
एहिकनि बरि देवं ना अब ही रे वन रे वाय
जउने घरी बरी बनवरिया जे समधी देंईहइं
अब रसरी बान्हब मड़उवा में गुम रे राइ
ओहि दिन सूनहू् ना हलिया जे ओठियन कऽय
सुबचन ले लेहू् भउकवा में नि रे जाय
जाइ के भाई धइलेसि ना बुढ़वा के कठइत के अंगवा
बोलत बानहू् लरमियांहू् कइ रे बोल
आजु कहैं समधीय ना सुनिलहू् रे कठऽईत
एठियन मनबहू् कहनवांहू् रे हमार (१९४०)
आजु भाई जउवाहू् कुटनवां जे कुट रे न उसी
एहि केनि बरीय देबहू् ना वन रे वाय
आजु कहैं इहई रसरिया जे मड़ये में
रसरिय बान्हिय जानिय नहू् गुम रे राय
तब भाई सादीय बिबहवा जे देख रे होइहंय
नाहिं नाहिं लागिय ठेकनवां जे येंह तो हाऽर
आजु भाई जवनइ राहतवा जे धइ के अइला
ऊहै रहता धइलेहू् गऽउरवाँ तूं चलि रे जा
ओहि घड़ी सूनहू् ना हलिया जे कठइत कय
आज बूढ़ भारत हूमनियाहं् लेइ रे बाऽन (१९५०)
नाहिं फेरि मानहू् ना मनवाहू् मुसुरे काऽतय

आजु भाई समधीय ना सूनिल्या तूं सुबच्चन
एठियन मनबह् कहनवां रे हमाऽर···मनबह् कहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई सादोय बीवहवा जाइ रे कऽरऽ
बुजरीय कऽवन रसरिया कइ बुनियादी
हमकेह् उल्टाह् चालनिया जे भरि कऽ पनिया
अव देई देवह् भेंइयवा क बर बे हम
ओहि घरी रेंगल ना मलवा जे जन सुबच्चन

समधी द्वारा उल्टी चलनी में पानी मंगवाया जाना—कठईत की बुद्धि पर महरिन चकित

रेंगल गयनंह् माहरवा के देखऽ रे घऽर
आजु कहैं बहिन बहिनिया जे वाय पुकारत (१६६०)
महरिन बोलल भीतरियाह् सेनि रे बाइ
आजु कहै सुनबेह् बहिनिया जे मोरि रे महरिन
एठियन तूं मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
समधीय वरय के रसरिया जे तईयारइ वा
बाकिये के मगलेगि ना पनियांह् रे बनाय
कहलेनि जे उलटाइ चलनियां मे भेइं देउ पनिया
भेइं केनि बऽरव ना हमहूं रे लइ रे आजु
एतना जो सूनति ना धनवा जे बाइ रे महरिन
उय भाई ओहीय समइयाह् कंइ रे हाल
आजु भाई धनि धनि ना पनियाह् पउन तीर्थ कय (१६७०)
जहवां क होराइ मारदवा वा बुधि रे मान
आजु भाई बड़ बड़ ना अड़गड़ हमरे डाली
समधीय काटिय करत बाड़ें खय रे कार
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् कठईत कऽय
बोलत बानह् लारमवांह् कइ रे बोलऽ
आजु भाई बड़ बड़ अयगड़वा जे समधिन डललेन
काटि केनि हमहूंय ना कइली खयं रे काऽर
एक बाति हमरउ ना अडगड़ परति रे बानी
जल्दी से करउ उपइया एहि रे दम्मऽय
ओहि दिन बोलत ना बतियाह् वा दो गाहें (१६८०)
अउ फेरि बोलत ना बतियाह् अर रे थाई,
आजु कहैं सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
उहवां से रेंगल ना मलवा वा सुबच्चन

फेरि भाई गयनह् सऽमधिया केनि रे पाऽस

कठइत द्वारा सोलह चूंचियों वाली भैंस की मांग करना—मंजरी के निर्देश पर सुबचन द्वारा सोलह टोंटियों का गिलास बनवाया जाना

ओहि घड़ी बोलल ना बुढ़वा जे वाइ काठईता
समधीय सुनवह् सुबच्चन रे हमाऽर
आजु भाई बड़ बड़ ना अड़गड़ समधी चल लेनि
हम भाई कइलीय ना बतिया जे खय रे काऽर
एक ठेनि हमरऊ जा अड़गड़ सुनि रे ले बयऽ
जाइ केनि कहि दह् ना समधिन के समुरे झाय (१९९०)
कहि दह् सोरह ना चिचियाह् कइ रे भइसइ
जवन फेरि एकइ ना सोकवाह् रे पेन्हाय
जल्दी से हमरेह् बऽरातिया मे भेजि रे दइहंइ
सवा लाख पीहइ सकलवा जे बरि रे यात
नाहि नाहि आहर पऽहरवा जे जोहि रे लेबऽय
नाहि कुच वाजिय लकुड़ियाह् रे हमाऽर
आजु फेरि करब धीवहवा ज अहीरे कय
लवटि करत धीयहवा ज चलि रे जात
आजु हरदियावलि बाटियवा जे महरे कय
रहि जइहइं नऽगर अगोरिया जे दइरे पाल (२०००)
आजु कहै कवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
कहि फेरि ओहय समइयाह् कइ रे हाऽलय
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
महरिन सूनति ना बतियाह् रे अहीरऽय
आजु बाबू बड़ बड़ना अड़ गड़ डालि ए देहली
समधिय काटिय ना कइलेनि खय रे काऽरऽ
समधिय एकइ अयगड़वा जे डालि रे दिहलेन
हमरउ अकिल पयंतरा जे नाहि रे भयनी
एतनाह् जे सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
अउ फेरि गऽइलि बऽखरिया बा त्रिस रे माद (२०१०)
आजु भाई बुद्धिय ना कवनो जे नाहि नी चऽढ़त
एही मे भयल सरीरवा जे बऽन मलाल
ओहि दीन बोललि ना धियवा जे बाई मंजरिया
मईया तू मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर

तुय भाई बड़ बड़ ना अड़ गड़ डालि रे देह लऽ
ससुर हमार काटीय कईलवा बा मय रे दाऽन
आजु भाई एकई अड़ गड़वा जे सासुर डललेनि
मइयाह् अकिल ठेकनवाह् बा नाहिं रे तोर
आजु तुय सेर भर ना सोनवा जे लेइये लेबय
अब चलि जाबह् सोनरवाह् केनि दूकान (२०२०)
आजु कहैं देइदह् पातरवा जे पीटवाइ कऽ
के फेरि देव्रह् गोलसिया जे बन रे वाय
पेनियां में ओरेह् ना ओरवा जे सोर डोंटा
अत्र फेरि एकई ना डोंटवा में बीचि रे दे
जल्दी से भेंजि दह ना अहिरे के बरियतिया
एहि में नि पीहइं अहिरवा जे सब रे मद
जवने घरी सेर भरना सोनवांह् सिवचन लेहलेन
अब चलि गयनह् सोनरवाह् के दूकाने
जाइ केनि सोरह पतरवा जे पिट रे वउलें
अत्र फेरि देलेनि गोलसियाह् गढ़ रे वाई (२०३०)
पेनियां में देलेनि ना डोंटवाह् सोर बनाई
आजु कहैं पन्दरह ना डोंटवा ज ओर रे ओरी
सोरह में वरल ना बीचवांह् वाइ रे बीधय
आजु भइया ईहइ गिलसियाह् रे खरइया
अत्र मेजि देव्रह् अहिरवा के.व्ररि रे यातऽ
एहि मेंनि पीहइं ना मदियाह् रे अघाई
ओहि घरी गईलि गीलसिया वाई गढ़ाई
उहे होइ गईलि गोलसिया तइ रे या रऽ
उहवां से लेइ कह् गिलसिया भेजि रे दिहलेन
जह अहं जीरवह् ना बहतरि रे खेतार (२०४०)
अत्र जहं सवाह् ना लखवा रे बरियेयाऽत
वइठल वानह् मेड़रिया देख रे मारी
ओहि टिन भेजति गीलसिया लेई रे बानऽ
अब देइ देहलेह् कऽठइता केनि रे हाऽथ
...ओठियन लेइ रे देखऽ हंऽसत बानह् ना वुढ़वा
आजु कहैं धनि धनि ना पनियांह् कहैं छिट कऽय
उहे होति टीनह् ना कोईय देख रे बाय
आज कोइ गुर्नाह् मतियवा जेवाइ रे मारी
अब भेज देलेह् वानह् रे चढ़ाय

अब भेजि देलंह् गिलसियाह् लेइ बऽरतियां (२०५०)
भट्ठिह् देलेह् अगोरिया में तोर रे बाई
आजु मद पीयइं ना एठियन बरि रे याऽतऽय
आजु भाई जिरवह् ना वहतरि रे खेतारऽ
तब तक देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
महरिन कसीय ना भइली तई ये याऽरऽ
समधीय नाहींय ना बतियाह् में ओनावऽ
समधीय अपनेह् अयेढ़िया बाय हो जात य
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् ये मूवच्चन
भइयाह् मनवह् काहनवांह् रे हमाऽरऽय
चलि जाह् नदीय ना बेवराह् केई रे तीरवां (२०६०)
सवा लाख बइठलि बरतियाह् जहं रे बाड्य
जाइ केनि देइ दह् हुकुमिया समधीय कंऽ

सवा लाख बारात का द्वारचार करना

डाट केनि चलऽ दुअरवाह् बरि रे याऽतय
अब बात लागइ वरतियाह् महरा के दुअरां
आज भाई होइहंइ ना सदियाह् रे बिवाहऽ
एतना जे लेइ कह् धावनियाह् बाइ रे जातय
अउ फेरि देलेसि जाजिमवाह् पर रे काइ
आजु कहै सुनवह् ना भइयाह् ए बऽरतिया
अउ फेरि सुनिलह् गउरवा क सब रे लोग
बहोन के उल्टे हुकुमिया जे बाइ रे लागत (२०७०)
चलि केनि ठाटइ बारातिया जे कई ए दऽ
चलि केनि दुअराह् बरतियाह् रे लगइबह्
आपन भाई करबह् ना सदियाह् रे बिवाह
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
बोलल बानह् दुलरूवा जे अहीरे कऽय
जेकर बानह् धरमियांह् दइ रे मालय
आजु कहैं सुनवह् चमरवा जे बजवा कऽय
आजु भाई जेतनाह् ना बजवा के बज रे गीरय
ठटि केनि अइसीय ना हथवांह रे जुझावय
एहि जउन नगर अगोरियाह् दइ रे पाऽल (२०८०)
जउने घड़ी नागर अगोरिया से चलि रे चलबऽय
अपने नागर गउरवांह् गुज रे राऽतय

जाइ भाई रोकइ मजूरिया के कवन रे गन्तीय
एक एक गइयाह् ना देवई रे ईनामय
ओहि घड़ी बाजलि लकुड़िया बा अहीरे क य
सवा लाख भईलि बऽरतिया बा तइ रे यार
जेउनी घड़ी ऊठलि ना जिरवा जे खेतवा से
एकदम हललि ना गलिया में जाइ रे जाय
ओहि घड़ी देखह् ना हलिया जे अहीरे क य
पलकी में झंखत ना दंतवा जे बाऽन दबाय (२०९०)
आजु कहैं हो हो ना दईवा मोर नारायन
का ब्रम्हा लिखलह् ना मंझवाह् मोर लीलार
आजु भाई सांकरि ना गलिया बा ले अगोरिया
आजु फेरि कसमस बंजरियाह् लेइ रे बाय
आजु कवनो खटीय आपदवा जे परि रे जइहइं
कहं मोर घूमीय वीजुलिया जे तर रे वार
चललि बरतिया बा अहीरे क य
धइलेह् गलिअय अगोरियाह् कइ रे खोरय
चलि केनि देखह् न अगवांह् कइ रे हाऽल
महरिन ले लेह् ना गुनवांह् बा बनाई (२१००)
मड़ये में बइठल ना गुनवां जे सर रे दार
ओहि घड़ी बोलनह् गुवलवाह् लेइये ओठियन
आजु भाई संवरुय के डलियाहं देइ रे देवऽ
धरमीय नाचत कऽरगही जे चऽल्हि रे नाचय
एतना जउ सूनद ना मलवाह् रे संवरूवा
ओकर भाई गयल वा मनवां बा कुम्हि रे लाय
आजु कहैं हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह रे लीलार
जब सेनि लेहलींय पयदवा जे हम पिरिथिमी
तब सेनि देखल ना गइयाह् कोनि अड़ार (२११०)
हम का डालब ना जतियाह, लेइ ये डलिया
कइसेह् नाचब करगही जे देखा रे नाच
एतना जे सूनत ना बुढवा ज वा कठइता
जरि मरि भयल ना दरियां जे बान खंगार
आजु कहैं सुनवह् ना एठियन लेइये लोरिका
बेटवा तूं संचेह पलकिया में रहि रे जा
एठियन देखिलह् ना बुढ़वा का मनु रे सइया

आजु भाई देखह् ना हलियाह् रे हमाऽर
.... ना गलिया बुढ़ कठइता
अब बुढ़ तड़कल बयालीस जाइ रे हांथइ (२१२०)
आजु भाई लेइकह् न डलियाह् हंथवा में
आगे आगे नाचत करगहीय जाइ रे नाऽचय
तेकरेह् पीछेह् ना चलिल रे बारातय
सवा लाख छेकलेह् बऽरतियाइ बाइ रे जाती
अब लगि गईलि दुअरवा जे अहीरे के
जवन भाई रहनह् ना गुंडवाह् दस रे बीसय
ऊहे भाई गयनह् ना बुढ़वाह् पर लपऽटी
बुढ़वाह् ले लेह् बा डलिया जे हंथवां में
नाचत जालाह् कारगहीय देख हो नाची
गुंडवांह गयनह् ना बुढ़वा पर लप रे टाई (२१३०)
आजु केन्हों हांथ ना धइयह् कइ ओन्हावइं
आज बुढ़ हाथेंह में लेले वा लट रे काई
नाचत बाड़इ कऽरगहीय देख रे नाचय
जउने घड़ी तन्नीयं ना देहियां जे बाइ दो मउले
गुंडवांह् गिरनह् धरतिया में भह रे राय
केनहू क गोड़इ ना हथवा जे टुटि रे गइनऽ
केहू झरि गयल बतीसवा जे देख रे दांत
अब कवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
केहि फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालऽय
जउने घड़ी देखत न मलवाह् बा मुबच्चन (२१४०)
दवरल जालह् समधियाह् केनि रे आगे
समधीय आपइ ना हउवंह् तिर रे वाना
आजु भाई अपने न हथवा के डाली नाहीं
केहू के छोड़ल अगोरियांह् रे छोड़इहंय
संचेह् हमइं ना डलियाह् सब रे लेबऽ
दुन्नोहं रहि जाइ ना दलवाह् कय सिंगारय
ओहि घड़ी संचेह् ना डलियाह् दइये देहलेन
सिवचन ले लेह् मंड़उवा में चलि रे जायं
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे अठियन कऽ
दुअरांह् लागति ना बानीय बरि रे याति (२१५०)
उहवां पर नउवाह् बांभनवा जे लेइये बईठल

अब फेरि होतइ दुअरवाह् पर कऽमान
आजु भाई दुअराह् ना होत बा दुअरे रइता
अउ फेरि होतइ तीलकवाह् रे समान
आजु दुअर पूजाह् दुअरवा क होये रे लगनऽ
आजु रव बाजत बजनवां बा उन रे हद्
आजु सवा लाखइ बरतिया अहीरे कय
छेंक लेह् बानीय महरवा के दर रे बाऽर
ओहि घरी दुअराह् ना होइ गयल खट रे करमा
अब फेरि नउवाह् बांभनवाह् ओठिये दिहलेन (२१६०)
अब चलि गयनह् आंगनवांह् मऽड़ये में
लेइ केनि भाजीय न बरवाह् के खियावय
आजु भाजी लेइ कह् दुअरवांह् चलि रे गयऽनऽ
जहवां पर टीकलि सफलवा बा बरि रे याऽतय
आजु कहैं पांचय लरिकवाह् रे उठउलेन
लोरिकाह् दहीय ना गुड़वाह् बाइ रे खातय
खाइकनि हाथइ ना मुँहवाह् रे पऽ खर तय
जाइके भाई बइठल पलकियाह् पर रे बाऽनऽ
तब तक मूनह् ना हलियाह् मड़ये कऽय
बोलत बानह् ना पंडित लेइये नउवा (२१७०)
पटकि देलेनि पातरवाह् मड़ये में
देखत बानह् न सदिया के मन रे बन्हय
कब केनि बानीय साइतिया सदिया कऽय
कब केनि बानह् सइतियाह् सेनुरे कऽय
अब छोड़ि देइति ना सिरवाह् रे लीला रय
दिनवांह् दिनकइ झगड़वा जे छूटि रे जाऽत
चलि चलि नगर गउरवा अपन रे घऽरे
एतनांह कहत ना बुढ़वा जे बाइ कऽठइता
ओहि जउं ना दुअराह् अहीरवाह् दर रे बाऽर
अब सवा लाखइ बऽरतिया बा अहीरे कऽय (२१८०)
दुअरा पर बइठल मेंड़रिया जे बन रे वाय
ओहि घड़ी भितरी से हुकुमिया जे आइ रे गऽयनी
ऊव भाई पानीय पतरवा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी आयल ना नउवाह् रे हजाम्मय
अय भाई बइठल ना ओठियन रे बनाई
जउ कहैं आइलि समनियां बा लड़िकीय के

मड़ये में बानह् ना ओकर देख रे मांगऽय
आजु कहैं साठिय मोहारवाह् कइ र हाऽर
आजु भाई आयल ना देहियांह् रे सिंगारऽ
आजु भाई आयलि बा सरियाह् रेसमिय कऽय (२१९०)
जे में भाई चारि चारि अंगुरवा पर बान रे तारऽय
ओहि भाई अइनीय ना सरियाह् रे चढ़ाई
आजु कहैं बइठि ना गयनह् रे मड़उवा
होवय लगनह् ना कथवाह् रे पुराऽनऽ
जउने घड़ी लड़िकीय लड़िकवा क मांग रे भइनऽ
अब फेरि लेइकह् ना अहिराह् चलि रे गऽयनऽ

मंजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न

आजु भाई सादीय विवहवा जे होत रे बानऽ
एहि जउ नगर अगोरियाह् दइ रे पाऽलऽ
जउने घड़ी सदियाह् बीवाहवाह् हाइ रे गयन
अउ फेरि मांगेह् सेन्हुरवाह् छुटि रे जानऽ (२२००)
उहवां से उठलि बारातिया बा अहिरे कऽय
अउ फेरि हड़वड़ मचलवा बा देखऽ रे बाय
आजु भाई सादीय बीवहवा जे होइ रे गयनऽ
कोहबर से छुट्टीय अहीरवा जे पाइ रे जाय
जउने घड़ी निकलि ना बाहर बान रे जातय
अब के कऽरत पालगिया बा पर रे नाम
सब कनि आसीर ना बादवा जे लोरिक लेतय
जाइकेनि बईठि पऽलकियाह् में नि रे बाय
जउने घड़ी उहाँ ना जऽइयह् रे बईठल
पलकिय ऊठलि ना ओठियन सेनि रे बाय (२२१०)
आजु भाई सदियाह् बीवहवा जे कइ कऽ उठनऽ
चलि गयनह् नदीय बेवरवाह् कइये तीर
जाइ केनि जिरवाह् खेतरवा जे जाजिम परनऽ
सवा लाख बइठलि बऽरतिया बा मेंड़ रे माऽर
दिनवा राम समइयां किह् फेरि ओह् समइयाह् कइरे हाऽल
आजु भाई कसबिन पातुरिया जे दूर रे लगनी
भंड़वाह् तारत चिट्ठुकिया पर बांड़ रे ताऽन
आजु भाई बइठइ ना लोगवाह् गउरा कंय
कूचत बानह् मगहियाह् ढोलि रे पाऽनऽ

आजु कहैं रूठइ ना गंजवाह् बूटउल कऽय (२२२०)
धोरहीय मारत चीलमियां पर बान रे दम्मं
जलसा होतइ ना जीरवाह् बा खेताऽर
कहनांह देखऽना ओठियन रे बनाई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
के फेरि ओहूय समझयाह् कइ रे हाऽल
······अहीरवा जे जाजिमें पर
उय भाई लेइकह् गीलसिया रे उठावंऽय
पीयत बांनह् मदिलवाह् लेल रे कारो
ओहि घड़ी पीयइ ना गुरूवाह् रे अजइया
धोबियाह् नऽसाह् में बांनह् मत रे वाऽला (२२३०)
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
अब फेरि होलेय ना रतिया बड़ रे वारय
अब फेरि गईलि बारतियाह् नसवा में नाची
बोलत बाड़इ ना बुढ़वाह् देख रे बातय
आजु कहैं बेटवाह् ना सुनिलह् बीर रे एठियन
कहना मनबह् ना इहंवा रे हमाऽरय
सवा लाख मूतति बारतिया बाइ हमाऽरय
बेटवाह् जारत पलितवा रहय तोहाऽरय
केहू कनी चीजइ बिस्तुरवा ना रे होइहंय
नाइ फेरि कवनि जाबबिया बिहना देबय (२२४०)
जेनकर टुटहिय पनहिया हटि रे जइहंऽय
बिहनाह् मगिहंइ चाढ़नवां केनि रे घोड़ा
जनकर टूटहीय डंड़इया हटि रे जइहंय
बिहनाह् मंगिहंइ ना ढलिया तर रे वाऽ रऽ
जेनकर फटहीय कामरिया जे डगि रे जइहंइ
बिहना हमसे मागीय पुरबहीय देख रे राल
बेटवा तूं पूरा पहरवा जे देखऽ रे कऽरऽ
मूतति बाड़इ साकलवा जे बरि रे याति

लोरिक की मृत्यु की आशंका पर मंजरी का करुण क्रंदन—गांगी नाऊ का मंडप में जाना

जेवने घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे लइयां
मंजरीय निकलि मड़उवा मेंनि रे बईठल (२२५०)
देखले रहई सरूपवा जे लोरिके कऽय

अउ फेरि अढ्ढिय पीछउरीय केनि रे ओढ़ि कय
अहीरा के देखलेसि सरीरवाह् रे मिलाई
ओहि दिन रोवइ बिटियवा जे महरे कय
आजु भाई हमरेह् जूठह्यिाह् केनि रे करने
जेकर अइसन ना ललवा जे जूझि रे जइहंय
मइयाह् खाइ कह् कनियवां जे मरि रे जइहंय
हमकेह् बहुत लीखीय नह् अप रे राऽधऽ
एतनाह् सोचति ना धियवा बा महरे कय
जेकर दावन मंजरियाह् बाइ रे नाऽम (२२६०)
मंजरीय अइसिय रोवइयाह् रोइ ये देहलेस
अब नाहीं सहल अगोरिया में देख रे जात
आजु कहंय मंजरीय ना केनिय रे रोइबवा
झऽरलि जाति बा तारूनियां क देख रे पात
आजु कहयं कवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
के फेरि ओहीय समइयाह् कइ रे हालय
अउ फेरि एतन ना बतियाह् लोरिका सूनय
आपन देखत ना बानह् रे बाराती
ओहि दिन हहरल मरदवा बीर रे लोरिका
ओकर रोईब सुनीय का ओहि रे दम्मय (२२७०)
के भाई रोवति बीटियवा जे बा बभने कयं
चाहि होइ गइनीय चउकवाह् पर रे रांड़
के फेरि रोवति बीटियवा बा बनिया कय
जेकर पियवाह् लदनियां बा चलि जाय
के फेरि रोवति बीटियवा बा कयथे कय
जेकर पियवाह् लीखनियां बा चलिये जात
जउं फेरि रोवति गोतिनियां बा महरे कय
जेकर घटि गयल भीतिउरी कइ बाइ रे भात
जवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
लोरिकाह् बोलल ना मनवाह् रे बिचारी (२२८०)
जाइ केनि सूतल हाजमवा बा देख रे गंगिया
ओकर धइकह् चेचुरवाह् लेइ ओठावांऽय
आजु कहैं बोलल ना बतिया बा अर रे थाई
गंगियाह् सुनबेह् हाजमवांह रे हमाऽरय
एक ठेनि रोवति जननिया किलवा कय
ओकर दायनवां रोवइ बाइ रे लागत

हमसे बूते सहलवा नाहि रे जाला
के फेरि रोवति बिटियवा बंभने कय
होइ गइलीं ओहि चउकवा पर रे रांड़
जाइ के नउवाह् पातह् ठेकनवा तूं ए लगावऽ (२२९०)
रोवति बाड़इ तीवइयां जे अधि रे राति
तब फेरि बोलल ना गंगिया जे बाइ हजमवां
मालिक मनबह् कहनवांह रे हमार
आजु हम आधीय ना रतिया जे निच रे लइयां
कइसे हम जाबइ अगोरिया जे दइउ रे पाल
गलिया में चोरइ ना चोरवा जे लेइए करिहंय
आजु भल मारीय जीनिगिया जे करिहें खराब
एतना जे कहत ना बतिया जे ओठियन बाय
अउ फेरि आग्रीय नीवइयांह् देख ए रात
आजु तोहार जातीय ना नउवा कहउ रे गंगिया (२३००)
एक बुधि लेबेह ना ओठवा में उपरे राय
तब फेरि बोलल ना गंगिया जे बाइ हाजमवां
मालिक मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु हमार छत्तीस ना बुधिया जे लेइए काने
आजु मोरे गऽईलि ना अन्दर रे घुसूर
एक्कउ बुद्धिय न आवत नाहि नीं कामय
का हम कहब जाबविया जे एहि रे दाम
ऐ राम, राम, राम राऽम हो राम
आजु कहैं रामइ ना सिरजै जे बान रामायन
लछिमन सिरजइं ना कसिया जे देख पयाऽग (२३१०)
ऊहे फेरि सीतइ सिरजले जे बानी ए नइहर
जहाँ जाइके धनुस तोरले बांड़ रे भग रे वाऽनइ
ओहि दिन बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरीक
गंगियाह् सुनबेह् हजामवांह् रे हमाऽर
देखु भाई अधिय ना रतिया जे निच रे लइया
अब तूंय जाबह् माहरवा जे केनि रे घरे
जाइ केनि कहि देह् ना बतिया तं अर रे थाई
कहि दह् सांझार ना नुनवा क हवं खवइया
अब पेलि देहलेंह बा बसहा जे देखि रे नूनाऽ
उन्हें नात उलटि ना पनियां जे जालऽ पीवअले (२३२०)
अब तोहार दुल्लर पीयसले जे वाऽन दामादय

ओहि दिन बोलिहंइ ना समुवा जे मोरि मदागीन
कहिहंइ जे नादीय ना तिरवां जे बाड़इ वराती
दुल्लर के देतह् ना पनिया जे आनि पियाई
नाहिं भाई दसबीस ईनरवा जे बांड़य अगोरी
घींचि कनि देतह् ना जलवाह् रे पियाई
कहि नद्दीय कऽ पनियां जे बांड़े बहुतुया
इनरा क पानीय वानइ नह् गंह रे डोरी
आजु कहंय सांकरि ना कुइयां बा मूबवा कय
नाहिंनीय पहुँचत रे समियांह् कइ रे डोर (२३३०)
कहि दय् ठंडाह् ना पनिया जे कलसा कय
अब तोहार दुल्लर पीयसले जे बांड़े दामाद
फिन रेंगल ना गंगियाह बा हजामऽ
अब धइ लेलंह् अगोरियाह् कइ ए खोरी
नउवाह् छपकत दबकतवा बा चलि रे जाऽतऽ
अब चलि गयनह् माहरवा क दर रे बाऽर
आजु भाई बानीय ना महराह् घरे गोतिनियां
मड़ये में मूतलि ना घटवाह् बाइ उघारी
मजरीय बईठि मड़उवाह् सुगवा के
रोवति बाड़इ ना जारवाह् रे बेजाऽरय (२३४०)
आजु कहें हमरेह् जूठइयाह् केनि रे कऽरने
जिनकर अइसन ना ललवा जे ग्रुझि रे जईहंय
मइयाह् खाइकेह् कनियवां जे मरि रे जइहंऽय
हमकेह् बहुत परीय नह अप रेराऽध
नउवाह् जाइ केह् दुअरिया पर रे ठाड़
अब नाहिं बोलत ना बोलिया बाइ रे चाऽल
नउवाह् चारिय परगवा पिछ रे हटि कऽय
आजु कहें मरलेसि खंखरिया बरि रे याऽरय
मंजरी के कानेह् सबदिया जे परि रे गइऽलीं
धियवाह् डांकलि ओठियांह् सेनि रे बाय (२३५०)
जवने घरी जाइ कह् ना महरिन के पेटे गीरलि
महरिनि ऊठलि बांड़इ ना जक रे लाइ
आजु कहें सुनवेह् बीटियवाह् मोरि मंजरिया
एठियन तू मनबेह् काहनवंह् रे हमाऽर
बिटियाह् सांझेह् ना सिरवा में परल रे सेनुर
अब आधिय रतियांह् गईल तूहं मस रे ताय

ओहि दिन बोललि ना धियवाह् जे महरे कऽय
जेकर दायन मंजरिया जे बाइ रे नांव
मइया तू अइसीय मेंहनवा जे मारि रे देहलऽ
कुछ मोरे बूतेह् सहलवा बाइ नाहि जाऽत (२३६०)
न त माई सिरवाह् परन नह हमरे सेनुर
न त आधि रतियांह् गईलींय बउ रे राय
आजु भाई दुअरांह मनइया जे एक ठे बाऽनय
पूछि ल्या घरातीय नाह उवंह् कि बाराति
ओहि दिन निकलल ना धियवा बाइ महारिन
दुअरा से पूछति ना बतिया बा अर रे थाई
आजु भइया कांह हं ओतनवा जे हवे तोहार गोतन
कहवां पर टूटीय गईलि बाह् बुनि रे याद
आजु तूं कहां चढ़इया जे कइए दीहलाऽ
अब तू अयलह् ना आधीय लेइ रे रात (२३७०)
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बाइ ए नउवा
मलिकिन मनबह् काहनवांह् रे हमार
जइसे हम लागीय ला नउवा जे लोरिके कय
ओइसइ लागब ना नउवाह् रे तोहार
आजु तोहार दुल्लर दऽमदवा जे बान पियासल
मंगलेनि ह ठंडह् कलसवा क देख रे जल
ओहि दिन बोललि ना धनवां जे बानी रे महरिन
नउवा तूं मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई नदीय ना तिरवा पर बाइ बरतिया
दूलरू के नदीय ना पनियां जे देत पियाय (२३८०)
नाहिं भाई दसबीस ईनरवा जे बाइ अगोरियां
भरि केनि देतह् ना जलवा जे ओन्हे पियाय
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बाय हाजमवां
मलकिन मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु कहे नदीय ना पनियां जे बाइ बहुतुआ
ईनरा क पानीय बानइ नह गहं रे डोल
आजु कहें सांकरि ना कुइयां बा रजवा कऽय
नाहिंनिय पहुँचत रेसमियां क देख रे डोर
मंगलेन ह् कलसाह् ना ठंडाह् जुड़ रे पनिया
अब तोहार दुल्लर पियसले जे बान दामाद (२३९०)
ओहि घड़ी निकलति ना धनवांह् बाइ ये महरिन

उव भाई गइनींय दुअरवाह् भई हो ठाढ़
आजु तूं हवह् घरतिहा की बरतिहा
हमके तूं देबह् सरेखियांह् रे लगाई
ओहि दिन बोलल ना गंगिया बाइ हजामऽ
दरियांह् करई ना बेड़वां हो जबाब
हम जइसे लागी लऽ नउवा लोरिके कऽय
ओइसइ हईंय ना नउवा हो तोहार
एतना जब कहत ना बतियाह् लेइ ये बानय
महरीन अनुपीय क कइले जे बाइ पुकार (२४००)
ओहि घड़ी अनुपी ना अनुपिय बाइ पुकारत
अनुपीय नीकलि आंगनवा में भइलीं रे ठाढ़

मंडप में गांगी नाऊ की दुर्गति

आजु कहें सुननेह् भतीजिन मोरि अनूपिया
नउवा के सेन्हुर कजरवा जे कइ रे देय
एन्हें भाई एतनीय घांघरियाह् पहिरे राइबे
कल सेनि चनरस ना देबेइ टिकुली चिटिकाय
आजु कहें नाचइ ना नउवाह् लेइ कऽरगहीं
मड़ये में बड़बड़ बीपतिया जे कइ रे जाय
आजु सवा लाखइ गोतिनियां जे मोरि रे बानी
सूतलि नाघंट उघरवा जे देख रे बाय (२४१०)
जाइ केनि निन्नाह ना नउवा जे करी बरतिया
अब फेरि हंसिहंइ गउरवा के सब रे लोग
ओहि घरी निकलनि ना धियवाह् रे अनूपिया
दखिनीह् लेइ आई ना झंपियाह् रे उतारी
नउवा के सेनुर काजरवा जे कइये दिहलेन
मथवांह् चनरस टीकुलिया चट रे कउलेन
ओन्हे भाई रतनीय घंघरिया बा पहि रे रवले
अब गंड़यइयाह् ना नचियाह् बाड़े नचावत
गंगियाह एकइ ना हंथवा धर रे कपरां
एक हाथ धरत बाड़इ ना करि ए हांई (२४२०)
ओहि घड़ी नाचइ ना ओहिय रे अगोरियां
रोवत बानह् रकतवा कइ ए आंस
ओहि घड़ी नाचत नाचतवा थकि रे गयल
नाहि जाइके गीरल धरतियां भह रे राई

आजु कहैं महरिन ना लखवाह् रे दोहइया
आल्हर गयल परनवांह् रे हम्मार
ओहि दिन बोललि ना धनवां जे बाइ ए महरिन
अनुपीय बन्नई ना नचिया जे कइए दे
नउवा क सेनुर काजरवा जे धइये देबे
चनरस टिकूलवा आपन नह रे उतार (२४३०)
एकर भाई रतनीय घंघरिया जे छोड़ रे वइबे
एन्ह देदऽ ठंडाह कलसवा क भरि रे लेइ
आजु लेइ जातह् ना जिरवाह् रे खेतरवां
जहां दुल्लर पीयसले जे बाड़ दामाद
नउवाह् आपन फजिहतिया ना रे कहि हंय
ना त जाइ कहिहंइ न निन्नवा रे हमाऽर
ओहि घड़ी रेंगलि ना धनवां बाइ अनूपिया
अब हलि गईलि कोठरिया में नि रे बानी
जाइ कनि मांझिय ना पलवा बाइ रे धऽरअ
अब धरि लेह लेह् ना लोटवा भरि उठाई (२४४०)
ओहि घरी मूनह् ना हलियाह् मंऽजरी कऽय
मंजरी देखत अनुपिया केनि रे बाड़य
अब घिया हहर्रालि ना धनवां बाइ मंजरिया
आजु बाबू जवन बारफवा जे माघ पूस कऽय
ठाड़इ चोलाह् ना गिरि जाइ जरि रे जाई
जउने घरी पीह्इं ना सइयां सुख रे नन्नन
ओनकर आल्हर करेजवा जे जरि रे जाय
बिहना होइहंइ ना एठियन रे भुरूहुरा
पुरुबइ देइहंइ कउववाह् देखऽ रे रोर
अब लागि जाई झगड़वा जो बरिग्याऽ रय (२४५०)
कइसेह् थमिहंई ना लोहवा सइंया हमार
एतना जब कहति न बतिया जे बाई मंजरिया
ऊय भाई गईलि दुऽवरिया के देखऽ रे छोर
ओहि घड़ी माघीय ना पलवा के फेंकि रे दिहलेन
अउ फेरि फगुनीय कालसवा में धर रे देन
आजु कहैं जऽलइ ना भरि दे कलसा में
अब फेरि ले लेह् ना जऽलइ रे टेकाय
जवने घरी लेइकह् ना जलवाजे गंगिया रेंगल
महरीन बोलति लारमवा क बाइ रे बोल

आजु कहीं सुनबह् ना नउवाह् मोर हाजमवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
जाइ केनि कहि देह् सनेसवा रे दुलरूय से
ओनसे कहेय ना बतियाह् समु रे झाय
कहि देह् एईल फुले रउवाह् बन रे बेईल
एक फूल फूलल्लि चमेलिया बा कच रे नाऽर
कहि दह रतिहंइ अहीरवा जे लोढ़ि रे जइहंइ
नाहि दिन सूरूज ऊगत जाई कुम्हि रे लाइ
·······रेंगल ना गांगियाह् बाई हजमवा

लोरिक का चुपके से मंजरी से मिलने जाना

चलि गयल जिरवाह् न बहुतरि रे खेताऽरय
उहवां पर जरत पहरवा बा लोरिके कऽय (२४७०)
सवा लाख सूतलि बरतियाह् बाइ रे जाई
जवने घरी जुटि गयल ना नउवाह् लेइये ओठियन
लोरिकाह् पूछत ना हलियाह् बाइ रे चाली
नउवाह् कवनि जननिया जे रोवति रे रहनी
आज भाई आधिय ना रतियाह् निच रे लइयांऽ
ओकरे पर कवन मोसीबति परल गे रहनीं
तब फेरि बोलल ना मलवाह् वाइए गंगिया
मालिक मनवह् काहनवहं रे हमारऽ
अउ भाई तोहरइ बीयहिया जे बइठ कऽ रोवलीं
ओइ जउ मांजेह् मड़उवांह् केनि रे बीचय (२४८०)
का जानी कायेह् भोसीबत ओन्हे रे परलीं
रोवत रहनीय ना जरबाह् रे बेजारय
मंगलीय कलसाह् न ठंडवाह् जल रे पनियां
लेइ केनि आवत ना रहलीं जे दुअरा पर
सासु तोहरइ ना कइलेह बानी बलावति
कहली जे एईल फूलेलि बाह् बन रे बेईलि
एक फूल फूलल बा चमेलिया कचरे नाऽरय
कहि दह् रतियांह् अहिरवा जे लोढ़ि रे जइहंय
नाहि दिन सूरूज ऊगत जाइ कुम्हि रे लाय
ओहि दिन बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका (२४९०)
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जवाबऽ
आजु मोरे सावह् ना लखवा बरि रे यतिया

सूतल बाड़इ ना जिरवाह् रे खेतारऽ
आजु मोर अकसर पहरवा जे बाइये एठियन
कइसेह् करइ जाईंह् ना समुरे रारऽ
ओहि दिन बोलल ना गंगियांह् बाइ हजामऽ
मालिक जाइ कह् करह नाह ससु रे रारी
घुमि-घुमि करब पाहरवा जे एहि अगोरिया
जाइ केनि घूमीय आवह् ना ससु रे रारी

लोरिक की वेष-भूषा

ओहि दिन अंगवाह् ना पहिरत बाइ अंगरखा (२५००)
गोड़वा में गूलई बदनिथांह् रे तमाय
आजु कहँ तरकुस ना गूजवा बा पनहीय कऽय
आजु बीर ले लहं ना एंड़वाह् रे चढ़ाय
इय भाई साठीय ना गजवाह् कइ दुपट्टा
अब बीर बान्हत ना फेटियाह् बाइ सम्हार
आजु भाई छप्पन ना छुड़ियाह् मोर कटारी
अहीरे के झूकलि बऽगलिया में तर रे वार
आजु कहं बायें ना हथवां जे लेइए ओड़निया
दहिनेह हाथेंह् बीजुलिया बा तर रे वार
अब धइ ले लह् पगड़िया जे लरमें कऽय (२५१०)
जेमे भाई मेघइ डबरूवा बा घह् रे रात
जबने घरी रंगल ना बानह् लेइ बराती के
जइसेह् दोमति हथिनियां बा चढ़ि रे जात
कहँ बरत दीपकवा बा दुअरे कऽय
गेसिया ना जरत ना बानीह् एहि रे दम्मय
जेवने घरी देखइं अहीरवा जे बाइ रे आवत
आजु भाई बेलकुल दुअरियाह् बन्न रे भइलीं
आजु कहँ एकक केवरवाह् केनि रे बीचवां
लोहवा के देलेन ना मूसर पहि रे राई
ओहि घरि दुअराह् बोलल बा दुअरे रइता (२५२०)
खिरकीय बोलल वानइनह् ना कोत रे वाऽलय
अहिरिन कऽ तोहकेह् वलउवा बा भीतरीय में
जइसीय कूब्बत ना होई तसि ए जावऽ
एतना जउ कहत न दुअरा क दुअरे रइता
खिरकी के बोलत वानह् नाह् कोत रे वाल

जवने घरी चारिय परगवा जे पाछिल गय नऽ
अहिराह् उठल ना एंड़वा जे देय लगाय
ओहि घड़ी टूटि गयल मूसरवा जे लोहवन कऽय
खंड़वाह् गिरनीं केवड़िया जे भइ रे राय
आजु भाई पहिलाह् डेवढ़वा में हलि रे गयनऽ (२५३०)
दुसराह् मारत हूमचवा जे पुनि रे बा
आजु कहें अइसन ना एंड़वा जे बाइ चढ़उले
आधाह् देलेह् देवलिया जे गिरि रे जाय
ओहि घड़ी रेंगल अहीरवाह् जे रेंगावल
कुरुसीय धईलि मड़उवाह् मेनि रे बाय
जाइ के भाई बायी कुरुसियाह् पर रे बईठल
आजु परि गयल ना सुगवाह् पर ने गाह
आजु कहें आजमगढ़वा क रहल रे बढ़ई
ऊय भाई मूगह् खम्हियवा जे बाड़े उरेह
जतनाह् धनइ ना पुंजिया बा लोरिके कऽय (२५४०)
उहे भाई सुग्गा खम्हियवा में देह् उरेह
आजु जतना पूंजीय ना गइयाह् र भंइसिया
सत्र भाई देलेसि खम्हियवाह् रे उरेह
आजु कहें छोटइ ना घरवा बा पितरीय कय
भितरांह् बहुत बानइ ना फर रे हार
दुअरा पर बानह् ना पेड़वा जे पिपरे कय
अन्नाह् ग्रानह् दुअरवा पर फहरे रात
आजु कहें बायेह् ना दहिनेह् लेइये ओठियन
दहिनेह् बानह् दुरूगया क अस रे थान
जकर भाई सोने क सीवलवा वा बन रे व उले (२५५०)
दुइ जून करत ना पुजवाह् लेइ रे बाइ
आजु कहें तवनेह् ना दिनवांह् राम समइया
देखि केनि अहिरह् ना भुरूकुस रिसि में भइनंऽ
नात ऊत ताकत मलकियाह् बाइ उघारी
ऊह भाई संचेह् गूंगउरीय साधि रे लेहलेन
महरिन एहर ओहरवा जे वाइं ए रंगत
दुल्लर तनिकउ ना मऽलक बाइ ए फेरत
ओहि दिन बोललि ना धनवां बाइ ए महरीन
मइयाह् सुनबह् सुबच्चन हो हमाऽरय
कइसन गूगई ना बरवा तूय बरेखलऽ (२५६०)

मंजरी के गयल करमवा बाइ रे जऽरी
भइया जे अइसन मंजरिया जे भर रे रहलीं
काटि केन देतह् ना सोनवां में खहि रे राय
आजु कहैं कइ दिन बिटियवा जे हमरे जीहइं
कइ दिन इहे अंगुरी क बतइहंइ देख रे सान
एतना जे कहति ना धनवां जे बाइ ए महरीन
भइयाह् बोलत सुबच्चन लेइ रे बाय
आजु कहैं सुनबेह् बहीनियां जे मोर रे महरीन
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
जउने घड़ी नागर गाउरवा जे हम रे गइलीं (२५७०)
अउ बर लेहली ना हमहूँय र बरेख
जइसेह् पिंजड़ाह् में सुगवा जे पढ़इ रे ओठिन
तइसइ बोलइ ना बरवा जे सीता रे राम
आजु कहैं अबतइ अगोरिया में का ए भयनऽ
आजु भाई मंजरी क करमवा जे जरि रे जाय
आजु कहैं सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
बोलति बाड़इ ना धनवांह् ओनकर रे सासू
आजु भाई अइसइं ना रोटिया क रहतंई खरचा
आजु कहैं सुनबेह् बिटियवाह् मोरि अनुपिया
आपन सेनुर काजरवा जे कइये लेबे (२५८०)
रतनीय लेवेह् घंघरिया तुंय पहीरी
आजु भाई नचबेह् कारगहीय लेइये नाचो
बिटियाह् कतहूंय ना नचिया नाचत जायऽ
जाइ केनि मारह् दुलेरूवाह् आगे रे तालऽ
ओनकेह् बऽरीय खूदुकवा जे गलवा में
दुल्लर बोलतह् ना हमरउ रे दामादऽ
ओहि घरी सेनूर काजरवा में धियवा जे कइले
बत्तीस ले लेसि ना अमरन आपन बनाई
नाचइ लागलि करगहीय लेइ नाची
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कय (२५९०)
अनूपीय नाचत नाचतवा थकि रे गइलीं
ना त अहीर ताकत मलकवा बाइ उघारी
ओही घड़ी जोदलि ना ससुआ बाइ रे महरीन
बोलत बानीय ना बोलिया रे कुबोलऽ
आजु भाई अइसइ ना रोटिया क रहतइं खरखर

गउरा में रहतंह् ना बरवा रे बूढ़ाऽतय
ओहि घरी बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
सासूय मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु कहैं अइसइ ना रोटिया क रहतिउ खरखर
अइसिह् किल्लह् बोलवले बा रति रे वार (२६००)
आजु कहैं सतयेंह् ना जनमलि पेट रे पोंछनी
तब हम देलह् खाबरियाह् रे लगाय
आजु भाई तोहरेह् नअरवांह् चढ़ि रे अइनी
मेहनाह् मारति बाड़िय ना बड़ रे यार
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
ओहि जेउ नागर अगोरियाह् कइ ए हाऽल
एतना ज मूनति ना धनवांह् बाइ अनुपिया
महरिन हंसलि थपोरियाह् रे लगाई
तब फेरि बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
सामुय मनबह् ना अम्माह् रे हमाऽर (२६१०)
आजु हम जीयत बढ़इया के जउं रे पाई
अउ दुइ भागेह् देईत ना ढांलि रे याई
आजु जतन धनई ना पुंजिया रे हमारऽ
ऊ लिखि देलेस ना मुगियाह् रे उरेहय
आजु कहैं मड्याह् बाबिलवा जे दुनों जुटाइ कऽ
आजु भाई एकइ खटियवा पर देले सुताय
आजु भाई देखलीं ना हमहूंव ओकर चलित्तर
गोस्साह् बाढ़लि सरीखा में मोरे रे बाय
जउने हम जीयतेह् बढ़इया के जउंर देखे
अउ दुइ भागेह् देइति ना ढोंढ़ि रे याय (२६२०)
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अउ फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ ए महरीन
अनुपी मनबेह् भतीजिन रे हमाऽर
इन्हें भाई गादीय गीरिदवाह् रे लगइबे
सोनवां क देबेह् ना मचवांह् रे डसाई
गदियाह् लेबेह् ना ओठियन रे लगाई
दुल्लर के ले जोह् पलंगिया रे चढ़ाई
उहवां पर सुतिहंइ ना दुलरूय रे दमादय
ओहि घरी आगेह् ना अगवां जाइ अनूपिया
पिछवांह् रेंगल ना लोरिका बाइ रे जाऽतय (२६३०)

एकदम भितरीय कोहबरे हलि रे गयनऽ
जहवां पर लागलि सेजरिया लेइ ए बानी
अनुपी देलेसि सेजरियां बई रे ठाई
अपने नीकलि भईलि ना मयरे दानय
ओहि घरी सूनह् ना हलिया मंजरी कऽ
आपन सोरहउ सींगारवा करे रे लागल
बतिसउ लेहलेसि ना आभरन रे बनाई
ओही घड़ी देखइ दरपनवां लेइ कऽ मूंहऽइ

मंजरी द्वारा लोरिक की आरती उतारा जाना—पति के मारे जाने की आशंका से उसका दुःखी होना—लोरिक द्वारा मंजरी को आश्वासन

जइसे भाई ऊगलि दूइजिया बइ रे चाऽन
हथवा में ले लइ आरतिया रे पाराती (२६४०)
एकदम छमकति ना धियवा बाइ रे जाती
एकदम जाइ कह् पलकिया किहूं रे ठाढ
अइयाह् ले लेसि ना खरवा रे उतारी
आजु पंचमेवाह् ना लेले बाइ रे हाथे
उय भाई खाइकह् पीवतवा बाइ रे जऽलऽ
ओहि घरी दुन्नोह ना जोडियाह् ओहि रे बइठल
मंजरी के लेलेसि चेचुरवा जे बई रे ठाय
आजु भाई एकदम ना मजरी के बाइ सुतउले
एक बरे अपनेह् ना मूतल देख रे बाय
ओहि घरी चुल्लीय ना कुलवा बा कठईत कऽ (२६५०)
हथवा गीरल मंजरिया पर रे बाय
ओही घरी गीदरि बीटियवा बा महरे कऽय
जेकर भाई दावन मंजरिया जे बाड़ रे नाव
सइंयाह् तोहरइ ना छोड़िक जे आनकर होबय
काइ तुय देहियां करलह् छूत बित्तार
आजु कहैं पुरुबई ना कउवा जे रोर रे देइहंइ
सूरज डूबतइ ना लोहवा जे लगि रे जाय
जवने घड़ी देहियाहं ना छुतिहा तोर रे होइहंऽ
पिंड छोड़ि के भगिहंइ दुरुगवा जे देखु रे माय
ओहि घड़ी तवनेह् ना दिनवांह् राम समइया (२६६०)
किह फेरि ओहुय समइयाह् कइ रे हालऽ

ओहि घड़ी बोलति ना धियवा बा महरे कऽ
जेकर भाई दावन मंजरियाह् बाइ रे नावं
सइयांह् तोहरइ ना छोड के जे आन क ना होबइ
आजु कहें बिचवांह् धरह् ना तर रे वाऽरऽ
एक बरे तूंहइ करह् ना कवि रे लासय
एक बरे हमहूंय करब ना कवि रे लासऽ
आजु कहें भइयाह् बहिनियांह् के नतइयां
आजु फेर सूताह् पलंगिया पर लेल रे कार
ओहि घडी दूनोंह् ना जोडियाह् सुति र गइंनऽ (२६७०)
अहीरे के लागलि नीदरियाह् देख रे वानी
उठि कनि बइठल ना धियवा वा महरे कऽ
देखत बाड़य आहीरवाह् कऽ सरुपऽ
ऊय भाई दांतनि आंगुरिया रे चबानी
आजु कहें हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलाऽर
आजु कहें हमरेह् जूठइयाह् केनि रे करने
जिनकर अइसन ना ललवाह् जूझि रे जइहूंय
मइयाह् खाइकह् कनियवा जे मरि र जइहंऽ
दिनवाह् दिनकेह् लीखीय जाई अप रे राधय (२६८०)
ओहि घरी मुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
देखति बाडह् अहीरवा के देखऽ सरूपय
ओहि घरी हहरल ठोकति बाह् तक रे दीरऽ
आजु बाबू कवनेह् ना जतवा के खइले पीसल
कवनेह् पीयलेन सागरवा कइ रे नीरऽ
मंजरी के कवनेह् खटियवा लेइ सुतउलेन
एन्हें एड़ल खटियवा कइ रे बाधऽ
आजु कहें हमरेह् जूठहियाह् केनि रे करने
इय बीर आलर ना तेजलेनि रे परान
एतना सोचत ना सोचत रे मंजरिया (२६९०)
नाहि फेरि रोदन ना कइले बा बरि रे यार
आजु कहें मंजरीय ना केनिय ना रोइबवा
अहीरा क भीजिय गईलि बा दुल रे हाइ
ओहि घरी उचटलि ना नीदिया बा अहीरे कऽय
सिगबिग लागति बदनियांह् देख रे बानी

तब फेरि बोलल ना बतिया बा लरमैं से
जवने दिन छोड़ल ना नऽगर हम गउरवा
बुजरीन बन्हलीय ना खतिया जे जोरीयाई
बिचवांह् कवनि ना खतिया जे झरि रे अइनी
चूवति बाड़इ महलियाह् लेइ ए फोरी (२७००)
आजु कहँ सासुर महलवा जे दुसमन भयनऽ
टूटहीय छवलेह् मड़इया जे लेइ रे बाय
ओहि घड़ी बोलिल ना धियवा बा लेइये मांजरि
सइंया तूं मनवह् कहनवांह् रे हमार
तुयं जवने दीनई गउरवा जे छोड़िए दिहलऽ
अब तूय बन्हलह् ना खटिया जे बेरि रे आय
सइयांह् एक्कउ ना खतिया जे नाहिनी छूटल
नात हमार बाबिल ना टुटहाजे घर रे छवले न
नात हमार बाबिल ना टुटहाजे घर रे छवले न (पुन०)
ना फेरि चूवत छातरवा जे बाड़इ रे फोर (२७१०)
आजु कहँ हमरेह् ना केनीय रे रोईबवा
अब तोहार भीजिय गईलि बा दुलरे हाथ
एतना जेउ सूनई अहीरवा जे बीर रे लोरिका
हथवा में ले लह् बीजुलिया जे तर रे वार
बुजरोह् लंगड ना लुजवा जे हम्मडं रे देखल्या
के फेरि देखल्यह् पड़बवा में हमरे खोरि
के घरे धनई ना पुंजिया जे कम रे सुनल्या
के घरे सासुय ननदियाह् ना सबेर
आजु तुय कवनेह् ना गुनवाह् बेड रे गुनवा
बियहीय रोवलह् नीवइयांह् सारि रे रात (२७२०)
फिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
मंजरीय बोललि लारमवांह् कइ ए बोलऽ
आजु तुयं सइयांह् ना मुनिलाह् सुख रे नन्नन
सेनुर मनवह् काहनवांह् रे हमाऽरय
जवने घरी बिहनाह् ना होइहइं रे भूल्हुर
पुरूबई देहंई कउवाह् देख रे रोरय
जवने घड़ी लागिय ना लोहवाह् रे घटउना
दुइ हाथ चलीय अगोरिया में तर रे वार
तब फेरि बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका
बियही तें मनबेह् काहनवां रे हमाऽर (२७३०)

हम भाई टीकल गउरवाँ रहलीं रे गऽयें
सुनलीं जे बल्लीय ना सुबवा बाइ अगोरियाँ
ओनकर खोजले जोड़ियवा नाहि रे बानऽ
.......कम हम बियहई ना बियहई तोहके आइलीं
ढेर देखे अइलीं हं सुबवा क मनु र साय
कइसउ बिहनह् ना होतइं ना भुरूहरा
दुइ हाथ चलति अगोरिया में तर रे वारि
जे के भाई रामइ ना देतह् तेईये लेतय
छन मेनि जातय झागरवा जे फरि रे याय
.......ना दिनवां राम समइयां (२७४०)

सोलह टोटियों वाले गिलास की डाकू खरफरिया द्वारा चोरी

लोरिकाह् रेंगल ना ओठियन सेनि रे बाऽनऽ
अब चलि गयल जाजिमवा बा जिरवा खेते
जाइ केनि वइठल ना पहरा रे अगोरी
तब फेरि सूनह् ना हलिया जेबा महरीन कय
जवन भाई गढ़लि गीलसिया बा सोनवां कय
पेनिया में सोरह ना डोंटवाह् बा उरेहय
ऊ भाई पीयई ना लोगवाह् गउरा कय
मदियाह् पीयई दरुइया लेल र कारी
पीयत पीयत जाजिमवां पर लेटि रे गईनऽ
सवा लाख सूतल बरतियाह् रे अनेरय (२७५०)
ओहि घड़ी बोलल ना बुढ़वा बाइ कठईता
बेटवाह सुनबह् लोरिकवा रे हमाऽर
आज पूरा करह् पहरवा जीरवा पऽर
केहु करि बिस्तर ना होइ जाइ ले समाधी
जिनकर टूटहीय ना लकड़ी चलि रे जइहंऽ
बिहनंह् मगिहइं चढ़नवा केनि रे घोड़ा
जेनकर टुटहीय डंड़इयाँ हटि रे जइहंय
बिहनाह् माँगीय ना ढलिया रे तर रे वाऽर
जेनकर फटहीय कामरिया जे दागि रे जइहंइ
बिहना त मांगीय पुरुबही जे देखा रे राल (२७६०)
आजु कहैं पइबह् ना डंड़वांह् बीर रे लोरिका
पहरांह् करह् बरतिया के घुमि रे घूम
आजु कहैं कवने ना दिनवां राम समइयां

की फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
ओहि घरि उठलि ना ससुवा बाइ रे महरीन
एकदम रेंगल भीतरियांह् चउरा गऽईन
जहवाँ पर बानह् ना चोरवाह् खर रे फरिया
ओहि चोर केनीय ना कइलनि रे बलावा
आजु कहँ सुनलेह् ना चोरवा खर रे फरिया
भइयाह् तें मनबेह् ना काहनवां रे हमाऽर (२७७०)
देसवा में बहुत ना चोरिया जे कइले रे होबऽ
अब चोरी करह् ना एठियन रे हमारऽ
जउ भइया हमरउ ना चोरिया जे कइ लियवतऽ
होहइ कइ देति अगोरिया रे अऽजादय
बइठेंह् खातह् पुहुतियाह् दुइ रे चारी
ओही घरी आगेहं ना अगवांह् रेंगले रे महरीन
पिछवाह् रेंगल न चोरवा बा चलि रे जाऽनय
जाइकनि आंगनेह् ना महराह् के बइठऽनऽ
महरिन कहति बा बतियाह् समुरं झाई
देख भइया सोने क गिलसिया जे बाई रे गहीर (२७८०)
सवा लाख पीयत बरतियाह् लेइ रे बानीं
कहवां पर रक्खलि गीलसिया जे देख रे होइहंय
जवन भइया हमरेह ना हथवां जे आनि कऽ देतय
तोहई जिनगीय आजदवा जे-कउ रे देब
एतना जे कहति ना धनवां जे बाइ ए महरीन
ऊय चोर रंगल ना जीरवा पर चलि रे जाय
जहाँ सवा लाखइ बारातिया जे अहीर कय
सूतल बानह् न जरवांह् रे बेजार
आजु कहें लोरिकाह् के जंघवा पर बाट गीलसिया
लोरिकाह् पीयई ना उहऊ रे उठाय (२७९०)
आजु कहँ पीयइना मदिलवा जे बीर रे लोरिका
फेरि भाई जंघवा पर गिलसिया जे रखि रे देइ
उहवां से देखि कह् ना चोरवा जे फेरि रे लवटत
चलि गयल महराह् अहीरवा के देखऽ रे घर
आजु भुंइ ना सइना अगने से बाइ रे खानत
तरे तरे आयल ना बाहर रे नीकाल
जवने घरी आइ कह् जाजिमवाह् पर रे गइनऽ
भितरीह बोलत धरतियाह् मेंनि रे बाय

आजु कहैं बाड़िय ना मनियांह् मोरि भगउती
तनी एक चढ़ीय नजरिया पर हमरे जा (२८००)
कहवां पर बाड़इ ना सोनवांह् कइ गिलसिया
हमे तुयं देतिउ ना कइय पहि रे चान
ओही घरी मनियाहं भगउती जे चढ़ि रे गइनीं
चोरवाह् ताकइ ना अंखियाह् रे गुरेर
लोरिका के पलथी पर गीलसिया जे बाड़ए लवकल
उय भाई हलल दुअरवा मेनि रे बाय
जाइ केनि अगवांह् गीलसियाह् केनि रे कटलेन
आजु वेध कइलेह् जाजिमवा पर रे बाय
लोरिका के लागति नीदरिया बा पल्थीय पर
अहिरा झपत बइठलेंह् लेइ रे बाय (२८१०)
कब सेनि निकललेस ना हथवां लेइ ये ओठियन
ऊय भाई लेह् लेह् गीलसिया रे उठाय
एकदम नीकलि मुअनरावा में हलि रे गउयनऽ
जाइ केनि निकलल महरवा के देख रे घर
जाइ केनि महरिन के हथवां देइ गीलसिया
महरीन ले लेह् ना नदिया ओर रे जाय
जवने घरी लेट कह् गीलसिया जे धन रे महरीन
जाइ के फेकलनि सोनइ भदरवाह् केनि रे घाट
उहवां से बहलि गीलसिया जे चलि रे गइलीं
एकदम एही हरदिया जे दइ रे पाल (२८२०)
अब सतवादीय बीटियवा जे महीचन कऽ
ऊ आधि रातिय करतियाह् अस रे नान
जाइ केनि ठटि गईल गीलसिया जे देहियां में
ऊय फेरि ले लेसि लाइकियाह् रे उठाय
एकदम ले लेह् ना घरवा जे चलि रे गइली
ओहि फेरि कच्ची पीतरियाह् रे नीकलि कऽ
ले लेह् गईलि सोनरवाह् केनि रे घऽर
ओहि जाके पितरीय गीलसिया जे बन रे ववलेन
दुन्नोंह् ले लेह् गिलसिया बा चलि रे जात
जाइ केनि बत्तीस ना गंउवा के बाई रे कुठिला (२८३०)
जाइ केनि दुन्नोहं गिलसिया जे छोड़ि रे दें
जागल ना मलवाह् बाय लोरिकवा
ओहि घरी सूतल ना धरमी जे बाइ संवरूवा

ओनकेह् लेहलेनि ना ओनहूँ रे जगाई
आजु कहैं सुनबह् ना भइयाह् मोर संवरूवा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽरय
भइयाह् हमरेह् पहरवाह् में चोरी भइनीं
गायब भईलि गिलसियाह् लेइ रे बानी
जवने घरी बिहनांह् ना होइहइं रे भुरूहुरा
आजु भाई मांगइ घरतिया के होइ रे जइहंइ (२८४०)
आजु कहां पाईबि गीलसियाह् देख रे हम्मऽ
कहि हइं ललचीय ना रहना जे गउरा कऽ
गायब कइलेन गीलसिया रे हमारय

दुर्गा की सहायता पाकर लोरिक द्वारा गिलास की खोज के लिए निकलना

ओहि घड़ी नउवाह् ना गंगिया के दुनों जगउलेन
नउवा तू देखह् बरतिया सवा रे लाखय
हम जात बाड़ीय गीलसियाह् देख रे खोजय
ओहि घड़ी सुमिरई भवनिया माई दुरुगवा
दुरुगाह् भइनीय न परगट रे बहालय
अब धई लेलेनि चिल्होरिया कइ रे रूपय
दुरुगाह् देहलेनि ना डेनवा बइ रे ठाई (२८५०)
आजु कहे बायें ना डेनवा पर बइठल लोरिका
दहिनेह् डेना संवरूयाह् बाइ रे माल
ऊहवां से उड़लि ना गइयाह् बा दुरूगवा
अब लेई गईलि ईनरवा पर सूर रे धाम
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
उहां सेनि ऊगल चनरमाह् जर जराइ कऽ
दूनों भाई गयनह् ना ओनहूँ पर लपटी
ओन्हे भाई बन्हलेनि मुसुकियाह् देख रे फेरी
ओहि घरी रोवइं देवतवाह् इह चनरमा
पटकत बानह् इनरवाह पुर कपाऽर (२८६०)
अहिरूय हमरेह् पहरवां में चोरी अइलीं
नाहीं एतना हमहूंय जतनवां जे नाहीं करीं
अब तोहें देईत ना चोरियाह् रे बताई
ऊहई ऊगल आवत बा सुक रे देवता
ऊहई तोहें देइहंइ ना चोरियाह् रे बताइ

ओनकर ढीलई बन्हनवा जे कइए दिहलेन
अब फेरि जुटनहं ना घटवा रे अगोरि
तब फेरि उगनह् ना सुक्कर देइ ए देवता
दूनों एहि गयनइ् ना भइयाह् रे लऽपऽटि
ओहि केह् छोड़ि कह् मुसुकिया जे बान्हि रे देहलेन (२८७०)
ऊहई भाई रोवइं देवतवा जे ओहि रे दम्म
ओहि घरी रोवइं देवतवा जे सुक्कर देवता
अहीरू बड़ बड़ जातनवा जे जिनि रे कऽरऽ
आजु नाहि एतनाह् जातनवा जे नारे कऽरीत
तोहार हम दईत ना चोरियाह् रे बताय
हमरेह् पहराह् में चोरिया जे नहि रे भईल
नाहि फेरि देईति ना चोरियाह् रे तोए बताय
ऊगलि आवति ना तरई जे गोबर संईती
तहैं तोहार देइहंइ ना चोरियाह् रे बताय
ओनकर ढीलइ बन्हनवा जे कइये दिहलेन (२८८०)
जाई के दुन्नों बइठइं ना घटवाह् रे अगोरि
जवने घड़ी उगलि तरइया बा गोबर सइंती
दूनों भाई गयनह् ना ओठियन रे लपऽट
ओह घड़ी बान्हि कह् मुसुकिया जे ओन्हें ढकेललेन
डन्नाह् देलेनि ना बहियांह रे चढ़ाय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
किह् भाई ओहूय समइयाह् कइ दे हाल
तरई के बन्हलेन ना दून्नोह् भाई ढकेली
तरईय बकलइ ना चोरियाह् इन रे रासने
आजु कहैं सुनबह् अहीरवा बीर रे लोरिक (२८९०)
सांवर मनबह् काहनवां रे हमाऽर
आजु भाई एतनाह् जातनवा जिनि रे कऽरऽ
तन्नी एक ढीलइ बान्हनवां कइये देत
हम तोहार देबई ना चोरिया रे बताई
ओहि घड़ी ढीलइ बान्हनवां जे कइये देहलेन
तरईय बइठल बानींय ना सम रे तूल
ओहि घड़ी बकलइं तरइया जे गोबर सइंती
बोलति बानीय लारमवां क देख रे बोल
आजु कहैं सूनबह् धरमियाह मोर रे सांवर
लोरिक मनबह् काहनवांह् रे हमार (२९००)

जवन तोहार सासुय ना महरिन हुइँ रे ओठियन
चलि गइनीं गउवांह् चउरवा लेइ रे जाय
आजु कहँ भीतरीय ना टोलवा जे चोर खरफरिया
ऊहे लेइ अइलींय ना ओनहूँ रे बलाय
ऊहे भाई मोकाह् ना देखलसि गिलसिया कऽ
ओनकेह अंगनेह् खनवलेसि भुइं रे साऽर
खनत खनत ना जिरवा पर चलि रे गऽयनऽ
अब फेरि जाहंह लोरिकवा जे रहलऽ तूं बइठल
तोहरेह् जंघियई पर रहलींय रे गिलाऽस
ओहि घरी चोरवाह् ना अगवांह काटि रे देहलेस (२८१०)
अउ फेरि लेइ गयल गीलसिया रे नीकाल
तड़तड़ भागल ना चोरवा जे खर रे फरिया
जाके गिलास देहलेसि ना सासु के तोहरे रे हांथ
सामुय फेंकीय ना सोनवां में देलेनि गीलसिया
ऊहे भाई बहलि हरदिया जे चलि रे जायं
आजु भकसालीय बीटियवा बा महिचन कय
ऊह आधी रातिय करति बाह् अस रे नान
ओनके देहियांह् गिलसिया जे फेकि रे गइली
उय भाई हांथेह् गिलसिया जे लेइ रे ले
घरवांह् कच्चीय पीतरिया जे बाइ रे लिहले (२८२०)
अब चलि गईलि सोनरवाह् केनि दूकान
आजु भाई ओहीय ना रूहवाह् जाइ गिलसिया
पीतरी क देलेसि गीलसियाह् बन रे वाइ
उय भाई दुन्नोह् गीलसिया जे तई रे या रअ
लेइ गईलि अपनेह् ना घरवां दर रे बार
ओनकर बत्तीस ना गोड़वा क बाइ रे कुठिला
ओहि मेनि देलेह् गीलसियाह् रे लगाइ
आजु तुय हमरउ जातनवां जे जिनि रे कऽरऽ
चलि जाह तूहंउ हरदिया जे एहि रे पाल
आजु कहँ सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय (२८३०)
ओनकर ढीलइ बान्हनवा जे कइये देहलेन
तरई रेंगल पछिमुवां बा चलि रे जातय
अपनेह् उतरि ना अयनह् लेइये एठियन
सुमिरत बाह् दुरूगवाह् पुज रे मान
दुरूगह् तोहरेह् ना बलवांह् बउ रे सइयां

दवरीह् धारून ना देसवाह् ले खंगारऽ
मइयाजे अइसइं ना चितवाह् पट रे कइलऽ
एहि मह हानीय ना पहुँचीय रे हमाऽर
तनी एक धरतिउ ना रूपवा जे चिल्हिया कऽय
पट देनी देबह् ना जिरवां जे हमें बताय (२९४०)
ओहि घरी जिरवांह् के तरवां बांय ये चूवल
अब फेरि देखह् ना हलियाह् रे हवाल
ओहि घरी दून्नोंह ना भइया ज उठि क ऽ टहरयं
अब फेरि देखत ना हलिया जे बांड़ रे चाल
गंगिया ते करेह् पाहरवा जे एही रे ठियां
सवा लाख सूतति बरतिया जे देखु रे बाय
हम जात बाड़ीय ना पलियाह् रे हरदियाँ
ओहि ठिन गईलि गीलसिया जे मोर रे बाइ
आजु कहैं खोलत बाकसवा जे बा मलरेसांवर
आजु भाई काढ़त दूमलवा जे लेइ रे बाय (२९५०)
आजु काढ़ि देहलेस दूसलवा जे लेइ रे आपन
जेमें भाई हीराह् ना मोतिया क बान रे गोंट
उय भाई बिच्चेह् दूसलवा जे फारि रे देहलेन
आधाह् देलेनि लोरिकवाह् केनि रे हाथ
बिचवांह् फारि फारि गूदरिया जे डारि रे लेहलेन

लोरिक और साँवर का योगी वेश धारण करना—गिलास की प्राप्ति

सूतल रहनह् ना चनियां सब रे लोग
सांवर सरंगीय ना हथवां में बाय उठवले
लोरिकाह् लेइलेह् खंजड़िया रे उठाय
उहवां से दून्नोह् ना भइया जे चलि रे गयनय
अब फेरि आधीय ना रतिबाह् निच रे लाय (२९६०)
जाइ केनि हरदीय ना केनी पांन रे घटवां
दून्नोह् कइलेन ना जोगवाह् रे बनाय
जोगियाह् गावइं ना गीतिया जे मउजे में
अउ ओहि गईलि हरदिया जे देहु रे पाल
आजु ओहि गईलि बिटियवा जे महिचन कय
उय भाई टांगलि बा धोतिया जे बंसवा पर
हथवा में ले लेह् हरदियांह् चलि रे जाय

आजु कहँ हरदीय ना केनीय पनि रे घटवां
दूनो जोगी गावत मउजवा में बांड़ऽ रे गीत
ओहि घड़ी बोललि ना धियवा जे महीचन कय (२९७०)
बाबा सूनबह् गोसइयांह् मोरि रे बात
केतनाह् दीनइ ना भरवां जे घूमि क ऽ मंगलऽ
अब हम देबह् सऽरेखवांह् रे लगाय
ओकरे से अद्धिक ना हमहूँ घरे रे देबय
चलि के दुअरा पर बईठि मउजवा गाव रे गीत
जवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
बईठि गावत मउजवा कबाड़ं ऽ रे गीतऽ
ओहि घरी हरदीय ना मोहि गईल रे म ऽ हरिया
आजु मोहि गईलि बिटियवा महिचन कय
बाबा मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (२९८०)
जोगिया कवन ना नसवा बाबा रे खालऽ
तवन नसा देईंय ना हमहूंय रे मंगाई
तब फेरि बोलई ना जोगियाह् मल रे सांवर
अउ फेरि लोरिक हूंकरियाह् बाइ रे देतऽ
बच्चाह् गांजा तमखुइया जे छोड़ि रे देहलेन
जब सेनि कइलींय ना सातउ हम रे धामऽ
खालिय अवसर ना एक्कइ मत रे बानी
जउन भाइ भठियाह् दरुइया बाइ रे खातऽ
उहइ नसा हमहींय ना बाड़ीय दुनों रे पीयत
बाकि फेरि कइलीय ना तीरथ बड़ रे वाऽर (२९९०)
जेतनाह् अत्तह् ना पतवाह् कुलि रे रहनऽ
कलुवाह् देहलींय ना रूपवाह् सुन से आजऽ
सब संकलप ना दनवां पर धइ ए देहली
एकउ नाहीं रखलींय ना बरतन रे बनाई
खाली एक बर्तन ना सोनवा क बाई रे छूटल
बचवाह् सोनें क गीलसिया जे जब रे रही हूयं
तब हम पीयब ना मदवाह् रे तोहार
एतना जे सूनति बीटियवा जे बा महीचन कऽ
आपन हूलिल बखरिया में चलि रे जाय
जाइ केनि मारति काथरियाह् लेइ रे लड़िकी (३०००)
अब हूलि गईलि कुठिलवाह् में नि रे बाय
जाइ केनि पितरी क गीलसिया रे निकलि कऽय

अब लेइ गईलि ना जोगियन के हाथ रे देइ
ओहि घरी देखइं ना जोगियाह् दूनो रे भइया
रूह रूह उहइ गीलसिया जे देख रे हव
आजु भाई देखइं ना दुन्नोह् लेई ए ओठियन
लोरिका के भयल छोड़हवा जे तनी रे बाय
आजु कहै धनि धनि ना मइया मोर दुरूगवा
आजु मोर आदीय ना दिनवां क पुज रे मान
तनो एक चढि जा नजरिया जे लेइ रे हमरे (३०१०)
सोनह् पीतरि ना कइ दह् पहि रे चान
ओहि घरी चढ़ि गईलि दुरूगवा जे नजरीय पर
लोरिकाह् ताकत ना अखिया जे बाइ गुरेर
ओहि घड़ी पितरी क बरतनवा जे बाइ रे ठहरल
अहिराह् फेंकत गीलसियाह् देख रे बाय
बचवाह् कवन ना तोहइं देईं सरापऽ
जरि मरि जाख, कोइलवा जे होइ रे जा
आजु जवन हाथे से संकलप कइ ए देहली
तवन पितरी देलह् ना हथवाह् रे छुवाय
आज्र हम सोने क बरतनवा जे तोहसे मंगली (३०२०)
तब तोहार पीईति दरूइया जे लेल रे कार
लड़िकीय फेरीय दोहरइया जे बाइ रे घुसुरल
अब हलि गईलि कुठिलवा ज मय रे दान
जाइ केनि सोने क गीलसिया जे आनि रे देहलेन
जोगियाह् देखइं गीलसियाह् रे उलटि कऽ
ईहइ हवइ गीलसियाह् रे हमार
दूनो भाई पीयइं गीलसिया जे ढारि ढारि मदवा
अखिया पर चढल मूरूखियाह् देख रे बाय
ओहि घड़ी मूनह ना हलिया जे जोगीयन कय
अउ फेरि पटकत सारगिया जे ओहि रे बाय (३०३०)
आज्र भाई खझडिय ना थोरिया फेकि ये देहलेन
अउ धूर झारत मरदवा जे चलि रे जायं
आजु कहै तडकत ना दुन्नोंह जाइं रे भइया
ऊहे भाई डांकत बयालीस जाइं रे हाथ
आजु कहै घरीय ना लिखवा केनि रे भीतर
अब जुटि गयनह् ना जिरवाह् रे खेतार
ओहि घरी बिहनह् ना भयनह् रे भुरूहुरा

पुरुबइ देहलेन कउववाह् देख रे रो रऽ
महरिन सुबचन ना सुबचन बाइ पुकारय
सुबचन दवरल ना भइयाह् बान रे ठाढ़ऽ (३०४०)
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलऽ मोर सुबच्चन
एठियन मनबह् काहनवां रे हमाऽर
जवन भाई साझेंह् गीलसिया गईल बारतियां
आजु भाई पियलेन सकलवा बरि रे यात यं
जाइकेनि मागि कह् गीलसिया लेइ रे अइतय
एतनी बेर पीहइं घरतिहा रे हमारऽ

महरिन को लोरिक द्वारा गिलास लौटाया जाना महर की पत्नी आश्चर्यचकित

ओहि घड़ी रेंगल ना मलवा बाय सुबच्चन
एकदम रेंगल ना जिरवा चलि रे जानऽ
जहवां पर मूतलि बारतिया आहिर कऽ
अगवां रक्खल गीलसिया बाइ रे जाई (३०५०)
ओहि घड़ी बोलल ना मलवा बाय सुबच्चन
कठइत मनबह् ना बढ़वा तुव रे बातऽ
जवन समधी आईलि गीलसिया रहल रे संझवा
अब तोहार पियलेनि बरतिया सवा रे लाखय
एतनी बेर बऽहिन हुकुमिया हमरे देहलेन
आजु भाई बाड़इ गीलसिया कइ रे मांगऽ
एतनी बेर पीहइं गीलसिया लेइ घरतिहा
अब तुव देबह् ना हथवा रे टेकाई
ओहि घड़ी लेइ कह् गीलसिया हाथ रे देहलेन
सुबचन ले लेह् गिलसिया बाइ रे जातय (३०६०)
जाइ केनि देह लेनि ना हथवा महरी के
महरी देखई गीलसिया रे उलऽटी
ऊय भाई छाती ठठवले बाइ रे महरी
ऊह भाई बोलति ना बोलिया रे बनाई
आजु बाबू अइसन अहीरवा जे नाहि रे देखलीं
आजु हम घुम्मीय मुलुकवा जे सवं रे सार
आजु जवन पानीय के बुड़ले जे नाहि रे बचलें
कइसे परगट ना दूसर लेइ ये जात
जवने घरी आधिय ना रतियाह् निच रे लइयां

मंजरीय बोलति लारमवां क बाइ ए बोलऽ (३०७०)
ओहि घरी सूनहू ना सइयांहू सुख रे नन्नन
सेनूर मनबहू काहतवांहू रे हमाऽर
एकठेनि बानहू देवतवाहू रे गोठनियां
उहू भाई बानहू सकतियाहू लेऽ रे दाऽरऽ
चलि के ओनके गोडेहू ना हथवाहू सइयां हो गीरबऽ
चलि केनि मगबहू ना बरवा तू बर रे दाऽनऽ
ओहि घरी बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
बियही तू देवताहू ना देवता का ए कइलऽ
चलि केनि देतिउ देवतवा हमे देखाई
हम ओनके गोडेहू ना हथवा गिरि रे लेईत (३०८०)
ओनसेऽ मागित ना बरवा बर रे दानऽ
एतनाहू सूनई ना धियवा जे महरे कय
आगे आगे रेंगलि ना बानीय ओहि रे दऽम
पछवाहू लोरिक रावारिया जे चलि रे गयनऽ
अब चलि गऽनीय सेवलवा के देख रे पास
जहवा पे बानहू देवतवाहू सिव रे संकर
महदेव के गऽनीय सिवलवा पर निय रे राय
मजरीय जाऽ कहू ना गाड़वा ज बाइ रे गीरल
ओनसेहू मागति ना बरवा जे बर रे दान
आजु भाई माथेहू भभूतिया ज लेइ लगाइ कऽ (३०९०)
ऊह भाई निकलति दुअरियाहू पर रे बाय
आजु कहे मऽयाहू ना सुनिलहू सुख र नन्नन
सेनूर मनवहू काहनवाहू रे हमाऽर
जाइ केनि धरहू ना गोडवाहू मह दव कऽ
ओनसे मागिलहू ना बरवा बर र दान
ओहि दिन रेगल अहीरवा बाइ र लोरिका
जाइ केनि भयल दुअरिया पर रे ठाढ़
आजु कहै मुनबहू ना देवता मह रे देवऽ
जउं तोरे सकतीय मूरतिया मे नि रे होई
अब तुय बोलतहू ना हंसि क रे ठठाई (३१००)
नाहि भाई अइसन ना अइसन रे पथरवा
हमरेहू बहुत गऽउरवा बायं रे गाँव
महादेव गोस्साहू ना जादेहू तू बढ़ई बऽ
इहवा से लेइकहू ना हथवा मे फेकि रे देब

जवने घरी फेंकि देब ना हथवांह्, रे ओठई कऽ
जा के हमरे गिरबह्, गउरवांह्, लेइ रे गाँव
एतना जे कहत ना अहीरा बा बीर रे लोरिका
अउ फेर नाहीं ना महदेउ बाड़ें रे बोलत
ओहि घरी सूरूकि ना फेंकले जे बाइ मीयन वा
अउ दह तग्गीय तानत बाह्, तर रे वार (३११०)
जेकर भाई चारिय आंगरूवा जे बाह रे भयनीं
जेकर ताड़क अकसवा में चलि रे जाय
आजु कहैं निचवांह्, ना मरलेह्, बा दवन्हरा
लवरि गईलि सिवलवा में गुमि रे आय
ओहि घरी हंसलि मूरतिया बा पथरा कय
महदेउ हंसनह्, ना ओठियन रे ठठाय
आजु कहैं जाबेह्, ना जाबे भइया लोरिका
तोर कई देबई अगोरिया में जय रे जीत
एतना ज कहई मूरतिया जे महादेउ कऽ
मंजरीय ठोकति बानीय नाह तक रे दीर (३१२०)
आजु कहैं हो हो ना दइवाह्, मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह्, ना मंझवांह रे लीलार
जब सेनि जनम ना लेहलीं जे हम अगोरी
वड़ दिन कइलीय ना सेउवाह्, रे बनाय
खाली एन्हें दूधे ना घिउवा में नह रे ववलीं
कबो नाही बोललि मूरतियाह्, लेइ रे बा
आजु परि गयल ना जोड़ियाह्, सेनि रे काम
पथरा के मूरति ना हसनीय रे खखाय
जवने ना दिनवाह्, राम समइयां
अब फेरि रेंगल ओठिनियां से दूनों रे जान: (३१३०)
अगवांह्, बानीय भवनियांह्, रे बन्सरा
मंजरीय बोललि लारमवा कइ रे बोलऽ
आजु कहैं सइयांह्, ना सुनिलह्, सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह्, ना सिरवा क मउ रे यारऽ
एक ठेनि बानीय भवनियांह रे बन्सरा
ऊय भाई मांगह्, ना ओनहूँ से बर रे दानऽ
ओहि घड़ी अगवांह ना अंगवाह्, रेंगे मंजरिया
पछवांह्, रेंगल लोरिकवा ना चलि रे जातय
जाइकेनि कहत बा बतियाह्, समु रे झाई

आजु कहैं सुनबहू भवनियां मोर रे एठियन (३१४०)
जउ तोहरे सकतोय मूरतिया में देख रे होई
दुइ अच्छर हमसेहू ना उठिया बति रे यावऽ
नाहि हम खींचब ना खंड़िया रे दो गाहें
अब दुरि भागेहू देवइ ना ढोलि रे याई
ओहि घड़ी तब्बउ मूरतिया नाहिं रे बोललि
अब खींचि ले लहू बिजुलिया तर रे वारय
जेनकर ताड़क अकसवा देइ रे देहलेन
लवरि हललि सीवलवा मेंनि रे बाने
ओहि घड़ी हसनींय ना ओठिन रे भगउती
बोलति बानीय लारमवाहू कइ रे बोल (३१५०)
आजु कहैं जाबेहू ना जाबेहू भइया अहीरा
तोर कइ देबइ अगोरिया में जय रे जीत
ओहि घड़ी हंसलि ना धियवा जे महरे कय
जेकर भाई दानव माजरिया जे परल रे नावं
आजु बाबू बहुत ना दिनवा जे गेवा कईलीं
आजु एन्हे दूधेहू ना घिउवा में नह रे ववली
कबो नाही बोललि मूरतिया लेल रे काऽर
आजु परि गयल ना कमवां बा जोड़िया से
पथरा क मूरति ना हंसनीय रे खखाय
आजु कहैं सूनहू ना हलियाहू ओठियन कय (३१६०)
मंजरीय बोललि ना लारमवाहू कइ ए बोल
आजु भाई सइयांहू ना सूनिलहू सुख रे नन्नन
सेनूर मनबहू काहनवांहू रे हमाऽर
आजु कहैं बारह ना मलवाहू राजवा कय
बरहउ बानहू दईयवाहू कई रे लाऽलऽ
ओनकर जोड़ीय ना देसवां जे नाहि रे बानऽ
ऊय मल खातइं डेवढ़िया पर बान रे अमोचय
सब सेनि जब्बर ना मलवा बा भर रे दम्मऽ
ओनकर जोरेहू क थहवा जे नाहि रे बानऽ
उह भाई नालीय ना रखले जे बाइ अखड़वां (३१७०)
दूनों हाथें देलहू परोसवा रे उठाई
ओहि घरी बोलल अहीरवा बोर रे लोरिका
बियहीय नलियाहू ना नलिया का ए कइला
चलि कनि देतिउ ना नलिया हम देखाईं

आजु देखी हमसेह् ना नलिया लेई रे ऊठाई
हमहूँय तानित पोरसवा रे बनाई
आगे आगे रेंगलि ना घियवा ना महरे कय
पिछवांह् रेंगल लोरिकवा बाइ रे जातऽ
जाइ कनि नलियाह् ना किहयां ठाढ़ रे भईलि
सईयांह् ईहइ ना नलिया देख रे हईं (३१८०)
अहिराह् कानोय कनगुरिया डालि रे लिहलेस
नलियाह् वाड़ई पोरसवा घुम रे रावत

अगोरी के राजा मोलागत का मंजरी की डोली छेंकना—लोरिक की मार से राजा के सहायक भाग खड़े हुए

आजु कहैं सुनबेह् ना धनवा मोरि बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवां रे हमाऽर
कहु हम फेंकीय ना नलिया एठियन से
जाइके हमरे गीरइ गउरवा गुज रे रात
नाहिं कहु सोनइ मदरवा में फेंकि रे देईं
अब टूटि जातइ ना नलिया कइ रे नांवऽ
नाहिं कहुँ फेंकि देई ना नलियाह् कीलवा पर
एक लगे गीरइ बुरूदिया महरे राई (३१९०)
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
मंजरीय बोलति लारमवा क वाई रे बोल
सइयांह् बारह ना मलवाह् रजवाह् कऽय
बारहउ बानह् दइयवाह् कइ रे लालऽ
जउने घड़ी कमरतिया अखड़वा में कइये लेनऽ
जाइ केनि मारइ अमिलियांह् में नि रे धक्का
जरिया से होलई अमिलियाह् कइ रे पेड़ऽ
ओहि घड़ी रेंगल मारदवा बा बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल अमिलि याह् किह रे गईनऽ
जाई केनि दहिनाह् आंगुरिया के धइये दबलेन (३२००)
अबहीय मूतल अमिलि याह् देख रे बानीं
एहि जउं नागर अगोरियाह् केनि रे पाऽरऽ
आजु घुमि कइनीय अखड़वाह् लेइये ओठियन
नीकल गयनह् माहरवा के देख रे घऽर
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
गोड़े मूड़े तनलेन चादरिया जे दुनों रे आय

आजु कहैं भइयाह् बहिनियांह् के नतइयां
दुनों मूति गयनह् पलंगिया जे लेल रे कार
तब तक सूनह् ना हलिया जे सूबवा कऽ
झटपट हाथीय हउदवा जे कसि रे गयनऽ (३२१०)
गंआह छूटनह् ना पुडवा रे पचास
आजु फनि गइनीय ना डंड़िया जे मंजरीय कय
आजु भाई छेकलनि माहरवा जे कइ रे घऽर
आजु कहैं बाडेह् सबेरवाह् कइ ए जुनियां
महरीन बानीय ना अंगनाह् रे बटोरत
सूबवाह् बोलत दुअरवाह् मेनि रे बाय
आजु कहै धनवांह् ना सुनि लेह् तुई महरा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
जल्दीअ से मजरीअ के डड़िया में बइ रे ठवती
लेइ जाब अपनेह् ना कीलवा भवं रे नार (३२२०)
ओहि घरी बालाल ना धनवा जे बाइ रे महरी
दरियांह् करई ना बेडयांह् रे जबाब
आजु कहैं सूनबह् ना मुबवाह मार मोलागत
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमार
एतनाह् दीनई बीटियवा जे हमारि रहलीं
आजु भाई बेगानह् बीटियवा जे होइ रे जाय
आजु कहैं जेन्हइं ना दरलेन सिर रे सेनूर
ऊ लेइके मूतल कोहबरे मेनि रे बाय
आजु भाई हमकहं ना जानीय मंजरीय के
तोहई अहीराह् ना दईतह् लेइये जा (३२३०)
आजु कहैं मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
जेह् भाई नागर अगारियाह् कइ रे हाऽल
दुअरा पर उरूदूय में गरियाह् देइं ए मुबवा
महरिन से नाहिन ना बुतवा रे सहाला
एकदम हलत कोहबरे में चलि रे गईलीं
दुनोंह् मूतई चादरियाह् बान रे तानी
जाइ केनि तनलेह् चदरियाह् बानऽ गोड़वा से
अहीराह् ऊठल बानइ नाह् जक रे लाई
जउने घरी देखई दुअरवाह् पर फउदिया
अहिराह् के गोसाह् नजरिया पर चढ़ि रे गइलीं (३२४०)

आजु जिन्हें खींचि कइ मूमुकवा मारि रे देनऽ
अब झरि जानइ् बतिसवांह् देख रे दांतय
केनहूँ के धइ कह् टंगरिया जे फेंकि रे देनऽ
ऊहे भाई लंगड़ ना लुजवा जे होइ रे गयनऽ

जान बचाकर राजा मोलागत का भागना

उहवां से भागल ना रजवाह् बाय मोलागत
गारिय देतई महऽउतेह् केनि रे बाड़ऽय
आजु कहैं सुनबेह् न सरवा तोर मऽहुउता
हथिया के सोझइ ना भलवा पेरि रे देतें
जिउ लेके भागित ना किलवा भइ रे नार
अहिराह् लेलेसि पारनवां रे हमाऽर (३२५०)
उहवां से भागलि ना हथियाह् लेइ रे लीहले
सोंझइं हलि गईलि ना कीलवाह् भँवरे नार
सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
अहिराह् भागल ना ओठियन सेनि रे बानऽ
अपनेह् रेंगल बारतिया में जुटि रे गयनऽ
दुई चारि ऊठल ना संघिया जे रहइं समउरी
सवालाख सुतलइ बारतियाह् देखऽ रे बानी
ओहि घरी हंसइ ना संघियाह् लोग रे भइया
अहिरू मानह् काहनवां रे हमाऽर
आजु कहै सांझेह् ना डललेह् सिरवा सेनूर (३२६०)
आधिय रतियाह् ना कइलह् ससु रे रार
हाथ जोरि के बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
भइयाह् मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
के त हमहीं ना जानीय के ये तुहइँ
सवा लाख जानई बारतिया ना पावे हमार
नाहिं जउन सुनहइँ ना ककवाह् मोर कठईता
धरमीय सुनिहइं ना भइयाह् रे हमार
आजु कहैं गुनहइँ ना गुरुवाह् मोर अजइया
आजु हमार लाजेह् में जिउवा जे परि रे जाय
ओहि घरा बिहनह् ना भयनह् रे भुल्हुरा (३२७०)
पुरुबइ देलेह् कउववाह् बायं रे रोर ऽ
ओहि घरी सुबचन ना सुबचन महरी पुकरलेन
सुबचन रेंगल दुआरवाह् भयमऽ रे ठाढ़

आजु कहैं भइयाह्‌ ना सुनिलह्‌ मोर सुबच्चन
एठियन मनबह्‌ काह्नवां तूंय हमार
आजु भाई जाइ कह्‌ खबरिया द्या बराती
कहि दऽजे गइयाह्‌ भइंसिया क होइं रे भूखल
दइजा चढ़ि जाउँ ना परबत रे पहाऽर
जेन भाई सोनाह्‌ दरबिया कइ हाई भूखल
मड़ये में बान्हउ ना खोलिया रे जेठाई (३२८०)
अब जेने धनइ बीयहिया क होइहंइ रे भूखल
किलवा में देतह्‌ ना डंड़िया अम रे राय
ओहि घड़ी गइयांह्‌ भइंसिया क भुखले संवरू
ऊय चढ़ल जालह्‌ ना गेरुवाह्‌ रे पहार
आजु कहैं सोनाह्‌ दरबिया क भूखल बरतिहा
बान्हत बानह्‌ मड़उवा में झोरि रे आय
आजु कहैं धनइ बीयहिया क भूखल रे लोरिका
किलवा म दलास ना डड़िया रे डंकाय

मंजरी की विदायी

ओहि दिन करत रोदनवांह्‌ बाइ रे मांजर
मइयाह्‌ मनबह्‌ काह्नवांह्‌ रे ह्मार (३२९०)
देख भाई बड़ेह्‌ गबेरवांह्‌ रतियाँ मे
मह्लीय तोहरइ माखनवांह्‌ ह्मरे रोजऽ
आजु कहै आठइ ना नेतवाह्‌ नव ए कनियां
दस ठेनि फूटलि चारूइया जे बाइये रोजऽ
एतना जउ होइहंइ जीयनवा जे गउरा में
सामूय मरिहइं मेहनवांह्‌ बरि रे यारऽ
आजु कहै अइसइ जाबरवा के रह्तिउ बिटिया
साने के लेतईं ना कनिया छोड़ लीयवतीउ
सोनवां क ले लेह्‌ चारूइया जे असि रे ताह्यं
मइयाह्‌ एतनाह्‌ सामनिया जे ह्मं देइ दऽ (३३००)
तब तोर धरब पलकियाह्‌ मेनि रे लातय
मह्रिन नाह्यि हूंकरियाह्‌ बाइ रे भरऽत
मंजरीय करति रोदनवा बा बरिरे याऽर
ओहि घड़ी सूनह्‌ ना ह्लिया सुबचन कऽ
ऊय भाई रेंगल ना ओठियन बाइ रे जातय
आजु कहैं सुनबेह्‌ बहिनियां जे मोरि रे मह्रिन

एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमार
आजु भाई भयनेह् अस घरवा से निकललि जाति बा
बुजरीय कऽवनि चारूइया क बुनि रे यादि
आजु कहै छोडह् ना नेतवा जे कनि रे देईदऽ (३३१०)
भयनेह् धरउ पलकियाह् मेनि रे लात
सिरवा के उतरि जातइना दुख रे भार
आजु भाई ऊहउ दइजवा मे सटिए दहलेन
एकदम कइलेह् पालकिया मे चलि रे जाय
एकदम रेगलि ना ओठियन सेनि भजरिया
अउ फेरि गईलि दुअरवाह् मेनि रे बाय
उहवाह् बइठल ना बापवा जे बाड रे महरा
जाइ के गोड धइकह् रोदनवा जे करति रे बाय
आजु कहैं बाबिल ना सुनिला मोर ए मऽहर
एठियन मनबह् काहनवा रे हमाऽर (३३२०)
आजु तूं जाहा बीयहवा जे कइ रे देलऽ
तह वह नाहीय कऽहलवा जे बाइ रे जात
आजु कहैं लोहइ ऊठनवह् लाह रे बईठल
अहीरह् क लोहा पारनवा जे हउवऽ अधार
कतहूं जे खालेह् ना उचवा जे गाड रे परिहट
ऊहे भाइ जइहइ ना मथवा रे गंवाय
हमकेह परि जाई वीपतिया जें गउरा मे
कइ दिन भोगब रइपवा जे हमरे जाय
ओहि दिन गूनह् ना हलिया जे आठियन कय
के भाई ओहूय ममइयाह कइ रे हाल (३३३०)
मजरीय धरति ना गोडवह् लेद ए मऽहर कऽय
अब नाहिं बालत बाबिलवा जे ओकरे बाय
ओहि घडी मम्माह ना जुटि गयल रे मुबच्चन
दरियाह् करत ना बेडवाह् रे जवाब
आजु बहनोइयाह् ना मुनिलह् त ए महरा
एठियन तं मनबह काहनवाह रे हमार
आजु भाई भयने अस पदारथि निकलल जाति बा
कवनि बाडइ पगरिया क बुनि र याद
आजु तूंय माटि दह् पगरिया जे दऽजा मे
भयनेह् धरउ पलकियाह् मेनि रे लात (३३४०)
उहे भाई धइलेनि ना हउ आठिन रे पगरिया

मंजरी के देलेनि पगरिया जे अपने उठाय
जउने घरी आंचर में पगरिया जे रखिये देहलेन
जे मांह हीराहं ना मोतिया का बाड़ रे गोठ
कउनो जो खाटिय आपदवा जे परि रे जइहंइ
बइठेह् खइहइं पुहुतिया जे दुइ रे चार
एतनाह् लेइ लेइ आगमवां जे धन रे मांजर
जाइकनि वइठल पलकियाह् मेंनि रे बाय
ओहि दिन उठिन से उठली वाय पलकिया
पाँचि परग नीकलि दुअरवा सेनि रे पाहर (३३५०)
फेर छपि गईल पलकिया मय रे दान य
ओहि घड़ी ऊठल मारदवा बीर रे लोरिका
अब हलि गयल भीतरियाँ भय रे दाऽनऽ
जाके भाई रंमडं ना ओठियां बाइ रे डाकत
उठि कनि करत पालगिया पर रे नाऽमऽ
सामू सोनेह ना कोरवा कइ ए धोती
सोनवा के देलेनि करधनियाँ रे लपेटी
ओहि घरी ऊहाँ से आहीरवा चलि रे अयऽनऽ
दुअरा में वइठल सामुरवा वायँ ए माहर
जाइ केनि नीहुरि ना कइले बा पर रे नाऽम (३३६०)
महरा भरिभुख देतइ बाह् असि रे बाद
ओहि घरी पेलइ ना हथवा जे जेबवा में
ऊहे भाई काढत सामनियाँ जे देख रे बाय
आजु कहँ साठीय मोहरवाह् कइ रे हाऽर
दुल्लर के देलेस ना गरवा में पहिरे राय
उहवाँ से रेंगल मारदवा जे लेइये दुअरां
अब जाके भयल पालकिया किह रे ठाढ़
जउने घरी देखइ ना हलियाह् अगोरिया कऽ
आजु भाई बहुत ना गलियाह् बानी देखाऽत
ओहि दिन बोलल आहिरवा जे मनवाँ में (३३७०)
आजु कवने गल्लीय ना खलवा जे ऊँचे धइकऽ
केहरउ से नीकलि ना हमहूँ जे जब रे जाय
आजु कहै सुनीय ना रजवाह् रे मोलागत
सोनवांह् बहुत काउड़ियाह् रे भुलइहइं
ऊहं भाई मरिहइं मेहनवांह् लेल रे कार
संगवाह् रहल अहीरवा जे चोर परइया

खाले ऊंचे लेई गयल ना डंडियाह् रे पराय
आजु कहैं बत्तिसउ काहरवा जे मोर रे सुनऽबऽ
सोझइ किल्लाह् दरेरत चलय रे डडिया
घुमि कनि छिपीय ना जिरवा रे खेतार (३३८०)

मंजरी की डोली उठी—राजा मोलागत का दुःखी होकर रोना

ओहि घडी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
डंडियाह् उठलि मजरिया ना कइ ए गाडऽ
ओहि घडी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
रजवा क लागलि कचहरी लेल रे कारी
जवने घडी पऽरलि नजरिया मूबवा कऽय
उये भाई रोवत रकतवा कइ रे आमय
आजु कहै हो हा ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवा रे लीलाऽरऽ
आजु हम नन्हवे चीरइया रे जीयवली
भेइ कनि देहलीय रऽहिलवा कइ रे दाली (३३९०)
सरवा कहा क चढल ना पर रे देसिया
आजु मोर चिडिया उडवले बाइ रे जातऽ
आजु भाई अइसन मारदवा जेकनि अगोरी
अहिरा के मरतह् ना खेतवा पर बहि र याय
आजु कहैं मरतह् अहीरवा के जीरवा पर
डंडियाह् लेइ अयतह् किलवाह् अमरे राय
आजु कहैं डडियाह् भीतरवाह् लेइ ये जाईन
मजरीय संघे भोगित ना रनि रे वास
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
आजु कहैं लागलि कचहरी बा दर रे बाऽरऽ (३४००)
ओहि घडी मतियाह् मतिरीय बाय रे बोलत
चुगुलाह् बोलइ ना बेडवाह् रे सोनाऽरऽ
आजु कहैं राजाह् ना सुनि लह् मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवाह् तुय हमाऽरऽ
तोहरे पर कवनि मोसीबति एतने परली
रोवत बाडह् ना जरवाह् रे बे जाऽरऽ
आजु कहैं इनकइ फनिगवा केनि ए करने
एतनाह् सहरि बजरियाह् तोर रे बानी
छेंकि केनि कइ देह् सतूववाह् कइ रे नूनऽ

एतना जब कहत ना बतियाह् बाइ मंतिरी (३४१०)
बोलत बानह् ना सूबवाह् ओहि रे दम्मंऽ
आजु कहैं बारह ना मलवा केनि रे ऊपर
आजु सरगानाह् ना मलवा बा भर रे दम्मंऽ
जेकर खोजलेह् जोड़ियवा नाहीं रे बाऽनऽ
एनकेह् भेजि दह् ना जीरवा रे खेतारयऽ
जाइ केनि बातइ अहीरवा के मारि रे देइहंइ
दिनवांह् दिनकइ टूटीय जाइ कल रे कान
आजु कहैं डांड़ीय ना ओठियन से उठरेवइहय
आनि केनि किल्लाह् भोगह् तुंय रनि रे बास
तोहरे पर कवनि मोसीबत एठिने परलीं (३४२०)
सूबवा तूं रोवलह् जरवा देखऽ बेजार

मोलागत के सिपाहियों का भांट के यहाँ जाना—
आधा राज्य पाने के लोभ में बीर भांट लोरिक से लड़ने के लिए उद्यत

कहैं तवने ना दिनवांह् राम समइंया
की फिर ओहूय समइयाह् कइ रे हाल
ओही घरी छूटनह् सीपहिया जे ओठियन से
एकदम रेंगल ना भंटवांह् धरे रे जायं
आजु कहैं भटवांह् ना मलवाह् भर रे दम्म
जेकर खोजलेह् जोड़ीयवा जे नाहीं रे बाय
ओनकर लहूरीय ना जेठरी जे मेहू रे रूवा
घरवांह् चरखा पेवनवां जे रहनीं कातत
अपनेह् रेंगल ना जानह् दर रे बार (३४३०)
अउ फेरि छूटनह् सीपहिया जे सूबवा कय
अउ फेरि सुनबह् ना मलवा तू भर रे दम्मऽ
सूबा तोहरउ चाननियां पर कइलन बलाव
ओहि घरी रेंगल ना मलवा बा भर रे दम्मा
अउ फेरि रेंगल ना गयनऽ ओहि रे ठाढ़
ओहि घड़ी बोलल ना रजवा जे बायं मोलागत
अब मल सुनबह् भर दम्मल रे हमाऽर
देख तोह आधीय ना रजियाह् देवऽ अगोरियां
आधा किल्लाह् देबइ ना भंव रे नार
आधाह् देबइ ना गउवांह् रे घटीहिटा (३४४०)
जवन हईं गोहूँ गोजइयाह् कइ रे खान

आधाह् नोकर चाकरवा रे बांटि रे देबऽ
आधे क होई जा ना हमरई पटि रे दार
बाकी भाई जातई अहीरवा के मारि रे डलऽतऽ
काढ़ि कनि कइ दह् सेतूववाह् कइ रे नोन
मंजरीय क जल्दीय ना डोलवा जे उठ रे आवऽ
लेइ आवऽ किल्लाह् भोगीय नाह रनि रे वास
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवां राम समइयां
मलवाह् सूनत भरदम्मा लेइ रे बानऽ
एकदम लवटल गोरिहियां बाय रे जातऽ (३४५०)
लउड़ीय जेठरीय चारखवा रहंई रे कातत
ओही घरी जूटल ना मलवा देख रे बानऽ
उह मारि देलह् ठाकरवा से देखऽ चरखा
चरखाह् पेवनाह् टूटल ना चिटि रे राई
बुजरीय कवन चरखवा के अब रे कामय
आधेय भइलीय ना हमहूं पटी रे दारय
अब हम पावल ना रजिया रे अगोरी
आधा पाइ गइलीय ना किलवा भवं रे नारय
आधा हाथीय ना घोड़वा रे बंटालय
आधाह् नोकर चाकरवा हुवयं हमाऽरऽ (३४६०)
सरवाह् कवन अहीरवा क बुनि रे यादय
जातई मारब ना खेतवा पर बहि रे आई
एतना ज सूनइ ना लंउड़ीय मेह रे रूवा
दरियांह् बोलति ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु कहैं सइयांह् ना मुनिलऽ तूं मुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलऽ ना सिरवा के मउ रे राय
आजु कहें मरलेह् अहीरवा जे ना मरइहंय
नात उत जरिहंइ आगिनियाह् केगि रे धार
आजु भाई मुहई ना बोलिया बा मिठ रे बोलिया
लोहवा में बाड़इ ना बांकवाह् रे जूझाऽर (३४७०)
अब जेने अहीरे के पईढ़िया में परि रे जइहंय
ओनकर होइहई बीयहिया जे घरे रे रांड़
आजु ना लहुरी बा मेहररूवा
भंटवा ढूकल भरदम्माह् ओठियन से
अब जाइ लेहलेस ना झोंटवाह् रे पकऽड़ी
उपरां से दुइ चारि ना घुसवाह् बाय लगउले

बुजरो तूं मनबह्, काहनवांह्, रे हमाऽर
अब तोहार गउवांह ना घरवांह्, के नवइयाँ
अहिराह्, लागइ भातरवाह्, रे तोहाऽरय
आजु कहैं हमरेह्, अस जाबिर बीरवा के (३४८०)
तवन तूं नीचह्, ना बतियाह्, बति रे यवलू
एतनाह्, कहत ना बतियाह्, लेइये हउवां
अब भंट रेंगल ना मलवा बा चलि रे जात
जउने घड़ी उतरई ना सिढ़ियाह्, लेइये ओठियन
अउ फेरि रेंगल ना जिरवाह्, जाई खेताऽर
जउने घरी परि गईल नजरिया जे लोरिकें कऽय
उय भाई बोलत लारामियाँ क बाड़ रे बोल
आजु कहैं धनवाँ ना सुनि लेह्, मोरि बीयहिया
एठियन मनवेह्, काहनवाँह्, रे हमार
एक ठेंन आवत मारदवा बा कीलवा से (३४९०)
देखु भाई दाईय मुदइया जे देखु रे हउ
आजु पहिले हमई सारेखवा में तोंहि लगउवे
अपने ठन्न में रहबई हम तई रे याऽर
ओहि घरी उलटि ना नेतवाह्, मारे मंजरिया
पंच रंग फेंकति ओहरवा जे लेइ ये बाय
ओहि घड़ी मुड़ियाह्, निकलिया क बाइ रे देखत
दइयाँह्, कहति ना बेड़वाँह्, रे जऽबाब
आजु कहैं सइयाँह्, ना सुनिलऽ सुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलह्, ना सिरवा मउ रे याऽरऽ
अइसेह्, तइसेह्, जीनिगिया बचि रे गइलीं (३५००)
अब नाहिं बांचहंइ जीनिगिया हो तोहाऽर
आजु भाई चऽढ़ल ना मलवा बा भर रे दम्मऽ
जेकर खोजलेंह्, जोड़ीयवा नाहि रे बानऽ
ओहि घड़ी देखह्, ना हलिया जे भंटवा कय
ऊय भाई जूटल पलंकियाह्, किह रे बाय
जाइ कान नीहुरि ना मथवा जे बा नेवरले
लोरिकाह्, भार मुख देतइ बा असि रे बाद
आजु कहैं आखेह्, आमरवा जे भर ले दम्मा
तुय भाई जीयह्, ना लखवाह्, रे बरीस
जइसेह्, बाढ़ई ना पनिया जे गंगिले कऽय (३५१०)
ओइसइ बाढ़इ ना अइया जे भइया तोहार

आजु कहै छोड़ि देबह् ना डंड़िया जे मंजरीय कय
ले जाईं किल्लाह् भोगउबह् रनि रे वास
आजु मोर बूढ़ई ना रजवा बा तिरिया अस
ओन्हे लाग तारून जोइयबाह् कइ रे ख्याल
नाहिं हम मारब ना एठियन तोहें रे अहीरा
खेतवा पर मारब ना हमहूंय जे बरि रे राय
आजु कहैं खालीय ना सोटवा से खिच रे वइबऽ
तोहार भूसाह् भरवाइ देबा हम रे खाल
ओहि घरी बोलल अहीरवा बा लरमें से (३५२०)
मलवाह् सूनह् भरदम्मा रे हमाऽर
कइसन होलई ना सटियाह् साहिले कऽय
हमकेह देबह् न कान्हेलवा जे भरि रे आय
घरवाँह् टुटहीय मड़इया जे लेइ रे बानी
लेइ जाब हमहुँय गउरवा जे अपने घऽर
जाइ कनि समह् ना सोंटहं कर मडइया
सहजे में छोड़ि देब बीयहिया क डोला रे हम
लेइ जाह् किल्लाह् भोगउ नाह रनि रे वास
एतनाह् साँचइ ना बतियाह् पतियायल
भंटवाह् लवटल ना घरवा बा चलि रे जात (३५३०)
जाके घरे हाथे टंगरिया जे बाइ उठउले
चढ़ि गयल गेरूवाह् ना परबत रे पहार
अछा अछा काठइ ना सलिया जे आइले कऽय
उहे भाई बान्हत कन्हेलवाह् बरि रे याऽरऽ
उहे भाई लेइकह् कन्हेलवाह् जे ओठियन से
जाइकनि पटकति पालकियाह् किह रे बाय
आजु कहैं सुनबेह् अहीरवा जे तुवं रे लोरिक
एठियन मनबेह् काहनवाँह् रे हमार
देख भइया तोहरंई काहनवाँ जे हम रे कइलीं
अब तुय करतह् काहनवाँह् रे हमार (३५४०)
अब छोड़ि देतह् ना डंडिया जे मंजरीय कय
लेईं जाईं किल्लाह् भोगउं नाह रनि रे वास
ओतना जउ सूनत अहिरवा बा वीर रे लोरिका
आजु ओसे नाहीय ना गुमवाह् रे सम्हार
जउने घरी डाँकल अहीरवा बा ओठियन से
खींचि केनि मरलेह् मुठुकवा बा बऽरी यार

आजु कहै बाजल मूठुकवा जे मुंहवा में
अब झरि गयल बत्तिमवा जे उनकर रे दांत
आजु कहैं सीजई ना संटियाह् अहीरे कऽय
अंगे अंगे देलेसि बदनिया पर बइ रे ठाय (३५५०)
जेहर जेहर बाजई ना संटियाह् जे अहीरे कऽ
छर छर जानहं ना खूनवांह रे पसार
ओहि घरी गयल ना मलवा जे अकुलाई
अब फेरि देतई दोहइया जे पुनि रे बाइ
आजु कहैं मंजरीय ना लखनाह रे दोहइया
आल्हर गऽयल पारनवांह् रे हमाऽर

लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ होना—मंजरी के हस्तक्षेप से जान बची

ओहि घरी निकललि ना धनवांह् बाई मंजरिया
जाइ कनि धऽति लोरिकवा क करि रे हांव
आजु कहैं बोलइ ना बतिया बा लऽरमें से
सइयांह् मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर (३५६०)
देख भाई तीनीय ना जतिया जे जिनि रे मारऽ
एक तह् बाभन ना भंटवाह् रे कहार
ऽय मोर नान्हंह् क हउवंह् रे जियावन
मरले बहूत परीय नाह् अप रे राध
ओहि घरी जीदल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियाह् कऽहत ना बतिया बा अर रे थाय
आजु कहै सुनबेह् ना धनवांह् मोरि बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमार
बुजरीय छान्हीय पर बछियवा जे चढि रे जइहंऽ
कहाह् हम हेरीय कुकुरवा ज मारी बीलार (३५७०)
⋯⋯ तवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
अहीराह् बोलत लारमवाह् कइ रे बोलऽ
आजु कहै सुनबेह् ना भटवाह् भर रे दम्मा
सरऊय संचेह् धारतिया मे बइठल रे रहबऽ
सूनह् ना हलिया ओठियन कय
अहिराह् तोरई ना बेलवा रे बनाई
अब फेरि ढेपीय संहितवा बाइ रे तोरऽत
आजु भाई भुइयांह् ना देहले बाइ गिराई

अहीराह् उतरल ना बेलवाह् पर से बानऽ
जेतनाह् रहलीय ना चुनिया कई रे बाऽरऽ (३५८०)
ढेपियाह् बान्हऽ ना डोलवा घुम रे राई
जेतनाह् टूटल ना बेलवा बाई रे बाचल
भटवा के ले लह् चादरवा लेइ रे खीचो
ओन्हे भाई बन्हलेस मोटरवा बरि रे याऽर
अउ फेरि देलेसि कापरवा पर उठाई
सरऊय लेलेह् ना बेलवा घरे रे जायऽ
एकदम जाऽयह् बऽखरिया कीलवा मे
नाहिं एक्कऊ डहरेह् ना बेलवा जउ रे फेकबऽय
किल्लाह काटब ना मथवा जे बरि रे यार
आजु भाइ रेगल ना भटवा जे चलि रे जालाऽ (३५९०)
हुलुकत जाला ना मुँहवा से देख र खून
एक्कउ दातई ना मुंहवां मे रहि र गऽयल
रोवत जाल्ह् गीरिहियाँह् लेइ रे आज
ओही घरी लहुरीय ना जेठरीय मह् रे रउवा
दुन्नोह कइलेनि झगरवा जे बरि र यार
आजु ननदोइयाऽ ना हँवह वीर र लारिक
आजु भाई कइलेनि बीददया जे बड रे वार
आजु ऊ कहावई कऽमइया जे देखा रे हमरय
आजु भाई हमरइ ना परिया जे देखऽ र हऽ
ऊहे भाई अपनेह् के झगडाह् लेइ र करऽ (३६००)
तब सेनि आयल ना भटवा जे निय र गाय
ऊहे भाई पटकइ आगनवा मे लेइ गठरिया
ठाढई गीरल खटियवा पर भह र राय
लहुरी लेइकह् बाढनिया रे पहुँचनी
दुइ चार देलेसि बाढनिया जे ऊपर लगाय
ओहि दिदि सुनह् ना तोहऊय लेइ ए लउइ
कहना त मनबह् ना एठियन र हमाऽर
कहलाऽ जे गउवाह ना घरवाह् के नतऽया
अहिरा हवई ना तारऽरउ धिग रे हार
आजु भाई हमरे अस जाविर मलवा के (३६१०)
अब तुय तरेह् करतिया जे बाड़ रे आज
आजु कहँ एकई अहीरवा जे दूर देमिया
हमरे से बरियायइ जाबरवा जे देलऽ रे बनाय

आजु भाई दुन्नो क झगडवा जे फरि रे आयल
ई का भयल ना दमवाह रे तोहार
आजु कहै सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
बोलत बानह् कचहरीय काय ए लोगऽ
आजु भाई सुनबह् मन्तिरीय रे हमाऽर
भटवाह् गयल ना खेतवाह् लेइये गयनऽ
दुन्नोह् जाइकह् सुनहवाह् कइये लेहलेन (३६२०)
पूडाह् लेहलेमि बीदइयाह् जाइये लेइ
चुप्पेह् आइ कह् ना अपने घर रे बईठ न
कुछ नाहि आईलि खर्जियाह् लइ ए आज
ओहि घरी तुरकीय सीपहिया छूटि र गयनऽ
दवरल जानह् ना मलवा केनि रे घऽर
जाइ कनि देखइ ना मलवा कइ रे हाऽल
थर थर कापन सिपहिया ओहि रे दम्म
आजु कहै हो हो ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लिलारऽ
आजु छोड़ि देबेह् नोकरिया सूबवा कऽ (३६३०)
कउनो देसेह् मुलुकुवा चलि रे चली
नाहि अइसे भेजिया रईनिया सेनि रे देइहई
अइ सइ हाइहइ ना दसवा सबही कऽ
एतनाह् हहरत सीपहिया बान रे जातऽ
ओहि घरी रंगल ना भंटवा भऽर रे दम्मा
दुअरा गयनह् न ऊहऊ ले नीकाऽली
ओहि घरी बोलल ना जेठरी लेइ ए बानऽ
आजु कहे सुनबे ना जेठरी मेहररूवा
गंवखा में साटिक फीटिकवा जे धयल रे बाय
आजु तोहें हमरेह् ना हथवा मे देई देबे (३६४०)
सूबवा के देइ देईं ना सपरूत लेइ रे हम
कइसउं बचि जाति जीनिगिया जे एठियन से
एठिन से नीकलि ना भागित कउनो रे राय
बलकुल भीखिय ना मंगिया क रे हम खाईत
अब नाहीं करब मलइयाह् कइ रे काम
ओहि घड़ी रोवत ना रजवा जे बाढ़े मोलागत
फटकत बानह् चाननियां जे पर रे माऽथय
आजु मोर तेजलि ना रजिया जे जालई अगोरी

मंजरीय रानीय तेजलवा बा नाहिं रे जातऽय
आजु भाई नान्हें ना सुगिया जे हम जीयवली (३६५०)
भेइ कनि देहलीय रऽहिलवा क देखऽ रे दालऽ
आजु कहैं काह क चढल बा दूरन् रे देसी
आजु मोर सुगियाह् उड़वले जे बाडय जातय
आजु अइसन नाहीय मरदवा जे केहू अगोरी
खेतवा पर मरतंह् अहीरवा के बहि रे आइ कय
डंड़ियाह् देतह् ना किलवा में अम रे राई
ओहि घड़ी मतियाह् ना मतवा जे ठसे रे मतिरी
चुगुलाह् देलह ना बतिया अर रे थाय

मोलागत का सभी राजाओं के यहाँ सहायता के लिए पत्र लिखना

आजु भाई राजाह् ना मुनिलह् मह रे राजा
एठियन मानह काहनवाह रे हमार (३६६०)
देख भाई मरलेह् अहीरवा जे नाही मरइहऽय
नात अहि जरीय अगिनियाह् केनि रे झार
आजु कहैं सगरिउ ना पल्टनि रे जुटइबा
तब्बइ मारह् अहीरवा के बहि रे आय
आजु कहे चउमुख ना पतियाह् लिखि रे देबऽ
चारू कोने लेबह् ना सुबवा जे यन रे वाय
चारिउ कानेह् ना मूबवाह् बई रे ठइबऽ
आजु भाई जेतनाह् पऽरजवा जे बाड अगोरी
अब तोहार पल्टनि अगोरवा जे बाड तिलगा
सब भाई कई दह् पल्टनियाह् मेनि रे ठाढ (३६७०)
जेतनाह् अगारी क करधन बान रे बानय
रन पर कइ दऽ पल्टनिया मे सब रे ठाढ
आजु कहैं सातइ फेवरवाह् कट रे घोडना
अहीराह् के बिच्चेह् ना कइलह् लेल रे काऽर
आजु कहैं चारिउ ना कोनवा पर सूबा रहिहय
केहूर भागल अहिरवाह् कइ रे पूत
सरवा के छेकिदह् ना मारि दह् जीरवा पर
काढ़ि कनि कइ दह् सेतुववा क ओन्हे नून
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
मतियाह् ठठलेह् मतिरीय लेइ रे बानऽ (३६८०)
सुबवाह् कारह् कागदवाह् लेइये निकालऽ

हथवा में लेनह् कऽलमियाह् मसि रे हाऽनऽ
आजु कहैं लीखई ना पतियाह् चारि रे कोने
पहिलेह् भेंजत ना पतिया बा लेइ रे पछिवां
जाइ कनि नेवतइं ना सुबवाह बाइ बघेलाऽ
अब जेन बांनह् तुपकिया में बरि रे याऽर
दुसरीय पातीय दाखिनवांह् कइ ए लीखऽ
पतियाह् देलेह् दाखिनवां में देव रे राई
आजु भाई नेवतइ ना सूबवाह् रे कोरइया
अब जेन बानह् ना तीरवा मे बरि रे यारऽ (३६९०)
आजु कहैं नेवतइ ना सुबबाह् रे पुरूबहा
अब जेन बानइ ना लोहवा मे बरि रे याऽरय
आजु कहैं उत्तर ना देसवांह् पाती रें गइलीं
रजवाह् नेवतइ ना जहियाह् रक रे सेलाऽ
जेनकर लारह् ना मनवा के गीरइ रे सेलाऽ
अब तइ मरिहइं अहिरवा के बहि रे आंई
आजु कहैं लीखई ना पतियाह् रे बनाई
देख भाई छतिरीय ना जतिया जे जवन रे होईहंय
पतिया में लीखत ना हउवह् रे तीलऽकय
पतियाह् गइलेह् ना बचियाह् कइ रे देखले (३७००)
घरवांह् अन्नइ ना खइहंइ जाइ हरामऽ
पनिया पीहइ रुधुरिया रे समानऽ
जवन भाई खातइ ठाहरियाह् पर रे होइहंऽ
हाथ आई क धोइहंइ अगोरियाह् दई रे पालऽ
आजु मोर ऊजरि न रजियाह् जाई अगोरिया
आजु परदेसीय अहीरवाह् चढ़ि रे अयनऽ
अगोरी मे देत बाह् कोइलवाह रे बोवाई
एतनाह् लीखत ना पतियाह् लेइये सूबवा
अउ फेरि एहीय अगोरिया जे करइ बलाउ
ओहि घड़ी छुटनहं ना सीपहिया जे सूबवा कऽय (३७१०)
आजु फेरि गयनह् अगोरिया मे छिति रे राई
जेतनाह् रहनह् पारजवा जे अगोरी कऽ
जेतनाह् करधन ना बनवाह् रे जेवानऽ
रन पर कऽरत ना सूबवा बा तई रे यारऽ
आजु भाई छेकलेह् ना जोरवा जे अउम खेताऽर
आजु फेरि सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ

आजु छेंकले जातीय फउदिया जे बांड़ रे आजऽ
ओहि घरी मारूय डंकवा बा ठोक रे वउले
रन पर बोललि लाकुड़ियाह् रे जूझार
सिहवाह् कइलेसि गोहरियाह् रे गोहाऽरऽ (३७२०)
फाउदि चढलि ना जीरवाह् जालय खेताऽर
जउने घरी मारेह् फाउदियाह् केनि रे मरने
कहि भाई साईं न सुधिया जे नहि रे बाय
छेंकलेह जालइं ना जिरवा जे खेतवा पर
मंजरीय बोललि लारमदा क बाइ रे बाल
आजु कहैं हो हां ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लिलार
आजु भाई देखह् ना हलिया जे एठियन कऽ
आजु कहैं एकइ फऽनिगवा जे केनि रे करने
एतनीय फाउदि ना कसकलि आवति रे बाय (३७३०)
आजु कहैं चारिय ना कोनवां पर चारि रे मूबा
बिचवांह् बानह् फाउदिया सात रे फेवरा
अहीरे के बीचेह् कइलवा ज बान रे जान
ओहि दिन बोललि ना धियवा जे मऽहरे कय
जेकर दांवन मांजरिया रे परल रे नांव
आजु कहैं सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
सेनूर मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
जउं भाई आखीय ओलतवा जे होइ रे जाबऽ
हमहूंय ले लेह् माहुरवा क बान्ही रे गांठ
जउं भरि आंखिय ना अइवा जे मइयां भयन ऽ (३७४०)
हमहूंय खाइ कह् जाहरवा जे मरि रे जाब
अउ भाई अहीरवाह् बीर रे लोरीक
आजु बाबू मारेह् फउदियाह् कनि रे मरले
कइसेह् लागीय ठेकनवा रे हमाऽरय
का जानी कवनेह् ना ओरियांह् घुमि रे जाबय
बियहीय खाइ क जहरवा जे मरि रे जइहय
आजु मोर बीथह् लड़इया होई रे जाई
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका
बियहीय तूं मनबह् काहनवां रे हमाऽर
आगे कहांह् जाहरवा कइ ए गांठो (३७५०)
आजु तूंय हमईं ना जहर रे देखइब्या

दुनों मीला खाई जाहुरवा ज मरि रे जाऽई
दिनवांह् दिनकइ टूटीय जाई कल रे कांन
सांचई गऽईलि मंजरिया जे पति रे याई
खुंटवा से काढ़ति माहुरवा जे पुनि रे बाय
ओहि घड़ी पवलेसि माहुरवा जे बीर रे लोरिका
अब झुकि के धइलेसि मांहुरवा जे कइ गांठ
उहे भाई पल्लेह् से कढले जे बा कऽटईया
अब फेर कटलेह् माहुरवाह् रे सहेत
आजु कहै कूचुये माहुरवा जे छोड़िये लीहले (३७६०)
अउ फेरि देलेसि ना खंडिया जे महु रे राय
कुछु माहूर देलेसि ना नदियाह् रे पवारी
मंगर मछरीय मारत बां अउ रे जायं
कुछु भाई देलेसि माहुरवा जे सऽरगे में
अउ फेरि लालई पीयरवा जे होइ रे जाय
जेतनाह् गीरल धरतियाह् मेनि माहुरवा
होई गयल बाड़इ कोचीलवाह् कइ रे पेड़
ओहि घड़ी तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
की फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
ओहि घरी रोवई ना धनवांह् रे मंजरिया (३७७०)
पटकति बानीय पलकियांह् रे कपाऽर
आजु कहैं सइयांह् ना मुनिलह् सुख रे नयन
एहि छिन मनबह् काहनवाह् तुयं हमारऽ
आजु भाई एकइ आगमवां जे माहूर रे रहनऽ
तवन मोर देलह् आगमियांह् तुयं रे टारी
कवनों जो नावइ दागरवा जे होइ रे जइहंऽ
पापयाह् लेइ जाई ना कोलवा चढ रे वाई
आजु भाई भोगीय ना किलवा में रनि रे वासय
आजु हमार धीरिग जीनिगिया जे सइया रे होइहंय
साचइ देत बाड़ ना हलियाह् रे बताई (३७८०)
ओहि घड़ी छेंकलेह् फाउदिया बा चारू ओर
लारिकाह् सुमिरत दुरूगवाह् बाई रे माई
दुरुगाह् तोहरे ना बलवांह् बउ रे सइयां
चढ़ली जे दारून ना देसवांह् रे खंगारय
मंइयाह् ना पिंडवाह् ना छोड़ि के तूं जो भगबऽ

मथवाह् जइहंई अगोरिया मोर गवाई
भइया तू ईहई रइनिया जे हमई जीतइबऽ
आजु तोहार करब ना सेवन पूडा बनाई
आजु कहै खसीय ना भेडवा क कवन गन्तीय
भइसाह् काटब ना पुडवाह् रे पचासय (३७९०)
आजु सवा लाखइ ना मनवा कइ हूमादिया
दुरूगाह् करब असथनवाह् लेल रे कार
आजु तुय परगट दुरूगवा ज माई र होतूऽ
दूइ हाथ चलति अगोरिया मे तर रे वार

दुर्गा की सहायता—समस्त सेनाओं की लोरिक के हाथ पराजय

ओहि घडी परगटि दुरूगवा जे माई रे भइली
छमकति बानीय दाहिनवाह् लेइ रे बाय
तब तनी भरत ना पेटवा जे अहीरे कय
फेकत बाडइ बीजुलिया जे तर र वार
जउने घरी बिनिकत ना जालइ तर र वरिया
अउ फेरि जालइ ना मन सन र कारी (३८००)
तब तक सूनह् ना हलिया जे दुरूगा कऽय
अब फेरि धइलेह् चिल्होरिया क जाली र रूप
जाइ कनि धइलेसि चगुलवा मे तर रे वरिया
जाइ कनि देतीय लारिकवा क बानी रे हाथ
आजु कहै थमवे बरूववाह् फुल रे झरूवा
तोर कई देबई अगोरिया मे जय रे जीत
ओहि घडी कट कट ना कट कट तीर रे चलनऽ
सन सन सन मन करति बाय तर रे वार
गानिया बानीय ना घोइयाह् रे भरावत
गोलवाह् गमकइ भरहिया रे भराय (३८१०)
ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगा
परगट भईलि ना जीरवा जे बाड खेताऽर
अहीरे के ऊपर अचरवा जे बा फइलवले
गीरत बानह् चीपउरा होइ रे जाय
आजु भाई गिरिकह् आचरवाह् मेनि रे गालिया
ऊहे भाई चूवलि धारतियाह् मेनि रे बाय
दुरूगाह् अइसोय सकतिया जे बाडी भीडवले
अउ फेरि गउयल माहरवाह् दख र फेम्म

आजु कहै तिरियाह् बरूदिया मे लगउलेन
तोपियाह् गइलीय ना ओठियन मेंह रे राय (३८२०)
ना त भाई गोलीय बारूदिया जे बाई रे चालत
ना त कुछु होतई रईनियांह् पर रे बाय
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् करई ना बेड़वांह् रे जऽबाब
आजु कहैं सुनबह् ना भइयाह् तूं ए सूवा
एठियन मनबह् काहनयांह् रे हमार
देख तोहार पक्कीय आवारिया जे थम्हि रे लेहलीं
अब कचलोइयाह् ना थम्हबह् रे हमाऽर
ओहि घरी सूरूकि ना फेंकले जे बाट मीयनवां
अउ दहतग्गीय तानत बाह् तर रे बाऽर (३८३०)
जेकर चारिय अंगुरवा ज बाह रे भइलीं
जेकर भाई तड़ग आकसवा बा चलि रे जात
आजु कहै नीचवाह् ना मरले जे बा दवन्हरा
पोरसन गइलीय लावरिया जे गुंव रे आय
आजु फिरि गईलि मालकिया जे मूबवन कऽ
खंड़ियाह् गइलीय गऽरदनेह् रे बिसाय
आजु कहैं पूरूब काटतवा जे पच्छु रे गयना
अउ फेरि पछुवांह दाखनवा ज घुमि रे जाय
जइसेह् काटइ कोईरिया जे कोइ रे रड़वा
ओइसइ काटत अहीरवा क बाई रे पूत (३८४०)
आजु कहै मारेह् ना लतियाह् फउदं में
खूनवां के चालल ना धरवा ज लेल रे कार
आजु कहैं मगरीय ना फेनवा जे लोहुवा पानी
बहल जालह् ना सोनवां जे एहि रे धार
ओहि घरी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
सांवर बानह् कोलियवा जे केनि रे घाटय
जउने घरी लालइ पीयरवा जे होइ रे गयल
ऊहे भाई बरत सहईता जे पुनि रे बाड़ऽ
आजु बीर मारइ ना तड़वा लेइ रे कोलियां
ऊय तीर चलल ना जाला रे अगोरियां (३८५०)
दुइ सई सइयाह् काटलवा बाइ रे गोरल
अउ फेरि गयल पालकिया के नगीचऽ
ओहि घरी निकसलि ना धनवां बाई मंजरिया

तिरवाह् ओडिय जातिय बा निय रे राई
अब तीर फूकत ना संपवा होइये कऽनी
नजरि परल लोरिकवा कई रे बाऽडय
आजु कहै सुनबेह् ना धनवा जे तैं बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
ऊहे तीर भसूर ना हउवह् लेइ रे तोहरउ
भइयाह् मरलेह् सऽहइता जे बानऽ हमार (३८६०)
ऊहे नाहीं तिरवा ना तूहँउ जे जिनि रे छुवऽ
ईय भाई तीरऽ सवरूयाह् कनि रे हउ

युद्ध के लिए मोलागत का इनरावत हाथी भेजना

.. ....सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
कीह् फिर नऽगर अगारियाह् कइ ए हालय
ओहि घरी रोवइ ना सूबवाह् रे मोलागत
जेनकर उरदुल काबलवा वा विर रे लाऽतऽ
आजु भाई तेजलि ना रजियाह् जाइ अगोरिया
मजरीय रानीय तेजलवा बा नाहि रे जातऽ
आजु हम नान्हेह् चीरइयाह् रे जीयवली
भेइ कनि देहलीय रहिलवाह् कइ रे दाऽलऽ (३८७०)
आजु भाई कहा क चढल बा दूरनदेसिया
आजु मोर मुगियाह् उडव्लेह् बाई रे जातऽ
अइसन कोईय मारदवा जे नाहिय अगोरिया
अहिरा क मरतह् ना खेतवा पर बहि राई
डडियाह् देतह् ना कीलवाह् बम रे राई
लेट कनि हमरैय भोगित नह रनि रे बाऽमऽ
एतनाह् कहत ना सूबवा जे बाइ मोलागत
अब फेरि बोलल मतिरी जे ओहि रे दाम
आजु कहैं सुनबह् ना रजवाह् मह रे राजा
एठियन मनवह् काहनवाह रे हमाऽर (३८८०)
आजु तुव सातउ हथिनिया जे भेजि रे देतऽ
अउ चलि जातीय ना जीरवाह् रे खेताऽर
आगे आगे भेजि दह् ना हथिया जे इन रे रावत
सुडवा मे लोहे क मूसरवा जे द धराय
ऊहे भाई जाईय ना हथिया जे छेकि कऽ मारहंय
अहिरे क कवनि बाबूऽ नह बुनि र याद

.......अहीरा के मारि रे देइहंय
दिनवांह् दिन कई झागरवा जे टुटि रे जाय

सुमिरन

[हे राम राम राम राम राम हो राग
आजु कहैं कहत ना रहलीय हम रामायन (३८९०)
कइसन परल जीयरवा में बाड़ऽ रे भोरऽ
अब जिनि भूलह् ना संगिया मोर समउरी
जिनि भूलि जायह् दुल्गवा जे मोरि रे माई]
ओहि घरी मतियाह् ना मतवा जे ठठइ रे लगनऽ
चुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् रे उतारी
आजु कहैं सुनवह् ना रजवा जे मोर मोलागत
एठियन मनबह् काहनवां जे तू हं हमाऽर
देख भाई मरलेह अहीरवा जे नाही मरइहं
ना त ईत जरिहइं अगिनिया के देखऽ रे घऽरऽ
अब तुग सातव हथिनिया जे भेजि रे देब्यऽ (३९००)
सुंड़वा में लोहे क मूसरवा जे देबऽ धराय
ऊये भाई जातइ ना जीरवाह् रे खेतरवां
छेंकि केनि मरिहंई अहीरवा के बहि रे आय
आजु मारि देइहंइ आहीरवा के जीरवा पर
दिनवांह् दिन कइ झागड़वा जे टुटि रे जाय
ओहि दिन चलनीय ना हथिया जे ओठियन से
सूबा के गयल ना मनवां जे बाड़े बईठि
आजु कहैं देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
लोहवन क देलेनि मूसरवा जे ऊंह धाराय
लेइ कनि रंगनीय ना हथिया रे इनरे रावत (३९१०)
आजु भाई लागल सरगवां जे ठेकल रे बाय
ओही घरी पऽरलि नजरिया बा लोरिके कऽय
अब फेरि बोलत लारमवा के बाई रे बोल
के भाई धनवांह् ना सुनि ले मोरि बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवां जे देखु हमाऽर
आजु भइया पांचइ ना गोड़वा क कवन जनावर
आवत बाड़ह् ना जीरवाह् रे खेतार
तब फेरि उलटि ना नेतवा जे मारि ए मांजर
अब फेरि पंचरंग ना फेंकलें जे बाड़े ओहार

आजु भाई भूडियाह् नीकालिये के बाइ रे देखत (३६२०)
ऊहे भाई बोलति लारमवा क बाडऽ रे बोल
आजु कहै सइयाह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलह् ना सिरवा क मउरे यार
अइसेह् तईसेह् जीनिगिया जे बचलि रहली
अब नाहि बचिहई जीनिगियाह् रे तोहाऽर
आजु कहै सातउ हथिनियाह् रजवा कय
छेक लेह् आवति ना जीरवाह् जे बानी ए खतार
आगे आगे बाडइ ना हथियाह् इन रे रावत
ऊहे भाई लेइहई जीनिगियाह् लेल र कार
ओहि घडी सूनह् ना हलिया जे ओऽियन कऽय (३६३०)
के फेरि ओहूय समइया क देखऽ रे हाल
ओहि दिन भादउ ना बनवा जे बाऽ रे खाखर
फगुनीय बाडइ महुडिया रत रे नागी
जीउ लेके भागह् मेहुडिया मे तू ए सइया
अलक्ह तेजत परनवाह् बाडऽ रे तू हऽई
बलुकन गाठिय रोकडवा जे कही लगाइ कऽ
हमरे से सुन्नरि ना लेबह् रे खरीदी
आजु कहै हमरेह् जूठहियाह् केनि रे कऽरन
काहे तूय आन्हर ना तेजलेह बाड परान
जेनकर अइसन ना ललवा ज जूझि रे जाव्यऽ (३६४०)
मइयाह् खाइ कह् कनीयवा जे मरि र जाय
एतना ज कहति ना धनवा जे बाई मजरिया
अब नाहि ऊठत अहीरवा ज पुनि रे बाय
आजु कहे पल्थीय ना मारियऽ के बाडे रे बइठल
पल्थी पर धइलेह् बोजुलिया बा तर रे वार
आजु कहै देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
तब नक ज़ुटल हथिनियाह् बाय र जाती
जाइ कनि ठाडीय हथिनिया जे होइ रे गइनी
डडिया से निकललि ना धनवा जे बाऽ मजरिया

मंजरी और इनरावत पूर्व जन्म की बहनें थी

जाइकनि धरति ना गोडवा बा ईनरावति कऽ (३६५०)
हथियाह् से कहति जाबनिया लेइ रे बानी
आजु कहैं सुनबह् ना हथिया इन रे रावत

सतजुग में एकउ बहीनियां दुनों रे रहलीं
तुय भाई जेठह् बहीनियां रे हमारी
अउ फेरि दुरापति बादलिगा लेइ रे जानम
तुय भाई हाथी क जनमवां बहिन रे पवलऽ
हमहूँ त मानुखि जनमवां पाई रे गईली
ई तोहार हवह् लहुरवा बह रे नोइया
कइसेह् छूवह् ना तोहउं एहि रे दम्म
छू के कइसे मरबह् लहुरवा बह रे नोइया (३८६०)
कइसे हमार देबह् सेनूरवा रे बिगाड़ी
एतना ज सोचति ना हथिया बा इन रे रावत
कान फारि के सूनति ना सन्चेह् देख रे बाय
उहे भाई बतियाह् ना मनवां में हाथी दहावत
सांचइ कहति मांजरिया जे देख रे बाय
आजु भाई सतजग जानमवां में दुनों रे बोहीन
एक्कइ पीठिय ना लेहलीं जे अव रे तार
आजु भाई दुरापति ना दिनवांह् रे बदलनऽ
अउ फेरि देखह् जानमवां जे गयल बदल
ईहे भाई अदमी क जानमवां जे पउलस मंजरिया (३८७०)
हमहूँय हाथी जानमवां जे मीलल रे जाय
अब नाहिं लहुराह् बहनोइया के हमरे छूवव
अब नाहिं सेनूर बीगडवई मांजर तोहार
उहवां से भगनीय ना हथिया जे ईन रे रावत
धूरि कह खेहई उड़वले जे बानी रे जात
एकदम भागलि ना हथियाह् रे भगावलि
अब जूटि गइलींय ना किलवा जे भंवरे नार
ओहि घड़ी भागलि ना हथियांह् चलि रे गइनीं
अब डटि गइलींय ना किलवाह् भंव रे नार
ओहि बगदल ना सूबवाह् राजा मोलागत (३८८०)
हथियन के गारीय फूहरबाह् देत रे बानऽ
बुजरोय सुनि लेह् ना हथियाह् इन रे रावत
कहनाह् मनवेह् ना एठियन रे हमाऽर
आजु तोर अहीराह् जवइयाह् लेइ रे हउंवऽ
खेतवा पर जीयत मुदइयाह् छोड़ि रे देहलऽ
एहि दाइं नाहीय ना मरलह् रे हमाऽरऽ
आजु भाई खीचब ना हथवाह् रे बनूखिया

छम्मे में लेबइ पारनवांह् लेल रे कार
अब फेरि मतियाह्ना मतवा जे ठठय रे लगलं
घुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् अर रे थाई (३९९०)
आजु कहै राजाह् ना सुनिलह् मह रे राजा
एठियन तूं मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
अइसेह् नाहीय ना हथियन के सील रे टुटिहंय
पिरिथमी मे तिन्निउ भूवनवा जे बीति रे जायं
आजु कहै एकक हथिनियन केनि रे पेटे
सात सात भट्ठीय ना मदियाह् दऽ पियाय
जवने घड़ी बमकल ना नसवा जे नजरे पर
लोहवा क मूसर ना सूंड़वा मे देब धराय
ऊहे भाई जातइ अहीरवा के मारि रे देइहय
दिनवांह् दिन कइ झगड़वा जे टुटि रे जाय (४०००)
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अउ फेरि देहलेन ना भठियाह् तोर रे वाई
खाली भाई झुरियाह् आगडियाह् मंग रे वउलेन
अब रखि गईलि हथीनियनि के रे पासऽ
दिलवाह्जरीय ना हथिया बा मग रे वउले
आजु फेरि देलेसि महउथइ बल रे वाई
आजु भाई देनह् ना भठियाह् रे महउथऽ
बातल बोतल ना दरूवाह् देइ पिआई
आजु भाई एकक हथिनियन केनि रे पेटवा
सत सत भट्ठीय ना मदियाह् देइं पियाई (४०१०)
ओहि घडी घटाह् पहरवा जे रोकिए देहलेन
नसवाह् चढ़ल नजरियाह् पर रे बानी
जउने घडी बमकल ना नसवा जे देहिया पऽर
लोहवा क देलेनि मूसरवाह् रे धराई
उहवा से चलनीय ना हथियाह् बम रे कात
सोझइ जिरवाह् ना बहतरि रे खेताऽर
ओहि घरी परि गइलि ना नाजरिया जे लोरिके कऽय
उठि कनि भयल अहीरवा बा तइ रे यार
आजु कहे जाईय ना हथवा मे लेइ बीजुलिया
फरकेह् ठाढ़ाह् अहीरवा जे लेइ रे बाय (४०२०)
ओहि घड़ी चारिय न ओरिया से हथिया छेंकि कय
मूसर मारति अहीरवाह् केनि रे बाय

ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
दुरूगाह् लगनीय सकतियाह् रे सहाय
उहे भाई लेइकह् बरूववाह् लेइ रे ओठियन
चम्फाह् डांकत आकसवा में चलि रे जाय
जवने घरी छुटनहं ना हथवांह् मेंइ रे मूसर
सुड़वां में देलेनि ना हथियाह् गुम रे राय
उहे भाई पिनिकत मूसरवा जे लेइये गयन ऽ
धरती में चूड़ई ना चुड़वा जे होइ रे जाय (४०३०)
के फेरि घरीय पहरियाह् केनि रे बीतय
अहीराह् आगेह् ना ठढ़वा जे होइ रे जाय

लोरिक की ओर बढ़ते इनरावत हाथी का सूंड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना

ओहि दिन ढुकलि ना हथिया इन रे रावत
ऊहे भाइ रेंगलि लोरिकवाह् ओर रे जाय
जाइ कनि सूंड़ह् लोरिकवा क धइए लीहलेस
अउ फेरि झटकति आकासवाह् में नि रे बाय
आजु भाई झटकि आकसवा में हथिया देहलेस
धनि धनि मइयाह् दुरूगवा जे पुज रे मान
मइयाह् अंचरेह् ना सुनि ले ले सुमिरि कऽय
अउ फेरि लेहलनि उपरवांह् रे आ लोक (४०४०)
आजु कहैं कुम्हिया धरतिया में रे गिरवलेन
हथिया गइलींय ना ओठियन गर रे माय
आजु भाई आंखीय पारदवा जे परि रे गयनऽ
हथियाह् नासा में बीयकुलइ जे होइ रे जायं
उहवां से भागलि ना गोलियाह् हथियन कऽय
सोझइं कूदलींय ना सोनवां बिच रे धार
आजु कहैं आगेह् ना अगवां जे लेइ ए इन्दर
अब पीछे सातउ हाथनिया जे बानी रे जात
आगे आगे चऽढ़ति ना हथिया बा इन रे रावत
अब फेरि देखह लोरिकवाह् कइ रे हाल (४०५०)
लोरिकाह् उहां सेनीय ना बाइ रे ऊछरत
एकदम चलि गयल ना किलवाह् जरि रे जाय
जाइकेनि बईठि ना किलवा के बाइ ए जरियां
देखत बाड़इ ना मोकवाह् लेइ रे आज

तब तक चमकल ना मुंडवा बा इनरावति क्यऽ
अउ फेरि बोलिल दुरूगवा जे बाइ रे माय
आजु कहँ मुनबेह् बरूववा जे फुल गे झरूवा
एठियन मनबेहू काहनवाहू रे हमाऽर
देखु भाइ सगरउ ना देहिया मे पीटल बा तउवा
थोरा धुकधुइया हथिनिया क बचल रे बाय (४०६०)
आजु कहँ अइसन ना खडियाहू रे गिराऽयऽ
जउने दुइ भागेहू जातइ ना अल रे गाय
ओहि घरी मुनहू ना हलिया जे लोरिके कय
उहे भाई बइठल काररवाहू पर रे बाय
जउने घरी चमकलि ना मुडवा जे ईनरावति कऽय
अहीरा खीचन बीजुलिया बा तर रे वार
जेनकर चारीय अगुरवा ज भईनी बहर
जेकर भाइ ताडक आकसवा बा चलि रे जात
के फेरि नीचवाहू ना मरले ज बा दावन्हरा
पोरसन गइनीय लावरिया ज बुमि रे याय (४० ०)
आजु घुमि गईलि मालकिया बा हथिया कऽय
खड़ियाहू गईलि गरदनहू रे बिसाय
आजु कहँ मुडियाहू ना अगवा ज गिरि रे गईनी
अबही ठाडइ हथिनिया जे रहि जाय
जउने घडी ऊठल अहीरवा·बा ओठियन मे
चम्फाहू डाकल ना बानहू रे काररवा
जाइ के पीठि भयल हथिनिया के तइ ये याऽर
पिठिया पर माजत बाडइ ना तर र वारऽ
ओहि घडी देखऽ ना रजवा रे मालागत
उहे भाई उरदुल कावलवा विहि रे लाऽन (४०८०)
आजु कहँ हा हो ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलहू ना मझवा रे लीलाऽरऽ
एतनाहू दीनहू आहीरवा जिरवा रहनऽ
जाइकनि जिरवा ना खेतवा र अगारी
एक ठेनि आगम ना हथिया इन र रावत
आजु मारि देलेसि ना किलवा भवरनारय
जाजु कहँ मुडयाहू ना धरता मे गिरि रे गइली
पिठिया पर माजत बाडई ना तर र वाऽर
······तवनहू ना दिनवाहू राम समइय।

कि फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल (४०८०)
ओहि घरी रोवइ ना रजवाह् रे मालागत
पटकत बानह् चाननियाह् रे कपाऽरय
आजु मोर तेजलि ना रजिया जे जाइ अगोरियां
मंजरीय रानीय तेजलवा बा नाही रे जाती
आजु हम नन्हवइं चीरइयाह् रे जीयवलीं
भेंइ कनी देहलीय रहीलवाह् कइ रे दाली
सारवाह् काहां क चढ़ल नाह् दूरन देसिया
आजु मोर चिड़ियाह् ऊड़वलेह् बाइ ये जाऽतऽ
आजु कहैं अइसन मरदवा जे केहुए नाहिनीं
अहिरा के मरतह् ना खेतवा पर बहि रे आई (४१००)
आजु आनि देतह् ना डंड़िया जे कीलवा में
लेइ कनि भोगित ना हमहूंय रनि रे वासय

लोरिक से लड़ने के लिए मोलागत का अपने भांजे निरम्मल को आमन्त्रित करना

ओहि घरी मतियाह् ना मतवा जे ठटि ए देनऽ
चुगुलाह् देलेनि ना मतवाह् रे उतार
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमार
देख भाई अइसेह् ना अहीरा जे मारल मरइहंय
नात ऊय जइहइं आगिनियाह् के नि रे दाह
आजु कहैं कोरह् कागदवा तू ए मंगउतऽ
चिठियाह् लिखतह् ना तूहइं अपने हाथ (४११०)
आजु कहैं देतह् धावनिया केनि रे हाथंऽ
चलि जातय कोटवाह् भदोखरि लेइ रे गाँव
जउन तोहार अम्मर ना रजवाह् बा नीरम्मल
भयनेह् कोटवांह् ना बानइं रे तोहार
ऊहे भाई अवतई अहीरवा के मारि रे देइहंय
दीनवांह् दिन कइ झागड़वा जे टुटि रे जाय
··· ··कागदवा रे नीकालऽ
हथवा में लेनह् कालामयांह् मसि रे हाऽन
पहिलेह् खेमइ कूसलियाह् बाड़ं रे लीखत
अंकवाह् बहुत लीखतवाह् बांय रे आबेगय (४१२०)
आजु माई ऊजरि ना रजिया जे गईलि अगोरिया

कोइलाह् गयल अगोरियाह् रे बोवाई
आजु कहँ जवन ना मायाह् रे अगोरी कऽय
आजु लूटि लेहलें अहीरवा दर रे बाऽरऽ
तब कहँ बोनाह् मारदवाह् कई रे तीवईं
गल्लीय गल्लीय अगोरिया मे डिड़रेयाय
एतनाह् लीखत कालमिया जे राजा मोलागत
अउ फेर लीखत ना अगवां जे बाइ रे बीरोध
जउ फेर भयनेह् छतिरिया जे होय निरम्मल
अम्मर देखिहंइ ना पतियाह् रे हमाऽर (४१३०)
जउ भाई खातइ ठऽहरिया पर भयनें होइहंय
हाथ आइके धोइहंइ अगोरिया जे दइ रे पाल
आजु कहँ गइयाह् संचिलिया जे अन रे खइहंय
पानीय पीहइं रूधुरियाह् रे सामान
आजु कहँ बोनाह् अगोरियाह् केनि रे अइले
ओन्हइं अन्नइ लीखल बा जो हरामय
आजु कहँ अन्नइ ना पनिया ज लीख हरामय
पतियाह् देलेह् धावनिया के दव रे राय
आजु कहँ लेइकह् ना पतियाह् रे धवनिहां
अब धइ लेलेसि राहतवा जे पछिवां कय (४१४०)
अउ फेरि रेंगल पछिमवां बा चलि रे जातय
आजु भाई रातीय रेंगत बाह् दिन रे दवरत
कतवइं बादत ना कुरवाह् रे मोकाम
एकदम रेंगल ना ऊहऊय रे रेंगवलस
चढ़ि गयल नागर भदोखरि लेइ रे गांवय
पूछत जालह् नीरम्मल कइ रे धऽरऽ
दुअराह् देलेनि ना घरवाह् रे बताई
एकदम रेंगल बाखरिया में चलि रे जालाऽ
निरमल बिहनइं गावनवां लेइ रे अयनऽ
उहे भाई देलेनि बहूरिया बई रे ठाई (४१५०)
अपनेह् गयल अखड़वा में नि रे बानऽ
तब तक धावन दुअरवां चलि रे गयल
जइ केनि दुअरांह ना कइलेह् बा पुकारऽ
दुअरा निरमन ना निरमल नेरि रे आय
ओहि घड़ी भितरीय महलियां जे लेइये बुढ़िया
निरमल क रेंगलि मतरियाह् लेइ रे बाय

हथवा मे लेलइ ना सोबग्न लेइये छडिया
बुढिया धेधति दुअरवा पर चलि रे जाय
ओहि धरी पूछई ना बतिया जे लरमे कऽय
अउ फेरि पूछति जाबनिया जे फुनि रे बाय (४१६०)
आजु भइया काह ह ओतनवा जे हव रे गोतन
कहवा पर टूटीय गईलिया बा बुनि रे याद
कहवा मे कइलह् चढइया जे दूरन दसिया
नीरमल नीरमल ना बा रे नरि रे यात
कह वा मे कऽलह् चीन्हरिया बेटवा मे
नाव धइके बालत नीरम्मल के नरि रे यात
तब फेरि बोलल धावनिहा रजवा कय
दरियाह् करई ना बेटवाह् रे जऽबाव
आजु मोर अगोरी ओतनवा जे हवय रे गोतन
अगोरिया मे टटीय गईलिया बा बुनि रे याद (४१७०)
आजु हम कइलीय चढइया जे कोटवा के
चलि अइली कोटवाह् भदोखरी जे लेइये गाव
पूछत आवत बा बखरिया जे नीरमल कय
कवन हवह मूबाह् ना लेइये आज
तब फेरि बालति ना बुढिया जे बा निरम्मल कय
भइयाह् अयनह् ना अबहे रे हमार
अबहे के गवन ना लेइकह बेटवा अईनऽ
दुलहिय देलेनि कोहबरे मे बई रे ठाय
आजु कहे पलगीय असीसवा जे करत बेटवा
एकदम भागल आखडवा मे गयल रे बाय (४१८०)
जवने घडी सुनवह् ना भइयाह् मोर धवनिहा
अब चलि जाबह् अखाडवाह् रे हमारऽ
जहवा पर बानह् ना सुबवाह् जाइ निरम्मल
बेटवाह् भीडल आखडवा मे बान हमाऽर
ओहि दिन रेगल ना भइया बाइ धवनिहा
एकदम रेगल अखडवा मे चलि हो जानऽ
जाइ कनि देखइ आखढवा कइ रे हाऽलऽ
ऊहवाँह् एकक न मइया क बाडऽ हो दूलर
एकक बानह् सूधरवा सर रे दाऽरय
उहा भाई जोडइ न तोडवा जे बान देखाऽतय (४१९०)
नहिनीय होतइ नीरम्मल पहि रे बानय

ओहि दिन धावनि ना देखत बाय रे ओठियन
नाहिं फेरि लवटल गीरिहिया जे बान हो जातय
जहवां पर बइठलि ना बुढ़िया नीरमल कऽय
मतवाह् मुनबह् नीरम्मल कइ रे माई
ऊहवां पर एकक दईयवा कइ रे लालय
अब नाहिनी होतइ पहिरे चानऽ
कवन हम जानीय नीरम्मल सर रे दारय
······दिन बोललि ना बुढ़िया बा नीरमल कऽय
भइयाह् मनबाह् काहनवांह् रे हम्मार (४२००)
आजु कहँ अइसन ना तइसन भइया रे नहिनीं
भइया हमार बानह् दइयवाह् कइ रे लाल
ऊत भाई अबहें के गवनवां जे लेइ उतरलेन
मथवा मे तीलक लगलवा जे बाड़य दुधार
आजु अइया काजर मुरूमवा जे अंखिया में
भइया के लागल अखडवा में होइ हमार
जउने घरी मरिहइ ना तलवा जे ओटवां पर
जइसे भाई भादउ दइयवा जे घहरेराय
ओहि दिन लवटल ना भइया जे बाड़य धवनिहां
फेरु भाई रेगल आखडवा में चलि रे जाय (४२१०)
ओहि घड़ी ऊठल बा जोडवा जे नीरमल कऽय
दूनों जोडी लड़ल आखड़वा में देख रे बाय
ओहि घड़ी मारडं ना दउवा जे राजा नीरम्मल
जोड़ियाह् गीरल आखड़वा में भहरें राय,
उहवां से डांकल ना मूबवाह् बा नीरम्मल
ओटवा मे मारत ना तलवा जे देख रे बाय
ओहि धरी बानह् ना ओटवा जे घहरे रायन
धावनि दवरि ना गयनहं रे पहुँचि
जाइकनि चिट्ठीय ना हथवा में देइ रे दिहलेन
नीहुरि करत बानइ नाह पर रे नाम (४२२०)
आजु भइया आखेह् आमरवा जे होइ रे रहब्या
तुव भाई जिय बह् ना लखवाह् रे बरीस
जइसेह् बाढ़त बा पनिया जे गंगा कय
ओहसइ बाढ़इ ना अइयाह् हो तो हार
आजु कहै काहंह् ओतनवांह् सोहार रे गोतन
कहवा पर टुटीय गइलि बाह् बुनि रे याव

कहवा के कइलह् चाढइया जे पर रे दसिया
आजु तूय खोजत आखडवा पर चलि रे आय
ओहि दिन बोलल ना भइया जे बाउ घवानिहा
दरियांह् करइ ना बेडवाह् रे जाबाब (४२३०)
आजु मोर अगोरीय गोतनवा जे हउ रे गोतन
अगोरी मे टुटीय गईलिया बा बुनि रे याद
आजु हम कइलीय चाढइया जे लेइये काटवा
खोजत बाडीय नीरमल भर रे दार
आजु कहँ आइल बा पतिया जे अगोरीय काय
ईय पाती देवइ नीरमल केनि रे हाथ
जवने घरी लेह ले न कागदवा ज राजा नीरमल
उवे भाई रेगल गीरिहिया चलि रे जानउ
जाके भाई देखइ ना पतियाह् ओठियन पर
ऊय पाती ले लेह बाचतवा आ चलि रे जाउनय (४२४०)
ऊहे भाई आगेह् ना अखराह् बा सुनावत
आजु कहँ ऊजरि ना पलिया जे गईल अगोरिया
कोइलाह् गयल अगोरियाह् रे छिटाई
तब कह बीनह् मारदवाह् वइ ए तीवई
गल्लीय गल्लीय अगोरिया मे डिडि रे यानी
अब नाहि रहतह् अगोरियाह् रहि ए गइन ऽ
जउ भयनेह् छत्तिरीय ना जतियाह् लेइ रे होइहय
पतियाह् देखत ना छोडियाह् कसि रे देइहय
ऊहे भाई अइहइ अगोरिया मोरि रे पा ऽ ल ऽ
नाही जउ छत्तिरीय ना होइ कह् पाछ रे देइहय (४२५०)
तब कहा अहीर गहत बा तर रे बाउर ऽ
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् ओठियान क ऽ
पतियाह् देखत देखतवाह् राजा रे गइन ऽ
अगवाह् लीखल बा पतियाह् मे तोलक य
पतियाह् देखत ना अन्नइ खई हुंई रे गइया
पनिया पीहइ रूधुरियाह् रे समा ऽ न ऽ
जवने घडी नागर अगोरिया मे भयने अइहय
ओहई पानीय गरहई लेइ रे आय
एतना जे लीखलि ना पतिया मे लेइ रे बानी
एतना जे लीखलि ना पतिया मे देख रे बानी (४२६०)

अमर बीर निरम्मल का आगमन

सुबवाह् बाचत गिरिहिया चलि रे अईन ऽ
एकदम हुलल ना किलवा में चलि रे जा ऽ न ऽ
किलवा में हुलि कई ना आपन बाइ समान ऽ
झटपट कसइ ना घोडियाह् रे पवनिया
कसि कनि ले लेहू नीकलले बा मय रे दानय
घोडिया के बान्हत लावंगिया के बान हो डारी
आपन हुलि गयल कोठरिया मय रे दा ऽ न
ऊह भाई देलेनि ना तलवाह् लेइ रे खो नीन
ओहि घडी अगवाह् मे पहिरत बाय अगरखा
गोडवा मे कसइं तीउरिया रे तमाने (४२७०)
आजु भाई डिल्लीय ना सहिया बाइ रे जूता
अब वीर दाबईं ना एडवा रे चढाई
जवने घडी हलि गयन ना गजडे लोहवा मे
जेनकर गाडलि अखन्हिया बाइ रे सगिया
अम्मर गाडल ना सगिया जे देख रे बाय
जउने घडी जाइकह् ना हथवा जे बन लगउले
टगियाह् देलेनि ना धरनीय रे बराय
ओहि घडी पिरिथिमी मुइ डोलवा जे होय रे लगनी
हहरल बानह् ना कोटवा क सब रे लोग
आजु कहैं अम्मर ना रजवा जे बा निरम्म र (४२८०)
जेकर भाई खोजलेह् मीरितिया जे नाहि रे बाय
अम्मर गाडल ना सगियाह् बा बबग्ले
अब पिरिथी हाईय गईलिया वन भव रे डोल
आजु कहै केकर मीरितिया जे निय रे रहली
आजु बोर ले लेइ अवरिया जे बाइ उठाय
आजु कहैं नीकलि दुअरवाह् पर रे भइनऽ
अब फेरि बोलत लारमवा क बान र बाल
सुनिलह् राजह् दइयवाह् कइ रे लडिकी
बिहनह् उतरलि गावनवां स दख रे बाय
जउने घड़ी नीकलि आगनवा मे धन रे गइनी (४२९०)
पवनी के धइलेह् ना बगिया जे जाइ रे बाय
रोइ रोइ कहति ना रनिया बा जाय रे कुडल
पटकति बानोय धरतियाह् रे क पाऽर
आजु कहैं सुनबह् मालिक बाहू रे हमा ऽ र य

तुलसीय ओहो में जइहंई कुम्हि रे लाई
तब जानेय जूझल निरम्मल सर रे दार
जउने घरी लेईय ना बगिया लेइये गइनऽ
हथवा में ले लेह् हाजरिया बाइ रे सागऽ
डांकि कनि भयल ना घोड़ियाह् अस रे वारय
आजु भाई लेलेसि ना हथवांह् मेनि रे सांगऽ
घोड़िया के तनिक आसवां जे बायं छुववले (४३७०)
घोड़ियाह् निचवांह् ना छोड़लेस भुंइ ए धरती
उपरांह् छोड़ीय देलेह् बाह् अस रे मान
ऊहे भाई बादर ना रेखवांह् बांय संवरिया
पवनीय हवह खीयावति बाडे रे जाय
केह् भाई घऽरीय छमिछवा जे केनि रे भीतर
घोड़ी जाइ के चूवलि अगोरियां जे दई रे पाल
जउने घरी लागलि कचहरी बा सूववा कऽय
ओहि ठिन चूवलि ना घोड़िया जे भइनी रे ठाढ़
ओहि दिन मम्माह् ना उठनह् हो मोलागत
जाइ कनि धइलेहि पवनियांह् कइ रे बाग (४३८०)
जउने भाई उतरल ना सुववा जे बान निरम्मल
मम्मा के नीहुरि करत बाडं पर रे नाम
ओहि घरी आखेह् आमरवाह् रह रे भयनें
तुहे भयने जीयह् ना लखवाह् रे बरीस
भयनेह् देसवाह् ना देसवाह् कइए अइया
तोहरे जे घेरई ना जंघियाह् रे सरीर
कहैं तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
सुबवाह् रेंगल चाननियां पर बाइं ए टहरत
घुमि घुमि देखत अगोरियाह् बाइ रे पालइ
तब कहैं जवन ना मायाह् रहल अगोरिया (४३९०)
उहे होइ गयल कोइलवाह् रे खंगारय
तब कह बिनाह् मारदवाह् कइ ए तीवई
गलियांह् गलियांह् अगोरियांह् डिड़ि रे यानी
जवने घड़ी देखई ना सुबवाह् रे निरम्मल
छत्तिरीय दांतन अंगुरियाह् बायं चबातय
तब फेरि बोलय ना रजवा हो मोलागत
भयनेह् तूं मनबेह् काहनवां रे हमाऽरय
आजु भयने जोरल बा बीरवा पनवा कऽय

मुखवा में लेबहू ना बिरवा रे उठाई
आजु कहैं खेतवाहू पर बइठल बाइ मूदइया (४४००)
मूदई के मारहू ना खेतवा बहि रे याई
भयनेहू आनि देत ना डडिया मजरी कऽय
लेइ कनि किल्लाहू भोगित ना रनि रे वासय
एतना जउ कहत ना बतिया राजा मोलागत
निरमल जोरल बा बिरवा जे पनवा कय
मुखवा मे लेलेनि छऽतिरियाहू रे उठाय
कन्हवा पर धइलेनि ना सगियाहू र हजरिया
ऊहे भाई उतरत ना सिढिया जे देखऽ र बाव
जवने घरी उतरई ना सिढियाहू राजा नीरम्मल
बायेहू बोललि मूइयवाहू दख रे बाय (४४१०)
जउने घडी बोलियाहू सूइययाहू जे बोलत र बानी
निरमल के भयल सुबहुवा जे देखऽ रे बाय
आजु कहैं हो हा न दइवाहू मोर नारायन
का बरम्हा लिखलहू ना मझवाहू रे लीलार
जउने घडी रेगल ना मूबवाहू बाइ निरम्मल
सिढियाहू उतरल न किलवाहू कइ ऐ जानऽ
ऊहे भाई रेंगल ना उत्तर थोडा रे गइना
सुइयाहू बोललि ना बायहू बाड र हाथय
सुबवा के भयल सुबहुवाहू देख र बानऽ
आजु कहैं हो हो न दइवा मोर नारायन (४४२०)
क्या बरम्हा लिखलहू ना मझवा रे लीलाऽरय
घरवा मे बियही के काहनवा मेटि क अइली
कइसन बानहू आगमवा रे देखातय
आजु भाई देखइ आगमवा कय खराबय
सूबबा के भयल खऽटकवा देख रे बानऽ
जउने घरी किल्लाहू बाहरवा जे चलि ए गइनऽ
लोरिकाहू बइठल पालकिया जे बाडऽ अगोरि
जउने घडी परि गईलि नाजरिया बा लोरिके कऽय
बियही ते मनबे काहनवाँहू र हमाऽर
एक ठेनि आवत मारदवा बा कीलवा से (४४३०)
देखु भाई दाहीय मूदइया जे हवय हमाऽर
पहिले हमइ सरेखवा मे धन लगइब्या
अपनेहू रहीय ना छनवाहू हम रे बान

सूनहू ना हलिया ओठियन कऽय
सुबवाहू गाड़लि ना संगियाहू बाइ कबरले
जेकर भाई आयल आ दिनवा बा निय रेरा यल
देखिलहू राजाहू दइयवा क हवयं हो लड़िकी
उहे भाई रहलि महलिया जे भीतरीय में
रनियाँहू निकललि दुअरवा पर चलि रे अइनीं (४३००)
जाइ के नि धइलेनि पवनियाँहू कइ रे बागऽय
रोइ रोइ कहइ ना रनियाँ जाय रे कुंडल
सइयाँ तूं मनबहू काहनवाँ रे हमाऽर
हमें आन के खूंटाहू बछियवा बान्हि रे देहलऽ
अपनेहू चढ़ल रईनिया पर बाड़ऽ रे जातय
हमके तं काहेहू मोढ़सवा देले रे जाबय
कइसे हम रहब ना कोटवां लेइ रे गाँवऽ
ओहि दिन बोलल ना बानहू राजा निरम्मल
बियही तूं मनबहू काहनवांहू रे हमार
अब तूंय कोटवाहू भदोखरी में रहू रे घरे (४३१०)
हम जात बाड़ीय अगोरियाहू दई रे पाल
ना फेर जातइ झागड़वा जे फरि रे अइहंय
तब हम लवटि ना घरवा जे आइबि रे फेर
नाहि जउं जातई आ दिनवां जे नियरे रइहंय
मथवांहू जइहइं अगोरियांहू रे गवांय
ऊ तब जानहू ना सइयां जे जूझि रे गइनऽ
जाइ कनि नागर अगोरिया जे दइ रे पाऽलऽ
सूनहू ना हलियाहू ओठियन कऽय
अब नाहि नी छोड़ति लागमियांहू घोड़िया कऽय
रनियांहू रोइ रोइ ना बतवाहू बाइ रे कऽहति (४३२०)
सइयां त हमरेहू ना हथवाहू कइ खिचड़िया
दुइ कवर कइ लहू ठहरिया पर जेव रे नाऽर
ओहि दिन बोलल ना सुबवा जे बायं निरम्मल
बियही तू सुनबेहू ना बतियाहू रे हमाऽरऽ
आजु मोरे मम्माहू मूदइया होइ रे गइनंऽ
पतिया में लीखलेनि ना दनवां रे हरामऽ
कइसे हम कलम ना बतिया मेटि रे देईं
कइसे हम खाब्रइ खोंचड़िग्राहू हो तोहाऽरऽ

ओहि दिन रोवति ना रनिया बा जय रे कुंडल
पटकति बानीय धरतियाह् मेंनि रे माथ (४३३०)
सइयां त् चऽढल रईनियाह् पर रे जालऽ
हमके तू काहेह् मोढसवा जे देले जा
ओहि दिन बोलल ना सुबवा जे राजा निरम्मल
बियहीय पूड़ाह् आगमवा जे तोहे रे देब
एकदम रेगल कोहरवा जे घरे गइनऽ
कच्चाह् लेहलनि घइलवाह् रे उठाय
ओहि दिन कच्चा ना सुतवा जे आनि रे देहलेन
अब देइ देहलेनि जाननियाह् केनि रे हाथ
बियही तू रोजई ना उठियह् रे सबेरवा
अब तुंव फानह् ईनरवा मे खिच रे जाल (४३४०)
जाइ दिन जीयत अगोरियाह् जे हम रे रहबय
खीच कनि पीयह् ना पनियाह् रे बनाय
जउने दिने नगर डगरवा जे होइ रे जइहय
पतियाह् जइहइं ना हमरउ रे मेटाय
तब जाने सइयाह् अगोरिया मे ज्ञुझि रे जइहय
चूडाह् चूडई ना मूतवा जे होइ रे जाय
पनियाह् छूवत घईलवा जे गलि रे जइहय
तब जानय जूझल ना सइयाह रे हमार
आजु भाई अवरोह् आगगवा तोह रे देबय
अब फेरि लेइयह् ना डबवाह् रे उठाय (४३५०)
डबवा मे अकराह् कलोरियाह् कइ रे दूधवा
अब भरि देलेह् ना डबवाह् मेनि रे बाय
उपरां से तुलसीय ना बिरवा जे डालि रे देहलेन
डब्बाह् कइलेनि ना ओठियन देखऽ रे बान
बियही तू रोजइ सबेरवा जे रे नहाऽयऽ
जाइ कनि देखह ना जबवाह् रे उधाऽर
जाइ दिन जीयत अगोरिया मे हम रे रहबय
तइ दिन दूधइ ना रहिहइ रे तोहाऽर
तुलसीय गह गह ना ओही मे भइल रे रहिहंय
तब जानेह् सइयाह् ना अम्मर बान हमार (४३६०)
जउने दिन नाही ना बतिया जे कूलि रे रहिहंय
जउने दिने नागर डांगरवा जे होइ रे जावय
दुधवाह् खूनइ समनवा जे होइ रे जाय

एकदम लवटि चाननियांह्‌ पर रे चढ़न ऽ
जाइ कनि कहत ना ममवां से बांड़ रे बांत ऽ
मम्माह्‌ का ए कहींय ना का ए नाहीं
कुछु मोरे बूतेह्‌ काह्लवा बा नाहिं रे जात ऽ
आजु भाई देखह्‌ ना एठियन कइ ए हाल ऽ
अहीरे से बेकऽर ना झागड़वाह्‌ तूं मचउला
कवन रहल झागड़वाह्‌ सेनि रे का म ऽ
आजु तुंव देहलह्‌ ना रजियाह्‌ उजर रे वाई
तब कह बीनह्‌ मारदवा्‌ कइ रे तीवई (४५१०)
गलियांह्‌ गलियांह्‌ ना बानीय डिड़ि रे यात ऽ
मम्माह्‌ जनतह्‌ पारजवा जे हव रे महरा
महराह्‌ करत बीबाह्वाह्‌ ले ल रे कारी
तब फेरि देतह्‌ रासधिया जे कउनो रे जाई
महरे के जवनि ना रसधि घटि रे जातीं
किलवा से देतह्‌ पारजवा के पहुँ रे चाई
ओहि घड़ी खातह्‌ ना लोगवाह्‌ गउरा क ऽ
मम्माह्‌ करत बड़इया जात तोहार ऽ
मम्माहं जाहांह्‌ पसीनवा जे तोहार गोरतं ऽ
तहां ढारि देतई लोरिकवा जे आपन रे खून (४५२०)
सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन क ऽ
राजाह्‌ सूनत मोलागति लेइ रे बान ऽ
जरि मरि भयल छतिरियाह्‌ रे खंगार ऽ
भयनेह्‌ नाह्क छतिरियाह्‌ धरे जनमल ऽ
बदियाह्‌ छोड़लह्‌ ना खेतवाह्‌ पर हमा ऽ र ऽ
आजु कहैं कइलह्‌ बंसवाह्‌ कइ रे डूब ऽ
आज तुंह छतरीय ना होइकह्‌ पाछ रे देहल ऽ
तव बाह्‌ अहीर गाहत बा तर रे वार ऽ
ओहि दिन सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन क ऽ
के भाई ओहूय समइयाह्‌ कइ रे हाल ऽ (४५३०)
एतना जो कहत ना बतियाह्‌ बाइ ए ओठियन
फेर भाई बोलत ना छतिरीय लेइये बाय
भयने तूं नाहक छतिरिया जे घरे जनमल ऽ
होइ जात तोहंउ ना जतियाह्‌ रे चमा ऽ र
आज तुंय खिचतह्‌ न खिलवा जे दंतवा से
बइठल रहतह्‌ दूकनियांह्‌ रे अगोर

आजु तूय छतरीय ना होइकहु भयनेह् पाछ देहल्या
तब तह अहीर गहत बा तर रे वार
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
नींरमल एतनीय जब बतियाह् लेइ ए सुनलेन (४५४०)
छतरी के बहल नयनवां से बाइ रे नीर
मम्माह् अपनेह् ना धरवांइ बल रे वाइ क ऽ
सोझई मारत ना गोलियाह् बांड़ उठाई
घरे हम बियही क काहनवां जे मेटि रे अइली
ए माह् बानह आ दिनवांह् रे देखातय
एतना जब कहत ना ममवांह् लेइ रे बान ऽ
रोइ कनि लेलेसि हाजरियाह् रे उठाई
संगियाह् धरइ ना निरमल कन्हवा पर
ओहि घड़ी लवटल अगोरियाह् बान रे जात ऽ
चलि गयनह् जीरवाह् ना बहतरि रे खेतारय (४५५०)
जहवा पर बईठल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
पल्थी पर धइलेह बीजुलिया बा तर रे वा ऽ र ऽ
ओहि घड़ी घूमल ना सुववा जे चलि रे गइन ऽ
एकदम गयनह् अहीरवाह् केनि रे पास
आजु भइया सुनबह् अहीरवाह् बीर रे लोरिका
एठियन तूं मनतह् काहनवाह् रे हमा ऽ र
आजु मोर बूढ़इ ना ममवा बा छिरि रे आयल
ओन्हे लागल तारून जोइयवाह् कइ रे ख्याल ऽ
अहीरा तें छोड़ि देह् ना डड़ियाह् मंजरीय क ऽ य
लेइ जाइ किल्लाह् भोगउ ना रनि रे वा ऽ सय (४५६०)
एतना जउ कहत ना सुबवाह् बाइ ये ओठियन
तब फेरि बोलल नीरम्मल सेनि रे वातय
आजु कहै सुनबह् ना सुबवा मोर निरम्मल
एठियन मनबह् काहुनवां रे हमा ऽ र ऽ
देख हम चोरीय ना कइलीय रे पचोरी
ना त आइके मरली अगोरिया मेनि रे सेन्ह ऽ
अपनेह् गाठिय रोकड़वा रे लगाइ क ऽ य
आपन जातियाह् बियहलीय रे कबीलाय
एमह कवन ना सुबवा क न क रे सान
नाहक देहलनि झगड़वा रे भिड़ाई (४५७०)
सुबवाह् हमरउ कसूरवा देखऽ हो नाहिनीं

ओहि दिन उलटि ना नेतवा जे मारे रे मंजरी
पँचरग फेंकति ओहरुवा जे देइ रे बाय
अब धन मूड़ियाह् निकालिये के बाड़ं रे झांकत
देखति बाड़इ नीरम्मल सर रे दार
आजु कहैं सइयाँह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलह् ना सिरवा कऽ मउ रे यारऽ
सइंयाह् अइसेह् ना तइसे जिउ रे बचनऽ (४४४०)

लोरिक और निरम्मल का युद्ध

अब नाहिं बचिहंइ जिनिगियाह् रे तोहाऽर
आजु कहैं अम्मर ना सुबवाह् आवै नीरम्मल
जेनकर खोजलेह् जोड़ियवाह् नाहिं रे बानऽ
ओनकर कहीय भिरितियाह् नाहिं रे बानी
बरम्हा से लेहलेन मीरितियाह् नाहिं रे बाई
ओहि घरी रगल ना ऊहवं हो रेंगवलऽ
नीकलि आयल लोरिकवाह् केनि रे पाऽसऽ
लोरिकाह् उठिकह् मारदवाह् लेइ ए ओठियन
अब फेरि बानह् करत कह् पर रे नाऽम
अम्मर देतयं आसिरवाह् बायं रे बाऽद (४४५०)
आजु भाई आखेह् आमरवाह् होइ ए रहब्या
तू फेरि जीयह् ना लाखवाह् रे बरीसऽ
तब कह् देसइ दुनीयवा कइ रे अइया
तोहरेह घेवरउ ना जघियांह् रे सरीरय
आजु भाई देखह् ना हलियाह् एठियन कऽय
अउ फेरि बानह् ना ममवांह् बउरे रायल
एन्हे लागल तारुन जोइयवांह् कई रे ख्यालऽ
अउ फेरि छोड़ि दह् ना डंड़ियाह् बीर रे लोरिका
लेइ जाइं किल्लाह् भोगहउ ना रनि रे वासय
तब फेरि बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका (४४६०)
निरमल मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
देखह् हम चोरीय ना कइलीय रे पचोरिया
ना त हम मारल अगोरियाह् मेंनि रे सेन्हय
अपनेह् गांठीय रोकड़वा जे देखऽ लगाई कऽ
सदियाह् करत ना जतियाह् बाड़ी गुवालय
एमंह कवन ना सुबवाह् क नक रे सानी

पहिलेहू देलेनि झागडवाहू रे लगाई
एतनाहू सूनत अहिरवाहू कइ रे बातय
निरमल ना देखइ ना झानस रे ज बातय
साचइ अहीरे क कसुरवा जे नाहि रे एठियन (४४७०)
सरबस मम्मइ क हुउवहू रे कसूरऽय
आजु कहँ सूबबाहू अगोरिया के मम्मा हुउवऽय
परजाहू करत ना सदियाहू बाइ बियाहुय
कउनो जो घटति रसदिया जे ओनहूय के
किलवाहू पर देतह ना सूबवाहू रे दियाई
ईजति बनलि ना रहति रे हमा ऽ र ऽ
आजु कहँ आवति वरतिया जे बा अहीरे क ऽ
अब होइ अइनीय अगोरियाहू एहि रे पा ऽ ल
मम्माहू हाथीयना घोढवा जे पर रे गहऽतऽ
अउ फेरि करतहू ना ओठियन रे मिला ऽ न ऽ (४४८०)
अब कइसे खटिय आपदवा जे मम्मा परत
लिखि कनि देतहू ना पतियाहू दव रे राई
लोरिकाहू खातइ गाउरवा जे रहतऽ घरवा
हाथ आइ के धोवतह अगोरियाहू तार रे पा ऽ ल ऽ
जेहर जेहर जातइ अहीरवा जे बीर रे लोरिका
मम्माहू करत बडईयाहू जात तो हा ऽ र ऽ
आजु कहँ एतनाहू ना बतियाहू लेइ ए कहलेन
आजु कहँ एतनेहू ना बतियाहू के उपरवा
अउ फेरि ठाढहू मारदवाजे उहा रे बाय
ओहि घडी गूनत ना रजवा जे बाय निरम्मल (४४९०)
दरियाहू करइ न मनवाहू रे गियान
आजु कने एमहं कऽसूरवा जे आहीरे क नाहिनी
मम्माहू क कवन जीयनवा जे भयल रे बाय
ऊ आपन जातीय कऽविलवा जे बाड रे बीयहले
अउ फेरि रूपियाहू लगवले बा ले ल रे का ऽ र
आजु कहँ आपन गावनवा जे लेइ रे जातं ऽ
मम्मा क कवन झागडवा से बाडइ रे काम
एहि मह आहीरे क कऽ सूरवा जे नाही हुउवंय
सरबस मम्मइ क हुउवहू रे कसूर
······सूबवाहू बाय निरम्मल (४५००)
कन्हवा पर धइलेहू हाजरियाहू बायं रे साग ऽ

ओहि दिन परगटि ना देबियाह् बाड़ भगउती
सुबवा के गईलि नाजरियाह् पर रे ठाड़ी (४६४०)
जउने घरी ताकह् ना अँखियाह् रे गुरेरी
लोरिके पजरेह् दुरूगवाह् बाइ रे माइ
दुरूगाह् रतनीय घंघरिया जे वाइ पहिरले
नाचति बाड़इ लोरिकवा कइ रे बाहंय

लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने के कारण लोरिक युद्ध में मृत

ओही घड़ी बोलल ना मुबवाह् बाइ निरम्मल
अहिरूय का एह कहींय ना का ए नाहि न
कुछु मोरे बूतेह् काहलवा ना बा नाहि रे जातय
भयवाह् परगटि ना देविया बा भगउती
नाहि हम देखीत ना खेतवा पर मनु रे साय
ओहि दिन तामस में अहीरवा जे आइ रे गयनऽ (४६५०)
ओहि दिन बतियाह् ना कइलेसि रे उतार
आजु भाई जांघेह् ना जोरवा जे हमरे रहिहंय
के हमरे भूजांह् रहीय नह् बऊ रे साय
· ···ना देबियाह् मोर भगउती
अब हम देखब ना खेतवा पर मनु रे साय
एतना जउ सुनलेनि ना मइयाह् मोरि दुरूगवा
पिंड छोड़ि के फरकेह् ना गइनीय रे बईठि
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे नीरमल कय
खींचत बानह् हाजरियाह् लेइ रे सांग
जउने घड़ी मारइं टिपसवा जे अहीरे कय (४६६०)
अहिरा थाम्हत ओड़नियांह् पर रे बाय
ओहि घड़ी ओड़न दोढ़नियां जे होइ रे गइनीं
रउवाह् झरिय गयल नाह् सइं रे सार
आजु भाई पखुराह् ददियाह् रे समइनीं
अंखिया से गइलि हारदिया जे छिति रे राय
ओहि घड़ी ठाढ़य आहीरवा जे गिरि रे गयन ऽ
ओहि जउं जिरवां ना बहतरि रे खेतार
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
अहिराह् ठाढ़ई परनवांह् चलि रे गई न ऽ
ऊहे भाई गयनह् ना खंड़ियाह् तर ढंरकाई (४६७०)

ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
रजवाह् चलल निरम्मल बाड़ रे जात
एकदम धइलेनि ना रहियाह् किलवा कऽय
उहे भाई जातय ना किलवाह् भंव रे नार
तब तक सूनह् ना हलिया दूरूगा कऽय
दुरूगाह् ऊठल भवनियां देख रे बानी
अब चलि गइलीय पलकिया किह रे ठाढ
ओहि घड़ी बोलति ना मइयाह् बा दुरूगवा
जउन भाई आदिय ना दिनवां क पुज रे मान
आजु कहैं सुनिलेह् ना धनवांह् तोयं मंजरिया (४६८०)
एठियन मनबेह् काहनवांह रे हमार
देख भाई लसियाह् ना बीगाडे ना अहीरे कऽय
एकर करेह् पाहरवाह् लेइ रे जाय
देखेह् दिनवाह् ना कउवा जे कुक्कुर देखे
रतियांह् देखेह् ना बंड़वाह् रे सियार
हम भाई जात बांइना पुस्तक पन्नित के
जाइ केनि देबइ साइतिया जे बिच रे लाय
अब नाही अइहंई ना मुबवा जे गाँव रे आनय
सचेह् भदरा मे पालकिया जे रहि रे जाय
देवियाह् ऊड़लि ना ओठियन सेनि रे बानी (४६९०)
पन्नित गइलीय मोहनियांह् लाल रे घऽरे
सोझई गइनीय पातरवा में माइ सकाय
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे नीरमल कऽय
नीरमल चढल चाननियाह् पर रे बाय
आजु कहें जाइ कह ना हथवा जे बाइ मीलउले
मम्माह् से कहत ना बतियाह् अर रे थाय
आजु कहैं मम्माह् ना मुनिल ऽ मोर मोलागत
कहैं तवनेह् ना दिनवां राम समइयां
के भाई ओहुय समइयाह् कइ रे हाल
ओहि घड़ी छूटनह् सीपहियाह् सुबवा कऽय (४७००)
नोकर चलि जाह् पन्नितवा दर रे बार ऽ
जाइकनि ना मोहनीय ना पन्नित के बलउब ऽ
पोथिय पतराह् ना ले लेह, अही रे साथय
कब केनि बाढइ साइतिया मंजरीय कऽय
हे राम राम राम रा ऽ ऽ म हो राम

तोहरइ मम्मइ क हउवंह्॒ रे कसूर
सूनह्॒ ना हलियाह्॒ ओठियन क ऽ य
सुववाह्॒ बोलल लारमवांह्॒ कइ रे बोल ऽ
आजु कहैं सुनबह्॒ अहीरवाह्॒ बीर रे लोरिका
देखि ल ऽ भाई बूढ़ई ना ममवा बा चिरि रे यायल
ओन्हे लागल तारून जोइयवाह्॒ कइ रे ल्यालय
अब छोड़ि देवह्॒ ना डंड़ियाह्॒ मंजरीय के
लेइ जाई किल्लाह्॒ भोगउ ना रनि रे वासय
एतना जब सूनत मरदवा बा बीर रे लोरिका (४५८०)
जरि मरि भयल ना दरियांह्॒ रे खंगार
अब कहैं सुनबह्॒ ना सूबवाह्॒ मोर निरम्मल
एठियन मनबह्॒ काहनवांह्॒ रे हमा ऽ र
जउन भाई ढेरइ ना ममवा का मोहिं रे होइहंय
आपन बहिन त्रिटियवाह्॒ दया निकाल
सुववाह्॒ लेइ जाउ ना किलवांह्॒ रे चढ़ाइ क ऽ
ऊय संग देखउ ना ओठियन रनि रे वास
एतना जब कहत ना बतिया बा वीर रे लोरिका
छतिरीय जरि मरि ना भयनह्॒ रे खंगार
ओहि दिन बातेंह ना बतवां जे मचल रे झगरवा (४५९०)
बतवा में लागीय झागड़वा जे तइ रे यार
······ना पयंतरा चलइ रे लगन ऽ
ओहि जउं जिरवाह्॒ ना बहतरि रे खेता ऽ रय
जइसेह चलइं पयंतराह खेतवा पर
जइसे भाई भादउं भंइसवाह्॒ मक रे नान ऽ
जेतनाह्॒ पेड़इ ना पतवाह्॒ परि रे जान ऽ
भयल जानह्॒ गरदवाह्॒ रे निसान ऽ
जउने घरी तेगंह्॒ छतिरियाह्॒ लेइ ए जूठन ऽ
दुन्नोंह्॒ अयनह्॒ आवरिया पर नगि रे चाई
ओहि दिन बोलल ना सुबवा बायं निरम्मल (४६००)
आजु भाई सुनबेह्॒ अहीरवा कइ ए बाऽ᳚ऽ
आंजु तुंय मनबेह्॒ ना मरबे तोइं रे सुबवा
जउन भाई तोरेंह्॒ अवरियां में आइ रे जाला ऽ
ओहि दिन बोलल मारदवा बा वीर रे लोरिका
निरमल मनबह्॒ काहनवांह्॒ रे हमा ऽ र
देखऽ आगेह्॒ ना घउवा जे ना चलइवा

ना त घाउ पीछेह् ना रखबइ रे गवांय
आजु हमरे गुरुह् क कीरियया जे हउवे ठानल
अगवांह् मारइ के लिखलई बाड़ ऽ तीलाऽक
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य (४६१०)
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हा ऽ ल

निरम्मल का लोरिक पर आक्रमण—
दुर्गा द्वारा लोरिक को सहायता पहुँचाया जाना

ओही घड़ी देखह् तमसवाह् छतिरी क ऽ य
उहे भाई खींचत हाजरियाह् बांय रे सांगी
अहीरे के मारत टिकसवाह् लेल रे का री
ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
दुरुगाह् आदीय ना दिनवां क पुज रे मान
उहे भाई चम्फाह् अहीरवा के वानी डंकउले
लेइ केनि थम्हलेह् आकसवाह् मेंनि रे वा ऽ
अब गीर लगाइं हऽजरियाह् लेइ रे सांग
उहे भाई चूड़इ ना चूड़वाह् होइ रे जानी (४६२०)
फेरि ठाढ़ भयल अहीरवा बा अंगवा में
अब सूबा देखई नाजरियाह् रे ऊठाई
ओहि घड़ी दूसर आवरियाह् बाइ रे मारत
अहीरे के मारत पेटसवाह् वाई लहाई
ओही घरी खेलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
अहिराह् बांवई तिरिछवा जे होइ रे जाय
आजु गिरि गइलि ना संगियाह् फेरि हजरिया
अब चुड़ चूड़ई ना चुड़वा जे होइ रे जाय
आजु लह् झंखई ना सुबवाह् राजा निरम्मल
अम्मर दांतन अंगुरियाह् बान चबात (४६३०)
आजु कहैं हो हो ना दइवाह मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मथवांह् तक रे दीर
आजु कहैं दुदुय आवरिया जे अमरे क ऽय
आजु भाइ बावइं तिरिछवा में होलि रे जायं
आजु बाबू एक्कइ अवरिया जे बचि रे गइलीं
एमंह दइयाह् लगावइं बेड़ा रे पार
कहवां तूं बाड़िउ ना मइयाह् मनियां भगउती
तनी एक चढ़ी नाजरिया पर हमरे जा

एठियन तूं मनबह् काहनवां रे हमाऽर
कहि दयाह् लोरिक बरूववा तोर रे उठिहंय
उहे भाई कटिहंय ना मथवा बरि रे हाऽर ऽ
छ दांई उड़ि उड़ि ना मुड़वा करी रे तीरथ
लसियाह् चलत पयंतरा पर रहि रे आजू
जवने घरी सतयें ना मुड़वाह् अहीरा कटि हैं
मुड़नह आवई इन्दरवाह् पुर रे धाम
ना भाई अइबे जइ टोप खून रे चूइहंय (४७८०)
तइ ठिन होइ हंइ नीरम्मल तइ रे यार
तब कहैं एक दू लोरिकवा क कवन रे गनती
लोरिकाह् लग जइहंई पुड़वाह् रे पचास
तबा नाहिं मारल ना निरमल रे मरइहंय
पिरिथिमी में तिन्निउ भुवनवां जे बांति रे जा

दुर्गा के प्रयास मे लोरिक जीवित

ओहि घड़ी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुरूगाह् चलनीय ना उहवांह् सेनि उतारी
एकदम अइनीय ना ओतार मोरत लोके
अब चलि अइनीह् ना जिरवाह् रे खेताऽरय
जाके भाई धरइं ना ओठियन देख ऽ रे दान ऽ (४७९०)
तब फेरि बोलति ना मइयाह् बा दुरूगवा
मंजरी जे मनबेह् काहनवांह् रे हम्मार
देखऽ फेरि हमहीय जानी ना की ए तांही
लारिकाह् जानइ मारमिया ना पावइ हमाऽर
ओहि दिन कानी कन गुरियाह् माई रे चीरि कऽय
लोरिका के छिरकति बदनियां पर माइ रे बाय
ओहि दिन ऊठल आहीरवा ज आंगरियाइ क ऽ
बोलत बानह् लारमवा क देख ऽ रे बोल
आजु कहैं हो हा ना देबी माई दुरूगवा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (४८००)
देबी हम अइसोय नींदरिया जे लागि रे गइलीं
खूब हम सूतल ना जिरवाह् देखु खेताऽर
तब फेरि बोललि ना मइयाह् बाइ दुरूगवा
बरूवा ते मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु तुय जवन सूतइयाह् सूतल रहलऽ

ओइसन सूतत मूदइया जे देख ऽ तोहाऽर
ओहि घड़ी सूनहू ना हलियाहू ओठियन क ऽ य
के फेरि ओहूय समइयाहू कइ रे हाली
पतराहू जूटल पन्नितवाहू कइ रे बान ऽ
साइति आइलि ना डोलवा क ऽ निअ रे राई (४८१०)
ओहि घड़ी बइठल ना सुब्बवाहू लेइये बान ऽ
ऊहे भाई देखहू साइतियाहू कइ रे हाल ऽ
पन्नित सुनबहू मोहनियांहू लेइय रे लाऽल
कइ दिन के आइलि साइतिया बा बियहीय कऽय
हमके तूं देबहू सरेखवाहू लेइ रे लाई
आजु भाई तीनिय ना रतिया तीन रे दीन
भद्दराहू परल साइतिया में नि रे बाड़्य
जउने घड़ी चउथाहू ना दिनवा जे चढ़ि रे जइहंय
अब सत घरियाहू ना दिनवा जे होइ रे जाय
ओहि घरी आइलि साइतिया बा मंजरी कय (४८२०)
मम्माहू लेइ आवऽ ना डोलवा तूं उठ रे वाय
ओहि घड़ी बतीसउ कांहरवाहू लेइ रे च ल न ऽ
सुववाहू हाथीय हउदवाहू कसि ए लीहलेन
दस पांच ले लेनि मनइयाहू रे लीआईं
रेंगल जानहू ना जिरवाहू रे खेताऽर ऽ
आजु भाई कूछुय ना दुरियाहू रहि रे गयन ऽ
न जरि गइलि ना डोलवाहू किह रे बाड़य
उहवां पर बइठल लोरिकवाहू बाइ देखाऽतय
ओहि दिन हहरल ना रजवा बा मोलागत
रड़ंवाहू सुनबहू महाउता हथिया कऽय (४८३०)
हथिया के ठाड़इ ना मलवा पेलि रे देबे
जीउ ले के भागींय ना किलवा भरेनारय
आजु मोर भयनेहू मूदइया जे भयल निरम्मल
आलर लेहलसि परनवांहू रे हमाऽर
कहलेसि मरलींय मूदइया जे खेतवा पर
लेइ आवा मम्माहू ना डंड़िया जे उठ रे वाय
तवन भाई बइठल अहीरवा बा डांड़ी अगोरि कऽय
केकर आइलि मउतिया वा नगि रे चाय
आजु कहँ तवनेहू ना दिनवांहू राम समइयां
हथियाहू कसेहू कसउवांहू किलवा में (४८४०)

कहलेनि रामइं ना राम गुन हो गावल
किह राम भजलींय ना नउवां हो तोहाऽर
ओहि फेरि लेहल ना नउवां जे रामवा कऽय
छन एक भूलीय गईलवा बा दुख रे भार
ओहि दिन तवनेंह् ना दिनवांह् राम समइया (४७१०)
की फेरि ओहूय समइयन कइ रे हाल
ओहि घरी पन्नित मोहनियां जे चलि रे अयन ऽ
चलि अयन राजाह् मोलागति दर रे बार
ओहि दिन जाइकह साइतियाह् बायं रे देखत
कतव नाहीं हेर लेह् साइतियाह् जे बानी देखात
देवियाह् भदरांह् सहितिया में डालि रे देहलेन
अवहींय साइति नाहिं इहंवा जे बानी देखात
आजु भाई तीनिय ना रतियाह् तीन रे दीना
चउथा दिनवांह् ना चढ़िहंइ लेइ रे आज
जउने घड़ी दमइ ना बजवाह् दिन रे चढ़ि हंय (४७२०)
तब फेरि आईलि साइतियाह् लेइ रे बाय
ओहि घड़ी ओठिन ना डंड़ियांह् मंजरी कऽय
लेइ जाह् किल्लाह् भोगह् तूयं रनि रे वाऽस
ओहि दिन बोललि ना धनवा बाइ मंजरी
दुरूगाह् बोलइं ना लारमवां कइ रे बोली
मंजरीय देखेह् ना लसिया लोरिके कय
कइसेन होवइ ना मटिया रे खराब
आजु कहैं दिनवांह् ना हंकने कउवाह् कुक्कुर
रतिया के देखबेह् ना बंड़वा रे सियारय
हमहूंय जातइ इन्दरवाह् पुर रे बाड़ी (४७३०)
जाइ कनि फुंकि देब ना हमहूं इन्द रे रात
आजु कहैं बरम्हा क ऽ जातनवां कइ रे घालब
तब जनि हइं छोटिय दुरूगवा जे मोरि रे माय.
ओहि दिन ऊड़ल ना मइयाह् बायं भगउती
एकदम ऊड़लि इन्दर वाह् पुर रे जानी
जाइ केनि फुंकलेनि ना मुंहवा फारि रे जाई
जेकरा भाई सोनेह ना नीय इन रे रासन
जाइ कनि गीरत कोइलवाह् रे खंगारय
ओहि दिन वरम्हाह् का जरइ लागल भगइया
अब बरम्हाइन का लहराह् रे पटोरय (४७४०)

देबियाह् डललेनि हिंडोलवाह् नीबिया में
झुलि झुलि गाइति मऽउजवा में बानी रे गीतय
ओहि घरी ऋूटनेंह बरम्हवा क बर रे म्हाईन
ननदि तोहरइ बीरनवां जे देखऽ रे हवंय
आपन तूं त लेनह् लहरियाह् रे बटोरी
ओहि घरी बोललीय ना मइयाह् मोरि भगउती

लोरिक को जीवित करने के लिए दुर्गा द्वारा उपाय रचा जाना

दुरूगाह् बोललींय ना बतियाह् अर रे थाई
आजु कहँ सातइं बहीनिया जे माई दुरूगवा
बरम्हा जी देहलेन मिरत लोकवांह् रे उतार
तब का दाधन क ओतनवां जे मिलि रे गयल (४७५०)
हमकेह् खोजलेह् ओतनवां जे नाहि रे बाय
आजु कहँ टूटहा बरूववा जे अहीरे पवंली
तवन बरूवा जूझल ना बानह् रे खेताऽर
ओहि दिन अम्मर बरूववा के कइ रे देब ऽ
तब हम लेईं लहरिया जे आपन बटोर
ओहि दिन बोलली बरम्हवा क वर रे म्हाईन
नऽनदि मनबह् काहनवांह् रे हमा ऽ र
आजु कहँ मीरित घटइबइ नीरमल कय
लिखबई लोरिक बरूववा के तोरे रे हांथ
बाकी भाई आपन लहरिया जे माई पटोर ऽ (४७६०)
एतना जिन करह् जाचनवां जे देख हमार
तवनेह् ना दिनवांह् राम समऽयां
देबियाह् गइनीय इन्दरवाह्पुर रे धाम ऽ
देखिल ऽ जे इन्दर ना पुरवाह् कइ कचहरी
बरम्हा जी बइटल कचहरीय पर रे वान ऽ
ओहि घरी देखइं ना मीरित नीरमल कऽय
काइ भाई खोजलेह् मीरितिया जे नाहि रे बाड़्य
जब उहाँ अम्मर बरम्हवां जे कइ रे दीह लेन
तव राजा लेलेसि पिरिथिमी घरे रे पावय
ऊहे कहँ हेरलेह् मीरितिया जे ओकर रे नाहिनीं (४७७०)
एहि जउं नागर अगोरिया अन रे पाल य
ओहि दिन मूनह् ना देबिया माई रे दुरूगा

एकदम गईलि अंगनये रे सकाई
हथिया से उतरल ना रजवांह् बांड़े मोलागत
एकदम चढ़ल चाननियां पर बांड़ रे जातय
जहवां पर बइठल भायनवांह् बा नीरम्मल
रोइ रोइ कहत ना बतियाह् लेइ रे बान ऽ
भयनेह् कहिया कऽ मूदइया तोहार रे रहलीं
आजु मोर देतह् ना जिनिगी मर रे वाई
कहलऽ जे मरलीं मूदइया खेतवा पर
ऊहे भाई बइठल बा डंड़िया रे अगोरी
एतना जो सूनत ना रजवाह् बा नीरम्मल (४८५०)
ऊहे भाई दांते में अंगूरिया जे धइ रे लेह्

लोरिक और निरम्मल का युद्ध—बार बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल का जीवित हो जाना

आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलार
घरे हम बियही क काहनवां जे मेटि कऽ अइली
कइसनि बाड़ई मउतियाह् बाइ देखात
आजु भाई मऽरल मूरूदवा बा उठि के बईठल
एमंह आयल अऽदिनवां जे निअ रे राय
ओहि घड़ी एतनाह् जउ बतियाह् बीर रे सुन लेन
फेर भाई लेहलें हाजरियाह् लेइ रे सांगी
उहे भाई उतरंइ ना सिढ़िया जे कीलवा कऽय (४८६०)
सोझइ जिरवांह् ना लेहलेन तड़ि रे याई
ओहि दिन बोलल मरदवा बा बीर रे लोरिका
बियही तें मनबेह् काहनवांह रे हमाऽरय
देखु भाई जवन नीरम्मल आयल रे रहनऽ
फेर निरमल आवत बानइ नह लेइ ए दम्मय
ओहि दिन बोलल ना बतियाह् रे दोगाहें
संगीह् आवह ना खेतवा पर नगि रे चाई
तोहार हम तीनिय आवरिया जे बांड़ा रे थम्हले
पक्काह् खाये अमरवाह् तोहऽर रे घावय
संगीय हमरउ आवरियाह् तूं अंगेजऽ (४८७०)
अब कचलोइयाह् चलीय नह् तर रे वार

जउने घडी रेगल ना एकदम रे रेगावल
अब चलि गयनह् ना डडियाह् के नगीच
ओहि दिन ऊठल मरदवा बा वीर रे लोरिका
दरियाह् बोलत ना बेडवाह बाइ जबाब
आजु भाई ओसरि ओसरिया जे लेल रे करले
ओसरी पर कुइयाह् भरति बाइ पनि रे हाऽर
आजु भाई पक्काह् ना घउवा जे सूबा रे थम्हली
अब कचलोइयाह् ना थम्वह् ना हम्मार
जउने घडी मूरूकि ना फेकले जे बाइ मीयनवा (४८८१)
अउ दहतगीय तानत बाह् तर रे वार
जेकर भाई चारीय अगुरवा ज भऽनी रे बहरे
जेकर ताइक आकसवा मे चलि रे जाय
ओहि घडी निचवाह् ना मरले जे बा दावन्हरा
पोरसन गऽलीय लावरिया जे गुमु रे वाय
आहि घरी घुमि गईलि मलकिया जे नीरमल कय
खडिया गयनीय गरद मेह् र बिसाय
ऊहवा से ऊडल ना मुडवा बा नीरमल कय
एकदम बद्री ना असरम चलि रे जाय
जाइ कनि मारइ ना गातवा ज समुदर मे (४८९०)
सब कनि करत देवतवन सनि र भट
आजु भाई उहह् सेनिय ना मुडवा रे चलनऽ
धरियाह् चऽलति अगारियाह् दख रे वाय
धरियाह् काटत पयतरा बा नीरमल कऽय
फेर मूड आयल गऽरदन पर गय न बईठि
ओहि दिन डाकीय चम्फवा ज अहीरा मरलेस
ऊहे मुड ऊडल ना फेरिया बा चलि रे जात
एकदम गयनह् ना ठाकुर जिय ऐ मुडवा
जाइ केनि ले लनि ना गोतवाह् रे लगाय
घुमि घुमि करइ ना भटिया जे देवतन से (४९००)
फेरि भाई आवत अगोरिया ज बान रे पाऽल
ओहि घरी बइठीय गरदने पर लेइ रे गयनऽ
अहीराह् डाकीय चम्फवा जे फेरि र लेइ
ओही घरी तीसरह् ना मुडवा जे उडि रे गयनऽ
एकदम कासीय बिसेसर चलि रे जाय
जाके भाई मरलेनि ना गोतवा जे गगा मे

देवतनि के कइलेनि ना भेंटिया जे घूमि रे घूम
उहवां से ऊड़ल ना मुड़वा बा नीरमल कय
आइ केनि गयल गरदनेह् रे बयठार
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे अहीरे कऽय (४८१०)
चम्फाह् डांकीय ना गयलेसि रे अवार
जउने घरी चउथाह् अवरिया जे लागि रे गइलों
उहे मूड़ नीकलि ना गायाह् जी रे जाय
जाके भाई मारइ ना गोतबा जे गंगिले में
चलि केनि करत देवतवन कनि रे भेंट
उहे भाई भेंटइ दीदरिया जे कइये लवटल
धरियाह् चलति पयंतरा जे इहां रे वाय
रूप सेनि बईठीय गरदने पर देख रे गइली
अहीराह् डांकीय चम्फवा जे मारि रे दे
जउने घरी पंचवाह् ना घउवा जे मारि रे देहलेन (४८२०)
ऊहे मूंड़ ऊड़ल ...रवाह पुर रे जाय
जहवां पर लागलि कचहरी बा बरम्हा कय
ऊहे मूंड़ गयल कचहरीय मेंनि रे वाय
आजु कहैं सुनवह् ना बरम्हाह् मोर नारायन
एठियन तूं मनबह् काहनवाह् रे हमाऽ र
हमकेह् कल्हियइ अमरवा जे कइकऽ भेंजलऽ
आजु काह् कइलह् ना दसवाह् रे हमार
आजु बरम्हा एहर ना मुंहवा जे कइ घुमावंय
मुड़वाह् आगेह् भयलवा जे वाइ रे जात
का बरम्हा अइलऽ जातनवांह् रे हमाऽरय (४८३०)
बीपति लिखलह् ना तोहउंय रे हम्मार
ओहि दिन बोलनह् बरम्हवा जे लरमें कय
दरियांह् करइं ना बेड़वाह् रे जबाव
अब सुनि लेबह् ना मुड़वाह् जे नीरमल कय
एठियन तू मनवह् काहनवांह् रे हम्मार
अइसेह् एइ दांई न सेई धई आइ रे गयलऽ
ए दाईं फेरिय ज तोहऊं से आई रे जा
जई ठोप चुहंइ ना खूनवा जे धरती में
तई ठेनि होइहइं नीरम्मल तई रे याऽर
तब कहैं एक दू लोरिकवा के का ए कही (४८४०)
लोरिकाह् लगि जइहंइ पुड़याह् रे पचास

आजु भाई तब्बों ना नाहींय ऊ मरइब
नीरमल तूं मनबह् काहनवांह् रे हम्मार
उहवां से ऊड़ल ना मुंड़वाह् नीरमल कऽय
आइ कनि बइठल गरदनेह् पर रे बाय
अहीराह् डांकीय चम्फवा जे देख रे मरलेस
फेनु उहै ऊड़ल सरगवाह् ओरि रे जाय
ओहि घड़ी धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगवा
डांटति बानीय बरूववा के ओहि रे दम्म

निरम्मल धराशायी—पत्नी जयकुंडल को पति की मृत्यु का संकेत प्राप्त

आजु कहैं सुनबेह् बरूववा जे फुल रे झरूवा (४९५०)
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हम्मार
एहि दांई जउ भाई मुंड़वा जइहइं इन रे रासन
अब्र तोहार लेइहइ खबरिया जे लेल रे कार
ओहि घड़ी डांकल चम्फवा बा बोर रे लोरिका
आधे लेहलेस सरगवा जे मूंड़ पकड़
आजु कहैं ले लेह् ना मुड़वा जे नीरमल कय
धरती में देलेसि ना मुड़वाह् रे चुवाय
ऊहे भाई संचेह् ना मुंड़वा जे रहि ए गयनऽ
लसिया काटति पयंतरा जे देख रे बाय
आजु कहैं बरीय छमिछवां जे के नि ए बीतल (४९६०)
लसियाह् गीरलि धरतिया मे भह रे राय
जउने घरी गीरल ना लसिया जे नीरमल कऽय
बिगहा भरे में जमीनिया जे छेंकि रे लेय
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
जवन भाई आगम ना घरवांह् देइ रे अयनऽ
आजु भाई नीकललि ना रनियाह् जय कुंडल
आजु भाई कच्चाह् घईलवा जे कच्चा रे टूटल
लेइ कनि फानति इनरवा मे धन रे बानी
आजु भाई चूड़इ ना चुड़वा जे सुत रे टूटनंऽ
पनियाह् चूवत घड़िलवा जे गलि रे गयल (४९७०)
रनियाह् दवरल गवंखवा में चलि रे गईल
डब्बाह् देखइ ना दुधवाह् कइ ऊघारी
दूधवाह् खूनई समानवा जे होई रे गयल

तुलसीय गयल बा बिरवाह् कुम्हिरे लाई
ओहि घड़ी ठाढ़ेह् धऽरतिया गिरि रे गईलि
ओहि घरी रोवइ ना रनिया जय रे कुंडल
पटकति बानीय धरतियां रे कपाऽरय
आजु कहैं अम्माह् ना सुनिलऽमोर रे सासू
एठियन तूं मनबह् काहनवां रे हमाऽरय
अब तूंय धनइ ना पुंजिया आपन रे देखऽ (४९८०)
आपन देखह् ना किलवा भवरेनाऽरय
आजु मोरे जूझिय गयल बा सइयां एठियां
जाइ कनि नागर अगोरिया दइ रे पाऽल
हमहूंय नागर अगोरियाह् बाड़ी रे जातय
सइयां के खोजब ना लसियाह् लेल रे कार
सइयां क लेइकह् ना लसियाह् ओहि अगोरिया
हमहूंय लेइकह् सतियवा जे होइ रे जाव
दुनों ना दिन दिन क ऽ टुटि जाई कल रे कनिया
बरम्हा जी एतनई लीखनियां जे देले रे बाय
ओहि घड़ी सुनह् ना हलियाह् रनियां कऽय (४९९०)
एकदम हलिल ताबेलवाह् मेंनि रे बानी
जाइ कनि खोलति न घोड़ियाह् बा बिलाती
घोड़िया क आखर पाखरवाह् कसि ए लिहलेन
जिरहीय बक्सर ना मुहवांह् देइ लगामी
आजु भाई आपन सामनियांह् लेइ ए लिहलेन
धोतियाह् धरल ना दरवाह् रे बाड़य
चुनि कनि लेहलेनि ना धोतियाह् हंथवा में
डांक केनि भईल ना घोड़िया पर असरे वाऽरऽ
आजु कहैं तनिक आसनवां जे बा छुवउले
घोड़ियाह् निचवांह् ना छोड़लेह् बा धरतिया (५०००)
उपरांह् छोड़ीय देलेह् बाह् अस रे माऽनऽ
आजु भाइ बादर ना रेखवांह् चढ़ि रे जाती
धियवा के हावह् खियवती बा चलि रे जाती
किह् भाई घरीय छमिछवाह् केनि रे भीतर
जाके घोड़ी चूवलि ना जिरवाह् रे खेताऽर
जहवां पर बइठल आहीरवा जे बाइ रे लोरिका
ओहि दिन ऊतरलि ना रनियां जे देख रे बाय
जाइकनि ऊतरि ना घोड़वाह् सेनि रे गइलीं

घोड़वा के बान्हत ना बेड़वा के बाड़ रे जाय

निरम्मल की पत्नी जयकुंडल का सती होना

जाइ कनि रेंगल लोरिकवाह्‌ किह रे गईल (५०१०)
हाथ जोड़ि के बोललि ना बतियाह्‌ अर रे थाइ
आजु कहँ भइयाह्‌ ना सुनि लह्‌ बीर रे लोरिक
एठियन मनवह्‌ काहनवांह्‌ रे हमाऽर
कहवां पर बाड़इ न लसियाह्‌ सइंया कऽय
हमइं लासि देतह्‌ ना तुहंउय रे बताय
हमहूंय लेइकह्‌ ला लसिया जे सती रे होबय
एही भाई नागर अगोरिया जे दइउ रे पाऽल
ओही घरी बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
रनियां ते मनबेह्‌ काहनवांह रे हम्मार
आजु भाई हयकन ना वोलिया जे जिन रे बोल (५०२०)
तुय भाई लगबह्‌ भऊजियाह्‌ रे हमाऽर
तब फेरि बोलल ना रनिया बा जय रे कुंडल
दरियांह्‌ करति ना बेडवांह्‌ बाइ जबाव
आजु भाई गउवांह्‌ ना घरवा क बहिनि बिटियवा
आजु भइया लागब बहिनियांह्‌ रे तोहाऽर
आज तूंय देतह्‌ ना लसियाह्‌ रे बताई
हमहूंय लेइकह्‌ सतीयवा जे होइ रे जाब
ओही घरी बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
अब धन मनवह्‌ काहनवांह्‌ रे हमाऽर
आजु भाई मारेह्‌ ना लसिया के देख रे मरने (५०३०)
कहीं नहीं सूझत अगोरिया जे दइउ रे पाऽल
कइसेह्‌ जानब ना लसिया जे तोरे सइयां कऽ
कइसे हम देवइ ना लसिया जे तोहंय बताय
ओंहि घरी बोललि ना रनियां बा जय रे कुंडल
रोइ रोइ कहति ना बतिया बा अर रे थाई
अहिरूय अइसन ना तइसन सइयां नाहि रहनऽ
सइयांह्‌ हमार रहनह्‌ दइयवाह्‌ कइ रे लाऽल
आजु भइया सइयांह्‌ ना केनीय रे मरबवां
तोहार जानत जीनिगियां जे देख रे होइहूंय
अब नाहि बिसरीय ना लसियाह्‌ सइयाँ कऽय (५०४०)
तनी एक देबह्‌ ना लसियाह्‌ रे बताई

ओहि घरी रेंगल अहीरवा बीर ए लोरिका
रेंगल जालह् ना लसियाह् केनि रे पास य
मुड़ियांह् निरमल कऽजाइ कह् बाइ बतावत
लसियाह् बिगहा ना भरवा में बाइ ए गीरल
रनियांह् मारत काछरिया धोति सकेलो
मुंड़वा लेलेह् खोंइछवा मेंनि रे बाड़ऽ
एक हाथ पेलति ना गोड़वा बाइ बटोरी
एक हाथ पेलति पखुरवा तर से बानी
ओनकेह् लेलेह् ना सोनवां में हलि रे गईलि (५०५०)
मलि मलि अपनेह् वदनियां बाइ नहाती
नीरमल क देलेसि ना बदनीय नह रे बाई

जयकुंडल पति के साथ जल कर भस्म

ऊहे भाई मुड़ियाह् ना ओनकर नह रे बाइ कऽ
एकदम नीकलि ना डंडवा भइल रे ठाढ़ऽ
आज़ु कहै सुनबह् ना भइयाह् मोर लोरिकवा
एठियन तूं मनबह् काहनवांह् रे हम्मार
देख ऽ भइया ऊखड़ल बा बेलवा जे पेड़वा में
खंड़ियाह् हीचह् ना कटिया के देबय दो माऽर
आजु भाई टुकइ ना टुकवा जे चुड़ रे कइ दऽ
हमके तूं बोझिदह् ना चितवाह् एहि रे दम (५०६०)
ओहि घड़ी चूडइ ना चुड़वा जे कइये देहलेन
चितवाह् बोझत ना ओठियन बाडे बलाय
आजु भाई लेलेह् ना लसिया जे रानी जयकुण्डल
जाइ केनि बइठल पलथिया ज बाड़े रे माऽर
आजू कहें पल्थीय ना लसिया जे धइये लिहले
मुड़ियाह् धइले ना लसियाह् पर रे बाय
ओहि घड़ी बरम्हाह् पर ध्यान जे धइ लगउलेन
आंचर देलेसि ऊपरवां जे फइ रे लाय
आज़ु कहैं सुनबह् ना बरम्हाह् तूं नारायन
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हम्मार (५०७०)
जउ हम एकइ ना बपवा क होबय रे बिटिया
के फेरि एक्कइ पुरुसवा क बहु रे यार
बरम्हां तूं छोड़ि दया खंगरवा जे सरगे से
हमहूँय लेइकह् सतियवा जे होइ रे जाब

एतने पर खोल्हइ न सतियाह् लेइ रे बानऽ
खंगराह् गीरल बरम्हवा क देख रे बाय
आंचर खोलिकह् ना चितवा में चलि रे गयनऽ
अगियाह् बमकलि ना सोनवाँ जे बानी रे तीर
दूनों मीला जरिकह् कोइलवा जे होइ रे गयनऽ
तुरतेंह ले लेह् जानमवां जे ओहि रे दम्म (५०८०)
आजु कहैं सतियाह् बइरियाह् पेड़ रे भयनऽ
दहिनेह बानह् नीरम्मल सर रे दाऽर
बायें बले बाड़इ ना रनियांह् जय रे कुंडल
कब्बों नाहीं फरइ ना फुलवा जे ओमें रे जाय
जवने ना दिनवांह् राम समइयां
किह् फिरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलय
ओहि घड़ी रोवत ना सुबवाह् बाइ मोलागत
पटकत बानह् धरतियांह् रे कपार य
आजु मोरे तेजलि ना रजियांह् गइल अगोरिया
मजरीय रानीय तेजलवा बा नाहि रे जातय (५०६०)
आजु भाई नान्हें ना सुगियाह् रे जीयवलीं
भेंइ कनि देहलीय रहिलवाह् कइ रे दालऽ
आजु भइया कांहह् क चढ़ल ना दूरन देसिया
आजु मोरे चिड़ियाह् उड़वले बा चलि रे जातय
एतनाह् कहि कहि ना सूबवाह् रे मोलागत
किलवा पर कइलेस रोदनवा जे बरि रे याऽर
ओहि घरी मंतिरीय ना मंतवा जे ठठं रे लगनऽ
चुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् अर रे थाय
आजु भाई राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (५१००)
अइसे नाहि मरलेह् आहीरवा जे देखऽ मरइहंऽय
नात अहीर जरिहंइ अगिनियां क देख रे धार
ओनकेह धोखाह् न पटिया से बल रे वइबऽ
अब भाई मरबह् ना किलवा जे भंवरेनार
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
ओहीय नागर अगोरियांह् कइ रे हाऽल
ओही घड़ी सूनह् ना ओठियन कय हवाऽल
आजु भाई देखह् ना हलिया मंतिरी कऽय
मतवाह् ठटइ ना चुगुला हो सोनाऽर ऽ

आजु कहें राजाह्ना सुनिलह् मह् रे राजा (५११०)
एठियन मनबह् काहनवांह् तुयं हमाऽर
आइकेनि महराह् अहीरवा क बल रे वइब्या
महराह् चलि जाय ना जिरवा रे खेतारय
जाइ कनि कहउ लोरिकवा से समुरे झाई
आजु कहैं सधुवाह् ना सुनिलह् बीर रे लोरिका
एठियन मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
देखा भाई मंजरीय ना फेरि करे अइहंई नईहर
ना त लोरिक तूहइं करई नह समुरे रार
आजु भाई अइसन ना कइलह् लेइए बतिया
अब तोहार जेठरीय ना जरी कईलि बलाव (५१२०)
चलि केनि कइलह् मउजवाह् रे आना ऽ रइ
सब केनि कइ द्याह् पालगिया जे पर रे नाम
ओहि घड़ी मलियाह् ना मतवा जे ठटय हो लगनऽय
चुगुलाह् देहलेनि ना मतवा रे उतारी
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् तू मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवां जे तू हूं हमार य
देखऽ अइसे अहिराह् ना मरले से देखऽ मरइहंय
नात ऊत जरिहंइ अगिनियन कनि रे धार ऽ
आजु भइया लोहइं उठनवा जे लोह रे बईठन
लोह ओनकर हंवहं पारनवन कनि अधारय (५१३०)
ओह भाई धोखवाह् से किलवा जे बल रे आवा
हनि केह् मारह् ना किलवाह् में नि रे बान्ही
एतना ज कहत ना ओठियन रे मंतिरी
सूबा के गयनह् ना मनवां जे देखऽ बईठि
ओहि दिन उलटीय हुकूमिया जे छोड़ि ए देहलेन
ओहि दिन छूटनह् सीपहिया जे देखऽ रे जाय
ओहि घड़ी गयनह् सीपहिया जे महरे घरे
जाइ कनि कहलेन महरवा से समुरे झाय
आजु भइया सुनबह् आहिरवा जे तूं ए माहर
एठियन तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (५१४०)
देखऽ भइया सूबाह् बलउवा जे तोहार ए कइलेन
चलि चलऽ तोहउं ना किलवा जे भंवरेनाऽर
आगे आगे रेंगल ना मलवा जे बाइ ए मऽहर
पीछे पीछे रेंगल सिपहिया जे बान रे जात

जउने घड़ी चढ़ीय चाननियां पर रहि रे गयनऽ
जाके भाई नीहुरि करतवा बा पर रे नाम
अब मोलागत आसीर न बादवा जे राजा रे देंलय
महराह् कइलीय ना तोहरउ जे देखऽ बलाव
आजु भाई कोइलाह् अगोरिया में बोइए गयनऽ
केहू नाहि बचि गयल करधनवां जे बान ऽ जंवान (५१५०)
तब कहऽ बीनरह् मारदवा जे कइ ए तीवई
गल्लीय गल्लीय अगोरिया में डिड़ि रे यात
नात भाई मंजरीय ना करइ जे अइहइं नइहर
नात लोरिक कईय आवइ ना ससुरे यार
कहि देबऽ छवउ बिटियवा जे जवनरे जेठ सरि
किलवा में तोहरउ ना कइले जे बान बलाव
लहुरा बहनोईय ना हउवा जे तू छहोन कर
चलि कनि कइलह् पलगिया जे पर रे नाम
ओहि घरी ऊऽल महरवा जे ओठियन से
किलवा से ऊतरल ना जिग्वाह् पर रे जात (५१६०)
जहवां पर बइठल मारदवा बा बीर रे लोरिक
पल्थी पर धइलेह् बीजुलिया बा तर रे वार
ओहि घरी पऽरलि नाजरिया बा ओठियन से
अउ फेरि बोलत लारमियां क बाइ रे बोल
आजु भाई धनवांह् ना मुनिलह् मोर बीयहिया
एठिशन मानह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु तोहार बाबिल ना किलवा से आवत रे वानऽय
सोझइ आवत ना डंड़िया बा सोझि रे याय
ओहि घड़ी ऊठल मारदवाह् बीर रे लोरिका
उठि कनि भयल बानह् ना तई रे याऽरय (५१७०)
ददुवाह् भयल बलउवा बा कीलवा पर
चलि कनि कई आवा ना बिटियन सेनि रे भेंट
नात आई मंजरीय ना बिटिया जे करइ रे नइहर
नात भाई लोरिक ना करबह् ससुरे रारी
चलि केनि छवहुन से भेंटवा जे कइए लेब्या
सब केनि कइ दह् पलगियाह् अस रे वानय
एतना जब कहत ना बतिया जे बायं ए मऽहर
दूनों भाई रेंगनह् ना ओठियन सेनि रे बाय
सोझइ रेंगल ना किलवा जे ओरि रे गयनऽ

आगे आगे रेंगल माहुरवा बा चलि रे जात (५१८०)
जउने घड़ी हलि गयनऽ पहिलह् रे डेवढ़वा
अब फेर गयनंह केवड़वा जे ओठ रे घांय
जउ भाइ दुदुय मूसरवा जे लोहवन कय
अगरीय गईलि केवरिया में पहिरे राय
जउने घड़ी दुसरेह् डेवढ़वा में जाइ के निकलयं
गुम्नवांह् चारिउ बुर्जिया पर तइ रे यार
जउने घरी छूटइं तूपकियाह् कोनवां से
अउ फेरि दुहगाह ना परगटि भइल रे बाय
बरुवा के ऊपर आंचरवा बा ओढ़वउले
देहियां पर गीरत ना गोलवा जे भहरे राय (५१९०)
जइसे भाई पानीय चीपउरा जे होइ रे गीरय
ओइसन गीरल ना गोलवा जे भहरे राय
ओहि घड़ी उठि गयल मारदवा जे ओठियन से
अउ फेरि गयल ओठिन बाह् अकु रे लाय
मनवां में गूनत अहीरवा बा बीर रे लोरिका
आजु भाई बाड़ेह् कुसुतिया में परि रे जाय
जब हम अक्सर ना जीउवा जे लेइ कह भगबय
बिहनह् निंदवाह् ना होइहंइ रे हमाऽर
आजु भाई संघेह् ससुरवा तुंय लियवल्या
आजु फेरि देहलह् ना किलवा में मर रे बाय (५२००)
आजु कहीं दाबइ ना सासुर महरे के
कखियां तर दाबत लोरिकवा जे देखऽ रे बाय
ओहि घरी ऊछरल आंगनवा से बीर रे लोरिका
चम्फाह् डांकीय आकसवा में चलि रे जाय
लेके भाई गीरल ना नरवाह् एहि रे पारय
जेकर भाई नावइं गूदरिया जे परल रे खेत
ऊहवां से ऊठल मारदवा बा बीर रे लोरिका
झारि झुर धूधुर सासुरवा के बांड़ रेगउले
अपनेह् रेंगल ना जीरवाह् जाइ खेता रय
जाइ केनि गयल ना डंड़ियाह् केनि रे पासय (५२१०)
उहवां से लवटल मारदवाह् फेरि रे गयनऽ
एकदम महर अहीरवा के दर रे बारऽ
जहवां पर बतिसउ कहंरवां बा बइ रे ठावल
ओनकर कइलेन ना ओहि दम रे पुकारय

कहंराह् लेलेह् ना आपन रे समानी
आइ कनि भयनंह् पालकियाह् किह् रे ठाढ़य
ओहि घड़ी ऊठलि ना डंड़ियाह् बा मंजरीय कऽय
चलि आइलि सोनह भदरवांह् केनि रे तीरय
झिमला कइ लागलि कीसितिया बा लेइ कंररवा
अउ फेरि चऽढ़लि ना डंड़ियांह् ओहि रे दम्मय (५२२०)
ऊय भाई बइठल लोरिकवाह् फुनि रे बानऽ
झिमलाह् खेइ कह लगवले बा ओहि रे पारऽ
उहे डांड़ी ऊतरलि धरतियाह् रे कसिहरां
झिमलाह् आगेह् केवटवा जे घूमत रे बानऽ
तब तक ऊतरल लोरिकवाह् बांय रे जात य
लोरिकाह् पेलई ना जेबवाह् मेंनि रे हाथ य
कढ़लेसि साठइ मोहरवाह् कइ रे हाऽर
आजु कहैं मुनिलह् झीमलवा जे मोर रे केवट
तोहें भाई कुछुव ईनमवा जे नाहिंनी देब
आजु ईहइ साठिय मोहरवाह् कइ रे हारवा (५२३०)
ईय गुनि लेबह् खेवइया में आपन रे थाम
आरे ऊठलि ना डड़िया बा मंजरीय कय
अब घइ लेहलेह् उतरवाह् कइ ए राह य
जवने घड़ी आधेह् कवइयाह् चढ़ रे लगन ऽ
थोरह अउर करीबवा जे रहि रे गयन ऽ
तब फेरि बोलति ना धनवां जे बाइ मंजरिया
सइयां तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
देख फेर हमई ना करई के बाइ अब नइहर
ना त सइयां तोहइं करह् बह् ससुरे रारय
अब कुछ कई दह् सनाकत सतजूग कऽय (५२४०)
जउने में देखइ कलउवाह् कइ ए लोगय
एतना जब कहति ना बतियाह् धन मंजरिया
अहीराह् बोलत लारमवांह् कइ ए बोलऽय
बियहीय कुछुय समनियां जे नहिं देखाती
कहवां पर करीयं ना हमहूं आपन रे चीन्हऽय
एठि किन ईहइ ना ठोकवाह् बाय देखातय
कहीं एहि परेह् ना गिरि जाय तर रे बारय
ओहि भाई बोललि ना धनवां बाय ए मांजर
तब सइयां कहां खोजबह् बर रे वारय

आजु तूंय मारहू् ना खंड़िया रे दोगाहे (५२५०)
अब दुइ भागेंहू् गईलि ना ओलि रे याई
ओहि घड़ी सूनहू् ना हलिया जे अहीरे कऽय
ठाड़ा होइ के मुरुकत बानइ नाह तर रे वाऽर
जेनकर भाई चारीय अंगुरवा जे भइनीं रे बाहर
जेकर ताड़क आकसवा बा चलि रे जाय
आजु कहैं निववाहू् ना मरले जे बा दावन्हरा
पोरसन गईल लावरिया बा गुंमुरे वाय

मंजरी के साथ लोरिक की घर वापसी

······गीरलि ना खंड़ियाहू् पथले पर
टुक्कह गयल खालंगवा रे फेंकाय
ओहि दिन बोलल ना धनवां जे बाइ मंजरिया (५२६०)
संइयां तूं मनबह काहनवांहू् रे हमाऽर
भाई देखऽ अइसन ना अइसन रे टुकड़वा
गीरल बानहं पाहरवांहू् छिति रे राय
एमे सइयां कवन सनाकति तोहरे रे बानी
का भाई देखिहंऽ कऽलउवाहू् कइ रे लोग
सइयांहू् दहिनेहू् ना हंथवा जे खाड़ि चलइब्या
बायें हाथ दुन्नोह ना दलवा जे थाम्हि रे बऽ
दहिने से डालि दहू् आकड़िया जे बीचवां में
जवनेहू् दुन्नोहू् ना दलवा जे रहि रे जांय
जउने घड़ी जूटई सन्नितवा जे होइ रे जइहंय (५२७०)
आजु भाई देखिहंइ कलउवाहू् कइ रे लोग
ओहि घड़ी खीचत ना खंड़िया जे बाइ दो गाही
खीचि कनि मारत बीचेहू् रे तर रे वार
बायें हाथ थाम्हत ना हवयं दुन्नो बुकवा
दहीने से डालत आंकरियां जे देखऽ रे बाय
पलको से निकललि ना धियवा बा महरे कऽय
जेकर धिक भयल पसीनवा जे देख रे बाय
उहे भाई सेनूर सहितवा जे काछिए लिहलेन
घुमि घुमि छिरकति पाथरवा जे पर रे बाय
ऊठलि ना डड़िया वा मंजरीय कय (५२८०)
एहि जउ लोरिक पाथरवाहू् सेनि रे आगे
उहे डांड़ी धइलेहू् ऊतरवाहू् के बाइ रे रहय

आजु भाई रातिय रेंगत बाँय दिन रे दऊरत
कतवं नाहिं बदत ना कूरवाह रे मोकामऽ
एकदम रेंगल ना डंड़ियाह् रे रेंगवलस ऽ
चलि जालय नागर गउरवाह् रे सिवाने
जउने घरी परि गइल नाजरियाह् गउरा कय
देखत बानह् आदिमियांह् सब रे लोग ऽ
जाइ कनि अहीराह् दुवरवाँह बोल रे लगन ऽ
खोइलनि सुनबेह् ना मतवाह् रे हमाऽर (५२६०)

तीन महीना और तेरह दिन में मंजरी की डोली गउरा पहुँची

वेटवाह् लेइकह् गावनवां जे देख रे आवत बा
बीति गयल तीनिय महिनवांह् तेर रे रोजय
तेरहेके आइलि ना डंड़ियाह् रे पहुँची
ओहि घड़ी नउवाह् बाभनवां जे बल रे वाइ कय
चउक चन्नन ना ठिकवाह् होइ रे गयनऽ
अहिराह् चलल ना डंड़ियाह् रे बनाई
परछन होतीय दुअरवाह् पर रे बानऽ
गंठियाह् जोरीय लरिकवन कइ रे गइनीं
आगे आगे रेंगल ना मलवाह् रे लोरिकवा
पिछवांह् रेंगलि ना मांजरि वाइ रे जाती (५३००)
जाइके भाई कोहबर ना घरवांह् चलि रे गयन ऽ
ओठिन भाई होंमइ गरसवाह् बाइ रे होतय
आजु भाई दहीय ना गुरवाह् खाइए लीहलेन
आजु गांठ छूटलि आहीरवाह् कइ रे बानी
ओहि घरी गांठीय छूटतवाह् लोरिके कऽय
उठि कनि करई लगल नाह् पर रे नाम
कोहबर के करत पलगियाह् वीर रे लोरिका
एकदम नीकलि दुअरवांह् भन रे ठाढ़
देहियां के बेलकुल सामनियां रे ऊतरले
अब होइ गयनह् नींगोटवाह् देख रे बंदय (५३१०)
अहीराह् डांकत चम्फवाह् चलि रे दीहलेन
एकदम कूदल आखड़वाह् में नि रे बाय ।

लोरिक का विवाह समाप्त

२. संवरू का विवाह—सुरहुल की लड़ाइयाँ

होली का आगमन—लोरिक का गउरा में होली खेलना

ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
अहिराह् लवटल अखाड़वा सेनि रे बानऽय
एकदम रेंगल दुअरवां चलि रे गयनय
आजु भाई गंगियाह् के नाहे नेरि रे यानय
गंगियाह् गंगियाह् ना कहलेह् बाइ पुकारय
गंगियाह् आयल हजमियां भयल रे ठाढऽय
आज् कहै मुनबेह् ना गंगिवाह् मोर हजामय
गंगियाह् ते कन्हे् दुअरवा क देखु सामान
हम भाई जात बानी ना गलियांह् गउरा के
आछा आछा छाटब धउड़ुवाह् रे जवान (१०)
देखऽ भइया तीनिय महीनवा जे तेरह रोजय
अब हम लेहलीय अगारिया में बाटे रे लोह
आज् घरे आधेह् फगुनवां जे चलि रे अइली
फगुवा के लागल लालमवा जे हमर रे बाय
हमहूँय खेलब फागुनवा ज गउरा में
तब फेर हिच्छाह् पूरनियाँ जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी मूनह् ना हलियाह् ना ओठियन कय
गंगिया के तुरतेह ना बाड़इ रे सरेखत
गंगियाह् मुनबेह् हजमवांह् रे हमाऽरय
बिहनह् सांसड़ ना बोहवाँ से चलि रे जाई (२०)
भइया से देहेंह् खऽबरियाह् भुगु रे ताई
कहि देंह् तीनिय महिनवांह् तेरह रे रोजय
लोरिके के बीतल अगोरियाह् दइउ रे पालय
घरवांह् आधेइ फगुनवा जे घरे रे अइलीं
फगुवा के लागल लालसवा जे हम रे बानऽय
भइयाह् जीयत समरवाह् बेर रे वउतंय
अब फेरि देतह् डम्फुवांह् मढ़ रे वाई

जल्दी से देइहंइ ना हथवांह् गांगी रे तोहरे
लेइ कनि आवह् ना घरवांह् मोर रे आजय
उहवां से रेंगल ना गंगियाह् रे हाजमवां (३०)
भोरवइं पहुँचल ना पलियाह् में नि रे बाय
सथई पर बइठल ना भइया जे मल रे सांवर
नीहुरि करत बाड़इ नाह् पर रे नाम
गंगिया ते आखेह् अमरवा जे होइये रहबे
तोहे भाई जियबेह् ना लखवाह् रे बरीस
जइसे बाढ़त बा पनियां जे गंगिले कऽय
ओइसे भइया बाढ़इ ना अइयाह रे तोहाऽर
·······ना मलवाह् रे संवरुवा
गंगियाह् मुनबेह् हाजमवांह् रे हमाऽरय
कहियाह् आयल ना भइयाह् रे दुलेरुवा (४०)
कहियाह् आयल दुअरवांह् खेलइ रे फगुवा
कइ दिन बीतल ना घरवांह् बाइ रे अइले
गंगियाह् तोकेह् खबरियाह् पठ रे बावल
तब फेरि बोलल ना गंगिया बाइ हजामऽय
मलिकाह् संझवंइ गावनवां लेइ क ऽ अयनऽय
चिह्नह् कूदल ना बोहवा अइलीं रे हम्मय
तुंह सेह् मंगलेह् डम्फुवाह् बाइ रे लोरिका
फगुवाह् खेलीय गउरवा घुमि रे घूमी
ओहि घड़ी ऊठल ना मलवा जे बाइ रे सांवर
हथवा में ले लेह् धनुहियां जे बान रे बान (५०)
अब हलि गयनह् जंगलवा जे छिउली के
घुमि घुमि देखत साउंजवा जे लेइ रे बाय
धरमीय बइठल सामरवा जे बाइ उठवले
मोकाह् देइकह् ना अगवां जे चलि रे जाय
जउने घड़ी आवत साउंजवा जे बाड़इ झांठय
खेंचि केयि मारत ना बनवा जे देख रे बाय
ऊहे भाई संचेह् सामरवा जे ठाड़ रे रहनऽ
ठाढ़े ठाढ़े नीकल गारमियां जे चढ़ि रे जाय
तब तक पहुँचल ना मलवाह् बाइ धरमिया
पेटियाह् नापत खांझड़िया जे भर रे बाय (६०)
आज़ु कहे ओही ले चामड़वा जे काटि ए दीहलेन
अउ फेरि ऊठीय मारदवा जे भयन रे ठाढ़

आजु भाई देहियांह् क बनवा जे आपन क ऽ बरलेन
पिठियाह् ठोकत समरवन कइ रे बाय
ऊहे सम रेंगल छीउलिया जे बन रे गयनह्
अहीराह् रेंगल खारकवाह् पर रे आय
ओहि घरी लेलंह ना डंफूय हथवा में
नउवाह् रेंगल सबेरवांह् पुनि रे बान ऽ
आजु कहँ जूटल ना नागर रे गउरवां
एकदम लोरिक दूलेरुवाह् केनि रे पासय (७०)
जाइ केनि देहलेस डम्फुवाह् आहिरे के
लोरिक देखत डंफुवाह् लेइ ए बान ऽ
अहिराह् ऊठल पलंगियाह् सेनि रे बान ऽ
अब चलि गयल ना गउवांह् रे गउरवा
जेकर बारह ना पलियाह् नगर गउरवा
तिरपन कसकन्हि बानीथ नह अहि रे रा ऽ नय
ओहि ठिन आळह् घवड़ुवा बाइ रे छांटत
फगुवाह् खेलइ के घबड़ू रे जेवानय
आजु दस बीसइ जेवनवाह् संगे लीयाइ क ऽ य
आजु फेरि आयल दुअरवांह् दर रे बार ऽ (८०)
सब कनि खातिर ना बतियाह् होए रे लगली
कूचइ लगनह् मर्गाह्याह् ढोलि रे पा ऽ नय
तब फेरि बोलल अहीरवाह् बीर रे लोरिका
संगी लोग मनवह् काहनवांह् रे हमा ऽ र
देखऽ हमइ तीनिय महीनवांह् तेरह रोजय
लागल दक्खिन ना अगिया रे अगारी
आजु हम आवेह् फगुनवा जे घरे रे अइली
ललसाह् लागलि फागुनवाह् कइ रे बान ऽ
संघी लोग चलतह् ना लेउलह हाथे अगीरवा
गउंवा में खेलीय फगुववा जे लेल रे कार (९०)
सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य
दस बीस उठनह् घाबडुवाह् रे जेवानय
दुअरा से सूरुह् फगुवाह् कइये दीहलेन
घुमि-घुमि गावत गउरवाह् बाय रे पाल ऽ
आजु कहे बारह ना पलिया नगर गउरवा
तिरपान कसकलि ना गलिया बाइ बाजा ऽ र

ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया ओठियन कय
आजु भाई चलल घबड़ुवा रे जेवानय
अइसे अइसे बावन ना गलिया जे घूमि रे गयनं
तिरपन में गयल ना गलिया जे पर रे बाय (१००)
एकदम घूमि गयनह् राजह् कीलवा पर
जाइ कनि दुअराह् फगुववा जे होत रे बाय
आजु कहँ सहदेउ ना महदेव सूबा रे रहनऽ
सब केनि कइलेनि खातिरवा जे बड़ रे वार
आजु भाई गांजाह् ना चीलम रे धई कय
धोरईय मारत चीलमियाँ पर बान रे द ऽ म
आजु भाई नासाह् ना पतियाह् पान सोपारी
सब केनि खातई ना कइलेनि असी रे बाद
आजु कहँ उहवां से रेंगलइ गइ ए गयन ऽ
धइलेह् जानह् खीरकिया के देख रे खोंट (११०)
खिरकी में निकललि ना बेसवा जे वा चनइनी
हथवा में ले लेह् पारतिया जे भइनी रे ठाढ़
आजु भाई माटीय गोवरवाह् पानि रे ढारिक ऽ
फेंकति बानी जेवनवन पर रे आय
आजु कहँ खेलल जेवनवां जे गउरा कऽय
चम्फाह् डांकोय आकसवाह् मेंनि रे जाय
पनियांह् गीरल धारतियांह् खोरीया में
ऊहे भाई बहल ना चलि ए जे बान रे जात
फेर ठाड़ होइ कह् फागुववा में गलिया मे गांवड
अउ फेर देखह् लोरिकवाह् कइ रे हाल (१२०)
एक ओर ठाड़ह् लोरिकवा जे गावत बानय
बेसवांह् भरति ना मटियाह् पानी रे बाय
ओहि घरी लेइकह् ना ऊहउय दोहू रे रइंया
सोझई फेंकति लोरिकवाह् पर रे बाय
ओहि घड़ी खेलल अहिरवां बा बीर रे लोरिका
ऊहे भाई बांवउं तीरिछवा जे होइ रे जाय
पनियांह् गीरल ना खोरिया में भहरे राइ कऽय
बेसवाह् घुमरति ना ओठिन लेइ रे बाय
आजु भाई गोस्साह् अहीरवा रे होइ रे गइलीं
लोटवा में खींचत अबोरवा जे ओहि रे दम (१३०)
जउने घड़ी खिचि कइ पीचुकवा जे चन्दा के मरलेस

दहिनी गईलिना सिनवांह् रे चोंथाय
आजु गिरि गईलि ना धियवा बा धरती में
रनियांह् देखति ना ओकरि माई रे जाय

चंदा की माँ सेलिहया द्वारा लोरिक को अपमानित किया जाना—लोरिक का अन्नजल त्यागना—भाई संवरू के विवाह के लिए प्रण

ओहि घड़ी दवरलि ना सेलिहया ओकर महतरिया
अउ फेरि बिटियाह् कै झारिये के लेइ उठाय
ओहि घड़ी बोललि ना बतियाह् कर रे थाहय
तुरतेह् कहति जाबनियांह् सेनि रे वाय
आजु कहैं बाउर लोरिकवा तैं बउ रे रइले
तोर हरि गईलि ना देमवा रे गियान (१४०)
आजु कहैं दक्खिन ना देसवा में चलि रे गइले
अहीराह् गयल आ मनवां वा तोर रे बाय
जाइ कनि अब्बर ना रजवा जे तोइ रे मरले
दुबराह् मरलेह् अगोरियाह् रे कीसान
आजु तैं मरलेह् ना हथिया रे बेजरही
देसवाह् ना खड़ियाह् रे पुजाय
लोरिकाह् मरद गुनऽबे लेइए तोहके
जवन भाई होवह् कठईता क देख रे बंस
आजु जवन पालल ना मलवाह् वा भीमलिया
सुरहुल में सतिया बहीनिया जे ओकर रे वाय (१५०)
आजु तुंय करतह् ना सदिया जे संवरू कऽय
एकदम नागर सुरावलि दइउ रे पाल
सुरहुल देतह् ना ढोलियाह बज रे वाई
तब हम जानित काठइता क हव रे पूत
सूनत······अहीरवा जे वीर रे लोरिका
देहियां में ऊठत मललवाह् बाड़ा रे तेजय
ओहि घड़ी ईंचुक पीचुकवाह् फेंकि रे दिहलेन
लोटवाह भरलें ना झटकइ रे अबीरय
अहिराह् अम्फुय डंफुवाह् फोरि रे दिहलेन
एकदम रेंगल ना घरवां वा चलि रे जातय (१६०)
जेकर भाई सोनेह् ना गुचवा क बाइ रे माचऽ
लोरिके के जठलि पालंगियाह् उहां रे बानी
गोड़े मूड़े तानीय चादरिया सोइ रे गयनऽ

ऊहे भाई अन्नह् छोंड़इ नाह् जल रे पानी
जउने घड़ी बिहनह् ना भयनह् हो भुरूहुरा
पुरबई देहलहं कउववा बांय हो रोरय
ओहि घड़ी सूतल ना बानह् गोड़ रे तानी
आजु भाई मनवाँह् न कइलनि रे गुमानय
ईत हवयं सातइ ना घरियाह् कइ खवइया
आजु बाबू दिनवांह् दुपहरवा जे भयल रे बाय (१७०)
नात अहीराह् जगलेह् ना खोदले जे बाइ रे जागत
ना त ऊत बोलत जाबनियां जे बाड़ उधार
ओहि घड़ी केहीय ना मरले बा गरी रे अवले
का इन्हें केहीय ना बोलिया जे बोलि रे देय
आ भाई अन्नइ ना छोड़लेनि जल रे पनियाँ
घरवा के मरत बानईं नह सब रे लोग
··· ···सूनह् ना हलिया ओठियन कउय
आजु भाई गयल ना ओठियन फेनि रे हउवंय
सूनाह् ना हलियाह् कठईत कउय
अब बूढ़ गयल बेटउना केहु रे जगावय (१८०)
मुखवा के तानीय चादरिया बुढ़ रे दीहलेन
आहिराह् ताकत बानइ नह डिमि रे राई
ओहि घड़ी रेंगल ना काठइता बा ओठियन से
चलि गयन गुरूय आजइयाह् दर रे बाउरउ
आजु कहै मुनबेह् ना गुरूवाह् तोहं अजइया
घरवांह् बड़ीय मचलि बाह् अन रे खानी
चेला तोहार अन्नइ ना पनियां जे छोड़ि रे दिहलेन
ना त ऊत ताकत मलकियाह् बाड़ उघारी
आगे आगे रेंगल ना गुरूवा जे बा अजइया
पछवांह् रेंगल काठइता बा चलि रे जात (१९०)
एकदम रेंगल अजइयाह् लेइ रेंगावल
अब जहाँ सूतल लोरिकवा जे देखउ रे बाय
जाके भाई बईठि पालंगिया जे पर रे गयनउ
अउ फेरि तानत चदरिया जे मुंह रे बाय
गुरूवा जे देखतइ ना गयनहं डिम रे राय
अब गुरू बोलल ना दरियांह् रे जाबाब
आजु चेला एकई जाबरवा जे तूं ए रहलउ
तोहरे से जबर ना कवन लेइ ए बाय

बोलल ना गुरूवा जे बान अजइया
चेलवा तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (२००)
एक त चेला तूंहइ जबरवा जे रहलऽ रे गउरा
तोहरे से जाबर जाबरवा रे नाहीं रे कोई
तोहइं अइसे कवन जाबरवा जे मारि रे देहलेन
आजु भाई रोवत नां मनवा जे बाड़े तोहाऽर
एतना जब बोलल ना गुरूवा जे बाड़े दयालू
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
लोरिकाह् उठिय ना समतूल गयनऽ बईठ
तब फेरि बोलल ना गुरूवा से लेइये बतिया
आजु गुरू मनवह् काहनवां जे देखऽ हमाऽर
देख भाई तीनिय महीनवा जे तेरह रोजय (२१०)
जाके हम लेहलीय अगोरियाह् मेंनि रे लोय
आजु हम लेइकह् गवनवा जे घरे रे अइली
आभाह् चढ़ल फगुनवा जे देख रे बाइ
हम भाई लागलि लालसवा जे देख रे रहली
फगुवाह खेलल गउरवा में लेल रे कार
देख हम बावन ना गलिया जे घूमि रे गइली
केहू नाहि बोलल ना रहवाह् रे तूकार
जवन घरी सहदेव ना तिरपन गली रे घूमलीं
खिरकीय गइलीय ना सहदेव दर रे बार
आजु भाई बेसवाह् ना चनवाह् रे निकलि कऽ (२२०)
मटिकन घोरि कह् जेवनवा त फेंकत रे बाइ
आजु मोर खेलल जेवनवा जे बायं घबड़ुवा
चम्फाह् डांकिय आकासवांह् मेनि रे जाय
पनियाह् गिरिय धरतियाह, मंनि रे गऽयनऽ
गुरू से नाहीं सऽहलवा बा देख रे जात
फेरि सेनि हमरेह् पर फेंकति बाइ रे माटी
आजु गुरु गुस्साह् थाम्है नह नाहि हमार
आजु कहैं खिचि कह् फिचुकवा जे भरि अबीरवा
दहिनीय मारल ना सिनवा पर भह रे राइ
जेवने घरी बाजल अबीरवा के देख ए घउवा (२३०)
चनवाह् गीरलि धरतिया में भह रे राइ
गुरूवाह् निकललि ना भइयाह् ओकरे सेलिहया
झारि झूरि लेलई ना चनवा के देख उठाइ

ओहि घड़ी बोलिल ना सेल्हिया जे बाइ रे रनियां
दरियांह् बोलति ना रेहवाह् बाई तुकारि
लड़िका के मऽरद गुनवलेह् लेइ ये एठियन
अब होइ गइलीह् गउरवा में कड़ रे हार
एकदम दक्खिन ना देसवां में चलि रे गऽइलीं
बहियांह् बोलति बाड़ई नह् सर रे दार
जब भाई अबराह् ना राजवाह् महरा ओठियन (२४०)
दूबराह् हेरिकह् ना अगोरिया के मरलऽ किसान
जाइ केनि हथियाह् ना मरलह् रे डंगरही
देसवा में अइलह् ना बहियांह् रे पूजाइ
लोरिकाह् मऽरद बखनबइ तोह के एठियन
जब भाई होबह् ना कठइत के देखु रे बंस
अरु कहुँ पालल ना मलियाह् वा भीमलिया
ओकर भाई सतियाह् बहिनिया जे लेइ रे बाइ
सवंरू के करतेह् बिवहवा जे सुरुहुलि में
सुरुहुलि में बाजइ ना ढोलिया जे लेल रे कार
तवन गुरू काये कहींय नाह काये नाहीं (२५०)
कुछ मोरे बूतेह् काहलवा बा नाहि रे जातय
तनी हम देखलि ना रजिया जे नाहिन मुरावल
नाहि एहि दम्मइ पायंतवाह् कसि रे देनी
सुरहुल में देइति ना ढोलियाह् बज रे बाइ
एतना कऽहत ना बानह् बीर रे ओठियन
अजईय बोलल लारमवांह् कइ ये बोलय
अब कहुँ सुनबेह् ना चेलवाह् मोर लोरिकवा
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर य
कहले ललना गुरुवा वा जे अजइया
चेलवा तूं उठह् करह् ना अस रे नान (२६०)
चेलवाह् खिचड़ीय ना खइलह् लेइये तूहंऊँ
खोरवा के जात वाह् तियनवा जे मठि रे आइ
आजु मोरे जानम ना हउवंह रे सुरावल
जानम भूई ना हउवइं मोर सुरावल
आजु भाई सुरउल के राहतवा जे देब बताय
जवन जवन बाडइ पंडितवा जे सुरहुलि के
ऊ चेला देबई ना तोहउ के हम बताय
आरे भाई उठि कह् भोजनवा जे तूं रे कऽरऽ

साँचइ बाड़ऽ ना बतियाह् रे हमाऽर

गुरु अजयी धोबी का अपनी जन्म भूमि सुरबली का वृत्तांत बताना

ओहि दिन बोलल ना बानऽ बीर रे लोरिका (२७०)
समतूल पंजरेह् गुरुववा केनि रे बानऽय
तब भेद पूछत गुरुअवा सेनि रे बाड़ऽय
का गुरु जनम ना हवं तोह् मुरावल
कइसे कइसे छोड़लह् मुरवली तूं रे पालऽय
कइसे गुरू अयलह् ना नगर मोर गउरवां
चेलवाह् हमहूंय के लेहलऽ रे बलाई
ओहि दिन बोलल ना गुरूवाह बा अजइया
चेलवा ते मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई वहीय ना खेलत रहलीं मुरहूल
सोरह सई लड़िकाह् बदअउरे में गइलीं रे ठाढ़ (२८०)
आजु कहैं रासलि ना बदिया जे लइये बानंऽ
भीमलीय राजा आंतरियाह् चलि रे जाय
जाके भाई बोलल ना सूबवाह् लऽरमें से
लरिकाह् हमहूंय खेलब नाह् एहि रे दाम
तब फेरि बोलनह् ना लरिकवा जे सुरहलि के
आजु भाई मनबह् कऽहनवांह् रे हमार
देख तूंय राजाह् दइयवा के हव रे लड़िका
अब छड़ खेलइ ना बदिया जे देख रे हऽव
एने भाई कानइ कापरवा जे फूटि रे जानंऽय
तूंय भाई आवऽह् जाबरवा लेइ रे आज (२९०)
जवने घरी कऽहबह् ना सूबवाह् केनि रे कीलवा
बाल बच्चा देइ हैं कोल्हुइयां में पेर रे वाइ
एहि सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गुरू तूंय ठीकई ना बतियाह् रे बतइबऽ
कइसे छोड़ि देलह् गउरवाह् तूं ए पालय
ईहे भाई पालल ना भुजवाह सुरहलि कऽय
कइसेह भगलह् सुरावलि छोड़ि के पाली
तब फेरि बोलल ना बानऽ लेइ ये ओठियन
चेलवाह् नाहिय लरिकवा अब गर रे दनले
हम भाई राजाह् ना फनिया होइये गऽइलीं (३००)

लड़िकाह् बदीअईनऽ जोड़िया जोड़ि रे आजय
बेल्कुल गोइयांह् बाँचरवा होइ रे गयनऽ
पक्कीय पक्काह् ना बदिया होति रे बांड़य
राजाह् लेइकह् ना गोटिया बायं बुझावत
दहीने हाथे अऽजइया लेइ पकऽड़ी
ओ भाई मरतीय अजइया के होइ रे गइनीं
धरतीय राजाह् ना चलनीय लेइ रे बाय
ए घरी बतियाह् ना चलनीह् बाने रे जोरऽत
राखल बाड़य बद गउरह् लेल रे काऽरी
जवने घरी झूकल ना चोलवाह् हमरी गइलीं (३१०)
थपराह् बाजत ना मूबवा के चलि रे गयनऽ
हम भागि गइली बिगहवा एक रे दूरऽ
जवने घरी उलटि ना तकले बा राजा भीमलिया
चम्फाह् डांकल मरदवाह् लेइ रे बानऽ
चेलवाह् घोंचियना एड़वा जे मारि रे दीहले
ठाड़े हम गयलींय धरतियांह् रे गड़ाई
अब कह बारह ना जोड़ियांह् गोंड़तवाय
चौदह जोड़िया ना टूटि गयल रे कूदारी
आजु मोर ससुर ना रहनह् रे खंदरूवा
खन तोरि ले लेन जिनिगियाह् रे बचाई (३२०)
छ महीना पीयल बा गइयाह् हम रे गोरऽस
ओहवां से छोड़लीय ना चोलवाह् नगर सुरवली
तोर हम अइलींय गउरवांह् लेइ रे गाँव
आजु केह तोहइं ना चेलवा जे मुड़ि रे लेहलीं
गउरा में करत बाड़ीय ना कवि रे लासय
आजु वाकी एकइ में जोरवा जे हम बताइलऽ
सांचइ लेहह् ना सूबवा तें रे बनाई
देख भाई बलवाह् में मूबवा जे बाइ भीमलिया
कारवा में बानह् लोरिकवाह् सर रे दार
जेके भाई सनमुख ना मइयाह् बा दुरूगा (३३०)
देबियाह् आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गुरूवाह् भरत ना मनवाह् अहीरे के बानऽय
चेलवाह् कुछुय हरजियाह् जिनि रे मानऽ
आजु हमार देखलि डहरिया बा मुरुहुलि कइय

लेई हम चलबि सागरवाह् केनि रे भींटा
तब फेरि मूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय

सुरवली में बारात के साथ चढ़ाई कर देने की लोरिक की तैयारी

अब फेरि बोलत आहीरवा बा लरमें से
गुरूवाह् कइलह् ना तूहउँ अस रे नानऽय
उहे भाई करत अमनानवा बा तऽकथे पर (३४०)
कइ केनि होईय गयल बाह् फय रे काऽरऽय
दुनू चेला गुरूअ ठऽहरिया पर चिलि रे गयन
अहीराह बोतल गीलसियाह् धइये देहलेन
गुरूवाह् लेतइ चीखनवाह् रे उठाई
दुनो मीला करईं भोजनवा जे टहरे पऽर
आपुस में लियनऽ बतियाह् बति रे याई
जवन धरी खाइय ना पियवाह् सम रे तूलऽय
अब फेरि भारिय अहीरवा के चढ़ले जात
पूरबइ दे लेह् कऽउऊवा बाँड़ रे रोगऽ
ओहि घडी ऊठल मऽरद बा बीर रे लोरिका (३५०)
रेंगल संड़ संड़ ना बोहवांह् गयनऽ मझारय
उहवां से बारह बारदवा लेइं रे अयनऽ
गरे उनके बंधलेह् पऽगहवाह् लेइ रे बानऽ
ओनकर टांटइ पिटढवा जे कसि ये देहलेन
जोरवाह् छूंछियाह् देलेह् बा लट रे काई
अपनेह् हलल महरियाह् बीर रे लोरिका
जाइ केनि खोलत गंजड़वाह् लेइ रे बानऽय
आजु भाई बान्हई रोकड़वाह् झोरि रे याई
अब हांकि देहलेह् बऽरदिया बा दुअरे ले
चलि गयनऽ करन ना मेलवांह् रे बाजाऽरय (३६०)
जाके भाई बारह् बऽरदवा जे करय सोपारी
कसिकेनि कइलेसि ना ओठियन तइ रे याऽरऽ
आजु गांजि देहलेह बारदवा जे लेइये बा रहाऽ
जाके भाई देलेसि दुअरवांह् छट रे काई
बरदन के ढीलिय बान्हनवां जे कईये देहलेन
टऽटवाह् ले लेन पेटढ़वाह् रे उतारी
उहवां से अहीर बरदवन टिट रे करलेसि
उहो बरदा जुटीय गयल नह बोहा मंझार

ऊठन मऽरद नइ बीर रे लोरिका
अब हलि गयल ना गउवांह् गउरा में (३७०)
जउ भाई कसि मसि बऽसलि बा अहीरे रानऽय
ऊहे भाई चउबीस जेवनवाह् छांटिये लेहलेन
आछा आच्छा छंटलेह् घबड़ुया बा जेवानऽय
ऊहे भाई लेलेह् दुअरवाह् पर रे अय नऽ
सबकेह् देलेसि ना दुवराह् बइ रे ठाई
ओठियन पानीय पतरवा जे होत रे बाऽनऽ
अब रखि गयल चिलमिया बा गोठहुल कऽय
धोरहिय मारइं घबड़ुवाह् लेइ रे दम्मय
तब तक सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दम्म के भयनह् ना ओठियन तइ रे याऽर ऽ (३८०)
.... ..घबड़ुवा रे जेवानय
आरे फेर होयनह् दुअरवा तइये याऽर ऽ
एकक जोराह् ना लेहलनि कसि रे याई
ऊहे भाई खोललेनि ना मोहड़ा जोड़वाऽन कऽय
चउबीस धइलेनि ना गलिया लेई रे जाई
ओही घरी उल्टीय हूकुमियां बा लोरिके कऽय
भइयाह् सुनबह् नेवतहरू रे हमाऽर
देखऽ भाई जातीय परजतियाह् एक जिन छोड़य
सबकेनि देहह् नेवतवाह् मोर रे बांटि
ओहि भाई दीनईं मोकमवा रे बतावत (३९०)
सुक केनि रेंगिहइं बऽरतियाह् रे हमाऽर
तब रेंगल आहीरवाह् बीर रे लोरिका
एकदम हऽलल कोठरियांह् चलि रे गयन ऽ
अपने के बान्हत दऽरवियां बा झोरि रे याई
एकदम रेंगल ना देसवाह् रे पईठी
जइ रंग के होलाह ना बाजवा जे देसवा में
सतरंग लेहलेसि ना बाजवाह् रे खरीदी
सब केनि दीनइ मोकामवाह् रे बतावय
सुक केनि जइहंय बऽ रतियाह् रे हमाऽरय
ओहि घड़ी लऽवटि अहीरवाह् देख रे अयनय (४००)
अब हथ देहलेसि ना बजवाह् रे नेवाती
आरे भाई उहां से आहीरवा जे चलि रे अयनऽय
अपनेह् अइनहं ना घरवाह् रे दरबारय

जवने घरी दिनइ मोकमवां जे नियरे रइन ऽ
अब फेरि चढ़ल बीहनवाह् कइ रे दीनऽय
आजु भाई पंचुक कपड़वाह् लेइ रे काढ़िकय
दसबीस लेहलेसि गुवालिन रे बलाई
सागरे पर करइ नाहनवांह् रे गुआलिनी
आ फेरि पहिरेह् ना धोतियाह् रेंगिये देलीं
एकदम हऽलल भीतिउरीह् मेनि रे जानीं (४१०)
एक रंगे पक्की सवनिया जे होइ रे लगली
एक रंगे कच्चीय होतीह् बा तइ रे या ऽ रय
आजु भाई बाड़य सवेरवा कई रे जून ऽ य
आज बूढ़ दिनई जूटल ना मुक रे वारय
अब जूटि गयल ना दिनवाह् रे मुकम्म य
दुअरा पर गीरल जाजिमवा बा कठइत क ऽ
अब तनी गइनीय ना गेसियाह् ले लेइ गाजत
आजु भाइ दालइ बादरवा जे भइन रे ठाढ़ ऽ य
जवने घड़ी बईठि अहीरवा जे लट रे गय न ऽ
अब फेरि बइठहं मेड़रियाह् देख रे मारी (४२०)
आजु भाई चढल ना पेटवा ? बा कठईत क ऽ य
पीयत बानह् ना गोपियाह् रे गुवाल ऽ य
बीचवा मे गांजाह् चिलमियां जे रखले बानी
धोरहीय मारत चिटुकिया पर बान रे तान ऽ य
तब तेहि भयल भोजनवां बा तइ रे यारय
पतवाह् गयल आहीरवा जे बाइ रे लेबइ
दूनों ले लेसि भंवनारवा जे घूमि रे घूमी
आजु भाई संगेह् रसोइया जे होई रे गइलीं
ओही घरी रेंगल अहीरवाह् रे रेंगवलय
एकदम हलल जाजिमवा पर भयल रे ठाढ़ (४३०)
अब कहै जतियाह् ना सुनिलह् मोर बिरादर
पंचौ सुनिलह् ना भइया जे पर रे जात
उठि उठि संगेह् ना गोंड़वा जे हथ रे धोव ऽ
आजु फेरि अंगने में जावह रे बंटाइ
आजु कहें एकइ डेवढ़वा में खइहइं भतवा
एक रंगे पक्कीय सामनिया जे डेढ़ि रे खांय
आजु कहैं संगेह बरतिया जे उठि रे देहलेन
ठारे पर करत बानइनह् जेव रे नार

जेवने घरी बेलकुल सामनिया जे गिरि रे गइली
अगिया पर गयल घियनवा बा सुल रे गाय (४४०)
पंचोह् सीताह् ना रामवांह् रे बोलइब ऽ
औ फेरि खाबह् ना जूठियन कौर उठाइ
सब कनि उठलि ना हंथवा में जे बाई रे क ऽ वर
अवर भाई खातइं आंगनवा में बोलि रे चाल
ओहि दम खाई कह् ना पीयह् तइ रे आरय
दुअराह् हांथइ मुहंवा जे धोइ रे लेंय
एकदम सुनलह् गललिया जे करत रेंगन ऽ य
एकदम चढ़ल जाजिमवां पै जान ऽ रे बाय
जवने घड़ी बईठि जाजिमवाह् पर रे गयन ऽ
औ फेरि बीराह् पतरियाह् मेनि रे बाय (४५०)
आजु कहैं लेइकह् ना पानवाह् कइ रे बीरवा
सब केनि देनह् न थारवा पर घूम रे राइ
आजु कहैं एकक ना बीरवाह् रे उठाइ क ऽ
ओठवा में कूंचत मगहिया जे वान रे पान
ओहि घड़ी मूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य

बोहा से गांगी नाऊ के साथ धरमी संवरू का गउरा आना—बारात का प्रस्थान करना

केह् भाई ओहूय समइयाह् कई रे हा ऽ ल ऽ
आजु कहैं बोलल ना बुढ़वाह् बा कठइता
गंगियाह् सुनबेह् ना नउवाह् रे हमारय
आजु भाई भइयाह् के जाइकह रे बलइबे
बिहानऽह् रेंगिय धरमिया क बरि रे यातय (४६०)
ओहि घरी रेंगल ना गंगियाह् बा हाजमवा
एकदम रेंगल ना बोहवा में चलि रे ग ऽ यन ऽ
संवरूय ढरकल ना कुसवा के साथरीय प ऽ र
गंगियाह् नोहुरि करत बाह् पर रे नाम ऽ
भइयाह् भरि मुख देतई बाह् आसी रे बादय
तब फेरि बोलल ना गंगियाह् बा हाजमवा
एठिन धरमीय काहनवाह् मान हमार ऽ य
आजु तोहार कक्काह् ना कइलनि रे बलावा
बिहनाह् च ऽ लीय बरतियाह् मुरहुलि में

अब तोहार च ऽ ढ़ींय तिलकवाह् एहि रे दम्मय (४७०)
चलि केनि बइठि पलकिया में भइया चलब ऽ
बिहनइं रेंगइ के मोकवाह् देख रे बानय
आगे आगे रेंगल ना मलवाह् बा धरमिया
ओठिन बोलत बा बतियाह् समु रे झाई
आजु कहँ तीन सइ ना सठियाह् चर रे वाहय
तवने में नान्हूय हंवह् नह रे अगर हार ऽ य
नान्हू के छोड़लेह् बरतिया में चलत बांड़ी
ई भाई हउवंय नागइया के बग रे वारय
इ राजा संड़संड़ ना बाह्वांह् रे मझारय
धरमीय रेंगल ना घरवा जे चलि रे अयन य (४८०)
एकदम ह ऽ लल भीतरिया बा चलि रे जातय
जाइ केनि पानीय पातरवा जे पीय रे लोहलेनि
जाइ केनि बईठि ठाहरियाह् जेव रे नारय
आजु भाई पन्नित मोहनियाह् चलि रे अयन ऽ य
खेतवाह देखत बानइ नह रे बिल रे गाई
जउने घरी सातइ घ ऽ रीवा जे दिन रे च ऽ ढीहंय
परिछन क ऽ रई सारातियाह बा देखाती
एतनाह् देऽकह् हुकुमियाह् मोहनीय लाल य
बोलल पन्नितवाह् लेइ रे बानय
साइति आऽय गईलि बा निय रे राई (४९०)
आजु भऽया करह् परछनिया बड़ी सबेरवां
मुकठेनि च ऽ लति बरतिया जे देख रे वाय
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य
जेतनाह् जातीय न रहनह् पर रे जाति
ओह भाई घर घर आदमिया जे चलि रे गयन ऽ
आपन देहियांह् क ऽ आनइ रे सामान
आरे भाई पहिरि ना ओढ़ि कह् चल रे निकलय
अब फेर तरईय दुअरवा पर होइ रे जाय
तब तक जूटल ना बाजवा बा सत रे रंगा
एकदम रेंगल ना दुअरा पर चलि रे जा ऽ य (५००)
ओहि घरी सब दिन कय बतियाह् देख रे हउवय
पहिलेह् आखत पुरहथवा जे चलि रे जाय
जवने घड़ी धइ गयल ना आखत एहि रे आगनवा
तब फेरि टोकत लकड़िया बा अन रे हाथ

आजु भाई अइसीय लकड़िया जे ठोकि रे देहलेन
पिरथमी से भारइ सहलवा बा नाहि रे जात
केहू फेरि नीचवांहू बा डोलइ लागल ध ऽ रतिया
उपराहू डोलइ लागल नाहू आस रे मान
अब छूटि गइलि ना तड़िया बा रिखिमूनि कय
डोले लागल बाबाहू बिसुनवा के सुर रे धाम (५१०)
आजु भाई डोलत पीरिथिमीहि अस रे मानय
ओहि घरी होलइ परछनिया जे ध ऽ रमीय क ऽ य
मथवा में तिलक ना लगनहू रे जूझारय
दुअरा से रेंगलि पलकिया धरमी क ऽ य
संगे संगे रेंगलि बारतिया बाइ रे जातय
एकदम हललि सिवनवां बांइ रे काढ़ति
अब धाइ भइलि ना टपवा मेंनि रे ठाड़य
तब फेरि बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
अजईय सुनबेहू गुरुववा रे हमार ऽ य
आजु भाई धापइ भरइ ना बढ़ि ले अइली (५२०)
आध कोस अइलींय जमीनियां हमरे आई
गुरूवाहू मुधिय भला तनीय रे भइनी
गुरू हम जातइ घरेहू ना एहि रे दम्म ऽ
मरैए में टांगल बरूइया कइ रे पनिया
ऊहे गुरु टंगलइ मड़इया मेंनि रे बाड़ य
गुरू तोहार देखलि ना रहतवा बा मुरहलि क ऽ य
लें लेहू चलहू ब ऽ रतियाहू रे हमा ऽ र
ऊदम आधि बाजति ल ऽ कुड़िया जे चालि रे च ऽ ल ऽ
अब धाइ ले लेहू ऊतरवा के देख रे राह
ओहि दिन लवटल अहीरवा बा बीर रे लोरिका (५३०)
आइ फेरि गयनहू गाउरवा जे अपने घर

अहीर की सवा लाख बारात ब्रह्मा के भेजे हुए दूत के पेट में

सूनहु जे हलिया अगवां क ऽ य
आजु भाई डोलइ बरःहवा के इन रे रासन
बिस्नू के डोलत बानय नाहू सुर रे धाम ऽ य
अहीरे पर अइसे न चिढ़वा होइ रे ग य ऽ न ऽ
लोरिकाहू भयल पिरिथिमी लेइ ये सूझ ऽ त
सोझे बरम्हा देहलेन कागतवाहू रे देखाई

एक ठे भेजई ना दूतवा सरगे में
ऊ दूत ऊतरल आवइ ना मित रे लोके
एहर भाई जातीय बरतिया बा अहीरे क ऽ य (५४०)
ओहि दिन पहुँचत आवत बा दूत मुँह फारी
एक ओठ गाड़ीय धऽरतिया में देख रे देहलेन
एक ओठ देलेसि न मुहवांह् अस रे मान
बीचवा में सड़कि न लवकति मय रे दनवा
सवा लाख बेंहसति बारतिया बा चलि रे जात
एतना पेटवा में दूत रे गयनऽय
ओहि घरी बन्नइ ना मुहंवा जे कइये लीहलेन
सोझई चढ़ल ना खोंढ़वांह् हो पहारय
ओह बले ऊतरि डोंगरवाह् में देख रे बइठत
गनवाह् बइठि ना फेटियांह् बाइ रे मारी (५५०)
ऊबरति बेहंसति ना मानइ घूमति रे मुरेरवा
तब तक मूनह अहीरवाह् के रे हाल य
लोरिकाह् दवरि कूदीय कह् रेंगत रे बानऽ
आजु भाई अइसन ना बाजवाह् घूमरी भयनऽ
केतनीय दूरियाह् बारतिया जे चलि रे गइनीं
आगवांह मूनई ना सोनवाह बा घूनातय
ओही घरी रेंगल अहीरवा बाय रे जातय
जहाँ बरे रेंगलि बारतिया सवा रे लाखऽय
घूघुरी में सबकाह् दवहियां बा देखाती
जहवाँ पर ऊतरल ना दूतवा बा बरम्हा कऽय (५६०)
ओकरे आगे कत्तउं दावहिया नाहि रे बानय
लोरिकाह् घूमि घूमि न देखइ चारि ओरय
नाहि भाई परल मऽललवा मेंनि रे बानय
ओहि घरी भऽयल आहीरवा सोखत रे बानय
आजु कहैं हो हो न दइवा मोर नारायन
क्या ब्रम्हा लिखलह् ना मंझवा हो लीलारय
आजु कहें हमरेह् ना रीतियां रे महोबा तें
एक कइ बानह् दऽइबवा कइ रे लालय
कउनहुँ संझवइं गवनवां लेइ उतारि कऽय
बिहनह् रेंगल सूरवली बान रे जातय (५७०)
एतना गाइब अदमिया होइ रे गयनय
अक्सर बांचल परनवा रे हमाऽरय

कइसे हम गउरांह् देखइबय देख रे मूंहऽय
जवने घड़ि पूछिहंइ ना लोगवा गउरा कऽय
ओठियन कवन जाबबिया हम रे देबय
बलुकन मइयाह् धारतिया तूं फाटि रे जातिउ
हमहूँ जाइत धरतियांह् रे सटाई

लोरिक का पाताल लोक में नाग के यहाँ पहुँचना

माई धारतियाह् फटि रे गइनी
अब दूइ भागेहं गऽइलि ना बेरि रे आई
ओहि मेनि ठाढ़इं आहीरवा जे कूदि रे गऽयनऽ (५८०)
एकदम रेंगल पातालवाह् भ (य) न रे ठाढ़य
जहवां पर नागई सूतल बाह् नगिनी बेनिया
बइठि केनि देलइ बेनियबाह् रे डोलाई
दूअरा पर ठाढ़ह् अहीरवा बा बीर रे लोरिका
नागिन बोलसि लारमवाह् कइ रे बोल य
आजु कहैं हाथि जोड़ मन मूखिया जे दुअरा से
नाहि हम सूतल ना नगवा रे जगइबऽय
आलरि लेइहंइ जीनिगिया हो तोहारय
ओहि दिन बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
दरियांह् करइं ना बेड़वां रे जबावई (५९०)
ओहि दिन बोलल अहीरवा जे बान हो लोरीक
नागिन तू नागवाह् ना नागवा जे काई कइल ऽ
हमसेह् बानई ना नागवाह् सेनि रे काम ऽ
तनी एक सूतल ना नागवा जे आपन जगवती
दुई अच्छर हमहूंय ना नागवा से बति रे या ब ऽ
ओही घरी सूतल ना नगवा जे खोदि रे देहलेन
उहे नाग ऊठल वानइ नाह फुफु रे कार
जवने घड़ी देहलसि फुहरवा जे लारिके ओरियां
थर थर कांपल ना जघिया जे बाड़े सरीर
ओहि दिन तड़पनि ना मइयाह् बा दुरूगा (६००)
तुरतेह् करति जाबाबवा देखु रे बाइ
आजु कहैं मुनबेह् वरूअवा जे फुल रे झरूवा
एठियन ते मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई उहइ ना नागवा जे देखु रे हवां
जउने के बन्हलेह् नेउरियाह् पुर रे पाल

आजु कहँ बान्हिय बीठइयाह् अस ऊलटल ऽ
लड़िकाह् खोदलेनि लकड़िया के रे उनकर गांड़ि
एतना जब कहति ना मइयाह् बा दुरूगा

दुर्गा की सहायता से लोरिक द्वारा ब्रह्मा के दूत के पेट से बारात का निकाला जाना

अहीराह् तड़पल ना ओठियन फेरि रे बाय
आजु कहँ बाउर ना नगवा ते बउरे रइले (६१०)
तोई सऽहजि गई ना मतियाह् रे गियान
आजु हम ऊहई आहीरवा जे हई रे लोरिका
जउन तोहइ बन्हलीय नेउरिया जे देख रे पाल
जउने घरी बिठईय ना भइयाह् रे उलटली
लइकाह् खोदलनि लकड़िया के तोर रे गांड़ि
तब भाई तोरेह् पाहरवा में सारे रे नागवा
सवा लाख गान्ब पलिया जे बाइ हमाऽर
तवनेह् ना दिनवा राम समइया
नागवा जे सोचलेसि ना बतिया नेउरीय कऽय
फनवाह् संचेह् जऽमीनिया में रखिये दहलेसि (६२०)
ओहि घड़ी रोवइ ना नागवाह् जे दुले रूवा
रोइ रोइ कहत आहीरवा से बानऽ रे बातय
आजु कहँ सुनबह् अहीरवाह तूय ए लोरिक
भइयाह् मनवह् ना कहनाह् रे हमाऽरय
आजु कहँ एकइ जाबरवा जे रहनऽ हो बरम्हा
ओई के ऊपर जाबरवा जे नाहि रे कोई
तूं उनसे ऊपर जाबरवाह् होई रे गयल ऽ
नीचेह् उतरि कह नीहनह मितर रे लोके
भइया तूं अइसन ना बाजवाह् रे जूटवलऽ
पिरिथिमी से नाहिय ना भारवा जे बाइ सहाऽतय (६३०)
जवने घड़ी बाजति लऽकुड़िया जे तोर रे जालऽय
पिरिथिमीय डगमग ना डगमग होइ रे जानी
अब छूटि गईलि ना तरिया जे रिखि मूनि कऽय
डोले लागल बाबाह् बिसुनवा के सुर रे धामऽ
देख अहीर तोहरे पर बरम्हा जे कोप रे भयन ऽ
एक दूत देहलेनि पयंड़वाह् रे उतारी

दूतवाह् धरतीय ना ओठवाह् रे गड़उलेन
ऊपरांह् देलेनि बादरवाह् हेर रे काई
बीचे बीचे लवकति सऽड़किया बा मय रे दानय
बेहंसति हललि बऽरतिया जे चलि रे गइलीं (६४०)
सवा लाख गइलि बरतियाह् ओलि रे याई
ऊए दूत बभ्नइ ना मुहवांह् कई ए लीहलेन
सोझइ चलि गयल ना परबत रे पहाऽड़ य
जाके भाई ऊतरि ना खलवांह् लेइ ओठिन
ऊहो भाई बइठल ना फेटियाह् घूम रे राई
सवा लाख रंगति बारतिया बा पेटवां में
ऊहे भाई हमरेह् ना भोर से जिनगी रहबय
तोहके जे देलेह बरह्मवा जे बान रे डंडा
जाइकेनि बइठह् झारियवाह् रे अगोरी
नाइ जउं उतरीय ना दूतवाह् रे पियसलय (६५०)
खींचि केनि पीहंइ ना जलवाह् र भऽरी
तोहकइ सावाह् ना लाखवाह् बरि रे यतिया
ओहि घरी मरि जाई ना नागवाह् केनि रे पेटी
अब भाई हमरे ना बतिया में जिनि रे रहबऽय
अउरुह निकलि जाबह् ना मिरुत रे लोके
अहीराह् उहवांह् सेनिय नह ब्राई रे सरकऽय
नीकलि अयनह् ना धरतीय असरे मानऽय
टहरई लगनह् धरतियाह् लेइ रे घूमि कयं
देखत बाड़इ झरीयवाह् कइ रे घाटय
झरिया में दस बीस डहरियाह् रे देखाऽलय (६६०)
अहीराह् पड़ल गुननियांह् में नि रे बानऽ
आजु हम कवनइं ना घटवाह् र अगोरी
बइठल रहीय ना घटवाह् रे अगोरी
का जानी कवनेह् ना घाटवा पर दूत ऊतरीहंय
मट्टिय होइ जाइ बरतियाह् रे हमाऽरय
ओहि घड़ो सुमिरैं ना दिनवाह् भाग रे मानय
सब कनि लेतइ ना नउवांह् रे सुमिरी
आजु कहैं सुनिलह् ना मइयाह् मोरि दुरूगा
देवियाह् लागह् साकतियाह् रे साहाई
आरे कऽवन राहतवा ज जाई रे छेंकी (६७०)
मइया तूं देतीउ ना भखवाह् रे सुनाई

ओहि घरी चऽढ़लि नजरिया पर माई दुरुगवा
जवन हईं आदिय न दिनवां कऽ पूज रे माऽनय
जउने घरी ताकईं झरियवाह् रे गुरेरी
आजु कहैं सुनबेह् बऽरूववाह् फूल रे झरूवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽरय
जाइ केनि बीचलाह् ना घटवा जे तूं अगांरऽ
अब दूत अबहेंह् ना ओठवा जे बोरि रे देला
ओहि घरी जाइकह् ना बइठल घंटवा पर
उहै गंगा चलल ना उहवां सेनि रे जोड़ य
एकदम धरतीय अकासवाह् रे देखालाऽ (६८०)
थर थर फांपलि ना जंघिया बा लोरिके कऽय
अहीराह् दांत न अंगूरियाह् रे चवानय
आजु बाबू चरीअई अंगूरवा के मोर रे खांड़य
इन्हे भाई धरतीय लागल बाह् अस रे मानऽय
केह हम खोदब ना एकरेह् देहियां में
दूतवाह् ऊलटि ना मुहवांह् फेरि रे कऽनी
गायब करिहंइ जिनिगियाह् रे हमारऽय
एतनाह् कहत न बानह् लेइ लोरिकवा
सब केनि लेलेसि ना ओठवाह् रिरि रे काय (६९०)
जवने घरी पहिल न घोंटवा जे हिंचिये दीहलेन
ठेहुन भयल बारतियाह् केनि रे बाइ
तब तक देखत ताकतवा जे फेरि रे खीचलेनि
दोहराह् दलेसि ना घोंटवाह रे चऽढ़ाइ
भाई एतनांह् ना पनिया ज होइ रे गऽयनऽ
सड़क भइल बा रतिया रे लथ रे गोय
तीसराह् ना घोटवाह् बाइ चढ़उले
तब तक तड़पलि दुरूगवा बाई रे माई
आजु कहै सुनबेह् बरूअवा फूल रे झरूवा
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर (७००)
चेलवाह् एनह् न घोटवाह् रे चढ़इहंय
माट्टीय होइल बारतियाह् रे तोहार
हमकेह् लागल बा छुधवा रे पेटवा कऽय
खप्पड़ लेइलेह् दुरूगवा जे बाइ रे माय
बरसेंइ खींचबेह् ना खंडियाह् रे दागाहें
हम दे देबइं ना बीचवाह् ढंग रे लाइ

ओहि घड़ी खींचइ ना खंडियाह् रे दोगाहें
जेकर भाई तड़क आकसवां जे कइ रे जाइ
आजु कहँ नीचवांह् ना मरलेह् जे बा दवन्हरा
परोसन गईनींय लऽवरिया जे गुमि ये आय (७१०)
आजु घूमि गऽइलि मलकिया बा दूतवा कऽय
खंडियाह् गइनींय गऽरदनेहि रे बिसाय
जवने घरी गिरि गइल ना मुंड़वा जे झरिया में
पनियाह् लवटल ना पेटवा के देख रे वाय
जेतनाह् अबराह् दूबरवा जे जवन रे रहनंऽ
एकदम गिरंलह् झरियवा में बहि रे जाय
आजु लथ बोथइ बारतिया आहीरे कऽय
बदरीय देलेनि मूरूजवाह् घेरिय जाई
जाड़वाह् कइलेनि बऽरतियाह् के बड़ रे जोरय
खट खट हीलइ जेवनवा न कइ रे दांतऽय (७२०)
ओहि घरी बोलल ना गुरुआ सेनि रे लोरिका
गुरुवाह् तें मनबह् कऽहन वा रे हमार य
देख भाई देखलि ना राहतवा हउ तोहारय
आजु भाई चीन्हल ना गउवां हो गिरावांऽ
कतहूं जो नियरेह् ना गउवां जे गुरू होतऽ
अब लेइ अवतह् ना अगियाह् रे उठाय
आजु भाई पल्ले क सनइया जे भीजि रे गइली
सवा लाख कांपनि बरइतेहु रे हमाऽर

ब्रह्मा द्वारा डाइन की रचना किया जाना—गांगी नाऊ तथा अजयी धोबी डाइन के पेट में

तब तक सुनह् ना हलिया जे बरह्मा कऽय
अब हीय टेढ़इ भयलवा जे देख रे वाय (७३०)
आजु बरह्मा नावह् ना माया के घर उठाइ कऽ
औ फेरि देहलनि ओसरियाह् रे झुकाइ
ओही में आगिय ना बारि देय धध रे कालय
एकठेनि देलेनि डाइनिया जे ओही मुताय
बुढ़ियाह् धरइ ना रूपवा जे लेउवातर
धीरे-धीरे कहरंत डाइनिया जे देख रे बाइ
तब फेरि नऽजरि लोरिकवा के परि रे गऽइनी
गुरूवा ते मनवेहू काहनवांह् रे हमाऽर

देखु भाई बड़ीय बखरिया जे बाइ रे लवकत
ओ भाई पछिवांह् ओसरिया जे ओकरे बाइ (७४०)
उहवां पर बऽरतिया अगियाह् ओहि ओसरियाँ
एक जिन खटियाह् ना लवकति देखु रे बाय
आजु जा के लेवह् ना अगियाह् गुरु उठाई
सवा लाख तापति सऽकलवा जे बरि रे यात
अस रेंगल ना गुरूवाह् बा अजइया
एकदम रेंगल बऽखरियांह् चलि रे जालय
गुरूवाह् बोलत लारमिया के बाई रे बोलऽय
आजु भइया केकरह् घरवाह् रे दुवारय
आजु के हवई ना मालिक लेइये आजऽय
तनी एक आगीय ना हमहूँ के देइये देतऽ (७५०)
आजु भाई पीहइं तमखुवाह् मोर रे लोगय
तब फेरि बोलति ना डाइनिया बा खटिया से
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जबाब य
भइयाह् तोहरइ ह् घरवाह् रे बखरिया
अब लेइ जाबह् ना अगियाह् रे उठाई
हमकेह् वारह् बरदवा जे जर रे चऽढ़ऽ ल
उठ के सम्पति ? ना देहियांह् बाइ देखातय
तब तक देखई ना हलियाह् अजईय कऽय
एत गोड़ धारत भीतरियांह् रे उठाई
जउने घड़ी नीहूरि लुअठियाह् धर के कइलेन (७६०)
मुंह भरि के कूदलि डाइनियाह् ओहि रे दम्मय
आजु कहँ ठाड़ेह् अजइया के लीलि रे गइली
जाइके भाई सूतलि खटियवा पर मचि रे आई
सूनह् ना हलियाह् अहीरे कऽय
लोरिकाह् बड़ेह् गुननवा में होइ रे गयल
जाहि भाई जड़ायल ना गुरुवाह् रहल अजइया
जाड़ा में पवलेसि अगिनियांह् पेट रे भरी
गुरुवाह् बातेह् ना चितवांह् बतियातऽय
तब फेरि तापत अगिनियांह् पेट रे भरी
आजु कहें सुनबेह् ना गंगिया मोर हजाम्मय (७७०)
एठियन मनबेह् काहनवां रे हमारऽय
सारवाह् गुरू अजइया बद रे मासय
उहे भाई जाइकह् ना बतिया भर रे माई कऽ

पेट भर तापत अगिनिया गुरू रे बाड़ऽय
गांगी तूंय दवरहू ना ओठियन अगिया से
अब जल्दी लेइ आवऽ ना अगिया रे उठाई
ओहि घरी दवरल ना गंगिया चलि रे गऽयनऽ
एकदम नीकलि ओसरियाह् केह् दुआरे
ओहि घड़ी देखइ तामासवा लेइ रे गंगिया
ओहि नाहिं गुरूय आजइया रे देखानऽय (७८०)
ना त कोई देखई सांझरवां तर रे दारऽय
एक ठेनि बुढ़ियाह् खटियवा पर रे कहंरय
नउवाह् बड़ेह् सुबहवा मेंनि रे बानऽ
नाउ फेरि अहर पाहरवा घूमि रे देखऽय
नाहिं गांगी मरलेह् खंखरिया बरि रे यारय
भइयाह् केकर ह् घरवा रे दुआर य
तनी एक देतीउ ना अगिया रे टेकाई
ओही घड़ी बोलल डाइनिया खटिया से
भइयाह् तोहरइ ह घरवा रे बरवारी
हथवा से लेइ जाह् तूं अगिया रे उठाई (७९०)
हमके बारह बरदवा रे जर रे चऽढऽल
देख भाई उठइ के संवसत नाहि रे बाय
ओहि घड़ी एकइ ना गोड़वा जे वा बहरवां
एक पर धरत भीतरियाह् केनि रे बाय
जवने घरी नीहुरि लुअठिया धरि के चहलेनि
मुंह भरि के कूदल डाइनिया जे देख रे बाय
गंगिया के टाड़ेह ना टड़वा जे लीलि रे गइलीं
फिरि जाके मूतऽल खटियवा पर मचि रे आइ
ओहि घरी सूनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
लोरिकाह् मानेह् आरथवा बा बइ रे टावऽत (८००)
साईत के गुरूय आजइया के डरि ये नहिनी
जाके ओह ठीलिह् ना अगिया रे तापत रे बानय
आजु मोर हुकूमीय ना नउवा जे गांगी रे हउवां
बड़ी जल्दी करत ना कामवा जे देख हमाऽरऽय
एतनाह् देरीय ना नउवा जे नाह् हो करऽत
अब से आइ गऽयल बारतिया में गांगि रे रहंतऽय
आजु भाई अइसेह् ना बतिया जे हम देखलऽय
जइसेहि होति बाह् ना धोखवा केनि रे मार

नाहिं सूनह वा हलिया ओठियन कऽय
केह् भाई ओहीय समइया कइ रे हालऽय (८१०)
ठाडे ठाडे रेगल अहीरवा बीर रे लोरिका
एकदम रेगल डाइनिया घर रे जानय
ओहि घरी मारइ खाखरिया दुअरा से
बोलत बानह् लाग्मवा कइ रे बोलय
ओहि नात गगियाह् ना नउवा रे देखा नऽय
ना कहिं गुरूय अजइया बाट देखातऽय
अब फेरि मरलेमि खाखरिया बरि रे यार य
आजु भाई केकर ह घरवा रे बखारी
तनी एक देतीउ अगिनिया हम टेकाई
ओहि दिन बोललि डाइनिया बा खटिया से (८२०)
बोलति बानीय लारमवा क देख रे बोल
भइयाह् तोहरइ ... आह् रे बखरिया
अब भइया ले जाह तू अगियाह् रे उठाइ
ओहि घडी लोरीक ना दरवाह् बाइ रे रेगल
एक गोड धरत ओसरिया मे देख रे बाय
जवने घरी नीहुरि लुअठिया जे पकइ गयनऽ
मुह भरि के कूदलि डाइनिया जे देख रे बाय
आजु भाई बीरेह ना देहि केनि रे लीन्हऽय
आदनइ लीललेह् ना डाटेह् बाइ रे जात
तब देह धरि धरि ना मइयाह् मोरि दुरुगवा (८३०)
जेन्हई ना आदिय दिनवा के रे पूज रे मान
आजु कहँ तडपलि ना मइयाह् बा रे दुरूगा
बरूवा ते मनबेह् काहनवाह् रे हमार
तोरे भाई जेबवाह् मे छुडिया जे होइ कटरिया
अब् बेह् कइ देह् ना बडवाह् रे ले जाय
ठाडे ठाडे फाटि जाउ ना लदवा जे डइनी कऽय
निकलि निकलि होइ जाह् ना निकलेह् मय रे दान
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब ठड भयल लोरिकवाह् केइ रे बॉनय
आजु कहै बलवाह् से हिचले जे बा कटरिया (८४०)
अब बेड कइलेह ना पेटवाह् मेनि रे जाई
डइनी के ठाडइ ना लादवा जे फटि गयनऽय
हसतइ निकलब ना गुरुवाह् रे अजइया

हंसतइ निकलल ना नउवाह् रे हजामय
ओहि घरी देखनह् ना हलियाह् लोरिके कऽय
ओहि घड़ी झूकल अजइयाह् ओर रे जाला
आजु कहैं गुरुवाह् ना रहतं मोर अजइया
तोहें दुइ भागेह् देइत ना ढुरि रे याई
अइसन अइसन ना अड़गड़ काम रे रहनऽ
काहे नाही अगहीय ना बतिया देत सुनाई (८५०)
तब हम छनइ ना बान्हवा से अपने रहतई
तब मोर होतीय बिपतिया के बाइरे ओरऽ
ओहि दिन बोलल ना गुरुवाह् बा अजइया
चेलवा ते मनबेह् काहनवांह् ना हमार
तोहरे पर बरम्हा ना टेढ़वा जे होइ रे गयनां
एतनाह् कऽरत ना हवं रे होंकार
आजु तोहार एतना ना सिहटि कइ रे दीहलेन
कुछ मोरे बूतेह् कहलवा बा नाहि रे जात
देखह् ना हलियाह् अहीरे कय
अपने हाथेह् लुअठियाह् बाड़ बटोरत (८६०)
जेतनाह् रहनीय लुवठियाह् आज महीतय
उहे भाई देलेह् बारतिया में चलि रे गयनऽय
सवा लाख कांपति बरतियाह् डडिया पऽर
ओहि घड़ी ले लेह् अगियाह् बाइ रे बांटत
दस बीस दरेह ना अगियाह् बाइ रे बोझऽत
आजु भाई घूमि घूमि तापत बाह् सब रे लोगय
जेके भाई ठावई ना ठिकवा जे होये लगनऽय
आजु भाई तावाह् तमकुआह् चढ़ि रे गयनऽय
कठइत के बोलाल फऽरदियाह् ए लपेटऽय
ओहि धड़ी चढ़ल चिलमियांह् गंजवा कऽय (८७०)
धोरहीय मारत चिलमियाह् पर रे दम्मय
तब फेरि देखह् ना हलियाह् रे ओठिन कऽय
लोरिकाह् बोलल ना लारमवाह् कइ ये बोलय
दस बीस उठि जाह् जेवनवाह् लिख रे पढ़िहऽ
अब भाई गऽनह् बऽरतियाह् एहि रे दम्मय
अइ भाई जेतनाह् बऽरतियाह् जे सहि रे बाड़इ
जेतनाह् नयकीय बऽरतियाह् रे हमारऽय
ओहि घड़ी गनय ना लगनहं दस रे बीस य

एकदम ठाड़ाह् ना कऽरियाह् रे केतारय
सब कनि मीलल टोटरवाह् एक एक जगगऽ (८८०)
जूटलि बाड़इ कलमियाह् कइ ये जोरय
आजु भाई जेकरेह् ना मथवा जे चल बरतिया
कई भाई बऽरई दूलहवा जे नाहि रे बानय
ना त भइया बानह् ना ककवाह् रे कठइता
ना त उहे गुल्य अजइयाह् देख रे बानय
ना त उहे कठइत ना बुढ़वाह् रे देखानऽय
ना फेरि बानह् बतिसवाह् रे कहांरय
लोरिकाह् लेइकह् बिजुलियाह् खंड़ि रे रेंगनऽय
फेरि भाई गयल झरियवाह् रे नगीचऽय
जाइ कनि मुर्लिक मीयनवा जे फेंकि ये दीहलेन (८९०)
अब दहतगीय तानल बाह् तर रे वारय
जेके भाई चारीय अगूरवा जे भइनी रे बह रे
जेकर तऽड़क आकसवांह् बाइ रे जातय
आजु कहें नीचेह् ना मारि दइ रे दवन्हरा
पारगन गइलि लावरियाह् गुमि रे आई
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
उहवां से रेंगल अहीरवा कइ रे गोलय
पाछियाह ओरी से नीकललि बाइ पलकिया
बेलकुल ले लेह् आहीरवा चलि रे अयनऽय
आइ कनि देहलेनि बऽरतिया रे मिलाई (९००)
ओहि घरी ठोकलनि ना बजवा बज रे गीरऽ
अब जोरि देलेह् लड़किया अन रे हदऽ
जवने घरी बाजलि लाकुड़िया झरिया पर
पिरिथमी डगमग डगमग व कइ ये देनी
आरे भाई ले लइ ना रहिया जे उतरी कऽय
औ भाई ले लेह् उतरवा भा तड़ि रे याय
रातिय रेंगत बांह् दिन रे दवरत
कतनेनि बदत ना कुरवा जे देख मोकाम
आजु भाई रेंगल ना एकदम हो रेंगावल
अब चलि गयनहं बरइया जे पुर रे पाऽल (९१०)
अगवांह् मारीय बगइचा जे बाइ रे लवकत
ओठिय बावठ बारतिया जे रहि रे जाइ
आगे आगे रेंगल मारदवा बा बीर रे लोरिका

तेकरेहू पीछेहू सवा लाख बरि रे याति

बारात बरईपुर में— खटिकों के आग्रह पर रानी बरइनि का लोरिक से लडाई करना—हार के बाद अहीर से प्रेम-प्रस्ताव

जवने घरी बरईय न पुरवा मे चलि रे गयनऽ
एकदम हलि गय बगइचा जे मय रे दान
आजु भाई हलिकहू बगइचा मे देख रे राइ
डेरवाहू डालै ना ओठियन परि रे जाइ
आजु भाई धीरे धीरे बारतिया जे जूटलि जाति बाय
तब तक बइठल ना बानहू सर रे दार (८२०)
तब तक जुटि गइल बारतिया जे अहीरे कऽइ
आइकनि छटकि रामदिया जे सब रे जाट
ओहि घरी निकलल जाजिमवा जे बऽय ले पर
ओह भाई गीरल जाजिमिया जे बेनि रे बाइ
जउने घरी तनि गय जऽमिनियाहू केरि रे उपरना
औ फेरि दलइ बादरवा ज होइ रे ठाढ
ओहि घरी डटि कहू बरतिया जे देख रे बइठल
औ फेरि जूटत सभइ नाहू बरि रे यार
ओहि घरी दस पाँच ना पइजहू लइये गयनऽ
सब केनि बाटइ ना सीधवाहू-देइ र आइ (८३०)
आजु भाई सबकेहू रासधिया जे बटि रे गइनी
जेतनाहू रहनहू ना जतियाहू पर र जाति
एतने से बचि गइल रसदियाहू ओठियन बा
खाली बचि गयनहू ना गोपियाहू र गुवार
ओहि दिन बोलल ना बुढवाहू बा कठइता
लडिकाहू मनबहू कहनवाहू र हमाऽरय
आजु कहे अपनेहू ना हथवा के हथ रे भूजबऽ
कतहूँय जातीय बियादर हम अताई
एतना जे मूनल आहीरवा जे बड ए लोरिका
जरि मरि भयल ना ओठयन बेड खगार (८४०)
एक्काहू गउवाहू ना घरवा के अब ना रही हूंय
ककदाई कटलहू बदअमलीय कक रे तू
अपने हाथेहू अहीरवा जे हथ रे भूजिहंऽय
ठोकि केनि खइहय ना रोटियाहू एहि रे दऽम
······रतिया जे अहीरे कऽ

ओहि भाई कोटवाह् भदोखरि लेइ रे गाँवय
कि जउन नागर बरइयापुर रे पालय
आजु भाई देखह् तामसवाह् ओठियन कऽय
भोजन करत बारतियाह् सब रे लोगय
खाई पीय होइ गयल नाह् सम रे तूलय (८५०)
जउने घरी बइठइं जाजिमवांह् मेंड़ रे मारी
अब खुलि गयल ना बीरवाह् पनवा कय
अब खे गयल ना बीरवाह् रे बंटाई
ऊहे भाई कूचय मगहिया ढोली रे पाऽन
जवतह् देखह् बारतियाह् ओहि रे दम्मय
आजु भाई कसबीन पातुरियाह् दुर रे लगलीं
भंड़वाह् तोरत चिट्टुकिया पर बान रे तानऽ
ओहि घरी देखह तामसवा जे ओठियन कऽय
ओहि भाई नागार बरइयाह् पुर रे पालय
आजु फेर जेठइ माहीनवाह् देख रे हउवां (८६०)
आमवाह् पाकल बगइचाह् रे बनाई
जाजिम गीरल ना लंगड़ाह् माल दहि तर
जहवांह् बानह् खटिकवाह रे अगोरी
ओहि ठिन गीर गयल जाजिमवा जे अहीरे कय
अब फेरि टपकत ना आमवाह् ले रे बानय
अब फेरि बइठल ना लोगवाह् गउरा कय
तब सेनि लेनह् ना हथवाह् रे उठाई
उहे भाई लेनह् न मुंहवाह् रे लगाई
ओहरेउ बद देह ना आमवाह लेइ रे गीरंय
ओह् केउ खालह ना आमवाह् रे उठाई (८७०)
ओहि घरी देखइं खटिकवाह् लेइ ये ओठियन
ओहि भाई बानह् खटिकवाह् मुरमुरातय
नाहि फेर आहींय ना बतियाह् रे सहयऽनऽ
खटिक कच्चीय ना बोलियाह् दे सुनाई
लोरिकाह् सूनई न एहिय देइबे काने
ओहि घरी चऽढ़लि नऽजरियाह् पर रे बातय
आजु कहैं सुनबह् बरतिहाह् रे हमारऽय
गउरा के उठि जाह् घबरूवाह् रे जेवानय
अब भाई देबह् ना अमवाह् छिति रे राई
जेतनाह् पाकल ना आमवाह् पेड़वा कऽय (८८०)

ओहि आम खाबह् न एठियन रे हिलाई
जेतनाह कच्चाह् ना आमवाह् पेड मे बचिहंय
झोरि कनि देबह् धरतियांह रे गिराई
आ जबन पेड़इ ना पातवाह् लेइये हउवां
दस बीस लेबह् जेवनवाह् कसि रे आई
पेडवाह् के देबह् ना तनीय रे घुमाई
अब फेरि मारिकह् झऽटकवाह् राखि रे देब्या
फांकह एक दर होइ जाइ नाह मत रे दानऽय
कऽउर गाजि दह् बागइचाह् महि रे दूसर
ओहि दिन उठनह् जेवनवांह् छित रे रायनऽय (९९०)
सब भाई कइलेनि हऽलतिया रे खराबय
अब कहे अम्बाह् ना झोरियाह् क चढवलेनि
अब फेरि रोवइं खटिकवाह् ओहि रे दम्मय
एकदम रेंगल वाऽरइयाह् बान रे जातय
जाइ कन देनह् दुहइयाह् चाननी पर
मूबवाह् मनबह् कऽहनवांह् रे हमारय
आजु भाई तूहई जाबरवा जे देख रे रहलऽ
तोहरे से जऽबर डऽहरवाह् नाहि रे कोई
आजु भाई कहां के जाबरवा जे बाइ रे चढ़ऽल
आजु भाई एतनाह् ना बतियाह् बायं रे कऽहत (१०००)
तब तक मुनह् न हलियाह् रे हवालऽय
ऊहे तब खटिकवा जे चलि ए दीहलेनि
एकदम मूबाह् बरइयापुर रे पालऽय
जाइ कनि देलेनि दुहइयाह् चाननीय पऽर
मूबवाह् मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
एकतह् तूहइ जाबरवा पर डहा रे रहलऽ
तोहरे से जाबिड़ ना डहवाह नाहि रे कोई
का जानी कहा के जाबिड़वाह् बाड़ रे चऽढ़ऽल
आ सूनह् हलिया ओठियन कऽय
अब कइ दीहलेह् ना बगिया उदि रे यान य (१०१०)
ओहि घड़ी मूनह् न हलिया ओठियन कऽय
कइसे हम बालव ना बाचवा जे अब जियइबऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलिया रे चुकाई
उहां नाहि रचनह् बागइचा कई रे बानय
कऽउर गांजल बगइचा एक रे डारा

पेड़ेहू् पातहू् ना पतवाहू् नाहिं रे बान य
उहवां पर गीरल जाजिमवा बा आहीरे कऽय
जलसाहू् होतिय बरतिया जे देखऽ रे बाय
ओहि दिन सूनहू् ना हलियाहू् ओठियन कऽय
केहू् भाई ओहूय समइयाहू् कइ रे हाऽलऽ (१०२०)
आजु भाई कऽहत ना बतियाहू् अर रे थाई
ओहि घरी देलेन दुहइयाहू् जाइ खऽटिकवा
मूअवाहू् मूनत ना कानवां जे बाइ लगाइ
ओहि घरी मुनलेसि ना बेलकुल रे धियनिवा
ऊ सूबा तुरतेंह पायमवा जे कसि ले लेई
ओहि दम अंगवाहू् न क सई रे आंगरखा
गोड़वा में कातत तेउरिया जे बाड़े तंवार
आजु भाई डिलियाहू् ना सहियाहू बाइ रे जूता
ऊहे फेरि ले रेहू् ना एंड़वा जे बाड़े चढ़ाइ
आजु भाई ले लेसि ना तेगवाहू् लेइ ये ओतन (१०३०)
जेकर बानहू् न धजवा जे फहू रे रात
उहवा से रेंगल ना बानिय रे बरइनी
एकदम रेंगलि ना चढ़िया या चलि रे जात
जउने घड़ी थोडेहू् बारतियाहू् रहि गे गइली
बरइय डाटत ना बतियाहू् देख रे बाइय
आजु भाई काहेंहू् के लोगवाहू् बारि रे यतिया
कांहहू् टीकलि बारतियाहू् रे तोहाऽर
आजु कहै केकरेहू् ना जंघियाहू् बल रे भयनऽ
केकरेहू् भूजाहूं बयल नाहू् बउ रे साय
केकरेहू् जामीय तरूववा मेंनि रे दांतय (१०४०)
आजु कइ देलसि ना बगियाहू् उदि रे यान
तब बोलल मारदवा बा बीर रे लोरीक
दरियांहू् करई ना बेंड़वा जे देख जबाबय
आजु मोर गउराहू् ओतनवा जे हवं रे गोतन
गउरा में टूटीय गइलि बाहू् बुनि रे यादय
आजु कइ दीहलीय चऽढ़इया जे सुरहुल के
अब टिकि गइलीय बरइया जे पुर रे पालऽय
ओहि घरी जीदलि ना बरइनि कइये लड़िकी
अउ फेरि बोलति ना छुट्टांह बाइ रे बोल
आजु भइया केकरेहू् दिमकवा से टूटि रे गयलऽ (१०५०)

आजु मोरे कइलह् बगनियाह् उदि रे आय
ओहि घड़ी दुन्नोह ना ओरिया से बाति रे लऽड़नी
बातेह बातेह् भयलवा बा भंवरे दाल
जउने घरी तड़कीय ना तड़काह् होइये गयनऽय
दुन्नोंह चालइं पयंतरा जे लेल रे कार
जउने घरी दुन्नोंह पयंतरा जे चले रे लगनऽ .
जइसे भाई भादवं भंइसवाह् मक रे नाय
ओहि घड़ी देखह् ना पयंतड़ पर रे जूट नऽ
कले कले अयनहं आवरिया पर नगि रे चाऽय
ओहि दिन बोलल बरइयाह् लेइये लऽरमें (१०६०)
अउ फेरि कऽहत ना बतिया बा समु रे झाइ
आजु भइया मरबेह् ना मरबेह् भलु रे सूबवा
जब फेरि तोरै आवरिया में आइ रे जाइ
ओहि घरी बोलल मारदवा बा वीर रे लोरिका
दरियाहं करइं ना बेड़वांह् रे जवाब
देखु भाई आगेह् आवरिया जे ना चऽलबई
न त घाव पीठेह् ना रखबइ रे गोआय
हमरेह् गुरू के किरियवा जे बाय अऽथानऽय
आगेह् मारइ के हथवाह् रे तिलाक
······देत बा समुझाई (१०७०)
बरइनि बोललि ना दरियां जवाबऽय
आपन खींचइ ना तेगवाह् ओहि रे दम्मऽय
मारति बाड़इ चिकसवाह् अहीरे कऽय
ओही घड़ी खेलल अहीरवा बीर रे लोरिक
आ फेरि बावइ तिरिछयाह् घूमि रे गयल
तेगवाह् गीरल धरतियाह् भहरे राई
ओहि घरी दूसराह् आवरियाह् बाय रे खींचत
अहीरे के मारत फेटेसियाह् रे सम्हारी
ओही घरी खेलल अहीरवाह् बीर रे लोरिका
चम्फाह् डांकल मारगवाह् चलि रे जानऽ (१०८०)
तेगवाह् गिरल धरतियांह् भहरे रे राई
जवने घरी तीसराह् ना घउवाह् छूटि रे गयनऽ
एक दम खालिय आवरिया जे रहि रे जाऽय
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
अब भाई देलेह् आंसरिया बा लेल रे कार

आजु कहैं सुनबेह् ना सूनबाह् तेइयें बरइनि
एठियन तें मनबेह् काहनवांह रे हमार
देख तोर पक्काह् न घउवा जे थम्हि रे ले ले
अब कच-लोइयाह् ना थमबेह् रे हमार
जउने घरी मुरुकि मीयनवा जे फेंकिये दीहलेन (१०९०)
औ फेनि कऽसत बानइ नाह् तर रे वार
जेके भाई चारिय अंगुरवा जे गइनी रे बहरे
जेकर ताड़क आकसवां जे चलि रे जाय
आजु कहैं नीचवांह् ना मरले बा दवन्हरा
पोरसन गइनीय मड़रियाह् लियये जाइ
ओहि घरी घूमि गइलि मऽलकिया जे बरइनि कऽय
अब खांड़ गीरति गरदनेह् पर रे बाइ
ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
जेहइ आदिग ना दिनवा क पूज रे मान
ओहि घड़ी फारि देइ ना चोलियाह् बरईनि कऽय (११००)
अउ फेरि चढ़ि गइल नाजग्यि पर लोरिके बाय
लोरिकाह् देखई बा तनवा जे तिवइया कऽय
बोलल बानह् ना हांथवाह् जोरि रे आय
आजु कहैं धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
आजु रखि देलह् धारमवांह् माइ हमार
जउ भइया तिवई ना जनिया होइ क जूझत
आज डूबि जातइ बन्सवा के मोरि रे नाम
तउनेह ना दिनवां राम समइयां
केह फेरि ओहूय समइया कइ रे हालऽय
जवने घड़ी फाटलि ना चोलियाह् बरइनि कऽय (१११०)
सीनाह् लवकल बदरियांह् लेइ रे वानी
ओहि दिन परि गइल नाजरिया लोरिके कऽय
लोरिकाह् हहरल मारदवाह् पुनि रे बान य
आजु कहैं हो हो ना दइवा मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा र लीलारय
ईय भाई रखलह् धरमवा रे हमारऽय
दुरूगाह् लागइ साकतियाह् हो तोहारऽय
अब नांहि जूझति जाननिया जे लेइये खंड़ियां
आज डूबि जातहं न बंसवा के मोरे रे ओर
ओहि दिन तवनेंह ना दिनवाह् राम समइयां (११२०)

बरइनि फेंकति ना तेगवा जे अपने बाय
आजु कहैं सुनबह् आहीरवा जे बीर रे लोरीक
अव नाहीं छोड़बइ ना पिंडवा जे तोहार परान
आजु कहैं ईहई पारनवा ले हमरे रहनऽ
जे भाई लोहहुं में नीचवा कइ रे देइ
आजु भाई उहयि पुरुसवा जे हमरे नारी
इहइ हम रखलेनि परनवा जे भग रे वान
अब नाहि छोड़ब ना पिंडवा जे देख हो लोरीक
हमहूँय चलब सुरावलि दइयु रे पाल
..........मारदवा बीर रे लोरिका (११३०)
अब धन सुनबह् वरईनीय मोर रे बातय
अब नाहि छोड़बि ना धनवांह रे तोहाऽर
जब सेनि नाहिय सुरहलि से लवट वऽय
तब मुनि नाहिय ना सथवाह् लेब लगाई
आजु भाई सीखयहि ना लोगवा सुरहुलि कय
उहे भाई संगेह् लीयवले बायं रे बहिन
पदवा में लेइहंइ दीलगिया रे हमारऽय
बड़ि हंसी होंइहंय बरइयापुर रे पालो
लोरिका बहिन ना संगवा में बाड़े लीयवले
संगवाह ले लेह बारतिया में आयल रे बाय (११४०)
ओहि दिन निन्नाह् नाँ नीचवाह् मुंड़ी रे होइहंय
आजु फेर अजगुति ना उठिहइ जे धन हमाऽर
ओहि दिन बोलल ना धनवाह् वा वऽरईनि
एहि ग्रीन छोड़बि ना जानवाह् हो ताहारय
हमहूँय साथेह् सुरावलि चलि रे चऽलब
भमूरे के करव बिहवाह् लेल रे कारो
ओहि दिन बालल मारदवा बीर रे लोरिक
अब धन मनबेह् काहनवां रे हमारय
अब तूंय बइठल बरइयापुर रे रहऽ
आ तू करह् ना पानवा कइ दूकानी (११५०)
जवने दिन लऽवटि सुरावलि से हम रे अइबय
भउजी के लेबइ ना डाड़या जे फन रे बाय
जवने घरी नागरि सुरावलि लवटि रे अइबय
तोहरउ लेबइ ना डंड़ियाह् फन रे बाय
संगे चलहू देवरनिया रे जेठनिया

हमरेहू नउगर गउरवाह् जे गुज रे रात
एतनेह ना बतियाह् रे कहनवां
आ फेरि बइठलि बारइना मन रे मारी
ओहि दिन सउजलि बारतिया अहीरे क य
आ छोड़ि देतीय बरइया पुर रे गांवय (११६०)
अब बइ ले लेहू ऊतरवा कइ रे राहय
आजु कहँ रातिय रेंगत बां दिन रे दवरउत
बीच लेनि बउदत ना कुरवा रे मोकामय
आजु भाई बउदति लाकुड़िया बाइ रे अधमति
अब फेरि चउढ़लि सुरवली जे जाल रे पालि
जवने घड़ी थोड़हू जमीनिया जे रहि रे गइली
कउवां (गउवां ?) पर चाढ़लि सुरवली के देख रे बाय
ओहि दिन पूजलि ना नीदिया के जइये भीमली
छ महीना चढ़नि ना नीदिया जे ओहि रे दाम
ओहि घड़ी आइ गइ नीदरिया जे भीमली के (११७०)
उहे भाई सुतत ना रहनहू रे बनाइ
ओहि घड़ी बाजनि लउकुड़िया बा जइ ये मुरुहुलि
उत मधि बाजलि लाकड़िया बा अन रे हाथि
ओहि दिन रोवइ ना बापवाह् रे वमरिया
उहे भाई पटकत तकथवा पर बाने रे माथ
आजु कहँ हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
का बरम्हा लीखलाह् ना मअवाह् रे लिलार
आजु मोर बेटवाह् ना जनमल रे गुदइया
एन्हे लागल कुम्हइ करनवा के देख रे नीद
का जानी कहवांह् के सूबवा जे कइलस चढ़इया (११८०)
लकड़ीय बाजति सुरवली मंनि रे बाय
आजु भाई लूटलेनि ना रजियाह् रे सुरावलि
कुछ मोरे बूतेहू काहलवा बा नाहि रे जात

बारात का सुरवली में शम्भू सागर पर डेरा डालना— खाद्य सामग्री की कमी होने पर अजयी का नगर में जाना

ओहि दिन रेंगलि बारतियाह् रे रेंगावल
चढ़ि गइनीं सेम्हुव सागरवा के देख रे भीति
ओहि ठिन जमि गईल बारतिया जे अहीरे कउय

भींटवा पर गीरत जाजिमवाह् लेइ रे बाय
जउने घरी गिरि गयल जाजिमवा जे अहीरे कऽय
होइ गऽयल दऽलइ बादरवा जे मुंह रे ठाढ़
आजु कहैं चारिय ना कोनवा जे चढ़ि रे गेसिया (११९०)
बीचवा में गऽइलि झम्पुआ जे लटि रे काय
ओहि दिन बइठेंइ ना जे लोगवा गऽउरा कऽय
आजु भाई बइठत मेंड़रिया जे बान रे मारि
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
के फेरि नगरि सुरवली के देख रे हाल
जउने घरी मारिय कऽचहरीय बइठि रे गयनऽ
औ फेरि जलसाह् बऽरतिया में होत रे बाइ
ओहि घरी कसबिन ना घुरनिय रे पतुरिया
भड़वाह् तोरत चिटुकिया पर बान रे तान
घेरि कनि बइठंइ ना लोगवा जे गउरा कऽय (१२००)
देख भाई कूचत मगहिया जे बाड़ रे पान
इहे ना तवनेह् ना दिनवां राम समऽयां
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलय
जऽलसाह् होतिय ना भींटवाह् पर रे बानऽय
मुदई सूतल ना किलवांह् बा हमा र य
ओन्हे लागल छवइ महीनवाह् कइ ये नीदऽय
अठयें से तीनिय महीनवां जे बीतल हो जालाऽ
ओहि गांव सेम्हुव सागरवा कनि रे भींटऽय
तब फेरि देखह् ना हलियाह् लोरीके कऽय
लोरिकाह् बोलत लारमवा क बाइ रे बाल य (१२१०)
आजु कहैं गुरुवाह् ना मुनिलऽ मोर अजइया
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽरय
कहल जे चलतइ बिबहवा कर रे वइ बऽय
सतिया के देबइ ना डंड़िया फन रे वाई
तवन गुरू तीनिय महीनवा बीति रे गयऽल
ईहां नाही रूअवां ना धुववां रे देखात य
कहियाह् जगिहइं ना मुदई खेतवा पऽर
कहियाह् जइहंइ झागड़वा फरि रे याई
हम गुरू कम्मइ खऽरचवा लेइ रे अइलीं
आजु भाई गऽयल खारचवा गोइ रे आई (१२२०)
इ तोहार नऽगर सुरावल जनम रे भूई

संगी होइहंइ ना गुरूबाह् रे तोहार
आजु तूंय जातह् ना पलियाह् रे मुरावल
गुरुवा तूं खर्चा जा लेबह् अवरे आय
पल्ले क गऽयल खरचवा बा गोइं ड डाइ
का खइहाइ ना सवाह् लखवा ज बरि र याति
ओही घरी रेगल ना गुरुवाह् बा अजइया
उतरल हलल सुरवलीय जाइ रे पालऽय
जउने घरी हलि गयल ना गलियाह् मूरहुलि के
सोझइ सहुवाह् मऽहीचन के दर ग बागऽय (१२३०)
उहे भाई बइठल दूकनिया पर यान महीचन
गुरुवा के देखलेसि सऽकलियाह् आंहि रे दम्मय
उहे भाई कालिय कुर्मियाह् लउ दव र नऽय
गुरुवा के देलेनि बइठकाह् लेई रे धई
ओहि घरी नाउनि ना मथवाह् बा नेवरले
गुरूवाह् भरिमुख देतई बा असिरे बादय
ओहि घडी बालल ना महुवा बा महीचन
एठियन मनवह् कऽहनवा र हमाऽरय
आजु कालि काहह् आतनवा बा गुरू हो गातन
आजु कालि काहह दूटति बा वुनि रे या दऽय (१२४०)
तब फेरि बोलल ना गुरुवा बा२ अजइया
चेलवाह् तू मनबह् काहनवाह र हमाऽरय
जउने दिन ना गरि जे मूरहुल छोडि क भगली
चलि गइली नागरि गऽउरवा गुजरे रे रातय
हम जाके मूडल ना चेलवा गोपी गुवालाय
जकर भाई दूल्लर लारिकवा थाउ रे नावय
कहली जे बलवाह् मे रजवा बाइ भीमलिया
करया मे बानह् लारिकवा सर रे दाऽर
आजु भाई देवीय दुरूगवा बा पूजरे मागय
अहीराह् चलह् दुरूगवा केनि रे व ले (१२५०)
इहे माई चलतेद मुदइया मारि र दइहऽय
सतिया के कऽरब बिबहवा लेल रे कारी
आजु गुरू कम्मय खरचवा चेला ले अइनऽ
तोहार खर्चा गऽयल पयड़वा गोइ रे ड़ाई
आजु भइया देइ दह् खारचवा हमहू के
आजु मोरे खइहइ सकलवा बरि रे यात य

जउने दिन नऽगर गऽउरवां चेला रे लवटी
अब हम अइहंइ ना घरवां रे दुआर य
उहवां से जोरि कह् रोकड़वा जे तोहरे देइहंऽय
गाड़ी छकड़ेह् रूपियवा जे भेज रे वाय (१२६०)
ओहि बोलल गा सहुआ बाइ महीचऽन
गुरू हम जइसेह् हुंकरिया नाहि रे भरबऽय
नाहि मोर बऽलीय ना राजवा बाइ भीमलिया
सुनीहइं जे खरचाह् मुदइया के देइ रे दीहलेन
बाल बचा देइहंइ कोल्हुइया में पेर रे वाई
हम अइसे नाहींय हूंकरिया गुरू रे भरऽब
जब हम देखब ना रूपवा जे लोरीके कय
ओमे हम थोड़ाह् परीय नाहं इत रे बार
तब हम देबइ खारचवा जे लोरिके के
एहि भाई सेम्मुव सागरवा के देख रे तीर (१२७०)
सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
गुरुवाह् बोलल लारमियाह् कइ रे बोलऽय
अब चेला मनबह् काहनवाह् रे हमाऽरय
हमरे त संघेह् ना एकदम चलि रे चलबय
देखिलह् चेलवाह् ना बइठल बान हमाऽरय
ओहि दिन अगवांह रेंगल बाह् गुरु अजइया
दुइ चारि सहुआह् ना संगवाह् रेग ए दीहलेनि
अब जान सेम्हूय सागरवाह् कइ रे भीतर
जवन घरी चाढ़ इं ना भीटवाह् लेइ रे ओठियऽन
अब फेरि सहुवा महीचना बा चढ़ि रे जातय (१२८०)
जवन घड़ी देखई दंगलिया जे गउरा कऽय
घर थर कंपनह् ना जंघियाह् रे सरीरय
उहवां पर एकक ना मइया कइ बांड़े रे दुल्लर
एक एक बइठल मुघरवाह् सर रे दार य
कूचत बानह् मऽगहियाह् ढोली रे पान य
महीचन के हिम्मति न नाहिनीय चढ़ि के ओठियऽन
फरकेंह कांपत जाजिमवांह् केनि र बानऽय
ओहि दिन रेंगल ना गुरुवा रे अजइया
अब चलि गयल लोरिकवा केनि रे पासय
आजु कहं सुनवेह् ना चेलवाह् मोर लोरिकवा (१२९०)
आजु नव लाखह ना सहुवा बाइ ठढ़य

ओनकर चढ़इ के हीमतिया नाहिं रे बाने
अब तुंह लेबह् पाजरवां बइ रे ठाईं
ओहि घड़ी उठल मारदवा बा बीर रे लोरिका
अब फेरि गयल सऽहुववाह् केनि रे पास
ओनकर धइकह् ना हथवा जे रे ली अवले
एकदम लेइ गयल पजरवा जे बऽइ रे ठाइ

महीचन साहु के आदेश पर महाजनों का शम्भू सागर पर बाजार लगा देना तथा बारात को उधार खाद्य सामग्री देना

बोलल ना चेलवा जे बाइ लोरिकवा
साहुवा तूं मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
आजु भाई हऽमइ खरचवा जे घटि रे गऽयल (१३००)
गुरू हम्में देलेनि तसल्लीय कइ रे बात
कहलेनि जे चललाई बिबहवा जे कर रे वइ बऽय
सतिया के देबइ ना डोलवा हम फन रे वाइ
तवन हम तीनिय महीनवां जे बीति रे गयनऽ
कम्मइ पल्ले में खारचवा जे रहऽल हमार
आजु खात बइठेंह बारतिया जे सवा रे लाखइ
खरचाह् गयल ना पालवा के गोंइ रे आइ
सहुवा तूं देइदह् खारचवा जे हमहूं के
आजु इहां खइहंइ साकलवा जे बरि रे याति
जउने दिन चलब ना हमहूं जे मुरहूलि से (१३१०)
चल चलबि नागर गाउरवा जे गुज रे रात
अब तोहार जोरि कह् रोकड़वाह् जे हम रे भेंजब
गड़िया से देबइ खारचवा जे पहुँ रे चाय
ओहि घड़ी बोलल ना सहुवा जे बाइ महीचना
दरियांह् करई ना बेड़वांह् रे जाबाव
आजु भइया कवन रूपियवा क नाइ रे कामऽय
कवन ना दूसर ना पइसा के नाहिं रे काम
आजु हम नागर सुरावलि कइ बजरिया
घेरि कनि देबई ना सगरं पर बइ रे ठाइ
आजु जेकरे ना मनवा में जवन होइ हऽइं (१३२०)
तवन ले ले करह् भोजनवा जे लेल रे कार
आजु हमार चिट्ठाह् पूरजवा जे जोरि ए काने
ओ पर देहह् पइसवा जे रे उतारि

जउन दिन नगर गउरवा जे चलि रे जाया
जोरि कनि भेजि देह्, खारचवाह् रे हमार
एतनाह् कहइ ना सहुवा रे महीचना
एकदम हऽलल सुरवली में चलि रे जाय
ओहि घरी रऽहल ना गलिया क मुख रे वीरऽय
ओकरे माथेह् वऽजावल जेहि रे बाय
ओहि घरी जातइ ना डुगिया वा पीट रे वय ले (१३३०)
आजु भाई सुनवाह् ना सहुवाह् रे हमार
जेतनाह् बाड़इ जे बाजरिया जे सुरहलि कऽय
चढ़ि चल सागर ना भांटवांह् ले ल रे कार
सवा लाख टीकल वऽरतिया बा अहीरे कऽय
खर्चा देवह् ना ओठियन रे जुटाय
आजु भाई एहियं में नफवा जे एकदम अइहंऽय
वइठेहि वालउ ना बचवा जे सब रे खांय
ओहि घड़ी बाजल ना डुगियाह् लेइ बजारऽय
अव सव देलेसि ना डुगियाह् पिट रे वाई
उहे भाई उजरलि वाजरियाह् मुरहलि कऽय (१३४०)
जाइ केनि छेकलसि सागरवाह् कऽ रे भीटऽय
ओहि दिन रोवई ना राजवाह् रे वगरिया
पटकत बानह् धरतियाह् लेइ रे माथऽय
आजु मोरि ऊजरि ना पलियाँ गइलि मुरहल
मुरहल में फेंकरत ना बाडवाह् रे सियारय
ओहि दिन रोवइ ना बापवाह् रे बमरिया
उहे भाई पटकइ तखतवांह् रे कपा रऽय
आजु मोरे बेटवाह् मुदइयाह् रे जनमऽल
लगनीय कुम्भइ कारनवा कइ रे नीदऽय
आजु भइया काहंहं के मुववा चढ़ि रे टीकनऽ (१३५०)
पलियाह् देलेन मुरवलीय रे उजारी
जवन भाई मारह् ? ना रहनऽ जे मुरहुलि कऽय
उहे जाके छेंक लेसि सागरवाह् केनि रे बीच
गउंवा में फेंकरइ ना दिनहींय रे सियारऽय
आजु मोरे बूनेह् काहलवाह वा नहि रे जात
''''''जलसवा बा भींटवा पऽर
छेंक लेहि बानइ नह् मुरहुलि कइ रे लोगयऽ
जेतनाह् रहनीय ना जतियाह् रे जनानी

जाइ जाइ छेकलेनि सागरवाह् कइ रे भींटाय
जेनकर भरलि गगरियाह् धरै रऽहंऽय (१३६०)
पनियाह् देनीय धऽरतियांह् रे गिराई
उहे भाई पानी के ओढ़रवांह् चलि रे जानी
जाइ कनि छेक लनि सागरवाह् कह रे भींटय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
घूमि घूमि देखइं गउरवां क सर रे दारऽय
तब फेरि सुनह् ना हलियाह् लोरिके कय
गुरूवाह् ते मनबे काहनवांह् रे हमाऽरऽय
कवनेह् ओढ़रे से झऽगड़वाह् लगि रे जातय
पट देनि जागत मुदइयाह् रे हमारऽय
दुइ हाथ चऽलति ना खेतवा पर तर रे वारऽय (१३७०)
जेके भाई रामई ना देतंह् तीन रे लेतऽय
एतना जब कहत ना चेलवाह् लेइ रे बानऽय
तब फेरि सुनह् ना हलियाह् रे हवालऽय
लोरिकाह् बोलल ना बोलियाह् रे कुबोलयऽ
आजु कहैं सुनबह् गऽउरवा के सब रे लोगऽय
आजु कहैं एक जननियाह् केनि रे ऊपर
दू दू तीन तीन मारदवाह् होइ जा पारऽय
बुजरीय हल्लाह् ना कऽरती ले भगिहंऽय
जाइ केनि किलवाह् लऽगइहैं देख रे आगऽय
उहवां से चऽढ़ीय ना मूबवाह् लेइ रे आजऽय (१३८०)
आजु कनि बइठिय ना किलवाह् रे अगोरी
एतनाह् कहत ना बतियाह् लेइ ये ओठियन
अउ फेरि बइठल गऽउरवा के बान रे लोग
ओही घरी हुकुमिया अहीरे के हो लागल
आ फेर उठनऽ जेवनवा खर भराई
अब कहैं एक एक जाननिया के ऊपऽर
दू दू तीन तीन मरदवा होइ रे पारऽय
ओहि दिन रोवइं जऽननिया सुरवलि कऽय
आजु कहैं हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
आजु कहैं काहंह् कय दुसमन बाइ रे टीकल (१३९०)
ईज्जति कइ लेसि ना एठियन रे हंका बऽय
रोवत चलनीह जननियाह् लेइ रे आगे
धइलेह् जानीय ना किलवाह् कइ रे राहऽय

ओहि दिन बोलइं जननियांह् रे पुरानऽय
जेतनाह् बुढ़ियाह् ना रहनीय रे जेवानऽय
उहे भाई बोलइ ना बतियाह् अर रे थाई
आजु कहैं सुनबह् ना राणीय बेट रे खाइया
एठियन मनबह् काहनवा रे हमारऽय
आजु कहैं जालिउ जवइंया के जगावऽय
आपन ठोकह् कारमवा तक रे दीर य (१४००)
इ फल कब्बउं जनमवां जे नाहीं रे खइलऽ
तवन फल देहलेनि परदेसिया रे चिखाई
बलकुन लऽवटि चऽलह् ना भीटवा पर
आजु कहैं एकक मऽरदवान केनि रे पीछयां
दू दू तीन तीन ना संगवा जे चलऽ नीकलि
ओहि घरी देखनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
उहै भाई साजलि ना गोलियाह् रे जननी कऽय
जाइ केनि छेक लनि सागरवा कइ र भींटऽय
सगरे पर कसबिन ढुरति बायं देखऽ पतुरिया
भडंवाह् तोरत चीट्ठकिया पर बानय रे तानऽय (१४१०)
अउ फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
जलसाह होतइ जाजिमवाह् पर रे बानय
अब नाहि जागल मुदइयाह् रे हमारऽय
दस पनरह रोजइ क दिनवा जे देख रे बीतनऽय
तब फेरि बारह ना बाजवाह् दिन रे भयनऽय
जेतनाह् रहनह् गड़ेरिया जे मुरहुलि कऽय
छेरि भेड़ि ले लेह सागरवा के अन रे भींटय
तब फेरि बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
आजु भाई सुनबह् गऽउरवा के मोर रे लोगऽय
आजु कहैं उठि जाह् जेवनवा जे एहि रे दम्मय (१४२०)
अब फेरि भीटवाह् जाबह् ना छितरे राई
जेतनाह् खासिय ना भेंड़वाह् जे गोलिया में होइ हंऽय
मारि कनि देइ दह् बनवनह् भंवरे ना रऽय
जेतनाह् बंचहि ना खेड़ियाह् लेइ रे भेड़िया
मारि कनि देवह् धरतियांह् रे गिराई
इह सारे रोवत ना जइहंइ कीलवा पर
अब फेरि करिहंइ गोहारीयाह् ना रे गोहारी
तब फेरि जगिहंइ मुंदइया जे खेतवा पर

दुइ हाथ चलीय सागरवांह् तर र वारऽय
जेके भाई रामइ ना देइ हंइ तिन रे पइहंऽइ (१४३०)
छन मेनि जइहंइ झऽगड़वा सब ओराइ
......रोवइं ना सूबवाह् रे बामरिया
पटकत बानह् तऽखतवांह् रे कपारय

सतिया के पिता बमरी का दुख—पुत्र भीमली छ महीने की घोर निंद्रा में

आजु भाई बेटवाह् ना जनमल मोर मूदइया
मूतनह कुम्भइ करनवाह् कइ रे नींदऽय
बोचहियं ऊजरि ना रजियाह् गईल मुरहून
उय भायऽ गयल सागरवाह् केनि रे भीटऽय
दिन हइ फेंकरइ ना बंड़वाह् रे सियारऽय
एतनाह् काह कहि ना राजवाह् रे बमरिया
रोदन करत तऽखतवांह् रे वईठी (१४४०)
ओहि घरी मंतरीय ना मतवा जे ठटरे लगनऽय
चुगुलाह् देलेनि आरथवाह् रे बताई
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनवाह् काहनवांह् रे हमाऽरय
आजु भाई अइसेह् बेटवना नाहि रे जगिहंऽय
जब सेह् दिनइ ना पूजिहइं रे करारऽय
सूबवा तु सातउ हथिनिया नाधि दऽदंवरी
लेइकनि पेरउ महाऊति घूम रे राई
जउने दिन ठाढ़िय ना थतिया देहियां कऽय
विथकलि हल्लुक सरीरवा रे बुझाई (१४५०)
कि झक देनि कबरीय ना निनिया ओठियन भऽय
ऊ उठि जइहंइ भीमलिया त सर रे दारऽय
एतनाह् कहत ना बानह रे मंतिरी
मूबा के गऽयल ना मनवाह् रे बईठि
ओहि घरी सातउ हथिनियांह् संग रे वउलेन
उहे भाई नधलेह दंवरियाह् घूम रे राई
हथियाह् पेरइं बादनिया ले भीमलीय कऽय
ओहि भाई बोचेह् चाननिया मय रे दानऽय
जउने घरी थतियाह् न बानय जे रे हलुक
धीरे धीरे जातइ बा दिनवाह् निय रे आई (१४६०)

ओही घरी घूमल बादनिया बा भीमलीय कऽय
करवट लेलेह् मारदवाह् एहि रे बऽले
आजु भाई तेरह हाथिनियाह् लेइ रे ओनके
के फेरि गऽयल ना दिनवाह् नियरे राई
जउने दिन तीनिय ना दिनवा रहि रे गयनऽ
आ फेरि परलि साबदिया कानवा में
भीमलीय ऊठलि मारदवा अंग रे आई
ओहि घरी मरलोगि ना अगा चाननी पऽर
जाहि बाज ताड़इ ना बाजल रे आकासऽय
जवने घरी छुट्टह मारदवाह् मारि रे दीहलेनि (१४७०)
पटसेनि होइ जाइ चाननिया पर रे ठाढ़ऽय

लोरिक और भीमली का युद्ध

जवने दिन तालइ बाजलवा भीमली कऽय
सागर गईल सागरवा कइ रे भींटऽय
जवने घरी सुनई ना लोगवा सुरहूलि कऽ
बोलत बानह् बरतिया रे बइठी
आजु भाई जागल ना सुबवा बाड़ रे भीमली
भीमली के बाजलि ना तड़िया बा चाननीय पऽर
साबदि आइ गइलि सागरवा के देख रे भींट
ओहि घरी सूनई साबदियाह् राज भीमलिया
काहे भाई बाबिल ना रोवत बान हमारऽय (१४८०)
तब फेरि लागलि हूकुमियाह् बमरी के
बेटवाह् जागल चाननियाह् रे हमारऽय
भइयाह ऊजरि ना पलियाह् गइलि सुरावलि
तब फेरि गयल ना रजियाह् मोरि उजारी
जवन मायाह् मुरावलि मेंनि रे रहनऽय
ऊ माया छेकलेह् सागरवाह् कइ रे भीतर
कहवां से जाइ कह् टिकल बाह पर रे देसिया
अब राज देहलसि मुरबलीय रे उजारी
दिनहींय फेंकरत बा बंडवाह् रे सियारऽय
एतनाह् झंखइ ना सूबवाह् रे बमरिया (१४९०)
रोवत बानह् ना जरवाह् रे बेजारय
एतना जउ सूनई न सूबवाह् रे भीमलिया
एकदम हूलल ना किलवांह् बायं रे जातऽग

जाइकेनि हथवांह् ना लेहलेनि रे हजरिया
संगियाह् लेह् लेह् ना कन्हवा पर रचि रे कऽने
ऊ भाई रेंगल सागरवाह् तड़ि रे आई
ओहि घरी जूटल सागरवा के जन रे भींटय
त बचि गयल बिगहवाह् बान चारी
भीमलीय बोलल ना बतियाह् कर रे खाई
आजु भाई काहंइ ओतनवांह तोर रे गोतऽन (१५००)
कहाँ तोरि टूटिय गऽइलि बाह् बुनि रे यादी
आजु कहें कइली चाढ़इया जे काहवां की
रजियाह् देलीह् गुरवलीह् रे ऊजारी
आजु भाई केकरेह् ना जंघिया के बरि रे यइंया
आइ कनि टीकलेह् सागरवाह् जेनि भींटऽय
केकरेह् जामल तारूअवा में बाइ रे दांतऽय
आजु मोरे देलेसि सऽहरियाह् रे उजारी
एतना जब डांटत ना मलवाह् रे भीमलीया
सूनत बानह् गउरवा के सब रे लोग
····· मलवाह् बाइ रे लोरिका (१५१०)
दरियांह् करइ ना बेड़वा जे देख जबाब
आजु भाई गउरांह् ओतनवा ह हमार गोतन
गउरा में टूटिय गइलि अब बुनि रे याद
आजु कइ देहलीय चढ़इया जे मुरहूलि के
आके टीकल बाड़ीय सुरवली जे हमरे पाल
आजु भाई अपनेह् ना जंघियां जे बरि रे अइंया
हमरेह् भुजाह् चऽढ़ल ना बउ रे साई
आजु हम टीकलींय ना नागर रे सुरावलि
आजु भाई मनबह् काहनवांह रे हमार
देख भाई हमरेह् तारूअवा में दांत रे जामऽल (१५२०)
तोर भाई देलीय ना पलिया जे हम उजारि
सूनह् ना हलिवाह् ओठियन कऽय
दूनों ओर होतीय ना बतियाह् बीच रे बानी
आजु कहें सुनबेह् ना सूबवाह् तोइं रे दक्खिन कऽय
कहनाह मनवेह ना एठियन रे हमारऽय
आजु भाई जेवनेह् ना ओरिया से बल रे देखबे
तवनेह् बल से ना हाथवा जे लेबे मीलाई
ओहि दिन सूनह् न हलियाह् लोरिके कऽय

लोरिकाह् बोलल लारमवाह् कइ रे बोलऽय
सुन चाहे कुसतीय में हथवांह् रे मिलाइलऽय (१५३०)
चाहिय लोहवाह् में हथवा ल हो अंदाजी
एतनाह कऽहत मारदवा बा बीर रे लोरिका
भीमलइ फेंकइ ना संगियाह् रे हजारी
अब भाई ठोकइ ना तालवाह् ओहि रे दम्मऽय
लोरिकाह् फेंकि देइ बीजुलिया तर रे वारऽय
दूनोह ठोकलेनि ना तड़ियाह् खेतवा पऽर
उहो भाई जानह पायंतरा पर लड़ि रे गयनऽय
जवने घरी मारि देइना दउवाह् राजा भीमलिया
अहीराह् गीरल धारतियां मेंनि रे बानय
लंगरि मारि केह ना मलवाह् रे भीमलिया (१५४०)
जउने घड़ी कराह् बाजनिया कइ ये दीहलेसि
तड़ तड़ कड़कइ लोरिकाह् कइ रे हाड़ऽय
ओहि घड़ी दवरल ना भइयाह् रे धऽरमिया
सांवर उलटि ना देहले बा रे तरे कऽय
ओहि घड़ी देलेसि झागड़वाह् फरि रे याई
ओहि उठि उठि मारदवा हटि रे गयनऽ
आपन आपन लेहलेनि हां हांथवा हथि रे यारय
दुन्नोंह चलनह् पयंतरा खेतवा पर
जइसे भाई भादव भइंसवा मक रे नानऽय
ओहि घड़ी ओइसंइ पायंतरा बान चऽलत (१५५०)
जेतनाह् पेड़इ ना पतवां आगे रे पऽरऽय
उहे होइ जानह् मारदवा रे निसानऽय
जवने घरी मारत पायंतरा चूत रे जानऽय
छन मेनि जानह आवरिया पर नगि रे चाई
ओहि घरी बोललन ना सूबवाह् वा भीमलिया
अब सूबा मनवेह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु तोहें मरबेह् ना मरबेह् हमरे सूबवा
जवन भाई तोहरेह् आवरियाह् में आइ रे जाई
ओहि घरी बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
भीमली तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (१५६०)
देख भाई आगेह् ना घउवा जे ना चऽलइबऽय
ना त घाव पीछेह् ना रखबहि रे गोवाइ
आजु हमरे गूरू के कीरियवा जे बाइ अठानऽय

आगेह् लीखल ना मारेह् के बान हराम
एतना जे सूनत ना सूबवाह् बाई भीमलिया
उहे लेइ मारत ना हथवा बा लेल रे कार
जवने घरी खींचलेसि ना संगियाह् रे हजरिया
अहीरे के मारत बानइ नह सिर रे हान
ओहि घड़ी धनि धनि या मइयाह् बाइ भगउती
अब फेरि देलेसि अंचरवा जे मोरि रे माई (१५७०)
अहीराह कावन तीरथवा जे हटि रे गयनऽ
ऊह संग गीरलि धरतिया में भह रे राइ
तब तक समनेह लोरिकवा जे ठाढ़ रे भयनऽय
दूसर खींचत आवरिया जे देख रे बाइ
ओहि घड़ी दूसरीय अवरिया जे बाइ समाहत
लोरिक के मारत बा बीचहें करि रे हाव
लोरिकाह् खेलल मारदवा बा गउरा कऽय
देख भाई बावइ तिरिछवा जे होइ रे जाऽय
फेरि संगी ऊहइ गीरल बाह् भह रे राइ कऽय
दू दू ठे गयल आवरियाह् रे नीकालि (१५८०)
जवने घरी तीसरी आवरिया जे सूबा चलउलेन
अहीरा थाम्हत ओड़निया के देख रे बाय

भीमली की मृत्यु

ओही घरी तीनि अवरिया जे जोइ गऽइनीं
लोरिका देलेह् ओसरिया बा निरि रे याय
आजु कहैं ओसरि ना ओसरि लेले रे करलेसि
देख भाई कुइंयाह् भरह्नीय पनि ने हारि
आज तोहार पक्काह् घउवाह् सूबा रे थामल
अब कचलोइयाह् ना थाम्बह् रे हमार
जवने घरी गूरुकि मीयनवा जे फेंकि रे देहलेन
अब दह तग्गीय तानले बाह् तर रे वार (१५९०)
जोरि के भाई चारीय अंगूरवा जे भइनी रे बहरे
जेकर फेरि चऽढ़ल ताड़कवा जे देख रे बाय
आजु कहैं नीचवाह् ना मरि देहलेसि दावन्हरा
परोसनि गइली लावरिया जे गुंगि रे याई
ओहि घरी घूमि गईल जे मालकिया भीमली कऽय
खड़ियाह् गइनीय गऽरदेनह् रे बिसारि

······रोकइं सतियाह् रे मदागिनि
पटकति बानीय चाननियाह् पर रे माथय
आजु कहैं हो हो ना दरवाह् मोर नारायन
क्या बरम्हा लीखलह् ना मझवाह् रे लीलारऽय (१६००)
अपनेह् बापह् ना भइयाह्······
आजु भाई भइयाह् बहिनिया के रन रे जूझल
कहवांह क टिकनह् दूसऽमन सगरे पऽर
सागर देतइ ना रजियाह् रे उजारी
आजु फेरि टूटि गइल दाहिनियांह् मोरि रे बांहऽय
आजु कहैं अक्सर जीनिगिया जे बचि रे गइनी
भइया हमार जूझनह् सागरवा के देख रे भोर
ओहि घरी घइलेह् डऽहरिया जे ओठियन से

सतिया का सत से छत्तीस नाग उत्पन्न करना नागों का बारात को डंसना

अब सती सुमिरति ना सतवा जे सुनि रे बाइ
आजु कहैं सतवाह् सुमिरिले बा लेइ रे सतिया (१६१०)
जोगी के छोड़लेह् झांपोलिया जे लेइ रे बाइ
जउने घरी मारइ ना बीरवा जे सतवा कय
छतीस नागइ ना उठगह् जकरे लाई
आजु कहैं सुनबह् ना नगवा जे मोर छऽतीसिया
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई छोड़ि दह्ना तूहउ लेइ रे झंपिया
चढ़ि जाह् तोहउं सागरवा जे छिति रे आइ
जाइ केनि घूमिकह् बऽरतिया जे काटि रे घालतऽ
आहि जा सेम्भुव सागरवाह् केनि रे भीट
जइसे भइयाह् ना हमरी जे कटि रे गयनऽय (१६२०)
ओहि सइ मरि जाउ गउरवा के सब रे लोग
······अहीराह् बीर रे लोरिका
दरियाह् कऽरइ ना बेड़वाह् हो जवाबऽय
आजु कहैं धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगा
जिन्हइं आदीय ना दिनवाह् पूज रे मानऽय
देवियाह् तोहरेय ना बनवा बउ रे सइयां
करलीह् दारून ना देसवाह् रे खंगारऽय
आजु भाई देविया ते पाठइना हमहूं के देख देखइबऽ

सवा लाख गायब बारतियाह् बाइ हमारऽय
ओहि दिन फरकति दुरूगवा जे माई रे भइलीं
अब धइ लेहलेनि छोहरिया के माई रे भेस (१६३०)
ओहि दिन रतनीय घंघरिया जे देवी पहीरि कऽय
छमकति बानीय दहीनवा जे देख रे बांह्
अभी कहं सुनबेह् बरूअवा त फूल रे झरूवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
सवा लाख देहीय जाबरियाह् रे बटोरऽ
सब कनि मट्टिय ना कऽरत तहि रे कात
देख भाई कुकुराह् काउववाह् दिन रे हांकेय
अब राति बंड़वाह् ना देखह् रे सियार
हमहूँ जात बाइं ना चाननीय सतिया के
सतिया के देबइ ना मतवांह् घूम रे राय (१६४०)
आजु भइया आधीय ना रतियाह् नीच रे लइया
देवियाह् उड़लि भगउतीय बाइं रे जाई
जाइ कनि घूमि घूमि केवरवा बा ढूंकि रे देती
अब फेरि देलइ केवरियाह् मटरे गाई
सतियाह् बइठलि कुरुसीया बा भीतरीय में
बोलति बानीय लारगवाह् कइ रे बोलय
के भाई हवइ ना ठगवाह् लेइ रे चोरऽय
के तूं हऽवह् सऽहरिया के गुंडा रे बाजत
आजु भाई आधीय ना रतियाह् नोच रे लइयां
ढांकत बाड़ह् केवरवाह् रे हमारऽय (१६५०)
आहि दिन बोलल भगउतीय माई दुरूगा
अब जेवन हंई लोरिकवा के पूज रे मान
आजु कहें सुनबेह् ना सतियाह् तोइं मदागिनि
एठियन ते मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई चोरइ ना हइह् बदरे मासऽय
नात हम हई साहरिया के गुंडा रे बाय
हम त भाई हई लोरिकवा के माई दुरूगा
जे हई आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
आजु सती तोहरेह् कारनवाह् चढ़ि रे अइलो
सवा लाख बत्तिया वऽरतिया जे भइली रे बाइ (१६६०)
बोललि ना सत्तियाह् लारमे से
अब तूंय सुनबह् भगउतीय हो हमारि

देख भाई साफइ मातरियाह् कइ ये दुइया
अब भाई बहिन ना रहलींय दूनों रे जोड़ऽ
अरे भाई भइयाह् ना भीमली जे जुझि रे गयनऽ
अक्सर होइ गइल ना पीठियाह् रे उघारऽ
हम तूंहि नाहिय ना गोसवाह् रे सम्हइनऽ
सच कहि दीहलींय झपोलियाह् बग रे राई
हूकुमि देहलीय ना नागवनि केनि लगाई
ओहि घरी छत्तीसउ ना नगवा जे देवी हो गयनऽ (१६७०)
अउ फेरि घूमनह् सागरवा के देख रे बीर
आजु कहैं सावाह् ना लाखवाह् बरि रे यतिया
कब्र केनि कइलेनि ना ओहीय खयरे कार
आजु कहे अक्सर ना बचल बीर रे लोरिका
जेकरेह् बदनेह् दुरूगवा जे बाइ रे माई
अब नाग फऽनइ ना कऽरइ लोरिका के ओहिया
अगियाह् तड़पलि ना फनवाह् जे घींचि रे लेइ
......बातहिना बतवाह् माइ भोरवले
सतियाह् देलेसि ना सतवाह् रे गिराई
ओहि घड़ी दुरूगाह् साकतियाह् बा आपन बढ़वले (१६८०)
अब चढ़ि गउलींय ना सतियाह् रे कपारऽ
सतिया के बसई ना मइयाह् कइ ये लीहलेन
बोलति बानीय दुरूगवाह् पूज रे मानऽ

दुर्गा और सतिया की बातचीत—अमर सिंदूर के बिना मेरा विवाह असंभव, सतिया का कथन

आजु भाई सतियाह् ना मुनि ले तोइ मदागीनि
एठियन मनवेह् काहवा रे हमारऽ
देखु भाई तोरेह् कारनवा लेइये एठियन
सवा लाख मरि गइल बारतिया रे हमाऽरऽ
जौ भाइ एननीय बारतिया ना जियाई बऽ
तोहरे पर बऽहुत लीखिय ना अपरे राधऽ
इय हाये जुगइ ना जुगवा नाहि रे छूटिहंऽ (१६९०)
दिनवाह् दिन के बांधनवा होय रे गयल
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया सतिया कऽ
सतियाह् बोललि लारमवा कइ रे बोलऽ
इ बताव नागइ बटोरिका जे कइ कऽरबय

कइसे कइ करबह् ना सदिया जे मोर विवाह
आजु कहैं जवन सेन्हुरवा जे बाइ रे अऽम्मर
जवन भाई दीहल बारम्हवा के हमरे बाय
ऊ सुनि सातइ समुन्दर ओहि रे पारय
बीचवांह टापेह् ना रखल मोरि रे बाय
जहवां पर अगियाह् कोइलिया जे बानि रे मउसी (१७००)
ओनकेह् हाथेह् सेनुरवा जे मोर रे बाय
आजु भाई बत्तीस ना गउवां के बाइये कुठिला
ओहि मेंनि रक्खल सेनुरवा जे बाड़े हमार
के भाई एतनाह् ना जुगुतिह् रे बनइहंऽय
कइसे हम करबह् दुरूगवा जे सादि विवाह्
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
परगटि भइनींय दुरूगवाह् मोरि रे माई
एक कुसि बइठलि ना देवियाह् माइ भगउती
एक कुसि बइठलि ना सतियाह् देख रे बानी
दुरूगाह् सतियाह् कऽ मतवा जे दें घुमाई (१७१०)
बोलति बानीय लारमवांह् कइये बोलय
आजु भाई सतियाह् ना सुनि ले तोइं मदागीनि
आपन लेबेह् ना मतवा रे बटोरी
जवन भाई बानह् ना नगवा तोर रे छत्तीस
नगवन के देइ देइ हुकुमिया एहि रे दम्मय
उ नाग जहां ना जंघवा जके होइ कटले
धइ धइ लेइहंइ ना बोखिया रे सुरूकी
आजु कहैं ऊठति बारातिया जे अहीरे कऽय
समतूल बइठइ सागरवा के देख रे भींट
सूनह न हलिया सतिया कऽय (१७२०)
जुग केनि लेह लेहि झपोलियाह् बाइ उतारी
उहो भाई सुमिरति ना सतवाह् अपने बाने
नगवाह् उठनह् ना झंपिया से फुफु रे कारी
ओहि घरी बोललि ना सतियाह् बाइ मदागिनि
दरियांह् करइ ना बेड़ं वाह् रे जाबाबऽय
अब नाग सुनबह् ना बतियाह् रे हमारऽय
जाके भाई जेकेह् ना जहां जहां कटले होब्या
ओहि ओहि धरिकह् ना बिखिया ल सुरूकी

उठि केनि बइठल बारतिया बा अहीरे कऽय
आपन भाई देखउ साकलवा जे बरि रे याति (१७३०)
ओहि दिन सियनह् ना नागवा जे छिति राई
अउ फेरि सेम्हुव सागरवा के देख रे भींटि
घूमि घूमि धइ धइ ना बिखियाह् रे सुरुकलेन
उठि उठि बइठंइ गाउरवा के सब रे लोग
ओहि दिन हहरेंइ जेवनवा जे गउरा के
मइया अइसन जे मुदइया सगरे पर लगले
अब फेरि सूतल ना निनियाह् बिसरे भोरि
ओहि दिन बोललि ना मइयाह् बाइ दुरूगवा
जेन माई आदिय न दिनवा के पूज रे मान
आजु कहै सुनबह् बऽरूवा जे फूल रे झऽरूवा (१७४०)
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
तूंय भइया जवन मूतइया जे सूतल रहलऽ
ओइ सइ सूतत मुदइया जे भई तोहाऽर
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुरूगाह बोलति लोरिकवाह् सेनि रे बानी
आजु भाई सुनबेह् बरूववाह् फुल रे झरुवा
के भाई सेनुर आननवांह कइ रे जाई
के भाई सवालाख देखिहुंइ बरि रे यातऽय
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुरूगाह् बोललि लारमवाह् कइ रे बोलऽय (१७५०)
अहीरूय एठे ना तोहार रे सम्भरि हंऽय
सवा लाख जे बइठलि बारतियाह् पहरूदारऽय
बरुकन चलि जाह् ना तूंहुउं अमरे पऽर
सकतीय रही ना उपरांह् सेनि हमारऽय

हंस हंसिनी के साथ लोरिक का अमर सिंदूर लाने सात समुद्र पार जाना

ओहि दिन सुनह् अहीरवा कइ रे हालऽ
आजु भाई अंगवाह् ना पहीरत बाइ अंगरखा
गोड़वाह् भूलई बदनियाह् रे तवानऽ
के फेरि तरकुस ना गुजवा बा पनही कऽ
उहो बीर चापइ ना एड़वाह् रे चढ़ाई
के भाई साठिय ना गजवा के बाइ दुपट्टा (१७६०)

अहीराह् बान्हइ ना पेटियाह् रे सम्हारी
ओहि दिन छप्पन ना छुरिया पन कटारी
अहीरे के झुकलि बगल में तर रे वारी
अब फेरि धरई पगरिया लऽरमें कऽय
जेमा भाई मेघइ डंवरूवा घहरे रानऽय
उपरा से पहीनइ जिरहिया जे लोहवा कऽय
जेमें भाई नउ मन ना लोहवा जे देख अमाय
······बायें अयनंह् हंथवा जे लेइ ओडनिया
दहीनेह् हाथेह् बीजुलिया बा तर रे वारि
जउनेह् घरी मरगस ना मरगस रेंगिये देहलेन (१७७०)
सोझइ रेंगल उतरवा बा तरि रे यार
एकदम रेंगल ना ओठियन तें रेंगावल
अब चली गयल समुन्दर केनि रे राह
अब कहूँ छाह्ऽ न हउवे कऽदमे कऽय
ओही तर छाहें अहीरवा जे बइठि रे जाय
ओहि घरी छाहेंह् ना बइठल बीर रे लोरिका
उपराह् हंसइ हंसिनिया जे बानऽ बोयलऽय
गेंदवाह् बानह् ना खोंथवा में तइ रे यारय
तब तक सूनह ना हलियाह् जानिया कऽ
आजु भाई रऽहल ना नगवाह् पेड़हरियां (१७८०)
दिन दिन चढ़ई ना नगवाह् लेइ रे पेड़ऽय
जवने घरी आधेय कादमवां जे चलि रे गयनंऽ
अहीरेह् के पऽरलि नाजरियाह् देख रे बानऽ
ओहि घरी ऊठइ मारदवा बा बीर रे लोरिका
हाथवा में खींचत बानइ नह तर रे वारि
जवने घरी डांटीय चाम्फवा जे मारि रे दीहलेनि
नगवाह् ढोलह् ना होइ कह् गिरि रे जाइ
तब तक सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
आजु भाई हंसइहं हंसिनिया जे दिन भर चरले
संझिया जे खोंतवाह् ना बचवनि किहें रे जानऽ (१७९०)
जवने घरी मरले मेंड़रिया सऽरगे में
जाइ केनि चुवनह् कादमवाह् केनि रे पेड़ऽ
जहवां पर बानह् ना गेंदवाह् हंसे कऽ
ओहि भाई खोथांह् बऽईठल दूनों बानऽ
टाटवांह् में चाराह् न लेहले बा हंस रे हंसिन

आजु भाई करई ना मुंहवाह् ओर रे टोंटऽ
गेंदवाह् फेरलेह् ना मुंहवा जे बान रे जातऽ
ओहि दिन बोलइ ना ओठियन लेइ रे हंसऽ
बचवाह् मनबह् काहनवा रे हमाऽरय
आजु हमके समुंदर ना रेतवा लेनि चऽरऽय (१८००)
आनिकर बारिय ना टोटवा देइ खियाई
तवन कर नाहिय ना खातब तुव रे बच्चा
कइसन मुंइवांह् फेरलवा बाय रे जात
ओहि दिन बोलइ ना गेंदवा जे हंसे कऽ
मइयाह् बाबिल ना सुनबह् रे हमाऽर
इ बताव पहिलइ ना अनवा से तहरे हई
के भाई आगे ना बानह् रे तोहाऽर
ओहि दिन बोलत हंसवा जे बान रे हंसिनि
बचवाह् मनबह् काहनवाहं रे हमाऽर
आजु भाई रतियांह् ना अंडा जे बचा रे कई कह् (१८१०)
बिहनाह् पेड़े के तरवांह् चलि रे जाय
जउने घरी लऽवटि ना खोंथवा पर रोज रे अइनीं
कबउ नाहिं देखलीय ना बचयन के निर निमोह्
आजु भाई कवन बारम्हवा से सोझ रे, भयनंऽ
आजु बचा देखलीय ना खोंथवान परि रे मोह
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
मइयाह् जरियांह् ताकह् ताकेहु रे बानऽ
ओहि घरी हंसाह् हंसिनिया जे पेड़हरि तकलेनि
बड़ठल बाड़इ मारदवाह् पलथि रे मारी
आजु माई पहिलेहु मारदवा के तू खियइबा (१८२०)
तब भाई देखह ना खिलतियाह् कइ रे हालऽय
वड़ दिन खइलेसि ना नगवा जे अंडा रे बच्चा
देख भाई गीरल बानह् नह दुई रे भागऽ
पहिले जे मा मनसूखिया के चरवाह् माई खिआइदऽ
पिछवांह् हमइ ना खाबइ ना जल रे पानी
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् चिरयिनि कऽ
एकदम उड़नंह सरगवाह् मेंड़ रे राइ
एकदम सऽहर बाजरिया में घूमय रे लगनह्
पेड़इ मारत भऽवंकियाह् रे बानऽय
ओही घड़ी देखयं दूकनिया पर रखल परतिया (१८३०)

अब भाई भरलि मिठइयाह् रे देखानी
उहो हमसे झूकंथि चीरइया जे हंस रे हंसिनि
चंगुले में लेहलेनि ना थालवाह् रे उठाई
उहे भाई ले लेह् सऽरगवा में उड़ि रे गइनीं
जाइ कनि चुवलींय कादमवाह् केनि रे डारऽ
एकदम ले लेहह् लोरिकवाह् किह रे गइलीं
आजु भइया सुनबह् मनसुखियाह् रे हमारऽ
आरे भइया तूंहइ भोजनवा जे पहिल रे कइलऽ
तब गेंदाह् बच्चाह् ना खइहंइ रे हमार ऽ
ओहि दिन करत भोजनवा बीर रे लोरिका (१८४०)
अवर फेरि खानह् ना बचवाह् ओकरे खोंथ
तब फेरि बोलइं ना हंस रे हंसिनी
भइयाह् सुनि लह् मन मूखियाह् मोर रे बातइ
आजु भाई बहुत ना नेकिया तूंय ये कइलऽ
बाकी हमसे मांगह् मांगनिया भरि रे पूरऽय
तब फेरि बोलत मारदवा बीर रे लोरीक
चिड़िया तू मनबह् काहनवांह् रे हमाऽरऽ
आजु तोहारइ ना जतियाह् पंछी कऽय
का तूंय देबह् मांगनिया रे पूजाई
ओहि दिन बोलत हंसवा बाइ रे हंसिनि (१८५०)
नाहि बचा मनबह् काहनवांह् रे हमारऽय
तू जवन एहि घरी मांगनिया जे मांगि रे देबऽ
तवन तोहार देबइ मांगनिया जे हम पूजाइ
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् मानह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई सुनबह् हंसवा ज तूंय रे हंसिनि
एठियन तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखऽ भाई सातइ समुंदर नइया रे पारय
जहवांह् पर अगियाह् कोइलियाह् जे दूनों रे बाइ
ओतनेह् बत्तीस नागरबा में बाइ रे सेनूर (१८६०)
अम्मर सेनूर सोहगइली जे धइले बाय
आजु हम उहई सोहगइली जे आने रे जाबऽय
हमकेह् कइ जाह् समुंदवा जे लेइ रे पाऽर
ओहि दिन बोलल हंसवाह् जे बाइ रे हंसिनि
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वांह् रे जाबाबऽ

आजु भइया सुनवह् अहीर ना बीर रे लोरीक
कहनाह् मनबह् ना एठियन रे हमाऽरय
देखऽ भाई सातइ न दोनवा चढ़इ मासु
फेर भाई लवटत ना साथइ हमरे चढ़ि हंऽय
चउदइ् दोनह् का मंसुवा जेकर उपाई (१८७०)
हमहूँय देबई ना टपवाह् रे डंकारी
ओहि दिन ऊठल मारदवा बीर रे लोरिकाऽ
नगवाह् के ढोलह् ना कइका गइ गिराई
बोटइ बोटह् ना दोनवा जे बनाई कऽ
ओकर देलेसि न बोटवा बोटि रे आई
आजु भाई तेरह ना दोनवा होइ रे गऽयल
एक दोना घटि गइल मांसुइया देख रे आजऽ
ओहि दिन सुनह् ना हलिया हंसा हंसिन
उहो भाई गयनीय आहीरवा कइ रे पासऽ
दून्नोह् देहलेनि ना डेंनवा लेइ रे ओठियन (१८८०)
दोनवाह् भरलेनि पातहिया लेइ रे जाई
तब ढिग मारि कह् आहीरवा बीच रे बइठऽल
हथवा में ले लेह् बीजुलइया तर रे वारऽ
जउने घरी उड़नीय चिरइया एक रे दम्मऽ
पइठनि देलेनि ना ओठियन रे डंकाई
जउने दोना खातीय मासुइया लेल रे कारी
जउने घरी दूसराह् ना दोनवाह् बाइये खातिर
दूसरि देहलेसि ना घरवा में डंकाई
अच्छे अच्छे सातउ ना धड़वा जे डंकाइ कऽ
चिलि लेइ केइ बइठलि कादमवा के बाड़े रे डारि (१८९०)
उहवां से उतरल ना बानह बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल ना रेतवा में चलि रे जाय
अगवांह् अगियाह् कोइलिया के बाइ रे भरति
उहे भाई दुअराह् हिंडोलना जे डाल रे बाय
दूनों गोड़ी मऽउज में गीतिया जे गावत रे बानी
तब तक जूटल लोरिकवा जे डेंइ रे बाइ
पहिलेहि जूटितेइ ना नीहुरि रे सलामवा
मम्माह कइ कंह करत बाह् पर रे नाम
ओहि घरी हहरई ना रतियाह् रे कुरोलिया
उहो भाई दांतनि आंगुरिया जे बानी चबात (१९००)

आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मथवांह् रे लिलार
आजु भाइ अइसन कोमलवा जे रहल निलय
खाइ केनि पेटइ ना भरिया जे दुनो रे जात
आजु तुय भयनेह् बाराभन बोलि रे देहलऽ
तोहरे खातिर पापवा जे बहुते बाय
सुत्तल अहीरवा बा लेइये ओठियन
खूब भाई कइलेसि डाइनियन से मिलापऽय
ओहि घरी मिलि मिलि ना बतियाह् करे रे लगनऽ
दइवांह् कऽरत बानइ नह इत रे जामऽय (१८१०)
······रसोइयाह् लेइ बनावऽल
दुन्नोंह् कऽरइं ठहरियाह् जेव रे नारऽ
अइसे अइसे दस पांच ना दिनवा जे रहि रे गयनऽ
तब फेर अगियाह् कोइलिया जे बोल रे बोली
आजु कहैं सुनबह् ना भइया दूरंदेसिया
अहिरू तू मनबह् काहनवाह रे हमाऽरऽ
आजु तुंय बहुत ना एठिन चारिउ ओर घूमलऽ
चलि केनि झिरि हिरि ना नइया पर बइठी
तब फेरि बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका
मम्मांह् तूं मनबह् काहनवा रे हमारऽय (१८२०)
आजु मोर थाकलि जजिया वा पऽयंड़े पऽर
अब नाहि जाबह् कऽरइ ना अस रे नानय
बलुकनि रामइ ना रसोइयां ना घरे बनइबय
तू लोग जाइकह करह् ना अस रे नान
एहि दूनोह् बहिनियांह् चलि रे दीहलेनि
डोंगियाह् लेलेनि समुंदवाह् तीर रे खोली
आजु भाई घरे के निचिंतइ होइ रे गइंनी
भाई मोरे साचइ बनइहंइ जेब रे नारऽय
ओहि दिन जाइके झिरहिरिया जे बानी रे खेलत

हंस हंसिनी के पंख पर बैठकर लोरिक अमर सिंदूर लेकर सुरवली वापस

तब तक सूनह् ना हलियाह् लोरिके कऽय (१८३०)
लोरिकाह् पऽड़ल कुठिलवाह् बसि के कांड़ी
हलि केनि लेलेसि सेनुरवाह् रे उठाई

सेनुर लेलेह् कादमवाह् पर रे गइंनऽय
हंसाह हंसिनि जोहतवाह् जे रहयं रे बाटऽय
डेनवाह् जोरि लेनि हंसियाह् देख रे हंसा
पल्थिय मारि कह् आहीरवा जे जाइ बइठी
ओहि घड़ी ऊड़इ चिरइयाह् सरगे में
आजु भाई पहिलइ ना धरवाह् फेरि रे चलनी
ओहि दिन खइलेनि मासुइयाह् रे अघाई
ओहि घड़ी दूसराह् ना धरवा जे बाइं रे डांकत (१६४०)
दुइ दोना खइलेन ना उहंउय रे अघाई
देखह् तीसराह् ना धरवाह् जे बांइ डंकावत
तीन दोना खइलेनि मासुइयाह् रे अघाई
के फेरि चउथाह् ना धरवांह् जे बाइं डंकावत
चारि दोना खइलेनि मासुइयाह् जे लेल रे कारी
जवनेह् घरी पांचवांह् ना धरवा बा डंकावत
पान दोना खइलेनि ना मंसुवा रे बनाई
के भाई छठवांह् ना धरवाह् पर चलि रे गयनऽय
छऽ दोना खइलेनि मासुइया रे अघाई
जवने दिन सतयेंह् ना धरवाह् पर हलि रे गयनऽ (१६५०)
अब फेरि छुधाह् जारतवा जे चिन्ता बाय
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे चोड़ियन कऽय
उहे भाई तऽरेह ले ना मुहंवां जे भइल रे जाय
ओही घरी बोलल मारदवा वा बीर रे लोरिका
हंसि हंसि मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
कइसन बीचेह् ना धारवा में ले ले रे जाला
का भाई आला ना लेबह् रे परान
ओही घरी हंसह् हँसिनिया जे बोलि रे देहलेनि
अब फेरि मनबाह् ना काह्ना जे तूतऽ हमाऽर
अब भाई थोड़ह् में छुधवा के कारने में (१६६०)
तिनि मीला गायब समुंदवा में होइ रे जाय
ओहि घरी पेलत ना जेबवा में बाइ रे हंथवा
अब फेरि ले लेह् चाकुइया जे बाड़े रे काठ
ओही घड़ी ओहीय ताउलवा से मासु रे कटलेनि
ऊहे भाई देहलेह् ना दोनवां में देख रे धारय
ऊय फेरि खइलेनि ना हंसाह् रे हंसिनी
अब फेरि देलेनि ना धरवा जे लेह डंकाय

जवने घरी छूटल आहीरवा जे ओही रे पारय
अब फेरि रेंगल बारतिया जे ओर रे जाय
आजु भाई घंटह् पाहरवाह् केनि रे बेलय (१९७०)
चलि गयनऽ सेंभूय सागरवा जे देख रे भींट
उहवांह् देखति रे मइयाह् बा भगउती
दुरुगाह् आदिय ना दिनवा क पूज रे मान
आजु भाई देखलसि ना मइयाह् मोर दुरुग्गा
ऊहे भाई दवरलि ना मुंहवा जे फारि खंखारि
चेलवाह् क जाइकह् जांघियवा जे चाटि रे देह्लेनि
फेर भाई जोड़इं ना तोड़वा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
बोलत दुल्लर लोरिकवाह् समुज दा रऽय
आजु भाई सूनलह ना लोगवांह् मुरहलि कऽय (१९८०)
हमार लेइकह् हुकुमियाह् चलि रे जाब्यऽ
जाइ कनि कहि दह ना बतियाह् बमरीय से
जल्दी से करयं दुअरवाह् इत रे जामऽय
ठटि केनि लागीय बारतियाह् रे हमाऽरय
पउवाह पूंजइ अहीरवाह् बनाई
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
धावनि खोदल ना गयनह् ओरि रे दम्म
तखता पर बइठल ना सूबवा जे बां बमरिया
उहे भाई कूंचत मागहिया जे बाड़ रे पान
ओही घरी पहुँचल ना बानह् लेइये ओठियन (१९९०)
बोलत बानह् लारमिगा क देख रे बोल
ओही घरी बोलल ना सूबवा जे बा बमरिया
भइयाह् सुनबह् धावनिहाह रे हमारऽ
आजु भाई जातीय न हउवंइ छतरीय कऽ
उहे भाई हउवंह् आहीरवा जे गुवालऽय
कइसे पूजब ना पउवाह् अहीरे कऽय
कइसेह् कारब ना सदियाह् रे बिवाहय
एतना जब कहइ ना बतियाह् लेइये धावन से
धावन फेरि लावटलइ बाइरे जातय
जेवनी घरी सेंभुवह् सागरवाह् चढ़ि रे गइनऽय (२०००)
हुकुमि देलेनि लोरिकवाय रे सुनाई
उहे भइया कहत ना सूबवाह् देख बानऽ

आजु मोरे जातीय छऽतरियाह्, कइ रे हवीं
ओहि पर जातीय अहींरवा के भाई हंवाय
कइसे हम पूजब ना पउवा जे आहीरे कऽ
एहि दर नगर सुरऊली दइउ रे पालऽ
उहवां से मूनह्, ना हलियाह ओठियन कऽ
धावनि लवटलि लोरिकवाह्, किह रे जालंऽ
आजु कहैं भइयाह्, ना सुनिलह्, बीर रे लोरीक
दरियांह्, कऽरइ ना बेड़वांह्, रे जबाबय (२०१०)
ओनकर उलटीय हुकुमिया सुनि रे लेबय
मूबवाह्, के कड़कल ना मुंहवांह्, कइ जबाबय
आजु भाई जतियाह्, छतरियाह्, कइ हमारऽय
कइसे हम पूजब अहीरवा कइ रे पांवऽ
एतना जे कऽहत ना ओठियन बाइ धवनिहां
अहीराह्, फेरि बतियाह्, ना फेरि रे दुहराइ
आजु भाई दवरल ना एकदम चलि रे जाबय
अब उन्हें देहह्, ना बतियाह्, रे अर रे थाइ
आजु आपन जानइ बाकसवा जे मूवा रे जानिहंय
ठीक सेनि पूजउ ना पउवा जे लेल रे कार (२०२०)
नाहि जब खींचब ना खंड़िया जे हम दूगाहें
अब दुइ भागेंह्, ना देबई जे ढोलि रे याय
ओही घरी ऊठलि हुकुमिया रे लोरिके कऽय
सवा लाख सुनबह्, बारतिया रे हमाऽरऽय
अऽपन भाई कसि कह्, समनिया कइये लेवय
ठाठसेनि लेबह्, सुरतिया रे बनाई
चलि कनि लागह्, दुअरियां बरि रे यातय
ओहि घरी तरइंय मारदवा होइ रे गयनऽ
करगे पर ऊगल सागरवा नाइ रे चानऽय
ओहि घरी सुनह्, ना हलिया ओठियन कऽय (२०३०)
के भाई ओहय समइयाह्, कइ रे हालय
······लोरिके सांग

नकियाह्, बाजलि दुनियवां बा सवं रे सार
खनवांह्, जोरि दह्, ना भइयाह्, मोरि दुरूग्गा
दुरुगाह्, जानइ साकतिया जे माइ तोहार

मल सांवर और सतिया का विवाह सम्पन्न

सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अहीरे के लागइ बा हुकुमिया जे बड़ रे वारऽय
पंचह् सुनवह् बारतियाह् सब रे लोगऽय
एकदम चऽ़ल दुअरवाह् चलि रे चऽलऽ
सत रंग सुनबह् ना बजवा बज रे गीरऽय
आजु भइया अइसीय लाकुड़िया रे बज उतऽ (२०४०)
सुरहुलि जातीय सऽहरिया रउ रे जाई
ओही घड़ी सूनह ना हलिया जे बंठवा कऽय
छुट्टाह छोड़ लेह् लाकड़िया जे लेह् रे बाय
आजु कहें बाजल लाकड़िया बा चमरन कऽय
सतरंग बाजल ना बजवा जे उहां रे बाय
ओहीं घड़ी देखह् ना हलियाह् लेइये ओठिन
अउ फेरि गऽयलि ना देहियांह् जगमगाइ
ओहि घड़ी पिरीथमीय ना डगमग करइ रे लगलीं
अउ फेरि एहीय ना मिरुतलोकवाह् पर रे दांति
आजु कहैं धावह् बिसुनवा के डोल रे धामऽय (२०५०)
अइसन बाजाह् खरीदले बा अउरे जाइ
ओही घड़ी लागलि दुवरवांह् रे बारतिया
ठाटसेनि होतइ दुअरवा पर ठट रे जात
ओहि घड़ी खटरम दुअरवा के होइ रे गइनऽ
उहे भाई पउवाह् पूजनवा होइ रे जाय
आजु भाई सेनुर ना मांगवा में परि रे गयल
ओहि भाई नागर सूरवली जे दइउ रे पाल
ठाढ़ कनि भयल बीबहवा बा अहीरे कऽय
ओहि गाँव नागर सूरवली जे देख रे पार
तब फेरि बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरीक (२०६०)
सासुर मनबह् बामरियाह् हो हमाऽर
आजु भाई खिचड़ीय ना भतवा जे संगे रे होइहंऽय
संगेह रुकसति न होंइहइं रे हमाऽर
आजु भाई आइलि साइतियाह् इहि रे बनी
अब फेरि धइलेह् दक्खिनवा के देख रे राह
खिचड़ीय ना भतवा जे होइ रे लागल
पक्कीय बनति सामनिया रे ओही दम्मऽ

ओही घरी होत बाह् भोजनवाह् जे तइ रे यारऽय
बमरीय देलेनि धावनियाह् जे तइ रे राई
जाइ कऽ भइया सेम्हुवा सागरवा पर डेरा रे धरऽतऽ (२०७०)
आजु भाई करीय ना हमहूँय भाई मय रे दानऽ
ओहि घरी टारलि बारतिया दुअरे से
एकदम सोझइ सागरवा तड़ि रे आई
अब चलि गयनहं ना भींटवा सागरे के
जाइ के भाई बइठंइ मेंड़रिया देख रे मारी
ओहि घड़ी जलसाह् जाजिमवा पर हो ये रे लगनऽय
के भाई नागरि मूरवली दइ रे पालऽय
ओहि पर कसबीन पातुरिया वांई रे नाचत
भंड़वाह् तोड़ति चिकुकिया पर रे तानऽ
ओठिन होतइ जलसवा लेइ ये बानऽ (२०८०)
अब जुटि गइलि बारतिा सब रे बानऽ
जाके भाई बइठंइ मेंड़रिया देख रे भारी
मुखवा में कूंचइ मागहिया लेइ रे पानऽ
तब तक भइलि रसोइयां सूबवा कऽ
हुकूम देलेनि दुअरवां दव रे राई
जाइ केनि कहिदह् ना भइया रे बराती
जेतनांह होइहंइ ना गोपिया रे गुवालय
उठि कनि खइहंइ खीचड़िया लेइ रे भातऽय
संये नीपटि ना कामवा देख रे जइहंऽय
पिछवांह बीदाह् बीदइया होइ रे लगिहंऽय (२०९०)
मोका जइहंइ ना हो हउ गड़बड़ाई
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे ओठियन कऽई
अहीराह् ऊठत बानइ नह खरमराइ
रेंगनह् ना गोपियाह् रे गोवा लऽय
आजु भाई सांवर ना बरवाह् रे सहीतऽय
संगवाह् खिचड़ीय ना भतवा होइ रे जइहंऽय
संघेह् जइहंइ ना कामवाह् रे ओराई
ओहि घड़ी उठनह् जेवनवा जे गउरा कऽ
गोदधुरि हलल अंगनईं में बान रे जातऽय
अब पड़ि गयल पातलवा जे अहीरीन के (३०००)
सोरहउ गीरति सामनिया बा पतरे पऽर
आजु भाई बइठल मेंड़रिया बायं र मारी

आजु भाई आगिय ना बीचवा में रखि रे गइलीं
खोरवा में रक्खल धीयनवाह् देख रे बामऽ
उहे भाई पानीय अंचननवा जे देइये दीहलेन
आइनि गीरलि धवनियाह् रे बनाई
ओहि घरी बोलइं ना भइयाह् रे चउधुरी
पंचह् कवर उठइवे न सीता रे राम
ओहि घरी कइकह् ना कवर लेइये अहीरा
अब फेरि खानह् अंगनवा में मुडि रे आइ (३०१०)
सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
भोजन कइलेनि ना गोपिया जे देख गुवालऽय
खींचड़ींय भातइ आहीरवा जे खाइये लेनऽ
तब फेरि सूनह् ना हलिया जे देखऽ हवालऽय
उठि उठि हांथइ ना मुंहवा जे धोइये लेनऽ
कूंचई लगनह् ना मगहिया जे देख रे पान
ऊपरां से ठोंकई मूरुतिया जे देखऽ सोपारी
जलसाह् होतइ मूरवली जे बान रे पालऽय
जवने घरी खइलेसि अहीरवा बीर र लोरीक
आजु भाई सुनबह् सासुरवा रे हमारऽय
देखिलह् आइल साइतिया बा गवने कऽय (३०२०)
सतियाह् के कऽरह बिदइया एहि रे दम्मय
सइंती के पऽहर डऽहरिया रंगि रे देईं
अब धाई लेईय दक्खिनवा कइ रे राहऽय
ओहि धरी होला बीदइया धरमीय कऽय
सांवर गऽयल दुअरवां भाइ हो जाई
आजु भाई राऽहुइं ना जेतना जेइं रे आपन
उहे भाई रहनहं ना संघवाह् इतरे दारऽय
ओतना पलगियाह् परनमवा करे रे गइनऽय
सबकेनि करत पालगिया पर रे नामऽय
जउने घड़ी आनह् धारमिया सरेदारऽय (३०३०)
सांवर करइं पालगिया बमरी के
बमरोय भरि मुख देतइ बा असीरे बादऽ
ददुवा तूं आखेह् आमरवा होइये रऽहऽ
अब तूंय जीयतह् ना लखवा रे बरीसऽ
आजु भइया देसइ दुनियवा कइ रे अइया
तोहुरे घेवरउ ना जंघिया रे सरीरऽय

अब कहि जाबह् ना हलिया रे हवालऽ
जेभवा से काढ़त मोहरवा कइ रे गांठी
आजु भइया साठिय मोहरवा के लेइये हारऽय
संवरू के देलेह् नागरवा में पहिरे राय (३०४०)
आजु भाई सबकह् पलगिया जे असरे भईनी
डंड़ियाह् उठलि ना सतिया के देख रे बाय
आगे आगे रेंगलि ना डंड़िया बा सतिया कऽ
पीछवांह रेंगलि ना जानीय बरि रे याति
ओहि घड़ी रातीय रेंगत बांह् दिन रे दउरत
कतवों ना बदत ना कुरवाह् रे मोकाम
जवने घरी रेंगल ना ओठियन कइ रेंगावल
अब चलि गयनह् बऽरइया जे पुर रे गांव
उठलि गदिवाह् बाइ ए बरइनि
उहे भाई बेचति मागहियाह् बाइ रे पानऽय (३०५०)
ओहि घरी जुटि गइल बरतिया जे अहीरे कऽय
लोरिका से कहति बऽरइनी लेल रे कारी
अब कहैं सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सीरवा के मउरे आर
इहे भाइ रहल ना बतियाह् रे करारऽय
जवने दिन भउजीय के मुरुहुलि वियहि के लवटबय
तोर फेरि अइबइ गाऽउरवाह् लेनि रे जानऽ
बरइपुर में बाऽरतिया जे जब रे अइहंऽय
तोर हम लेबइ ना डंड़ियाह् फन रे बाई
दूनो डाड़ी चलिहइ गउरवाह् गुजरे रातऽ (३०६०)
तब फेरि बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
बरइनि मनबेह् काहनवा रे हमारऽ
देखु हमार ईहइ ना धनवा हउ रे कऽवन
आजु हमार लोहाह् उठनवाह् ओह रे बइठन
लोहा हउवंह पारनवा रे आधारऽ
आजु हम चउमुख ना कामवा लागि रे जइहंऽय
चउमुख लेबइ जानानिया रे खरीदी
अब कहां परबइ कमइया मेहरीन के
कवन करबइ खियइबइ रोजि रे गारऽय
आजु तूंय आपन ना कमवा जे बइठऽ बरइनि (३०७०)
अब तूं बेचह् मागहिया जे ढोलि रे पान

आजु भाई तोहरेहू ना असखत रे खना गिनि
अब बरदानीय गऽउरवा जे मोरे रे गाँव
एतना जब कहत अहीरवाह् बीर रे लोरिका
लोरिकाह् देतइ जबाबवाह् ओहि रे दम्मऽ
बरइनि के गयल आसरवाह् ओइजे टूटी
तब तक चलनि बारतिया बा जोड़ रे तोड़य
अब फेरि लेलेह् दाखिनवा बा तड़ि रे याइ
आजु भाई रातिय रेंगत वा दिन रे दवरत
कतवं बादति ना कुरवाह् देख मोकाम (३०८०)
एकदम उह्वांह् रेंगलवा जे बान रेंगावऽल
अब चढि गयनह् ना गउरा के निर रे हालि
जवने घरी गयनह् सिवनवा जे गउरा कऽय
ओहि फेरि बोलल अहीरवा जे बीर रे बाय
आजु कहँ सुनलह् चामरवा जे बाजवा कऽय
सतरंग सुनवह् ना बाजवा के बज रे गीति
आजु भाई अइसन लाकड़िया जे फेकि रे देतऽ
अब फेरि होइ जात गाउरवा जे अंजरे राय
आजु कहँ आपन ना पइसाह् रे कऽउड़िया
अउ फेरि लेइलह् मजुरिया जे ठोक रे ठोक (३०९०)
ओकरेह् ऊपर बींदइथा जे हमरे देबय
एकक देबइ बछियवाह् सब रे दान

बारात सतिया को लेकर गउरा वापस—सांवर का नव विवाहिता के साथ बोहा में प्रस्थान

बाजलि लकुड़ियाह् गउरा मे
साबदि गइलि आहीरवा के बाइ रे घऽरय
ओहि घरी नीकललि ना नीकलि रे दुअरवां
देखत बानह् बरतियाह् कइये राहऽय
जउने घड़ी गईल ना गउवांह् नियरे राई
ऊज्जर भयल आवइं नह चउरे ओरऽय
देख भाई सवाह् ना लखवाह् बरि रे यतिया
दमकलि आवति गाउरवाह् बाइ रे गांवऽय (३१००)
आजु कहँ घरीय छमुछवा केनि रे बिरितत
आव फेनि आइलि दुअरवाह् पर रे बाय
आजु कहँ चढ़ि गयं पलकिया जे बड़ रे दूलहा

परछनि होतीय दुअरवाह् पर रे बाय
उहे भाई ऊतरल ना दुलहीय दुलहा बानय
अब चलि गयल कहबर मेनि रे बाय
जाइकेनि पूजाह् पातिसवा जे होइ गयनऽ
मुखवा में गुरइ ना घीउवा ना खाइ रे लें
आजु भाई छूटि गइलि ना गंठिया जे कोहबरवां
अब बर उठल ओठिनिया सेनि रे बाय (३११०)
सबके करत पालगियाह् पर रे नामऽय
एकदम रेंगल बारतिया में चलि रे जाय
ओहि घड़ी खीचड़ीय ना भातवाह् खाइये लिहलेन
दुइ एक रोजइ गिरिहियां में रहि रे गयनं ऽ
तब फेरि बोलत ना मलवा बाइ हो सांवर
कक्काह् मनवह् काहनवां रे हमारऽय
देख भाई छवइ महीनवा आध रे पाखऽय
हमई बीतलि मुरवली दउ रे पाल
आजु भाई चिन्ताह् लछिमियन पर हमाऽर य
हम भाई जाबइ लछिमियनि केइ रे पासऽय (३१२०)
ओही घरी बोलइ ना सतिया सतवा से
आजु मोरे मुनिलह् ना मसिरवा मलि रे कारऽय
आजु भाई अनकह् बछियवा ओलियाइ कऽय
अपने काहंह अलगवा जब रे तोहारि
हमहूँ चलब ना बोहवा रे मंझारऽय
गोबर गांइठांह् लछिमिया कइ रे होइहंऽय
लछमी के कऽरब दुइ जूनवा सेइ रे भेंटऽय
ओहि घड़ी दून्नोह् ना जोड़िया जे रेंगीये देहलेनि
अउ फेरि सांसड़ ना बोहवांह् रे मंझार
जाके भाई तानीय छोदरिया बा बीर रे देहलेनि (३१३०)
सतियाह् गऽइलि ना तमुवाह् मेनि रे हऽलि
अपनेह् रेंगल धारमिया जे चलि रे गयनऽ
जाइकनि बइठल सांथरियाह् पर रे बाय

संवरू का विवाह समाप्त

३. हल्दी—चनवा का उद्धार

सुमिरन

[त कहें संझवाहू सुमिर लेहू मइया सांझेखरि
आधीय रातिय आरजून जे सुरन हो बानऽय
आगा भिनुसहरांहू सुमिरलीय हरिये कारऽ
इहे तीनउ धऽरम कऽरमवा के होइं रे जुवां
आजु भाई रामइ ना तोहंइय भइलऽ रामायन
लछिमन तेजलेहू ना कसिया जे बानऽ पयागऽय
आजु कहैं सीतः तेजलवा जे भइं रे नइहऽर
जहं जाके धनुष तोड़ले बाड़ भग रे वान
आजु कहे तवनेहू ना दिनवाहू राम समइया
के फेरि एहूय सामइयाहू कइ रे हाल] (१०)
जउने घरी गऽयल अहीरवा जे सुरहुल में रहनं
ओही घरी भयल विवाहवा जे गवन रे बाय
आउ फेरि गइल ना चनवा बा लेइ बीजरिया
अउ सादी भइलि सेवरिया के बाड़े रे साथ

दुर्गा से गायन में सहायता करने की प्रार्थना

[......माइ कठेसरि
हिरदय में बइठह सिरीय नह भग रे वानऽ
जीभिया के तुनबहू ना मतवाहू रे दुरूगा
जेवन भाई भूललि काड़ियवाहू देलि रे जोड़ी
देविया जों एक्कइ हरफिया जे छूटि रे जइहंऽ
फेरसेनि लेबइ ना नउवांहू हो ताहारऽ (२०)
जेतनीय गाइल कीरीतिया बा सतयुग में
छनवाहू जोरि दहू दुरूगवाहू मोरि रे माई
देवियाहू जानइ साकतियाहू हो तोहारऽ]

चनवा का गौना सम्पन्न—पति सिवहरि द्वारा उपेक्षा किया जाना

जउने दिन भऽयल गवनवा चानवा कऽ

चलि गइल नागरि बीजरिया देख हो गाँवऽ
ओहि घड़ी लेइकह् गावनवा सेवहरि हो गइनऽ
अब भाई देलेनि दुलहिया रे उतारी
अपनेह् दूधइ दूहनह् पाचुइवा बाइ उठवले
अब चऽलि गयनह् आड रवा केनि रे पासऽ
तब तक सूनह् ना हलिया बेसवा कऽय (३०)
अपने के रामय रसोइयां रे बनावऽय
चनवाह् कइलेसि रसोइया तइ ये यारऽय
ओहो घड़ी सूतलि ना बुढ़िया बानि रे सासू
चनवाह् बोलल लारमवा कइ ये बोलऽय
मनबह् काहनवा रे हमाऽरय
आजु भाई रामइ रसोइया अब बनाईं
सइयांह् लवटत आड़रवा पर होइहें हमारऽ
धियवाह् करय नाहनवा तकथे पऽर
जाइ केनि भीतरीय रसोइयां हो बनावंऽ
ओहि दिन मूनह् ना हलिया ओठियन कऽ (४०)
दूध लेले आयल सेवहरि बाइ रे मालऽ
अब फेरि भयल दुअरवा पर रे ठाड़ऽ
घरवा से निकलल ना बेसवाह् रे चऽनइनी
एकदम रेगलि अहीरवा के आगे रे जाय
अब कहें दुन्नोह ना मुसवां जे दूनो कछरिया
उहे भाई ले लेह् भीतरियां बा चलि रे जाय
जाके भाई दूधवा तारीय में बइ रे ठावइ
आपन ठाटइ लागलि नह जव रे नारि
ओहि घरी रामइ रसोइया जे होइ रे गइनीं
सेउहरि के गयल धिकई कह् जल रे पान (५०)
उहे भाई देखइ ना पनिया जे बाइ रे धिकवल
उहे भाई हहरल अहीरवा जे देख रे वायऽ
आजु कहें हो हो ना दइयाह् मोर नारायऽन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मझवाह् रे लिलार
आजु भाई जऽरत ना पनिया जे घइले बाड़ऽय
अब जब परीय बदनिया जे बाबू हमाऽर
आजु मोरे जऽरीय बदनिया जे देख र जइहंऽ
अब नाहि करब ताखतवाह् पर अस रे नान
बुजरीय भईलि ना बेसवाह् मोर मूदइया

हमरे के मारइ के कइले बाह् रोजि रे गार (६०)
······ ओहि दिन सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे भाई कऽरई ठाहरवा अस रे नान
उहे फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहै भाई गोड़इ ना हथवांह् धोइये लिहलेन
आहीराह् रेंगल ठाहरिया पर बानऽ रे जातऽ
जउने घरी बइठि ठाहरिया पर बीर रे गइनऽ
देखत बाड़इ ठाहरिया में जेव रे नारऽ
आजु भाई बारह ना दोनवा तर रे कारी
छत्तीस रंग कह् बनल बा पर रे काऽर
देखह् राजाह् दइयंवा के हउ रे लड़िकी (७०)
ठटि केनि कइलेसि बऽनइया जेव रे नारऽ
ओही घरी बइठल ठाहरिया पर बाइ रे सिवहरि
ठटियाह् अवतइ ना हो गइल जरि रे काल
आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा जे तक रे दीर
बुजरीय बेसवाह् मूदइया जे होइल बाड़य
इहे चाहि लेइ हंइ ना जानवाह् रे हमाऽर
आजु भाई छत्तीस ना दोनवाह् तर रे कारी
का जानी कवने में माहुरवा जे डल रे बाय
आजु भाई कवनेउ कऽखा जाबइ महुरवा (८०)
छन मेनि जाबइ ना पीढ़वा पर ढंगि रे लाइ
ओही घड़ी बोलल ना मलवाह् बाइये सिवहरि
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वांह् रे जवाबऽ
आजु बुजरी मुनबेह् ना बेसवाह् तुंइ चनइनी
अइसन काहेह् बनवले तें पर रे कारऽय
देखु भाई बासिय ना भतवा के हुंइ खवइया
बसियाइ खइलीय मंठवाह् हमरे रोजऽय
ए भाई छत्तीस ना डोंगवाह् माहुरे धइले
का जानी कवनेह् ना दोनवा के मीठ रे लगनऽ
कवनो हम खइलीय ना दोनवाह् रे उठाइ (९०)
सहजे में आलर जिनिगिया जे चलि रे जइहंऽय
मुदई आइलि ना घरवा में बाड़े हमार
·······घरा में खुसीय तूं गीराइ कऽ
दुइ चार कवर भोजन कइ ले लऽ

अहीरा ऊठल ठहरिया से बानऽ
अउ फेरि हाथइ ना मुहवां हो धोई
ओहि दिन देख ना हालि ओठियन कऽ
औ फेरि गयनंऽ सेतहरिया हो आजऽ
आके निकलि आंगनवा में गयनऽ
अंगने में ले लेनि कामरिया जठाई (१००)
ओही घरी सूतल आहीरवा बा कमरी पऽर
के फेरि बीचेह् आंगनवा बा मय रे दान
सूनह् ना हलियाह् चनवा कऽ
चनवाह् कऽरति ना ओठियन रे वनाई
जाइ कनि अम्माह् सासुइया के बल रे वाइ कऽ
सास पतोहि कइलनि भोजनवाह् मन रे भऽरी
उहे भाई कइकहि भोजनवाह् बूढ़ि रे मूतल
चनवाह् देलेसि पऽलंगियाह् रे लगाई
तब फेरि देखह् ना हलियाह् आगवां कऽ
······खालइ खियावल लेइरे चनवा (११०)
सासु के देलेसि पलंगिया जेरे सुताय
ओही घरी सूनह् ना हलिया जे चनवा कऽ
आपन गादीय गीरदवा जे बाइ लगउले
के फेरि देहलेसि सेजरियाह् रे जठाइ
आजु हिया मारति कांछरिया जे अपन बाडइ
एकदम रेंगलि आंगनवाह् मेंनि रे जाय
जहवांह् सूतल ना मलवा जे वान रे सिवहरि
औ फेरि पेलति ना हथवा जे लेइ रे बाय
एक हाथ पेलति ना मुंड़वा जे ओह रे बाड़ऽय
चनवाह् सेवहरि के लेहले जे बाई उठाइ (१२०)
एकदम ले लेह् पालंगियाह् पर रे गइनी
एक बलि देहलनि पलंगिया पर धर रे काय
सूतल ना मलवाह् बाइ रे सिवहरि
चनवाह् खाइय ना पीये तइ रे यारऽ
आपन लेहलेनि ना अभरन रे बनाई
उहे भाई लेइकह् आरतिया चलि ले देले
अब चलि जालइ सेजरिया केनि रे बीचऽय
तब फेरि देखह् ना हलिया ओठियन कऽय
के फेरि ओहूय समइया कइ रे हालय

जेतनीय गाईलि ना बतियाहृ सत जूग में (१३०)
चनवाहृ जोरिदहृ दुरूगवा जे पूज रे मान
ए घड़ी थोड़हृ ना रतिया जे रहि रे गइलीं
अब होत बानहृ भांभरवाहृ रे बिहान
ओहि घड़ी ऊठल ना मलवा जे बाइ रे सिवहृरि
दूहनहृ लेइलेहृ पाटेउवाहृ रे उठाय
उहे भाइ संझिलेइ ना भोरवा जे दूहननि कऽय
अब फेरि रेंगल आड़रवा जे पर रे बाय
आजु कहँ रहनऽहृ आड़रवा पर चर रे वाहय
लरिकाहृ बहुत रहइं ना छोट रे छोट
ओहि घरी पाकल वा बरवा जे सिवने में (१४०)
लरिकाहृ तरसत बा पेड़वाहृ तर रे बाय
आज्र कहैं बोलनहृ लारकवा जे सिवहृर से
मालिक मनबहृ काहृवांहृ रे हृमार
आजु भाई भूखीय ना लागलि पेटवा कऽय
बरवाहृ पाकलि ऊपरवां जे देख रे बाय
मालिक खोदि खोदि ना बरवा जे तूं खियऽतऽ
पेटवाहृ भरत लऽरिकवा रे जात अघाय
ओहि दिन मूनहृ ना हलिया जे सिवहृरि कऽय
उहवां से रेंगल मारदवा जे लेइ रे बाय
अब चलि गयल ना पेड़वा जे वरवा के (१५०)
आपन छोरलेहृ लापेटवा जं देख रे बाय
उहे भाइ मूतल ऊतनवा जे बाइ रे सीवहरि
दूनों हाथे धइलेहि आउजरवा जे देख रे बाय
आजु कहें खोदि खोदि ना बरवा जे बाइ गिरावत
लड़िकाहृ बीनि बीनि ना बरवा जे बान रे खात
ओहि दिन सूनहृ ना हलिया जे ओठियन कऽय
लरिकाहृ गयनहृ ना उहवांहृ रे आघाय
ओहि घड़ी उन्नय लरिकवा जे मनि रे गयनऽ
मालिक अब नहिं ना खाबइ बर रे यात
ओहि घरि उठल मारदवा बा बीर रे लोरिका (१६०)
उठि केनि भयल बा नय नाहृ तइ रे यार
ओहि घड़ी आपन अउजरवा जे बाइ मुगीरत
तीन फेरा खोसत ना दतवांहृ लेइ रे बाय
उहवां से रेंगल ना बांनहृ मलसंवरय

सेहरि रेंगल ना अयनह् रे अड़ार
ओहि घड़ी ले लह् पाटेउवाह् पर रे दूधऽय
अउ धइ लेलह् डऽहरिया जे बिजरी के
एकदम रेंगल ना घरवां बा चलि रे जाऽत
आजु भाई निकललि ना बेसवा जे बा चनइनी
उहे भाई निकलि आंगनवा में भइली रे ठाढ़ (१७०)
आजु कहें दूहनहं ना भरल बानऽ दूधऽय
दूनों हाथे ले लइ ना बुकवाह् मेंनि रे थाम
एकदम ले लेह भीतरिया में धन रे गऽइल
चेरुवा में देलेह् ना दूधवा बा बइ रे ठाइ
आजु कहें आवंय रसोइया जे तप रे लागल
सिवहरि बइठल दुअरवाह् पर रे बाय

चनवा का पति के यहाँ से वापस आने की तैयारी

तब तक सूनह् ना हलिया जे चनवा कऽय
सासु से कहति ना बतिया जे अर रे थांइ
आजु कहें अम्माह् ना मुनिलह् मोरि रे सासुर
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर (१८०)
आजु तक सूतल मऽहलिया में हमरे रहलीं
एक ठेनि देखल सापनवा जे अजरे गूढ
आजु कहें बापइ ना सहजे जे मोर रे बानय
ओहि भाई भूइयांह् ऊतारल बान हमार
जवन हम भइयाह् ना हंवह् देख रे महदेव
उहे भाइल चलइ खटियवाह् पर रे बाय
अब हम जल्दी से गऽउरवा जे पहुँ रे चावऽ
चलि केनि देखव ना बापवाह् भाई क मोह
नाहि फेरि नांवउ दीगरवा जे होइ रे जइंहऽय
दिनवाह् दिन के मेहनवा जे होइ रे जाय (१९०)
ओहि घड़ी ऊठल मरदवा जे बाड़य रे सिवहरि
जाइके भाई बइठत कुरूसिया जे पर रे बानऽ
घरवां से नीकललि ना मातरिया बा सिवहरि कऽ
बेटवा के पंजरेह् ना गइनी जे माई बइठो
आजु कहें सुनबह् ना भइयाह् मल रे सीवहरि
एठियन तूं मनबह् काहनवांह् रे हमार
दूलहीय सूतलि भवनवां में तोहरे रहलीं

उहे भाई सपनाह् देखले बांइ अज रे गूढ़
जवन उनकर बाबिल ना सुगवा जे बान रे सहदेउ
उहे भाइ लटकल खटियवा पर बान रे आज (२००)
जवन उनकर भइयाह् ना महदेव हंव रे गऽउरा
उहे भाई लीखल ना भूंइया जे बानऽ उतारि
जल्दी से दूलही के नइहरेय पहुँ रे चइबऽ
जाइ केनि देखइ ना भइयाह् बापे क मुंह
नहिं कवनो नावइ दीगरवा जे होइ रे जइहंऽय
दिनवांह् दिन केह् मेहनवा जे होइ रे जाय
एतना जे कहति ना धनवां जे बाइ रे बुढ़िया
सेवहरि क गयल ना मनवाह् रे बईठ
आजु कहें हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलार (२१०)
बुजरीय कइसेह् मुदइया जो हटि रे जातय
आजु हमरे हटि जाति ना सिरवा के झर रे बार
आजु मोरे दा मइयाह् ना पूतवा जे पति रे रहबय
उठकइ खावइ मनहूठवा जे हमरे भात
·······घमवांह् होइ गइनऽय
पानीय पात्तर पियलवाह् बानऽ रे खाई
ओही घड़ी रेंगल ना धनवा जे बाइ रे चन्ना
पीछे पीछे रेंगल ना मलवा बा चलि रे जातय
एकदम हलल जंगलवा में बान रे जाऽय
दूनो भाई रेंगइ ना गोड़वाह् लेइ रे तोरऽय (२२०)
ओहि दिन आगेह ना फलवाह् बा बढ़उ ले
अब ओहै माटिय बेवरवाह जे बह् रे बानी
ओहि घड़ी नादिय बेवरवा पर चलि रे गयनंऽ
नदियाह् आइल कररवा बा फुफरे कारि
नात कहीं डोलइ ना डंड़िया जे देख देखऽना
आ फेरि दुन्नोह करारवा पर बाना रे ठाढ़
ओहि घड़ी बोललि ना बेसवा जे बा चऽनइनी
सइयां तूं मनबाह् काहनवांह् रे हमार
देख भाई रतियांह् ना तनवा जे तोहार हउवां
दिनवाह् तऽनइ ना हउवांह् रे हमाऽर (२३०)
सइयां तूं उलटि क पछवा जे ताकत रहबऽ
हमहूं कइ लेइं ना नदिया में अस रे नान

रतियांह् रामइ रसोइया जे हम बनउली
दिनवा में महकत ओढ़नवा जे बाड़ हमाऽर
ओहि घड़ी सोझह् मारदवा जे बा बीर सिवहरि
ऊलटि ताकत ना पहरन परि रे बाय
तब तक सूनह् ना हलिया जे चनवा कऽय
धीयवाह् मारति काठरिया जे ले ले रे बाय
ओही घरी डुब्बिय ना मरले जे हलि काररवा
एकदम आधेह् ना नदिया में उति रे राइ (२४०)
ओहि घरी आधेह् ना नदिया जे होइ कऽ निकलल
डुब्बिय मारीय कररवा पर चढ़ि रे जाइ
ओही दिन बोललि ना बेसवा जे बा चऽनइनी
सइयां तूं मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु तूंय आपन ना गंठियाह् रोक लगाइ कऽ
आपन खेरहा ना मेहरि तूंय खूंय बनाइ
आजु हम सांझिय जावंइया के देख रे लगि हंय
गउरा में हमहूं कऽरब नाह् धिग रे हार
अब फेरि ओहीन कर चन्ना बाड़य
ओही घड़ी हहरल ना मरद रे सिवाहरि (२५०)
अब कहें हो हो ना दइवा मोर नारायन
का वरम्हा लिखलह ना मंझवा रे लिलारऽय
देख भाई सगरउ ना गुनवां दउ रे दीहलऽ
चारि हाथ पंवरइ के गुनवा नाहिं वानऽ
नहिं हम चारिय ना हथवा जउं पवांरी
ऊतरि होइति बेवरवा ओहि रे पारऽय
चनवाह् उढ़रीय उढ़रवांन कइ जोसइ
अब हम देखिति बेवरवा जे ओही रे पार
एतनाह् कह कह ना मलनाह् बाइ रे लवटल
आपन गयल बिजहिया देख रे घर (२६०)

पति के घर से भागती हुई चनवा का बांठा द्वारा घेरा जाना

ओहि घड़ी भागलि ना चनवाह् ओही रे पारऽय
धियवाह् चुनलि ना धोतियांह हथवां में
पवंरलि भींजलि ना धोतिया जे दूनो रे बानी
उहे भाई गारइ ना पनिया जे धोतिया कऽइ
गार केनि लेह् लेह् ना धोतियाह झूर रे वाई

हाथ गोड़ धइकह् ना धनवाह् तइ रे यारय
उहवां से भागलि ना बेसवाह् जाइ चनइनी
के भाई जंगल ना झड़िया में चलि रे जाय
जउने घरी आधेह् जंगलवा में चलि रे गऽइल
बंठवांह् खेलत ना बनवा जे बानऽ अहेरऽय (२७०)
उहवंह आठहि कुकुरवाह् नव रे धनुहा
बंठवाह खेलइ ना बनवाह् रे अहेरऽय
जवने घड़ी पड़ि गयल नऽजरियाह् चनवा पऽर
बंठवाह् हंसतइ गयल बाह् ले नियराई
आजु कहैं लेइ कह् धानुहियाह् हंथवा में
कुकुरन मारत ना चमरा बा बहि रे याई
उहे भाई ले लेह् धानुहियाह् ले ले दवरऽल
तब फेरि ले लेसि ना चनवा के पछि रे आइ
आगे आगे भागलि ना बेसवा जे जाइ चऽनइनी
बठवांह् लेलेह् चामरवा बा पछिरे याइ (२८०)
जउने घरी कुछुय जंगलवा में हलिरे गऽयऽनऽ
चानवाह् थाकलि जंगलिया मे बाइ रे जात
ओहि घरी ईज्जति बचावै केनि रे चन्ना
बोलति बाड़इ लारमवान कइ रे बोल
आजु कहैं सुनवह् चामरवाह् मोरि रे पती
अब तूय हउवह् मलिकवाह् रे हमाऽर
देख भाई तोहरइ ना छोड़िया के आन कऽ न होबय
बाकी आजु बरत भूखल बाईं अत रे वार
कउनो जे गड़बड़ि ना देहिया जे कइ रे देबऽ
आजु मोर बऽरत खंगनवाह् होइ रे जाइ (२९०)
एतना जब कऽहति ना बेसबा जे बाय चऽनइनी
चमराह् धीरजि ना धइले जे लेइ रे बाय
तब फेरि बोलति ना बेसवा जे बा चऽनइनी
अउ फेरि सुनबह् ना बंठवाह् रे हमाऽर
आजु भाई हमह् ना दिनवा बा लेइये थोड़ा
अब हम कऽरब ना एठियन फर रे हार
इहे भाई फरलि तेतरिया लइये बाने
अब लेइ आवह् तेतरियाह् रे ऊठाई
उहवां से रेंगल ना बांठबा जे बा चामरवा
एकदम रेंगल आ पेंड़वाह् तर रे जाय (३००)

आजु भाई सुग्गाह् चीरइया के चट दे तरिया
उहै भाई गीरलि धारतिया में बाइ रे जाय
चमराह् भुइयांह् आ ले लेह् बा बाऽटुरिकऽ
अंगउछी में ले लेह् ना चनवाह् किह् रे जाय
जवने घड़ी कूरइ तेतरिया जे चमरा देहलेनि
चनवाह् जरि मुरि भइलिह् रे खंगार
आजु भाई जूठइ ना कटवा जे चीड़ियन कऽय
कइसे हम करीय ना एकर फर रे हार
आजु मोर खंडित ना होइ जइहुंइ बरतवा
ए महं भूखलेह् में हम करइ रे जाइ (३१०)
ओहि घड़ी सूनह् ना सइयांह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मउरे यारऽय
देख सइंया रूठई (जूठई ?) ना टटवा (कटवा ?) जे कालि अइलऽ
आजु हम भूखब बिरिथवा जे होइ रे जइहुंऽय
आजु तूंह चढ़ि जाह् ना पेड़वा जे तेतरीय के
पेड़वाह् से लेबह् तेतरियाह् रे उतारी
जउने घरी चाढ़ल चामरवा तेतरी पऽर
उहे भाई चढ़ि गयल ना डंड़िया रे अटाटइ

चनवा द्वारा सत का सुमिरन—
चमार बांठा—छेड़खानी करने में असफल

ओहि घरी सुमिरइ ना सतवा लेइ रे चन्ना
आजु कहैं गउराह् क सुमिरऽ जे गउरे रांइ (३२०)
बोहवा के सुमिरउं कनिकवाह् रे मुरारि
आजु कहैं सुमिरल भावनिया जे लोरिके कऽय
दुरूगाह् देखह् ईज्जतिया जे गइनी हमाऽर
ओही घरी चमराह् के डंड़वा जे कइये देतऽ
डरियाह् फूटी आकसवा में चलि रे जात
डरिया के ऊठत बंवरिया जे पेड़वा में
चमराह् के बन्हतंह बंबरिया के माइ रे डारि
ओहि घरी एतरि तेतरिया जे होइ रे गइनीं
अब फेरि डरियांह् आकसवा में चलि रे जाय
चमरा के बान्हइ बंवरियाह् के घूमाइ कऽ (३३०)
चमरा बन्हलइ ना ओही में रहि रे जाय
उहवां से भागलि ना बेसवा जे बा चनइनी

सीधरि लेह् लेह् गउरवा बा चलि रे आइ
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
चमवाह् कोसइ अन्दरवा जे भागि रे गइनीं
अउ फेरि गइनींय पारगवांह् कुछ रे दूरऽ
के फेरि ठाड़ाह् ना होइह् गई चऽनइनी
अब धनि सोचति ना मनवाह् मेंनि रे बाड़ऽय
आजु कहैं हो हो मा दइवा मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लिलार (३४०)
आजु भाई आयल ना एठियन बाइ एठियऽन
चमराह् हमरेह् पछेड़वा देख रे धाई
जवन भाई बन्हलइ चामरवा मऽरि जइहंइ
दिनवांह् दिनकऽ होइहंइ पूज रे मानऽ
ओहि घरी गउराह् कऽ सुमिरत गउरे राइनि
बोहवा के सुमिरत कानिकवा जे बाइ मुरारि
आजु कहैं सुमिरइ भवनिया जे लोरिके कऽय
दुरूगा त् लगतेउ ना बेड़वांह् रे सहाय
चमरा के कटि जा बावरिया जे पेंड़वा कऽय
बांठवाह गीरइ धरतिया में भहरे राय (३५०)
ओहि घरी परगटि दुरूगवा जे माइ रे गऽइनी
अब फेरि कटलेनि बांवरिया जे घूम रे राइ
चमराह् गीरल ना डलिया जे सरगे में
आजु भाई गीरल धरतिया में भह रे राय
उहो आपन धूरिय माकरवा जे आपन झरलेसि
हथवा में ले लेह् धनुहिया जे उठाय
पछवांह् रेंगल ना दवरल कूदले जाला
आगे आगे भागलि चऽनइनी बा चलि रे जात
जवने घरी गउरांह् सिवनवांह् चलि रे गइनी
आगवांह् बानइ नाह् ओठियन भेंड़ि रे हारऽय (३६०)
खेड़ियाह् लेलेह् गड़ेरियांह् बान रे ठाढ़ऽय
तब तक सूनह् ना हलियाह् चामरा कऽय
उहे भाई भारीय चिकरियाह् बाइ रे देतऽय
आजु कहैं सुनबह् ना भइया चर रे वाहऽय
एठियन मनबह् काहनवाह रे हमार
देसवा में संझवेइ गावनवा ले उतरलीं
बियहनाह् भागलि बीयहिया जाइ हमारऽय

तनी एक छेंकतह् आगरवा जे बियही कऽय
हमहूँ आइल करीबवा में रे पहुँच
ओहि दिन बोलति ना बेसवा जे बा चनइनी (३७०)
दरियाँह् करई ना बेड़वांह् रे जाबाब
आजु कहँ सुनबह् ना एठियन तूं ये अऽहीर
अब सुनि सुनि लहना चेलिया के चर रे वाह
देख भाई हमरेह् ना छेकबेह् रे छेकइबे
अब फेरि दिनवाह् दुपहर जो होइ रे जाइ
अब तोहार हइंय ना खजिया जे सिगठी कऽय
अब तोहार करिहंइ सिगठवा जे खइरेकार
अब घरे बालउ ना बचवा जे मर रे लागिहंऽय
केतनाह् जइहंइ ना धनवा जे तोर ओराय
आजु भाई सचेह् गड़ेरिया जे रहि रे गयनऽ (३८०)
फेरि चन्ना भागलि ना अगवा बा चलि रे जाय
आजु कहे लेलह चीकरिया बीर रे बांठवा
आजु भइया सुनिलह् ना हरवा के हररेवाह
ओहि दिन बोलल ना ओठियन बांठ चामरवा
भइयाह् सुनिलह् हरवाहवा रे हमार
देख हम संझवइ जे गवनवा लेइ गीरवली
बिहनाहि भागलि बोयहिया जे बाइ रे जात
तनी एक छेंकतह आगरवा जे बीयही कऽय
दम भरी आइल हमहूँय रे पहुँच
ओही घरी बोललि ना बेसवा जे बा चऽनइनी (३९०)
अब भइया सुनिह लेवह् ना हर रे वाह
अब कह हमरेह ना छेकवह रे छेकइबे
दिनवांह् दुपहरि होइवाह तोर रे जा
तोरे भाई खेनवा पर अइहय रे किसानवा
अब तोहसें पूछिहंइ ना कामवा रे लेलरेकार
आजु भाई नाहिय ना कामवाह् लेइ देखइबऽ
अब तोहार बऽनीय ना मठवा जे कटि रे जाय
घरवांह बालउ ना बचवा जे मरि रे जइहंऽय
ए महं कवन सारथवा जे तोहरी बाय
उहवां से भागलि ना बेसवाह् रे चऽनइनी (४००)
अब धनि चढ़ल गउरवाह् गुजरे रात
अगवांह् रहइं सिवनवा में गइ रे पसरल

बंछवांह् चढ़त पिड़इयाह् देख रे बानऽ
ओही घड़ी जुटि गइल ना धांगाह् रे चनइनी
बंछवा से रोइ रोई ना कऽहइ लागल न रे बातऽय
आजु मोर बछवाह् ना मुनिलऽ मोर पिढ़इया
एठियन मनबह् काहनवा रे हमाऽरऽ
देख हम नगर बीजईया सेनि रे भगलीं
अब फेरि नदियाह् खेवरवा भइलीं रे पारऽय (४१०)
जउने घरी आधेह् जंगलवा में हलि रे गइलीं
बांठवाह् आठइ कुकुरवा नव रे धनुहा
खेलत बानह् जंगलवाँ रे अहेरऽ
जवने घरी परि गयल ना नजरिया चनवा पऽर
कुकुरन के मारत धानुहिया बाड़ बिचारी
चनवा क धइलेह् बाड़इ ना पछि रे याई
आगे आगे भागि ना हमहूं चलि रे अइलीं
बछवां ते मुनबेह् पिड़इया रे हमारऽय
तनी एक छेकेह् आगरवा त चमरा कऽय
हमहूं जाबइ ना किलवांह् रे पहुँच (४२०)
ओहि दिन जूटल ना बांठवा जे बाड़ चामरवा
बांठवाह् रेगल बाड़इ नाह् अरि रे लात
जउने घड़ी थोड़ाह् करीबवा मे रहि रे गयनऽ
बछवाह् झुकल ना ओठियन से बड़ रे तेज
ओही घड़ी भागल चमरवा जे पछवां के
कुछ दूरि ले लेह बाछउवा बा बरि रे याय
तब तक घूमत फिरतवा दरि रे भइनी
चनवाह गइलि ना किलवा में भाई घूसुरि

गउरा के सागर पर बांठा का घेरा डालना—सारे कुँओं में हड्डियाँ और गोबर फेंक देना

गूनह् ना हलियाह् ओनही कऽ
केहि फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालऽ (४३०)
पिछवांह् चऽढ़ल ना बठवांह् रे चमारऽय
एक दम चऽढ़ल सागरवाह् केनि रे भांटऽय
भीटवा पर साठिय ना पोरवाह् कइ रे बासऽय
अब गाड़ी देलेह् ना झंडवाह् लेइ रे बानय
अब फेरि ले लेह ना ओठियन ले रे गोली

आजु भाई जेहीय ना जइसइ होइ रे बहियाँ
ते भरि देइहंइ सागरवाहू भरि रे दूधऽय
केत फेरि साठिय ना बांसवा जे भरि रे सोना
केत फेरि चंदा के कडुववा में काढ़ि रे दइहंऽ
तब पिये देबइ सागरवा क हमरे नींव (४४०)
बिन हमराहू चामरवा जे कइये दोहलेन
के भाई जइकहू सागरवा केनि रे भींटि
ओही घड़ी सूनहू ना हलिया जे रजवा कऽय
सोरह सइ देलेहू लेंउड़िया जे बानऽ रेंगाइ
जबने घडो लेइ कहू घऽइलवा जे लेइये रे रेंगाऽ
ऊतरलि जानिय सागरवा के देख रे भींट
चमराहू ले लेहू ना गोटिया जे अगुनी लऽ
घइलाहू मारत ना गोटिया वा गनी रे गनि
अब सतरह टूकाहू घइलवा जे होइ रे गयनऽ
एकदम रेंगलि ना रजवांहू किहां रे जाय (४५०)
चाननी पर बइठल ना सहदेव वांय ये राजा
लेउड़िनि बोललि कहांरिनी जे दूनो रे बाइ
आजु कहैं सुनबहू ना राजवा तू महरे राजा
एठियन मनबहू काहनवाहू रे हमाऽर
एकतह तूहंइय गाउरवा में रहलऽ जबरा
दूसर के हूय गाउरवा जे नाहिं रे बाय
आजु भाई तोहरे से जाबरवा जे चढ़ि रे अयनऽ
अब फेरि टिकनहू सागरवा के दईउ रे भीट
आजु भाई साठिय ना पारवा के गड़लेनि बांसवा
अउ फेरि बइठल पालथिया जे बाड़ेय रे मार (४६०)
काऽहल साठिय ना सोनवाहू भरि रे देइ दया
केत भरि देबहू पोखरवा जे भरि रे दूध
केत फेरि चन्ना के काऽडुवा में काढ़ि देब्या
अब पिय देबइ सागरवा के हमरे नीव
ओहि दिन तीनिय न रतियाहू तीनि रे दीना
चमराहू कइलेसि गउरवा में अन रे खानऽ
उहे भाई देखहू ना हलियाहू ओठियन कऽय
लोरिकाहू छवइ महीनवांहू लेइये ऊत्ताऽर
अब मुरहुल ले लेहू ना टिकियऽ के रहन रे लोहाय
ओहि ठिय लागलि निदरिया वा लेइ रे बानऽ (४७०)

बियहीय लेइकह् कोठरिया में सोवल रे बानऽ
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् बंठवा कऽय
जेतनाह रहनह् ईनरवा गउरा में
ओमह हाड़इ गोबरवा देत रे डाली
गउरा में एकइ ईनरवा जे बचि रे गयनऽ
जवन भाई बाड़इ ना लोरिका के दर रे बार
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
बठवांह् कइलेसि अनरोधवा जे बड़ा रे भारी
ओहि घड़ी रागह् दाऽइयवाह् परजा रे लिखऽय
सब कनि काऽहत जा चनवा बा बरि रे यारऽय (४८०)
आजु भाई जवनेह् ना दिनवां जे राम साऽमइया
जचनाह् करत चामरवा जे बाड़ रे वारय
एक ठेनि बचल ईनरवा बा लोरिके कऽय
उहे भाई बाड़इ ना गोलवा रे अज रे राति
आजु कहें राजाह् ना सुनिलऽ जे मह रे राजा
मालिक मनलह् ना सिरवा के मलि रे कार
आजु भइया कइसेह् बीटिया जे काढ़ि रे काऽनी
अब देइ देबह् चामरवा के तुय रे हाथ
कहाँ पइबऽ सागर ना भरवा जे राजा रे दूधय
के साठी पोरइ भरि सोनवा जे कहाँ रे बाय (४९०)
आजु भाई चमराह् हरऽवनी जे डालि रे देहलेनि
गउरा में मचिय गइलिय अब अन रे खानि
बलुकनि परजाह् ना हवइ ताहार लोरिकवा
दूसरेह् जातीय का बिलवा जे हवे हम्मार
बलुकन मारइ चामरवा के आइ कऽ लोरिका
चनवा के लेइ जाउ कादुववा में देख रे काढ़ि

चनवा की माँ सेल्हिया का लोरिक के पास सहायता के लिए जाना

ओहि घड़ी तऽवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
आजु भाई रानीय ना रजवाह् बऽतियाइकऽ
अपने में कइलनि ना बतियाह् सम रे तूलऽय
आज कहें बडेह् सन्नेरवाह् केनि ये जूनऽय (५००)
राजाह् पठवत रानियवांह् केनि रे बानऽ
वियही ते चलि जोह ना घरवाह् लोरिके कऽय

लोरिका से काहेह ना बतियाह् समुरे झाई
लोरिकाह् अवतइ चामरवाह् मारि रे देतऽइ
दिनवांह् दिनकइ झगड़वाह् टूटि रे जातऽय
लोरिकाह् लेइ जाइ काढुववा में चनवा के
उहे भाई भोगिय ना कीलवाह् रनि रे वासऽय
इतनाह् कऽहति ना बातेह् रानी राजा
अउ फेरि रानीय सऽबेरवां में रेंगि रे देइ
एकदम रेंगलि ना रनियाह् बा रेंगावऽल (५१०)
अब चलि गईलि लोरिकवा के दर रे बाऽर
जिनकर छोटीय बाखरिया बा पितरी कऽय
भीतराह् बहुत बानइ नह फल रे हार
आजु कहँ सोनेह् ना गुजवाह् केनिये मचवां
लोरिकाह् मूतल पालंगिया पर देख रे बाय
आजु कहँ बड़ेह् सऽबेरवाह् केनि रे जूनवा
मंजरीय उठलि ना धियवाह् देख रे बाय
उहे भाई कुरि कुरि आंगनवा जे बाइ बटोरऽय
और फेर बटोरतइ दुवरवा में चलि रे जाय
ओहि घडी अइनीय ना देखियह् अम्मा सामुर (५२०)
बोलति बानीय लारमवा के देख रे बोल
कहैं दुलहीय ना मुनि लह तुंग ये माजर
काहनाह् मनवह् ना एठियन रे हमार
आज कर लोरिक ना भइया जे कहां रे बाड़ऽय
ओकर पताह् ठेकानवा जे नाहि रे बाय
ओहि घड़ी बोलनि ना धियवाह् महरी कऽय
उके भाई दावन मांजरीया जे बाड़े रे नाम
आजु कहँ गुनवह् ना सामुय मोर गोसाईंन
बेटवाह् मूतल पालंगिया पर बाने रे बाइ
आजु कहँ जाऽकह् बेटवना जे आपन जगाइ कऽ (५३०)
आपन मतलब ना बतिया जे बति रे याय
दिन रेंगलि ना धनवा जे बाइये ओठियन
रानीय रेंगलि सलिहयवा वा चलि रे जाय
आजु कहँ गयलि सेजरिया जे लोरिके के
चदराह् तानति ना मुखवा पर देख रे बाय
आजु कहँ तनिकह् चादरवा जे बा जगावत
तबउं नाहि ताकत मालकिया जे बाड़े उघार

ओनकेह एहर ना ओहरइ जे उझिलावऽ
उन्हें भाई तन्नीय साबदिया जे नाहि रे बाय
लोरिका के चिउंटीय वकोटित लेइये रनिया (५४०)
तब नाहि जागत अहीरवा के बाइ रे पूत
ओही घरी रानीय ना गइनीय खिसि,रे याई
फेरि भाई निकलिलि मजरियाह् किहां रे जाइ
आजु कहैं दुलहीय ना सुनिलह् मोरि बहूरिया
कइसेह् जागीय बेटवनाह रे हमाऽर
आजु पिया कवन उपइया जे हम बतावऽ
तब फेरि जगिहंइ बेटवनाह् रे हमाऽर
ओहि घरी बोललि ना धनवा जे बानी रे मांजरि
सासुउ मनवह् काहनवांह रे हमाऽर (५५०)
आजु कहैं धोतियाह् ना छोड़ि दह् जवन बाइ पहिर लें
अब तूं धइ दह् ना डरवाह् लटरे काइ
जाइ केनि सइयाँ के पाजरवा जे सूति रे जाबऽय
तब्बइ जगीहइं ना सइयांह रे हमार
रनियाह् धइ देइं ना धोतिया जे डरवा पर
जाइ कनि सूतलि पाजरवा जे धनि रे बाय
ओही घरी चिटकलि बादनिया बा सेल्हिया कऽय
अब फेरि अहिराह् ना दिनवाह् जागि रे जाई
जेकर भाई रोवहँ ना गरमइ होइ गयनंऽ
डटि केनि भई गयल बा सिर रे हान
ओहि घरी धइ देइ टंगरिया जे सिल्हिया कऽय (५६०)
सेल्हियाह् डांटति रानियवा जे देख रे बाय
आजु कहैं बाउर लोरिकवा तें बउरे रइले
तोर हरि गऽइल ना मतवा जे बाइ गियान
लोरिकाह् जे जवनेह् ना तनवाह् सेनि निकल ले
उहे तन कइसेह् ना करबेह् रे खराब
ओहि घरी एतनाह् जब बतिया जे लोरिका सुनलेनि
खींचत बाड़इ ना हथवा से तर रे वारि
बुझरोह् सुनह् ना हलियाह् एठियन कऽ
सुनिलह् हमरेह जाबनियाह् कइ रे बात
आजु तोके कावन नाबतिया जे परि रे गइनी (५७०)
कवने से पारलि मोसीबत बरि रे यार

बुजरी से भगलेहू ना सेजियाहू रे हमारऽ
जाइ केनि सुतलेहू सेजरियांहू रे हमार
एने बोलति ना सेल्हियाहू लेइये बाने
भइयाहू सुनबहू लोरिकवाहू मोर रे बातऽय
जउन दिन भागल बिटियवाहू बूजरीय से
अब होइ गइनीय बेवरवा एहि रे पारऽय
जउने घरी आधेहू जंगलवा में बेटी रे अइनी
चमराहू खेलत ना बांठवाहू रहे अहेरय
उहै भाई परि गइल ना नाजरिया जे बिटिया पऽर (५८०)
कुकुरन के मारत धानुहियांहू बाइ रे हो कऽय
आजु कहैं चमराहू ना लेहले बा पछि रे वाई
एकदम धइलेहू पछेड़वाहू बिटिया कऽय
चलि अयनं नागर गउरवांहू मोर रे गाँवऽय
बेटवाहू जेतनाहू ईनरवाहू लेइ रे रहनऽ
हड़वाहू गोबर देलेहू बा ढांसरे वाई
फरचाहू पानीय सगरवा के देख रे बानऽ

लोरिक और बांठा का युद्ध—बांठा की मृत्यु

चमराहू वइठल ना परगट बाइ अगोरी
देख बेटवा तीनिय या दिनवांह तीनि रे रातऽ
अन्न पानी बिनाहू गउरवा के मरे रे लोगऽ (५९०)
बेटवाहू तोहरइ ईनरवाहू इहे रे बानऽ
तोहरे डऽरन इनारवा जे बाचल रे बाइ
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बा देख अंघइया
सेल्हियाहू सुनवेहू ना रनियाहू रे हमारऽय
देखु भाई लावटि गोरिहियां जे तोही रे चल चलबे
आपन देखबेहू ना किलवा में चलि रे कामऽ
जबने दिन सातइ घरियवा दिन रे चढ़िहंऽ
अब होइ जइहंय नाहनवा कइ रे जूनऽ
ओहि घरी कऽरब चऴ्हइया सगरे के
चलि केनि कऽरबि सांगरवा में असरे नानऽ (६००)
देख भाई कवन मारदवा रख रे वारऽ
आजु फेरि जातह झागड़वा फोर रे याई
बुढ़िया त तउं ना घरवा जे चलि रे जावे
दस बजे आइबि पोखरवा पर तई रे याग

लवटि ना सेल्हिया जे घरे रे अइनीं
अब फेरि अइनीय ना किलवा जे भंव रे नार
ओहि घड़ी ऊठल मारदवा जे बा बीर रे लोरिका
उहे भाई दीसा मयदनवा जे होइये गयनऽ
कुलवाह् कइलेह् मूखरियाह् लेल रे कार
ओहि घड़ी कसइ ना पनियाह् रे पीयउवा (६१०)
कंचित भयल ना सूबवा बा तइ रे याऽर
आजु कहँ टऽरइ ना बीरवाह् लेइये ओठियऽन
कूंचई लगनह् मगहिया जे ढोलि रे पान
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
अहिराह कूचत मागहिया बाइ रे पानऽ
एक ठेनि लेहलेसि कुरउवा हाथवां में
जाइकनि बइठि सागरवा केनि रे चऽढ़ी
भुक भुक भुक [illegible]उवा बाइ रे भरल
बंठवा के कानेह् सबदिया चलि रे गइनी
ओहि घरी कानेह सब्रदिया जे चलि रे गइनी
बंठवाह् देलाह् ना बतिया जे लल रे कार (६२०)
आज कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
के भाई अपनेह् ना जंघहिया वरि रे अइयां
के चढ़ि आयल सागरवाह् मेनि रे चाल
के फेरि केकरेह् ना मुखवा में दांत रे जमनऽ
तूंय भाई देलह सागरवाह् रे जुटाइ
ओहि घड़ी बोलत मारदवा बा बीर रे लोरिका
अउ दरकारत ना बेड़वांह् रे जावाब
आजु भाई अइसन सीयरवाह् भींटवा पर जयनऽ
सरवाह् हुवांह ना हुववां वा लोरि रे यात (६३०)
ओहि घरी बतियाइ ना बतियाइ जे होरे लाग सरबर
बतियांह् चालीय चलल बाय मय रे दान
दूनो भाई चलनह् पयंतरा जे ओही के भीटे
जइसेह् भादव भइंसवा रे मक रे नाय
आजु कहँ खींचि कह आवरइया जे मारऽ रे लोरिका
चमराह् नीकलि आकसवां में चलि रे जाइ
जवने घड़ी उहांह से अंदह मारि रे देला
आइकनि होइ जाई धारतियाह् मेंनि रे ठाढ़

चामराह् खींचि केय ना दउवा मारि देला
लोरिकाह नीकलि आकसवा में देख रे जाय (६४०)
उहे भाई ईठउ ना पीठवा जे मारि देहलेनि
पट सेनी भयलंह् धरतियाह् मेनि रे मार
ना त भाई ऊहई ना चितवा जे होत रे बानऽय
ना त उहो ओहइ ना होतइ देख देखाऽय
ओही घरी जीदल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह करइ ना बेड़वांह् रे जवाब
आजु कहैं सुनबेह् ना बांठवाह बीर रे भइया
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
तनी एक मारीय घंटवाह् केनि ये पाइ कऽ
भिंट भरि आड़े झगड़वा जे माफी रे देइ (६५०)
तनी एक मोहलति ना देइदे हमहूँ के
हमहूँ पानइ ना खाइलेल लेल कार
ओही घड़ी छुट्टीय लाड़इया क होइ रे गइली
अहीराह् रेंगल गाउरवा में चलि रे जाय
सोझइ गुरूवाह ना घरवा अब रेंगलवा जातय
अब फेर बानह् किरोधवा में भरि जाय
ओहो घरी निहुरल न रहनह् लेइये अजई
देखत बानह् लोरिकवा के रेंगल रे आई
आजु मोरे जीदल ना चेलवा जे आवइ लोरिकवा
उहे भाई पहिल आवरिया जे मारि रे देइ (६६०)
ओहि दिन कुठिल ना हलि गय गुरु अजइया
संचेह बइठल कूठिलियांह मनि रे बाय
ओहि घड़ी बिजवाह् ना ढुरि ढुरि अंग बटोरऽय
दुअरा पर लोरिक दुलेरुवा जे भयन रे ठाढ़
ओही घरी लोरिक दुलेरुवाह् बाइ रे ठाढ़ऽय
अब फेर मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब फेर कालोय कुरुसियाह् बीच नीकललेंन
अब बइठ बइठह् देवबाह् रे हमारऽय
आज तोहार गुरुह ना घरवा जे नाही रे बानऽय
ऊ हलि गयल जाजमनिया ? मे गुरु तोहारऽय (६७०)
कवन बाड़इ ना कामवा जे गुरुवा से
हमकेनि तू देवह् डऽहरियाह् रे बताई
आजु कहैं सूनबेह् ना बिजवा रे धोबिना

कहनांह् मनबेह् ना बिजवा रे हमाऽरऽय
तब कहा हमरेह ना धवरीय रे कलानी
तब तोहार भरल लेंहड़वा देख रे बाड़ऽय
तब कहँ लोरिक के जंघिया के बरि रे अइंया
गुरुवाह् चऽरत गऽद्हवा जे बानऽ अनेक
आजु कहँ सुनबेह् ना गुरुवा जयं गुरुआइनी
एठियन ते मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर (६८०)
आजु कहँ जउनेह् ना दउवा जे हमरे देला
उहे दाव देलह् ना ओहूय के देख बेतार
आजु कहँ दून्नोह का एकइ दाउ रे देहलऽ
लड़त लड़ि गयल झगड़वा जे दिन भऽर
न त हई उहई न चितवा जे नातऽ हमही
गुरु अइसन काहें झऽगड़वा जे देइ रे देह
आजु हम रिसिन आजइया के जउन रे पाई
अब दुइ भागेह देइति नाह् ढोलि रे आइ
ओहि घड़ी हांकलि ना बिजवाह् बाइ धोबिनिया (६९०)
देवर मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
आइ केनि बइठि कुरूसिया पर देवर हो जइबऽ
आज तूंह देखह् ना हलियाह् रे हमारऽ
आज कहँ सगरउ ना गुनवा जे गुरु के सिखलऽ
एक गुन सिखलिह् ना एठियन रे हमारऽय
लोरिकाह् बइठि मचियवाह् केनि रे गइनऽ
अब हलि गऽइलि कोठरियाह् मेंनि बाड़ऽ
आजु भाई दुइ बीरा ना पनवाह् बा लगउले
एक बीरा अपनेह् ना मुखवां में लेइ दबाई
एक बीरा दे लेसि लोरिकवाह् केनि रे हाथऽय (७००)
उहे भाई ले लेह् ना बीरवाह् मुखवा में
देखि लह् दाबइ ना पेंचवाह् केनि रे मरले
अहीराह् धोबिय का बीरवा जे बाम चबात
ओही घड़ी खइले ना बीरवाह् लेइये लोरिका
अब दूनो चढ़नह ना पयंतरा जे ओही दऽम
आजु भाई बिजवाह् ना लोरिका जे चले पयंतरा
अउ फेरि अयनह् आवरिया पर नगि रे चाय
अब बिजा फिचकइ पीचुकवा जे मारि रे देहलेन
लोरिके के बहल ना जंघवा बरि रे याइ

ओहि दिन बोललि ना बिजवाह् बा धोबिनिया (७१०)
काहनाह् मनबाह् देवरवाह् रे हमाऽर
देख भाई हम तुअ झागड़वा जे कटि पयंतरा
कइसन तोहार बहति रूधिरवा जे देख रे बाय
आजु कहँ ताकइ ना ओठियन लेइये वंठवा ?
.........ताकइ ना ओठिन लेइये लोरिका
अब फेरि मारत आवरियाह् लेइये बाय
आजु भाई गीरलि आवरियाह् देहियां पर
छन मेंनि जइहंइ झागड़वा जे फरि रे याइ
ओहि घड़ी दस पाँच बाढनिया जे ऊपर लगवलें
बिजवाह् कऽहति बा बतिया रे समुझाइ (७२०)
आजु कहै देवर ना लंवडूय सुनि रे लेवऽ
जाइकनि देबह् झागड़वाह् एहि लगाय
अइसेंहि धोखवाह् के हथवा जे मारि रे देहऽ
ऊपरा जे गिरि जाइ विजुलिया जे तर रे वार
छन में न जइहंइ झागड़वा रे फरि रे याई
अव टूटि जइहंइ झागड़वा के देख रे ओर
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
लोरिकाह् दुइअइना बिरवा जे बीर रे पानऽय
अव फेरि ले लऽह ना छोटवा जे गठि रे याई
ओही घरी देलह सागरवा पर जोर से खंखारी (७३०)
जोड़ियाह् आइ आवरिया पर भइलि रे ठाढ़ऽय
आजु कहँ मुनबेह ना भइयाह् गुर रे भाई
अउ तोर हमार झगड़वा जे फरि रे याय
ओही घरी चलनह पयंतरा जे ओही रे दम्मऽ
अवर भाई ओहीय सागरवाह् केनि रे भींट
आजु कहँ दुन्नोह आवरिया जे चलइ रे लगनी
आ फेरि आयल अवरिया में नगि रे चाइ
लोरिकाह् घींचि कइ पिचुकवा जे मरि रे देहलेन
बंठवा के बहल ना थूकवाह् चलि रे जाय
ओहि घरी बालल ना मलवा बीर रे लोरिक (७४०)
बांठ भाई मनबेह् काहनवांह् रे हमार
देखु भाई हम तइ ना चऽलत बाड़ी पयंतरा
कइसन तोरे जांघिय ना फोरि के खुन रे जाइ
ओहि घरी ऊलटि ना जंघिया जे लगल रे ताकय

बीच खींचि देहलेसि विजुलिया वा तर रे वारी
जउने घरी गिरि गइल ना खंड़िया जे अहीरे कऽय
अइसइ खल नहि डइनवा जे कटले वाय
ओहि घरी कटि गयल ना हथवाह् चमरा कऽय
चमराह् गीरल धरतियांह् भह रे राई
तब भाई गीरलि ना लसियाह् ओहि रे बोललि (७५०)
आज कहैं भइयाह् ना मुनिलह् गुरु रे भइया
लोरिक मनवह् काहनवांह् रे हमारऽय
आखिर त मारीय सागरवा पर हम रे देहलऽ
बुंद एक देतह् ना पनियाह् रे वइआई
आजु फेरि सीधह् आदिमिया वीर रे लोरिका
अब हलि गयल सागरवा मेंनि रे वानऽय
आजु भाई अंजुरी ना पनिया वइ उठावत
तब तक मु॰ ॰ चामरवा कइ रे हालऽय
चमराह् बायेंह् न हंथवा रे पसारि कऽय
हड़वाह् खींचत ना हथवा मेंनि रे वानऽय (७६०)
लेइ काह् ले लेह् ना पनिया चढ़ले आवा
जवने घरी खीचिय ना पेंगियाह् मरि रे दे ले
अहीरे के टूटल दाहीनवा जे वाइ रे गोड़
ओही घरी उठि गयल चामरवा जे ओठियन से
अब फेरि काटऽ के अहीरा के देख रे मूंड़
ओही घरी फरकेह् वा मइयाह् रे दुरुगवा
दुरुगाह् झुकलि ओठिनियाह् सेनि रे बाय
लेइ कनि उड़ि गई अहीरवाह् लोरिक कऽय
एकदम बाहर सीवनवा मे लेइ रे जाय
अंगुरी में अमरित दुरुगवाह् माई के हउवां (७७०)
ओनकर समलत सरीरवा जे कइ रे दे
मुनह् ना दिनवांह् राम समइयां
लोरिकाह् अपनेह ना गयनह् लेइयें ऊड़ी
चनवाह् देखति चाननियाह् पर से बाड़य
जवने घड़ी गीरल ना बांठवाह् रे चामारय
चनवाह् उतरलि ना आवत बा चाननिया
ओहि घड़ी आइलि ना हंथवा जे चमरा कऽय
पखुरा पर देलेसि ना चनवाह् रे जुटाई
आजु कहें बंठवा के पजरियाह् ले उतरि कऽ

बेसवाह् बान्हति पाखुरंवा बा टिटि रे काइय (७८०)
बंठवा के घूमल ना हथवा बा लेइये ओठियन
चनवा के अस्तन ना परवां जे घूमि रे जाई
ओही घड़ी पड़ि गयल ना नऽजरिया जे लोरिके कऽय
लोरिकाह् डांटत मारदवा जे पुनि रे बाय
आजु कहँ बेसह् ना जतिया जे तोर चनइनी
बेसह् तोर साखरवा जे पलि रे वार
जब तोर चनवइ जांऽवइया जे हित रे रहनऽ
काहें हमसे दे लेह झागड़वा जे मच रे वाय
आजु काटि देहल ना भइया जे लेइ रे हमहूं
अउ फेरि जूझि गयल ना भइयाह् देखु हमार (७९०)
ओही घरी उहवांह् सेनिय ना बाइ रे रेंगल
अब चलि आयल दुअरवाह् अपने घऽर

चनवा के अपराध के लिए उसके पिता सहदेव को बिरादरी के चौधरी द्वारा दंडित किया जाना—सहदेव द्वारा भोज का आयोजन

अइसेंह ना दिनवा जे बीत ही लगनऽ
एहि जा नऽगर गऽउरवाह मेंनि रे बानऽय
आजु भाई भरीय ना कामवा रे मोकाम्मऽय
एक ठेनि फरल चउधरी केनि रे बानऽ
जउने घरी घूमरत नेवतवा गाउरा में
कसमसि बसलि बाड़इ ना अहीरे रानऽय
आजु घूमि जालह नेवतवा अहीरेनि के
अब फेरि जुटइं आहीरवा पलि रे वारऽय (८००)
आजु घिरि गयल जाजिमवा चउधुरी का
महफिल बइठइ मेंड़रिया लेइ रे मारी
जवने घरी जूटनह् ना रजवाजे देव रे सहादेउ
महदेव जूटल ना टाटवा पर दुनो रे बाय
ओहि घरी बोलनह ना मुखियाह् रे चऽउधरी
अब फेरि बोलनह् ना बीयदरह् रख रे वार
आजु कहँ सुनबह आहीरवाह् रे सुनबऽ एठियन
तूत भाई मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु तूंय बइठि ना रहबऽ जे एहि रे हाते
अब फेरि जइहंइ सावलवा जे फरि रे याइ (८१०)
जवनेह् ना दिनवांह् राम समइयाँ

अहीरिन के गऽयल ना नेवताह् मुख रे चऽली
ओहि दिन जूटल जाजिमवाह् लेइ रे जाई
अब गिरि गयल जाजिमवा अऽहीरे कऽय
ओहि नागर गऽउरवा देख रे गाँवऽय
ओही घड़ी बोलइं ना जतिया रे चउधुरी
बोलत बानह् ना सहदेउ सेनि रे बातऽय
आजु कहें देखिलह् ना रजवा तूंय रे सहदेव
एठियन मनबह् काहनवा तूं हमारऽय
देख भइया राजीय करजवा तूय रे हवय (८२०)
जतियाह् के राजाह् चउधरी हमरे हई
आजु तोहार बिटियाह् चामरवाह् जे सघे रे अइनी
उनकेह् लागत मांसवा के बाइ रे पाप
अब तूं गंगाह् गोरइया जे रज रे करवय
अब गुनि लेबह् ना कथवाह् रे पुरान
आजु कहें करधन ना बलवा जे तू नेवतबऽ
कच्चीय पक्कीय ना देबह् रे खियाइ
तब भाई तानिह् ना अंदर रहय देबऽ
नाही कत जाई नेवतवा जे सूबा तोहार
एतनाह् ना बतियाह् बोलें चउधुरी (८३०)
राजाह् डांड़इ ना लेहलेनि मन रे जूरऽय
ओहि दम गइनय मोकमवाह् धइ रे दीहलेन
अब दिन परिय गयल ना मुक रे वारऽय
आजु भाई गंगाह् गोरइयाह् कइये लिहलेन
अब राजा सूनइ ना कथवाह् रे पुरानऽय
आजु भाई नेवताह् ना सगरउ बंट रे वाय
जाजिम देहलेसि दुअरवांह् बिछ रे वाई
जेतनांह् जुटनंह ना गोपिया रे गुवालऽय
आजु भाई चारउ चउरवा भीतरी कऽय
मडवाह् बहल ना नदिया बाइ रे जातऽय (८४०)
चउर के पसावन न बहलइ बाइ रे जातऽय
जेतनाह् आवइं ना गोपिया रे गुवालय
संवनत जानह ना माड़वा रे गोंयाई
जबने घरी चलनह् आहीरवा बीर रे लोरीक
आगे आगे रेंगल ना ककवा बा कठइता
अब बूढ़ मारत हूमनियां बाइ रे जातऽय

तेकरेहू पीछेह् ना मलवा बाय संवरूआ
तेकरे पीछे लोरिकवा सर रे दारय
जेवने दिन देखइं अहीरवन कइ रे हालय
जूठे में जानह ना मड़वा में सनातऽय (८५०)
धरमीय देखतइ आतनवा डोलि रे गयनऽ
आजु बाबू चारीय न खनवा केनि रे कवरी
के एन्हें देईय धरमवा रे गंवाई
बलुकन ना खाबऽ ना भतवा सहदेउ कऽ
नात हम डालबि ना मंडवा मेनि रे गोड़ऽ
एतना जब सूनत अऽहीरवा बीर रे लोरिका
बायेंह् कांखह् ना ककवा के दाबि रे लहलेन
दहीने दाबत सांवरूवा अपने भाई
अहिराह् लेइ कह् चम्कवा डांकि रे गयनंऽ
डाकि केनि भयनऽ काररवां ओहि रे ठाढ़ऽ (८६०)
चननी से देखति ना बेसवा बाइ चनइनी
ऊ भाई दांतन आंगुरिया बा चबातऽय
आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
लोरिकाह् भयल गाउरवा में कड़ रे हार
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अहीराह् बइठंइ मेड़रियाह् लेइ रे मारी
आजु भाई बीड़ीय तामुखवाह् रखि रे गयनऽ
फरसीय रखलि जाजिमिया पर रे बानऽ
आजु भाई खींचइ गड़गड़वांह् बेड़ि रे अहीरा
धूमत बौनह लपेटवाह् चारू रे ओरऽ (८७०)
कुरवल बानह् ना गांजवाह् बुटऊल कऽ
धरमीय मारत चीलमीय पर बान रे दम्म
जलसाह् होनइ दुअरवाह् पर ना बानऽ
जवने घड़ी राम रसोइयांह् तपी रे गइनीं
भीतरी से आइलि खबरियाह् ओहि रे दम्मऽ
पंचह् बीजह भइल बा तइ रे यारऽ
कइकेनि लेबह् ठहरिया पर जेव रे नारऽ
अहीराह् हांथइ ना गोड़वा जे धोइ रे लगनऽ
कुल्ला के लालीय आंगनवा में चलल रे जानऽ
आजु भाई बइठंइ मेड़रियाह् लेइ रे मारी (८८०)
आजु भाई अइसइ देवलवा बा चननीय कऽय

आदमी ओरेह् काठइताह् बूढ़ रे बइठल
एहि बेर बइठल धारमियाह् क्षर रे दारऽय
बीचवा में बइठल अहीरवा बा बीर रे लोरीक
सोझइ झकनह् ना बाड़इ झरना कऽय
झंकियाह् झांकति ना चनवाह् देख रे ब ड़ऽ
जउने घरी सोरहऽउ परकारवा जे गिरि रे गयनऽ
पतले पर गयल घियनवाह् लइ रे गिरी
आहनि देलेनि अगिनियाह् पर चुवाई
पंचह् बोलह् ना सीतवाह् दइउ रे रामऽ (८९०)
अहीरन के ऊठल कवरवा बा अंगने में
अहीराह् देलेसि कावरवा जे अपने टाली
आजु भाई सानत लोरिकवा जे देख रे बानऽ
झरोखवा से चनवाह् आंकरियाह् बाइ रे फेंकत
अहीरा के गोरति पतरिवाह् पर रे वानी
जउने घरी लोटाह ना लेइकह् बीर रे लोरिका
सोझइ पीयत चाननियाह् रे निरिखि
चनवाह् खोलि कइ अंचरवाह् बाइ देखावत
अहीरे के चऽढल ना चितवाह् बाइ र जातऽय
उहे भाई कम्मइ रसोइयाह् बाइ रे खातऽ (९००)
ढेर भाई पीयई ना पनियाह् रे उठाई
ओहि घरी देखइ ना ओठिन रे चऽउधुरी
बालत बानह् आंगनवा मेनि रे बोलऽय
कइसन लोरिक ना कम्म जेठान कोदई
ढेर पीयत बानह् ना लोटवाह् मेनि रे पानी
ओहि दिन बोलल ना बुढ़वाह् बा कठइता
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जवाब
हमरेह् कुलह् का बनियाचह् ऊ कूबानी
थोर खाइं कोदईय वहुत नह पियें रे पानि

सेलिहुया का संखिया विष भर कर पान बनाना और लोरिक को देना चनवा का लोरिक से पान छीन लेना

सूनह ना हलिया ओठियन कऽय (९१०)
आजु भाई खइलेनि ना गोपिया रे गुवालऽय
देखिलऽ जे कुल्लाह् जाबनिया कइये लीहलेनि
हाथ मुंह धोइ कह् भयन ना तइ रे यारऽय

ओहो घरी बऽइठि ना गयनऽ जाजिमें पऽर
बीरवांह् बाँटति ना रनिया अपने हांथे
आजु कहै बांटत ना बीरवा बीरवान के
लेइ लेइ कूंचइ मऽगहिया देख रे पानऽ
आजु कहैं लोरिक दुलेरवाह् केनि ऊपरा
सेल्हियाह् जोरति ना बीरवा जे दुसर रे बाय
आजु भाई माहूर ना सिंघिया जे कटि रे काने (८२०)
उहे भाई देलइ ना बीरवाह् रे बियाई
ओहि दिन कइसेह् मूदइयां के मारि रे घालीं
आजु भाई बाड़ह् ना नइया तरि रे जाइ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
अब सेल्हिय लगावति ना बीरवा जे देख रे बाय
उहे भाई सिंघियाह् माहूरवा जे पतवा पर काटि के
मोरति बानीय ना बीरवाह् रे लगाय
ओहि घरी देखति ना बेसवा जे बा चानइनी
उहे भाई निकललि ना डंड़वाह् देख रे जाय (८३०)
जवने घरी देलइ ना बीरवा जे लोरिके के
चनवाह् ढूकलि अऽहीरवा जे आगे रे जाई
जाइकनि खीचि कह् ना बीरवा जे छोड़ि रे लिहलेनि
खंसियाह् बान्हलि ना रजवा के देख रे बाय
आजु कहैं फेंकत ना बीरवा जे धऽरतीय में
खसियाह् ले लेसि ना ओहउँह् रे चबाइ
जेहि फेरि घंटउ पऽहरवा जे नाहि रे बीतल
खसियाह् गीरल धऽरतिया में मरि रे जाय

चनवा का लोरिक से पूर्व दिशा में चलने का प्रस्ताव चनवा का उढ़ार प्रारंभ

घड़ी बोलल ना बेसवा जे बाइ चनइनी
सइयां तूं मानह् कऽहलियाह् जे अई हमाऽर (८४०)
देख भाई कऽरह् ना बीरवाह् रे क लाजय
अब फेरि रक्खह् ईजतियाह् रे हमार
आजु कहैं कऽरह् ना बीरवाह् कइयें लजिया
अब चल चलब पूरबवा के बलु रे देस
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
भात खाई के उठनह् बीहनवा जे अहीर गुवालऽ

अपनेह् अपनेह् ना घरवा जे बान हो जातऽ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
चनवाह् बोलति लारमवा के बाड़े रे बोलऽय
अहीरू तूं करह् ना बीरवा के देख रे लाजऽय (८५०)
बलुकन चलि चलबइ पूरबवा केइ बलु रे देसऽ
एतना जब कहृति ना बेसवा जे बा चऽनइनी
लोरिकाह् हंसत ना मनवा में मुमु रे काय
ओहि धड़ी घरवांह से रेंगियांह् ओठि रे देहलेन
अपनेह् बांसह् गिरिहिया में चलि रे जांय
आपन आपन कामइ नां धंघवा जे देख रे लगनऽ
तव फेरि सूनह् ना लोरिकवा न कइ रे हाल
आजु भाई जानह् ना दूध के कूटववले
अब लेइ गयल ना भुजवा के भर रे सांय
जाके भाई उहगेय ना देले बा भुज रे वाई (८६०)
अब चली गयल बनियवन केनि रे पास
छोटे छोटे वनिय ना गुड़वा जे लेइये लिहलेन
धइकह् जोड़ाह् ना भारलवा जे दुनो रे बाय
ओहि घड़ी बाड़ेह् सऽबेरवाह् केनि रे जूनिया
बोलत बानह् लरिकवन सेनि रे बोल
आजु कहैं सोरह् ना सइयाह् तूं लड़िकवा
दइवा के मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु चलि जालह् ना बनवाइ छिउलीय के
जहवां पर उपजल कासंउजाह् लेइये बाय
आजु भाई जाईय ना मूठवा जे हमके देबेय (८७०)
तई मूठा ढूरइ बहुरिया जे हमरे देय
अइसे अइसे सगरउ लड़िकवा जे चीरइ लगनऽ
अहीरांह् बइठल पाऽरसवा के जाइ रे पेड़
आजु कहैं लेइकह् रासरवा जे वरइ रे लगनऽ
छाहेंह बइठल छिउलिया के बान रे डार
ओहि घरी लरिकाह् चामरवा के देख रे रहनऽ
उहे भाई गयल गदेलवाह् रे कोचाइ
ओहि दिन रोवत लड़िकवा जे जुटि रे गयनऽ
लोरिके से कऽहत ना बतिया जे अर रे थाइ
आजु कहैं सुनबह् लोरिकवाह् मोर रे गउंहां (८८०)
मालिक मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर

देख भाई हमसेंह कासउंजा ना चीरइहंऽय
बलुकन चामेह् बा देबइ तोर बोखार
आज तूंय बरिदह रासरवा जे लेइये लोरिका
चामवा में देबइ बारहवा जे गोद रे बाई
ओहि घरी एतनाह् जब बतिया जे कहिये देहलेन
लोरिकाह् छुट्टीय ना चमरा के देइ रे देइ
ओहि घरी लइकाह् ना बरहा जे तईयरिया
लेई गयल बांठबाह् चामरवाह के देख रे घऽर
ओकर भाई रहनह् पलिवरवा देख रे गोटिया (९९०)
जल्दी से देलेनि बारहवाह् रे बोखार
उहे भाई ले लेह बारहवा चलि रे गयऽल
अपनेह् टांगत दुअरवाह् मेंनि रे बाय
.......तानीय बारहवाह् बीर रे दिहलेन
अब फेरि देलेनि बारहवाह् लट रे काई
ओही घरी देखइ ना घनवाह् रे मंजरिया
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जबाबऽ
सइयांह् छरकिय पेवनवाह् काये होइहंऽ
कवन वाड़इ रऽसरवाह् कइ रे कामऽ
तब फेरि बोललि मारदवाह् बीर रे लोरिका (१०००)
बियहिय ते मनबेह् काहनवाह् रे हमारऽ
सांवर भइयाह् ना हुकुमि रे पठउलें
मगलेन्हि रसराह् ना अहउं बरिये यारऽ
लेहलेनि बहुत बाछउवाह् रे पजयना
धइ धइ देइय बछउवन कूट रे वाइ
आजु मोरे अकड़ाह् कऽलोरिया देख रे गइया
नवकेनि करई ना गइयनि रे खराबय
एतना जब कहत ना बतिया बा नऽरमें से
के भाई ओहूय समइया के मुररे हाल
थोड़ेह् ना दिनवाह् रहि रे गयनऽ (१०१०)
अहीराह् बेरियाह् ना ले लेह् बा बिसरे वाई
बरहाह् ले लेहना हथवा में लेइये रेंगनऽ
अब चलि गयनह् महीचनाह् तिनके घऽरय
आजु भाई ठहरेंह् पर बइठें बाल रे बच्चा
तेलियाह् करत बाड़इनाह् जेव रे नाऽर
तब तक बोलल आहीरवा बा बीर रे लोरिका

आजु भाई सुनबेह् माहीचनाह् मोरि रे एठियऽन
देख भाई बरहाह् ना तेलवा में डालि रे देबे
राति भरि तेलइ ना खइहंइ बरहा हमारऽ
ओहि दिन मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ (१०२०)
महीचन बोलल लारमवाह् कइ रे बोलऽ
मालिक बालेह् ना बचवा जे ठहरे पर खातऽ
अंगने में घइ दऽ बारहवा तूंह ये आजऽ
जब हम खाइ पीयना होवइ तइरे यारऽ
लोहवा के कुठजी में तेलवा जे भरले बानऽ
बरहा तोहार देवइ ना तेलवाह् में गिराई
अंगने में धइकह् आहीरवा जे बीर रे लोरिका
अपनेह् रेंगल गीरिहिया में जाइ रे जाइ
जवने घरी पूरुब ना मरले बा लवर कनिया
पछुवां से देलेम्हि ना बउवाह् रे झिकोरि (१०३०)
आजु कहै छूटि गयल ना बुनवा जे आदरे कऽय
तेलियाह् बानह् ना धोवत हाथ रे मुंह
आजु भाई बालेह् ना बचवा जे कुनि लपटनऽ
बरहाह् तनिकउ जुमुसवा जे नाहिं खाइ
तब तक कसलेह ना बुनिया जे बाहर कऽय
अउ फेरि रोवत ना तेलिया जे बाड़इ बेजार
आजु भाई बिहानह् ना होइहंउ रे भुरूहुरऽय
पुरबह् देइहांऽ काउअवा जे देख रे रोर
जउने घरी अउहइ आहीरवा जे बीर रे लोरिका
आजु भाई बरहाह् ना डंड़वा मे देखि रे लेइ (१०४०)
उहे भाई ठाढ़इ कोल्हुइया में पेर रे वइहंऽय
आलर जइहंइ पारनवा जे एहि रे दामऽ
... ओहि घड़ी बोलल ना बतियाह् लऽरमें से
ओही घड़ी लरमीय ना बतियाह् रे जबावऽ
आजु कहैं धनह् ना सुनिलह् रे हमारऽ
आजु नाहि जीमुस बारहवाह् देख रे खइहंऽ
जवने घरी भीजि जाईअ बारहाह् अंगने में
बिहनाह् बाहूत जाचनवा जे अहीर रे कऽरी
दिनवाह् दिनकइ ना टूटि जाई कल रे कानऽ
आही घरी रोवइं निवइयांह् दइव रे राति (१०५०)
देखिलह् कइकह भोजनवा जे अहीरा सूतऽल

मंजरी से सूनत रऽहतवा बा नाहिं रे जात
आजु भाई आधीय ना रतियाह् निचरे लइयाँ
कत मोर तेलियाह् पारजवाह् बाइ रे रोवऽत
ओकरेह् घरेह् मोसीबति काई भइलीं
मंजरीय रेंगलि बाड़इ नाह् ओही रे दम्मऽ
रेंगलि तेलीय माहीचनाह् घर रे गइलीं
जाइकनि पूछति बानीय नह रे जबाबऽय
तेलियाह् कवनेह ना गुनवाह् जेइं रे गुने
रोवत बाड़ह् नीयइयांह् लेइये रातिऽ (१०६०)
केकर खइलइ तेलहनवा तूंइये अगवाऽ
कवन मारत कीसनवाह् तोहयं बानऽ
रोवत बाड़ऽ निसाह् निवइंयाह् कइये रातऽ
ओहि घरी बोलल ना तेलिया ओहि रे दम्मऽ
बहिन मनबह् मजरिया रे हमार
इ बरहा लोरिक दुलेरवा कइ रे हंवऽ
हां मनं खातइ ठहरिया देख रे रहली
कहलीं जे धइदह् आंगनवा मोर मलिकऽ
खाइकेनि ऊठति तेलवा में बोरि रे देबऽ
आपन बालउ ना बचवा जे कुल लऽपटले (१०७०)
बरहाह् तनिको जुमुसवा जे नाहिं रे खाय
ओहि घड़ी ऊठलि ना धीयवाह् बाइ मंजरिया
अब फेरि रेंगल बारहवाह् किहां रे जाइ
आजु कहैं लेइकह् बारहवा जे दहीने हांथवा
लेइ लेइ पेललेह् काठिलवाह् मेंनि रे ब्राइ
तब फेरि बोर्लाल ना धनवाह् रे मंजरिया
चेलवा ते मनबेह् काहनवाह् रे हमार
देख भाई हमरइ ना नउवां जे जिनि बतायऽ
कहि देह् हमनेह ना धड लिय रे उठाय
कहि देह झुरई बरहवा जे तोहार रहना (१०८०)
बाल बच्चा देहलीय कोठिलवा में हम गिराय
राति भरि खइलेसि ना तेलवा जे तोहाऽर बरहवा
अब गह तनिकउ जुमुसवा जे नाहिं रे खाय
जाइकेनि तूं आपन बारहवा जे तू नीकालि लऽ
अब हम सेनिय बरहवा जे नाहिं निकालि
...... अब ना भयनहं रे भुरुहुरऽय

पूरुबइ देह लेह् बान कउवाह् बान रे रोरऽ
ओहि घड़ी उठल मारदाह् बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल तेलियवहा घर रे गयनऽ
पूछत बाड़इ बारहवाह् कइ रे हालऽ (१०९०)
तब फेरि बोलिलि ना धनवाह् लेइये ओठियन
अब नाहि मानह् काहनवा रे मालिक हमरऽ
तोहार जवन झूरइ बारहवाह् जव ले रहनऽ
बनरस पेललीय कूठलवा रे उठाई
रात भर खइलसि ना तेलवाह् तोहरे ओठियन
अब भाई बारहाह् ना तनिकउ ज्रुमुस ना खइंहऽय
आपन लेइ अब बारहवा जे तूंय निकालऽ
उहे घड़ी रेंगल ना धनवा जे बानी रे मांजरि
अब चलि गइनीय तेलियवा जे घर रे ठाढ़ऽय
तेलियाह् काहे् रूदनवा जे तोंह रे कइलऽ (११००)
कवन तोहार देलेह् जाबरवा जे बान रे चांपी
ओहि दिन बोलल ना तेलिया जे बाड़इ महीचन
गवही तूं मनबह् काहनवा जे देखऽ हमारऽ
एक ठे राजा सहदेउ जाबरवा जे बान रे गउरा
एहर तोहार लोरिक जाबरवा जे हवंय रे आज
आजु भाई ओनकेह् सावनवाह् ले ले रे हउंहु
तेलवाह् बारहाह् ज्रुमुसवा जे नाही रे खइले
अब धन देबेह् ना तेलवा में तुंह ऊठाई
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
चेलवाह् तू मानह् काहनवाह् रे हमाऽर (१११०)
बाकी भाई ताहारइ बारहवा जे धइये देबऽय
बाकी देख नउवाह् ना सुने कोई हमाऽर
जउं भाई नउवाह् ना सुनिहइं सुख नन्नन
आलर लेइहंइ जिनिगियाह् रे हमाऽर
ओहि दिन बोलल ना तेलियाह् बाइ रे सहुवा
मलिकिन मनबह् काहनवाह् रे हम्मार
आजु भाई अपनेह् ना कामवा से बाइ रे कामवा
कवन कहइ से मतलब लेइ रे बाय
ओहि घरी ऊठलि ना धियवा वा महरे कऽय
पेलति बाड़ए कनगुरिया जे ओहि रे दम्म (११२०)

उहे कनगुरिया में रसरवा जेधन उठउले
लोहवाह् के कुठिलह् ना देहले जे बाड़े गिराइ
ओहि दिन बोलति ना धनवा जे बा मांजरिया
तेलिया के मनबेह काहनवांह् रे हमार
बिहनाह अइहंइ ना सइयां जे रे सुखनन्नन
तोहसेह् मंगिहई बारहवा जे लेल रे कार
कहि दह सुनवह् मालिकवा जे बीर रे लोरिका
एठियन मानह् काहनवांह् रे हमार
आजु कहंय झुरइ बारहवा जे मालिक रहनऽ
बाल बच्चा देहलींय ना तेलवा में हम गिराई (११३०)
राति भरि तेलइ बारहवा जे खाइ रे बइठल
अब हमसे तन्नीय जुमुसवा जे नाहि रे खाय
मालिक आपन बारहवाह् तू ये लोरिक
अपनेह् हाथेह् बारहवा जे खींचि रे लय
ओहि दिन रेंगल बारहवाह् किहां रे लोरिका
हथवाह् डालत कुठिलवाह् मेंनि रे बाय
तेलवा में बूड़ल ना बारहाह् लोरिके कऽय
ऊ बरहा लेहलेह ना हथवा में लेइ रे बाय
बरहाह् ले लेइ गीरिहियां जे चलि रे गयनऽ
के भाई वड़ेह् सवेरवाह् कइ रे जून (११४०)
ओहि दिन देखइ ना धनवांह रे मंजरिया
जरि मरि भईलि ना धियवाह् रे खंगार
आजु कहैं सइयांह ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आज्र मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मलि रे कार
आजु इहइ छरकीय पेवनवा जे काये होइहंऽय
साचइ देवह् न बतिया जे हम बताय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा वीर रे लोरिका
बियही ते मनवेह् काहनवांह रे हम्मार
आजु भाई सांसड़ ना बोहवा से खबरिये अइलीं
तव फेरि देलेनि सांवरुआ जे मोर रे भाय (११५०)
आजु भाई लेंहड़ेह् वछरूवा जे उख मजनऽ
अव फेरि धांगत वछियवनि के वहि रे आय
आज्र भाई धइ धइ बंछयवन कुट रे वावऽ
वछवाह् वहुत ओहड़िया जे कइ रे देंय
तवने दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय

अहीरा के चितवंह् ना चऽढ़लि बाड़इ चऽनइनी
उहे चढ़ी बोहाह् रहऽइया ना चढ़ि रे जाई
ओही दिन बेरियाह् ना होत बा जे विस रे बानऽय
घंटाह् रातिय बीतलवा जे बाडइ रे जातऽय
ओहि दिन पूरब बऽहलिया बा पुर रे वइया (११६०)
पछुवांह् देलेह् ना बउवा जे बाड़े झिकोर
आजु भाई उतराह् ना मरले जे बा भवंकिया
दक्खिने से बरसत लोढ़नवा जे देख रे धार
आजु भाई पऽरत ना बुनवा बा आद रे कऽय
ओहि जउं नीसह् निवंइया जे देख रे रात
उहवां से लेइकह् बरहवा जे लोरिका रेंगल
एकदम हलल गाउरवा जे जाल रे गाँउ
अहीराह् एकदम ना रेंगलइ रे रेंगावल
अब चलि गयल चाननियाह् केनि ं हेतु
घरी घंटाह् किसोरवा रहि रे गयनऽ (११७०)
त फेरि देखह् ना ओठियन कइ रे हाले
एक खुट धइलेसि बारहवाह् गोड़वा तऽर
आधाह् लेहलेसि ना हथवांह् रे उठाई

बरहा की सहायता से लोरिक का चनवा की चांदनी पर चढ़ना

जवने घरी झटकि बारहवाह् धरती से दीहलेनि
चाननी पर गीरल बऽरहवाह् भह रे राई
ओही घड़ी देखह् ना हलिया जे चानवा कऽय
बेसवाह् उठलि खाटियवाह् सेनि रे बानी
आजु कहँ गीरल बारहवा बा चाननीय पऽर
बिनकनि देलेन धऽरतियांह रे पेबारी
उहे बारहा गीरल धारतियांह् भह रे राई (११८०)
लोरिकाह् सुमिरि बारहवा बाइ रे उठावत
अब फेरि लेलेसि ना हथवां रे उठाई
तउ भाई तड़पल पिछोरवां सेनि रे बानऽ
आजु कहँ बाउर ना बेसवा के बउ रे रइले
तोहरि गऽइलि ना मतियाह् रे गियान
बुजरो तू एइं दाइं बारहवा जे फेंकि रे देबय
अब तोहार बहुत ना निनवा जे होइ रे जाय

आजु कहें गाड़ि देबि ना कंटा जे पिछोरवां
ओहि मेंनि आधाह् बारहवा जे बान्हि रे देबऽय
आधाह् काटि केह् गिरिहिया जे लेइ रे जाब (११९०)
जवने घरी बिहनह् ना भइहंय रे भुरुहुरऽय
पूरबइ देहंइ काउववा जे देइ रे रोर
ओहि दिन देखिहंइ ना लोगवा जे गउरा कऽय
निम्नाह ऊठिय ना चनवाह् रे तोहार
आजु कहें कवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
तब फेरि फेंकत बारहवा बा दोह रे राई
ऊ बारहा गीरल चाननिया पर भहरे राई
चनवाह् लेइकह् बारहवाह् खांभिया में
अब ओढ़ बान्हति ना मंचवा के पेरुवा में
उहे भाई बान्हइ बारहववाह् रे गरेरी (१२००)
आजु झूलि गयल बारहवा बा अहीरे कय
लोरिकाह धऽरत बारहवाह् हथवां में
उहे भाई तीनिय झटकवा जे मारि रे दीहलेनि
तनिको जूमुस बारहवा बा नाहिं रे खातऽ
ओहि फेनि चऽढ़त बारहवा पर रे अहीरा
एकदम चढ़ल चाननिया बाइ रे जातऽय
जउने घरी आधिह सरगवा चढ़ि रे गयनऽ
निचवांह् ताकत जमीनिया देख रे बाड़ऽ
ओहि घरी हहरल मारदवा बीर रे लोरिका
उहे भाई दांतन आंगुरिया रे चबानऽ (१२१०)
आजु कहें धनि धनि ना मइया मोरि दुरूगा
जेन्हइ आदिय ना दिनवा पूज रे मानऽ
देविया जे आधेह पऽ बारहवा जे टूटि रे जइहऽय
अब हम गीरब चाननिया छिति रे राई
जेकरेह् गांड़ीय काऽउववां गुह ना खइहऽय
तेनहूँ मरिहइ मेहनवा बरि रे यारऽय
सरउय चढ़नह ना चननी रजवा के
हड्डीय गइलि छिछोरवां छिति रे राई
एतनाह् कऽहत लोरिकवाह् बाइ रे चऽढ़ल
एकदम चऽढ़ीय चाननिया पर भन रे ठाढ़ (१२२०)
ओहि दिन मूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
लोरिकाह् चढ़हीय चाढ़इ ना करत रे बानऽ

तब फेरि बोललि ना ओठियन रे जउं चन्ना
बेसवाह् करति जाबबिया बा ओहि रे दम्मऽय
आजु भाई सुनबह् ना एठियन तूं अहीरऽय
काहनाह् मनबह् लोरिकवाह् रे हमाऽर
देख भाइ गउवांह ना घरवाह् के नतइयां
भाई बहिन लगबइं ना नातवाह् में नि रे हम्मऽ
कइसन कऽरहऽल ना बोलियाह् रे कुबोली
अहीराह् इहउ पऽचवा जे छोड़ि रे देऽलऽ (१२३०)
एकदम चढ़हीय बदनियाह् निय रे रालऽय
ओहि दिन डांटति ना बेसवाह् बा चानइनी
ओहि घड़ी बोलत दो गाहवांह् बाइ रे बोलऽय
आजु कहीं सइयांह् ना अहीराह् सुनि रे लेबे
ऐ मह कवन झगडवा देख हो बानऽ
अब छोड़ि देबह् ना संगवाह् रे हमारऽ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
अहीराह् चढ़हीय चाढ़इ ना कइ रे देला
बेसवाह् डांटति चनइनी देख रे बानी
अहीरू तूं खावह् किरियवा रे अठान्नाऽ (१२४०)

लोरिक और चनवा का मिलन

तब हमरे चाढ़ह सेजरिया पर रे आ जाऽय
अब घरे बियहीय के संगवा छोड़ि रे देबऽ
तब तूंय धाऽरह पालकिया पर रे लातऽ
घरवांह् भइयाह् ना मइया के सुधि छोड़ऽ
तब तूंय धरह पालकिया पर रे लातऽ (पुन०)
घरवां छोड़ि दह् ना गुरुवा के मोहि रे तूंहऽ
तब धइ लेबह् पालंगिया पर मोर रे लात
आजु भाई पलंगेह् का रहनह् कवि रे लसवा
सोझइ भागीय पूरुबवा जे चलि रें देस
अहीराह् ऊहोउ किरियवा खाइये लीहलेन (१२५०)
अउ फेरि चाढ़इ चढ़इना कइये बेला
तब फेरि बोललि ना बेसवाह् रे चनइनी
अब सइंया मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
अब छोड़ि देबह् ना संघवा जे संवरुकऽ
तब हमरे धारेह् पलकिया पर रे लातय

लोरिकाह्‌ ऊहउ कीरियवा जे खाइय लेनऽ
अब धइ लेनह्‌ पलंगियाह्‌ पर रे गोड़ऽ
जवने घरी लेकह्‌ ना पहिले जोम रे बइठल
मचवाह्‌ गयल पेड़ुवा जे छिति रे राय
ऊहइ ना बेसवाह्‌ रे चनयनी (१२६०)
उहैं भाई पटकई चाननिया पर रे मांथऽ
इ हमरे भइयाह्‌ ना महदेउ के हउ रे माचा
आजु भइ गयल ना पेडुवाह रे चोथाई
आजु कहैं बीहनह्‌ ना भयनहं रे भूरुहूर
पूरबेइ देहलनि काउववाह्‌ देख रे रोरऽ
आजु लगि जइहंइ झगड़वाह्‌ लेइये आजऽ
झगड़ाह्‌ भारी मचीय ना अन रे रोधऽ
एतनाह्‌ इहउ कीरियवा जे कइये काने
लोरिकाह्‌ बोलल ना चनवाह्‌ से सुनि रे बाय
चन्नाह्‌ रुखनाह्‌ बासुलवा जे घर ना होतऽ (१२७०)
जल्दी से लइयाह्‌ ना तूहुँव रे उठाइ
आजु चूड़ा काढ़ि देइ ना हमहूं जे चूरवा कऽय
जइसेहि चलइं बाऽढ़इयऽन करम रे सालऽ
ऊहे भाई मुनई रुखनिया जे सुन रे बसूला
आन केनि देहलसि ना चनवा जे हथे उठाई
आजु लोरिका काटत खोदमवा जे पटिया कऽय
एकदम देलेह्‌ ना चूरवा बा बइरे ठाय
देखु भाई छालइं बऽढ़इया जे करम रे सालऽय
ओइसंइ बनि गयल ना मचवा जे ओहि रे दाम
अहीराह्‌ डांकीय चाढ़नवा जे कइये देहलेनि (१२८०)
के फेरि बीचेह्‌ चाननियाह्‌ मय रे दान
ओहि घरी रोवई ना बेसवाह्‌ रे चानइनी
पटिकति बानीय धारतियाह्‌ रे नि ये माथ
आजु कहैं सइयांह्‌ ना सुनिलह्‌ सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलाह्‌ ना सीरवा के मउ रे आरंऽ
आजु तूय दांतन मासुइया जे काहे ये काटऽ
काहे मोरे लेतइ जीनिगिया जे ठाड़े रे ठाइ
आजु सइंया कइय ना दउवां जे तू ए कइलऽ
अबहींय कइय ना बतिया जे दइयें रे बांय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका (१२९०)

अब धन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई एकसइ ना सठिया जे दायं रे कइलीं
अबहींय एक सई ना सठिया जे बाकी रे बाय
आजु बियही ओहू लयने मनवा जे नाहि रे भरिहूंऽय
चलि जाब सांसड़ ना बोहवांह् रे मंझार
जउने घरी बाइठिऽ चिहुलियाह् तर रे जइबऽ
मूठ मारि देबइ ना पनिया में ले गिराय
आजु कहैं कऽरबि असननवा जे गांगिले में
जाइकनि मूतबि बीयहिया के धन रे गोड़
तब्बई सउतुक पारनवा जे मोर रे होइहंऽय (१३००)
बिहनाह् निरमल सरीरवा जे होइ रे जाय
ए घड़ी रोवइ ना बेसवाह् रे चनइनी
पटकति बानीय पेड़ुववाह् पर रे माथऽय
अहीरू देहियांह् ना केनिय सुघ रे रइयाँ
काहे मोर काटिय मामुइया बाड़े रे खातऽ
आजु तूंय दीनय मोकमवाह् रे बतावा
कहियाह् चलबह् पूरबवाह् केनि रे देसऽ
तब फेरि बोलल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
अब धन मनबेह् काहनवाह् रे हमारऽ
आजु भाई चढ़े जे गांहकिया जे पुरूबे कऽय (१३१०)
मेहरीय अइहंइ ना एठियन खरीदेवारऽय
दसबीस बेचब बाछउवा जे बोहवा कऽ
पल्ले में बान्हब रोकड़वाह् झोरि रे याई
तब फेरि छोड़बि ना गउवां जे ले गाउरवा
तब कहीं चलिकहं करबि नाह् कवि रे लास
ओही घड़ी सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे भाई आइल ना करत बा कल्लोलऽय
दुन्नो सुति कह ना चद्दर तनि रे ओठिन
अब फेरि तननह् चादरियाह् देख रे तानी
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् सेल्हिया कऽ (१३२०)
चनवाह् आधीय ना रतियाह् ले चलऽइयां
उठि उठि माहइ मंठवाह् देख रे रोजऽय
आजु कहैं काहे ना बिटियवाह् मोर रे उठऽय
होय जाला भांमर ना भोरवा रे बिहानऽ
लउड़िनि देखबह् ना मुंगियाह् रे हमाऽरऽ

लउड़िनि चढ़लि चाननियाह् पर रे जालऽ
जाइ केनि देखइ चाननियाह् कइ रे हालऽ
उहे पर भइंसाह् भइंसियाह् बायं रे तानऽ
अब बूड़ बानह् ना खूनवाह् रे आधारऽय
ओहि घरी तानीय चादरियाह् मुखवा कऽ (१३३०)
उहे भाई भागलि लेउंड़ियाह् भीतरी में
लोरिकाह् ऊठल चाननिया पर जक रे वारी
उहे भाई पहीरत पानहिया बा चानवा कऽ
चनवा के बान्हत पिछउरी बा लुड़ि याई
आजु झूलि गयल बरहवा पर ओहि रे दम्मऽ
अब चलि गयनह् धरतियांह् भन रे ठाढ़ऽ
चनवाह् छोड़ि देइ बारहवा जे चाननी पऽर
अहीरा लेइलेसि बारहवाह् सड़ि रे याई
अंगवाह रेंगल ना गउवां में चलि रे गयनऽ
परखल भयल बीहनवाह् बाइ रे जागत (१३४०)

रहनह ना आंगवा हर रे वाहऽ
उहे भाई पूछई ना डहरी लेइये बातऽ
मालिक कहवांह बीतल ना सारी रे राती
तब तक बोलल लोरिकवा लऽरमें से
भइयाह् देलेनि सांवरुवा हमरे हालऽ
रसवाह् तगड़ाह् लेहलबा हमरे गइलीं
बछवाह् वहुत रऽहई ना उखरे मांजल
धइ धइ देहल बाछउवा खूंट रे वाइ
आजु भाई लवटलि गिरिहिया बाइ रे जातय
तब तक बोलल ना भइया हर रे वहवा (१३५०)
हंसिकनि बोलल लोरिकवाह् सेनि रे बाई
आजु भइया जानत ना हलिया जे तोहरे बाड़े
चाननी पर जीदलि वछियवा जे देइ रे बाइ
आजु उखमजलि बछियवा जे चाननी परि
छरकीय लागलि पेवनवा जे रहलि तोहाऽर
रेंगल मारदवा जे वीर रे लोरिका
एकदम बखरियाह् मेनि रे जाय
जाके ले ले वइठल ना बानह् लेइ रे हंथवां
अहीराह बइठि कुरूसियाह् पर रे आई

मंजरीय ढुरि ढुरि आंगनवा जे बाइ बटोरऽतं (१३६०)
अब जुटि गइलि लोरिकवाह् केनि रे आरि
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मांजरिया
बेड़वाह् करइ ना देखियन रे जबाव
आजु कहँ सइंयाह् ना सुनिलऽ तूं सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मोअ रे यार
आजु कहाँ बीतलि ना रतिया जे सारी तोहके
साचइ देबह् ना हमहूँ के तूं बताय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
बियही ते मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
भइयाह् सांवर खबरिया जे हमरे भेजलेंन (१३७०)
बरहा बरिहइ ना भइया जे एक रे आज
बछवाह् बहुत लेंहड़वा में उखरे मजनऽ
बछियाह अंकरह् कलोरवा जे नांघि रे देय
आजु भाई धई धई बाछउवा के कुट रे ववले
तब आवत बाड़ीय ना घरवांह् रे दुवार
तब फेरि बोललि ना बाई धनवाह रे मांजरिया
सइयांह् तू मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
ई कहाँ पउलेह् पीछउरी जे चानवा कऽय
साचइ देबह् ना हलिया जे हम बताय
ओहि दिन बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका (१३८०)
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु भाई हमरउ पीछउरी जे चानवां कऽ
चलि गइनी गुरूय अजइयाह् केनि रे घर
आजु हम रतियइं ना ओहवा जे जात रे रहलीं
अब बिजा सेनीय ना मंगलीय हम बनाय
बिजवाह् देलेसि ना चनवाह् के हम चादरवा
उहे हम बन्हले पागरिया जे देख रे बाय
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाय मंजरिया
सइंयाह् तूं मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु कइसे टिकुलीय ना गलवा में बाइ रे चिटिकल (१३९०)
सांचइ देबह् ना हलियाह् रे बताय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
बियही ते मनबे कानवाह् रे हमाऽर
आजु भाई गुरूय आजइया जे घरे रे रहलीं

बिजवाह् भउजीय ना निकललि रे हमाऽर
हमऽइ सेनुर टिकुलिया जे कहां रे डलले
चिटकलि होइय चोदुकियाह् मोरे रे देह
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
दरियांह् तूं करह् ना बेड़वाह् रे जाबाब
तब सइयां एहर क बतिया जे जाय ओहर (१४००)
अब तोहेय कइसेह् रुधिरवा लगल रे बाय
तब फेरि बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
वियही तूं मनबेह् कहनवाह् रे हमाऽर
धइ धइ पटकल बाछउवा जे बोहवा में
अब फेरि अइसन ना घउवा जे अब रे हाथ
केनहूय के सींहिय टूटल ना केहु के बंसा
उहे रंगे लागल ना पाछवां जे मोरे रे बाय
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
सासुय बइठलि ना मचियाह् पर रे बाय
आजु कहैं अम्माह ना सुनिलह् मोरि रे सासू (१४१०)
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखऽ सासु खरहाह् ना लहटल बा रे गुंवा
घर मेंनि चऽरत हरियरीय देख रे दूब
इ दूनों करीहइं ऊढ़ारवा जे पूरूबे के
चलि जइहं नोनीय हारदिया जे पुर रे पार
हमरे पर परी बिपतिया जे गउरा में
कइ दिन भोगबि ना हमहूंय रे जंवऽड़ार
कइ दिन भोगबि रांड़ापवा जे गउरा में
आजु हम लीखत बिपतिया के बाइ रे ओर

झगड़् कोइरी के कोड़ार में धनवा और मंजरी का झगड़ा

जिन बिहनाह् ना भयनह् रे भुरूहुरा (१४२०)
पूरबइ देलेह् काउववाह् बायं रे रोरऽ
ओहि दिन ऊठलि ना बेसवाह् बा चनइनी
दस सेर लेहलेसि ना धनवाह् गंठि रे याई
उहवां से रेंगलि बीटियवा सहदेव कऽ
अब चलि गईलि कोइरिया के कोइ रे राड़ऽ
उहो धइ देलेसि ना धनवाह् ओकरे घरे
अपनेह् रेंगलि लोरिकवाह् घर रे आलय

मंजरीय बड़ेहू सबेरवाहू केनि रे जूनऽ
ढुरि ढुरि आंगन ना आपन बाइ बहारऽत
दुअरा पर ठाड़हू ना बेसवाहू बा चनइनी (१४३०)
ओहि दिन बोललि ना बेसवाहू बा चनइनी
दरियांहू कारइं ना बेड़वाँ हो जबाब
आजु मोरे भउजीय ना सुनि ले तोइ मजरिया
आजकलि लोरिक ना भइया नहि नऽ देखातय
ओहि दिस सूनति बिटियवा महरे कऽय
जरि मरि भईल मंजरिया रे खंगारय
आजु कहैं अगियाहू ना लागइ एही रे गउरा
चुइ चुइ होइ जाइ कोइलवाहू रे खंगार
आजु बाबू रतियांहू ना मेहरि उन मनुसवा
दिनवाहू बऽहिन ना भइया के पर रे नाम (१४४०)
एतनाहू कऽहति बिटियवा वा महरे कऽय
चनवाहू भागलि ना ओठियन सेनि रे बाय
ओहि दिन रेंगलि ना बेसवाहू बा चनइनी
चलि गइलि झगड़ूय कोइड़िया के कोइ रे राय
रेंगलि ना धनवांहू रे मंजरिया
चार पसेरी ऊहउ ना धनवा जे गठि रे याई
उहो भाई रेंगलि कोइरिया जे घरे रे गऽइनी
दुम्रोहू बइठंइ जाननिया जे मन रे मारि
ओहि दिन सूनहू ना हलियाहू ओठियन कऽय
अब फेरि बोलति ना चनवा जे देख रे बाय (१४५०)
आजु कहैं मुनबहू ना झगडूय मोर कोइरिया
एठियन मनबहू काहूनवाहू रे हमाऽर
आजु भाई जेकर बदनियां में जइसन होइहँय
तेके तेके तइसन भंटवा जे तूय रे दया
ओही घरी गोराहू बदनिया बा चनवा कऽय
संवराहू बदनि मंजरिया के देख रे बाय
ओहि दिन मांजरि ना सुनलेसि लेइये बतिया
लरमी से बोलति जबनिया जे फुनि रे बाय
आजु कहैं सुनबहू ना झगरूय मोर कोइरिया
कहना तूं मनबहू ना एठियन रे हमार (१४६०)
देख भाई जेकर ना सइयां जे होईहंइ सूघर
तेकर तूं सुघरहू भंटवा जे देइये दऽ

जेकर सइयांह् ना कनवा जे कोचर होइहंऽय
तेके भाई किरहा भंटवा जे देइ र द्या
ओहि घरी सुघरांह् मारववा बा बीर रे लोरिका
सूघर छांटत भंटवा जे देख रे बा
ओहीं घरी काना मलवा जे बाइ रे सिवहरि
उहे भाई देलेसि कोचरवा जे भंट बराइ
ओहि दिन बतिययंइ न बतियइ जे होइ गई सरबरि
बतियइ मचल झगड़वा जे बरि रे यार (१४७०)
ओहि दिन दुन्नोह जाननिया जे लड़ि रे गऽइनी
ओहि भई झगरुव कोइरिया के कोइरे राड़
अब टूटि गइल मुरइयाह् रे नेवारऽय
आज टूटि गयल नां पेड़वाह् पोहता कऽय
जेकर भाई रुपियाह् ना सेरवाह् बाइ बेचातऽय
ओहि दिन रोवइ कोइरियाह् लेइये ओठियन
पटकत बानह् कोड़रवाह् रे कपारऽय
आजु बाबू दुन्नोह् जाननिया जे लड़ि रे गइनी
कवने के का हम बचनियाह् बोलि रे देईं
कइसेह् देईं झगड़वाह् बड़ रे काई (१४८०)
एक ठेनि हवऽइ जबरवाह् कइ रे बिटिया
एक ठेनि हवऽइ जाबरवा के बहु रे यारऽ
आजु नहिं केहुय के बतिया जे बाइ रे बोलत
एकदम भागल आखड़वा में चलि रे जाय
जहवां पर बानह् मारदवा जे बीर रे लोरिका
अब फेरि गुरुव सहितवा जे मुंह रे वाई
ओहि दिन बोलल ना झगरुव रे कोइरिया
अब फेरि मनब्रह् लोरिकवा जे मोर रे बात
घरवांह् दू दू जाननिया जे लरि र गइनीं
अब फेरि लागल झागड़वा बा बरि रे याऽर (१४६०)
उहे भाई लड़ि गईं ना हमरे जे कोइड़रवां
अब फेरि देलेनि कोड़रवा जे मोर रे जात
आजु कइसे बालउ न बचवा जे आपन जियइबई
कइसेह् देवइ ना रोलियाह् रे चुकाई
एतनाह् कहऽत ना बतिया जे लेइये ओठियऽन
लोरिकाह् बोलल लारमवा के बाइ रे बोल
आजु कहैं सुनब्रह न गुरुवाह् मोर अजइया

एठियन मनबेह् काहनवा जे गुरु हमार
तनी जाइके देबेह् झागड़वा जे बर रे काई
काहनाह् मनबह् गुरुववाह् रे हमाऽर (१५००)
ओहि दिन बोलल ना गुरुवाह् बा अजइया
चेलवाह् मनबेह् काहनवाह् रे हमार
देख भाई दून्नोह जाननिया जे बाइ रे लऽड़लि
जाइकनि झगड़ूय कोइरिया के कोइ रे यार
उहवां दून्नोह जाननिया जे नंग उघारऽय
कइसे हम देइयं ना झगड़ा जे हम फरि रे याय
आजु भाई नांघट उघरवा जे दून्नो होइहंऽय
कुछु मोरे बूते काहलवा बा नाहि रे जाय
आजु जेके देखय के परछहियां जे हमरे नाहीं
कइसे चलि के देखब भयहुवा के हम लिलार (१५१०)
······मुनह् ना हलियाह् गुरुवा कऽ
अजईय बोलल लारमवाह् कइ रे बोलऽय
चेलवाह् मूनई झागड़वाह् न हम बिझांवऽय
जाइकेनि आपन झागड़वा तं बर रे कइबे
काहनाह् मनबेह् ना एठियन रे हमारऽय
ओहि दिन रेंगल मारखवा बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल झागड़ुवा घर रे जानऽय
जउनेह् घरी थोड़ाह् न दूरिया रहिं रे गयनऽ
अहीराह् मारत खंखरिया बरि रे यारऽ
दूनों भाई मारि कह् खंखरिया बीर रे बोलऽत (१५२०)
मंजरीह के कानेह् साबदिया चलि रे गइनी
ओहि घड़ी देखह् ना हलिया मंजरी कऽय
मंजरीय मारइ ना दउवा लेइ रे पेंचऽय
चनवाह् गीरलि धऽरतियां भहरे राई
उहवां से भागलि ना धियवा महरे कऽय
जाइकनि गयनीय ना किलवा में अपन समाइ
ओहि घरी देखह् ना हलियाह् मंजरी कऽय
किल्ला में गईलि ना अपनेह् रे घूसुरि
आजु कहैं बेसाह् ना जतियाह् हउ चनइनी
उठि कनि झाड़िय ना लेलइ अपन रे धुरि (१५३०)
आजु कहैं बइठि कोयनवा में ढ़ूंढ रे गइनी
अब फेरि छड़ि छड़ि मूरइया के खल रे पात

ओहि ना दिनवाह् राम समइयाँ
चनवाह् उठीय भयल बा समरे तूलऽ
अहीराह् ठाड़ाह् बानइ नाह कोइरे राड़ऽ
तब फेरि बोलिलि बीटियवा सहादेव कऽ
जेकर भूघर ना चनवाह् पड़ल रे नामऽ
आजु कहँ सुनबह् आहीरवाह् तूयं रे लोरीक
कहनाह् मनबह् ना एठियन रे हमारऽ
आजु भाई गरमीय मांजरिया के होइ रे गइनी (१५४०)
बोलति बाड़इ ना बतियाह् कड़ रे खाई
बलुकन करतह् ऊंठरवा जं पूरुबे के
चल चलित ओनीय हारदियाह् पुर रे पाली
एने भाई परिजाति बीपतिया जे गउरा में
दिनवांह् भोगति रडंपवा के लेइये आजऽ
तब फेरि बोलल मारदवा जे बीर रे लोरिका
बियहिय ते मनबेह् काहनबाह् रे हमारऽ
तनी भाई चढ़इ दे खुरपीय खर दिवारयऽ
अब चढ़ि अइनह ना बोहवाह् रे मझार
ए भाई बऽठउवाह् रे निकाली (१५५०)
आजु भाई बेचि देइ बाछउवा लेल रे कारी
अब फेरि डहरे के खारचवा जे होइ रे जातऽ
अब खरचाह् लेतह ना ओठियन रे बेगारी
कब तल खाटीय आपदवा जे लेइ रे परतांऽ
बईठि खाइनि हारदियाह् पुर रे पारऽ
तब फेरि बोललि ना बेसवाह् बाइ चनइनी
दरियांह करइ ना बेड़वांह् हो जबाबऽ
सइयांह् खरचा वरचवा के काम रे नाहिनी
का हम लेईय खारचवा रे पुरानऽ
का हम भरल रोकड़वा बाबिले कऽ (१५६०)
डाढ़ी के लेइलेइ ना कुलवा रे समानी
अब लेइ लेइय पागरिया बपवा कऽ
जे मंह् हीराह् ना मोतिया कइ रे कोपरय
कबहुँक परिजाइ बिपतिया पंयड़े मे
बइठेह खाबइ पुहुँतिया दुइ रे चारी
कह हम उठिय ना बूठिय रे चारुइया
सोनवाह् दरबि ना लेइ चली ये कगाल

आजु कहूँ नोनोय हरदिया जे चलिकेऽ बइठय
बइठे खाबइ पुहुतिया जे दुइ रे चारि
ओहि दिन बोललि ना धनवांह् बाइ रे चन्ना (१५७०)
तब भइया सूनह् लोरिकवाह् मोर रे बातऽ

लोरिक और चनवा का हल्दी भाग चलने के लिए समय निश्चित करना

बलुकन दीनइ मोकमवाह् रखि रे देतऽ
अब चलि चलित हारदियाह्पुर रे पालऽ
तब फेरि बोलल मारदवाह् बीर रे लोरी
आजु भाई मनबह् काहनवाह् रे हमारऽ
आजु कहूँ आजुव ना दिनवाह् कल बितावऽ
परसंउ दिनइ होइ ना सुकरे वारऽ
परसों से कइ दहू् पयमवाह् पूरुबे के
चलि चलि नोनोय हारदियाह् रे बाजारऽ
देख भाई राहयू ना तलवाह् रे सुराहवा (१५८०)
आजु जवन हवइ मूरहवाह् पीपरे कऽ
ओहि दिन कालइ ना रही हंइ रे मोकामऽय
जे भाई आगेह् से घरवा से नीकलि जइहंऽय
जोह लेह रहिहंह ना तलवाह् केनि रे भीटा
एतनाह् दीनइ मोकामवा जे बदि रे गयनऽय
अब फेरि गयल ना ओठियन देख रे बाय
ओहि घरी तालइ मोकमवाह् बदि रे गऽयल
अब भाई आधीय ना रतियाह् निचरे लइयाँ
इहंई भाई रहिहइं ना तलवाह् रे मोकामऽ
जे फेरि आगेह ना घरवाह् से निकलिहंऽ (१५९०)
आइकनि जोहिहं पीपरवाह् केनि रे पेड़ऽ
एतनाह् तालइ मोकमवा जो बदि रे गयनऽ
बेसवाह् रेंगलि ना कीलवा बा चलि रे जाय
ओही घड़ी ऊठल मरदवा बा बीर रे लोरिका
जाइकनि करइ तऽखतवा पर असरे नान
उहे भाई पानीय पातरवा जे पीय रे लेहलेन
अब धइ देलंह ना रहियाह् देख रे जाय
जइसे भाई लेलेनि ना गोतवा जे ओठियन बा
फेर भाई जालह ठाहरिया जे जेवरे नार

लोरिकाह् खाइह् ना पीयह् तइ रे यारऽ (१६००)
ओहि भाई देलेसि ना निन्नरि रे लागाइ
झुठहुँव सूतल पलंगिया पर बीर रे लोरिका
झूठेकनि नाकइ ना देत बारे बोलाय
ओही घरी सूनह् ना हलिया जे मंजरीय कऽ
मंजरीय झंखति ना धनवा जे लेइ रे बाई
कहँवा से थाकल ना सइंया जे मोर रे अयनऽय
सूतल बानह् ना निनियाह् विक रे राल
ओही घरी आपन सेजरिया जे बाइ डसावत
अउ फेरि लेलेसि पलंगियाह् रे लगाय
मुड़वा त टांगलि ना खंड़िया जे बाइ बीजुलिया (१६१०)
मंजरीय अपनेह् ना मुंड़ी तर धरति रे बाय
आजु भाई तकियाह् ना खंडिया कबाइ बनावत
मुड़ तर धइकेह् बियहियाह् जे सुति रे जाय
ओही घरी उठि उठि आहीरवा जे देख रे लोरिका
निकल निकल बानह् ना रतियाह् अवरे रारि
आजु बाबू आधीय ना रतिया वा निचरे लइया
बियहीय कउरति पाहरवा जे देख रे बाय
मजरीय के आंखिय निदरिया जे नहीं ने आवत
टुक टुक ताकति पलंगियाह् पर रे बाइ
ओही घरी सुनह ना हलिया जे ओठियन कऽय (१६२०)
के फेरि आधीय ना रनियांह् निचरे लइयाँ
उठि उठि देखत लोरिकवा जे लेइ रे बाइ
जब भाई जालाह् पालंगियाह् ज मंजरीय के
टुकु टुकु ताकति ना धियवा जे लेइये बाइ
पूड़ाह् करति पहरवा जे याइ लोरिके कइ
देखि कइसे जालाह् पूरुबवाह् केनि रे देस
एतना जब कहति ना धनवा जे बाइ माजरिया
तब तक देखह् ना अगवांह् कइ रे हाल
ओही घरी निकलल आहीरवा वा बीर रे लोरिका
खंड़ियाह् टांगलि ना खुटियांह् मेनि रे बाय (१६३०)
उहे भाई टूटहीय ना खांड़याँ जे हथवां लेइकऽ
रंगल जालाह् सूरवलीय देख रे ताल
जाइकनि देखइ पीपरवाह् कइ रे पेड़वा
गइनांह बानह् कोइयवाह् रे देखात

ओहि दिन रोवइ ना धियवाह् लेइये ओठियन
अउ फेरि आपन ता ठोंकइ तक रे दीर
ओही घड़ी उठिकह् ना आहीरा जे रेंगिये देहलेनि
चलि गइल तालइ सुरवलि जे भन ठाड़
उहवां निकललि ना धियवा बा महरे कऽय
खोजति बानीय दावइयांह् लेइ रे आज (१६४०)
ओहि दिन मूनह् ना हलिया जे बेसवा कऽय
चनवाह् उदिय ना गुदियाह् लेइ रे तरुई
दरबा लेइ लेसि ना उहुउ रे उठाइ
अगहीय जाइकह् पिपरवा के रहे रे बइठऽल
अहीराह् एहा से चलिये जे बाइ रे जात
·········गयनह रे पहुँची
अब फेरि गइलि ना चनवाह् रे लुकाय
अहीरा एहर ओहरियाँ जे घूमि रे देखय
ना फेरि कच्चीय ना बतिया जे बोलति रे बाय
आजु कहँ बेसाह् ना जतिया जे हउ चनइनी (१६५०)
बेसवा के हंवह् सखरवाह् जे पलि रे वार
आजु हम बेसवाह् के मतवा में लागि रे गइलीं
घरवांह् होइहंइ बीयहिया जे मोर रे राइ
आजु हम लऽवटि गिरिहियाँ जे बुजरो जाबय
अब नाहि चऽलब हारदिया जे पुर रे पाल
ओहि घरी लवटल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
अब फेरि हंसलि ना चनवा जे देख रे बाय
झरवा के आड़ेह् ना बेमवा जे बाइ लुकाइलि
हंस केनि निकललि पयंड़वाह् में नि रे बाय
ओही घड़ी बोलल ना अहीरा जे बीर रे लोरिका (१६६०)
बियही ते मनबेह् काहनवांह रे हमाऽर
बियही हमार पूड़ाह् पाहरवा जे करति बाड़य
मुडवा तर धइलेह् बीजुलिया जे बा तर रे वारि
उहे भाई टूटहीय ना खंड़िया जे हथवा में लेहले
अइलीय हमहूँय सुखलीय देख रे ताल
आजु कहँ तालइ मोकमवा पर जुटि रे गइली
कइसेहि नीकलि चऽलींय नाह पर रे देस
डालय खटियवा पदवा के कवनों परिहंऽय

का हम करब जुगुतियाह् उहाँ रे ठाड़
आजु हम टूटहीय ना खंड़िया जे कवनों गन्तीय (१६७०)
का हम कऽरब झागड़वा जे बरि रे यार
एतनाह् कहत ना बतिया बा बीर रे लोरिका
बेसवाह् बोलति चनइनी जे पुनि रे बाऽय
आजु कहैं सइयांह् ना मुनिलह् सुख रे नभन
आजु मोरे सुनिलह् ना मोरे सीरवा के मउरे आर
आजु तूंय सुमिरह् ना मइयाह मोरि भऽगउती
जउन तोहार आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
दुरुगाह् जातइ नीदइयाह् र लगाइ देंय
मंजरीय सूतई ना निनियाह् बिस रे भोर
ओही घड़ी सकतीय दुरुगवा जे तनी बढ़उलेनि (१६८०)
मंजरी के मुंदलेनि ना अंखियाह् ओहि रे दाम
अहीराह् लवटि न ऊहवां से बाइ रे रेंगल
अउ चली गयल कोठरिया में नि रे वाय
मंजरी के मूंड़इं उठइयाह् खंड़िया घींचलेनि
मुंड़वा तर धइलेसि टूटहिया लेइये खांड़
आजु लेइ लेलेसि ना हथवा में बिजुलिया
आजु रेंगि देलेह् ना दुअराह् सेनि बाय
जउने घरी दूओह ना जोड़ियाह् रेंगिये देहलेनि
अब धइ लेलेह पूरबवा के बान रे राह
आजु भाई रातिय रेंगत बाह् दिन रे दवरत (१६९०)
कतनहुँ बादति ना कुरवा जे देख रे मोकाम
ओहि घरी खूललि ना नाजरियाह् मंजरी कऽय
मंजरीय ताकइ ना आंखियाह् रे गुरेरी
आजु भई टूटहीय ना खड़ियाह् के ये धइले
के लेइ गयल बिजुलियाह् तर रे वारऽय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
उठि कनि करत रोदनवाह् बड़ि रे यारऽय
घूमि घूमि देखइ जा बहियाह् रे उठाई
हथवा में ले लइ ना गेसियाह् धन रे मांजरि
जाइ केनि देखइ बाहरवांह् देख रे पावऽय (१७००)
ओही घड़ी झीलई ना दइयाह् बायं रे बरसत
तुरंते के उपटलि ना मचइयाह् बाइ देखाती
ओहि घरी गइलि गिरिहिया रे ददाई

जहवांह् बइठलि ना खुइलनि बाइं रे सासू
उहे भाई काहति जावबिया बाइ रे खोली
आजु कहैं अम्माह् ना सुनिलह् मोर रे सासू
एठियन मनबह् काहनवाँह रे हमाऽर
आजु कहैं खरहा ना लहटल देख रे गोहुँवा
घरे नाहीं चललेसि हरियई देख रे दूब
इहे दूनों कइलेनि ऊढ़रवा जे पूरुबे के (१७१०)
चलि जात ओनीय हरदिया जे पुर रे पार
··· आधेह् जंगलवा में हलि रे गयनऽ
अंवराह फरल ना पेड़वा जे देख रे बाय
ओही घरी बोलल ना पेड़वा बा आंवरा कऽय
दरियांह करत ना बेडवांह् रे जबाब
आजु कहें बेसन ना चनिया जे हउ चानइनी
बेस्मा हव्वह सखरवा जे पलि रे वाऽर
इहे भाई बियहा ना बिजरी में छोड़ि रे देहलें
उढरा लेइकऽ हारदिया जे बाइ रे जात
एतना जब कहत ना पेड़वा बा अंवरा कऽइ (१७२०)
आज फेरि बोलल अंवरवा जे पुनि रे वाइ
आजु कहैं सुनबेह् ना बेसवाह् तोइं चानइनी
काहनाह् मनबेह् ना एठियन रे हमाऽर
तय आपन बियहल ना छोड़ि देहले बीजरिया
ओढ़रा लेइकह हरदिया जे जलि रे पाल
ओहि दिन बोललि ना बेसवा जे बा चनइनी
सइयांह् मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु तूय खीचह् ना खड़ियाह् रे दुगाहे
अवरांह् के देबह् ना जड़िया तूं ढोलि रे आइ
ओहि दिन बोलल आहीरवा बा बीर रे लोरिका (१७३०)
दरियांह करत ना बेंड़वा जे बाइ जबाब
आजु कहैं सुनबेह ना धनवा जे तूय बियहिया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
इह इह तोंहय झागड़वा रे चलि मचावऽल
कहं कहं लोरिकाह् गऽहीय ना तर रे वारि
इहे दुनोह् ना जोड़िया जे रेगिये दीहलेन
साझइ लेलेनि पूरबवाह् तहि रे यार
जउने घरी सांसड़ ना बोहवां जे जुटि गयनऽ

थोड़ाह् बचि गय करीबवा रे देख रे बांय
आजु कहँ गइयाह् ना रहनीय रे कलानी (१७४०)
बंझुल में बानीय ना गइयाह् रे पऽजार
ओहि घड़ी पड़ि गइल ना नजरिया जे चानवा के
बेसवाह् बोललि लारमियांह् कइ रे बोल
आजु कहँ सइयांह् ना मुनिलह् मुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मउरे यार
आजु कहँ कवनेह् ना आभागिह् कइये गइया
जंगल झाड़िय ना बानीय रे बियात
आजु भाई कवनेह् धारमीयाह् कइ रे गइया
अब बानी खरकाह् आड़रवा में देखऽ पजात
ओहि दिन बोललि ना गइयाह् रे कलनिया (१७५०)
दरियांह् करति ना बेड़वांह् जे बाइ जबाब
हम भाई लोरिकाह् आभगिया के हइंये गइया
जंगल झाड़िय में हम रे बाइ पजात
ओही घरी बोलल ना दरियांह् दोहराई कऽ
फेरि गाइ बोललि लारमवा क बाइ रे बोल
आजु भाई धरमीय सावरूवाह् कइये गइया
बान्हिय खरकाह् अहरवांह् देख बियात
एतना जे सुनत आहीरवा न्वा बीर रे लोरिका
घूमि कनि गयल ना गइया के बाइ रे पाऽर
जाइके भाई कोराह् बाछरुवा जे लेइये लिहलेन (१७६०)
आगे आगे रेंगल आड़रवा पर चलि रे जाय
पिछवांह् चन्नाह के डोलवह् ले जाइ रे गइया
एकदम गयनह् छीउलियाह् केनि रे जाय
ओहि घड़ी भांजलि ना गइया बाजे संवरूय कऽय
अब गाइ गयल लेंहड़वा जे खदबदाय
ओही घड़ी बोलल सांवरुवा जे मल रे बानइ
नन्हुवां ते मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु चढ़ि जाबेह् ना पेड़वा जे छिउली के
अब तूंय देखह् लकड़वाह् दंव रे हाऽय
के फेरि बनवह् लाकड़वा जे गई बिचावां (१७७०)
के बन बनहा बिलइयाह् देइये गायं
नन्हुवा चढ़ि केह् छीउलिया पर देखऽय
चारु ओर ताकत नाजरिया बा घूम रे राई

लोरिक का संवरू से बोहा में भेंट करना

तब फेरि बोलल ना नन्हुवा जे बा धोरइया
अब बहनोइयाह् धारमिया जे सुन रे भाय
आगे आगे लोरिकाह् बहनोइया जे ले ले रे बछरू
पांछवा से चन्नाह् डोलवले जे आवे रे गाइ
एतना जे सुनत ना मलवा जे बा संवरुवा
उहो भाई बोलत ना बेड़वाँ जे बाड़े जाबाब
आजु कहैं सुनबेह् ना नन्हुआ जे मोर धोरइया (१७८०)
सरवाह् मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
एतनाह् दीनइ जाबानवा जे बीति र गयनऽ
कबो नाहि कइलेह् चिकरिया जे नान्हू रे तोंय
आजु भाई कावनि आवरिया जे घूमि रे गऽइनी
हमसेह् करत पगुरिया जे नाहि रे बाय
ओहि घड़ी एहीय ना बतियाह् होवे जावे
अब जुटि गयल लोरिकवा जे उहे रे बाइ
ओही घड़ी अड़ारेह् बछरुबाह् बा उतरलेनि
अब फेरि गयल धरमियाह् के नि रे पासऽय
चनवाह् लेइकह् भाउकवाह् लेइये छोड़ि दऽ (१७६०)
उहे चलि गयल छोलदरियाह् के पिछो रे
जाइकेनि बइठलि ना धियवाह् सहदेव कऽय
जेनकर चंदाह् मयनवाह् बाइ रे नांवऽय
ओहि घरी मूनह् ना हुलिया ओठियन कऽय
लोरिकाह् गयल धारमिमा केनि रे पासऽय
उहे भाई नीहुरि ना माथवा बाइ नेवरले
भरिमुख देतीय बाड़इ ना आसी रे बादऽय
भइयाह् आठेहु आमरवा रहु रे लोरिका
अब तुंय जीयह् ना लखवाह् रे बरीसऽय
जइसेह् बाढ़इ ना पनिया गंगिया कऽय (१८००)
ओइसइ बाढ़इ ना अइया हो तोहारऽय
आजु भाई दून्नोह् ना भइया जुटि रे गइलीं
तेजी से सांसड़ ना बोहवाह् रे मंझारऽइ
आजु कहैं बईठि आवरवा में भइया रहबऽ
दूनों भाई बोहंह करबि ना कबि रे लास
अब बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका

दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जाबाब
आजु कहैं सुनिलह् ना भइयाह् मोर सांवरुवा
एठियन मानह् काहनवाह् रे हमाऽर
देख हम चोरीय ना कइलीं जे रे पचोरी (१८१०)
अब भांजि देहलींय गाउरवा में देख रे सेन
आजु मुसि लिहल बिटिइवा जे साहदेव का
अब लेइ भागल पूरुबवा जे गइली रे देस
आजु हम दसइ ना दिनवा के लेइये हरदी
अब भइया जाबइ ना उबियाह् लेबऽ गंवाइ
एतना जेउं सुनइ ना मलवा रे संवरूवा
उहे भाई बोलल ना लारमवा कइ रे बोलऽय
आजु कहैं नन्हुवां ना सुनलेह् मोर धोरइया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽरऽय
आजु भाई रहंसह् वाहुँसवा के दूनो रे लोच (१८२०)
छोड़ि देह दूभोह् भइंसिया लागि रे जाने
दूनों मीला पीयइं ना दूधवा रे अघाई
तब भाई जइहंइ हाऽरदियाह् रे वजारऽय
एतनाह् सुनऽत आहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् बोललि ना बेड़वां जे बाइ जावाब
आजु कहैं सुनवह् ना भइया जे मोर संवरूवा
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई अजुवइ ना दूधवा जे भइया देवऽ
के कहि देईय पयंड़वा में हमरे दूध
का जाने खड़ियांह् डहरवा में गढ़वइहंऽय (१८३०)
के चारि परग ना देइहं जे पहुँ रे चाइ
एतना जब कहत अहीरवा वा बीर रे लोरिका
धरमीय जरि मरि ना भयनंह् रे खंगार
आजु कहैं सुनबेह् ना भइया जे तेंय लोरिकवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
देखु भाई आजुअइ ना दूधवाह् हम देत रे बांड़ी
साइति के खंड़ियाह् ना ओठियन गढ़ि रे हइहंय
दूनो मेंह लेह मानुसवा जे कन्हि रे आइ
सुनिलह एतनाह् ना बतियाह् होइये गइली
अब फेरि उठनह् ना बोहवा से तड़तड़ाय (१८४०)
आगे आगे रेंगलि ना बेसवाह् बा चनइनी

पिजवांह् लोरिक रावदिया बा चलि रे जात
आजु कहँ रहियाह् बा पुरुबवा के रे तड़ियवले
जंगल झाड़िय हललवा जे बान रे जात
जउने घरी जंगल झाड़ियवा जे डांकिये गयनऽ
अगवांह् नदीय बेवरवा जे आइलि रे बाय
ना त कहीं माइय न डोंगवा जे बाइ लवकल
नदियाह् दूनों कररवां जे फुफुरे कारि
बोलल आहीरवा बीर रे लोरीक
दरियांह् करइ ना बेड़वा हो जाबाबय (१८५०)
अब धन बइठल काररवा पर रे रहऽलय
हम भाई पेड़इ ना झुरवा झुर जुटाई
सयलीय बीतिय ना पनिया में बनाई
जवने दिन दुन्नोह् ना जोड़िया चढ़ि रे रहनी
खेइ केनि निकलि अलीय ना ओहि रे पारय
ओहि घड़ी बइठलि ना बेसवा जे बा चनइनी
आ फेरि अहीराह् हललवा जे जंगले बाइ
जंगल झाड़ो से बोंगरबा जे बाइ रे पटकत
आ फेरि बांवरि काटतवा जे बीर रे बाय
उहे भाई बीतिय साइन्नया बा नदिया में (१८६०)
बीच केनि कइलेह् सइलिया बा बरि रे यार
आजु भाई लग्गीय ना बनवा जे छोलिये लिहलेनि
आ फेरि ले लेसि ना चनवा के बइ रे ठाई
अपनेह् ले लेसि ना चनवा के बइ रे ठाई
अपनेह् ले लेसि ना हंथवाह् मेंनि रे लगिया
खेवत जालह् ना बीचवांह् गइ रे धार
तब तक सूनह ना हलिया जे नदिया में
गंजवाह् बहल आवत बाह् बड़ रे तेज
ओहि में रहल ना चुहवा जे एक रे मूसऽई
उहे मूस बदल ना गंजवा में चलि रे जाई (१८७०)
अब जुटि गयल सऽइलिया बा केनि रे बीचवा
चनवांह् देखति ना चुहवाह् केनि रे बाय
उहे भाई ले लेसि ना चुहवाह के चढाई
अब रखि देलेसि ना सइलिया केनि रे बेत
जवने घरी मूसवाह् ना घमवां में टंठायल
आ फेरि होइ गयल ना ओकर सरगे सरीर

ओहि घड़ी घूमि गयल बान्हनवा जे भीतरीय में
जाइ कनि काटत बान्हनवा जे देख रे बाय
जाइ जाइ तिनूंउ बान्हनवा जे काटि रे देहलेनि
अब दुइ भागेह् गऽयल गोलि रे याय (१८८०)
एक देस बहलि ना बेसवा जे बाइ चनइनी
एक ओरि खेलत लोरिकवाह् जाइ रे जाय
ओहि दिन बोलल आहीरवा जे बीर रे लोरिका
अब बेसा मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
आज हम तोरेह् ना मतवा में लगि रे गइलीं
आपन छोड़ल बीयहियाह् देखु रे घऽर
तोर भाई अइसइ ना कामवा जे चलसि रे करबे
कई घरी लोरीक गहीय नाह् तल रे वार
एतना जब कहत बानह् ना बीर रे लोरिका
हाली हाली खेवत सइलियाह् देख रे बाय (१८९०)
ओही घरी सइलीय आहीरवा जे बा जुटवले
लगियाह् देलेसि ना दुरियांह् से बनाऽय
ओही घरी धइलेस ना लगियाह् बेसा चनइनी
सइलीय दुनोह् चोकड़वा जे जोडि रे जाय
अहीरा खेवत ना ओठियन परि रे कइले
बेवराह् उतरि गऽयल बा ओही रे पाऽर
आजु भाई सेमरि का पेड़वा बा कररवा
ओहीय के ठाड़े डेरवा धइये लेंय
आजु भाई रामइ रसोइयाह् ओहि बनावेइ के
गोंइठाह् पाथि लाहनवा जे होत रे बाइ (१९००)
तब तक सूनह् ना हलिया जे सिवहरि कऽ
जाती छोड़ि देहलेह बेजरिया जे आपन रे गांवऽय
सिवहरि चालति ना गउंवा बीजरी से
चलि गयल सहदेउ ना रजवां दर रे बारऽय
जाइकनि मारत लोटनिया उहां रे बानऽ
सहदेउ राजाह् बूझई ना अनि रे यावऽ
आजु भाई देखह् ना हलिया एने दहुवा
चली जाह् तूहंउ ना उढ़रन पछि रे याई
कहीं जउ होइ जाइ ना भेंटिया पंयहे में

बेवरा नदी के तट पर चनवा के पति सेवहरि द्वारा लोरिक पर आक्रमण किया जाना

सारवा के फारिय लऽडइया तुय रे गालऽय (१६१०)
ओहि घरी तीन सइ ना सठिया जे तीर रे लेइकऽ
उहवा से रेगल सेवहरिया जे बाइ रे माल
अब हलि गयनह् ना बोहवा जे समडे मे
जहवाह् बइठल धऽरमिया जे बाड रे माल
ओहि ठिन जुटि गयल ना मलवा जे देख रे सिवहरि
सेवहरि बोलत लारमिया के लेइ रे बोल
आजु कहै धरमीय ना मुनिलह् मल रे सावर
एठियन मनबह् काहनवाह रे हमाऽर
एहर भाई ऊढरीय ऊढरवा जे तुय रे देखलऽ
हम पति लेतह् सारेखवाह् म देख रे लाय (१६२०)
आजु कहै बोलल धारमिया ज मल रे सावर
उहै कहैं बोलइ ना बोलिया जे उहे रे जोत
आजु कहै सुनवह् ना सघिया जे मोर रे सेवहरि
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
देख हम ओढ़रीय ऊढरवा जे तोहार देखली
अब जूटि गऽयल बेवरवा के होट रे पाल
सूनह् ना मलवा जे बाइये सिवहरि
सावर मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आज हम कवनेह् उपइयाह् जुटि रे गइनी
जउनेह् ऊढरीय ऊढरवा जे मिलि रे जाइ (१६३०)
तब फेरि बोलल ना मलवा बाइ संवरूवा
सिवहरि सुनबह् ना सघियाह् र हमारऽय
आजु भाई झुरियाह् अगरिया बाइ रे टागल
दुइ बोतल लेबह् ना मुखवा रे डटाई
आजु कहै पनहीय चीपउरा गोडवा कऽय
तब जाय देहलियई ना तुहउ रे पहूंची
सिवहरि साचइ ना बतिया बति रे आयऽ
अब लोरी देहलेसि ना ओठियन सेनि बानऽय
जाइके घइ पीयइ मऽदिलवा बोतले कऽय
ठटवाह् छाटत मारदवाह् ओहि रे दम्मऽय (१६४०)
आजु भाई उलटाह् ना भठिया कटिये लिहलेनि

परहुअ कइलेहि चीपउरा ओहि रे दम्मय
आजु भीम रेंगलि ना झोंकवा सेनि रे बानऽ
तिलवाह् गिरइ डहरियां मह रे राई
आजु भाई तीन सई ना सठिया देख रे तेरऽ
तीन सइ साठिय जेकर ना अख रे वारऽय
उहे भाई एकक ना तीरवा रे उठउलेनि
बोहवाह् में कइलेनि ना ऊहउ देख रे गांजऽ
तब तक जूटल ना सेवहरि नदिया पर
देखत बाड़इ ऊढ़रवनि कनि रे हालऽ (१९५०)
ओहि पर सुलगति बा अगिया ओठइन कऽ
भोजन त होतेइ लाहनवा दुनहून कऽ
तब तक सूनह् ना हलिया रे हवाले
सिवहरि तानइ ना तीरवा लेइ रे बानऽ
मारत बानह् सेमरिया कइ रे पेड़ऽ
जेनकर बाजल ना तीरवा तन रे पऽर
उहे फुनि गीरल धरतियाँ मह रे राई
ओहि घरी खेलल मऽरद बा बीर रे लोरिका
दक्कन फरक भयल बा मय रे दानऽ
जउनी घरी गीरल सेमरिया बा धरती में (१९६०)
भुइयांह चुवइ ना चुड़वा बा उड़ि रे जात
दूसर ना तीरवाह् बाइ टटोहऽत
एक्कउ नाहिय ना भथिया में बाइ रे तोरऽत
सेवहरि दांतन अंगुरियाह् रे चबालऽय
अब कहैं काहेय कहिय नाह काये नाहीं
कुछ मोरे बूतेह् काहलवा बा नाहि रे जातऽय
संवरू मुदइया जे होइ रे गयनऽय
उल्टाह देखेलनि ना भथियाह् रे चढ़ाई
अब कहैं तीन सई ना सठियाह् मोर रे तीरऽई
ए ठहर तीन सै ना सठियाह् चर रे वाहऽइ (१९७०)
उहे भाई एक सइ ना तीरवाह् रे ऊठउले
बोहवाह् में गंजलेनि ना परबत रे लगाई
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
सिवहरि बोलल लारमिया के बाइ रे बोलऽय
आजु कहें हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलारऽ

आज हम सगरेउ ना गुनवा देइ रे देहलयऽ
चारि हाथ पंवरय के गुनवा नाहि रे बाड़ऽ
ना हम पंवरि बेवरवा जउ रे आई
लोरिकाह् फारिय लड़ाइ देख तोर रे गालऽ (१९८०)
एतनाह् कहत ना मलबा जे बाइ रे सेवहरि
उहवां से लवटल गीरिहियां जे बान रे जात
उहवां से दुन्नोह ना जोड़िया जे रेंगिये देलेनि
सोझेइ ले लेनि पूरुववा जे तड़ि रे याई
देख भाई रतियांह् रेंगत बांय दिन रे दवरऽत
कतों नाहि बदनह ना थुरवाह् देख मोकामऽ
एकदम रेंगल ना ऐठियन कनि रेंगावल
अब चढ़ि गयनह् हारदियाह् केनि र भींटऽय
जाइकेनि हरदीय ना केरह् पनि घंटवां
अहीराह् देओस ना टेरवाह् जे उहो नेवारि (१९९०)
आज्रु कहुँ तानत भउकवा ले चनवा कऽय
अउ फेरि देखत सांमनिया जे देख रे बाइ
अब्र फेरि ले लेह् बा तम्मुअ छोल रे दरिया
अब बीर लेहलेसि ना डडवा जे ओके निकालि
अब फेरि तानत ना बानह् रे पिटेर्सार
अब फेरि सेही सागरवाह् केनि रे भींट
आज्रु भाई बोलत बा बतिया जे लरमे कऽइ
त्रियही ते मनत्रेह् काहनवांह् देखु हमाऽर
आज्र हम रेंगल रहतवा जे देखु रे बाडे
हम तोंहि लागल थाकइनींय लेइ रे ब्राइ (२०००)
तूंय धन रामइ रसोइया जे तपति रे रहऽ
हम जात बानी हरदिया जे पुर रे पार
सुनिलऽ हउलिय दूकनिया जे आऽये हरदी
चलि कनि पीयब ना मदवाह् लेल रे कारि
एतनाह् कहिकह् मारदवा जे बीर रे बोलल
आपन खोलत बाकसवा जे देख रे बाइ
ओहि घरी अंगवाह् ना पहिरत बाइ अंगरखा
गोड़वा में गुठलइ बदनिया रे तमाऽन
आजु भाई तरकुस ना गुजवा बा पनहीय कऽय
उहो बीर बांपइ ना एड़वाह् रे चढ़ाय (२०१०)
के भाई छप्पन ना छुड़ियाह् पन कटारी

अहीरे के झुकि गइल बादनिया में तर रे वारि
आजु कहैं मरगस न मरगस रेंगिये देहलेनि
जइसेह् डोलति हथिनिया जे बानि रे जात

हल्दी बाजार में लोरिक की जमुनी कलवारिन से भेंट

ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽइ
अहीराह् रेंगल हऽरदीयाह् रे बाजारऽइ
पूछत जालाह् कालरवाह् कइ रे घऽरऽइ
जवने घरी आधेह् हारदिया में चलि रे गयनऽ
पूछति बाड़इ ना बीचवाह् रे बाजारऽय
ओहि घरी बीलनह् बजरिया हरदी कऽय (२०२०)
कुछ दूरि अवरोह् न भइयाह् तूं हो जाबय
आज घूमि जायह् बगलियाह् पछुंवा के
अगवाह् बाड़इ ना भठिया रे दूकानय
अहीराह् रेंगल ना एकदम हो रेंगावल
अब चढ़ि गयल ना हउलीय पर हो बानऽ
दस पांच बइठि पियकवा जे बां हो पीयत
लोरिकाह् ठाड़ाह दूअरवाह पर हो बाड़ऽ
जमुनीय बइठलि ना गदियाह् पर हो बानी
अब पड़ि गयल नीगहवा बा जमुनी कऽ
उहो भाई दांनेह् अंगुरियाह् दाबि रे ले लऽ (२०३०)
आजु कहें हो हो ना दइवाह मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् मंझवाह् हो लिलारऽ
इ बाबू कवनेह् ना जांतवा के खइलनि हो पीसऽ
कवने पियलेनि सागरवाह् कइ हो नीरऽ
मलयन के कवनेह् खटिवांह् रे मुतावंऽ
एनि एनि गइल खटियवा कइ रे बाधऽ
ओहि दिन बोललि ना जमुनीय बाइ कलारिन
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् हो जबाबऽ
आजु भइया कहां ओतनवा तोहार हो गोतऽन
कहां पर टूटति बा अइना बुनि रे यादऽ (२०४०)
कहवांह् कइलह् चढ़इया दूरनदेसी
अब फेरि अइलह् हाउलिया बाइ रे ठाड़ऽइ
अब फेरि बोलल मारद बा ओहि रे लोरीक
दरियांह् करइ न बेड़वां रे जबावय

आजु मोरे गउराहू ओतनवाहू गउराहू हो गोतन
गउरा में टूटिय गइलि ना बुनि रे यादऽय
आजु हम कइलींय चढ़इया हरदी के
खोजत पवलींय ना भठिया कइ दूकानी
एतना जउ सुनति ना धनवा जे बाइ रे जमुनी
गदिया से उठलि ना ओठियन पर रे बाइ (२०५०)
जा के भाई कालीय कुरुसिया जे बाइ निकलले
अहीरे के देलेसि कुरुसिया जे ओही रे घाई
ओही घरी बइठल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
जमुनीय भऽरति बोतलवा जे देख रे बाइ
ओहि घरी बोतल ना भरियाहू कइ रे हाँथे
अउ फेरि ले लेहु गीलसिया जे बाड़ रे जात
जाइ केनि धइ देइ लोरिकवा के देख रे पाजरि
लोरिकाहु ले लाऽहु बोतलवाहू रे उठाइ
आजु कहँ ढारत गीलसिया मे बाइ रे दरुवा
उहे भाई पीयत अहीरवा बा एक रे घोंट (२०६०)
जवने घरी मुंहेहु में घोंटवा जे डालि रे लेहलेन
आ फेरि उगिलति ना मुहवांहू सेनि रे बाइ
ओहि घरी बोतल गीलसिया जे फेंकिये देहलेनि
अब फेरि गयल जमुनियाहू पर बीगड़ि
आजु कहँ बाउरि ना तोहंउ रे कलारिनि
अब सुनि लेबेहू ना भठिया के भाठ रे दार
आजु हम अइसन पियकवाहु तइसनि रे नाहिनी
तब कहं पियत हऽ हमहूँय हइं रे आज
हम भाई लवगेहू मारीचिया के जल्दी रे भठिया
अब फेरि देबेहु चम्फुवाहू रे उतारि (२०७०)
उहे हम पियबि दारुइया जे जमुनी तोरऽय
अब फेर जाबइ सागरवा के हमरे भीट
बीयहिय रामइ रसोइया जे कइके जोहले
हमइ होइहंऽइं हरदियन केनि रे भींट
अरि बोललि ना जमुनीय रे कलारीन
गहँकी तूं मनबहू काहनवाहू रे हमाऽरय
आजु भाई बइठहू कुरुसियो पर हाथे पेलत
अब हम भठियाहू ना तुरतेंह बांय लगावत
जब टूटि तबइ दारुइयाहू तोहे रे देबऽय

तब तक सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय (२०८०)
अब राति होवइ ना लगनींय रे दूकनिया
चनवाह् रामइ रसोइया जे जाइ बनाइ कऽ
डहरि जोहत पीयकवाह् कइ रे बानी
तब उतरलि ना भठिया बा जमुनी कऽय
उहे भाई बोतल गीलसिया में लेइ रे भरि
एकदम ले लेह लोरिकवा कि हाँ रे गइनी
आउ फेरि देहलेनि ना हथवांह रे टेकाइ
जउने घरी देखइ दारुइया जे जमुनीय कऽय
अहीराह् लेतइ ना मुखवाह् मेंनि रे बाइ
जवने घरी मूखइ में ले लेह बाइ दारुइया (२०९०)
चम्फुय गयल सरीरवाह् गमगमाइ
ओहि घरी पीकइ ना घोंटवाह् लेइ रे दारुवा
ताकत जमुनियाह् केनि रे बाइ
आजु कहें जमुनीय गांगदिया पर से ताकइ
दुन्नो कइ लेनि नजरियाह् एक रे जोड़
जवने घरी दुनहुन के नाजरिया जे लड़ि गऽइनी
अब हंसि देलेह् ना धनवाह् देख रे बाइ
जउने घरी चमकल बतीसिया बा जमुनीय कऽइ
लोरिका के मरलसि मुरुछवा ओहि रे दम्म
उहे भाई ठाढ़इ कुरुसिया से गिरि रे गयनऽ (२१००)
अब फेरि दवरलि कलारिन देख रे बाय
जेतनाह रहनह् पीयकवा जे हऽरदीय कऽय
उठि उठि कऽरत गोहरिया जे देख रे बाय
आजु कहें सूनह ना सारवाह रे पियकवा
चल चली राजाह् महुवरा के दर रे बार
जमुनीय अइसीय टोनहिया जे होइ रे गयनी
अब फेरि आयल दूर देसियाह् रे दुआर
ओनकेह् मरले जद्रुइया जे अपने घरवां
आउ फेरि गयल कुरुसिया से भह रे राय
चलि कनि हल्लाह ना कइदह् सूबवा के (२११०)
टाढ़ा उन्हें दऽदइ गड़हवा में भसरेवाइ
अब सूनति ना धनवा बाइ रे चान्ना
अब सूनति ना धनवा बाइ जामुनिया
उहे भाई गइलि कलारिन हो डेराई

साचइ कहि हुंइ पारजवा राजवा से
बड़ा भारी निम्नाह ना उठना रे हमाऽरय
लोटवा में ले लऽइ ना पनिया धन जमुनिया
बेनाह् ले लेसि ना हथवां रे उठाई
जाके भाई हाथइ ना मुंहवा बाइ धोवत
बेनाह् देहलसि पांगुठवा रे डोलाई (२१२०)
जवने घरी ठडाह मीजजिया होइ रे गइनी
लो फेरि बइठल लोरिकवा समरे होई
आजु कहैं हाथव मरदवा बा बीर रे लोरिका
अब धन मनवह् कल रे निज मोर रे बात
आजु हम खइलींय ना पनवा जे देख सोपरिया
तोफाह् होइ गइल जारदवा जे देख हम रे तेज
आजु भाई मारि देलेसि गरमिया जे तूय रे कुरुसी
हमहूंय गिरलींय धरतिया मे भहरे राइ
ओही घरी सूनह ना हलियाह् लोरिके कऽऽ
धीरे धीरे करइ बोतलवाह् रे झम झूरऽई (२१३०)
भरि भरि देहलेह् जामुनियाह् धाइ रे जाती
लोरिकाह् पीयत दारुइयाह् जाइ रे जानऽ
जवने घरी दस पांच ना बोतल देइ ढकेरऽ
धीरे धीरे बमकति ना नसवा वा नजरी पऽर
अहीराह् पीयत ना छोड़तइ नाहि बानऽय
आजु भाई गीरल कुरुसिया से नि रे बानऽ
अहीराह् गयल बा भूंइया टंग रे लाई
तब तक बारह ना बजवा राति रे भइनी
जमुनीह् कइलेह् दूकनिया बाइ रे वन्नऽ
आपन ओयठिन सकेलले बाइ रे भठिया (२१४०)
बन कइ देलेह् केवरवा ओहि रे दम्म
जाइकेनि लोलति केवड़वां घरवां कऽ
आपन देलेस ना अदहन रे चढ़ाई
घरवांह् रामइ रसोइयां लागल बनावत
एक दम ले लेह् अहीरवा किहां रे जाला
आहीराह् के देखइ सारुपवा ओठियन भऽय
गीरल बानह् पीयकवा रे अनेरइ
जमुनीय लेलेसि ना घरवां लेइये चभिया
तलवाह् खोल्हत कोठरिया कइ रे बानी

जाइ के आपन गादीय गिरिदवा बाहू जठउले (२१५०)
तकियाह् देलेसि ना मुंड़वा पर रे धऽई
ओही घड़ी मारत कांछड़िया बाधन रे जमुनी
अब फेरि निकललि ना दुअरा पर चलि रे जाइ
जहवां पर गीरल मारदवा बा बीर रे लोरिका
अब धन हालीय आंगनवाह् लेइये जाइ
एक हाथ पेलति ना दुन्नोह गोड़ बटोरि कऽ
एक हाथ पेलति ना मुंड़वा जे ओहि रे बाइ
आजु कहँ संचेह ना टंगलेह् लेइ रे लोरिका
जाइ कनि देहलेनि पलंगिया पर देखऽ सुताई
ओही घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे लहयां (२१६०)
धियवाह् जोहति डाहरियाह् लेइ रे बानी
आजु करि काहांह् पीयकवाह् गिरि रे गइनऽ
अब नाहि अयनह् पीयकवाह रे हमारऽ
तब तक सूनह ना हलिया जमुनी कऽ
आपन भाई सोरहह सिंगारवा रे बनावऽत
वत्तीस अभरभ ना मुखवां लेइ चढ़ाई
जाइ कनि लेटलि पालंगिया देख रे बानी
अहीरेह् के आगेह् बोतलवा बाइ गिलासऽय
लोरिकाह् तनिकउ नाजरिया जब उधारऽय
पटसेनि धारत गिलसिया में नि रे दारूय (२१७०)
उहे भाई पीयति गिलसिया बाइ उठाई
ओही घरी देखह् ना हलिया ओठियन कऽ
ओहि घरी बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् करइ ना बेड़वांह रे जबाव
के भाई सुनवह् ना धनवां जे तूंय कलारिनि
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई आधीय ना रतिया जे निच रे लइया
बियहीय अकसर सागरवा पर नाड़े हमार
वियहीय रामइ रसोइया जे कइ क ताकत
सोइइ ताकति डाहरिया जे रहि रे आई (२१८०)
आजु हम कवनेह् ना चलवा से पहुँचि जाइ
अब फेरि जाइत सागरवाह् पर रे जूटि
तब फेरि बोलति ना धनवा जे बाइ जामुनिया
भइयाह् सुनवह् आहीरवा जे मोरे रे बात

अब तुय संचेहू पलंगिया पर सूतल रे रहब्रय
हम तोहार जातइ बीयहिया जे आनि रे देब
ओही घड़ी एतनाहू ना बतिया जे बाइ रे कहत
चम्फुय देलेंह गीलसिया में फेरि रे बाइ
अहीराहू ऊहव गिलसिया ठंटि रे दीहलेन
जाइके चुप सूतल पलंगिया पर मटि रे याय (२१९०)
ओही घड़ी सूनह ना हलिया जमुनी कऽय
ओठियन से रेंगलि जामुनिया धइ रे खोरी
देखऽ भाई आधीय ना रतिया निच रे लइयां
रेंगल चलि जालऽ सागरवा कइ रे भींटऽय
चनवा लेसि कह दीपकवा बाइ रे बइठलि
ताकत बाड़इ हरदिया कइ रे राहऽ
ओहि घड़ी जुटलि ना धनवा जे बाइ जमुनी
उहे भाई मारति खंखरिया जे धन रे बाइ
ओहि घरी बोललि ना जमुनीय रे कलारिन
अब फेरि भूलि गइलि ना लारमवा कइ उहाँ रे बोल (२२००)
आजु भाई केहहू ना पोखरवा पर दूरं देसिया
के भाई धुइंयाहू रऽमउले इहाँ रे बाइ
आजु तोहार काहंह ओतनवा जे हवं रे गोतऽन
कहवां पर टूटीय गइलिया बा रे बुनियादि
ओही घरी बोललि ना बेसवाहू जे बा चऽनइनी
अब धन मनबहू काहनवांह रे हमाऽर
आजु मोरे गउराहू ओतनवा जे हवं रे गोतऽन
अब गउरा टूटिय गइलिया बा बुनि रे यादि
आजु कइ दिहलीय चढ़इया जे हरदीय के
टिकलीय हरदीय सागरवा के हम रे भींट (२२१०)
आजु हम रामइ रसोइयां जे तप रे लगलीं
आजु सइयां गयल पियकवा जे बान हमार
का जानी कहांहू ना पिय खाइ के गीरनऽ
आवत बांड़ीय ना भींटवा पर हम तंवाई
ओही घरी बोलल ना बानीय रे कलारिन
अब धन मनबहू काहनवांहू रे हमाऽर
जेतनाहू रामइ रसोइयां जे बाड़ी बनउले
अपनेहू खायेह ना भरवा जे खाइ रे लऽ

जेतनाह् फल तूय जे रसोइया जे बाचि रे जानी (२२२०)
अब एही देबह् मा भीटवांह् रे कुराइ
आजु भाई मजि धोइ बरतनवा जे धन रे लेबऽ
चलऽ तोहार देइय पियकवा जे हम बताइ
.........रामइं रसोइयां धन रे चन्ना
अब भाई पीयई मंदिलवा लेइ रे पानी
आजु जेतना बचि गइल फालतुवा रे रसोई
पोखरा पर कूरइ सागरवां देइ रे भीटऽ
अब धिया माजति बरतनवा ओही रे दम्मऽ
सब रखि ले लेह् भाउकवा रे चढ़ाई
अब धन तोरति छोलदरिया कइ रे डोरी (२२३०)
उहे भाई ले लेसि ना तमुवा रे बटोरी
जमुनीय ले लेह तामुइया बा कंखि रे आई
चनवाह् ले लेह् भाबुकवा बाइ रे जाती
एकदम रेंगल ना ओठियन रे रेंगावल
अब दूनों गइनीय जमुनिया केनि रे घरऽ
जमुनीय धइलेसि छोलदरिया आंगने में
उहवां से रेंगलि ना धियवाह् बाइ रे जमुनी
जाके भाई दूसरि कोठरिया जे खोलि रे देइ
ओहि मेनि डेराह् बसहिया बा धर रे ववले
रसदि देलेसि ना सारहउ रे सामाइ (२२४०)
चन्नाह रुचि रुचि ना भोजन रे बनावऽ
तोहार भाई अइहंइ पियकवा तब रे थाइ
ओहि घरी बोललि ना धियवा जे लेइ ये चन्ना
अउ फेरि बोलति लारमवा क बाइ रे बोल
कहंवाह् गीरल ना सइयां बा मुख रे नन्नन
कइसे अइहंइ ना घरवांह् रे हमाऽर
ओहि घरी बोललि जामुनिया जे बा कलारिन
अब धन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
अब तोहसे रामइ रसोइया के बाइ रे मतलब
केहरउ होइहंइ पीयकवाह् रे तोहार (२२५०)
उहो भाई जइहंइ ना घरवांह् तोहरे एठियऽन
जाइकेनि करिहंइ ठहरिया पर जेव रे नार
अब मुनह् ना हलियाह् जमुनीय कऽय
अहीरा के लेइकह् सेजरियाह् पल रे सूतनीं

अब उहाँ होतइ बानह् ना खेल रे वाड़
जवने घरी उतरलि बा नसवा जे अहीरे कऽ
छुट्टाह होतीय पतोरियाह् देख रे बानी
ओहि घरी जूटलि ना धनवाह् बाइ जमुनिया
अब फेरि ले लेह लोरिकवा के पाछे रे पांछवां
जाइकनि देहलेनि कोठरियाह् रे बताई (२२६०)
लोरिकाह् रेंगल दुअरियाह् पर रे गयनऽ
जाइकेनि झांकत ना चनवाह् केनि रे बानऽ
ओही घरी बोललि ना बेसवा बा चनइनी
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् हो जबाबऽ
आजु कहैं हो हो ना दइवा मोर नारायऽन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लीलारऽय
एक ठेनि छाड़इ सावतिया गउरा में
अब चलि अइलीय हरदियांपुर रे पालऽय
आजु बावू रतियाइ ना घरवा केनि रहलें
हल्दी में भइलि सवतिया तइ ये यारऽय (२२७०)
एतनाह् सूनति ना धनवा जे बाइ ये जमुनी
अब फेरि जालइ ना अपनेह् मुसि रे काति

लोरिक हल्दी में चरवाहा नियुक्त

अब भयनऽह ना रे भुरूहुर
पूरबइ देलेइ काउववाह् बांय रे रोरऽ
ओहि घरी बोलल आहीरवाह् बीर हो लोरीक
अब तूंय सुनबह् ना धनवाह् मोरि कलारीन
आपन गादीय गिरिदवाह् घर रे देखऽ
अब हम नाहीय ना एठियन चलि रे जाऽ
अब हम जावइ ना अपने के खोजऽब रे कामऽ
ओहि दिन बोललि ना धनवां बाइ कलारीन (२२८०)
जमुनीय बोललि ना बेड़वांह् हो जबाबऽ
भइयाह् कवन ना जतिया हव तोहारऽ
तब फेरि बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
अब धन मनबह् काहनवा रे हमारऽ
आजु मोरे हवइ ना जतिया रे गुवालऽ
गइयाह् भईसिय तनिय ना चर रे वाहऽ
अपने के खोजब ना धनवा रिन रे काम

जीयइ खाये के उपइया जब रे करवऽइ
तब भाई रहबइ हरदियापुर रे पालऽ
नाहिं भाइ आगेह् ना पउवा रे बढ़इ बइ क (२२९०)
कवनऽउ देखबि मुलुकवा तहिं रे याई
एतनाह् कहति ना बतियाह् बाइ रे लोरीका
जमुनीय बोलिल लारमवा के बाड़ रे बोल
ओही घरी बोललि ना जमुनीय बा कलारीन
आहीर मनबह् काहनवाह् रे हमारऽ
सांझि सेह् बइठल दुअरवांह हमरे रऽहऽ
हम जात बाड़ी महुअर दर रे बारऽय
जाइकनि देबइ दरखसियाह् एहि रे दम्मऽ
अहीरूय तोहइ खोजीय देब रोजि रे गारऽ
ओही घड़ी रेंगल ना धनवा बाइ कलारीन (२३००)
अब चढ़ि गइलि चाननिया पर रे बानऽय
सूबवा के लागल कचहरी हरदी में
महुअर बइठलि कचहरी में नि रे बानऽ
ओहि घरी बोललि जामुनिया बाइ कलारीन
राजाह् मनबह् काहनवां रे हमारइ
एक ठे आयल आहीरवा दूरं देसी
अपने के धन्हा रुदमवा खोजति रे बानऽ
टिक तोरे रहिहंयि हरदिया रे वाजारऽ
तब फेरि बोलइ ना सूबवाह् रे महूअरि
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वां हो जबाबऽय (२३१०)
अब धन लेइयाह् आहीरवा के बलाई
ओहि केह् देबइ ना धनवा रोजि रे गारऽइ
एतनाह् कहत ना सूबवा जे बाइ रे महुअरि
अब फेरि रेंगलि ना ओठिग्रन से जमुनि रे बाइ
ओहि फेनि गइलि ना घरवाह् रे बखारी
अहीराह् बइठल कुरुसियाह् पर हो मारी
ओही घरी बोलल जमुनियाह् बा कलारी
अब भइया सुनबह् ना भइयाह् दूरं देसी
तोहार कइलेनि ना सूबवाह् रे बलावऽ
एकदम आगेह् ना अगवांह् जाइ जमुनिया (२३२०)
पिछबांह् रेंगल लोरिकवाह् बाइ रे जातऽय
बेलकुल लोहे के सामानियाह् बाइ उतरले

सादाह् पहीरेह् कापड़वाह् बाइ हो जातऽय
जउने घरी परि गइल चाननिया ओठियन के
दमकलि बइठल बाड़इ नाह् ना दर रे बारऽइ
जवने घड़ी परि गइल नाजरियाह् आहीरें पऽर
थर थर दंगइ कचहरीय होइ रे जालऽय
आजु कहैं हो हो ना दइबाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलेह् ना मझवांह् रे लीलारऽ
इ बीर कवनेह् ना जंतवा के खइले पीसानऽ (२३३०)
कवनेह् पियलेनि सागरवा के इहे रे नीरऽ
माइय के कइसेह् खटियवा जे रहे सुतावऽ
नवनी गड़लेनि आथरियाह् लेइये बाटऽय
ओहि घड़ी जाइ कह अहीरवा जे ठाड़ रे भयनऽ
बोलत बानह् लारमिया के उहं रे बोल
अरे बोलनह् ना राजवाह् रे महूअरि
दरियांह् करत ना वेड़वांह् जे बांड़ जबाब
आजु अहिरू काहंहँ ओतन ह तोहार हो गोतन
कहवां पर टूटिय गइलिया बा बुनि रे यादि
कहवां पर कइलह् चाढइया दूर देसिया (२३४०)
अब टिकि गइलह् हारदिया जे मोरे रे पाल
आजु मू कहांह् ना धंधवा जे कर रे करबऽ
हमके देब्यह् ना धंधवा जे आपन बताय
ओही घरी बोलल ना अहीरा बा बीर रे लोरिका
बोलत बानह् लारमवा के देख रे बोल
आजु भाइ सुनबह् ना तुहूंय रे एठिन कऽ
बोलल ना राजवा जे बानऽ महुअरि
बोलत बानह लारमिया के देख रे बोलऽ
आजु कहैं सुनबह् आहीरवा जे तुंय दूरंदेसी
का तुय करबह् रोजिगरवा जे एठिन मनाई (२३५०)
तब फेरि बोलल मारदवा वा बीर रे लोरिक
आजु राजा सुनबह् काहनवा जे देख हमारऽ
जेतनाह् हरदीय सहरिया जे तोहार हो बसल
एतने में परजाह् ना राजवा के सब लछिमी
हमकेह् देबह् साबेरवा जे गन रे बाइ
एतने में चलिहइं खरचिया जे देख हमारऽ
ओहि दिन दीनइं मोकमवा जे सूबा रे धइलेनि

कल्हियांह् दीनइ होई ना सत रे वार
आजु भाई अइकह् गन्तियाह् रे लगाइ कऽ
सब कनि चीन्हिय ना गोरुवाह् गाइ रे ल्या (२३६०)
······सवेरवाह् केनि रे जूनऽ
आहीराह् गयल ना घरवांह् बा दुआरऽइ
उठि केनि गयनंह् ना कुलवाह् कइ गलाली
अब फेरि कूचइ मागहियाह् ढोली रे पानऽ
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् अहीरे कऽ
आगे आगे रेंगलि जामुनियाह् बाइ कलारीन
पिछवांह रेंगल लोरिकवाह् बाइ रे जातऽ
ओही घरी सातइ घरीयवाह् दिन रे चढ़ऽल
तब लछमी छूटलि ना गोड़वाह् गोड़ रे बानी
अहीराह् टप्पाह बइठल बाह् मय रे दानऽ (२३७०)
जेतनाह् हांकलि हरदिया से लछमी आवइं
अहीरे के देनह् ना लाछमियांह् रे गनाइ
आपन आपन गनिकह् ना घरवांह् जे लवटि गयनऽ
अहीराह् लेहलेसि गोरुवाह् जे रे बटोरि
जेतनाह् गइयाह् भइंसिया जे हरदी में रऽहनी
एकदम ले लेह् सीवनवा बा चलि रे जाऽय
जेवन भाई पाकत ना गोहुँवाह् बा गोजइया
तोहरइ लेवइ ना गोरुवा जे डह रे राइ
आजु कहें सातइ ना घरियां जे घर चऽरउले
दिनवांह् दुपहर चऽढ़लवा बा लेइ रे जाय (२३८०)
आजु भाई मुंड़ियाह् उठाइ कह् गउवा ताकयं
हरियर लवकत सीवनवा जे देख रे बाइ
ओही घरी आइ गयल बारतिया जे लोरिके के
लछिमीय मांगति खोरकवा जे बानी हमाऽर
ओहि दिन छोड़ि देइ आगरवा जे ओठियन कय
हरदीय में चढ़नीय लछिमिया जे देख रे आइ
ओही घरी हरदीय गरदिया जे मिल रे ववलेनि
अब कइ देहलेनि गऽरदवाह् रे निसान
आजु भाई पाकति ना गोहुँवा जे रहे गोजइया
उहे भाई देखत किसनवा जे लेइ रे वाय (२३९०)
उहो भाई देखतइ किसानवा जे गिरि रे गयनऽ
रोवत बानह् रकतवाह् कनि रे आँसु

ओही सूनहु ना हलियाहु ओठियन कऽय
एकमत भयनहु कीसनवा हुऽरदी कऽय
उहे भाई रेंगनहु ना गरवाहु रे मिलाईं
एकदम चाढ़ल थाननिया पर रे जानऽ
अब फेरि चऽढ़लि चाननिया बाइ कचहरी
बोलत बानहु ना ओठियन रे दोहाई
अब कहैं राजाहु ना सुनिलहु मोरि महुअरि
एठियन मनबहु काहनवां रे हमारऽय (२४००)
आजु भाई बिहनइ लगवले चर रे वाहऽय
इय का दुपहर गरदवा देला उड़ाई
अब कहैं पाकति ना गोहुँवा कइ गोजइया
उहे भाई होईय गइल ना खय रे कारऽय
कइसे हम बालऽ ना बचवा रे जियइबऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलिया रे चुकाई
एतनाहु कहत ना बतवाहु बाइ रे ओठियन
आ फेरि राजाहु गयल ओहि दुब रे राइ
आज कहैं मुनबहु कीसनवांहु हुऽरदीय कऽय
आजु भाई लउरि ना लठिया जे हाथे रे ल्या (२४१०)
जाइ केनि मारह आहीरवा जे खेतवा पर
कहिये से कइलेसि हरदिया जे उदि रे याई
अपनेहु अपने के किसनवां जे जाइ रे बमकल
चलतइ मारब आहीरवा के बरि रे थाइ
जउने घरी चलि गयनं सिवनवा जे हुऽरदीय के
अहीराहु बइठल ना झांड़वाहु पर रे बाइ
जउने घरी बिगहहा फसिलवा जे परि रे गयनऽ
अगवांहु चढ़े के हीम्मतिया जे नाहि रे बाइ
ओही घरी अहराहु पाहरवा जे जोरि ये लिहलेनि
ना फेरि दुइसइ दुहइया जे ओहरे बाइ (२४२०)
आजु कहैं सुनबहु ना भइयाहु दूरंदेसिया
हुऽरदी के सुनि लहु ना लोगवाहु रे बनाइ
आजु हम गइयाहु भइंसियाहु ना कबों चरवले
ना त कतवं मांगिय बियरिया जे देख रे खाब
आजु मोरे लोहइ उठनवा बा लोहरे बइठन
लोहाहु हम परलिना हउवंह रे अधारि
कतहूँ के खातिर आपदवा जे सूबा रे होइहंऽ

उहाँ परि कइ देह्‌ रहनियांह्‌ पर रे ठाड़
जउने घरी जोड़ीय सामनवा जे होइ रे जइहंइ
दुइ हाथ चालति ना खेतवा पर तर रे वारि (२४१०)

लोरिक द्वारा भयंकर घोड़ा मंगर को वश में किया जाना-हल्दी से नेउरी की चढ़ाई

ओहि घड़ी अहीरेह्‌ पर छुटना जे देख सिपाही
अब चलि गयनहं जामुनिया ना केनि रे घऽरऽय
आजु भाई बोलनह सीपहिया जे सुबवा कऽय
अहीरूय तोहरइ बलउवा बा चाननी पऽर
तोहे भाई राजाह्‌ महुअरा के वानह्‌ बलावऽय
एतनाह्‌ सुनत मारदवा बीर रे लोरीक
उहे फेरि बइठल आंगनवा बाइ रे बाड़ऽ
तब तक बोलनह्‌ सीपहिया रजवा कऽय
किलवांह्‌ तोहरइ अहिरावा बाइ बलावऽइ
ओहि घरी उठि देइं मारदवा बीर रे लोरीक (२४४०)
रेंगल जानह ना किलवा के हो पासइ
तबसे ऊहाँ डाटलि कचहरी बा चाननी पऽर
उहाँ मंत्री बोलत ना बतिया वाइ लहाई
आजु कहें राजाह्‌ ना सुनिलह्‌ मह रे राजा
एठियन मनबह्‌ काहनवांह्‌ रे हमाऽर
देख भाई जबरह्‌ ना परजाह्‌ भयल तोहार नेउरी
अब फेरि अड़लेसि ना जमवाह्‌ रे हमाऽर
आज तुंय भेजि दह्‌ आहीरे जे नेउरी में
जाइकनि ऊगहि ली आवउ सब लगान
ओहि फेरि जातइ ना उहवां जे जुझि रे जइहंऽइ (२४५०)
दिनवांह्‌ दिनकइ झागड़वा जे जाइ ओहाइ
आजु कहे सुघरि ना अहीरी बाइ रे एठिन
जइसे उगलि दुइजिया के बाइ रे चांद
अहीराह्‌ जूझिय नेउरियाह्‌ मेंनि रे जइहंऽ
ओके आनि के भोगह्‌ तुय रनि रे वास
ओहि घड़ी बोलल ना रजवा जे बाड़इ महुअरि
बोलति भाई वानह लारमवा के देख रे बोलऽय
अहीरू तूं जाबह्‌ नेउरियाह्‌ पुर रे पालऽ
तोहइं मीलति बाड़इ नेउरियाह्‌ पुर रे पालऽ

उहवां पर परजाह् जाबरवा जे होइ रे गयनऽ (२४६०)
आजु मोरे देलेनि लागनवा जे देख रे तोरी
आजु तुंय जाइकह लागनवा जे सुन्न रे कइकऽय
बइठइ खावह् हारदिया जे देख बाजारऽय
तोहकेह आधीय हारदिया जे देइ रे देबऽइ
आधा देइ देबइ ना किलवाह् भवं रे नार
आधाह् देइ देब ना रजिया जे इहे हरदिया
आधे के होइ जाह् आहीरवा तूं पटि रे जात
बाकी भाई जाइकह् लागनवा जे लेइ रे आवऽ
तब हम जानीय आहीरवा के हव रे बन्स
ओही घरी बोलल ना बानह बीर रे लोरीक (२४७०)
राजाह् मुनबह् सुवाह् एठिन हो हमारऽय
आजु भाई सुनिलह् ना सुब्बाह् मोर महुअरि
देख भाई नगेल ना पयेरहि नाहि रे जाबऽइ
आजु भाई रहिहंइ ना हमके सर रे दारऽय
ओइसंइ रहिहंइ ना हामइ लेइ हो पारऽय
ओइसंइ रहइ पाहरवा पर होसि रे यारय
एतनाह् बोलत ना बतियाह् बाइ रे ओठीन
तब तक सूनह हारदियाह् कइ रे हालऽ
अब फेरि बोलइं कचहरी के सब रे लोगऽय
अपने में कऽरत मन सउदाह् देख रे बानऽय (२४८०)
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
केहू के खोजे के मिरितिया जे देख रे लागय
एकर भाइ सहजे में मिरितिया जे आइ रे जाइ
आजु कहैं देइदह् ना घोड़वा जे उन्हें कटनहा
घोड़वा के जाबह् ना देबह मंगर बताइ
आजूय जातइ ना खोलिहंइ जवने घरी ढकना
घोड़याह् आलर परनिया जे लेइ रे लेइ
आजु कहैं सहजे में झागड़वा जे टूटि रे जइहें
चनवा के लेइकह् भोगह् नाह् रनि रे वास (२४९०)
आरे सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
राजाह बोलह महुअरि देख रे बानऽ
आजु भाई सुनबह आहीरवा तूंय ए लोरीक
आजु भाई एक दुइ ना घोड़वा के तूं ए झंखेह्

घोड़वाह्, बान्हल तबेलवां में बानं पचासऽइ
जाइकेनि लेइलह्, तूं घोड़वा रे बराई
ओही घड़ी हलि गयल आहीरवा ताबले में
एक ओर से लागल ना हंथवा अन रे दाजय
केवनो हाथ धरतेंय धरतिया में गिरि रे जानऽ
के केंह् धऽरत ना जइहंइ करि रे हंवऽ (२५००)
आजु पीठि देलेंह्, ना निचवाह्, रे ओनाई
अइसेह्, अइसेह्, ना घोड़वन अंदे दाजइ
निकलि गयल पूरुबवा केनि रे ओरऽइ
ओड़वा पर बान्हलि ना घोड़िया बाइ भिलासी
उहे भाई ओरेंह् बान्हलवा बाइ रे जाई
ओहि घड़ी धइलेसि ना पीठिया पर रे हांथइ
घोड़ियाह्, बोललि लारमवा कइ रे बोलऽइ
आजु कहें सुनबह्, ना भइया बीर रे लोरकि
एठियन मनबह्, काहनवांह्, हमारऽ
तूं भइया हमरेह ना पीठिया पर हांथऽ (२५१०)
अब ठाड़ भइलह्, ना हथवां रे तोहारऽ
आजु कहें जवने ना दिनवा बेटवा जनमल
अब धइ देलेंह्, पिरिथिमी बाइ रे लातऽ
ओनके लीखल असवरवा पहिले कऽ
भइया चढ़िहंइ अहीरवा बीर रे लोरिक
आउ नाहीं ओकर त चढ़िहंइ सब बारऽ
दूसरेह्, के घोड़वाह्, कटनहा होइ रे गयनऽ
अहीरे के होइय जाईय ना पूज रे मानऽ
ओही घड़ी सूनह ना आहीरवा कइ रे हालऽ
अब भाई देखह्, ना घोड़िया के सुन रे बातऽ (२५२०)
घोड़ियाह्, बोललि ना बानइ लारमें से
आजु कहें भइयाह्, ना सुनिलह्, बीर रे लोरिक
एठियन मनबह्, काहनवां रे हमाऽर
देख भाई छतरीय वरगवा जे मंगरू हवंऽ
अब फेरि तेलीय ना हउवं मलि रे कार
आजु भाई बहुत ना घोड़वा जे जब रे सउखल
ओनकर कइलेन ना कसि कह्, रे संवार
ओहि घड़ी सूनह्, ना हलिया जे ओठियन कऽय
अहीराह्, रेंगल चाननिया पर बान रे जातऽय

जहंवा पर बइठल ना राजवा जे बानऽ महूअरि, (२५३०)
आगा फेरि बोलत आहीरवा जे बानऽ रे जाइकऽ
आजु कहँ सुनबह् जे मोरे महूअरि
आजु हम देबह् ना घोड़वा जे एहि रे दम्मऽ
तब हम जाइंय नेउरिया जे पुर रे पालऽ
अब फेरि बोलल ना रजवा जे बाड़े महुअरि
अब अहीर मनबेह् काहनवां जे देख हमारऽ
जेतनाह् बान्हल ना घोड़वा जे बान तऽबेलो
अब भाई देखलह् ना घोड़वन के अंदे दाजी
एकदम बान्हल ना घोड़वा जे हउवें पचासऽ
एक ठेनि लेइलह् तूं अपने के देख बराई
तब फेरि बोलल अहीर बा बीर लोरीक (२५४०)
दरियां कारई ना बेड़वां जबाबऽ
आत मुनतह ना राजा मोर महराजा
एठियन मान काहनवां हमाऽरय
कहवां बाड़इ ना घोड़ा हो फटनहा
उहे देदह् ना हमहूं के तूंहऽ
तब्बइ जाबइ नेउरियापुर पालऽ
एतना बताइ मंत्री थपले रहंनऽ
हंसत्त बानऽ कचहरी के सब रे लोगऽ
आजु भाई केहु के मउतिया खोजे के परऽय
अहीरे के आइलि बा मउति नगि रे चाई (२५५०)
आजु कहँ जाइकह ना कोठिया धधकावा
ताला देब्या तबीले खोलवाई
जाइकनि देखउ ना घोड़वाह् लेइ होइ ये पइलें
घोड़वा के टारी ढकनऽ ओहि दम्मऽ
उहे भाई देखतइ ना मंगरा जे खाइ रे जइहें
दिनवा के दिनकई टूटी जाई कल रे कान
आजु भाई बोलल ना राजवा जे बाड़े हो महुअरि
तब अहीर नाहिय तऽ काहना जे नाहिं रे मनब्यऽ
तोहइ देईं देईंय कऽटनहा जे हमरे घोड़ा
साइति के काटि कह जिनिगिया जे लेइ रे लीहंऽ (२५६०)
ओकर नाहिं होबई ना हमहूं जे मलि रे कारऽ
एतनाह् बोलत ना सुबवा जे बाइ महूअरा
सुबवाह् लेलेसि आहीरवा जे बाटि रे ओर

आजु भाई हमरेह् जीनिगियाह् केनि ये कऽरने
अइसन होइ जाउ ना घोड़वाह् रे तोहाऽर
आजु हम देखब ना घोड़वाह् रे काटनहा
कइसे काटिकहि जिनिगिया जे लेइ रे लेइ
जउने घरी रेंगल आहीरवा जे देख रेंगावल
अब हलि गयल कोठरियाह् केनि रे बीचऽ
जाइकेनि खोलइ ना ताला कोठिया कऽ (२५७०)
आ फेरि देलेसि कोठरिया हो खोली
अउ जहाँ बान्हल ना घोड़ा बा तबेले
अउ फेरि सूनह ना डांकि के हो गयनऽ
जाइकनि पान पटरा उधिरावऽय
जवने घड़ी दूनो बगल में बगलियाइ कऽ
झांकत बाड़इ ना ओठियन हो गाड़ा
आजु कहैं मारह ना लिदियाह केनि रे मऽरने
बलहा गयल ना रहनह् रे झंकाइ
अंखिया पर वऽसल ना किचर जेके रे बऽहई
दोमउर लागल किचरवा जे उहं रे बाइ (२५८०)
ओहि घरी जूटल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
एकदम कहि गयल गड़बड़वांह बीच रे जाइ
जाइ कनि करत ना लिदियाह् दूनो बगल में
अब फेरि कयलइ ना पेटियाह् तर रे बेरि
ओही घड़ी पेलत ना पेटवा पर बाड़ें हांथवा
घोड़वा के लेलेसि ऊपरवांह् रे उघारि
लिदिया के ऊपर बा घोड़वाह् ठाड़ रे भइनऽ
अहीराह् ठाड़ाह ना अहह पज रे बाइ
जेतनाह् रहनह् ना पीठियाह् पर रे कुसवा
उहे भाई चटलेसि चाकुइयाह रे बनाइ (२५९०)
आजु भाई अंखियाह् ना किचर दुनो ओर भयन
उहो भाई चक्कू से काटतवा जे लेइ रे बाइ
आजु भाई लेइकह ना घोड़वाह् रे निकलि कऽ
अब फेरि निकलल ना डांड़ेह् देख रे बाइ
आजु कहैं धइलेह् चुल्लुलवा जे घोड़वा कइ
ले ले जाला सेनुर सागरवा के देख रे भींट
आजु भाई देखइ ना लोगवा जे हरदीय कऽय
घर घर गयल टांटरवाह् रे दियाई

आजु बाबू छूटल ना घोड़वाह् जे बाइ काटनहा
केकरि आइलि माउतिया बा नगि रे चाइ (२६००)
ओही ना दिनवाह् राम समइयाँ
के फेरि ओहूय सामइयाह् कइ रे हाल
उहवाँ से गयल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
घोड़वाह् ले लेह् जामुनिया जे घरे रे जाइ
आजु कहँ लेइ कहं खड़ंहुरा जे हंथवा में
अब सोझे लेइ गयल सागरवा में कर रे ठाड़
आजु भाई देइ दे खारहवा लेइ रे ओठियन
उहे भाई तानह् मानह रे बनाइ
देहियांह मलि मलि ना घोड़वा के लगनह धोवइ
किवर धोवत अंखियाह् कइ रे बाइ (२६१०)
आजु कहँ धोइ कह ना लेइ ये जमुनी के घरवाँ
पहिलेह् देलेसि ना दूधवाह् मरि रे अंगवा
घोड़वाह् पीयत मरीचियाह् बाइ रे दूध
ओकरेह् पीछेह् ना झुरियाह् देइ आगरिया
आ फेरि चढ़लि बदनियांह् पर रे बाइ
ओही घरी धीकल रहिलवाह् कइ ये दलिया
अब फेरि देलेसि ना अगवा जे ओन्ह रे धऽइ
आजु कहँ खालह् ना खइयाह् रे बलहवा
दस रोज भयल ना सेउवा जे लेइ रे बाइ
जवने घरी दम्मइ ना घोड़वा के होइ रे गयनऽय (२६२०)
ठनकल बानह हरदिया जे पुर रे पाल
जवने घरी बाजलि सबदिया जे मांगरे कऽइ
घर घर गयल टांटरवाह रे दियाई
अरे देखइं ना लोगवाह् हरदी कऽय
आ फेरि दांतलि अंगुरिया बायं चबातऽ
आजु बाबू सबकेह् ना घोड़वाह हउ काटनहा
अहीराह् के होइय गयल बा पूज रे मानऽय
ओही घरी देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अहीराह् कइलेसि ना सेउवाह् मंग रे कऽय
दुनहूं से लवटलि ना देहियांह् रे बनाई (२६३०)
ओहि जउं नागर हरदियाह् पुर रे पालऽय
ओहि घरी देखह् ना हलिया ओठियन कऽय
घोड़वा के धऽइलि रहिलवा जे भेंइ रे दाली

एक नादे चभकई ना दूधवा रे मरीचऽय
घोड़वाह् सउखल हरदियापुर रे पालऽय
तब फेरि बोलल ना घोड़वा जे बाइ बलहवा
लोरिका ते मनबेह कहनवाह् रे हम्मार
आजु चढ़ि जावेह चाननिया जे रजवा के
अब मांगि लेबेह ना हमरा जे देखु सामान
अरु भाइ लेइ कह सामनिया जे तुय रे अवतऽय (२६४०)
तनि एक लेइति ना बलवाह् अन रे दा (ज ?) इ
ओहि घरी सूनह ना हलिया जे ओठियन कइ
अब फेरि ओहूय सऽमइया कइ रे हाल
अहीराह् रेंगल जमुनिया जे घर से गयनऽ
एकदम चाढ़ीय चाननीया जे लेइ ये जाइ
जहवां पर लागलि काचहरी बा महुअरि कऽय
दमकलि बइठलि चाननीया पर दर रे बार
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बा वीर रे लोरिका
सुबवा तूं मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
घोड़वाह् मांगत वा आपन रे सामनिया (२६५०)
का भाई बानीय ना बेलकुल रे सामान
ओही घरी बोलल ना रजवा जे बाइ महुअरा
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु भइया एक दुइ चरजमवा के कवने रे गनती
जाइ कनि देखलह् ना टंगले जे बान पचास
जवन तोहरे मनेह् ना हो जाई कच पेटाड़य
तवने एइजा सउखीय समनिया जे कटि रे जाइ
ओहि घरी बढ़ियांह् बरवले जे वीर रे लोरिका
एकदम देलेह् चाननिया बा चलि रे जाइ
जवने घरी पटकत ना घोड़वाह् केनि रे अगवां (२६६०)
उहे घोड़ा जरि मरि भयनह ना खंगार
आजु कहँ बाउर ना चेलवा त बउ रे रइले
अहीराह् हऽरि गइल ना मतियाह् रे गियान
तनी एक ढिलइ बन्हनवा जे हमरे कइ दे
हम देख लेइँय ना सुबवा के मनु रे साथ
इयका देलाह् टुटहिया जे फंस लगिया
इयका देलाह सरजमवाह् रे हमाऽर
आजु मोर सोनइ अखरवा जे हउ रे पाखर

सोनवाह् के जिरहिय ना बकसलि रे लगाय
आजु कहें बारह ना बरवा के हमरे मोतिया (२६७०)
गोड़वा के देइ हं इ नेउरवा जे एहि रे दाम
जेवने घरी बान्हि जाई नेउरवा रे गोड़वा में
जेकर भाई साठिय ना कोसवा में जाइ आवाज
अब कहें इहउ सामानिया जे मांगि ये देलेनि
घोड़वाह् करत बानइ नह इत रे राज
ओहि घड़ी सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽ
अहीराह् सुनऽति जबबिया जे बानऽ
एकदम रेंगल महुअरि किहां गयनऽ
अहीराह् चऽढ़त चाननिया पर बानऽ
आजु कहें राजाह् ना सुनिलऽ मह रे राजा (२६८०)
एठियन मनबह् काहनवा रे हमाऽरऽ
आ छोड़ि देब... ना हमरव रे पड़ादा
हम भाई आलर जिनिगिया लेइ रे लेबऽय
नाहिं त कुलह् सामनिया सूबा रे देइ दऽ
हमहुँय जांइ नेउरियापुर रे पालऽय
ओहि घरी देलह सामनिया राजा महूअरि
एकदम लेलेह् लोरिकवा बाइ रे जातऽय
जाइ कनि देलेसि सामनिया घोड़ा के आगे
घोड़वाह् हंऽसल मंगरवा ओहि रे दम्मऽ
ओहि घड़ी कइलस सिंगारवा ओहि रे दम्मऽ (२६९०)
अहीराह् कसई ना ओहि दिन रे सामाना
जिनकर सोलइ आखरवा कसि रे पाटऽ
मुहंवा में देलेसि ना अकसर रे लगाऽमे
मथवा पर देइ देइ चिटुकवा घोड़वा के
जे मह गोलीय ठहकवा खाइ रे जालऽय
आजु भाई बारेह ना बरवां देख रे मोती
मोतियाह् गीरल कोतलिया कइ रे बानऽ
अब बान्हि गऽयल ना गोड़वा में देख नेऊर
जेकर बान्हत नेउरवा जे घह रे राय
ओहि घड़ी देखह् ना हलिया जे घोड़वा कऽ (२७००)
देख भाई ऊगलि दुइजिया के बाइ रे चांन
आजु कहें सूरुज ना ओरिया जे तकि रे जाला
मंगराह् घोड़ाह् ताकलवाह् ना बानहि रे जात

सूनह् ना हलियाह ओठियन कऽय
अहीराह् कऽरइ ताखतवाह् अस रे नानऽ
जाइकनि कऽरत ठाहरियांह् जेव रे नारऽय
ओही घरी बोलत जावनिया बा बीर रे लोरिका
अब धन दुन्नोह् ना सुनबह् रे हमारऽय
गरजति रहह् न पलियांह् रे हरदियाँ
हम भाई जात बांइ नेउरियाह पुर रे पालऽ (२७१०)
आजु जहं जातइ नेउरिया में जुझि रे जाबऽ
दिनवाह् दिनकह् टूटीय जाइ कल रे कानी
नाहिं हम लऽवटि ना अइबे जे नेउरीय से
एहि जउ नगर हऽरदियाह् रे बाजारऽय
आजु हम आधाह् ना लेइ लेबि रे हऽरदिया
आधाह् लेइलेब ना किलवाह् रे बंटाई
आधे के होइ जाव हमहूँ ना पटि रे दारऽइ
एतनाह् कहत ना घरवांह् बाइ रे लोरिका
चनवाह् जमुनीय सूनई न कन रे पारी
ओहि घरी खाईय भयल बा सम रे तूलऽय (२७२०)
अहीराह् गावइ ना बीरवा मुखवा में
खोलत वाड़इ गांजड़वा कइ रे बानऽय
आजु बाकस खोलीय गांजड़वा बाइ पहीरत
ओहि दिन अंगवाह् ना पहिरत बाइ अंगरखा
गोड़वा में गुलइ बदनिया रे तवांनऽय
आजु भाई तरकुस ना गुजवा पनही कऽय
उहे बीर चांपइ ना एड़वा रे चढ़ाई
के फेरि साठिय ना गजवा कइ दुपट्टा
अहीराह् बान्हइ ना पेटिया रे सम्हारी
आजु कहैं छप्पन ना छुड़ियाह् पन कटारी (२७३०)
अहीरे के झुकि गइलि बगलिया में तर रे वारि
आजु कहें धइले पगरिया जे लरमें कऽय
जवने भाई ले गई हवरूवा बा घह रे राई
आजु कहें बायेंह ना हथवा में थामि रे लेबइ
दहिनेह् थाम्हत खिचुलिया तर रे वार
ओही घरी डांकिय मांगरवाह् पर रे गइनऽ
अब फेरि छोड़त लऽगमिया जे आपन रे बाइ
जउने घरो तन्निक आसनवा जे बाइ छुववले

घोड़वाह् छोड़त धऽरतिया जे बान रे दांम
आजु कहें घूमत ना धऽरतिया लेइ रे बंवड़ल (२७४०)
आ फेरि घूमत बा हरदिया जे पुर रे पाल
ओहि घरी हहरई ना लोगवाह् हऽरदी कऽ
ओही भाई दांतन अंगुरियाह् रे चबानऽ
आजु कहैं हो हो ना दइबा मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलेह् ना मंझवा रे लिलारऽ
आजु भाई अइसन अदिनवा निय रे रऽइनऽ
घोड़ाह् छूटल काटनहा लेइ ये बानऽ
आजु केकर आइलि माउतिया नगरिचाई
एइ जाउं हरदीय ना बीचवा रे बाजारऽ
घोड़वाह् मारिकेह् भंवकिया धरती ले (२७५०)
अब घोड़ा उड़ीय आकसवां चलि रे जालऽ
नीचेह् छोड़लेह् धऽरतिया उह रे ऊड़ल
एकदम छोड़लेह् ऊपर बा अस रे मानऽ
आजु भाई बादर ना रेखवाँ रे छोड़ावऽ
नीकलिलि गयनहं नेउरियापुर रे पालऽ
एकदम गयनंह् जंगलवा छिउला के
जाइ केनि ओहीय ना गयनह् रे उतारी
ओही भाई उतरलि मारदवा बीर रे लोरिका
घोड़वाह् बन्हलेह छिउलिया कइ रे पेड़ऽ
पीठिया पर धऽरई दुपटवा अहिया पर (२७६०)
छन सेह् रहलंह् ढरकवा लेइये छांहऽय
ओही घड़ी सूनह ना हलिया जे ओठियन कऽय
के फेरि पालाय नेउरियाह् कइ रे हाल
आजु कहें राजाह् न रहनह् हरेवा रे परेवा
खेलइ गयल जगलवा में रहें अहीर
ओहि घड़ी पड़ि गयल ना नजरिया जे घोड़वा पर
घोड़वाह् बान्हल छिउलियाह् केनि रे डाल
आजु कहैं सुनबेह ना तुहउं रे पहरुवा
पहरू ते मनबेह काहनवाह रे हमार
अब चलि जाबेह् छेउलियाह् केनि रे बऽनवा (२७७०)
ओकर लेइयाह् ना पतवाह् रे ठेकान
के फेर हवइ ना रहिया के रह रे चऽल्लू

ओके होइ गऽयल पयंड़वा में बाइ रे भूल
एक ठे हवय ना घोड़वा के सब रे दागर
उहे भाई घोड़ा बेचनवा बा चलि रे जात
रेंगल पहरुवाह् बाई रे भींटवा
एकदम हलल छिउलियाह् पेड़ रे जाई
एकदम रेंगल ना उहऊय रे रेंगावऽल
अब चलि गयनह् छिउलवा के देख रे डाढ़
आजु भाई ढरकल अहीरवा बा बीर रे लोरिका (२७८०)
घोड़वाह् बन्हले छिउलिया के बाइ रे डार
ओही घरी जुटि गयल ना मीतवाह् रे पहरुवा
अब फेरि बोलत लारमवा के बान रे बोल
आजु भइया कहां ओतनवा जे हउ रे गोतन
कहवां पर टूटीय गाइलि अब बुनि रे याद
कहवां के कइलह् चढ़इया तु दूरंदेसिया
अब भाई घामें में चढ़लवा बाड़ रे जात
ओही घरी बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
संगियाह् मनबह् काहनवाह् रे हमार
देखऽ भाई गउराह् ओतन ह गउरा हो गोतन (२७९०)
गउरा में टूटिय गइलि बाह् बुनि रे यादि
आजु कइ देहलीय चढ़इया जे नेउरीय के
उतरल बाड़ीय छिउलियांह् केनि हो डाढ़ि
तब फेरि बोलल ना बानह रे पहरुवा
भइयाह् मनबह् ना कहना तूं हमारय
जब भाई नगर गउरवां घर रे हवं
कोइ तोहार हीतइ ना मीतवा लेइ ये रहनऽ
ऊ भाई देवह् ना हमहूं ए बताई
तब फेरि बोलल अहीर बीर लोरिक
दरियां करइं ना बेड़वां जबाबऽ (२८००)
जवन मितर हमार ले हो रहनऽ
हमरे नगर गउरा गुजरातऽ
देखिल दुन्नो ना मिलऽ गुली डंडा
खेलत रहलीं ना ओही हो राजऽय
ओहि दिन सुन ना हलिया ना ओठियन कऽ
हमहूं भइली न चोरवाह् हो आजऽ
मीतवा भयल ना सहुवा हमारऽ

जउने घरी देखइ ना गुलिया मारय टेड़ाय
उ टेड़ गईल भकतलवा के बानऽ्य
हमहूँ गइली ना उहां हो जुड़ाई (२८१०)
तब तक दउरल ना मीतवा हो गयल
उ भाई गयल ना मीतवा रे ठाड़इ
उ भाई लेलेसि ना गुलिया हथवा में
उ हथ मारत ना चपवा जे बानऽ
आइकनि हमरे न मंथवा गड़ि रे जाला
थोड़ा बही घुरिया रे जाई
आजु कहें हमरेह् नजर मीत पहरुवा
अब कालि कवनेह् मुलूकवां में भागि रे जाई
ओनकर पतउ ठेकानवा जे देख रे नाहि नी
हमहूँ आयल ना बाड़ी रे नेउरी में (२८२०)
कतउं तो ाोह ातालि हरवा जे देख रे बाई
तब फेर बोलल ना मीतवा जे बाइ पहरुवा
उहे भाई होलइ ना बतियाह् रे बेजार
हमहीं हईंय ना मीतवाह् रे पहरूवा
लोरिक मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु हम तोहरे डहरवां उहवां से
अब भागि अइलींय ना गउरा जे तोहरे छोड़
आइ केनि नेउरी न पुरवा में टिकि रे गइलीं
अब नाहीं गइलींग गउरवा जे हमरे गाँव
··· ···सूनह् ना भइया उ ठिकाने (२८३०)
उहे भाइ रोवे लगनऽ गरजोरी
आजु कहें लोरिका पहरूवा के रोइ दे
झरल जाति बा तरुनिया के पातऽ
अब फेरि बोलल मऽरद बीर लोरीक
अब मोत मनबुय काहनवा हमारऽ
देख जवन टूटल लागनवाह् नेउरी में
जबराह् भयल बा सूबवा हो तोहारऽ
उ रोल नाहिय वा देलेसि हऽरदी में
अब हम तीनि बरिसवा बीति रे गयनऽ
अब हम ऊगहउ ना अइलींय रे लगानऽ (२८४०)
एतनाह् कहत ना बतिया जे लइ ये ओठियन
ए फेरि ओहू समइया के सुन रे हाल

आजु कहें सुनबह् ना मीतवा पहरुवा
अब मीत मनबह् काहनवा हमारऽ
कइसन बाड़य ना लोहवा सुबवा कऽय
कवन कवन ना हवं हंथियारऽय
तब फेरि बोलल ना मीतवा पहरुवा
अब फेरि बोललि आरथवा बनाई
आजु कहैं सुनबह् अहीर ना बीर रे लोरीक
मीतवा तूं मनबह काहनवांह रे हमार (२८५०)
अब फेर पहिलेह् ना छोड़िहंइ रे पिलइया
सरगे में रहोय ना घोड़वाह् रे तोहार
उहे भाई सकुलीय पिलइया जे छोड़ि रे देइहंय
पोतवा धइले ना देहइंय रे गिराई
आजु कहैं गिरबह् धरतिया में मीत रे तोहउँ
मथवा देइहइं ना ओठियन बिल रे गाइ
एक डेरा इहय ना सुबवा के देख रे हवंय
एकरे से आगे ना लोहवा जे बड़ रे तेज
आजु कहैं ओकरेह् न माथवांह् लेइ ये पीछे
उठि जइहं हाथे बरमवा न कइ रे फांस (२८६०)
उहे भाई बरम्हां का फसिया जे अन्नर हंव
ओमें नाही बचिहंऽइ जोनिगियाह् तोहाऽर
आजु कहें बोलल अहीरवा बा जे बीर रे लोरिका
तव मीत एमा उपइयाह् कइये बा
आजु मीत जवनि डाहरिया जे देख रे होइहंऽय
तवन हमइ ना देबइ रे बताय
ओही घरी बोलल ना मीतवाह् रे पहरूवा
तूंह मीत मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
जउने घरी जलियाह् अदरवा जे फांसि जायऽ
अब जुटि जाया ना सरवाह केनि रे बेलि (२८७०)
जाइकनि एक्कउ ना सरवा जे काटि रे परबऽ
बरम्हा के फंसियाह् गीरिह ना भह रे राय
तब तक ओसारि ना आ जाई देख रे तोहरऽउ
अब फेरि देबह् ओसरिया जे लेल रे कार
एतना मीतवा बाइ पहरुवा
लोरिकाह् सूनइ ना कानवा रे लगाई
ओहि ठिन रेंगल ना मीतवा बाइ पंहरुवा

लोरिकाह् बोलल लारमवा कइ रे बोलऽ
देखऽ मीत पोलवाह् खुलइया ना देख रे पावइं
अब तूंह देहह् डहरिया हो बताई (२८८०)
ओहि दिन रेंगल ना मींतवाह् बाइ पहुरुवा
एकदम रेंगल डेवढ़िया पर बान रे जात
उहवांह् बनत समरवा बा देवढ़ी पर
सब केनि देलेह ना सूबवाह् बा बंट रे वाइ
ओही घरी पहुँचल पाहरुवा जे बाड़े रे मीतइ
अब फेरि पूछत ना सूबवा जे पुनि रे बाई
आजु कहैं सुनबेह् ना मीतवाह् तोइ पहरूवा
कहनाह् मनबेह् ना ओठियन रे हमार
के फेरि रहल ना डहरे के डहर रे चालू
ओके होइ गयल पयंड़वा में रहल रे घाम (२८६०)
उहे भाई छुलह् ना छुलवांह् धन रे छाहे
घोड़वन के धड़कल छाहेलवा में देखु रे बाइ
ओहि दिन एतनाह् ना बतियाह् लेइ रे कहले
घोड़वाह बान्हि कह ना सुतल ओहि रे बानऽय
उहो भाई जुटलीय जब हमहूँ छिउली बन में
जाइकनि पूछलीय ना बतियाह् अर रे थाई
आजु फेरि पूछलीय ना बेल्कुल रे जेहालऽ
ना त फेरु हवंह ना घोड़वाह के सउरे दागर
ओहु मेंनि कसउं ना घोड़वा बेच रे जातऽय
ना त केहू हीतइ दोसतवा हउ तोहारऽय (२६००)
आइल बानऽ भेंटइ दिगरिया मुल रे कातऽ
उहे सूबा तोहरइ ना दुसमन देख रे हउवां
जवन भाई सुबाह् हरदिया के देख रे हऽउ
ओनकर तूं जबरीय ना कउड़ीय जे आहि रे लेहलह्
आपन लेहल चाहतवां जे देख रे बाय
आइ गऽयल हरदीय ना सेनिय मलि रे कारऽय
नेउरी में लेइय ना रोलिया जे आपन चुकाई, ओही दिनवांह् रे समइयां
आजु दुन्नोह् ना भइयांह् बाँनऽ रे बईठल
इ बात सुनलेनि ना कानवाह् रे लगाई
आजु कहैं सुनबह् ना भइयाह् मोर परेवा (२६१०)
आज मुदई आयल ना बानह् लेइ हो गोइड़ें
झगड़ाह् मचीय नेउरिया में बड़ रे वारऽय

तब तक सूनह ना हलियाह् लोरिके कऽय
घोड़वाह् के करत सिंगारवाह् ओहि रे दम्मऽ
जिन्हकर सोनइ अखरवा बा सोन रे पाखरि
जिरही के बकसइ ना लगनीय रे लगावां
जेनकर माथे के चिटुकवाह् बान्हि रे गऽयल
जाइकेह् गोलीय ठाहकवाह् बाइ रे खातऽ
आजु कहँ डांकिय भयल बाह् अस रे वारऽय
आजु भाई तन्निक असनवा जे बा छुवावत (२८२०)
घोड़वाह् छोड़लेह बाड़इ ना देख रे धरती
मंगर छोड़िय देलेह् बा असरे वानऽय
आजु कहँ बादर ना मेनि चलि रे गयनऽ
मंगराह् नाचत करगहीय बाइ रे नाचय
ओही घरी सूनह ना हलियाह् मुबवन कऽय
हथवाह् में लेनह् दुरुबिनियाह रे उठाई
उहे भाई लखइं दुरबिनवां सरगे में
घोड़वाह् नाचत करगहीय बाइ रे नाचऽय
उहे भाई लेइकह् पिलइयाह् किहां रे गयनऽ
सकुलि के देलेनि ना अंखियाह् रे देखाई (२८३०)
सकुलिय देखलेह् दुरबिनवा से संऽरगे में
घोड़ाह् नाचत कारगहीय बाइ रे नाचऽय
उहवां से सकुलिय पिलइया जे छुटि रे गइलीं
उहे भाई निकलि आकसवा में चलि रे जाई
जाइ क ऊहे घोड़ाह् के पोतवा जे धइये लेहलेन
एकदम खिचलेह् ना निचवांह् जाति रे बाय
ओहि घड़ी घोड़ाह् ना ले ले खलु अम्मर
अब फेरि घोड़ाह् करीबवा जे रहि रे जाय
ओहि दिन बोलल मारदवा जे बीर रे लोरिका
मंगराह् ते मनबेह काहनवांह रे हमाऽर (२८४०)
कइकन पूड़ह सारगवाह् कइ रे घोड़वा
कहे भाई नीचेह ना ले लेइ जाल रे हमार
ओहि घरी सूनह ना हलिया जे मंगरे कऽय
मंगराह् बोलल लारमवा के देख रे बोल
आजु मालिक हमरेह् ना दंतवाह् मेनि रे झुलिकइ
पोतवाह् धइ लेह कुकुरवाह् देखु रे बाय
ओही घड़ी झूलल अऽहीरवा बा लेइये ओठियन

देखत पिलऽईय ना लटकलि ना लेइ रे बाइ
उहे भाई पोलनाह से कढले जे बाइ काटरिया
अब ठनके देलेसि ना मथवा जे अलरे गाइ (२८५०)
पिलई के धरियाह् ना गिरनी नेउरी में
मुड़ियाह् अटकलि सारगवा में उड़ति रे बाई
ओहि घड़ी सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
केह फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालऽ
घोड़वाह् ऊड़त सारगवा में देख रे बानऽ
नाचत बानह् कऽरगही लेइ रे नाचऽय
जउने घरी अम्मर पिलइया जे कटि रे गऽइनी
आजु भाई एहीय नेउरियापुर रे पालऽ
आजु भाई चऽललि आवरियाह् फेरि रे बानी
सुबवाह् होतइ बानह नाह तइ रे यारऽय (२८६०)
दूनों भाई बइठइ ना बइठक एक रे दम्मऽय
फेंकत बानह् बारमवा कइ रे फांसऽय
उहे भाई भारीय ना फसिया रे बढ़ाइ कऽ
छोड़त बानह ना घोड़वाह् रे सहीतऽय
ओहि दिन धनि धनि ना मइयाह् मोर दुरूगा
जे हइं आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
उहे भाई छेकलनि पहरवा लेइ ये ओठियन
मांछिय होइकह ना घोड़वाह् गयल रे पार
आजु कहें गीरलि ना छलिया जे बरम्हा कऽय
मंगर नाचत सरगवा में देख रे बाय (२८७०)
ओहि घड़ी दूसर ना फंसियाह् लेइ ये हँथवा
छोटा कइकह् ना घरवां जे देइं पेबार
ओहि दिन धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगा
आपन देलह ना रूपवाह् रे देखाई
देवियाह् भारीय पहरवा जे होइ रे गयनऽ
छोट होइ गईल बरम्हवा के देख रे फांस
ओही घरी तिसरेह् ना फेरी जे बाइ उठावत
आजु भाई कोपल ना सुबवा जे देख रे बाय
बुजरो जे सुनबह् ना फंसिया जे बरम्हा कऽय
जब भाई तोहरेह सकतिया जे देख होय (२८८०)
आजु हम फेंकत ना बाड़ीय एठियन से
मुदई बाझलि सारगवाह् रे हमाऽर

नाहिं हम मूतबह् ना फंसियाह् रे पेबरबई
बरम्हा के होई हिनइया जे लेल रे कार
सूनह् ना हलियाह् दुरूगा कऽय
दुरूगाह बानीय सकतियाह् रे सहाई
परदे में नाचति करगहीय बाइ रे नाचऽय
नाहिं मन सोचति दुरुगवाह् बाइ रे माई
ई भाई हमरेह् ले बड़का हंव रे भइया
वरम्हा जी हंवह् ना पितवाह् रे हमारऽय (२९९०)
आजु जाउं ओनकर जावनियांह चलि रे जइहंऽय
हमहूंय रहइ के रहतब कहाँ रे वाड़य
दुरूगाह होइय ना गइनिय लेइ माकूलऽय
फंसियाह् फेंकइ ना रजवाह् लेइ बनाई
अब जाइके बाझलि ना घोड़वाह् रे सहितऽइ
अब फेरि खींचत ना फंसियाह् जे दूनो रे वाई
ओहि घड़ी खीचि खीचि ना फंसियाह् रे घिचावंऽ
अब फेरि गयनह् करीववा में नगि रे चाय
निचवांह् खड़ाह ना मीतवाह् जे वाइ पहरूवा
उहो मीत दांतन अंगुरियाइ् रे चऽवाइ (३०००)
आजु बाबू सहजेह् में मीतवा जे कटि रे जाला
दिनकह आयल झागड़वा जे फरि रे हाइ
ओतनें पर वोलल साहरवा जे धरती से
मीतवाह् मनवह् काहनवाह रे हमाऽर
हाली हाली खीचउ ना सुबवाह् जे दुनों रे भाई
नाहिं सुववाह् केनिय जउ होइहंय हति रे यार
जउन कुछ टेटे में अहीरवा के देख रे होइहंऽय
उहे भाई काटिय ना सलवाह् बरि रे यार
इ सुधि गऽइल अहीरवा के रहल भुलाइल
अब खेढ़ा भयल ना ओठिया से ओकर रे बाय (३०१०)
पल्ले से काढ़त कऽटरिया जे देख रे बानऽ
काटत बानह् बरम्हवाह् कइ रे साल
जउने घरी एक्कइ ना सलिया जे गिरि रे गइनी
कुल भाई गिरि गईल धारतिया में भह रे राइ
घोड़वाह् डांकिय फरकवांह् जे होय रे गयनऽ
नाचत बानह कऽरगही जे देख रे नाच
......अहीरवाह बीर रे लोरीक

दरियांह् कऽरइ ना बेंड़वाह हो जबाबऽय
ओहीं घड़ी ओसरि ओसरिया लेल रे कारऽ
ओसरी पर कुंइयाह भरति बांइ रे पनिहारिन (३०२०)
सुबवाह् ते पक्काह आवरिया थाम्हि रे लिहलीं
अब कचलुइया नाह् थम्हबे रे हमारऽय
ओहि घरी सुरूकि ना फेंकलेह बाइ मियानऽय
अउ फेरि तग्गीय तानल वा तर रे वारऽ
जेके भाई चारिय अंगुरवा भइली रे बाहर
जेकर ताड़क आकसवां जाइ रे जातऽय
आजु भाइ निचयांह् ना मरले बाइ दवन्हरा
पोरसन गइनीय लावरिया गुमि रे याई
अब घूमि गइल मऽलकिया मूबवा क
खड़ियांह् गइनीं गरद में रे बिसाई (३०३०)
ओहि घरी पूरुब काटतवा पछु रे गऽयल
पछिव से काटत दक्खिनवा घूमि रे जानऽ
जइसे भाई काटइ कोइरिया कोइ रे राड़ऽ
ओइसइ पावइ ना पुतवा कठइत कऽय
जेकर भाई दुल्लर लोरिकवा बाइ रे नामऽ

लोरिक द्वारा नेउरी में स्त्रियों का बध

आजु भाई अइसीय कटइया घूमि रे कटले
नेउरी पूरय बचइ ना कटि रे गइनऽ
अब बचि गइनीय जऽननिया रे अनेरऽ
जेतना सापति जाननिया रहि रे गइनीं
अहीराह् काटइ जाननिया हेरि रे हेरी (३०४०)
का जानी मुदईय ना पेटवन मेरे होइहंय
अब भाई लेइहंइ बयरवाइ रे हमारऽ
एतनाह् कहि कहि आहीरवा बीर रे लोरीक
अब भीड़ लेलेसि ना गउवां लेले रे कारी
आजु नाही रहीय गयनऽ कंधले बान्ना
तब कह बिनाह् मरदवा कइ रे तेवई
गलियाह गल्लीह रे नेउरिया डुरि रे आनी
आजु भाई जऽवन ना मायवा नेउरी में
उहो माया दुमलेह नेउरियापुर रे पालऽ
उ माया कूटल ना डढ़वा लेइ ले उरिकऽरि (३०५०)

इ माया छाई हरदियापुर रे पालऽय
अहीराह् होइय हरदिया के मलि रे कारऽय
ऐकर बनि गयल ना छत्तर तक रे दीरऽय
एतनाह कहत ना बानह लेइ ये ओठियन
अउ फेरि ओहूय समइया के देख रे हाल
ओहि दिन सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽ
अउ फेरि सूनह् ना हलियाह् आहीरे कऽ
अउ फेरि हलल नेउरियापुर हो पालऽ
जेतनाह् रहल जे हलवाह् नेउरी कऽ
सुबवाह् कइले रहइं ना करधन दान्ना (बान्ना ?) (३०६०)
उहे भाई बन्नइ ना कइलेह रहें हो जेहऽलि
अऽब चलि गयल अहीरवाह् ओठिन बानऽह्
जाइकेनि तोरि देइ जेहलवाह् कइ रे मुंहऽ
पान सइ रहनहं कइ दियाह् जेहले में
ओहि घरी जगल भंकुसिया कइये बानऽ
भरि भरि निकलें ना ओठिह् सब कऽय दिया
छेकलेंह जानहं आहीरा के ओहि गे दम्मऽ
आजु कहें सुनबह् मलिकवाह् मोर रे लोरीक
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमारऽ
हमकनि करम अधीनवाह् होइ रे बीतऽल (३०७०)
आजु भेंटि भइलि ना तोहंसेह् देख रे बाड़ऽ
आइ के तोड़ि देह लह् जेहलवाह् लेइ ये आजऽ
कयदीय से दीहलह नाहि तुंहउ रे छोड़ाई
एतनाह् झंखय ना लोगवाह् ओठियन कऽय
ए फेरि ओहीय नेउरियाह् कइ रे हाल
ओही घरी सूनह ना हलिया जे लोरिके कऽ
पचह् मनवह काहनवांह् रे हमार
पान सय कयदीय ना हमरउ जइ तुंय ना छोड़बऽ
अब सब कुछुय ना कामवा जे करत चलबय
चले के परी नगर हाऽरदिया जे पुर रे पाल (३०८०)
ओही घड़ी हलि गयनंऽ ना गउंवाह् मेनि रे कुल्ही
अव फेरि गऽयनह ना कुलऊ रे बनाय
आजु कहें बारह बरदवा जे कन रे फूलऽ
तेरह बरनयं ना बानह् कन रे फूल
आजु कहें झुलनिय नाऽथियवाह् कुल रे लेइकऽ

अब फेरि बारह बऽरदवा के बाड़ऽ सामान
आजु कहंय देलेसि अहीरवा जे लद रे वाई
बेलकुल मायाह् ना लेहले जे बाइ बटोरि
उहवां से रेंगल आहीरवा जे बा रेंगावल
अब धइ लेलाह् ना रहियाह् रे बनाइ (३०९०)
जेतनाह् रहलि सामनिया जे सूबवा कऽय
उंटवा पर देलेसि आहीरवा जे लद रे वाय
उहे भाई लेइकह सामनियाह् रेंगि ये देहलेनि
उंटियाह जोहलेह निगहियाह् जाइ रे पार
पान सय कयदी आहीरवा के संगे बानऽय
तब फेरि सूनह लोरिकवाह् कइ रे हाल
आजु कहैं सुनबह् कयदिया जे नेउरी कऽ
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
देख भाई ताहन क बान्हनवा जे छोड़ि रे देहली
अपनेह् घरेह ना चलियह् तोहन जा (३१००)
जाके आपन बालउ ना बववा जे घरे रे देखऽ
अब फेरि खाबह् ना देसवाह् रे कमाऽय
ओहि घड़ी बोलनह कऽयदिया जे लेइ ये आंठियन
लोरीक मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई जियतेह् ना पिंडवा जे तोहार छोड़बय
संगवाह ना छोड़ब आहीरवाह् रे तोहाऽर
आज जहां तोहरइ पसीनवा जे लोरिक रे गिरिहंऽ
तहँ धरि देइहंइ कऽयदिया जे सब रे खून
जउने घरी लादलि बरदियाह् अहीरे कऽय
धइलेह आवइ हारदियाह् कइ रे राहऽ (३११०)
आजु भाई धारइ ना उटियांह् लेइ रे ओठियऽन
हाथिय घोड़ाह् नीगहिया सब रे पांतर
नेउरी के बेलकुल सामनियाह् लेइ ये आयऽल
अब धइलेह् ना बाड़य हऽरदीय में
एकदम आयल ना रजवाह् बा महूअरि
अहीरे के अवतइ ना हथवांह् बा मिलउले
बोलत बानह् लारमवाह् कइ रे बोलऽ
आजु कहंय सुनबह् आहीरवा जे बीर रे लोरिक
एठियन मनबह काहनवांह रे हमार
आजु भाई राजाह् हऽरदिया के तू रे होइ जा (३१२०)

बलकुन होवइ परजवा जे हम तोहार
दुइ जून करह कचहरी जे लेइ चनइनी
जाइ जाइ पीयह मदिलवाह लेल रे कार
एतना जउ कहत ना सूबवा जे बाइ महुअरा
अहीरा मनबइ ना मनवांह् में मुसु रे काइ
आजु भाई डुग्गी साहरिया में बजि रे गइनी
आजु भाई होतिय ना रजिया बा रइ रे बाऽदल
महुअरि परजाह् ना मुबवा जे होत रे बाय
आजु कहँ राजाह् ना मुनबह् आरे अहीरा
लोरिका होइ गयल ना हरदी के मलि रे कार (३१३०)
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
जउने घरी लागल झाऽगड़वा बा नेउरी में
ओहि घरी लागल ना बोहवाह् मेनि रे बानऽ
जउने घरी बोलि देइ भगउती बाइ रे दुरुगा
आजु भाई कवन ना दलवा थाम्हि रे देंई
कवन दल देऽय दंगलिया बीचि रे लागी
ओहि दिन रोवइ ना ओठियन निर रे बानय
कइ कइ बोलल लाग्मवा कइ रे बोलऽय
मतवाह् कवनि दंगलिया कइसन रे बोलली
केकर केकर हऽइयु ना पूज रे मानऽय (३१४०)
देबिऽ खइलह हमरे ना हथवा के गुर रे घीवऽय
पूजवाह् खइलह ना हथवा रे हमाऽरय
आजु कहँ देलह ना हथवां लेइ दुबाई
दूनो ओर के मोहियाह् देति बा माई बढ़ाई
आजु भाई हमरइ ना डंड़वा तुइ रे थाम्ह
दूसरे के थाम्हइ से मतलबा काइ ये बाय
ओहि घरी सुरुकि ना देहले बा मियानवा
अउ फेरि देलेसि धनुहियाह् रे बनाइ
जवने घरी आयल ना सुववा जे बायं ओठियन

बोहा में युद्ध और मलसांवर की मृत्यु

लोहवाह् लागल ना बोहवा में देख रे बाय (३१५०)
ओहि घड़ी मूनह ना हलिया जे ओठियन कऽय
कोलवाह् छेंकलेह् आगवइं लेल रे कार
ओहि दिन बोलल हं मलवाह् रे मंवरूवा

भइया तूं मनवह्, काहनवांह रे हमार
नन्हुवां ते लेइलेह्, छेकनवा जे हंथवा में
तरकति फेंकबेह्, ना तोहुँय रे अगाड
तनी एक थम्हतेह्, आगड़वा जे कोलवन कऽ
हमहूँ आपन ना होइ जात रे होसियार
आजु भाई चलति ना ओरिया जे खेतवा पर
कोलवाह्, लेहुई ना लोहवा वा नेर रे यात (३१६०)
......सुनह ना हलियाह्, ओठियन कऽ
के फेरि ओहूय समझ्याह्, कइ रे हालऽ
बोहवाह्, में जूटलि ना गोलियाह्, कोलवन कऽ
देखि लह जूटई ना लोगवाह्, रे बनाई
आजु भाई मीलल ना गउवाँह रे नरानापुर
आउ मिलि गयल ना गउवां भा उम रे राव
मिलनह्, गढ़ऽ गाजनवाह कइ रे तुरूका
अब गढ़ पीपरीय ना कोलवा जे मीलऽ चड़ाँरि
उहे भाई चारू ना दलवा जे एक रे होइकऽ
अब फेर बांटिय पलथिया पर खन रे भात (३१७०)
आजु काटि देलेनि ना धरिया जे बोहवा के
मारि गय सांवर गुभगवा जे सर रे दार
आजु भाई लोहुई ना लोहवा जे कोल नरिअयनऽ
नन्हुवां छेकलेह्, आगड़वा जे लेइ रे बाय
जवने घरी लेइ कह ना लठियाह्, बीर रे डंकनऽ
तरकत जानह्, बयालिसइ देख रे हाथ
आजु कहें भाजलि ना गोलियाह्, कोलवन कऽय
एकदम ले लेह आहीरवा बा बहि रे आय
एकदम हंकलेह ना कोलवन रे भंजउले
जाइकेनि देलेसि पीपरइया में ओलि रे याय (३१८०)
ओही उठल ना नन्हुवाँह बा धोरइया
लठियाह्, लेइ कह्, ना कोलवऽन बहि रे अवलेनि
जाइकेनि देहलेनि पीपरइया में ओलि रे याई
नन्हुवाँह आइ कह ना बइठल नदिया पऽर
ताकत बानह्, पीपरिया कइ रे राहऽय
तब तक सूनह ना हलिया जे संवरूय कऽय
संवरूय बोलत लारमवा के बाइ रे बोलऽय
आजु कहें हो हो ना दइवाह्, मोर नारायन

का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लीलारय
आजु भाई आवत ना कोलवन कइ रे गोलऽय (३१९०)
अब हम आपन सऽपनीय कइ ये लिहले
धरमीय संतीय सोपरिया जे ले इये लीहलैन
बीरवाह लेइ लेइ मगहियाह् ढोलि रे पानऽय
सांवर धनुहाह् ना तिरवा जे हाथ उठवलें
एकदम गयल राऽयनिया जे होल ठाढ़ऽइ
तब फेरि बोलल ना बतिया बा अर रे थाहऽय
नन्हुवा छोड़ि देह आगरवा जे कोलवन कऽय
आइकनि खगल ना लोहवाह् लेइये आजऽय
दुइ हाथ चलई ना उहवां से हथि रे यारय
ओहि घड़ी बोलल ना नन्हुवा जे बाड़े धोरइया (३२००)
धरमीय मनबह काहनवांह रे हमाऽर
जबसे बहनोईय हऽरदिया लेइ ना अइहंऽय
तब सेनि ना छोड़ब बेवखा कइ रे घाटऽय
एतना जे सूनत धऽरमियां बाइ रे सांवर
बोलत बाड़इ तऽपिया कइ रे बोलऽ
आजु कहे सुनबेह् ना नन्हुआ सरि धोरइया
पच्छेह बहुत लोरिकवा भाई रे बनिहंऽय
कवनेह अइहंइ रऽनियां पर रे कामऽ
अब तोहि छाड़ि देह आगरवा जे कोलवन कऽय
अब दुइ हांथइ चलति नाह तर रे वार (३२१०)
जेके भाई एमइ ना रामइ देइ ये देतऽ
ते फेरि होइ जात ना एठियन रे अवान
चऽढ़लि ना गोलियाह् कोलवनि कऽय
एकदम लोहाइन लोहवा बा नेरि रे यातऽय
ओहि घरी देखह् ना हलियाह् एहरउं कऽय
जिन्नकर तीन सय ना सठिया चर रे वाहऽय
ओकर भाई बानह घबडुवाह् रे जेवानऽय
उहो भाई तरई ना बोहवाह होइ ये गयनऽ
कोलवन से होतीय लड़इया बा लेल रे कारी
जब सेनि छूटई ना हथवा बा संवरू कऽ (३२२०)
सय दुसइयाह गिरइं रे भह रे राई
जेनकर तीन सई ना सठिया चर रे बाहा
टंगियाह् धई धई बेवरवा में पेबारऽ

नदिया में बहलि ना लसिया बांइ रे जातऽय
ओहि घड़ी धनि धनि भवनिया कोलवन कऽय
बिन बिन बाड़इ पहुंथवा आगि लगउले
अपनेह ठाड़िय पहुँथवा किह रे बाड़ऽ
ओहि घड़ी आनइ के मुड़ियाह आन क धरिया
ओकरे अमरित आंगुरियाह् मेनि रे बाय
तनि तनि अंगुरी के ना मुखवाह में चटावऽ (३२३०)
कोरवाह् लोहइ ना लोहवा जे करत रे जाय
मारत मारत ना बहिया जे भइनी रे थेथर
पानी बिना गयल हऽलकवा जे बाड़े झुराइ
तब फेरि बोलल ना मलवा जे बाइ संवरुवा
कोलवाह् मूनह् चंड़रवा जे मोर रे भाइ
आजु कहें अवरे ना मरले जे तोंह मराला
नात हम जाबऽ ना एठियन देख रे धाइ
जब्बइ अइहइं ना भइयाह् मोर सूबच्चन
अब फेरि अइहंइ एहिय लेइ ये आइ
भइयाह् अवतई ना जुटिहंइ बोहवा में (३२४०)
ओनके हांथे मिरितिया जे मोर रे बाइ
सूनति ना सतियाह बा मदागोनि
लेइकेनि रेंगलि कालसवाह भरि रे पानी
एक दम ले लेह सांवरूवा ओर रे जाला
जूटत जूटई ना ओठियन लेइ ये सतिया
तब तक जुटलि भवनियाह् कोलवन कऽय
रूह रूह धइलेह ना सतियाह् कइ रे रूपऽ
आजु कहें सइंयाह् ना सुनिलह् मुख रे नन्नन
सेन्हुर मनबह काहनवांह रे हमाऽर
कहवांह् कहवांह् ना कोलवन के तीर रे लागल (३२५०)
अब तनी देवह् हरदियाह् रे बताई
ओहि दिन बोलल ना मलवाह् बाइ संवरुवा
बियही ते मनबेह् काहनवाह् रे हमारऽय
देखु बियही सगरेउ ना तिरवा बदने में लगलीं
अब तिर एक्कउ ना नहि नी रे दुखातय
एक तीर बाजल करेजवा पर रे बानऽय
थोड़ा थोड़ा उहइ ना हउवंह् रे दुखातऽ
ओह घरी देखलसि ना भवनिया कोलवा कऽय

एहि पड़े गइल ना भितरांह् रे सकाय
अब हलि गइलि ना मस्तक पर संवरू के (३२६०)
अब फेरु अन्हा संवरूवा जे होइ रे जाई
कोलवाह् भरि भरि ना घउवाह मारे ओठियन
आसन देलेह् ना बिनियाह् क पेबार
जउने घड़ी फेंकइ ना तिरवा जे हंथवा कऽय
सउ दूसइ गीरइ ना कोलवाह् रे रहराइ
तब फेरि बोलल ना ओठियन बांय रे सांवर
दरियांह् करई ना वेंड़वाह् रे जबाब
आजु कहैं सुनवह् ना कोलवा जे सर चडंरवा
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई तोहार न मरले अब मराब्यऽ (३२७०)
पिरिथमी में तीनिउ भुवनवा जे बीति रे जाय
जब्बे अइहंई ना भइयाह् मोर सुबच्चन
जवन तोहें बानह् पीपरियाह् देखु रे पाल
ओन्ह के आवतइ मिरितिया जे हव रे मिलिहंय
उनके मरलेइ ना हमहूँ जे मरि रे जाब
उहवां से रेंगल ना कालवाह् दस रे पांचय
अब फेरि लेहलेनि पीपरिया जे तड़ि रे याइ
कोलवांह् रतियांह् रेंगत बा दिन रे दवरत
कतव नाहिं बीचवाह् ना बदनह् रे मोकाम
एकदम रेंगल रेंगावल रे पिपरियां (३२८०)
जाइकेनि पहुँचल सुबच्चन कइ रे पास
ओही घड़ी बोलल ना मलवाह् सेनि ये कोलवा
दरियांह् कऽरई ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह् मोर सुबचन
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमार
तोहार भइया सांवर ना भइया जे तोहार बलउलेनि
बड़ा बाड़ई ना कामवांह् रे जरूर
एतना जे सुनत बा मामलवाह् रे सुबच्चन
दरियांह् कहत ना बेड़वांह रे जाबाब
आजु हमें दूसरे गोहरिया में हमइं भेजऽ (३२९०)
अब हम जाबई गोहरियन में तइ रे यार
आजु भाई भइयाह् मारनवा जे हम न जाबय
पिरिथमी में तिनिउ जानमवा जे होइ रे बाय

ओही घरी सूनत ना सूनत कुल रे बिगड़ऽय
लेइ कोल कुल्हइ ना गयलंह लप रे टाय
एहि सुनह् ना हलियांह् ओठियन कऽय
कोलवाह् गयल पिपरियाह् मेनि बानऽय
जहंवाह् बइठल ना मलवाह् बाइ सुबच्चन
उनसे कंऽहइ ना बतियाह् समु रे झाई
सुबचन मनबह् काहनवांह् तूं हमारऽ (३३००)
जवन तोहार भइयाह् धारमिया बांय रे सांवर
बोहवा में लागल झागड़वाह् वरि रे यारऽ
भइयाह् तोहार कइलेनि धरमियाह् रे बलावत
ओहि दिन बोलल ना मलवाह् बाइ सुबच्चन
दरियांह् करइं ना बेड़वांह हो जवाबऽ
आजु हम भइयाह् ना मरनवाह् नाहिं जइबऽ
हम भाई ऽ्बऽ पिपरियाह् तोरि रे पालऽ
एतना जउ सुनलइं ना कोलवाह् दस रे बीसय
ओनकेह् लेह लेह ना डेढ़ियाह् पर लपाती
ओन्हि भाई टेटिय ना टेटवांह् जे उठवलेन (३३१०)
ले लेह् अयनह् ना बोहवांह् रे मझारय
ओहि दिन छोड़ देइं ना मलवाह् सुबचन के
अब भाई दवरल सुबचनाह् जाइ रे मालऽ
धरमी के रोवत नागरवाह् बाइ रे जोरऽ
दुनो भाइ रोवइ ना जारवा रे बिजारइ
तब फेरि बोलल ना मलवाह् बांय रे सांवर
दरियांह् करइं ना बेड़वांह् रे जबाबऽ
देख सुत मेहनि के मरले जे नाहिं मराबऽय
पिरीथमी के तिन्निउ भुवनवांह् रे जातऽय
अब फेर तोहरेह् ना हाथवा बा हाय मिरितिया (३३२०)
तोहरेंह मरलेह ना बोहवा में मरि रे जाबय
एतना जउ कहत ना मलवाह् बाय संवरुवा
बोलत बानह् सुबचना लेहि रे आजऽ
आजु कहैं सुनबह् ना भइयाह् मोर रे सांवर
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
कह दुनो भाईय ना एक ओरि होइ रे जांई
कोलवन के मारीय ना बोहवा में बहि रे याई

तब फेरि बोलल ना मलवा जे बाइ रे ओठियन
सांवर बोलल धारमवा कइ बाइ रे बोल
आजु कहैं सुनबहू ना भइयाहू मोर सुबचन (३३३०)
एठियन मनबहू काहनवांहू रे हमार
देख हम खइलींय निमकवा जे अहीरे कऽय
हमहूँ अहोर बरदवा जे लड़ि रे जाइ
तूं भाई खइलहू नीमकवा जे कोलवन कइ
तूं देख कोलइ बरदवा जे लड़ि रे जा
तब फेरि रोवत ना मलवा जे बा सुबच्चन
भइया ते सन्मुख ना वइठल अइसे रहबऽ
कइसे छूटीय ना बनवाहू रे हमार
ओहि दिन मतियाहू मंतिरी जे ठाटि रे देहलेनि
मतवाहू देलेनि ना बोहवा में देख उतारि (३३४०)
आजु भाई अइसेहू ना सुबचन ना रे मरिहंऽई
एनके देबहू गाड़हूवाहू जे खन रे वाइ
एनकेहू अंखियाहू में पटिया जे बान्हि रे देबऽ
हथवां में देबहू ना तिरवा जे धनु धराय
इहै भाई मारइं सोझइया उपरे संका
अब फेरि लांगई मिरितया के होइ रे ओर
घूमि फिरि लागिय ना तिरवा जे सुबचन कय
उहे भाई ओहीय मा बोहवां जे देख मंझार
आजु भाई सबकेहू मनसउदा मे बइठि रे गऽयल
अब फेरि देलेनि धारतिया जे खन रे वाई (३३५०)
हाथवांइ एतनाहू गाहीरवा जे खनि रे देहलेन
सुबचन के अंखियाहू में पटिया जे बान्हि रे देबऽ
हथवां में तिरइ धनुहियाहू रे धराइ कऽ
गड़हा में कइलेनि मारदवाहू केनि रे ठाड़
जवने घरी छुटिकइ ना तिरवा जे सिवचन मरलेन
एकदम ऊड़ल आकसवा में चलि रे जाई
आजु भाई पछूवांहू आकसवा में बाइ रे लागल
ऊ सोझे लेलहू पूरववा में बान रे जात
आजु भाई निचेहू ना तिरवा जे देख रे लवटल
अउ फेरि देलेसि पूरुबवाहू रे झिकांड़ि (३३६०)
जवने घरी झोंकलेसि बइहरवा जे पूर रे वइया
पूरुब मोहे बइठल संवरुवा जे देख रे माल

उहवां से उड़ल ना तिरवा जे देख रे अइनऽ
जाइ के भाई लागल करेजवा में देख रे आय
ओही घड़ी बोलल धरमिया बा लरमें से
पंचाह्, मनबह्, काहनवांह्, रे हमार
आजु मोरे आइलि मिरितिया बा लेइ ये अवहें
तब फेरि बोलह्, ना मुखवा से सीता रे राम
सूनह्, ना हलियाह्, ओठियन कऽ
अब फेरि लागलि ना तिरवाह्, जवने घरी (३३७०)
लछमी के फूटल ओदरवाह्, ओहि रे दम्मऽ
आजु कहँ मारेंह ना दुधवाह्, केनि रे मारऽ
बहिलाह्, बाझिन क थनवाह्, सुखि रे गयनऽ
लसियाह्, पंवरति ना बोहवाह्, बाइ मंझारऽ
कोलवाह्, हांकइ ना गोरूवाह लेइ रे पऽछीम
अब नाहि छाड़इ ना बोहवाह्, सब रे जाई
उहे भाई मारि मारि बछरूयाह्, बन रे खातऽ
कउड़ाह बन्हलेनि ना बोहवाह्, रे मंझारऽ
सर देनि गयल परनवां बा संवरू कऽ
उहे भाई देखत तमासवाह्, लेइ रे बानऽ (३३८०)
आजु मोरे जोगलि सामनियाह्, लेइ ये ओठियन
लछिमिय सेवल ना बानीय रे हमारय
आजु भाई बड़वड़ जाचनवां जे कोल रे कइलेन
भुजि भुजि खानह लेवइयाह्, लेइ ये आजऽ
उहवां से लवटल पारनवा बा धरमी कऽय
अउ चलि गयल पिजड़वाह्, में सकाई
उठिकनि बईठि ना मटियाह्, धरमी कऽय
बोलत बानह्, लारमवाह्, कइ रे बोलऽ
आजु कहँ सुनबह्, न मलवाह्, मोर रे कोलऽ
सहुवाह्, मनबह्, काहनवां रे हमाऽरऽ (३३९०)
अइसेह्, नाहिय लछिमिया मोर रे जइहंऽ
पिरिथिमी में तिन्नियु भुवनवां उलटि रे जाऽय
सहूवाह त काटिलह्, ना मथवा रे हमाऽर
धनुहीं के गोसंइ लेबह्, ना लट रे काई
आगे आगे भागह्, ना कोलवा पीपरी में
पछवांह्, जइहई लछिमियां ओलि रे याई
एतनाह्, कहि कहि परनवा संवरू कऽय

नीकलि गयल इन्दरवापुर रे धामऽ
ओही घरी कटि गइल ना मथवा संवरू कऽ
मुड़वांह् लेलेनि धनुहिया में लट रे काई (३४००)
आगे आगे रेंगनह् ना कोलवाह् रे चंढ़ारऽ
पिछवांह दवरलि लछिमियां बानी रे जाती
एकदम उहवांह् ना कानिय रे डहरलऽ
जाइकनि तांनह् पिपरिया में जाइं रे जाई
आजु कहैं तानह पिपरिया जे हलि रे गइनी
लछिभीय करइं ना कोलवन किह बीहार
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
ओहि जउं नगर हरदियाह् कइ रे पालऽ
दुइ जून करइ कचहरीय बीर रे लोरिका
अब फेरि करई तखतवांह् अस रे नान (३४१०)
जाइ कनि पीयइ ना मदवाह् जमुनी घऽर
जाइ जाइ मूतइ जामुनियाह् केनि रे गोदऽय
ओहि घरी सूनह ना हलिवाह् उहवां कऽय
अहिराह् मऽउज कऽरतवाह् देख रे बाड़ऽ
आजु कहै सूनह् ना हलिया गउरा कऽय
अउ जउ नगर गऽउरवा गुज रे रातऽ

मंजरी पर विपत्ति

अब पड़ि गइलि वीपतिया मंजरी के
ओहि जउ नगर गउरवा लेइ रे गांवऽ
अब कहैं जवनि मजरिया चल रे खेतें
घंटाह् घंटाह् कापड़वा रे बदऽली (३४२०)
धियवा के अइसीय बीपतिया पड़ि रे गइलीं
उहवां भयल ना दसिया रे हरामऽ
तब कहैं घूरह न घुरवा क देख रे लत्ता
जोरि जोरि पहिरति पेवनवांह् धन रे बाय
आजु कहैं बारह ना मनवा क देख रे मूसर
मंजरी के गयल ना लोहवा क बान खियाय
एन्हें जउ कुटवनीय पिसवनी जे नाहिनी मीलत
धियवा के परलि बीपतिया के बाडे रे ओर
आजु कहैं कवनेह ना दिनवांह् राम समइयां
मंजरी रोवति रकतवाह् कइ रे आंसूऽऽ (३४३०)

आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह ना मंझवाह् रे लिलारऽ
कइ दिन भोगब बीपतियाह् गउरा में
बीपति कहियाह् ना जइहंइ रे ओराई
झंखति बाड़इ ना धियवाह् रे मंजरिया
पेटवा में बाड़इ असापति रे देखाती
ओहि दिन मूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
के फेरि नागरि गउरवा कइ रे हालऽ
एक राति दानाह् ना पनिया नाहिं रे मीलऽल
सब केहु अइलेनि कऽनतिया रे उपासलि (३४४०)
के भाई बडेह् सबेरवा कइ रे जूनऽय
मंजरीय रेंगलि ना घरवा सेनि रे बाड़य
एकदम ... राजमवा घर रे गऽईल
बईठि गईलि दुवरवां मन रे मारी
ओहि दिन बोलल ना धनवा बाइ मंजरिया
गंगियाह् मुनवह् ना नउवा रे हमाऽरऽ
बड़ दिन कइलह् ना संघवां लेई हमारऽ
सइंयाह क रहलह् दुलेरूवा तुयं रे नाऊ
आजु कहँ अपनेह् दुलेरूवा केनि रे कारने
गाइ भइंस तोहरउ लेहंड़वा होइ रे गऽयल (३४५०)
आजु भाई बाड़ह् ना गउवांह रे हमारऽय
हमरे पर परि गयल बीपतिया गउरा में
एहि जउं बीचेंह् गाउरवां रे मंझारऽ
सब कोइ संघियाह् तोहव के देखऽ रे रहलऽ
पाताह लागत ना सइयां कनि रे बाड़ऽ
तउनो हम बानह् हऽरदिया पुर रे पालऽ
भइयाह् लेइकह ना तोहउं रे रोचनवा
जउन भइया देतह् हरदिया पहुँ रे चाई
बीपति कहइ आहिरवा से समु रे झाई
तत छन करिहइ आहीरवा जे पूरुबे से (३४६०)
अब जइहइं नगरइ गउरवा जे गुज रे रात
आजु कहँ फेरिय ना दिनवा जे नउवा लवटी
अब दू दिन करब ना मनियाह् रे तोहार
तब बोललि ना बाड़इ धन रे मांजरि
गांगिय मानह् काहनवांह भइयाह् हमारऽ

आजु कहँ देखत बीपतिया गउरा में बाड़ऽ
जाइ केनि कऽहेय बीपतियाह् समु रे झाई
कहि द्या नऽवह् ना लखवाह् जउन रे हारऽ
सोहत रहल मांजरियाह् कनि रे गऽर
तवन पहुँचल गिरीहियाह् रे कोलीना (३४७०)
छतियाह् एड़ाह ना हमरेह् रे लगाइ कऽ
हरवाह लेइ लेति ना डंडवा रे तऊलय
आजु कहें अइसन ना आ दिनह् निय रे रइनऽ
ऊ हार चमकत कोलिनिया के बाइ रे गऽर
सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब भाई रेंगल गांगियाह् बा रे घरे से
अब चलि गयल मांजरियाह् किय रे ठाढ़ऽ
मंजरीय कोराह कागदवाह् रे निकालऽ
हथवांह् में लेलेह कलमियांह् मसि रे हानऽ
आपन लीखति बीपतियाह् कइ रे ओरऽ (३४८०)
लिखकनि देलेसि ना पतियाह् रे चउपती
गंगियाह् लेलेह् ना हंथवा में बाइ उठाई
जउने घड़ी खरचाह् ना आपन धरि रे लेइ कऽ
नउवाह् रेंगल पुरुववाह् तड़ि रे आई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् गंगियाह् कऽ
कतउ नाहि बदत ना कुरवाह् रे मोकामऽय
उहवां से एकदम ना रेंगलइ रे रेंगावल
अब चलि गयनह् ना नगर रे हऽरदिया
पूछत जालाह् लोरिकवाह् कइ रे घरऽय
गउवां के लोगइ ना घरवाह् रे बतउलें (३४९०)
सोझइ गयल जमुनिया के दर रे बारऽ
अहिराह् गयल कचहरीय रे दर रे बाऽरऽ
जउने घड़ी दुअराह् ना नउवाह् रे देखनऽ
चनवाह् दवरि दुअरवांह भयनी रे ठाढ़ऽ
टेहुवांह् धइलेह् नऊववा के चलि रे दीहलें
अब मिलि गयनींय ना लेहलेनि बइ रे ठाईं
ओहि घड़ी पूछति ना चनवाह् हालि रे चालऽ
कइसन बानह् ना बाबिल मोर रे सहदेउ
कइसन बानह् ना मइयाह् रे हमाऽर
कइसेह बानीय ना मइयाह् मोरि रे सेल्हिया (३५००)

कइसेह् बानह् सासुरवा रे हमारऽय
कइसेह् बानीय ना समुवाह् मोरि रे खोइलनि
कइसेह् बानह मसुरवाह् रे हमारऽ
तब फेरि बोलह् ना नउवाह रे हजाम्मऽ
सइजह कूसल ना गउवांह् बा गउरा
कूसलि बानह गउरवाह् सब रे लोगऽ
उहे भाई कुसलि आहीरवा के नाहि रे बानी
अउ ओहि गयल ना घरवाह् उधि रे यानऽ
सब भाई लिखिकह् ना पतिया जे जवन रहल दिहली
नउवाह् संचेह ना पलवाह् में ले ले रे बाड़ऽ (३५१०)
सब हाल बेतइ ना ओठिन रे भुगु रे ताई
चनवाह् पूछति कूसलिया बा अहीरे कऽ
कइसन बानह् ना घरवांह सब रे लोगऽ
ओहि दिन बोलल ना गंगियाह बाइ रे नउवा
गवहिन मनबह् काहनवांह रे हमार
गउवां घर का कूसलियाह सबका आछा
अहिरे के घरेह् कूसलियाह नाहि रे बाय
आजु भाई मारीय गयलवा बा मल रे साँवर
अब बेढ़ि गइनीय बायनवाह सब रे गाइ
अब कहें मिलि गयल ना गउवांह् रे नरानापुर (३५२०)
अब मिलि गयल ना गउंवा बा उम रे राव
मिलि गयनऽ गाढ़इ गाजनवाह् कइ रे तूरूक
अब गढ़ पिपरीय ना कोलवाह् रे चंड़ार
ई भाई चारिउ ना दलवा जे बातुर होइ कऽ
ई खाइ खइलेनि पालथियाह् मारि रे भात
अब साजि देलेनि ना धड़िया जे बोहवा के
मारि देलेनि सांवर सुभगवा जे सर रे दाऽर
घरवांह छोड़ियाह् ना लुटि खइलें सेवइता
घुर घुर पन्नित पूछिलवाह् कंइ रे पूरान
आजु परि गईलि बीपतिया बा घरवा में (३५३०)
कतहूंय खोजले कूटवनि जे नाहि रे बाय
अब सूनई ना बेसवा रे चनइनी
नउवा तूं मनबह् काहनवा रे हमारऽ
ई बाति हमसेह ना जऽवन बति रे अवलऽ
ई बाति सइयांह् जानह ना पावें रे हमारऽ

बहुत तोहें मछरी ना भतवा हम खियबऽ
पूराह् करब बीदइया हो तोहाऽर
तब फेरि बोलल ना गंगिया बा नाऊ
मलकिन मानऽ काहनवां हमारऽ
तब हम कवन ना बतिया ओनसे कहब (३५४०)
हमहूँ देबेय ना बतिया बताई
तब फेरि बोललि ना बाड़इ बेसवा ज
चनवा बोलल लारमिया क बोलऽ
अउ फेर छत्तीस ना बुधिया नउवा के
ओठिन बाड़इ गंगियवा हो तोहरे
एक बुधि लीह ना तोहुँउ उपराजी
तब फेरि बोलल ना गंगिया हजाम
मलिकिन मनब्रह काहनवा हमारऽ
ए घरी छत्तीस ना बुधिया रे हमारऽ
हमरे पाछे ना गइनीं रे घुसूरी (३५५०)
मोरे एक्कउ ना बुद्धि नाहि बानी
एमा गयल ना बतवा बन्हाई
तब फेरि बोललि ना धनवाह् बा चनइनी
नउवा ते मनबे काहनवांह रे हमार
जउने घड़ी पूछिहइं ना सइयांह् तोहरे गयल
ओन्हइ पूड़ा ना देहा रें हिसाब
ओहि घड़ी भइयाह् कूसलिया जे पूछइ लगिहइं
ओइसे देहऽ ना ओनहूं के समु रे झाइ
कहि दऽ कूसल ना भइया जे वा संवरूवा
कूसल बानीय बयनवाह् सब रे गाइ (३५६०)
कहि दया भइयाह् के जनमल बान बेटवना
अब हम बाजति बधइया लेइ रे बाइ
लोरिकाह् एक्कउ ना बोहवाह् जे छोड़ि के अयनऽ
दूसर बानह तोरवले जे बन रे जात
रतनीय लछिमीय ना वोहवाह् में पजइनी
कतहूँय लोटियवा नउवा जे नाहि रे बाय
के······मछरीय ना भतवाह् रे खीयइबऽ
पुड़नउ करबह ना बीदइया रे तोहार
एतनाह कहति ना बेसवा जे बा चनइनी
नउवाह् भरलेसि हुँकरियाह् ओहि रे दाम (३५७०)

तब ओन्हें मीठाह् ना पनिया आनि रे दीहलीं
अब हटि गइनीय बाजरियाह मेनि रे हाऽल
जाइकनि मछरीय ना ओनहूँ बा जे खरीदलें
धनवाह् ले लेह् गीरिहियांह् बाइ रे जात
आजु भाई दालिय ना भतवा जे तर रे करिया
उपरा से वनलि मछरिया जे ओहि रे बाइ
ओहि घरी मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
सेउ घरी ओहू समइया क देख रे हाल
······बारह ना बजवा पूर रे होला
अहिरू के ऊठलि कचहरी लेइ रे बानी (३५८०)
अहिराह् रेंगल जामुनिया घर रे जानऽ
जाइ कनि करत तखतवा पर अस रे नानऽ
मचिया पर बइठि ना लेहले जमुनी के
लंवगि मरीचि दारूइया बाइ उझीलऽत
अहीराह् घालह् ना नसवा लेइ रे धरी
जउने घरी रेंगल गीरहिया ओहि रे जानऽ
जउने घड़ी भयल दुअरियाह् पर रे ठाढ़ऽय
भितरी बइठल दूअरियाह् लेइ रे गंगिया
अहिरे के पड़लि नजरिया जे फुनि रे बाइ
ओही घड़ी दवरल आहीरवा बा बीर रे लोरिका (३५९०)
गंगियाह् चीन्हय भयलवा लेइ रे ठाढ़
गंगियाह उठि कह ना मथवा जे बा नेवरले
अहिराह् भरिमुख देतइ बा असि रे बाद
आजु कहैं आखेह अमरवा जे रहु रे गंगिया
तोइं भाइ जियबेह् ना लखवा रे बरीस
जइसेह् बाढ़त बा पनिया जे गंगा कय
ओइसइ बाढ़इ ना अइयाह् रे तोहाऽर
अब कहि जाबह कूसलिया जे गउरा कऽय
कइसन बानह् गउरवा के सब रे लोग
कइसेह बानीय ना भइयाह् मोर ए धरमी (३६००)
कइसेह मइयाह् ना खोइलनि रे हमार.
कइसेह् कक्काह ना कठइता जे घर रे बानऽय
कइसेह् बानीय बयनवा जे मोरि रे गाय
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बा हाजमवा
······मानह काहनवा रे हमार

आजु भाई कूसलि ना गउवां जे बा गउरवा
कूसलि बानह् गउरवा के सब रे लोग
आजु कहै कूसलि ना भइया जे बायं रे सांवर
कूसलि बानीय ना लछिमियाह् रे तोहार
आजु कहै जनमल बेटवना बा धरमीय कऽय (३६१०)
बोहवा में अनवन्ह् बधइया जे होति रे बाय
आजु कहैं थोड़ाह् लछिमिया लेह् छोड़ि अयनऽ
लछमीय बहुतइ ना गइलीय रे पजारि
आजु कहैं बोहवाहं लाछिमिया जे नाहिं अऽमइलीं
धरमीय दूसर ना बोहवा जे तोड़ केले बाय
अहिरूय एकइ ना नहिनीय तोहार कूसलिया
मंजरीय कइलेसि दूसरि नाह् रंग रे वार
आजु भाई सूनह् अहीरवा जे बीर लोरिका
अवरू मनवाह् में अपने बा मुसु रे कात
आजु सित भइयाह् ना बानह् कुसल धरमिया (३६२०)
कूसलि मइयाह् ना बछवाह् रे हमार
आजु कहैं कूसलि ना लछिमी जे बोहवा कऽय
सब भाई आनन्दइ गउरवा के बानऽ रे लोग
बुजरीय एक ठे मेहरिया जे चलि रे गइनी
दुदुय नाघलि मेहरिया जे बानी हमार
जउने घरी लावटि चालब नाह् गउरा में
हमहूँय देखबि बीयहिया के रंग रे वार
सूनह् ना हलियाह् गंगिया कऽय
गंगिया के कांपत ना पेटवाह् रे परानऽ
आजु हम बतियाहं ना सटकिय देली पटाई (३६३०)
आजु बाबू केहरउ से के हुके जिनि ये आवा
नाहिं कत देई ना बतियाह् रे सूनाई
जउने घड़ी सुनिहंइ आहिरवा जे बीर रे लोरिका
एठिन दूईय ना भगवा जे अल रे गाई
अब लेइके डरत ना नउवा जे बाइ हजमवा
बोलत बाड़इ लारमियाह् कइ रे बोल
आजु कहैं सुनवह् मालिकवा जे मोर लोरीक
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हम्मार
आजु भाई हमरेह ना देसवा में बड़ रे सूखा
आजु भाई हेरलेह् ना चरवा जे नहिं रे बाइ (३६४०)

आजु मोर देखत ना बलवा जे अपने बच्चा
बेटवन के ओहन के चरवा जे देब जुटाइ
आजु भाई काल्हिय ना दिनवा जे रे ठहरब
हम भाई जाबई गउरवा लेइ रे जाउ
तब फेरि बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
दरियांह् करइ ना बेड़वाह् रे जबाब
आजु कहैं सुनबेह् ना गंगियाह् मोर हजमवा
एठियन ते मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई अजुवइ ना घरवां जे हमरे अइलीं
काल्हि तूंय रहि जा हारदिया जे पुर रे पाल (३६५०)
काल तोहें लेलेह बाजरवा जे चलि रे चलबइ
तोहे कुछ देबइ सामनिया जे बन रे वाइ
परसउं उठतइ सबेरवा जे चलि रे देहऽ
अउ फेरि लेहऽ पसुववा तड़ि रे याय
एतना जउ कहत ना बानह बीर रे लोरिका
कइसेह् मानल हाजमवा जें पुनि रे बाइ
ओहि घरी खालाह् खियवलेह् बा बनउता
अब ओके कइलेसि आदरवा जे बरि रे यार
जउने घरी बिहनह् ना होत बाइ रे भुरुहुर
ले ले गयल सहरियाह् मेनि रे बा (३६६०)
ओनकेह् देलाह् ना देहियां पर कम्मल बानी
अउ फेरि कुरुताह ना देहले बा बन रे वाय
आजु कहें जोड़ाह् ना धोतिया जे देइ ये देहलें
अउ फेरि देइ देंय बकुलियाह् रे जउ घोर
आजु भाई ओकरि ना जोरवल कस रे ओकर
एक मेनि कसइ ना सोनवाह् दरब बनाइ
आजु कहैं लदि गई ना घोड़वा जे नउवा कऽय
अउ फेरि देलेसि डहरियाह् रे बताइ
नउवाह बईठि ना घोड़वाह् पर रे गयनऽ
अब घोड़ा देलेह् पछिमवा के बाइ रे आह (३६७०)
जउने घड़ी लागल हरदियाह् कइ सीवनवा
हाकत जातइ ना सगरेह पर रे बाइ
तब तक ठसकलि बारतिया बा सुबवा कऽय
नोकर जेकर बानइ नह तिन रे चरि
उहे भाई लेइलेह् बखियवा जे जोरऽ रे बोलऽ

आपन सावढ़ि ना जंतवा जे लेइये बाय
सुबवाह् बइठल कुरूसियाह् पर रे बानऽ
देखत बानह् नीगहवाह् रे उठाई
जइसेह् रहइ ना गंगियाह् रे हजामवा
उहे भाई आयल हरदियाह् मेनि रे आज (३६८०)
जाइकनि कवन ना बतिया जे ओनके बतउले
अहीरू के भयल खुसियलिया जे देख रे बाय
नउवा के एतनीय ना बिदवा जे कइले बाड़ऽय
जइसेह् भाई देंसवाह् बीयहुल बाइ रे जात
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
सुबवाह् देलेसि नोकरवाह रे रेंगाई
घोड़वाह् धइलेह ना बगियाह् लेई रे अयनऽ
अब बान्हि देलेनि सावढ़ियाह् पर रे बानऽ
तब फेरि सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गंगियाह से पूछत ना सोनवाह् बाइ रे नाइन (३६९०)
गंगियाह् तूं काये निलकियाह रे बतउले
लोरिकाह् तोरेह पर खुसियाह् होइ रे गऽयल
एतनाह कइलेसि बीदइयाह् रे तोहारऽय
बहूत तरह से नउवा से बाइ रे पूछय
नउवाह् सधलेह् गुंगउरी देख रे बाड़ऽ
मुंहवा से ऐकउ जाबनियाह् नाहि रे बोलऽ
उहे भाई बाड़इ ना एकवाह् बकबकातऽ
तब तक सूनह् ना हलियाह् सोभवा कऽय
सोभवाह उलटीय हुकुमियाह् बाइ रे देतय (३७००)
आजु कहें सुनवेह ना जदुवा कर रे बारी
एठियन मनबह् काहनवां तुयं हमारऽय
आजु मोर सोरहउ ना सइया रे बरदिया
जेकर तीनसइ ना सठिया लद रे वाह्य
आजु बाकी देबह् हारदिया पिट रे कोरी
ओहि घरी फागुन ना मसवा बाइ महीना
गोजईय गोहुँय काटतवा देख रे बानऽ
जउने घड़ी हूटि गऽयल लेंहड़वा सोभवा कऽय
अब फेरि गइनोय हरदिया पिछि रे वाई
बरदीय हरदीय ऊड़वलेनि गरदी में
रोवत बानह कीसनवा जार बेजारऽय (३७१०)

ओहि घड़ी पटकइ घरतिया मेंनि रे माथऽ
आजु कहैं हो हो ना दइवा मोर नारायन
अब फेरि सुनबह् मालिकवा रे हमारऽय
लोरिक एकतह् जाबरबाह तूंहइं रहलऽ
अब फेर नहिनीय एहर कोइ रे जोर
का जानी काहां से जाबरवा जे आइ कऽ टीकल
तोहरे सेम्हू सागरवाह् केनि रे देस
आजु भाई सोरहना सईयाह् रे बरदिया
अब हांकि देलेह् सीवनवा केनि अड़ार
आजु मोर पार्कलि ना गोहुवांह् रे गोजइया (३७२०)
बरदीय देहलेनि गारदियाह् रे उड़ाई
कइसे हम बालउ ना बचवा जे आपन जीयउवऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलियाह् रे चुकाइ
एतना जउ कहत ना ओठियन बऽइ रे ठारय
लोरिकाह् सुनइ ना कनवाह् रे लगाइ
परजाह् देलेसि दोहइयाह् रे ओठिनिया
ओठिन एक सइ अहीरवा के बनत रे वाइ
जेवने घरी देहलेनि दोहइया जे कुलि रे परजा
अहीराह् ऊतरल चार्नानिया से वान रे जातऽ
ओहि दिन काटि काटनियां जे रेंगिये देलेनि (३७३०)
परजन के देतई ना बतिया बा अर रे थाई
आजु कहैं सुनबह् हारदिया का परऽजा
बरदी हंकले सागरवा पर चऽलऽ
हमहूं चलत ना सथवा में बाड़ो
कइसन हवइ जबरवा हो देखी.
ओहि दिन एतना ना वतिया हो कहऽत
अउ फेरि रेंगल बा लोरिका हो जातऽ
एकदम रेंगल सगरे ओहि जाला
बरदीन लीय आवतवा हंकवाई
तब तक आये नऽजरिया दव रे रावत (३७४०)
कवनि लवकलि ना सोझवा कइ रे बाड़य
बान्हलि वाड़इ बागुलिया लेइले घोड़ा
ओहि दिन हारल आहिरवा जे बीर लोरिका
दरियांह गयल ना ओठियन वनसवाय

आजु कहैं दांतेह् आंगुरिया जे धइये चांपलेनि
अब फेरि भयल गीयनवा जे ओकर सरीर
आजु भाई कहां के जाबरवा जे सरवा हऽवइ
आजु मोर नाऊय हाजमवा जे गउरा से अयनऽ
ओहि भाई कइलीय बीदइयाह् ओहि रे दम्म
तउन घोड़ा बान्हल सावढ़ियाह् मेंनि रे बानऽ
चाहिय मारिय क देले वा फेंक रे वाय (३७५०)
······तवने ना दिनवा राम समइयां
की फेरि ओहूय समइया क हालऽ
जउने घड़ी जूटल ना बानह हो करीबऽय
लोरिकाह् बोलल लारमवा का बोलऽ
अब कहैं सुनबेह् ना भइयाह् दूरन्देसी
अब तोहंय केकरेह् ना जंघवा क बरिअइयां
हरदीह् दिहलेह ना गरदी में मिलाई
तब फेरि बोलल ना सोभवा वाई रे नाई
संघिय मनवह् काहनवाह् रे हमारऽय
आजु कहैं अपनेह् ना जंघियाह् केइ रे जोरे (३७६०)
हरदीय देहलींय ना गरदीय रे मिलाई
दुनहुन से बातेंह ना बाते होला रे सरबरि
बतियाह जातइ मरदवाह् नगि रे चाई
जउने घड़ी बीति गयल ना उहां सामने पऽर
अउ फेरि नायक गयल ना मुमु रे काई
जउने घरी हंसल ना सोभवाह् कुल रे नाई
जेकर भाई चमकलि बऽतिसिया जे देख रे वाई
ओही घरी छोड़िकह् लोरिकवा बर रे जोरिका
उहं भाई दुन्नोह मारदवा जे ऊंझि रे राइ (३७७०)
आजु कहै अइसीय मीलनवा जे कइ ये कानी
रोवत बानह ना जरवा जे देख बेजार
ओहि दिन मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
सोभवाह् बोलल नायकवा जे पुनि रे बाय
आजु कहै सुनवह ना भइयाह् मोर लोरिकवा
एठियन तूं मनवह् काहनवांह रे हमाऽर
गंगियाह् आयल गाउरवाह् तोहरे मे
अब हरदी टीकल ना घरवाह् रे तोहार
का घरे कनीय कूसलियाह् ऊ बतउलेसि

एतना खुसियाली सारीरवा जे होइ तोहार
एतनाह् देहलऽ बोदइया जे नउवा के (३७८०)
एहीय दवरेंह ना हमहूँय फिनि रे लीहलीं
घोड़वाह् बान्हल बांकुलिया बा अहि तोहार
ओहि दिन बोलत आहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् करइ ना बेड़वांह रे जबाब
संघीय मनबह् ना काहना रे हमाऽर
नउवाह सारेह् हरामिया जे बोल रे बोल
कहू भाई कूसलि ना गउवां जे बाइ गउरवा
कूसलि बानह् गाउरवा क सब रे लोग
आजु कहैं कुसलि ना मइया जे बाइ रे खोइलनि
कूसलि बानह् ना ककवाह् रे हमाऽर (३७९०)
आजु भाई कूसलि ना भइया जे बां संवरूवा
कूसलि बानीय लछिमियांह् मोरि रे बाय
आजु कहैं [illegible] ना जनमल बाइ बेटउना
बोहवा में बाजलि बाधइयाह् लेइ रे बाइ
आजु हम एक्कइ ना बोहवा जे गाइ छोड़ि अइली
गइया बहुत ना गइनीय रे पजाय
आजु कहैं धरमीय ना घुमि फिरि कनि रे ओठियन
अब ओह दूसर ना बाहवा बाजे दिन मुबराय
आजु कहैं दुइयइ ना बोहवा में जूटलि बांइ गइया
घरवांह् बाजति बाघइया जे देख रे बाय (३८००)
आजु भाई एक्कइ बाधइया जे अहिरू नहिनी
मंजरीय दूसरि ना कइले बा ढिग रे हार
तब फेरि बोलल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
संघी हम कहल ना बतिया ज लेल रे कार
आजु हम सगरउ ना धनवाह् साथी बा कूसलि
बुजरीय गईलि बीयहिया जे चलि रे जाई
ओकर असि दुदुई बीयहिया जे कइले हुई
अब हम देखब बीयहिया के ढिग रे हार
...... सूनह न हलिया हवाली
सोभा कहत बाड़इ नह समुझाई (३८१०)
आजु कहें संघीय ना सुनिलह् बीर रे लोरीक
अब तोहार होइ गइलि घरवां उदि रे पानऽय
आजु कहैं मीलल ना गउवांह् बा नरानापुर

अब मिलि गयल ना गउवांह्‌ उम रे रावंऽ
मिलि गयल गाढ़इ गाजनवांह्‌ कइ रे तूरूक
अब गढ़ पिपरीय ना कोलवाह रे चंडारऽय
देख भाई चारिउ न दलवाह्‌ बांइ चिहुइकऽय
अउ फेरि खइलनि परतियांह्‌ एक रे भातऽय
अब साजि देहलनि ना धरिया जे बोहवा के
मारि देलेनि सांवर सूभगवाह्‌ सर रे दार (३८२०)
आजु कहैं दाहनि ना होइ गइल रे गउरवा
लछमीय होइय गइलिया बा उदि रे यान
..... सुन के भइयाह्‌ लेइ ये लोरीक
एठियन मनबेह्‌ काह्नवाह्‌ रे हमाऽर
तब का जवनि माजरिया जे चल रे खेंतवा
घंटाह घंटाह पर कापड़ाह रे पुरान
ओहि घड़ी ऊहउ कापड़वा जे नाहिनीं मीलत
धियवाह्‌ बाड़इ ना नांघटवाह रे उपारि
तब कह घूरेह ना घुरवाह कइ रे लतवा
जोरि जोरि पहिरति पेवनवा जे धन रे बाय (३८३०)
आजु कहैं बारह ना मनवांह्‌ लोह कऽ मूसर
मंजरी के गयल ना हथवा में बाड़े खियाय
गउरा में कतहूँय कुटवनी पीसवनी नऽ रे मीलइ
दाना बिनु मरत बांयहिया जे बाइ तोहाऽर
एतना जउ सूनत अहीरवा बीर रे लोरीक
ओहो घरी रावत सारीखा बा अहीरे कऽय
गोताह्‌ भयल हारदिया वांय रे जातय
एकदम चढ़ीय चानानिया पर रे गइनऽ
जहवां पर बइठल कचहरी के बान हो लोगऽ
जाइ के भाई बोलल अहिरवा बाइ रे बोलऽ (३८४०)
पंचह देखह बोलह्‌ ना राम रे रामइ
घरे हमरे भारीय बीपतिया परि रे गइनीं
अब लुटि गयल गउरवा मोर रे गांवऽ
घरवा का धनइ न पूंजिया लुटि रे गयनऽ
बांटि कनि खइलेनि ना कोलवा रे चंडारऽ
तब काऽह नऽवइ ना लखवा क देख रे हारऽ
जउन हमार पहिरति बीयहिया बा हर रे दम्मऽय
तवन बुजरी पहुँचलि पीपरिया कइ रे कोली

(३८५०)

छतियाह् पर देहलेसि ना एड़वा रे दबाई
गलवा के छूटति ना हरवा लेइ ये जाऽला
आजु कहैं अइसन अइ दिनवा जे निय रे अइना
उये हार सोहर कोलिनिया के बाड़इ रे गऽर
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अहिराह् बोलल कचहरी में वाइ रे बोलऽ
आजु भाई जूटल हऽरदिया के बाड़ऽ रे लोगऽ
देखिलय हिन्नुय ना थम्बेह रम रे रम्मी
केहू भाई तुरूक ना झुकबह मोर सलामऽ
घरवांह मारि गयल बा मल रे सांवर

(३८६०)

बेढ़ि मोरि गइनींय बयनवाह लेइ रे गाई
हम भाई भइयाह् वयऽरबाह जब रे साधब
नब भाई रहिहइ बंसबा क मोर रे ओरऽ
केत फेरि जातइ ना अति सरीय रे बनाई
हमहूँय देबइ ना डड़वाह् रे चढ़ाई
अब कहैं बीति जाई ना झागड़वाह् कोलवन से
जे केह रामइ ना देहहंइ तेन रे लेइहंइ
जउन भाई जातइ पीपरिया में जूझि रे जाबय
दिनवाह् दिनकह् झागड़वाह् जाइ ओराई
नाहि हम लऽवटि पीपरिया के देख रे अइबऽ

(३८७०)

आपन फेर लेह आड़रवाह् पर रे गाइ
जउने घड़ी देबह न दरवांह रे बइठाई
हम फेरि अइबइ हऽरदिया जे देख रे पाल
······घड़ी तवनेह ना दिनवांह राम समइयां
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालऽ
हरदीय मेंनिय बऽरदियाह् छेति रे यानी
नउवाह के देलहं ना ओठियन ढगि रे लाई
लोरिकाह् गयल ना ओहवांह देख रे बाड़ऽ
रोइ रोइ कहत पऽरजवन से बाड़ रे बातऽ
उहवां से ऊठल मरदवाह् बीर रे लोरीक

(३८८०)

अपनेह रेंगल गीरिहियांह् अन रे बंसय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
एकदम बोलत चऽलतवा ना बीर रे बाड़ऽ
अब हुलि गयल ताबेलवा में ओहि रे दम्म

जहवां पर बान्हल ना घोड़वा जे बाइ रे मांगर
ओन्हकर आँखर पांखरवाह् बांइ रे कांसत
मुखवा में देलाह् गीरिहियाह् रे लगामऽय
आजु भाई बारेह ना बरवाह कइ रे मोती
अउ फेरि देनह् ना बरवा में गुंथ रे वाई
आजु कहैं बान्हइ नेउरवाह् गोड़वां में
जेकर भाई साठिय ना कोसवा में जाइ आवाजऽ (३८८०)
आजु कहैं बान्हइ ना मथवाह् मेंनि रे कोड़ाऽ
जे महं गोलिय ठाहकवाह खाइ रे जालऽ
उहो भाई उहवांह् सेनिय नाह रेंगिये देनऽ
अब चलि गयनह ना घोड़वाह केनि रे पासऽ
आजु भाई छोड़िनइ ना बगियाह घोड़वा कऽ
लोरिकाह् पूछत बीयहियन से नहिं हो बातऽ
आजु कहैं डांकिय मांगरवा जे पर रे गइनऽ
अब फेरि आसन ना देहलेह् रे धराय
घोड़वाह् नीचेह् ना छोड़ले जे वा धरतिया
उपरांह् हावाह खीयवतइ अस रे मान (३८००)
दिनवांह भरइ ना घोड़वा खूब रे चऽलत
संझियाह् होतइ ना देखिलह् इह रे हालऽ
आजु कहैं घोड़वाह् खींचइ नाइ रे खिचायल
आइ कनि चूवल हरदिया जे ओहि रे पालऽ
ओहि दिन बोलल अऽहिरवा जे बीर रे लोरिका
मंगरा तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई दिनवांह् ना भरवा जे सकल रे चललऽ
फेर लेइ अइलइ हरदिया जे तुंय रे पाल
ओहि दिन बोलल ना घोड़वा जे बाइ ये मांगर
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वाह् रे जबाब (३८१०)
लोरिका तें बड़ दिन ना जियलेह लेइ रे मदिया
जाइ जाइ सुतलेह जऽमुनिया के तोइं रे गोड़
जमुनी से बातउ ना चितवा जे नाहिं रे पूछले
अउ रेंगि देलैह् गाउरवाह् ओहि रे तोर
आजु कहैं खींचति जादुइया बा जमुनी कऽ
तोहइं के पटकीय ना हरदिया रे बऽजार
आजु तुयं कवनो सऽहरिया जे दिन भर उड़ब
संझिया के अइबह जामुनिया के देख रे घर

ओहि घड़ी सूनहू ना हलियाहू ओठियन कऽय
अउ फेरि रेंगल आहिरवऽहू घोड़वा बान्हि कऽय (३८२०)
अब चलि गयल जामुनियाहू केनि रे पासऽ
जमुनीय डाहर ना गदिया पर रहलि रे बइठलि
बेचति रहलि दूकनियाहू पर रे मालऽ
ओहि दिन गयल अहीरवाहू डिम रे राइ कऽ
अउ फेरि धरत चरनवा पर बाइ रे हाथऽ
आजु कहैं धनवाहू ना सुनिलहू मोर बीयहिया
जमुना तूं मनबह काहनवां रे हमाऽर
आजु हम जातइ ना बाड़ीय हरदी में
हरदी ते छोड़त ना बाड़ीय गाउं तोहाऽर
सुनलीं जे मारिय गयल ना मल रे सांवर (३८३०)
बेढ़ि मोर गईल बायनवा सब रे गाई
अब कहैं चिड़ियाहू लुटि खइलेनि रे चिरइ कऽ
जे गुर कप्नीय के कुठिलवा कइं के बान
आजु कुलि धाऽनहू ना पुंजियाह लुटि रे खइलें
घरवांह नाहिय ठेकनवा बाइ रे आजऽय
हमहूंय जाइत घरेह ना कइ ये रहलीं
तवन सूनह ना हरदियाहू रे बनाई
सूनह ना हलिया जे ओठियन कऽय
बोलति बाड़इ ना जमुनीय रे कलारि
आजु कहैं सइयांहू ना सुनिलऽ तुं सुख रे नन्नन (३८४०)
सेनुर मनबहू काहनवांहू ना रे हमार
देख भइया हमरेहू ना घरवां तूं टीकल रहलऽ
घुमि घुमि देलहू ना रंड़ियाह रे मचाय
आजु भाई मुदईय ना जोहत हउवें रे बटिया
अब तोहार देखत डहरिया जे लेह रे आई
कउनो जो खटीय आपदवा जे परि रे जइहंऽ
हम्मन के होइहंइ जातनवा जे बरि रे यार
बुजरो तूं अहीरा जवंइया रहलऽ टिकवले
एहर तूं कइलह मा देसवा तूं खयरे कार
एनहूं के बड़ बड़ जाचनवा जे करिहें लगिहें (३८५०)
कुछ मोरे बूतेहू कहलवा ना नाहि रे जात
तब फेरि बोलल मरदवा बा बीर रे लोरिका
बियहीय मनबे कहनवांहू रे हमार

आजु हम जातई ना पिपरी में जुझ रे जाब्यऽ
दिनवाह् दिनकइ झगड़वा जे टूटि रे जाइ
ना हम जाइकेह पिपरियांह् मरबे कोलवा
आ बेढ़ि लेइ जाइबि बयनवाह् लेइ रे गाय
जवन भाई कुलवाह् मे रइहें कुल रे नन्नन
तोहरे पर खतिय आपदवा जे परि रे जाय
बियही जे कीरति के लोचनवा जे दवरे राय (३८६०)
चलि जाई नगर गउरवां जे गुजरे रात
लोरिकाह् खातइ् ठहरियाह् पर रे रहिहुंय
अब हाथ धोइहुंय हरदियापुर रे पाल
आजु कहें कवनेह ना दिनवाह् राम समइया
के फेरि ओहुव समइयाह् कइ रे हाल
छुट्टि देहले ना बाड़य रे जमुनिया
घोड़वा पर डांकि भयलवा बा अस रे वार
तब फेरि सुनति ना रहनीं बेसा चनइनी
बेसवाह् निकलिल महलियाह् सेनि रे बाइ
आजु कहं हलि गइलि तबेलवाह् राजवा के (३८७०)
जाइकेनि घोड़ियाह् बेलसिया जे छोड़ि रे दे
उनकर आखर पाखर बा जे कसि रे लिहलें
मुंहवा में देलेसि लागमियांह रे धराय
उहे भाई ले लेह ना घरवां जे चलि अइनीं
आ फेरि देलेनि दगलियाह् रे खियाइ
आ फेरि देलेनि दगलियाह् रे खियाइ
आ फेरि आपन सामनियाह् छोड़िये ओठियन
आ फेरि धऽरत मरदवा के बाइ रे ओर
ओहि घरी अंगवाह् न पहिरत बा अंगरखा
गोड़वा में कसति चिउलियाह् रे तबान (३८८०)
अब कहें दिल्लिय ना सहिया लेइ रे जूता
चनवाह् लेलेइ ना एड़वाह् रे चढ़ाइ
आजु भाई लेलेह ना तेगवा जे हम हथवा में
दवकनि भइलि ना घोड़िया पर अस रे वार
आजु कहें सम्मुख आसनवा जे उहे छुववलेन
घोड़ियाह् रेंगलि ना उपराह् चलि रे जाइ
घोड़वाह् मारत भंवलियाह् किहां रे जाला
आ घोड़ि लेलेसि ना सोझऽ जे परि रे हार

अब कहें जातइ ना जातइ कुछ रे दूरिगा
कइ दिन भयल सावनवा जे ओहि रे दांव
ओहि घरी देखइ अहीरवा जे बीर रे लोरिका (३९९०)
आ फेरि बोलत ना मनवाह् मेनि रे बाय
इ भाई कहां क सूखा जे बीर हंवऽ
इ संगे जातइ रहनियाह् पर रे बाइ
चाहे भाई छतरीय ना ले ले रूपवा हंवऽ
उहे भाई निहुरि करत बा पर रे नाम
जवने घरी निहुरि पालगिया जे कइये देहलेन
चनवाह् गइलि ना रूपवा जे मुमु रे काइ
ओहि घड़ी छूटलि ना खंड़ियाह् रे दुगाहें
अहीरा दांतन अंगुरिया जे बाइ चबात (४०००)
आजु कहैं हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
आजु हम चेनवाह् के मतवा में लागि रे गइलीं
आजु मोरे गायब ना पूंजिया जे होइ ये जाय
एतनाह् सोचत अहीरवा जे बीर रे लोरिका
आ फेरि बइठल ना दरियांह् लेइ रे बाय
आ फेरि बे साह् ना जतिया जेह चनइनी
बेसा तोर हंवह सखरवा जे परि रे वार
हम बेसा तोरे ना मतवा में लगि रे गइनीं
आजु मोरें हो गइल गउरवा मे खय रे कार (४०१०)
उहवां से मूनत ना बतियाह् परदे में
फेरि भाई दून्नोह उड़वले जे बानऽ रे घोड़
के फेरि घड़ीय समीतवा केनि रे बीतल
उहे भाई चुवल ना बोहंवाह जे बान मझार

हल्दी-चनवा का उढ़ार समाप्त

४. हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी पिपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

जवने घरी सुनह् ना हलिया ओठियन कऽ
आजु लदि गइलि समनिया हरदी से
हाथीय घोड़ाह् ना ओठियां रे बहिरत
आजु भाई तमुवाह् काननतिया लगि रे गईल
अहीरू के जोर लेनि निगहिया लेइ रे पांतरि
जवने पिरिकल तमकिया देख रे रहनी
महुअरि देलेसि सामनिया लद रे वाई
सोरह सइ रेंगल सब दियाह् देख रे जानइ
अब फेरि जालइ समनिया जे सांथ रे सांथ
ओहि घड़ी देख ना हलिया ओठियन कय (१०)
आजु भाई घड़ीय समीतवा के बीतल
आ फेरि पहुँचलि हरदिया से बोहा
बोहवा में गयल ना उदिया सब रे पाई
जवने घरी जूझनह कयदियाह् सोरह सई
उहो भाई गयनह ना तमुवाह् पर छिति रे राई
आ फेरि उतरइ ना तमुंवाह् रे कनात
ठाड़ाह् करत ना बानऽ ओहि रे दम्म
आजु कहें मारिह तमुइयाह् केनि रे मारइ
अब होइ गयल ना बोहवाह् रे पड़ावऽ
आजु भाई देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ (२०)
महुअरि उर्दू बजरियाह् हरदी कऽ
तम्मुह देहल बाड़इ ना रे रेंगाई
तब तक थकिले बजरियाह् अहीरे के
रंग रंग बीतत सउदवाह् रे घुमाई
एतनाह् कहत ना बतिया जे देख ओठियन
तमुवा में बानइ अहीरवा लेइ रे बाइ
आजु भाई बड़की तमुइया जे छोल ले दरिया
उहइ हवइ ना मलिकवा के लेइ रे आई

ओहि मेनि डासलि पलंगिया बा अहीरे कऽ
बेसवाह् आपनि ना दुन्नोह बइठल रे बानऽ (३०)
घोड़वाह बान्हल बा बोहवा में मंझारि
जवने घरी उठल अहीरवा बीर रे लोरिक
घुमि घुमि देखत ना बान ओहि रे बोहा
अब मोर फूटि गयल ना तक रे दीरइ
उ लछमी कवनेह मुलुकवा में चलि रे जाई
हमें लिखल बानह् बिपतिया कइ रे ओर
एतनाह् सोचि सोचि अहीरवा जे बा दिन रे रातय
अरे भाई सुनह् ना हलिया जे देख उ वार
आरे सुनह सिपहियाह् देख रे नोकर
कहनाह् मनबह् ना एठियन रे हमाऽर (४०)
आजु भाई चलि जाह् ना नगर देख गउरवां
गउरा में देबह ना डुगिया जे पिट रे वाइ
जेतनाह् गउरा मक्खनवा जे दूध रे होई
ओतनाह् लेइ चलह् ना बोहवा जे देख मंझार
अब कहें टीकल ना राजवा जे बाड़े रे पूरुबी
पूरुबीह् आवल बांगलवा जे बान कटाइ
आजु भाई बइठल फरदिया जे गोड़वा जे टूटल
उहे भाई मंठाह् भा दूधवा के होति रे खोजि

गायक द्वारा दुर्गा का स्मरण

हे राम, राम, राम, हो राम
आजु कहें तवनेह् ना दिनवा जे राम समइयां (५०)
केहि फेरु ओहूव समइया के देख रे हालऽ
अब जिनि भूलह् ना संगिया जे मोर समउरी
जिनि भूलि जायह दुरुगवा जे मुनि रे मइया
दुरुगाह् हम तोहरेह ना बलवा जे बउ रे सइयां
नउवांह् लेतइ ना हरदम बाड़ी तोहाऽर
मातवा तूं तिन्नइ परनवा जे जिनि रे छोड़
अब फेरि देहह् डहरिया जे दव रे राई
आजु भाई बारहना पलियाह् बा गऊरा
तिरपनि कसकलि ना बानी ह् अही रे रान
घर घर घुमलि ना डुगिवाह लेइ रे बानी (६०)
महि फेरि मंठाह् सबेरवा जे लेइ रे चलऽ
तब फेरि बोललि ना धनवाह् बाइ मजरिया

अब मां सुनिलह् ना ससुवा रे हमरइ
कतहुँय तोहइ मंठवा हेरि रे लेतीं
अधिया पर लेइ आवऽ मंठवा रे उठाई
जवने घरी बेसिय ना बोहवा के लेइ रे अइबय
आधा लेहंइ ना बेचवा जे आपनि बांटि
आधाह् बाचिय ना बेंचवाह् रे हमरइ
बाल बचा खाबइ दुअरवांह रे बनाइ

मंजरी का लोरिक के बाजार में मट्ठा बेचने जाना

एहि भाई बड़े सबेरवा क जूनऽ (७०)
अहीरिन घर घर मंठवा बाइं रे महत
मंजरीय रेंगलि सबेरवाह् केनि रे जान
जाइकेनि एकइ चरुइयाह् लेइ उठाई
लेइकेनि अपनेह् ना घरवांह् धइ रे लेनीं
तब तक कुल्लाह मुखरियाह् होइ रे लागलि
पानीय पत्तर ना मुंहवा में डारि रे लेनी
जवने घरी सोरह ना सइयाह् रे गुवालिनि
चलि देलेनि ना बोहवाह् रे मंझार
आजु भाई दूधइ ना मंठवा जे दहि रे मक्खन
सब रंग ले लेह ना बोहवा में बानी रे जात
आजु कहें बिचेह् ना धनवा जे लेइ रे ओठियन (८०)
अब फेरि गयल ना नदियाह् रे पहूँचि
अब कहें देखह् ना हलिया जे लोरिके कय
उ भाई बइठल कुरुसि याह् पर रे बाइ
आजु कहें देखइ ना हलिया जे गोपियन कऽ
मंठाह् लेइलेह ना भइलीं सब रे जाइ
ओहि घरी छुल्हल पिहिकिया बा नाहि खेवा
केवटाह् कइलेसि ना नइया जे ओहि रे पार
आजु कहैं चड़नीय ना गोपियाह् रे गुवालिनी
अब फेरि भई ना गइलीं ओहि रे पार
आगे आगे सगरी गुवलिनी जे चढ़ि रे गइलीं (९०)
अब मांजरि चढ़लि सरगवाह् पर रे बाइ
ओहि दिन बोलल मरदवा बा बीर रे लोरिका
उह भाई बोलल लरमवा के बाइ रे बोल
आजु कहैं सुनबह् सिपहिया जे लेइ ये हमरो

कहनाह् मनबाह् ना एठियन रे हमार
देख भाई दसइ ना आगवां छोड़ि रे देबय
आ पांचि छोड़बाह् ना पंछवाह् लेइ ये आज
ओकरेह बिचेह् ना बाड़े जे चिय रे रइया
ओहि केनि लेइ आवऽ मंठवा जे उठ रे वाइ
आरे सुनह् ना हलिया ओठियन कय (१००)
औ फेरि ले लेनि मठवाह् सब रे लोगइ
आजु भाई सबकह् मंठवाह् बाइ बेचाई
ओहि घरी आइकह् मंजरियाह् बाइ उतरले
धियवाह् धरइ भउकवा घुरही पर
दुअरि पर धइकह् पिपोरवाह् ज्रुमि रे जाई
आजु बाबू चड़ि चड़ि ना अंगुरवा कइ रे पेवना
लवकत पहिनेह् धियवा बाइ रे घूमत
तब फेरि सगरो ना धिरे धिरे रेंगेय लगली
तब [illegible]नाह् ना बोललि बा चनइनी
आजु कहैं सइयांह् ना सुनिलऽ सुख रे नन्नन (११०)
आजु सुनिलह् ना पीड़वा मउ रे यार
जवन भाई लेलिय मंठवा गोपिया कय
ए घरी काये रे ना दामवा देइ रे देइं
तब फेरि बोलल मारदवा बीर रे लोरिका
दरियांह् करई ना बेड़वां रे जवाबइ
तरवांह् सोनाह् ना दरबि धइ रे देबे
उपराह् भरि देह् रोकड़वा रे पुरान
ओकरेह् उंपराह चउरवा भरि रे देबे
बरतन धइ दे चरुइया बाहर निकालि
आजु भाई आइ ना गोपिया रे गुवालीनि (१२०)
आपन लेइय भउकवा रे उठाई
चनवाह् भर देइ ना चउरी बरदे कऽ
सोलह दरब चरुइया भरि रे जाई
ओकरेह उपरांह् ना दस सेर पांच सेर चाउर
जवनेह जाइ दरबिया रे तोपाई
ओहि भाई लेइकह् चरुइयापुर रे उतरलि
ओ हो गइनीय बेवरवा ओहि रे पारइ
बिनवाह् देलेसि ना नइया रे उतारी
आजु भाई आगेह् ना कतवा पर चलि रे गइली

मंजरी का अपने सत की परीक्षा देना

अपने में कइलीं गुवालिनि सब रे राजी (१३०)
देखु भाई एही छितन कोइय उतार
केकर देखइं मंगवाह्‌ के ओजिनी बेचल
ओही घरी सगरेउ चेरुइया उतरि गइनी
अब होति बानी चेरुइया तहि रे कातइ
जवने घरी मंजरी क चरुइया दिठि रे गइनीं
हथवाह्‌ देलेनि चउवरवा में धंसाई
मूठिया से सोनइ ना रुपया जे कढ़ि रे गयनऽ
अहिरिन के बाजलि टोकरिया जे देख रे बाइ
अब कहें हो हो ना दइवाह्‌ मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह्‌ ना मंझवाह्‌ रे लीलार (१४०)
एतना दिनह्‌ ना मंजरी जे सत रखलेसि
आ सत देहलसि ना बोहवा में आपन गंवाइ
अस रेंगलि ना गोपियाह्‌ रे गुवालिनि
आचलि जानीय गउरवाह्‌ केनि रे गांव
मंजरी देखइ ना पंसवाह्‌ पास रे जालइ
घरवाह जनमल भोरिकवाह्‌ लेइ रे बान
उहे भाई कोराह्‌ गिदरवा जे ओकरे बानऽ
छोड़ि छोड़ि करइ ना धनवाह्‌ देख रे कार
बुढ़ियाह्‌ टंगले ना नतियाह्‌ केनि रे बानी
तब तक जुटलीं गुवालिनि बोहवा कइ (१५०)
बुढ़ियाह्‌ किनवेह्‌ ना खोइलनि रे हमार
एतनाह्‌ दिनह्‌ मजरिया सत इ राखलि
आजु भाई बोहाह्‌ में सतवा देइ गंवाई
एतना जे सुनति ना बुढ़िया बाइ रे खोइलनि
अब भाई कोरोह्‌ ना बंसिया हिंचि रे हाथे
मंजरी के लेलेसि डहरिया रे तड़ि रे याई
रोइ रोइ बोललि बिटियवा महरे कय
जेकर दावन मंजरिया बाइ रे नांव
सासुइ अइसे ना जीव नाहि मानल
अब तुंय देबह्‌ कड़हिया रे चढ़ाई
अब छोड़ि देबह वियनवा लोहिया में (१६०)
ओमन छोड़ि दह रोकड़वा बरि रे यारड
जवन दागल ना होबइ बेड़ियां कय

जवन भाई जाइय ना हथवा रे खंगार
नाँहि अपने सत सुपुरुष के सति रे होब
हम लेइ आइबि रोकड़वा जे हाथ रे धई
ओही घरी देखह ना हलियाह् खोइलनि कऽ
उहे भाई देलेसि ना खमियाह् चढ़ रे वाई
लोहियाह् छोड़ले बियनवाह् देख रे बानऽ
अगियाह् ताजाह् ना भइलि पेनिया कइ (१७०)
बड़ बड़ तुरत ना धियनाह् कइ रे धऽरय
ओहि घरी फेंकि गईल रुपयवा एक रे दुइया
मंजरी झुकलि लोहिइवाह किहां रे जाल
आजु कहें हो हो ना दइबा मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
जो हम एकइ ना बपवा के होब रे बिटिया
के फेर एकइ पुरुसवा बाइ रे यारइ
जब ओकरे सतइ धरमवा पर रे होबइ
फेर चढ़ि ऽबइ रुपिया हो निकाली
ओहि घरी डालइ ना हथवा धन मजरिया (१८०)
करति बानी रूपियवा एक रे टोही
ओनकेह् तनिह् ना दगिया नाँहि रे लागल
सबकनि गयल ना मनवा रे बइठि
खोइलनि फेरिय मंठवा आनि रे देहले
आजु मोरे देलेन मंजरिया के रेंगाइ
मंजरी सगरो अहीरिनिया चलि रे देहलेनि
तेकरेह् पीछेह् मजरिया बाइ रे जातइ
जवने दिन दूसरि ना बेवरा गइली पाल
आधा तिहा भइलि जानी ओहि रे पार
बिनवा से कहत अहीर ना अर रे थाई (१९०)
आजु कहें सुनबह् ना केंवटा भोर भीमल
एठियन मनबह् कहनवांह रे हमार
देख भाई सगरो गुवालिनि तूं उतारऽ
उहे पिछवड़िया जे पांछवा से आवति रे बाइ
उनकर जिनिय तूंहउ रे उतारऽ
जवन भाई जबरी भउकवा जे नइया पर धरिहंय
ओकर दीहऽ जमीनिया पर तूं उतारि
जिन उहे चढ़े ना दीहऽ नइया पर

जिन ओकर भउका समनिया जे लेइ ये आइ
एतना जे कहि के अहीरवा जे बाइ रे ओठियन (२००)
भीमलाह् खेवत करत बाइ एहि रे पार
जवने घरी बइठलि ना नइयाह् पर मजरिया
तोताह् गयल ना जोड़वाह् केहि रे तोड़
जाइकेनि ओनइ ना हथवाह् रे पकरि
ओनकर हेथवाह ना मनवाह् रे पकड़ि कय
अब फेरि देलेनि ना नइयवाह् केनि उतारि
अब नाहिं करबि ना तोहंइ लेइ ये पारइ
सुबवाह् के बाड़इ हुकुमिया जे ओहि रे दम्म

मंजरी द्वारा सत का सुमिरन— नदी की धारा का रुक जाना

ओहि घरी देखह् मजरिया के हाल रे चालइ (२१०)
मंजरी रोवंति रकतवा के बाइ रे आंसुऽ
आजु कहें बहुत ना दिनवा पर देख रे लवटल
आजु भाई के के अगमवा जे होत रे रहनऽ
तवन भाई अइसी ना दुखवा जे बड़ पछेड़ले
अबहींय गरह सरीरवा पर देख रे बानऽ
ओही घरी रोवे ना धनवाह् रे मंजरी
सतवाह् सुमिरति ना आपन ओहि दम्मइ
आजु कहें गउराह् के सुमिरउं गउराइनि
बोहवा के सुमिरल कनिकवा लेइ रे बार
आपन सुमिरल भवनियांह् माइ दुरूगा (२२०)
जेवन भाई लांगिय ना दिनवा के पूज रे मान
जवन भाई सत्तय धरमवा जे बांचल होइहंइ
आ फुनि होइ जाह ना नदिया एहि रे पारऽ
ओहि दिन परगट दुरूगवा जे होइये गइलीं
बीचेह देलेनि ना दलवाह् दुइ कंकारि
आजु बान्हि गयल ना धरवा जे दुनों वल्ली
बीचेह् तड़कि कांकलि ना मय रे दान
आजु भाई लेलेसि भउकवा जे धनि मजरिया
अब चलि गइलि ना बोहवाह् मेनि रे बाय
आजु कहें जइसेह ना मंठाह् रे घुमवले
आ फेरि छूटनह् सिपहिया जे ओहि रे दम्म (२३०)
आजु कहें चलह भउकवा जे ले ले रे तूहंइ
आजु मालिक तोहरइ मंठवा जे रोज रे बाइ

तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
आजु भइया सुनबहू सिपहिया जे मोर रे बाइ
आजु भाई छोटइ लरिकवा जे हमरे बान
हथवा में रोटिय ना लेहले लेइ रे बाइ
आजु इहे देलेसि चरुइयाह् में गिराई
हमन हथवाह् ना गलिया के ले ल रे कार
इहे भाई राजाह् ना जोगवा जे मंठा नहिनो
दूसरे के लेहि जा ना ओठिन रे लियाइ (२४०)
ओहि दिन केतनह् ना कहना जे बाइ ना मानल
अब भाई लेहले बलउवा पर चलि रे जाइ
आगे आगे रेंगनह सिपहिया जे मुबवा कऽ
पंछवाह रेंगलि नजरिया से देख रे बाइ
उहो भाई मंठाह ना धइयाह् रे दुअरिया
फेरि घुमि गइलि पिछड़वाह् मेनि रे बाऽ
ओहि दिन गुनह् ना हलिया जे लोरिके कऽ
तलुवा में धइल बिजुलिया बा तर रे बार
उहे भाई लेइकेह बिजुलिया तर रे वरिया
जइसन देलेनि दुवरबा पर लट रे काइ (२५०)

लोरिक को मृत जानकर मंजरी का सती होने की तैयारी करना

तवने ना दिनवां राम समइयां के फेरि ओहू समइयाह् कइ रे हालऽ
आज कहें देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
आ फेरि बोलल ना बानह् बीर र लोरिक
बियहिय पूछि ले ना बतिया सुबवन से
काहुय लेइहं ना मंठवाह् कइ रे बेंचइ
तब फेरि बोललि ना गोपिया बाइ गुवालीनि
मंजरीय बोललि ना लरमवा कइ रे बोलऽ
बलकुन हमके ना बेसवा कुछ ना मीलत
इहै मिलि जातइ बिजुलिया तर रे वारइ
मंजरीय झंखइ ना भीतरे मनवा में (२६०)
जइसे रहल बिजुलिया रे हमार
चइलिय सूबा से सइयां रे भइल लड़इया
सूबवाह् मरलेसि ना सइयां के बड़ि रे याई
ओनकर हड़वाह् हंसियवा जे लेइये लिहलेन
इ भाई हवइ बिजुलिया रे हमार
ओहि तवने ना दिनवा समइया

के फेरि ओहू समइया कऽ हाल
अब फेरि देखह् ना हलिया ओठियन कऽ
लोरिकाह् बोलल लरमवा कऽ बोल
आजु भाई गोपिया ना सुनबे तूं गुवालिनि (२७०)
एठियन मनबे कहनवा हमारऽ
जब भाई मिलि तरवरिया दमवा में
अब लेइ जावेह ना तोहउं रे उतारी
उहवां से उठलि ना धनवाह् रे मंजरी
ओहि दम गइलि बिजुलिया किहां रे ठाड़इ
हथवा में लेइकह् बिजुलिया जे तर रे वरिया
उहै भाई बोलति फरकवांह् जाइ रे ठाढ़
आजु कहैं मूबाह् ना सुनिलह् मोर पूरूबहा
एठियन मनबह् कहनवांह् रे हमार
बांहवाह् में हमइं लऽकाड़िया जे जुट रे वइबऽ (२८०)
एहि घरी लागिय बेवरवाह् केनि रे तीर
हमहूँ करीं असननवा बेवरा में
अइसन लेइय ना जलवा में नह रे वाइ
जब हम एकइ ना बापवा के होवइ बिटिया
के फेरि एकइ पुरुसवा के बहु रे यारि
वरम्हा जी छोड़ि दह् जे खंगरवा जे सरजू से
हमहूँ जे लेइ सतियवा जे होइ रे जाब
ओहि घरी सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
लोरिकाह् सुमिरत दुरूगवाह् बाइ रे माइ
आजु कहें सुनवेह् भगवती जे माई दुरूगवा (२९०)
बियही चढ़ति ना चितवा पर लेइ रे बाइ
देबी माई अयसिय ताकतिया जे देबि बढ़ाई
बियही जे जरल ना तनिको पर हमार
एतनाह् कहि कऽ अहीरवा जे बीर रे लोरिका
चित्ताह् देहलेसि ना नदिया पर गड़ रे वाइ
ओहि घरी लेइकह् तरवरिया जे धन मंजरिया
हर घरी गोताह् बेवरवा में मारि रे देई
ओहि दिन रोवत भीमलियाह् बाइ रे केंवटा
रोइ रोइ धरइ मंजरियाह् कनि रे गोड़
आजु बाबू हमरौ जियकवा जे छोड़ि रे देबऽ (३००)
मांजरि हमसे गलतिया जे होइ ये जाइ

केहू के कहलेह् बा हमहूँ जे तोहें बतावऽ
आजु भाई हम नाहिं ना वीपति करीं तोहार
सुबवा के हुकुम ना बोहवा में लागि रे गइनी
अब तब कइलींय ना नइया के तोहें रे पार
ओहि दिन सुनहू् ना हलिया जे ओठियन कऽ
केतनाह् पापइ ना तोहंउ के पड़ि रे जाइ
कवनो दिन बाल ना बचवा जे मोर रे लगिहंइ
कइसे देबइ ना जे रोलिया जे हम चुकाइ
सुलगलि ना अगिया बाइ चितवा कइ (३१०)
आ फेरि गइलि मंजरियाह् रे ढकाइ
जवने घरी देखति ना बेसवाह् जे बाइ चनइनो
ओहि घरी दांतनि अंगुरिया जे बानी चबात
अब कहें हो हो ना दइबाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
आ जेकार जियहिया जे जंघवा के जरलि
आ जेके तनिकव दरदिया जे नाहिं रे बाय
आजु भाई ओढ़री ओढ़रिया के कवन रे गनती
हमन केलिय पूछतवा जे दइव रे बाइ
उहवां से डांकल अहीरवा जे बीर रे लोरिका (३२०)
जाइकेनि चेचुर धइलवा जे देख रे बाइ
मंजरी के घइकह् चेचुलवा ज खीचि रे लेहलेन
ठोकरे से मरलेनि ना अगिया जे गइ छितराइ
ओहि घरी लेइकह् तमुइया में घुसुरि गयनऽ
ग्वालिनि करत ना हाऽलवा जे चलि रे जाइ
आजु कहें हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मथवाह रे लिलार
आजु भाई कल्हियां ना खोइलनि नाहिं पति रे अइनीं
जे आजु गइलिनि ना बोहवा में पस रे वाऽइ
देख भाई कल्हियउ जे लहटल सुबवा रहल (३३०)
आजु ओके लेइ गइल तमुइया जे ओलि रे याइ
अब त गुवालिनि बोहवा के
घरवांह् खोइलनि से बतियाह् देंहि जनाई
देखु बुढ़िया कल्हियो के रास्ता रहल रे ऊहइ
गुंडा लेइ गयल ना मंजरी के तन खरीदइ
अब भाई तम्मुव में नाहीं जे फेरि देखइनी

कवनेह् गइयांह् मुलुकवा में चलि रे गइनीं
एतना जे कहत ना बतियाह् जे खोइलनि से
खोइलनि बोललि लरमवाह् कइ रे बोलऽ
आजु नांउ देलेसि ना गिदड़वा जे हम धराई (३४०)
गीदड़ हम भयल बा कल रे कान
लरिकाह् लेलेहना बुढ़ियाह् रे खोइलनी
रेंगल जालइ अजइया केनि रे घरे
अजईय जाइकह् ना देखत बाइ रे घरऽय
ओहि दिन बोलल ना बानी धनि खोइलनि
बेटवाह् सुनबह् अजइयाह् रे हमार
बहुअरि हरि गइलि लोरिकवा क बोहवा में
ओकर नाहि पाताह् ठेकनवा रे देखातऽ
जवन दिन भइयाह् ना रहलंह् मोर रे लोरिका
अजइय हमरेह ना घबरीय रे फलनियां (३५०)
लोहाह् करत ना बानह् रे लोहारइ
आजु कहें ना लोरिके के बरिअइयां
गदहाह् करत अजइया जे तोर अनेरइ
तेकर बियहिय ना हरि गईल बोहंवा में
लेइ आव पाताह् ना तोहंइ रे ठेकानइ
साइत के कवही के अहीरवा जे फेरि रे लवटी
तोहके पूछिय ना हलिया जे दुइ रे चार
ओहि दिन काहेह् झगड़वा जे दुइ रे चार
कइसे हरि गइलि बियहिया जे चेला तोहार
एतना जे कहत ना बतिया जे बाइ रे ओठियन (३६०)
आजु फेरि अजया बोललवा बा थुथु रे।कार
आजु हम नाहीय ना बोहवा में बुढ़िया जइबऽ
ना कुछु करब ना कमवाह् तइ रे ख्याल
अइसे हम धोरि के सगरवा में चलि रे गइलीं
एकदम साकल ना बोहवांह् रे उजारि
आजु बऽनि गयल ना तिरवा जे कोलवन कऽ
उहवां से भगली गउरवा में अपने रेंगाई
आजु भाई तिरियाइ ना घरवां जे कढ़ रे अबलों
छ महीना पियली गइया के हमरे दूध
एतना जे कहत ना बतिया जे लेइ ये बाड़इ (३७०)
आजु धोबी निरनह ना बतिया रे गुनति बाइ

आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का तुय भयलह् मरदवाह् कइ रे ओर
साइत के चेलवाह् लवटि रे एहि रे गउरा
चेलवा से कवन ना मुहंवा जे देब देखाइ
का जानी का देवह् जबबवा जे चेलवा के
जेकर हरलि बियहियाह् जे देख रे बाइ
तब फेरि बोलल अजइया जे लरमें से
बियही ते मनबेह् कहनवांह् रे हमार
आजु कहे कवनेह् ना दिनवांह् राम समइया (३८०)
के फेरि ओहू समइया कइ रे हाल
आजु कहें सुनलेसि ना बिजवा रे धोबिनिया
बोलत बाड़इ लरमवा कइ रे बोल
सइंयाह् नाहक मरदवाह् रे तूं भइलऽ
अव होइ जातइ जननिया कइ रे रूपइ
बलुकन पहिर पहिरनाह् तूं हमाऽर
आपन लेइ जाह् पहिरनाह् हमहुँ के
हम जाब सांसड ना बोहवाह् रे मंझार
जाइ हम पता लगइबइ देवरानी कऽ
तब हम आइबि गउरवा देख रे गाँव (३९०)
अजई आपन पहिरन जे छोड़ि रे देनऽ
धोबिन के पहिरत ना लुगवा जे फुनि रे बाय
आजु भाई बइठि ना लुगवाह् रे पहिरि कऽ
बिजवा आपन समनिया जे कस रे बाइ
ओहि घरी अंगवांह ना कसले जे बा समनिया
आ फेरि गोरेह् बदनियांह् रे तमाइ
एक हाथ सकतिय ना डंड़वाह् रे उठवले
आ तड़कलि बयालिस जाइ रे हाथ
जवने घरी बहरा ना गउवां बाहर भइलीं
एक ठेइ बाड़इ सेमरिया कइ रे पेड़ (४००)
आजु कहें डांकति चम्फवा जाइ रे बिजवा
ओहि जाके मारति अवरिया जे देख रे बाइ
अब कहैं गिरलि सेमरिया जे अरराइ कऽ
आ फेरि धोबी के कानवा जे सबद रे जाइ
ओहि घरी निकलल ना धोबियाह् खरबराइ कऽ

लुगा फाटिय छोड़तवा जे बान रे जाइ
जाइकेनि हथवाह् हा जोड़िय के बाइ ना बोलति
बियही ते मनबेह् कहनवांह् रे हमाऽर
आजु तुंय दे द ना पहिर ना देख हमके
हम तोहार लेबइ ना पतवाह् रे ठेकान (४१०)
आजु भाई तिवइ ना जतिया जे जानि जाब्यऽ
अब चढ़ल जातीय रइनिया जे दलि रे तोर
जवने घरी तिवइ ना होइ के रन जिति अइबऽ
आजु से डूबि जाइ बंसवा के मोर रे नांव
रेंगल ना धोबिया ओठियन से
अब चलि गयल झरियवा के पासइ
झरियाइ मुने झा हथिया लेइ ये घोड़ा
उहे भाई बनह् ना चरत रे अ भेड़ा
घुमि घुमि पियंइ झरियवा मेनि जलइ
ओहि घरी रेगल ना बीरवा रे रेंगावल (४२०)
अब चलि गइनह् गडयवा केनि रे दारइ
आ फेरि खोखरि ना पेडवा बाइ रे पेड़हनि
ओही घरी गयल अजइया बा घुमुरि
जवने घरी भयनह् ना बिहना रे भुल्हुर
पुनि भाई देलेह कउववा बाईं रार
आजु भाई छुटलंह् ना हथिया देख रे घोड़ा
घुमि घुमि ओहिय ना बोहवांह् रे मझारइ
अब भाई लेलह् अजइया अपने सालि
आजु कहें घोड़वाह् पोंछिया काटि रे देला
उटवनि के काटइ ना दुनो जाइ रे कान (४३०)
हथियन के काटइ ना कोखवा लेड रे कान
हांथिय ऊंचीय चढ़इया पर रे जाती
अब त होतइ घरियवा में उदि रे यान
उहे भाई गइलि सिकाइति लोरिके के
लोरिकाह् मानह् मालिकवा रे हमाराऽ
एक ठे तूंही जबरवा बोहवा में
तोहरे जे जावर ना बोहवा नाहिं रे कोई
का जानि काहां से जाबरवा आइ क टोऽकनऽ
हांथीय घोड़ा भयल बा उदि रे यान
तब कह बिनाह् न सूड़वा कानवा कऽ (४४०)

हाथिन घोड़वा भगइनह् खय रे कार
ओही घरी रेंगल ना ओठियन से बीर रे लोरिका
हथवा में ले लेह् बानइ ना तर रे वार
एकदम टहरइ ना बोहवाह् रे मंझारी
घुमि घुमि देखत घरियवा के बाइ रे गाइ
ओहि दिन बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
दरियांह् करइ ना बेड़वांह रे जबाब
आजु कहैं सुनि लेइ सुघरवा के झरइता
अब तेंइ निकलि ना अइते मय रे दान
एतना जब सुनत ना बानह् गुरु अजइया (४५०)
अब फेरि निकलल खोंडरवा से खरबराइ
ओही घरी दुनोह् पयंतरा जे करे रे लगऽनऽ
आ फेरि गयनऽ अवरिया पर नगि रे चाइ
ओही घरी बोलल ना गुरुवाह् बाइ अजइया
आजु भाई [illegible] ना मरबेह् तूइ रे सुबवा
जवन तोरे अवरिया में आइ रे जाइ
तब फेरि बोलल अहीरवा जे दोह रे राइ कऽ
सुबवाह् ते मनबेह् कहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई आगेह् ना घउवा जे मारि मारऽ
ना त घाव पीछेह् ना रखबह् रे जोगाइ (४६०)
हमरेह् गोरू के किरियवा जे बाइ अखवना
मारबि जे गइयाह् अवरिया जे आगि रे बाइ
एतनाह् सुनति ना ओठिन बा अजइया
अजई फूंकति चाकतिया जे बाइ रे जाय
जवने घरी बचि गय ना मारय लोरिके के
अब फेरि गयल ना ओठियन सिर रे हाइ
आजु कहें रोकत ओड़निया के बाइ रे लोरिका
जेवनह् पछिलाह् दरदिया जे हलि रे जाइ
ओहि दिन हहरल मरदवा बा बीर रे लोरिका
अब फेरि मनबह् कहनियांह रे हमार (४७०)
अब भाई चारिय ना कोनवांह् घुमि रे गइलीं
कतो नाहिं देखल अवरिया के हमरे घाइ
इ घाव मारत ना गुरुवा जे ओने अजइया
दूसर मारय दुनियवां में नाहि रे कोय
एने सुनत बा गुरुवा रे अजइया

डंडा खींचि के गयनह् ना उधि रे राइ
दुन्नोह् गरवा ना जोरिये के रोवे लगनऽ
लोरिकाह् पूछत लरमवा के बाड़े रे बोल
आजु कहें गुरुवाह् ना सुनिलह् मोर अजइया
एठियन मनबह् कहनवांह रे हमार (४८०)
जवन गुरु अइसइ अवरिया जे तोहार चलल
कहें मोर जूझत संवरूवाह् जे सर रे दार
अब फेरि तड़केह् ना देत बा रे जबाब
चेलवाह् आयल गोहरिया जे संवरू के रहले
अब फेरि भइलींय रयनियांह् पर रे ठाड़
जवने घरी बाजल ना तीरवा जे कोलवन कऽ
सोझइ गयल करेजवाह् रे दुधारि
कइसंउ कइसंउ ना घरवा जे जुटि रे गयनऽ
घरे जाके दिहलीं ना तिरवाह् रे निकालि
खनइ ना बगइ ना गुरवा जे पीरै लिहलेन (४९०)
तब फेरि बचलि जिनिगिया जे चेला हमार
सुनबह् ना गुरुवा जे मोर अजइया
एठियन मनबह् कहनवा जे देख हमारऽ
कवनउ हमरेह् ना आगवा के बल रे वालइ
कहां कहां वानह् ना करवा जे देख हमारइ
तब फेरि बोलत ना गुरुवाह् वा अजइया
अब भाई मनबह् कहनवा जे चेला हमार
आजु तोहार नन्हुवां ना गांवे में रहल घोरइया
तोहरे रहल लछिमिया के अग रे हार
उहे भाई बाड़इ गउरवा के गलिया में (५००)
उहे बाड़े झोंकत ना भुंजवा के भर रे साइ
उहे भाई झोंकत भरसइया जे वानऽ
ओहि घरी सुनह ना हलिया लोरिके कइ
लोरिका बड़े सबेरवा के जून
आ फेरि देलेनि हुकुमिया लगाई
आजु मोर सुनह् नोकरवा सिपाही
अब चलि जाबह् गउरवा हो गांवे
जवन बाड़े ना भुजवा हो किहां
नोकर बाड़े झोंकत ना भरसाईं
कहि द पूरबी ना राजा वोहवा में (५१०)

टीकल बान पूरूबवा हो पाटइ
ओही घरी कइलन बलउवा नन्हुवा कऽ
का जानी काहे ना मतलब लेइ जे बानऽ
ओहि घरी छूंटल सिपहिया ओठियन से
रेंगल जानह् ना भुंजवा के दर रे बार
ओहि घरी देखह् ना भुंजवाह् कइ रे हलिया
भुंजवा कहत ना ओठियन अर रे थाई
आजु भाई हमहू ना बहुत रे जियवलीं
बतकच लागत करेजवा जे बान हमार
इनके नाहीं हम ना जाये देब रे बोहवा (५२०)
चाहे केहु बलावे मलि रे कार
एतना जब कहत ना दनिया सिपहिन से
अब कहि गयनह् ओठियन विधि रे राई
आजु भाई जबरीय ना नन्हुवां के लेइ रे धइलेनि
धिचले तन ले ना बोहवां में बान रे जात
ओही घरी सुनह न हलिया ओठियन कइ
बोहवा से चलल ना नन्हुवा बा ढोरइया
ओहि दम रेंगल तमुइया पर रे जालं
जहवां बाड़े अहीरवा बीर रे लोरिक
ओहि ठिन देखत समनवां परि रे गयनं (५३०)
नन्हुवा देखतइ सइलवा पहि रे चानइ
ओहि घरी सुनह् ढोरइया कइ रे हालइ
ओहि घरी गड़ल ना अंखिया बाइ रे मिलत
ओहि घरी उठल ना राजवा बा बीर रे लोरिक
दरियांह् करत ता बेड़वाह जे बाइ जबाब
आजु कहें सुनबह् ना नन्हुवा तूं ढोरइया
एठियन मनबह् कहनवांह रे हमार
आजु भाई भाई दह् जे कुसलिया घरवा कइ
कइसन बानह् ना घरवा के सगरे लोग
ओहि दिन सुनह् ना नन्हुवा के बजनिया (५४०)
बोलत बाड़इ ना वतिया खिसि रे याई
आजु बहनोइयाह् ना सुनिलह् मोरि रे लोरिक
एठियन मनबह् कहनवांह रे हमारइ
जाहि दिन हमहूँय ना बोहवा में टिकि रे गयनऽ
बड़ बड़ भयल जातनवां रे हमारइ

कवन भाई दूधइ मंठवा के रहलीं खातइ
हम भाई बाड़इ धोवनवा रे हमारइ
आजु कवनो कामइ जब देसवा में न मिललं
जाइकेनि भुजा के झोंकति बाइ रे भरसोइ
ओहि ठिन बोलल मरदवा जे बाइ रे लोरिका (५५०)
तुरतेह करइ ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु नाहिं कामह् पीपरिया में चलि रे जात
अब तुंय ले आवह् ना पतवाह् रे लगाइ
कइसन बानीह् लछिमिया पिपरिय में
केतना बचलि लछिमिया जे मोरं रे बाइ
तब फेरि बोलल ना नन्हुवाह् जे बाइ ढोरइया
अब बहनोइया नां सुनिलह् रे हमार
अब हम जावइ पिपरिया जे दुईयं जने
जाइकेनि कोलवन के घरवां रे चलि जाय
ओहि घरी चिन्हले ना कोलवा जे बांय चड़ंरवा (५६०)
मारि केनि देइहंइ पीपरिया में हमके बाइ
तब फेरि बोलल अहीरवाह् बाइ रे लोरिका
दरियांह् करत ना बेड़वाह् रे जबाब
तुंय नाहिं पहिलेह ना अपने जे घरे रे जाब्या
जवन तोहार बाड़इ बियहियाह् आजु रे एक
जाइकेनि उनसे ना घरवां के भेंट रे करऽ
सामी के उ ना करिहंइ पहि रं चान
तव जान कोल चंड़रवा जे नाहिं रे चिन्हिहइं
तूं भइया जावइ् पिपरिया जे दइ रे पार
जेह् रेंगल ना नन्हुवा बाइ ढोरइया (५७०)
एकदम पिपरिया बाइ रे पाल
अब धइ लेलेह् डहरिया जे पिपरी के
अब फेरि लेहले रहतवा बा तड़ि रे याइ
एकदम रेंगल ना अहीराह् रे रेंगावल
चलि गयल कामह पिपरिया जे दइव रं पार
एकदम खरकाह् अड़रवा पर चति ले गयनऽ
जहवांह् रहना ना कोलवाह् रे चंड़ार
आजु भाई बइठि खरकहवा पर रे गयनऽ
आ फेरि देखइ ना नन्हुवा के रूप सरूप
ओहि घरी सुनह् ना हलिया देवसी कऽ (५८०)

ऊह् भाई थोड़ थोड़ करतवा बा रे पहि रे चान
जइसे भाई रहइब रगवा जे अहीरे कय
अब जवन गउराह् ना अइनह् रे बनाइ
उहे भाई हउवै अहीरवा कइ ये पीठइ
इनसे पूछ ना बतिया जे अर रे थाइ
ओही घरी सुनह् ना हलिया नन्हुवा कइ
ओहि दिन रेंगल ना नन्हुवाह् बा ढोरइया
एकदम पहुँचल पिपरिया बाइ रे पाल
अब धइ लेलह् डहरिया जे पिपरी के
अब फेरि लेहले रहतवा बा तड़ि रे आइ (५९०)
एकदम रेंगल ना अहीराह् रे रेंगावल
चलि गयल कामह् पिपरिया जे दइव रे पाल
एकदम खरकाह् अड़रवा पर चलि रे गयनऽ
जहवांह् रहनह् ना कोलवाह् रे चंड़ार
आजु भाई बईठि खरकवाह् पर रे गयनऽ
आ फेरि देखई ना नन्हुवां के रूप सरूप
ओहि घरी मुनह् ना हलिया जे देवसी कइ
उहे भाई थोड़ा थोड़ा करत अब पहि रे चान
जइसे भाई रहइ बारागवा जे अहीरे कऽ
जवन गउराह् ना अइलंइ रे बनाई (६००)
उहे भाई हवई अहीरवा कइ रे पीठल
इनसे पूछ ना बतिया जे अर रे थाई
ओही घरी मुनह् ना हलिया नन्हुआ कय
नन्हुवाह् बोलल लरमवा कइ रे बोल
आजु भाई बहुत ना झापट हमरे परलं
बीतनह् नगर गउरवा गुज रे रातऽ
दिनवाह् काटत ना देसवां देख रे रहलीं
आजु भाई सब दिन ना गउवा हम चरावत
दुधवाह् हम खइलीय ना टेमवा दुइ ये जून
हमके मंठाह् सपनवा होइ रे गयल (६१०)
लछिमी पीहइ बंटइयां चलि रे गइलीं
गुलरी के रवसर जिनगिया बाइ हमारऽ
चलि चल हमहूं पीपरिया देख पाल
पीपरी में करब ना संगवा कोलवन कय
अब फेरि खाबय लछिमिया कइ रे दूध

एतनाह् कहत ना नन्हुवा जे बा ढोरइया
आ फेरि सुन देवसियन कइ रे हाल
अब कहें सुनह् ना नन्हुवा जे मोर ढोरइया
एठियन तूं मनबह् कहनवांह् रे हमार
बलुकन एकइ ना जतिया तूं पतिया रहत······ (६२०)
तब तूंय रेहतह् पिपरिया जे गढ़ रे पाल
तोहार भाई हवइ बारऽगवा जे अहीरे कइ
आजु हमार हवे बारागवा जे दल रे कोल
आजु कहें कवनेह् ना दिनवां राम समइयां
नन्हुवांह बोलल लरमवाह् कइ रे बोलय
देवसीय मनबह् कहनवांह् रे हमाऽर
अब भाई नाहिं ना हमहुँय रे जइबऽ
हम भाई रहबि ना एठियत कोलवन में
हमहूं कोलइ बारागवा रहि रे जाबइ
तब कहें सुनह् ना हजिया ओठियन कय (६३०)
नन्हुवांह् बोलनऽ ना बतिया रे लहाई
बलुकइ कोलइ चंडारवा होइ के रहबि
दुधवा खाव लछिमि क दुनो रे जूनइ
एतनाह् कहत ना नन्हुवांह् जे बा ढोरइया
अब कोल देनइ मोकमवा जे बिद रे देई
आजु भाई लेइ आवऽ ना भठियाह् रे तोराइ कऽ
नन्हुवां के जातीय ना पंतिया में कइ रे ल्या
ओहि दिन मोकमवाह् बऽदि रे गइनं
दिनवाह् धइलें बा कोलवाह् रे चंड़ार इ
आजु भाई भट्ठिय ना देहलेन तोर रे वाई (६४०)
भठियाह् टूटलि ना बानीय ओहि रे दम्मइ
कोलवाह् लेलेह् भठियवाह् चलि रे गयन
संझियाह् के बइठल कउड़वाह् लेइ रे भेदी
ओहि घरी सुनह् ना हलिया ओठियन कऽ
सबकेनि बंटल ना दोनवा लेइ रे बानइ
दोनाह् भरि भरि दरूइया वांड़े रे पीयत
नन्हुवाह बइठल लवठवाह् किहाँ रे बानइ
अगवाह् लेले ना दोनवा देख रे बानऽ
उहे भाई धइकह् दरूइया पीपरी में
नन्हुवांह् धरइ ना दंतवा कइ रे दोना (६५०)

उहो भाई मुंहहिं ना झुठही बा लगवले
दारू पीयल नरकवा मेंनि रे जाला
आजु भाई ओहें ना पनियाह् घुमि रे गयनं
तब फेरि बोलन ना नन्हुवां जे देख रे बाय
आजु भाई सुनह् ना बतियाह् मोर चउधुरी
कहनाह् मानह् ना एठियन रे हमार
देख भाई तहनो ना लोगवा जे अब परोसब
अब फेरि चली रसोइयाह् रे हमार
ओहि दिन नन्हुँवा बोतलवा जे लेइ रे लेला
उझिलत बानह ना कोलवन रे वनाइ (६६०)
जवन घरी पीयइं ना कोलवाह् रे अगड़िया
सिसका भरल कउड़वा किहां रे जाय
कवनो कवनो एहर ना गइनह ढंगि रे राई
कवनो कवनो ओहर गिरलवा जे देख रे बाइ
ओहि दिन सुनहना हलिया जे ओठियन कय
नन्हुवाह् ऊठल मरदवा जे देख रे बाइ
अगियाह् खोरिकऽ कउड़वा जे तेज रे कइलेन
अब फेरि देखह् कउड़वा के हालि रे चाल
कोलवन के धइ धइ मुंहवां जे हिंचि रे देला
अब भाई देलेसि कउड़वा पर जाइ रेंगाइ (६७०)
बहुत कोल जरियाह् ना मरियाह् सब रे गयनं
ओहि घरी लागल टिकरिया जे पुर रे पाल
सुनह् ना हलियाह् ओठियन कय
नन्हुवांह् उठल ढोरइयाह् लेइ रे बानऽ
एकदम हलल अड़रवाह मेंनि रे गइन
जहवां पर बाड़इ ना गइया रे कलानी
गइया से बोलत ना नन्हुवां पुनि रे बाड़ई
अब कहे सुनबह् लछिमिया मोर कलानी
लछमीय आयल सेवकवा हो तोहाऽर
गउवां में आयल मउवरवा रे तोहारइ (६८०)
टीकल बानह् ना बोहवांह् रे मझारइ
हमकेह भेंजलनि ना पीपरीय रे पाल
केतनिउ बाड़े लछिमिया रे हमार
ओहि दिन बोलल ना गइया बाइ कलानी
अब फेरि मनबाह् ना कहना नान्हु हमारऽ

आजु भाई जेतने ना नातइया कोलवन कइ
नाथि नाथि देहलनि ना गइया हंक रे वाई
आजु भाई तीनि सइतिया बाइ रे घरी
कोलवन के बिटियाह् गवनवां देख रे होइहं
आजु भाई आजुय ना सातवां दिन रे साइति (६९०)
अब पड़ि गइलि लड़िकियन कइ रे बाड़इ
एहि दांइ होइहंइ गवनवां जे लेइ रे बटुरल
बटुरइ देइ दह् ना लछिमिया जे चलि रे जाइ
आजु भाई तितिर ना बितिर होइ रे जइहंऽ
पाछेह् का करिहंइ सर रे दार
पंछवाह् बइसि के मोअरवा जे देख रे अइहंय
का करिहें एही पीपरिया जे पुर रे रवाइ
आजु कहें देखह् ना हलियाह् नन्हुवां कऽ
नान्हुवाह् चलल ना बानह् ओहि रे दम्मऽ
अब भाई लेहलें डहरियाह् बोहवां के (७००)
बोहवांह् आयल रे आन्हुवाह रे मझार

लोरिक द्वारा पीपरी पर चढ़ाई—कोलों से युद्ध

तब तक सुनह् ना हलियाह् लोरिके कऽ
उहो भाई बइठल कुरुसियाह् पर रे बानऽ
अब जुटि गयल ना नन्हुवांह वा ढोरइया
अब फेरि बइठब पजरवांह् लेइ रे बानऽ
अ बहनोइया नाह् सुनिलह मोर लोरिका
कहनाह् मानह् ना एठियन रे हमारऽ
देख भाई लछिमीय ना कहले वानी रे बातऽ
आजु कुछ गइयाह् करत रे मत रे मती
अबहींय बहुत ना गइया कुछ रे रहनीं (७१०)
तवने बांयह् ना कोलवा साइति रे धइले
उहे देहइं दइजवा लल रे कारी
आजु के सतयें ना दिनवा जे कोल रे करिहंइ
छितिर बितिर लछिमिनिया जे होइ रे जाइ
एतना जे कहत ना नन्हुवां जे बाइ ढोरइया
लोरिका के गयल ना मनवा रे बइठि
ओहि घरी बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
आजु भाई दुदु हजमवा जे उठि रे जा

ओहि घरी दुदुवाह् हजमवा जे उठि रे गयनऽ
नन्हुवां के करत बलइया जे लेइ रे बाइ (७२०)
केनहुय दाढ़िय ना नहवां जे बायं रे काटत
केनहुय काटत बंगलवा जे बान रे बाय
आजु कहें सगरे समनिया जे बनीये जे कानी
नन्हुवांह् के जोड़ा बा धोतिया मिलि रे जाइ
देहियां के कुरुता कमिजिया जे मिलि गयनऽ
नन्हुवा के गयनऽ सिगारवाह् रे बनाइ
ओहि दिन बोलल मरदवा बा बीर रे लोरिका
नन्हुवां ते मनबे कहनवांह रे हमार
देखु भाई बइठि बोहवाह् में ना देखु रे रहबे
एठिन देखिहऽ ना बोहवाह् के कइ रे हाल (७३०)
अब हम आपन लछिमियऽन केनि ओर
जाइ केनि आपन लछिमिया जे लव रे टइबऽ
तब बड़ अइहेंइ बंसवा के मोर रे ओर
जवने घरी कसइ ना घोड़वाह् रे मंगरवा
मंगरा के कइसे भयल बा समरे चूलइ
जिनकर सोने अखरवा रे सोने पाखर
सोनवा के गिरइ ना बकसलि रे लगाम
घोड़वाह् के बान्हें चिटुकवा मथवाह् पर
आजु कहे ले लह पगरिया लरमें कय
जेमें मेघइ डबरूवां धरे रहनं
गोड़वा के बिल्कुल सिंगारवा करे रे लगनं (७४०)
औ फेरि बारह ना बरवा मोती रे गुहलऽ
और फेरि देले नेउरवा गोड़ रे बान्हि
आजु कहें देखऽ सिंगारवा जे घोड़वा कऽ
आजु भाई सूरुज ना ओरिया ताकि रे जालऽ
नउवाह् घोड़ा ताकलवा बा नहिं जात
जवने घरी आधी ना रतियाह् निच रे लइयां
घोड़वाह् चलल पछिमवांह तड़ि रे याई
आजु फेरि आधा सरगवा ले ले मंगरुवा
अहीरा के हवऽ खियवते बाइ रे जात
ओही घरी सुनह् ना हलियाह् पिपरीकऽ (७५०)
कोलवाह् सूतल ककरउंवा जे देख रहबऽ
औ फेरि सूतल बिरिन्हिया ओहि रे दम्मइ

ओहि दिन बोललि ना धनवाह् जे बाइ बिरिन्हिया
सइयांह् मनबह् कहनवांह् रे हमारऽ
देख भाई मूतल महलिया में बाड़ी हम्मइ
सपनाह् देखत बाढ़ीय नाह अज रे गुतई
जइसे लवटल अहीरवा जे बा पूरूबे से
सरगेह नाचत ना घोड़वाह् बाइ रे नाचत
ओहि दिन देखइ बिरिन्हिया रे उठाई कऽ
कोलवाह् देखत कक्करउंवाहं लेइ रे बानऽ (७६०)
घोड़वाह् नाचत सरगवां मेनि रे नाचत
कोलवाह् धनुही ना तीरवा रे उठवले
अब फेरि देलेसि सउंजियाह् रे चढ़ाई
जवने घरी मारइ एकठवा घोड़वा कय
आ फेरि बमकल अकसवांह बाईं रे जात
जवने घरी बाजल ना तिरवाह् घोड़वा के
दुनो ओकर गइनह् पगहवा बा रे नधाइ
एकदम लेहलेह ना देइलेह लेइये घोड़वा
लोरिका गीरल पिपरिया जे बाड़े रे पाल
उतरल ना घोड़वा से बीर रे लोरिका (७७०)
बिरन्हिय मनबेह् ना मइया कहल हमाऽरऽ
आजु हम अइले पुरुबवा रे हरदियां
बीपति परलि गउरवाह् मोर रे गांव
अब कहें बीपति संपतिया भोगि रे लिहलीं
मातवाह् अवसर जिनिगिया बाटे हमाऽरऽ
आजु हम दूधह ना दहिया कइ खवइया
हमकेह् मंठाह सपनवा बाइ रे होतइ
आजु हम ओह कामह पिपरी में जइबइ
बलुकन कोलेह में मिलिये जुलि रे रहबइ
अब हम खावइ ना दूधवा रे अमोखऽ (७८०)
तवन भाई कइलीं चढ़इया जे पिपरी केय
अब जुटि गइलीं पिपरिया जे गढ़ रे पाल
भइयाह् अइसीय सपनवा जे हमरे देखलेन
अब हम देलेंनि ना माकानवाह् छोड़ रे वाइ
जवने घरी बाजि गयल ना बनवा जे करवंका
अब फेरि गिरल ना घोड़वाह् नयना ठाढ़
उहो घोड़ा ले लेह पिपरिया में गिरि रे गयनऽ

अब हम जइसे अंगवना में बांड़ि रे ठाड़
ओहि दिन बोललि ना बिरन्हिय बाइ कोलिनिया
भइयाह् मनबह् कहनवांह् रे हमाऽरइ (७९०)
तोहार हवइ ना जतिया अहीरे कऽ
तूं भाई अपने पंडितवा पर होइ रे जावऽ
आजु हमार हवइ ना जतिया कोलवा कइ
अब हम कोलइ बरगवा हउवंऽ रे बुड़बक
तब फेरि बोललि नगरवां रे जबाबइ
लोरिकाह् कहत ना बतियाह् रे लहाई
आजु भाई सुनबह् ना कोलवा भाई चंडाऽर
आजु हम जातिय ना पंतिया लेइ रे लेबऽ
अब सार बचलि बा जिनिगिया बाइ हमारऽ
अब फेरि बिरन्हिय गइलि बा पति रे याई (८००)
साचइ अवसर अहीरवा जे बचि रे गयनऽ
अइलंह् [illegible] पिपरिया के बांइ रे गांव
आजु भाई हमरेह् नसीबवा में पति करइहं
दुइ जून करिहंइ लछिमियन केनि तयनात
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
लोरिकाह् बोलल लरमवा क बाड़ऽ रे बोल
आजु कहें भइयाह् ना सुनि ले तूं बिरिनिया
एठियन मनबेह् कहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई अयसिय ना हथवा में आइ रे गयल
घोड़वाह् के मरलह् जिनिगिया तूं मर रे वाइ (८१०)
आजु कहे घोड़वाह् मंगरुवा जे तूं जीयवतू
अब बान्हि देबह् पिपरिया जे दइबे पाल
कतहुँ के गाढ़इ संकेतवा जे परि रे जइहं
चलि केनि लेबह् कामवा जे आपन बनाइ
एतना जे कहत अहीरवा बा बीर रे लोरिका
औ फेरि देलेसि बिरिन्हिया जे उहां रे बोल
आजु कहैं कानिय करजोरिया में बाइ रे अमरित
छिरकन छिरकत ना घोड़वाह् पर रे बाइ
जवन घरी पड़ल नकुलवा जे घोड़वा पर
मंगराह ओठिन भयल बा तइ रे यार (८२०)
ओहि घरी ठनकल ना घोड़वा जे पीपरी में
अहीराह् बानह् अंगनवा में देख रे ठाढ़

आजु कहें मइयाह् ना सुनि ले तुइ बिरिनिया
एठियन मनबेह् तूं कहनवा जे देखु हमार
आजु भाई अइसीय पियसिया जे हमरे लगलें
आजु फेरि गयल करेजवा जे बाइ दुखाइ
तनी मइया ठंढाह् ना पनिया जे घूंट पियवतु
आजु मोरे तरइ सरीरवा में होइ रे जाइ
ओहि घरी गगराह् लेजुरियाह् जे गिरनी लेइके
देख भाई चऽढ़लि जगतिया पर रे बाड़इ (८३०)
अब ढिलि देलेह् गगरवा बा धरती से
उहे भाई जानह् ना गगराह् रे निपऽटि
जवने घरी बोलति बिरन्हिया जे आई गगरवा
अहीरा चढ़ल जगतियाह् पर रे जाई
ओही घरी बोलत बा बोलियाह् रे लहाई
मइयाह् केतना ना तरवां बाइ रे पानी
केतना दूरवांह् गहिरवा लेइ रे बानऽ
तब तक बिरनिय रे ना बानी रे बुड़वते
तब तक घींचलेह् बिजुलिया जे बाइ रे खांड़
ओहि घरी गिरि गयल ना खंड़िया जे बिरनी पर (८४०)
मुड़ियाह् गऽलि इनरवाह् मेंनि रे बाइ
धड़िया गिरलि जगतिया पर बिरन्ही कय
अहीराह् उठल मरदवा जे पुनि रे बाइ
आइकेनि खोललेसि ना गोड़वा जे लछिमिनि कय
लछिमिनि लेलेह पिपरिया के बहरे राइ
आजु कहें कामह् पिपरिया जे कोलवन कऽ
सोनवा के रहलि पिपरिया जे पुर रे पाल
उहे भाई मटियाह् ना कोलबाह् बाइ गिराइ कऽ
ऊपराह् से देलेह समनिया जे बाड़ें लगाइ
आजु कहें चुइ चुइ खंगरवा जे ओहि रे होला (८५०)
जवन भाई कामह् पिपरिया जे पुर रे पाल
अहीराह् खोलल ना गोड़वाह् लछिमिनि कय
गइयाह् डहरलि पिपरियाह् लेइ रे बानी
अब चढ़ि जानी एठियन रे सीवानइ
आजु भाई मचलि धुंवाकर पिपरी में
पिपरी में मचलि धुवांकह् बाइ रे जातइ
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे पिपरीय कय

कोलवा जऽवन देवसिया देख रे रहनऽ
चलि गयल रहनह ना जंगल खेले अहेरइ
कोलवाह् बारह ना मनवाह् कइ रे सूअर (८६०)
मारि छन लेलेह् देवसिया बा कन्हि रे याई
देखत बानह ना धुंववा पिपरी कऽ
उहे कोल झंखत मरदवा बाइ रे जातइ
के फेरि महयाह् बिरिन्हिया जे मरि रे गइनी
चलि भाई देहेलेनि ना अगियाह् ओन्हे लगाई
मइयाह जरति ना पीपरीं केनि रे पलिया
तब फेरि देहलनि अगिया ना लगाइ
जाइ फेरि लवटलि अहीरवा बा पूरुबे से
चलि आइल बानह् पिपरिया दइव रे पाल
अहीराह् भिड़ि कह ना अगिया जे बाड़े लगवले
जऽरत बाड़इ पिपरिया जे मोर रे पाल
ओहि परे पटकइ सुअरवाह जे डहरे में (८७०)
कोलवाह् रेंगल ना अंगवाह् चलि रे जानऽ
जाइकेनि छेकलि अगरवाह् गोरुवन कऽ
ओहि ठेन लोरिकाह् ना गइयाह् बा दरेरत
गइयाह् हुँकह् ना पनियाह् होइ रे गइनी
अब ओहि बीचे झरियवाह् मय रे दान
कोलवाह् धरियाह् ना बानइ देख रे छटकल
उहे सोझे छटकल धरियवाह् बांड़ रे जाई
सबकत बटकत लोरिकवा के देखत रे बानऽ
लोहिकाह् घोड़ाह् ना बानह् रे रेंगावत
गइयाह लेनह् लोरिकवाह् बहरे राइ (८८०)
अब भाई लोरिकाह् ना गइयाह् रे डहर
कोलवाह् मारत ना बनिया रे लहाई
जवने घरी मरलेसि ना मलवाह् बा देवसिया
अहीरा के गयल ना गोड़वाह् जे धयले होय
जवने घरी पयलग ना गोड़वाह् होइ रे गयनऽ
पिठिया से लटकत लोरिकवा जे लेइ रे बाइ
आजु कहें बुचवाह् ना टंगवा जे लेइ के दवरत
काटइ बदेह् ना मुंड़वाह् जे जइ ये हाइ
ओही घरी देखत ना घोड़वाह् जे बाइ मंगरवा
उलझि धइलस ना दंतवा रे बनाई (८९०)

उहवां से उड़ल ना घोड़वा जे लेइये जालहं
जाइके घोड़ा गिरल गउरवा जे ओकरे घर
अब सुनह् ना हलिया ओठियन कइ
घोड़वाह् आयल गउरवांह् गुजरे रात
ओहि दिन सुनह् ना हलिया ओठियन कऽ
अब फेरि ओहू समइया कइ रे हाऽलऽ
आजु भाई गिरह लोरिकवा अंगने में
देखत बाटं बेटवना लोरिके कइ
उहे भाई देखइ सरूपवा अहीरे कऽ
दुनोह् बाड़इ ना गोड़वा रे नथाई (६००)
ओहि दिन बोलल ना गिदड़ाह् रे अहीरे कइ
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु मोरे बाबिल ना सुनिबह् बीर रे लोरिका
एठियन मनवह् कहनवांह् रे हमार
हमकेह कागर बिजुलिया के दे द धनुही
हमें देइ देब संबरूवाह् दादाह् तेग
हमहुँय मारब ना कोलवाह् के बढ़ियाइ क
अब तोहार देबइ बयरवाह् सध रे वाइ
ओही घरी सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
गिदड़ाह् ले लेह् ना धनुहा बान रे जात (६१०)
ओही घरी जाइकह ना लछिमी के आगे भयनऽ
ओहि सेनि देहलसि लछिमिया रे संगेरि
कोलवाह के कतरत ना खइलेसि गाइ रे कलनी
अब फेरि चललि गउरवा केनि रे गांव
जवने घड़ी गउरा ना अंगवाह् बाह रे पड़ऽलऽ
कोलवाह् टिटिकल सलरवाह् मेनि रे बाइ
तब सेनि पड़ि ना नजरिया जे गिदरे कय
लड़िकाह् देखत ना कोलवाह् केनि रे बाइ
ओहि घरी खिचकह् ना बान ना मारि दिहले
देवसी तनलेह् ना तिरवा जे रहि रे जाइ (६२०)
उहे भाई दागलि ना तिरवा जे अभोरिके कइ
कोलवाह् गऽयल ना खयरे में देखऽ संकाइ
कोलवाह् ठड़े ना ठाड़वाह् गिरि रे गयनऽ
ओहि बीचेह् झरिहवा मय रे दान
सुनह् ना हलिया लोरिके कय

लोरिका के कहत आभोरिका लेइ रे बानऽ
ओही घरी बोलल गिदरवाह् अहीरे कइ
अहीराह् देखह् ना हलियाह् रे हवाली
आजु मोर देलेसि ना तिरवा कोलवन के
लोरिका के बोलत आरामवा क बाइ रे बोल (८३०)
आजु कहें बाविल ना सुनि लऽ बीर रे लोरिक
एठियन मनबह् कहनवांह् रे हमार
आजु भाई देखह् ना हलिया ओठियन कऽ
चलि केनि आपन बयरवा ल हो साधी
तोहार माई मरलीं मुदइया खेतवा पर
चलि केनि लेब बयरवा आपन रे काढ़ी
ओहि घरी सुनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
के फेरि ओहुय समइयाह् कइ रे हाल
अब कहें रेंगल मरदवा बा बीर रे लोरिका
अब फेरि लेलेह् पलकिया वा फन रे वाइ (८४०)
जवने घरी बइठि पलकिया मे बीर रे गयनऽ
कहराह् लेइलेह् पलकिया रे उठाइ
जवना घरी गयल ना उहवांह् रे सिवनवा
जहवां पर मारल देवसिया जे बाड़े रे कोल
ओहि घरी देखलसि ना अहीराह् बीर रे लोरिका
कोलवाह् लेइ लेइ धनुहिया जे बाइ रे तेज
उहे भाई तन में परनवा जे ओकरे बाड़ई
अब भाई भइल लोरिकवा के वड़ रे वार
अब कहें सुनबेह बेटवना जे मोर रे अभोरिक
एठियन मनबेह कहनवांह रे हमार (८५०)
हमरे त बिरेहवा कढ़वा जे नाहि रे पवलीं
का कहि मरबेह जे देवसिया जे देख रे कोल
आजु भाई बोलल बेटवना जे लरमें कऽ
बाबिल मनबह् कहनवांह् रे हमार
तुयं भाई तनिके धरतिया में ठाड़ रे रहऽ
हम जात बाड़िय ना कोलवन कइ रे पास
जवने घरी आयल देवसियाह् केनि रे पासइ
खलवे में हिंचत ना तिरवा जे आपन रे बाइ
जवने घरी आपन ना तिरवा जे घींचि ये लेहलेन

अब देखु गिरल ना कोलवा बा भहरे राइ (८६०)
ओही घरी उठल मरदवा बा बीर रे लोरिका
अब फेरि कटलेसि ना मथवा जे जड़ि रे हाय
आजु भाई मुदई बयरवा जे काढ़ि रे लीहले
आ फेरि होतइ जऽतनवा जे देख रे बाइ
आजु भाई खालह् ना मऽलइया जे बीर रे लोरिका
ओ फेरि बानह् सरीरवा रे बलाइ
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे लोरिके कइ
अब घोड़ होतइ वानइ ना तइ रे यार
आजु कहें दे भाई ना मेंटवा जे दुनो हथवां
आ फेरि जातइ पीपरवा जे बाइ रे पेड़ (८७०)
आ फेरि जातइ पीपरवा जे बाइ रे पेड़
ओहि घरी दुनोह् ना घूंचवा में दूध रे लेइ कऽ
चम्फाह डांकल अहीरवा जे पुनि रे बाइ
आजु भाई तन्निय सा दूधवा जे हिलि रे गयनऽ
लोरिके के छोटइ परनवा जे होइ रे जाइ
आजु कहें हो हो ना दइवा मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
आजु हमार हलुक सरीरवा जे होइ रे गइनऽ
कबहुँ खालेह् ना उचवाह् गोड़ रे परिहंइ
आजु कही जाबइ ना मथवाह् रे डंडवाइ (८८०)
आजु भाई निम्राह् ना देसवा में उठि रे जइहंइ
का भाई गइहंइ कलउवाह् कइ रे लोगऽ
एतना जे कहत ना मरदवा जे बाइ रे लोरिक
ओहि जा बानेह् ना गउराह् केनि रे बीच

गउरा में लोरिक का अग्नि प्रवेश और मृत्यु

सुनह् ना हलिया लोरिके कइ
मनवा में उठल अहीरवाह् के सबेरा
उहो भाई लेहले मजुरवा रे बलाइ
दुअरा पर रालाह् ना दलेह् रे मराई
ना त केनि घुमिकेह् गड़बड़वा रे बतवले (८९०)
आजु खनि देलेंह् जे गड़बड़वा अहीरे के
ओहि जा गउरांह् ना बिचवांह् रे दुआर
आजु भाई होइ गयल न गड़बड़वाह तइ रे यार

ओमहू् करसिय गोइंठवाहू् झोंकि रे गयनऽ
आ फेरि अम्माहू् ना चेरियाहू् ले बनाई
आ फेरि सकलाहू् ना लेइयंहू् रे गिरावऽ
आ फेरि देनहू् सकलवाहू् सुलि रे काइ
आहृनि ना चलति घिउवा कइ रे बानी
अहीरा के होतई समऽधिया के नहाऽन
आजु कहें होलाहू् सकलवा दुअरा पर
जलसाहू् होत बा दुरुगवा के अस रे थान (१०००)
दुरुगाहू् धइली ना पिंडवा दुलरे कऽ
लोकति बानी अभोरिका केनि रे बाहृइ
ओहि घरी पिंड़वाहू् खाली ना अहीरे कइ
उहे भाई देलेसि गंजड़वा ले बनाई
जवने घरी पलकाहू् ना भयल बाइ सकलवा
औ फेरि पलका अगिनिया जे होइ रे जाइ
ओहि घरी घीवहू् अहनिया जे बा जीयवले
अब घीव बनकल ना आरिया जे बाने रे देत
ओहि घरी कूदल ना अहीरवाहू् लेइ रे ओठियन
अब फेरि बइठि पलकिया जे गयल रे बाइ (१०१०)
जवने रहल परनवा जे अहीरे कऽ
अऽ फेरि बोलत बानइ ना सीतऽ रे राम
जवने घड़ी चढ़लि ना अगियाहू् लेइ ये बन्हल
अब बरमन्नहू जरतवा जे देख रे बाइ
ओही घरी बोलइ ना पचहू् गांव रे घर
सब कोई बालहू् ना मुखवा से सीता रे राम
अहीरा जलि के ना रकवा होइ ये गयनऽ
अपने दरेहू् गउरवा जे गुज रे रात

— समाप्त —

भावार्थ

सुमिरन

भावार्थ—(१—३० पंक्तियों तक)

गायक कहते हैं—राम का गुण गान करो। तुमने राम का नाम लिया है। जब तक तुम्हारी मिट्टी में प्राण रहे तुम ऐ भाई, राम को विस्मृत मत करो, गायक कहते हैं—नीचे तुम धरती माता को स्मरण कर लो। ऊपर भगवान का स्मरण करो। यहाँ डीह ठाकुर को स्मरण कर लो फिर स्मशान की मरी को याद करो। ऐ भाई, बाबा गोरैया का स्मरण कर लो जो पूजा में चढ़ाये हुए सूअर को खाते हैं। फिर तुम बाबा बघौता का स्मरण कर लो जो टोनहिन स्त्रियों के सहायक हैं। ऐ बाबा, तुम टोना करने वाली स्त्रियों का टोना रोको। ओझा की भौह और ललाट को बाँध दो। डाइनों के दामादों को मार दो। संसार में भिनभिनाने वाले सुग्गों की मृत्यु हो जाय। गायक कहते हैं—राम के द्वारा रामायण की रचना की गयी। लक्ष्मण ने काठ और पयाल का सृजन किया। सीताजी ने अपने नइहर (मायका) का सृजन किया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोड़ा। गायक कहते हैं—ऐ कंठेश्वरी, तुम मेरे कंठ में बैठो। ऐ गौरी और गणेश तुम लोग मेरे हृदय में बैठो। माँ दुर्गा, मेरी जीभ के लिए तुम गहना हो। तुम मेरे भूले हुए शब्दों को जोड़ देना। हे देवी अगर एक भी हर्फ़ दब जायगा, तो तुम्हारा नाम नहीं लूंगा। सतयुग में जितनी कीर्ति गायी गयी है उसे अब कलियुग में लोग जोड़कर गा रहे हैं। भगवती डीह के देवस्थान को जोड़ दो ताकि ऐ दुर्गा तुम्हारी शक्ति जान सकूं।

मूल पाठ

भावार्थ—(१—१००)

१. अगोरी—लोरिक का विवाह

अगोरी बारह पल्लियों की है। वहाँ तिरपन गलियाँ और बाजार सुशोभित हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। वहाँ के सूबे के मालिक मोलागत थे। उनकी चाँदनी सजी हुई थी और दरबार लगा हुआ था। उस समय विचार-विमर्श चल रहा था कि चुगुली करने वालों ने उन्हें समझाकर यह बात कही। हे राजा, हे महाराजा हमारी बात मानिये। आपकी जो एक-एक प्रजा है उसके बारे में थाह लीजिए। अगोरी में कोई आपके जोड़-तोड़ का दिखाई तो नहीं पड़ता पर आप सबका अन्दाज ले लीजिए कि आपकी कौन सी प्रजा कैसी है? अब उस समय की और वहाँ की बात सुनिये।

मन्त्री ने राजा के मन में यह बात बैठा दी । प्रातःकाल हुआ । पौ फटने लगी । पूर्व दिशा में कौवों ने शोर मचाया । मोलागत उठ खड़े हुए । शौच के लिए गये । हाथ मुँह धोकर मुँह में मगही पान के पत्ते दबाये । पान कूचते हुए सोने की छड़ी उठायी और पैर में सोने का खड़ाऊँ डाला, किले की सीढ़ियों से उतरकर शहर में गये । महाजन साहु ने उन्हें देखा तो वह काली कुर्सी लेकर दौड़े और झुककर प्रणाम किया । राजा ने आशीर्वाद दिया —"ऐ मेरी प्रजा, तुम अक्षय रहो, अमर रहो । लाख साल जीयो । जैसे गंगा का पानी बढ़ता है उसी प्रकार तुम्हारी आयु बढ़े ।" साहु ने राजा का स्वागत किया । घर के अन्दर जाकर दूध और चीनी ली और शर्बत बना लिया फिर लोटे में पानी और गिलास लेकर राजा (सूबा) के सामने आ गये । राजा ने उठ कर पानी पीया फिर साहु का द्वार छोड़कर अगोरी की गलियों में घूमने लगे । उन्होंने बावन गलियों की परिक्रमा की । कोई प्रजा पहचान में नहीं आयी । जिस समय राजा तिरपनवें गली में प्रविष्ट हुए वह अहीर के दरबार में गये । महर आँगन में कुर्सी पर बैठे हुए थे उन्होंने राजा की ओर नहीं देखा न राजा ने ही जबान खोली । वह एक पहर तक खड़े रहे । उन्होंने अपने मन को गुलामहीन नहीं बनाया । क्या मैं कुत्ता हूँ जो दरवाजे पर आ गया हूँ ! मेरी प्रजा बैठी रह गयी । शायद शर्म के मारे वह नहीं उठ रहा है (ऐसा सोचकर) वे चार पग पीछे हट गये । अलग होकर खंखारा तब महर कुर्सी से उठे । कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा ! तुमने मेरे ललाट में क्या लिखा है ? राजा प्रजा का चूल्हा देखें ! मैं इसको किस मुल्क में खदेड़ूँ—(महर ने कहा) । राजा मोलागत ने यह बात सुनी । फिर वहाँ से चल पड़े । चुपचाप चाँदनी पर चले गये । पैर और सिर तक चद्दर तान कर सो गये । राजा सात घड़ी के अन्दर भोजन किया करते थे आज दोपहर दिन चढ़ गया है । वह मान नहीं रहे है और न तो पलक उठा कर देख रहे हैं । उस समय कुहराम मच गया । राजा मोलागत उठे और कचहरी में जाकर बैठ गये । तब मंत्री ने उनसे कहा—राजा, आप मेरी बात मानिये । आप क्यों सोये हैं ? (क्यों निश्चिन्त हैं ?) आप आज जल्दी महर को बुलवाइये और चाँदनी पर बैठा दीजिए । उसे कुश का आसन दीजिए । स्वयं कुर्सी पर बैठिए तथा उससे कौड़ी (जुवा) खेलिये । उसमें उसके बल का अन्दाज़ लीजिए । मन्त्री ने ऐसा मत उनके मन में स्थिर कर दिया । यह बात उनके मन में बैठ गयी । उसी समय तुर्की और सिपाही भेजे गये ।

भावार्थ—(१०१—२००)

वे महर के घर दौड़ कर गये । तुर्की और सिपाही धीरे-धीरे चलकर महर के द्वार पर उपस्थित हुए । महर अपने आँगन में खड़े थे । उनसे सिपाहियों ने कहा—ऐ वीर अहीर, सुनिये, राजा ने आपको बुलाया है । अहीर ने (जबान से) कहा—मैं चाँदनी पर नहीं जाऊँगा । जो मेरे मन में है सो है । तब सिपाहियों ने उनका हाथ-पैर पकड़ लिया और धीरे-धीरे उन्हें राजा की चाँदनी की ओर ले चले । अगोरी के लोग इसे देख रहे थे । महाजन के कहने पर लोग भी राजा के यहाँ गये । अहीर ने हाथ जोड़ कर पूछा

महराज मैंने क्या कसूर किया है कि आपने ऐसी आज्ञा दी है ? तब राजा मोलागत ने कहा--तुम मेरी बात सुनो। तुमने अपने दरवाजे पर बोलने में गर्मी क्यों दिखायी ? वह गर्मी ज़रा अब दिखाओ, अपने धन और पूंजी (साठ) की गर्मी से तुमने अपशब्द कहे। अपने सोने और द्रव्य की गर्मी से तुमने बातें बनाकर कही। तुमने देहाभिमान के ज़ोर में चुनौती दी। तुम मेरे द्वार पर बैठो और हम पासा खेलें। राम जिसको देगा उसको देगा और झगड़ा क्षण में तय हो जायगा। अहीर कुश के आसन (साथरी) पर बैठा, राजा कुर्सी पर बैठा। महर (अहीर) ने हाथ में कौड़ियाँ लीं और छः दाने फेंके। उसने राजा के सारे अन्न, गेहूं-गोजई आदि जीत लिये। दूसरी बार अगोरी का आधा हिस्सा जीत लिया। तीसरी कौड़ी में किला जीत लिया। पाँचवी कौड़ी में हाथी, घोड़े, घुड़साल सब कुछ जीत लिये। छठी कौड़ी में नौकर चाकर पर विजय पाकर अपना हुक्म जारी कर दिया तथा राजा को कान पकड़ कर उसने कुर्सी से उतार दिया। राजा मोलागत अब रोने लगे। उनकी फौजे विकल हो उठीं। राजा को दुख हुआ। कहा - गलती मेरी है। मैंने जबर्दस्ती प्रजा को बुलवाया। उसने मेरा धन जीत लिया तब कान पकड़ कर मुझे कुर्सी से उतार दिया। फिर उसने अपना हुक्म चलाया -'धोती पहना कर राजा को अगोरी के पूर्व भेज दो'। सिपाहियों ने एक क्षण में राजा को (नई) धोती पहना दी। वह रोते हुए राजदरबार की चाँदनी पर से उतर गया। आगे बिजुली नदी थी। राजा उसको पार करते ही डगमगाने लगा। इधर ब्रह्मा का आसन भी डगमगाने लगा। उन्होंने राजा को वरदान दिया था। वे ब्राह्मण का रूप धारण कर रास्ते पर खड़े हो गये। नम्रतापूर्वक बोले— राजा तुम कहाँ चले जा रहे हो ? तुम्हारे ऊपर कौन सी मुसीबत आ पड़ी है कि रोते हुए अगोरी के उस पार जा रहे हो। सूबा ने कहा—तुम्हारी जाति ब्राह्मण की है। तुम जाकर दरवाजे पर भीख मांगो। तुम मेरे रोने का मतलब क्या जानोगे ? तुम अपना रास्ता लो। पर ब्रह्मा ने हठ किया। राजा का हाथ पकड़ कर कहा—तुम मेरी बात मानो। अपना अभिप्राय बतलाओ।

भावार्थ — (२०१ – ३००)

> **गायक कहता है—मैं रामायण कह रहा था। मेरे हृदय में भूल पड़ गई (मुझसे भूल हो गयी)। ऐ मेरे मित्रो और समवयस्क लोगो मुझे भूलिये नहीं। ऐ माँ दुर्गा, आप मुझे विस्मृत मत कीजिए।**

मैं तुम्हें उपाय बतलाऊँगा। अब वहाँ की कथा सुनिये। ब्रह्मा से राजा ने कहा— ऐ मेरे ब्राह्मण देवता, इसमें अहीर का तनिक भी अपराध नहीं है। (ब्रह्मा ने राजा को सुझाव दिया) तुम अगोरी लौट जाओ और राजा की चाँदनी के बीच चढ़ जाओ। जाकर हाथ जोड़ कर बोलो – ऐ सूबा ! मेरी बात मानो, अब तो अगोरी मेरी आँख से दूर हो रही है। एक हाथ जमकर पासा और खेल लें। राजा ने वैसा ही किया। महर अहीर अहंकार में था। उसने गर्व से कहा – 'ऐ राजा मोलागत, एक दो बार की क्या गिनती है

तुम पचास हाथ खेल लो। मोलागत कुश की चटाई पर बैठ गये और अहीर कुर्सी पर। मोलागत ने गाँव और घाट जीत लिये। गेहूँ और गोजई का भण्डार जीत लिया। दूसरी पाली में अगोरी की बस्ती जीत ली। फिर किला जीत लिया। चौथी कौड़ी में हाथी और घोड़े जीत लिये। पाँचवीं कौड़ी में नौकर-चाकर और अगोरी का राज्य जीत लिया, कान पकड़ कर महर (अहीर) को कुर्सी से उतार दिया। मोलागत ने कहा—ऐ महर अहीर ! दांव पर धन और पूँजी मत रखो। मैं तुम्हारी पत्नी की कोख दांव पर रखवाऊँगा। जितनी कन्याएं पैदा होंगी उनको लेकर मैं किले में रनिवास-भोग करूँगा, जितने बेटे पैदा होंगे वे मेरे घोड़ों के सईस होंगे। अहीर चाँदनी पर रो रहे हैं। वह कहते हैं—ऐ सूबा मोलागत मेरी बात सुन लीजिए—यदि सोना या द्रव्य के लिए आपको भूख हो तो मैं उसे किले में भरवा दूँ। यदि आप गाय और भैंसों के भूखे हों तो मेरी लक्ष्मी को दांव पर रखवा लीजिए। मेरी विवाहिता की कोख को छोड़ दीजिए। यदि कोख बंधक हो जायगी तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जायगा। सूबा मोलागत ने उस वक्त ताली बजा दी। कचहरी के लोग हँस पड़े। महर दरबार से घर चल दिये। प्रात.काल था। उन्होंने आँगन में प्रवेश किया। महरिन धीरे-धीरे आंगन साफ कर रही थी। महर कुर्सी पर बैठ गये। महरिन ने उनसे पूछा—सिपाही आपको पकड़ कर ले गये। किले में कौन सी याचना तुमसे की गयी। महर ने कहा—राजा ने न तो मुझे मारा और न गाली दी और न 'रे' और 'तुम, कहकर अपमानित किया। उन्होंने कायदे से मेरे साथ पासा और जुआ खेला। मैंने उनका सारा सामान जीत लिया, अपना हुक्म चला दिया। वह पूर्व दिशा में चल पड़े। बाद में उन्होंने मुझे ग्रह में डाल दिया। तुम्हारी कोख बंधक हो गयी है। महरिन महर की ओर झाड़ू लेकर दौड़ीं। कुर्सी से उठ कर महर भागे और पहाड़ पर चढ़ गये। अब उस समय का हाल सुनिये। बारह वर्ष व्यतीत हो गये।

भावार्थ—(३०१—५००)

तेरहवां वर्ष और कुछ महीने पूरे हुए। इस समय की अवधि में महरिन की छै बेटियाँ पैदा हुईं। बारी-बारी से राजा सबको किले में ले गये। इधर का हाल सुनिये। भादों का महीना चढ़ गया था। आधी रात निकल गयी थी जिस समय कृष्ण-कन्हैया (लोरिक) का जन्म हो रहा है उस समय पहर भर तक कड़क की आवाज हो रही है। बुढ़िया खोइलनि को गर्भ था। बोहा में गोशाले में अग्नि और काठ का ढेर लगा कर उस पर उपले गाँज दिये गये थे। वहाँ बिजली कड़क रही थी। आँचल फैला कर बुढ़िया ने ब्रह्मा का ध्यान किया। लोरिक उसी समय धरती पर गिरे। बाद में सुबच्चन गिरे जिसको बिरमी कोलिन वहाँ से पीपरी ले भागी।

अब महर का हाल सुनिये। उसकी पत्नी महरिन को अगोरी में सातवां गर्भ था। आठवें माह के बाद नौवां माह चढ़ गया था। इधर बरसात का मौसम और भादों शुरू हो गया था। जिस समय कृष्ण कन्हैया (लोरिक) का जन्म हो रहा है

उसी समय मंजरी का अगोरी में जन्म हो रहा है। पूर्व में पूर्वा हवा चल रही है पश्चिम में तेज पछुवा झकझोर रही है। उत्तर में उत्तरी वायु भनक रही है। दक्षिण में मूसलाधार पानी बरस रहा है। सारे अगोरी में उस समय पानी बरस रहा है। महर के घर में सोना बरस रहा है। ऐसी घड़ी में मंजरी का जन्म हुआ। पुत्री धरती पर गिरी। भीतर से महरिन ने सुबचन को आवाज़ लगायी। सुबचन भाई आँगन में आकर खड़े हो गये। महरिन ने कहा— ऐ सुबचन, तुम मेरी बात मानो। तुम चमारिनों के दरबार में जाओ और नोनवा को बुला लाओ। तुम्हें भाँजी पैदा हुई है। मल्ल सुबच्चन चमार के घर चले। द्वार पर जाकर नोना चमाइन को पुकारा। चमारिन घर के अन्दर से ही आवाज लगा रही है। वह अभिमानी है। कहती है—कौन द्वार पर आया है जो मन्द आवाज में बोल रहा है। सुबच्चन ने कहा—नोना, मेरी बात सुनो। मेरे घर भैने पैदा हुई है। तुम्हारी पुकार हुई है चलकर 'नार बेवार' ठीक कर दो और अपनी मनोकामना पूर्ण कर लो। नोनवा कुछ बोल नही रही है वह चार पग अलग हट जाती है। कहती है—भइया सुबच्चन, तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी बहन की कोख से छै बेटियाँ पैदा हुई। सभी भाग्य की हीन थी। इस बार भाग्यशालिनी पैदा हुई है। बिना दीपक और बत्ती के आज प्रसूति गृह (सौरी) में प्रकाश हो रहा है। सारे अगोरी में पानी बरस रहा है तथा महर के घर में सोना बरस रहा है। यह अन्तिम पुत्री है। इसका नक्षत्र जल रहा है। आज बिना डोली पर चढ़े मैं नाल काटने नहीं जाऊँगी। सुबच्चन ने यह बात सुनी और महर के घर वापस आ गये। आँगन में आकर कहा—बहिन, मेरी बात सुनिये। नोना ने बड़ा हठ किया है; गर्व-युक्त बात कही है कि बिना डाँड़ी और डोली के मैं नाल छीनने नही जाऊँगी। भीतर से महरिन ने कहा—डाँड़ी की कौन सी बात है? जल्दी नया बाँस कटवाओ। डोली बनवाकर उस पर पर्दा डलवा दो ताकि चमारिन नाल छीनने आ जाय। कहांर बुलवाये गये डोली पर पर्दा डाल दिया गया। जाकर डोली नोनवा चमारिन के द्वार पर रुकी। अब उस समय का हाल सुनिये। नोनवा चमारिन ने सुबच्चन से कहा— इस डोली, खटोली और मंजूषा को जल्दी मेरे दरवाजे से हटाओ। मैं 'नार बेवार' नहीं काटूंगी। ऐ सुबच्चन तुम मेरी बात मानो। जो महरिन की पीतल की पालकी है और जिसमें बैठने का आसन (मोढ़ा) बनाया गया है और जिसमें बत्तीस कहांर लगते हैं उस पर पंचरंगा पर्दा डालकर ले आओ। तब चलकर मैं नार बेवार छीनूंगी। सुबच्चन वापस आ गये और आँगन में खड़े हो गये। कहा—बहिन, चमारिन बड़ी हठी है। वह तुम्हारी पीतल की वह डोली चाहती है जिसमें बैठने के दो आसन बने हैं और जिसमें बत्तीस कहाँर लगते हैं। महरिन ने डोली ले जाने की आज्ञा दे दी। उस पर पंचरंगा पर्दा डाल दिया गया। बत्तीस कहांर लग गये। पालकी चमार के घर की ओर चली। भोर हो चुका था। पौ फट रही थी। प्रात काल मोलागत उठकर अपनी चांदनी पर गये। वह हाथ मुँह धो रहे थे तब तक जाती हुई पालकी की चमक दिखाई पड़ी। राजा मोलागत ने मुंशी और दीवान को बुलाया। कहा—

जाने महर के घर क्या पैदा हुआ है। आज नोना का बडा आदर हो रहा है। छे लड़कियाँ पैदा हुईं कभी इस प्रकार पालकी नही गयी। कदाचित् इस बार लडका पैदा हुआ है। नोना के घर पालकी जा रही है। सिपाहियों से मोलागत ने कहा—पूरी-पूरी पहरेदारी करो। बारह दिनो मे जब बरही हो जाय और जब नोनवा डाँडी सहित इधर से लौटे तो उसे हमारी चादनी पर लाओ। उससे पूरा प्रमाण ले लूंगा तब आगे का उपाय करूँगा। जब डाँड़ी महर के दरवाजे से आँगन मे पहुँची तब नोनवा ने कहा—महरिन यह तुम्हारी अन्तिम लडकी पैदा हुई है। मेरा नेग बहुत बढ गया है। सूप भर कर सोना दो। मैं उस पर पैर रखूंगी, तब प्रसूति-गृह मे आऊँगी और नार-बेवार काटूंगी। सोना भर कर सूप दिया गया। नोनवा ने उसमे दहिना पैर रखा। सूप भर सोना लेकर उसने पालकी मे रख दिया फिर वह सौरी मे गयी। मंजरी का रूप देखा।

भावार्थ—(५०१—७००)

बिना दीपक और बत्ती के वहाँ प्रकाश हो रहा था। बिना दीपक और बाती के सौरी (प्रसूतिगृह) मे प्रकाश हो रहा था। नोनवा जा कर मंजरी का रूप देख रही है। उसने अपने मुख से यह बात कहा--"ऐ भाई, जब आप सोने का हंसुवा बनवायेंगे तभी, मै 'नार-बेवार' छीनूंगी। तब महर ने सोने का हंसुवा पिटवाया और उसे लाकर नोना के हाथा मे दे दिया। नोना उसे लेकर नार-बेवार काटने चली। जिस समय उसने मजरी का चेहरा देखा और देखा कि उससे सारा महल प्रकाशित हो रहा है तो उसे चिन्ता हुई। बारह दिन व्यतीत हुए। छठी और बरही के उत्सव सम्पन्न हुए। नोनवा को विदाई दी गयी। सोने की किनारी वाली धोती तथा सोने की करधनी बनवा कर उसे दिया गया। महरी ने नोनवा का शृंगार किया। महरिन की डाली तैयार हुई और उसमे उन्होंने नोनवा को बैठाया। फिर पालकी उठाकर नोनवा के घर के रास्ते चली। अगोरी के रास्ते जब पालकी चल रही थी तब तक मूवा मोलागत के सिपाही छूटे और उन्होने जाकर पालकी रोक ली। उन्होने कहा—नोना राजा का उल्टा हुक्म हुआ है। वह तुमसे पूछताछ करेंगे। पालकी वहाँ से चली और (राज दरबार की) चाँदनी पर पहुँची। नोनवा ने पचरंग पर्दा हटा दिया तथा पालकी के दरवाजे से झाँकने लगी। मूवा मोलागत कुर्सी पर बैठे हुए थे। उन्होंने नोनवा को देखा—वह दूज के चाँद की भाँति उदित हो रही थी। उसने राजा की ओर गुरेर कर देखा। राजा की आँख उससे लड गयी। चमारिन के मुख पर मुस्कान छा गयी। राजा के दाँतो की बतीसी चमक उठी। वे मूर्छित हो उठे तथा कुर्सी से भहरा कर गिर पड़े। नम्रता-पूर्वक बोले मैंने सूर्ती और सोपारी खाली फिर ऊपर से जर्दा और तुलाब खा लिया मुझे नशा हो गया, मै कुर्सी से गिर पड़ा। इतना कहते हुए मूवा मोलागत ने अपना शरीर संतुलित कर लिया। नोनवा चमारिन से वह नम्रतापूर्वक बोले। "महर की छै बेटियाँ मेरे किले मे रनिवास का भोग कर रही है। आज महर के घर मे क्या

पैदा हुआ है कि तुम्हारा इतना बड़ा आदर हुआ है ?" नोनवा चमारिन ने तत्काल उत्तर दिया—ऐ राजा जो छै बेटियाँ उत्पन्न हुई थी वे भाग्य की हीन थीं। इस बार यह अन्तिम लड़की पैदा हुई है। उसका नाम दावन मंजरी है। राजा ने हुक्म दिया। पालकी फिर महर के यहाँ पहुँची। वहाँ मंजरी हर घड़ी जौ के भाप से बढ़ रही थी। उसको देखते ही बनता है जैसे दूज का चाँद ऊगता आ रहा हो। मजरी तीन महीने की हो गयी। वह 'पट हेरिया' तथा मूंज की बनी हुई छोटी और बड़ी टोकरियों (कुरुई, मौनी) से खेलने लगी। एक ब्राह्मण की बेटी थी, एक बनिया की बेटी थी, एक कायस्थ की बेटी थी। चार पाँच लड़कियाँ गले से गला मिला कर खेलती थी। इस प्रकार खेलते हुए कुछ दिन बीत गये कि उनमें आपस में झगड़ा हो गया। कायस्थ की लड़की उससे झगड़ पड़ी, उसे 'रे' 'तू' कह कर अपमानित करने लगी। मंजरी से यह बर्दाश्त नही हुआ। उनमें खूब जम कर लड़ाई हुई। महर की बेटी तेज तर्रार थी। उसका नाम दावन मंजरी था। उसने ऐसा दांव मारा कि कायस्थ की बेटी भहरा कर गिर पड़ी जब वह उठी और संतुलन संभाला तब अपशब्द निकालने लगी—महर का गड़ा हुआ द्रव्य मिट्टी में मिल जाय, गाय-भैंस 'तिलहा' और 'मनार' की बीमारी से ग्रस्त हो जायें। बेटी इतनी बड़ी हो गयी इस बन्ध्या (बहिला) का किसी ने विवाह नहीं किया। 'ऐ मंजरी, मैं अपनी माँग का सिन्दूर तुम्हारे ललाट पर रगड़ूँगी।' अगोरी बारह पल्लियों की है उसमे तिरपन बाजार और गलियाँ सुसज्जित हैं। कायस्थ की लड़की ने मंजरी से कहा—तुम इस अगोरी में मेरी सौत लगोगी। महर के घर से हटा कर वह मंजरी को राजा के चाँदनी पर लेकर चली गयी। घर का कोई व्यक्ति इसको जान नहीं पाया। अब इधर का हाल सुनिये। सात घड़ी दिन चढ़ते ही मंजरी खाती थी आज दोपहर का समय हो गया है। महरिन दौड़ दौड़ कर मंजरी को खोज रही हैं तथा फूट फूट कर रो रही हैं। मेरी बेटी को क्या हो गया ? राजा ने मेरी कोख जीत ली थी। शायद रास्ते पर या घाट पर कहीं मेरी लड़की उनको मिल गयी और उसे लेकर वह रनिवास भोग कर रहे हैं। महर की पत्नी के साथ साथ कुल और पड़ोस भी रो रहा है। महरिन कह रही है कि मैंने अपनी बेटी को बचा कर रखा था वह आज अगोरी में गायब हो गयी। उन्होंने सुबच्चन से कहा—भैया मेरी बात सुनो। मैंने नदी-नाले में खोज की। कहीं मंजरी का पता ठिकाना नहीं है। सूबा ने कोख जीत ली थी। लगता है—कहीं रास्ते या मैदान में वह मेरी बेटी को पा गये और जबर्दस्ती उसको अपने किले में ले जा कर रनिवास भोग रहे हैं। तब मल्ल सुबच्चन ने कहा—ऐ बहिन सुनो। अगोरी बारह पल्लियों की है। सभी घरों में खोजो। फिर बेवरा नहीं सोन है। कहीं लड़की उसमें डूब या धँस तो नही गयी। मेरी भांजी कहाँ गयी ? तीन रात तीन दिन महर के घर में अशान्ति मची रही। बिना अन्न और पानी के घर के लोग मर रहे हैं। मामा सुबच्चन भी रो रहे हैं। हाथ में रुमाल लेकर वह आंख के आंसू पोंछ रहे हैं। वह महर की चाँदनी पर चढ़ गये। देखा भीतर से उसकी साँकल चढ़ी

हुई है। भीतर मंजरी बिलख रही है। किसी प्रकार अर्गला पर हाथ डाल कर मामा ने दरवाजा खोल दिया। वह अन्दर जा कर खाट पर बैठ गये। चद्दर फैला कर उन्होंने मंजरी के आँसू पोंछे। पूछा -- मेरी भाँजी, तुमको किसने मारा है ? किसने गाली दी है ? किसने तू तुकार का अपशब्द कहे हैं। तुम मुझे बताओ मैं खड़ा खड़ा उसका मुँह तोड़ दूँगा। मंजरी उठ कर बैठ गयी। रो रो कर मामा से कहने लगी— हम पाँच लड़कियाँ गुड़िया और छोटी सी टोकरी (कुरुई) से प्रति दिन खेला करती थीं। लड़कियों में एक दिन झगड़ा हो गया। कायस्थ की लड़की बिगड़ गयी। उसने मेरा बड़ा अपमान किया। उसने कहा कि वह मेरी माँग में सिंदूर दरेगी। इस बारह पल्लियों वाली अगोरी में मैं उसकी सौत हो जाऊँगी।

भावार्थ—(७०१—६००)

मंजरी ने कहा—ऐ मामा, लड़कियों ने मुझसे झगड़ा किया। मुझसे यह झगड़ा सहा नहीं गया। मैंने घात लगाकर दाव मारा। कायस्थ की लड़की भहरा कर गिर पड़ी। उसने मुझे अपमानित किया। मामा, अब मेरे सिर में सिन्दूर पड़ेगा तब मैं अन्न और जल ग्रहण करूँगी। मामा सुबच्चन चाँदनी से उतर कर बहिन के यहाँ आये। कहा—बहिन तुम रोओ धोओ नहीं, और न धरती पर सिर पटको। मेरी भाँजी मंजरी चाँदनी पर है। उसने अन्न और जल त्याग दिया है। उसको साथ की लड़की की बातों से चोट लगी है। मंजरी का विवाह कर दो तब वह अन्न जल ग्रहण करेगी। अब वहाँ का हाल सुनिये—सुबच्चन बाहर निकलकर द्वार पर आये और बहन को पुकारा। कहा - बहिन चिन्ता छोड़ो। मेरी भाँजी का विवाह करो पीछे तब वह अन्न जल ग्रहण करेगी।

सुमिरन—गायक राम का नाम स्मरण करता है संध्या समय संझे-सरि देवी का स्मरण कीजिए। आधी रात में अर्जुन का बाण सुनिये। प्रातःकाल हरि का स्मरण कीजिए जो संसार के मूल में हैं। यही तीनों समय धर्म और कर्म करने के लिए हैं।

जब महरिन ने इतनी बात सुनी तो वह खड़ी-खड़ी धरती पर गिर पड़ीं। हे देव ! हे नारायण तुमने भाग्य में क्या लिख दिया। कितने दिनों में बेटी का विवाह निश्चित होगा। कितने दिनों में उसके सिर में सिन्दूर पड़ेगा। मेरी बेटी तो सहज ही में मर गयी। उन्होंने कहा—भइया सुबच्चन, मोहनिया पण्डित को पोथी पंचाङ्ग के साथ बुलवाओ, साथ में नाऊ को भी। पंडित मंजरी का तिलक निश्चित कर देंगे। सुबच्चन दौड़ते हुए पंडित के घर गये और उन्हें पुकारा। फिर कहा—मेरी बहिन ने तुम्हें बुलाया है। पंडित आ गये। नाऊ भी आ गया। महरिन ने दोनों के बाल-बच्चों के लिए खर्चा दिया। फिर उनसे निवेदन किया कि अपने साथ खर्चा-पानी ले लो और देश-विदेश में जाकर मंजरी के जोड़-तोड़ का वर ढूंढ़ो। पृथ्वी चार दिशाओं में फैली हुई है। तुम लोग जाकर योग्य वर खोजो। नाऊ-ब्राह्मण सर्वत्र गये। कहीं मंजरी के जोड़ का वर नहीं मिला, कहीं महर के योग्य समधी नहीं मिला।

कहीं घर मिलता है तो वर नहीं मिलता। कहीं वर मिलता है तो घर का ठिकाना नहीं है। वे दक्षिण दिशा में गये। वहाँ तिलक का डौल नहीं बैठा। सीधे पूर्व में गये। देश में प्रवेश किया, खोज की, किन्तु मंजरी के योग्य वर दिखाई नहीं पड़ा और न तो महर के योग्य शक्तिशाली अहीर ही मिला। इस खोज में नाऊ और ब्राह्मण की दाढ़ी बढ़ गयी। दिन बीतता चला गया। सारे देशों की परिक्रमा कर वे वापस आ गये। आँगन में आकर पोथी पंचाङ्ग पटक दिया। कहने लगे—मंजरी भाग्यहीन है। उसके अनुरूप वर नहीं मिला।

इतनी बात सुनने पर घर में रुदन प्रारम्भ हो गया। चिन्ता से ग्रस्त महर की पत्नी रो रोकर धरती पर सिर पटकने लगीं। (हाय) मेरी पालित-पोषित कन्या मंजरी बिना अन्न के मर जायगी। महर के कुल की सवा लाख स्त्रियाँ रोने लगीं। हाय, अब मेरी बेटी सहज में ही मर गयी। मामा सुबच्चन रोते हुए चाँदनी पर गये। मंजरी से विस्तारपूर्वक बातचीत करने लगे। भैने मैं तुमसे क्या बताऊँ? कुछ कहने में असमर्थ हूँ। तुम्हारे कारण तीनों मुल्कों में संसार में प्रकम्पन पैदा हो गया है। तुम्हारे योग्य वर नहीं मिल रहा है। तुम्हारा तिलक सम्पन्न नहीं हो सका। तुम्हारा प्राण सहज ही में चला जायगा। तुमने अन्न और जल छोड़ दिया है। मंजरी ने सब कुछ सह लिया फिर विनम्रतापूर्वक कहा—मामा मैं क्या कहूँ? मुझसे कहा नहीं जाता। मेरा कुछ कहना सारे संसार में प्रवाद फैला देगा। इतनी बात सुनकर मामा सुबच्चन ने गले में गमछा डाल लिया और भैने के पैर पकड़ लिए। कहा—तुम अपने तिलक का स्थान बताओ। हमें इतनी परेशानी क्यों हो रही है? तब दावन मंजरी ने कहा—मैं क्या कहूँ? मुझसे कहा नहीं जाता। यदि यहाँ के लोग सुनेंगे तो बढ़ा-चढ़ाकर मेरी निंदा करेंगे। कहेंगे, मंजरी कलयुगी उत्पन्न हुई है। अपना वर उसने स्वयं बता दिया है। सुबच्चन ने यह बात सुनी। फिर हाथ जोड़कर भैने मंजरी से कहने लगे। भैने मेरी बात सुनो, मेरा कहना मानो। इस बात को या तो मैं जानूँगा या तुम जानोगी। फिर मंजरी ने अपने प्रिय की वह पुस्तक दिखा दी जो धरनी पर टँगी हुई थी और कहा उसे मेरे पास ले आओ। सुबच्चन ने पुस्तक उतारी मंजरी ने हाथ में कलम और दावात ली फिर साफ-साफ अक्षरों में लिखने लगी। उत्तर दिशा, गाँव गउरा गुजरात, श्वसुर कठईता, भसुर-मल्ल संवरुवा सब कुछ लिख डाला। फिर लोरिक के स्वरूप का वर्णन किया। जैसा लोरिक का स्वरूप था, हूबहू वैसा ही उसने अंकित कर दिया। लोरिक के शरीर का फोटो उसने ठीक-ठीक उतार दिया। मुड़ा हुआ पत्र मोहनिया पंडित के हाथ में आया। सुबच्चन ने उनसे कहा—चलिए जल्दी, उत्तर देश चलें। उधर ही तिलक का मुहूर्त है। भैने की शादी ललकार-कर कर दें। मोहनिया पंडित, नाऊ तथा पीछे-पीछे मामा सुबच्चन चले। सबने उत्तर का रास्ता लिया। सभी रात दिन चल रहे थे। कहीं विश्राम नहीं किया। अट्ठारह दिन का रास्ता था नौ दिन में ही निकट आ गया। गउरा नगर आते ही शम्भू सागर दिखाई पड़ा। उन्होंने पनघट पर पहुँच कर लोरिक का घर पूछा।

भावार्थ – (८०१ –१२००)

अब वहाँ का हाल सुनिये । गउरा के अहीर राजा सहदेव थे । उनके बेटे महदेव थे । जिस समय अगोरी से तिलक गउरा सहदेव महदेव के द्वार पर पहुँचा वहाँ चनैनी स्त्री वर्तमान थी । राजा सहदेव की सोरह सौ पनिहारिनें थीं । आगे-आगे ये पनिहारिनें जा रहीं थीं, उनके बीच में (चन्ना) चंदा चली जा रही थी । उसने जब तिलक ले जाने वालों को देखा तो वह नम्रता पूर्वक बोल उठी । ऐ दूर देश से आने वाले भाइयों, मेरी बात सुनिये । आप लोगों का वतन (वास स्थान) कहाँ है ? गोत्र क्या है ? आपका उद्देश्य क्या है ? आपने कहाँ के लिये चढ़ाई की है ? आप लोग लोरिक का घर पूछ रहे है । वे मेरे (पीठ के) भाई हैं । चलिए मैं उनका घर दिखा दूँ । वेश्या चनैना आगे-आगे जा रही थी । पीछे ये तीन मूर्तियाँ थीं । जिस वक्त वे द्वार की ओर जा रहे थे चनवा घूमकर खिड़की से घर के अन्दर चली गयी । भइया महदेव भीतर बैठे हुए थे । अब वहाँ का हाल देखिये । चनवा ने तेल और फूलेल से उनके शरीर का मर्दन किया । सोने के गहना से उन्हें अलंकृत कर दिया फिर अद्धी और तंजेब के कपड़े उन्हें पहना दिये । कंधे पर रेशमी रुमाल रख कर उन्हे दरवाजे पर भेज दिया । जब नाऊ और ब्राह्मण को उन्होने देखा तो झुक कर सिर नवाया । नाऊ ने मुँह खोल कर उन्हें आशीर्वाद दिया—'भइया तुम अक्षय रहो, अमर रहो । लाख वर्ष तक जीयो । फिर पंडित मोहनिया ने उन्हें देखा । वह वहीं क्रोध की आग में जल उठे । अगोरी में जो बांस गाड़ा गया है क्या उसके लिए यही वीर है ? क्या यही बांस को छाती से लगायेगा, चुनौती स्वीकार करेगा । महर की लड़की से विवाह करेगा ! तुम हाथ मे डंडा उठाओ और जाकर सूवरों की रखवाली करो । पंडित मोहनिया ने उसे अपमानित किया । फिर नाऊ और ब्राह्मण वहाँ से चले । इस गाँव गउरा पर धब्बा लगा हुआ है । यहाँ कोयला और अंगार चू रहा है । यहाँ बहुत से चोर और ठग हैं । हमारे तिलक में वे ठगी कर रहे हैं । आगे आदमी खड़े थे । पंडित ने उनसे लोरिक का घर पूछा—उन्होंने बताया- सामने लोरिक का घर दिखाई पड़ रहा है । पीपल में वहाँ झण्डा फहरा रहा है । उनका पीतल का छोटा-सा चोगा है । बायीं ओर खड़ग (खरसार) है । दाहिनी ओर दुर्गा का स्थान है । इतनी सारी बातें लोग बता रहे हैं । तीनों मूर्तियाँ आगे बढ़ती जा रही हैं । वे लोरिक के घर पहुँच गये । द्वार पर वे 'लोरिक' 'लोरिक' पुकारने लगे । वहाँ एक वृद्ध इधर-उधर घूम रहे थे । तब उस वृद्ध ने कहा—'हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया है ? उन्होंने पूछा, अरे भाई लोगों का वतन कहाँ है ? आपकी बुनियाद क्या है ? ऐ दूर देश के निवासी, आप लोगों ने कहाँ चढ़ाई की है । आप लोग 'लोरिक' लोरिक' क्यों पुकार रहे हैं ? उस समय मोहनियाँ पंडित बोले । हम लोग अगोरी के निवासी हैं । हम लोगों ने गउरा की चढ़ाई की है । तुम्हारे प्रिय पुत्र के लिए हम तिलक लाये हैं । अब वहाँ का हाल सुनिये । कठईत बोले—आप लोग मेरे द्वार पर बैठिये । जलपान कीजिए । मैं आप लोगों को लोरिक को

दिखा दूंगा। उस वक्त नाऊ और ब्राह्मण बाले —भइया, हम लोग ऐसे पानी नहीं पीयेंगे। गउरा में बहुत से ठग और चोर हैं। आप लोरिक को दिखाइये। अभी हमारा मन नही मानता। बूढ़े कठईत ने गंगिया नाऊ को पुकारा। आवाज़ सुनते ही वह दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। कठईत ने कहा—ऐ नाऊ, मेरी बात सुनो। अखाड़े में मेरा बेटा गया है। हाथ में मिट्टी की प्याली ले लो और उसमें तेल भर लो। मेरे बेटे के शरीर में तेल मर्दन करो। मेरा बेटा रूखा सूखा है। नाऊ ने मिट्टी की प्याली उठा ली उसमें तेल भरवा लिया फिर अखाड़े की ओर चला। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। वह दांतों तले अँगुली दबाने लगा। कहा हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया? इतने दिन बीत गये। कभी नाऊ अखाड़े पर नहीं दिखाई पड़ा। घर पर कौन सी मुसीबत आ गई है? हमारा नाऊ क्यों दौड़कर आ रहा है? लोरिक अखाड़े से बाहर निकल कर खड़ा हो गया। नाऊ ने उन्हें सारी बात बतायी। काका कठईत ने आपको बुलाया है—नाऊ ने संदेश दिया कि दरवाज़े पर तिलक आया है। नाऊ ने प्याली में से तेल लेकर लोरिक की पीठ ठोंकना शुरू कर दिया। अहीर का पुत्र लोरिक उसे उलट कर देखने लगा। यह दुष्ट नाऊ विक्षिप्त हो गया है। उसकी बुद्धि हर ली गयी है। लोरिक ने कहा—गागी मैं तुम्हारे कन्धों की पिटाई कर दूंगा। तुम्हारे बत्तीस दांत गिर जायेंगे। मेरे शरीर पर धूल भरी हुई है, उस पर तुमने तेल चुवा दिया है। गंगिया हजाम बोला—'मालिक सुनिये। दरवाजे पर दूर देश के रहने वाले तिलक लेकर आये है। तुम्हें दरवाजे पर रूखा-सूखा देखेंगे। फिर विवाह का कार्य कैसे होगा। अहीर लोरिक ने कहा —तुम मेरा कहना मानो—जिसको गरज होगी वह सात बार चिल्ला-चिल्ला कर बुलायेगा। वह गउरा आकर आर्त होकर पुकारेगा। फिर मेरे पाँवों की पूजा करेगा। अहीर वहाँ से आकर घर के आँगन मे जाकर बैठ गया। द्वार पर दूर देश के निवासी बैठे हुए हैं। लोरिक फिर बाहर निकला तथा आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। पंडित ने उसके हाथ में कागज़ दे दिया। जैसा कागज मे लिखा है वैसा ही लोरिक दिखाई पड़ता है। लोरिक ने पंडित के आगे झुक कर माथा टेका। पंडित ने मुँह खोल कर आशीर्वाद दिया। लोरिक तुम अक्षय रहो, अमर रहो। तुम लाख साल तक जीयो। जैसे जमुना का पानी बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। तुम्हारे द्वार पर तिलक आया है। लोरिक ने उत्तर दिया—अभी मेरा तिलक कैसे आ सकता है? अभी मेरे जोड़ के भाई यहाँ हैं। मेरे ज्येष्ठ भाई धर्मी बोहा में है। जब मैं अपने धर्मी भाई की शादी कर लूंगा तब पीछे अपनी शादी करूँगा। उस दिन, उसी समय उन्होंने गंगिया नाऊ को बोहा दौड़ाया। संवरू को बुलवाया।

इधर सहदेव का हाल सुनिये। चनवा के साथ विवाह करने के लिए लोरिक के पास सहदेव ने संदेश भेजा। अपने मन में उन्होने उपाय सोचा। मैं चनवा का लोरिक से विवाह कर दूं। जो तिलक लेकर अगोरी से आये हैं वे शंख मारेंगे और मेरे बेटे को तिलक चढ़ा देगे। सहदेव ने तिलक भिजवा दिया। दो तिलकहरू वहाँ

टिके हुए हैं। वृद्ध कठईत ने संवरू से कहा—बेटा संवरुवा, तुम लोग मेरे दो बेटे हो। क्या तुम दोनों का हम एक साथ विवाह कर दें। एक ही खर्चे में दोनों शादियाँ निपट जायेंगी। तब धर्मी मल्ल संवरू ने समझा कर कहा—ऐ पिता, अभी मैं अपनी शादी नहीं करूँगा। जब तक लक्ष्मी मुझे हुक्म नहीं देंगी, तब तक विवाह का कार्य नहीं होगा। संवरू का यही प्रण है। उन्होंने बात दुहराकर कहा—अगोरी से जो तिलक आया है वह मेरे प्रिय लोरिक को चढ़वा दिया जाय। चनवा का तिलक लौटवा दिया जाय। वह तिलक सहदेव के दरबार में वापस चला जाय। यदि हम गाँव में विवाह करेंगे तो रात दिन झगड़ा बना रहेगा। किसी समय कुछ ऊँचा-नीचा हो जाय तो सेल्हिया हमारा द्वार रौंदना शुरू कर देगी। उस वक्त मौत हो जायगी। ऐ पिता, आप मेरी इतनी बात मानिए।

सेल्हिया का तिलक लौटा दिया गया। अगोरी का तिलक स्वीकार कर लिया गया। मल्ल सांवर ने कहा—काका अभी भइया लोरिक की शादी अगोरी में कर दो। दिन और स्थान देखा जाने लगा। पंडित पत्रा के लेख अलग अलग करके देखने लगे। शुक्रवार का दिन अच्छा था। यात्रा के लिए उस दिन शुभ मुहूर्त था। दक्षिण दिशा में मुल्क से प्रस्थान होगा। मंगल को शादी होगी। देश धन्य-धन्य हो जायगा। मुहूर्त पंडित ने सुना दिया। लोरिक ने बारह बैलों पर बाजार से सोपारी लदवा ली, फिर घर वापस आया। बैल खोल दिये गये। वे बोहा में चले गये। फिर लोरिक ने छक कर भोजन किया। चौबीस प्रकार के व्यंजन थे। उसने सुपारी से सारे अगोरी में निमन्त्रण बांटना शुरू किया। गउरा बारह पल्लियों का है। बाजार कस कर लगा हुआ है। लोरिक वहाँ सबको निमन्त्रण बांट रहे हैं। शुक्रवार को लोरिक का तिलक होगा, मंगलवार को बारात चलेगी।

अब उस दिन, उस समय का हाल सुनिये। प्रातः काल पौ फटने लगी। पूर्व दिशा में कौवे शोर मचाने लगे। उसी समय बूढ़े कठईत जाग गये। उन्होंने द्वार पर जाजिम गिरवा दिया। शंपू गेस तैयार कर लिया गया। धीरे-धीरे आमंत्रित लोग आने लगे। अहीर के द्वार पर जलसा शुरू हो गया। नाच होने लगा। नाचने वाले भौंह चलाने लगे, चुटकियों पर ताल देने लगे। लोरिक का तिलक सम्पन्न हो गया। थान, पगड़ी, सोना, करधनी, पिटारा, नारियल तिलक में चढ़ाया गया।(मंजरी के)पत्र में लिखा था तिलक के साथ ही बारात अगोरी आ जाय। गउरा में बारात सज कर दरवाजे पर खड़ी थी कि राजा सहदेव अपने घर से उठे। डांटते हुए तथा 'रे' और 'तू' की अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करते हुए दौड़े। कहा—गउरा की मेरी प्रजा सुने। लोरिक की बारात में आप लोग न जाइये। जो बारात में जायगा उसके बाल-बच्चों को मैं कोल्हू में पेरवा दूंगा। इतना सुनते ही गउरा की प्रजा कांप गयी। कोई पानी के बहाने घर से भगा। कोई ओढ़ना के बहाने बाहर चला गया। कोई दिशा-मैदान होने के बहाने वहाँ से चला। बाजा बजाने वाले बच रहे। गुरु अजई बच रहे तथा धर्मी भाई सांवर बच रहे। बूढ़े कठईत भी वहाँ थे।

भावार्थ –(१२०१—१५००)

अब वहाँ का हाल सुनिये । प्रिय लोरिक वहाँ रोने लगे । कहने लगे हे दैव ! हे नारायण ! हे ब्रह्मा ! तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया । शादी विवाह का तुमने संयोग जुटाया (छप्पर फाडा) । यह रास्ते में अब क्या हो रहा है ! यह पहले ही क्यों विघ्न हो रहा है ? अभी तो दूर देश जाना है । यह पहले ही क्यों गड़बड़ शुरू हो गया । मैं बताने में असमर्थ हूँ । उस दिन बूढ़े कठईत ने कहा—बेटा लोरिक सुनो । तुम पालकी में शान्तिपूर्वक बैठे रहो और बूढ़े का पुरुषत्व देखो । उन्होंने हाथ में डंडा ले लिया । फिर गायों के रहने की जगह पहुँच गये । वहाँ जाकर तीन सौ साठ चरवाहों को साथ में ले लिया । सबको बाजार ले गये और उनके लिए सामान खरीदने लगे । सबको एक ही प्रकार की वर्दी (पोशाक) तथा कुल्हाड़ी खरीदी गयी । एक ही प्रकार का उनका पतलाके (पतलून) था । एक ही प्रकार के जूते उनके पैर में थे । उनकी पगड़ी भी एक ही प्रकार की थी । जब सभी पहन ओढ़कर तैयार हुए तो ऐसा लगता था कि तैलंगाना के सिपाहियों का गोल जा रहा है । लोरिक की पालकी उठी । उसी क्षण प्रस्थान हुआ । लोरिक जोर-शोर से बाजा बजवा रहा है । दक्षिण दिशा की ओर सभी लोग चले जा रहे हैं ।

तब रानी सेल्हिया ने राजा सहदेव से कहा—तुम्हारी प्रजा यहाँ से निकली जा रही है । वह दूर देश में चली जा रही है । जाते ही सभी भाई बन्धु जूझ जायेंगे । कहीं ऐसा न हो कि लोरिक शादी करके फिर गउरा गुजरात वापस लौटे और हमारे घर की नीव खुदवाना शुरू करे और उसमें सरसों तथा राई डलवा दे । सेल्हिया ने राजा सहदेव से कहा— आप हाथ में पाँच रुपया लेकर गउरा गाँव में चले जाइए । जो आपकी जाति के चौधरी हैं उनके हाथ में पाँच रुपये का दंड दे दीजिए फिर हाथ जोड़ कर उनसे यह विनती कीजिए कि वे जाति के चौधरी हैं, वे बारात को सीधे निकल जाने दें । अब उन्होंने ऐसा कहा तो अहीर की पूरी बारात सज गयी तथा दरवाजे पर बैठ गयी । खाना-पीना होने लगा । परिछन की भी तैयारी हो गयी । फिर गउरा से सारी बारात चल पड़ी । सभी लोग रात में चलते रहे, दिन में दौड़ते रहे । कहीं उन्होंने पड़ाव नहीं डाला, विश्राम नही किया । बारात सीमा पर पहुँच गयी । वहाँ खुला विस्तृत मैदान था । बारात वहाँ रुक गयी । लोरिक पालकी से बाहर निकलकर खड़े हो गये । दस-बीस आदमी और बाहर निकल आये थे । लोरिक ने उनसे कहा कि गिनती कर लो कि हमारी बारात कितनी है ? बारात की संख्या गिन ली गयी । अहीर की बारात सवा लाख थी । सोनभद्र के उस पार अगोरी बारात चली । अद्भुत स्वर में बाजे बज रहे थे । दक्षिण की ओर बढ़ते हुए लोग भदोखा कोट पहुँचे । उस दिन लोरिक ने काका कठईत से कहा—बोहा के जितने चरवाह हैं वे सुबह सुबह दूध और लिट्टी खाते हैं । आज दो दो दिन बीत गये उन्हें अन्न तथा पीने के लिए

पानी तक नहीं मिला। सवा लाख बारातियों को पराठा बनाकर इस कोट में दे दो। वे खा-पीकर संतुलित हो जायेंगे। अब वहाँ का हाल सुनिये। बारात कोली घाट उतर गयी तथा भदोखरि घाट तक फैल गयी। बैलों पर लादकर खाने पीने की सामग्री आ गयी। सारी रसद एकत्र हो गयी। बायीं ओर दस बीस लोग बैठ गये तथा सबको तौलकर रसद देने लगे। जाति और पर जाति सबको रसद बँट गयी। केवल ग्वाल अहीर बच गये। बूढ़े (कठईत) व्यग्र होकर इधर उधर घूमने लगे। इतने लोगों की रसोई कौन बनायेगा ? इतने युवक कैसे खायेंगे ? मैं कोट गाँव में चला जाता हूँ तथा अपने जात-पांत के लोगों को खोजता हूँ। उनके घर रसद भेज देता हूँ फिर डटकर मैं ज्योनार करा देता हूँ। बारात डटकर भोजन कर लेगी और अगोरी के लिए चल देगी। अब वहाँ का हाल सुनिये। भोजन करके अहीर की बारात वहाँ से चली। सभी ढोली का मगही पान कूँच रहे थे। अहीर ग्वाल बच गये थे। वे जाजिम पर भूख के मारे पटपटा रहे थे। बूढ़े कूबे कंकोट गाँव के अहीराने में पहुँचे। वहाँ दस बीस गोप-ग्वाल थे। लोग भोजन बनाने के लिए वहाँ लादकर रसद ले गये। अहीरों की मण्डली बैठ गयी। कसबी और पतुरियों का नाच शुरू हो गया। भांड़ चुटुकियों पर ताल देने लगे। भोजन तैयार हो गया। तब गाँव से लड़के दौड़े। वहाँ जाकर हाथ जोड़कर वे खड़े हो गये पंचों सुनो। हमारी जाति के जितने लोग हैं जितने गोप और ग्वाल हैं, उनके लिए भोजन तैयार हो गया है। उस समय मण्डली में खलबली मच गयी। कुछ लोग अंगरखा और धोती संभालने लगे। तब टिकईत ने कहा—तुम लोगों में क्यों खलबली मच गयी। अभी तो अगोरी बहुत दूर है। अभी हम परदेश में हैं। हमारा घर गउरा है। उन्होंने कहा—जाऊँ जरा देख लूं भोजन में कैसा नमक है ? कैसा पानी है। रास्ते में प्यास लगेगी तो तुम्हारी कच्ची जान वैसे ही चली जायेगी। जरा हमें सब्जी चख लेने दो। तब जाकर वहाँ भोजन करो। बूढ़े कठईत वहाँ से चले। भोजन के पास पहुँचे। अपने दोनों हाथ धोकर, भोजन करने के स्थान पर चले गए, पीढ़े पर बैठ गए। अहीर सिन्दूर और काजल पहनकर बूढ़े को थाली परोसने लगे। जब वे झुककर थाली परोस रहे थे तो बूढ़े ने उन्हें अपनी नजर से देखा। उन्होंने बायें लात से थाली पर ठोकर मारी, फिर सब लोगों से जूझ पड़े। सबको चित्त गिराकर वहाँ से भागे। ग्वालिनों ने शोर मचाना शुरू किया। कठईत जाजिम पर आ गये। डंके पर युद्ध मे बजने वाली मारू ध्वनि होने लगी। उस कोट का राजा बामदेव था। वह अपनी चाँदनी पर बैठा हुआ था। ग्वालों ने जाकर उन्हें बताया कि ऐ सूबा तुम बहुत शक्तिशाली थे। तुमसे बलशाली कोई और इस देश में नहीं था। न जाने कहाँ से आकर तुमसे भी शक्तिशाली लोग गोप और ग्वाल बनकर टिके हुए हैं। उन्होंने रसद भिजवा कर यहाँ भोजन बनवाया पर भोजन नही किया। उन्होंने हमारी इज्जत नही की। राजा अपनी प्रतिष्ठा चली गयी। जब राजा बामदेव ने यह बात सुनी तो उन्होंने युद्ध की लकड़ी बजवा दी। वहाँ फौज सज गयी। इधर जाजिम पर एक ओर सांवर बैठे हुए थे। दूसरी ओर लोरिक बैठे हुए थे, बीच में बूढ़े कठईत बैठे हुए थे। लोरिक ने बीर सांवर से कहा—'जहाँ जहाँ काका कठईत जायेंगे,

झगड़ा लगवा आयेंगे। जिसकी जांघ में बल नहीं रहेगा, जिसकी भुजा में पौरुष नहीं रहेगा, वह कैसे झगड़ा निपटाएगा।' जब लोरिक ने यह बात कही तो बूढ़े कठईत क्रोध में जलकर अंगार हो गये। कहने लगे - बेटा। तुम पागल हो गए हो। तुम्हारी बुद्धि हर ली गयी है। तुम जाजिम पर बैठे रहो और बूढ़े का पुरुषत्व देखो। बूढ़े कठईत डंडा लेकर कूद पडे। वह ब्यालिस हाथ उछल पड़े। तब मल सांवर बोले—भाई बीर लोरिक सुनो। मेरी बात मानो। जिसके दो दो लाल बैठे हों उसके पिता खेत में दौड़ रहे हैं। यदि कहीं ऊँचो-नीची जमीन पर उनका पैर पड़ गया तो वे अपना सिर गवाँ देंगे। उस वक्त तुम्हारी जिन्दगी को धिक्कार होगा। तुम्हारे कुल की मर्यादा डूब जाएगी नम्रतापूर्वक अहीर ने ऐसी बात कही। बात लोरिक के मन में बैठ गयी। सचमुच यदि काका गिर जायेंगे तो बारात में मेरी हँसी होगी। ऐसा कहते हुए वह सन्दूक के पास गये। उसमें से अपना पोशाक निकाल कर शरीर पर धारण कर लिया। दुलाई निकालकर पहन ली फिर अंगरखा धारण कर लिया। पैर में जामा पहना, जूता पहना, धनुष लिया। साठ गज का दुपट्टा लिया पेटी बाँधी, पगड़ी सजायी। डमरू लिया, छपन पचों वाली छूरी-कटारी तथा बगल में तलवार ले ली। बायें हाथ में ओढ़न तथा दाहिने हाथ में बिजली की तलवार ले ली। वह धीरे धीरे चलने लगा जैसे झूमती हुई हथिनी जा रही हो। अब वहाँ का हाल सुनिये—जाकर लोरिक ने फौज को रोक दिया। रास्ते में खड़े हो गए। सारी बारात को छोड़ दिया। राजा ने सेना को आज्ञा दो कि लोरिक को कुचलकर सत्तू के नमक जैसा कर दो। लोरिक ने अपनी आराध्या (पूजमान) देवी का स्मरण किया, कहने लगे—'हे माँ दुर्गा, तुम अपनी शक्ति का सहारा दो। तुम्हारी शक्ति के भरोसे मैं इस दारुण देश को खंगालने आया हूँ। आप साथ छोड़कर भाग गयीं ? मेरा जीवन आपत्तियों से घिरा हुआ है।' इधर लोरिक दुर्गा को स्मरण कर रहे हैं उधर राजा निशाना लगा कर बाण मार रहा है। वह खेत पर पैंतरेबाजी करने लगा।

भावार्थ—(१५०१—१८००)

जिस प्रकार भादों में भैंसा चिल्ला कर दौड़ता है। वीर दाँव पर आ गया। तब बामदेव बोला—सूबा मेरी बात मानो। ऐ राजा, तुम मारो। यदि तुम्हारे आक्रमण में शक्ति है। तब मर्द वीर लोरिक ने कहा—ऐ सूबा तुम मेरी बात मानो। मैं पहले चोट नहीं करूँगा न छिपा कर मैं पीछे खोट करूँगा। गुरु अजई की शपथ है कि मैं पहले न मारूँ। किन्तु जब हमला पहले होगा तो मैं छोड़ूँगा भी नहीं। मैं पीछे छिप कर भी नही रहूँगा। उसी समय सूबा ने अपना म्यान फेंका तथा अहीर पर हमला किया। लोरिक कूद कर आकाश में चला गया। बामदेव का तेग (खड्ग) धरती पर आ गिरा तथा चूर चूर हो गया। बामदेव ने दो दो वार किये पर वे खाली गये। फिर सूबा ने सोच विचार कर दोहरा तेहरा वार किया। अहीर के सिर की ओर चोट हुई। अहीर थोड़ा बायें तिरछे हो गया। खड्ग धरती पर गिर पड़ा। अहीर थोड़ा सा दब कर मैदान में आ गया। उसने कहा—ऐ मेरे जोड़ के राजा,

तुम मेरा कहना मानो। मैंने तुम्हारा पूर्ण आक्रमण (पक्का वार) सँभाल लिया। अब तुम मेरा अपूर्ण सा (कच्चा) आक्रमण सँभालो। लोरिक ने तब अपना म्यान फेंक दिया। फिर दस्तगी तलवार सँभाल ली। तलवार अभी चार ही अंगुल बाहर हुई कि उसकी आवाज आकाश में गूंज गयी। नीचे दावाग्नि फैल गयी एवं आदमी के कद से ऊपर तक लहर लपलपाने लगी। बामदेव की पलकें घुम गयीं उसका खड्ग धूल में मिल गया। लोरिक का खड्ग पूर्व से काटते हुए पश्चिम पहुँच गया। पश्चिम से दक्षिण पहुँच गया। जैसे किसान अपना खेत काटता है वैसे ही अहीर का पुत्र लोरिक शत्रुओं को काट रहा है।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने बिजली का खड्ग खींच कर उसे म्यान में रख लिया। उसकी बारात वहाँ से चलने के लिए सजने लगी। कोट का झगड़ा निपट गया। अहीर बिना अन्न और जल के दक्षिण की ओर चल दिया। वह रात को चल रहा था, दिन में दौड़ रहा था। वह कहीं डेरा नहीं डाल रहा था और न विश्राम ही कर रहा था। बारात को उसने चलवा दिया। बारात कोली के घाट आ गयी। कोलिया घाट पर नगाड़े बज उठे, अगोरी में आवाज पहुँचने लगी। इधर (अगोरी के) मूबा का हाल सुनिये। उसके कानों में आवाज पहुँची। उसने कहा -- लगता है महर मेरा शत्रु हो गया है। उसने मेरे ऊपर जबर्दस्त हमला किया है। न जाने किस शहर से बारात आयी है। यहाँ बड़े जोर से डंके बाज रहे है। उसने अपने नौकरों और सिपाहियों से कहा -- तुम लोग सोन नदी के तट पर तैनात हो जाओ, फैल जाओ। इधर बारात काशी घाट पर उतरी और छिप गयी। नदी के दोनों किनारे उफान ले रहे थे। वहाँ उतरने का कोई साधन नहीं था। उस पार झिमला केवट घूम रहा था। लोरिक ने उससे कहा—"आप घाट के ठेकेदार हैं, मल्लाह हैं। अपनी नाव इधर लाइये और हम लोगों को उस पार उतार दीजिए। तब झीमल मल्लाह बोला—ऐ भाई, मेरी बात मानिये, मूबा की आज्ञा इसके विपरीत है। जिस दिन अहीर की बारात उस पार उतर जायगी उस दिन वह मेरे बाल बच्चों को कोल्हू में पेरवा देगा। अपनी जान देकर उस पार कौन जायेगा ? वीर लोरिक बोल उठा—झीमल, मेरी बात मानो। देखो, हम लोग गउरा में थे। मैंने सुना कि अगोरी का राजा बलवान है। उसका जोड़ खोजने पर भी नहीं मिलता। तब हम यहाँ मंजरी से विवाह करने आ गये। मैं तो सर्व प्रथम उसका पौरुष देखने आया। तुम खे कर हमें उस पार लगा दो। झीमल, जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा, वहाँ लोरिक अपना खून बहा देगा। पहले अगोरी का राजा इस लोरिक को कोल्हू में पेरवायेगा तब फिर तुम्हारे बाल-बच्चों की बारी आयेगी। इतनी बात सुन कर झीमल घर दौड़ कर गया। उसने अपने सभी बर्तन उठाये, बाल बच्चों को लिया और नदी के किनारे आ गया। नाव पानी में चला दी। वह पानी में उतराने लगी। वह पचास-सो खेप चली। नाव भारी थी। झीमल उसे खे कर लोगों को अगोरी के पार करने लगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। नाव इस पार लौटी। फिर बूढ़े कठईत उठे। वह लकड़ी टेकते हुए नाव के पास पहुँचे, डाँड़ पकड़ लिया। नाव नीचे दब गयी। झीमल अत्यन्त दुखी होकर गिर पड़ा। अपनी छाती पीटने लगा। हे देव, हे नारायण, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया ? मैंने अहीर की सवा लाख बारात अगोरी के पार उतारी। एक बूढ़ा बचा रह गया था। इसके लिए नाव इस पार लाया। डाँड़ के पकड़ते ही नाव डूब गयी। अभी तो बूढ़ा नाव पर चढ़ भी नहीं पाया था। अब वहाँ का हाल सुनिये। बूढ़ा उछलने लगा। उसने नाव का डाँड़ हाथ में उठा कर उसे चला दिया। स्वयं नाव पर बैठ गया। उसे खे कर अगोरी के उस पार चला आया। बूढ़े कठईत नदी के उस पार उतर गये, तट पर खड़े हो गये। उन्होंने सुबच्चन से कहा—समधी के घर में जा कर पूछ आओ। बारात खड़ी है, जनवासा कहाँ रहेगा ? हमें एक स्थान पर बैठा दो। मल्ल सुबच्चन दौड़ कर घर गये, बहन को पुकारा। महरिन अन्दर से बाहर निकल कर आँगन में खड़ी हो गयी। सुबच्चन ने उनसे कहा—समधी ने आज्ञा माँगी है कि जाजिम कहाँ गिराया जाय। अहीर की बारात कहाँ रहेगी। तब महरिन ने नम्रतापूर्वक कहा—भइया, यहाँ तो मैंने कुछ भी तैयारी नहीं की है। तू ने बीच में यहाँ बारात लिवा लाये। जरा मुझे भी तैयारी कर लेने दो। अभी हमने न तो अपने गोत्र वालों को निमन्त्रित किया है और न तो भाइयों, कुटुम्बियों, और परिवार को आमन्त्रित किया है। न तो अभी आजमगढ़ के बढई को न्योता दिया है जो दालान में तोता अंकित कर दे। अभी समधी हमें दस दिन का मौका दें। फिर ठाट से द्वार पर बारात लगेगी। सुबच्चन वहाँ से रवाना हुए। समधी कठईत को समझा कर कहा-- मेरी बात सुनिये। अभी मेरी बहन ने कुछ इंतजाम नहीं किया है। वह नाराज हो रही है दस दिन का समय गुजर जाता तो आकर ठाट से आप विवाह करते। तब कठईत ने कहा—समधी तुम मेरी बात मानों। महरी ने दस पाँच दिन की बात कही है। मैं दो चार पुश्त ठहर जाऊँगा। हमारे रहने की जगह तो बता देतीं। फिर हम डट कर विवाह करेंगे।

अब उस दिन, उस समय का हाल सुनिये। सुबच्चन दौड़ कर जा रहे हैं। फिर बहन से कह रहे हैं—मैं समधी का उल्टा हुक्म लाया हूँ। ऐ बहन, तुम उन्हें जगह बता दो। तू ने उन्हें दस पाँच दिन क्या सुनाया है, वे दो चार पुश्त टिक कर रह जायेंगे। तब महरिन ने उत्तर दिया—भइया, मेरी बात सुनो—बारात को उस खेत पर ले जाओ जहाँ नौ सौ बन-गोभी के जंगली पेड़ हैं तथा घमोय की कटीली झाड़ियाँ हैं। वहाँ चार चार अंगुल के काँटे हैं। यदि काँटे बारातियों के शरीर में चुभेंगे तो उनके शरीर से खून बह निकलेगा। वही स्थान बारातियों को बता दो। सुबच्चन वहाँ से चले। सोन नदी के तट पर आये। टिकईत से बोले—चलो मैं जगह बताता दूँ, जहाँ बारात टिक जायेगी। आगे-आगे मल्ल सुबच्चन चले। पीछे सवा लाख बाराती चले जहाँ नौ सौ जंगली कंटीली गोभी और घमोय के पेड़ हैं। बारात में एक से एक सुन्दर व्यक्ति थे, सरदार थे, लाड़ले थे। लौरिक के प्रेम और

मुरव्वत में एक से एक देव के लाल आ गये थे। उनकी धमनियों में रक्त का संचार हो रहा था। वे आज इन काँटों का कष्ट कैसे सहेंगे! अहीर लोरिक इस प्रकार सोच रहा था। वह जाजिम पर बैठा हुआ था। कठईत उछलते हुए पालकी के पास पहुँचे। लोरिक बूढ़े टिकईत का पैंतरा देख कर गिर पड़ा। टिकईत ने उसे डाँटा—बेटा तुम कनउज में अपने को मर्द समझते थे। तुम इस संकटापन्न देश में चढ़ आये हो। अपनी चाँदनी से यहाँ का राजा तुम्हारी जाँघ देख रहा है जो थर-थर काँप रही है। ऐसा कहते हुए टिकईत क्रोध में जल रहे थे। बायें हाथ में चक्र तथा दाहिने हाथ में डंडा उठा कर बूढ़े ने वहाँ से पैंतरा बदला। वह बयालिस हाथ कूदे। पूर्व से उछलते कूदते वह पश्चिम गये। गोभी और कंटीले घमोय के पेड़ वे काट काट कर सोन नदी में बहाने लगे तथा पूर्व दिशा में जाने लगे। वहाँ मैदान साफ हो गया। अब उसी जगह जाजिम गिरा दिया गया। दल बल के साथ अहीर वहाँ खड़ा था। प्रकाश के लिए गैसें वहाँ टाँग दीं गयीं। जलसा होने लगा। बारात मौज करने लगी। नर्तकियाँ और कस्बिनें वहाँ नाचने लगी। भाँड़ चुटकी पर ताल देने लगे। अहीर खेत पर बैठा हुआ था।

अब यहाँ का हाल सुनिये। महरिन ने सुबच्चन से पूछा—अहीरों की कितनी बारात है? हमें ठीक-ठीक बताओ। सुबच्चन ने तत्काल जवाब दिया। अहीर की सवा लाख बारात है। उसमें जाति और परजाति सभी प्रकार के लोग हैं। सवा लाख बाराती खेत में टिके हुए हैं। सभी मण्डली बना कर बैठे हुए हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। महरिन नम्रतापूर्वक कह रही हैं—भइया सुबच्चन, तुम अगोरी चले जाओ। वहाँ के महाजन साहु महिचन बहुत बड़े हैं। बैल गाड़ी हाँक कर ले जाओ तथा बोरे उठवा लाओ। सवा लाख मन चावल बारातियों के स्थान पर गिरवा दो। हल्दी, मसाला आदि के अतिरिक्त सवा लाख चारपाइयाँ वहाँ पहुँचा दो। फिर खाद्य सामग्री बँटवा दो।

भावार्थ—(१८०१—२१००)

उन्हें कह दो कि एक बार का भोजन है। इसमें से एक भी चावल बचना नहीं चाहिए। इसमें थोड़ी भी रसद बच जायेगी तो वे (बाराती) गउरा का रास्ता नापेंगे। महरिन ने कहा—बाराती रास्ता पकड़ कर नगर गउरा गुजरात चले जायेंगे। उस समय मल्ल सुबच्चन वहाँ से चल पड़े। अगोरी की गलियों को पार करते हुए साहु के दरबार में पहुँच गये। हुक्म दिया—बोरों को भरकर बैलगाड़ी दे दो। साहु ने सामान तौल कर बोरों में बन्द कर दिया। चावल की गाड़ी लद गयी, और भी सारी सामग्री लद गयी। किले से गाडियाँ खेत पर पहुँची जहाँ बारात रुकी हुई थी। गाड़ीवान ने जाजिम से थोड़ी दूर पर ही चावल गिरा दिया। सवा लाख मन और रसद भी रख दी गयी। सवा लाख घी के पात्र रख दिये गये। सवा लाख बकरे तथा अन्य सींगवाले जानवर भी उतरवा लिये गये। खाद्य सामग्री का वहाँ पर्वत सा खड़ा हो गया। देख कर गउरा के लोग आश्चर्य चकित हो उठे। वहाँ माँ के एक से एक लाड़ले थे। एक से एक सुन्दर सरदार थे। वे पाव भर के खाने वाले

थे। वे एक मन कैसे खा पायंगे ! वे पाँच सेर (पसेरी) घी कैसे खायंगे। ये बकरा और सींग वाले पशु कैसे खा जायंगे ? यहाँ तो अब ऐसा लगता है कि सारी बारात वापस लौट जायगी। विवाह का कार्य सम्पन्न नहीं होगा? गउरा के सब लोग चिकित हो उठे हैं। अहीर लोरिक भी चिन्ता में पड़ गया है। वह अपने दांतों तले अंगुली दबा रहा है। यह खाद्य-सामग्री खायी नहीं जा सकेगी ! मुझसे कुछ कहा नही जाता। बूढ़े कठईत इधर-उधर घूम रहे थे। वह अहीर के आगे गये। कहने लगे – बेटा, वीर लोरिक सुनो, क्या तुम जाजिम पर बैठे ही रहोगे ? तुम ज़रा इस बुढ़ापे में मेरा पुरुषत्व देखो ! इधर रसद रखकर लोग अगोरी घर लौट गये। वहाँ केवल बाराती ही रह गये थे तब बूढ़े ने मंतव्य प्रकट किया। ऐ सवा लाख बाराती, अपनी-अपनी खुराक के अनुकूल तुम लोग तौल कर रसद ले जाओ। जितनी फालतू रसद बच जाय उसे सोनभद्र नदी में बहा दो। खाने भर का घी रख लो, शेष घी फेंक दो ताकि वह पूर्व दिशा में बह जाय। बकरे और सींग वाले पशुओं में से जितना खाना है उतना बध करो, शेष को सोनभद्र नदी में बहा दो। कठईत की इतनी बातें सुन कर सबकी आँखें खुल गयीं। सभी लोग भोजन बना कर खाने लगे।

अब कठईत का हाल सुनिये। उन्होंने हजाम से कहा कि सारी रसद बन गयी है। यहाँ पर अब एक अक्षत भी बचा नही है। तुम बारात से एक लड़का ले लो एवं महर के घर चले जाओ। उन्हें यह बात बता दो कि शाम को रसद कम हो गयी लड़के के लिए बासी तरकारी भी नहीं है। यदि महर के घर कुछ जूठा आदि पड़ा हो तो मेरा लड़का खा ले। यह कह कर कठईत जाजिम पर जाकर सो रहे। अहीर की सवा लाख बारात गाँव से दूर जीर पर सो रही थी। आधी रात ढलने के बाद बहुत ही सबेरे नाऊ उठा। एक सोये हुए लडके को उसने पकड़ लिया और गर्दन पकड़े हुए उसको महर के घर ले गया। प्रातः काल बहुत सबेरे सबेरे महरिन द्वार पर झाड़ू लगा रही थीं। नाऊ वहाँ पहुँच गया। कहा—मलकिन मेरी बात सुनिये। जैसे मैं लोरिक का नाऊ लगता हूँ वैसे ही आपका भी। शाम को रसद कम हो गयी। इस लड़के के लिए बासी सब्ज़ी भी नहीं है यदि घर के अन्दर कुछ जूठन आदि पड़ा हो तो दे दीजिए ताकि यह लड़का खा ले। जब महरिन ने यह बात सुनी तो दांतों तले अंगुली दबाने लगीं।

अब वहां का हाल सुनिये। महरिन कहने लगीं। ऐ नाऊ गांगी, सुनो। तुम हाथ मुँह धोओ। तुम्हें बासी क्या दूं ? मैं खिचड़ी उतरवा देती हूँ। तुम दोनों यहाँ से भोजन करके जाओ।

देवी का स्मरण—गायक राम का नाम स्मरण करता है और कहता है मैं रामायण कह रहा था। मेरे हृदय में न जाने कैसे चूक हो गयी। तुम अपने दोस्तों और समान उम्र वालों को न भूलो। माँ दुर्गा को भी मत भूलो।

अब वहाँ का हाल सुनिए। महरिन चौके में जा रही हैं। सुबच्चन से कह

रहीं हैं कि तुम कूटे हुए अन्न की भूसी से भरा हुआ एक पुरवा ले लो। उसे गाँव से दूर जहाँ बारात टिकी हुई है ले जाओ और उसे समधी के आगे रख दो। इससे समधी रस्सी बना दें ताकि उस रस्सी को मैं मंडप में बाँध दूँ। सुबच्चन पुरवा लेकर कठईत के पास आए। नम्रतापूर्वक कहा—समधी सुनिए, जौ के कूटने के बाद यह भूसी निकली है। इससे रस्सी बना दो। इससे मंडप बाँधा जाएगा। तब शादी विवाह होगा। नहीं तो तुम्हारा यहाँ ठिकाना नहीं लगेगा। जिस रास्ते से तुम आए हो उसी रास्ते वापस चले जाओगे। अब कठईत का हाल सुनिए। वह इधर उधर उछल रहे थे। वह मन में मुस्कराये। कहा सुबच्चन तुम सुनो। मेरी बात मानो जाकर शादी विवाह करो। रस्सी कौन सी बड़ी चीज है। तुम उल्टी चलनी में पानी भर कर लाओ ताकि हम रस्सी भिगो सकें। मल्ल सुबच्चन वहाँ से महर के घर आए। बहन-बहन पुकारने लगे। जब महरिन अन्दर से बोलीं तब सुबच्चन ने उन्हें बताया कि समधी रस्सी बनाने के लिए तैयार हैं किन्तु उन्होंने पानी माँगा है। कहा है कि उल्टी चलनी में पानी भिजवा दो मैं उससे भिगोकर रस्सी बनाऊँगा।

अब वहाँ उस समय का हाल सुनिए महरिन कह रहीं हैं कि उस पवित्र तीर्थ स्थान का जल धन्य है जहाँ के मर्द बुद्धिमान होते हैं। हमने बड़ी-बड़ी समस्याएँ उत्पन्न कीं पर समधी ने सबका काट कर दिया। इधर मल्ल सुबच्चन कठईत के पास पहुँचे। कठईत ने सुबच्चन से कहा—समधिन ने बड़ी बड़ी गूढ़ बातें की। अब मेरी भी एक गूढ़ बात सुन लो। समधिन को जाकर समझा दो सोलह थन वाली एक भैंस यहाँ भिजवा दें जिसमें एक ही थन पेन्हा सके, और सवा लाख बाराती दूध पी सकें। नहीं तो असमय में हम कूच की लकड़ी बजा देंगे और लोरिक की शादी कर लौट जाएँगे। महर की लडकी मंजरी जिसको हल्दी लग चुकी है यहीं रह जायगी। महरिन ने जब यह बात सुनी तो कहा कि बड़ा विघ्न उपस्थित हो गया।

समधी ने बड़ी गूढ़ बात कह दी। मेरी अक़्ल काम नही कर रही है। यह सुनते ही विषादयुक्त होकर महरिन घर के अन्दर चली गयीं। उनकी बुद्धि काम नही कर रही है। हृदय में क्लेश भर गया है।

तब पुत्री मंजरी ने माँ से कहा—मेरे ससुर ने बड़ा विघ्न डाल दिया है। अतः तुम्हारी अक्ल काम नहीं कर रही है। तुम सेर भर सोना ले लो। सुनार की दुकान पर चली जाओ। उससे पत्र पिटवा लो, गिलास बनवा लो उसकी पेंदी में सोलह टोटियाँ लगवा दो एक टोंटी में छेद कराकर भेज दो। इसमें सभी अहीर मद पीयेंगे। सुबच्चन एक सेर सोना लेकर सोनार की दुकान पर गए, सोलह पत्र पिटवाये, गिलास गढ़वाया, टोटियाँ लगवायीं। पन्द्रह टोटियाँ किनारे किनारे तथा एक बीच में। इस टोटी में छेद था। बारात के टिकने के स्थान पर गिलास भेज दिया गया। सवा लाख बारातियों की मण्डली बैठी हुई थी। बूढे कठईत के हाथ में जब गिलास आया तो उन्होंने उसमें पानी की धार बहायी। फिर हँसने लगे और धन्य

धन्य कहने लगे। किसी गुणवाली ने यह युक्ति सुझायी है। अगोरी में भट्ठी खोलवा दी गयी। बारात मदपान करने लगी।

अब वहाँ का हाल देखिए। महरिन सज धज कर तैयार हुई। समधी झुकते नहीं। महरिन ने सुबच्चन से कहा—बेवरा नदी के तट पर चले जाओ जहाँ सवा लाख बारात बैठो हुई है। समधी को जाकर हुक्म दे दो कि वे ठाट से द्वार पर बारात लावें और डट कर शादी करें। धावन का यह संदेश मिला तो धर्मी संवरू ने चमारों को बाजा बजाने के लिए कहा। कहा—तुम लोग ठाट से बाजा बजाओ। अगोरी में अपना हाथ दिखाओ। जब तुम लोग अगोरी से गउरा गुजरात चलोगे तो मजदूरी क्या, तुम्हें ईनाम में गाये दूँगा। सवा लाख बारात तैयार हुई, डंके पर तुमुल ध्वनि होने लगी। अगोरी की गली तंग थी। उसमें कसकर बाजार लगा हुआ है। अहीर लोरिक पालकी में बैठे-बैठे सोच रहा है यदि कोई विषम परिस्थिति पड़ी, विपत्ति आ पड़ी तो यहाँ बिजली की तलवार कैसे चलेगी।

अहीर की बारात गली कूचों से गुजर रही है। अब आगे का हाल सुनिये। महरिन ने एक उपाय सोचा।

भावार्थ—(२१०१—२४००)

उन्होंने कहा— गुणी सरदार संवरू को डाल दे दो। वे 'करगही' नाच नाचें। जब मल संवरू ने यह बात सुनी तब उनका मन कुम्हला मुर्झा गया। उन्होंने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट मे क्या लिख दिया? जब से पृथ्वी पर पैदा हुआ तब से मैंने केवल गायों का अड़ार देखा है डाल लेकर मै करगही नाच कैसे नाचूंगा? जब बूढ़े कठईत ने यह बात सुनी तो वह वहीं जल कर खाक हो गये। उन्होंने कहा 'तुम पालकी में ही रहो। तुम बूढ़े का पौरुष देखो।' बूढा हाथ में डाल लेकर बयालिस हाथ कूद पड़ा और करगही नाच नाचने लगा। उसके पीछे बारात चलने लगी। अहीर की सवा लाख बारात द्वार पर लग गयी। तब दस बीस गुंडों ने बूढ़े पर हमला कर दिया। बूढ़े के हाथ में डाली थी। वह अभी करगही नाच नाच रहे थे। गुंडे बूढ़े से लिपट गये उन्होंने गुण्डों का हाथ पकड़ लिया और उन्हें उलटा कर दिया। जिस वक्त उन्होंने अपना शरीर हिलाया गुण्डे धरती पर भहरा कर गिर पड़े। किसी का पाँव टूटा, किसी का हाथ टूटा। किसी के बत्तीस दाँत टूट गये। अब उस समय का हाल सुनिये। जब सुबच्चन ने यह देखा तो वह समधी के आगे चले गये। उनसे हाथ की डाली कोई अगोरी में छीन नही सकता! मैं उनसे डाली ले लूंगा तब दोनों दल का शृंगार रह जायगा, शोभा रह जायगी। बूढे कठईत ने सचमुच उनको डाली दे दी। सिववचन (सुबच्चन) उसको लेकर मण्डप में चले गये। दरवाजे पर बारात लग गयी वहाँ नाऊ और ब्राह्मण बैठे हुए थे। द्वार की मान-मर्यादा हो रही थी। तिलक हुआ, द्वार-पूजा हुई। बाजे की तुमुल ध्वनि होने लगी। अहीर की सवा लाख बारात महर का द्वार छेंक कर खड़ी है। द्वार की सभी रीतियाँ

सम्पन्न हो गयीं। नाऊ ब्राह्मण आँगन मंडप में चले गये वर को 'भाजी' खिलाने के लिए 'भाजी' लेकर वे द्वार पर आगये जहाँ सारी बारात टिकी हुई थी।

पाँच लड़के उठाये गये। लोरिक दही गुड़ खाकर हाथ मुँह धोकर पालकी में बैठ गये। अब मंडप का हाल सुनिये। पंडित ने मंडप में अपना पत्रा पटक दिया। उन्होंने देखा कि शादी का मुहूर्त कब है? सिंदूर दान की सायत कब है? सब दिन का झगड़ा मिट जाता तो हम सब लोग गउरा अपने घर चले चलने—ऐसा टिकईत ने कहा। अहीरों की बारात मण्डली बनाकर द्वार पर बैठी हुई है। उसी समय अन्दर से हुक्म आया। अब जल-पान हो जाय। नाऊ वहाँ आकर बैठ गया। कहने लगा—'लड़की के लिए जो सामान आया है उसकी मांग हुई है। साठ मुहरों का हार मंजरी की देह के श्रृंगार के लिए आया है। रेशम की साड़ियाँ आयी हैं जिनमें चार-चार अंगुल पर तार लगे हुए हैं। मंडप में सब लोग आकर बैठ गये। कथा-पुराण होने लगा। लड़की और लड़के की पुकार हुई। अगोरी में विवाह सम्पन्न होने लगा। माँग में सिंदूर पड़ गया। तब अहीर की बारात वहाँ से उठ गयी। कोलाहल मच गया। कोहबर से छुट्टी पाकर जब लोरिक बाहर जाने लगा तब उसने सबको प्रणाम किया। उसने सब का आशीर्वाद लिया फिर पालकी में बैठ गया। शादी विवाह खत्म हुआ। पालकी वहाँ से चली तथा बेवरा नदी के तट पर पहुँची। वहाँ सवा लाख बारातियों की मण्डली बैठी हुई थी। कस्बिनें एवं वेश्याएं नाच रही थीं। भांड़ चुटकियों पर ताल दे रहे थे। गउरा के लोग बैठे हुए थे। वे मगही पान खा रहे थे। बुटऊल का मांजा बन रहा था। चरवाहे चिलम पर दम लगा रहे थे। जनवासे में जलसा हो रहा था। अब वहाँ का हाल सुनिये—अहीर लोरिक गिलास लेकर जाजिम पर छक कर मद पी रहा था। उसका गुरु अजई भी नशे में मतवाला हो रहा था। रात बड़ी थी। बारात नशे में नाच रही थी। बूढ़े कठईत ने कहा—ऐ बेटा वीर लोरिक सुनो। तुम मेरी बात मानो। हमारी सवा लाख बारात सो रही है। तुम्हारा चिराग जल रहा है। अगर किसी को कोई चीज़ या वस्तु यहाँ नहीं होगी तो प्रातः काल क्या जवाब दोगे? जिसका टूटा हुआ जूता यहाँ से चला जायगा वह प्रातः काल चढ़ने के लिए घोड़ा मांगेगा। जिसका टूटा हुआ एक छोटा सा डंडा चला जायगा वह प्रातः काल ढाल और तलवार की माँग करेगा। जिसका फटा हुआ कम्बल चला जायगा वह हमसे पूर्वी खूबसूरत कम्बल मांगेगा। बेटा, तुम पूरा पहरा दो तुम्हारी सारी बारात सो रही है।

सारी बारात सो रही है। आधी रात ढल चुकी है। मंजरी मंडप में बैठी हुई है। वह लोरिक का स्वरूप देख चुकी थी। वह आधी चद्दर ओढ़कर, लोरिक का शरीर मिला कर देख चुकी थी। (बराबरी कर चुकी थी।) उस दिन वह रो रही थी कि मुझ जैसी परित्यक्ता के कारण जिसका ऐसा लाल जूझ कर समाप्त हो जायगा, वह तो विष खाकर मर जायगा। मुझे बहुत पाप लगेगा। महर की लड़की जिसका

नाम दावन मंजरी है, इस प्रकार सोच रही थी। वह ऐसे रो रही थी कि उसको सहन करना कठिन था। उसके रुदन से पेड़ के पत्ते झर रहे थे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने, जो बारातियों की देख-रेख कर रहा था, यह बात सुनी। उस क्षण रुदन की आवाज़ सुन कर वह भयभीत हो गया। क्या ब्राह्मण की कोई बेटी रो रही है जो चौके पर ही विधवा हो गयी है! या बनिया की कोई लड़की रो रही है जिसका पति सामान लाद कर (वाणिज्य के लिए) जा रहा है। या कायस्थ की लड़की रो रही है जिसका प्रिय कहीं लिखने-पढ़ने के काम से बाहर जा रहा है। या महर के परिवार की कोई स्त्री रो रही है जिसके रसोई घर में भात घट गया है। लोरिक ने मन में सोचा फिर जाकर गंगिया हजाम को गर्दन पकड़ कर उठाया। समझा कर कहा--गांगी मेरी बात मानो—एक स्त्री किले में रो रही है- उसके रुदन पर मुझे दया आ रही है। मैं सहन नहीं कर सकता। लगता है ब्राह्मण की बेटी रो रही है जो चौके पर ही विधवा हो गयी है। ऐ नाऊ, तुम जाकर उसका पता ठिकाना लो। वह स्त्री आधी रात में रो रही है। तब गंगिया हजाम ने कहा--मालिक मेरा कहना सुनिये। आधी रात ढल चुकी है। मैं अगोरी की बस्ती में कैसे जाऊँगा। गली में लोग 'चोर' 'चोर' चिल्लायेंगे। मुझे अच्छी तरह पीटेंगे और मेरी ज़िन्दगी खराब कर देंगे। तब लोरिक ने कहा--गंगिया, तुम्हारी जाति नाई की है। तुम चट अपनी बुद्धि और वाणी से कुछ न कुछ तरकीब निकाल लेते हो। हजाम ने कहा—मालिक मेरी बात मानिये। आज मेरी छत्तीस प्रकार की बुद्धि ठिकाने लग गयी है। एक भी अक्ल काम नहीं कर रही है। इस क्षण आपको जवाब क्या दूं?

> **सुमिरन--गायक राम का नाम स्मरण करता है और कहता है कि राम ने रामायण का सृजन किया। लक्ष्मण ने काशी और प्रयाग का सृजन किया। सीता ने अपने नैहर का सृजन किया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोड़ा।**

उस दिन अहीर ने बीर लोरिक से कहा- ऐ मेरे गांगी हजाम सुनो। आधी रात ढल चुकी है। तुम महर के घर जाओ और उन्हें समझा कर कह दो कि हम सांभर नमक के खाने वाले हैं। उन्होंने भोजन में बसहा (सुवासित ?) नमक डलवा दिया और पानी नहीं पिलवाया। उनसे जाकर कह दो कि तुम्हारे दुलारे दामाद लोरिक को प्यास लगी है। तब मेरी सास कहेंगी कि नदी के तट पर बारात है वहां से लाकर मेरे लाड़ले को पानी पिला दो। और नहीं तो अगोरी में दस बीस कुएं हैं। वहाँ से जल खींच कर पानी पिला दो। उनसे कह देना कि नदी का पानी खराब है। कुओं का पानी भी गंदला है। सूबे का कुवां गहरा है। वहाँ रेशमी डोर नहीं पहुँचती। कलश के ठंडे पानी के लिए तुम्हारे दुलारे दामाद प्यासे हैं—ऐसा कह देना। गंगिया हजाम वहाँ से अगोरी चला तथा लुक-छिपकर महर के दरबार में पहुँचा। महर के घर में कुल परिवार की स्त्रियाँ नंगे बदन सो रही थीं। मंजरी

मंडप के तोते के पास बैठ कर रो रही थी। 'मुझ जैसी परित्यक्ता के लिए किसी का ऐसा लाल जूझ कर मर जायगा ! मुझको तो बड़ा अपराध लगेगा। मैं तो विष खाकर मर जाऊँगी।' नाऊ जाकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया। वह कुछ बोल नहीं रहा है। वह चार पग पीछे हटकर खंखारने लगा। मंजरी के कानों में आवाज पहुँची। मंजरी वहाँ से भागी और जाकर महरिन के पेट पर गिर गयी। महरिन अचानक उठ गयीं। कहने लगीं—मेरी बिटिया सुनो। शाम को ही सिर में सिंदूर पड़ा तथा आधी रात में तुम मस्ती में पागल होने लगी। महर की बेटी दावन मंजरी बोली—मइया, तुमने ऐसा ताना मारा कि मैं सह नहीं सकती। न तो मेरे सिर में सिंदूर पड़ा है और न आधी रात में मैं पागल हुई हूँ। दरवाजे पर एक आदमी खड़ा है। ज़रा पूछ लो कि वह धराती है या बाराती। महरिन और मंजरी बाहर निकलीं तथा दरवाजे के निकट से साफ़-साफ़ पूछने लगीं—'भाई तुम्हारा वतन कहाँ है, तुम्हारा गोत क्या है ? तुम्हारा उद्देश्य क्या है ? तुमने कहाँ चढ़ाई की है। आधी रात को तुम कहाँ आये हो ?'

गांगी नाऊ ने कहा—मलकिन मेरी बात मानिये, जैसे मैं लोरिक का नाई हूँ वैसे ही तुम्हारा भी नाई लगूंगा। तुम्हारे लाड़ले लोरिक को प्यास लगी है। उन्होंने कलश का ठण्डा जल मांगा है। महरिन ने कहा—'नाई मेरी बात सुनो। नदी के तट पर बारात है। मेरे दुलारे दामाद को नदी का पानी पिला दो। और नहीं तो अगोरी में दस बीस कुएं हैं उनमें से जल भर कर उन्हें पिला दो। तब गांगी हजाम ने कहा—'मलकिन, मेरी बात सुनिये। नदी का पानी खराब है। कुएं का पानी गंदला है। राजा की कुइयां संकरी है उसमें रेशम की डोर नहीं पहुँच सकती। लोरिक ने कलश का ठण्डा जल मांगा है। तुम्हारे दामाद को प्यास लगी है।'

महरिन घर से बाहर निकल कर दरवाजे पर खड़ी हो गयीं। पूछा—'तुम घराती हो, या बाराती। तुम मुझे ठीक-ठीक बतलाओ।' नाऊ ने कहा—'जैसे मैं लोरिक का नाई लगता हूँ वैसे ही आपका लगता हूँ ?' जब नाई यह बात कह रहा था। उसी समय महरिन ने अनुपी को पुकारा।

भावार्थ—(२४०१—२७००)

तब, महरिन ने 'अनुपी' 'अनुपी' चिल्लाना शुरू किया। अनुपी आ कर आँगन में खड़ी हो गयी। महरिन ने कहा—ऐ मेरी भतीजी अनुपी, तुम नाई को सिन्दूर तथा काजल लगा दो। इसको घाँघरा पहनाओ तथा ललाट पर टिकुली चिपका दो। महरिन कह रही हैं कि चुपचाप तुम नाई के मस्तक पर टिकुली चिपका दो। वह नाई करगही नाच नाचेगा। इसने मण्डप में बड़ी-बड़ी विपत्तियां ढाई हैं। सवा लाख कुटुम्ब-परिवार की स्त्रियाँ नंगे बदन सो रही हैं। यह जा कर बड़ी निंदा करेगा। गउरा के सब लोग हँसेंगे। अनुपी तब बाहर निकली। दक्षिण देश की बनी हुई झाँपी (सन्दूक) उतारी। नाई के सिर पर सिन्दूर और काजल लगा दिया फिर उसको रत्नजड़ित घाँघरा पहना दिया। अनुपी उसको 'गंड़थइया' नाच नचाने

लगी। गंगिया ने एक हाथ सिर पर रक्खा एक अपनी कटि पर। वह रक्त के आँसू गिराने लगा। वह नाचते नाचते थक गया, तब धरती पर गिर पड़ा। कहने लगा, महरिन मैं आपकी कोटिशः दुहाई देता हूँ। मेरा अल्हड़ प्राण चला गया। महरिन ने कहा—ऐ अनुपी, इसका नाच बन्द करवा दो इसके माथे की टिकुली तथा रत्नजड़ित घांघरा उतरवा दो। ठंडा कलश भर लेने दो' वह पानी 'जिरवा' और 'खेतार' पर (जहाँ बारात टिकी हुई है) ले जाय। मेरे दामाद को प्यास लगी है। नाई अपनी दुर्दशा का वर्णन करेगा। अनुपी वहाँ से कमरे में चली गयी। नाई ने एक लोटा जल भर लिया तब तक मंजरी ने अनुपी को देखा। मंजरी भयभीत हो गयी। माघ पूस की बर्फीली ठंड थी—ऐसी ठण्ड कि शरीर खड़े-खड़े गिर जाय। ऐसे में मेरे प्रिय (मुखनन्दन) जल पीयेंगे तो उनका कलेजा जल जायेगा। प्रातःकाल होगा, पौ फटेगी। पूर्व में कौवे शोर मचायेंगे। फिर बडा संघर्ष शुरू होगा। मेरे स्वामी लोहा कैसे संभालेंगे ? इतना कहते हुए मंजरी दूसरे छोर पर गयी। माघ के पाले को फेंक दिया। कलश में फाल्गुनी को रख कर जल भर कर गंगिया को दे दिया। जब गंगिया जल लेकर चलने लगा तब महरिन नम्रतापूर्वक कहा—

मेरे नाई सुनो—मेरे लाड़ले से जा कर यह संदेश समझा कर कह दो—एईल (एला) की लता तथा बनबेनियाँ फूल उठी हैं। चमेली और कचनार के फूल भी पुष्पित हो चुके हैं। कह दो रात में अहीर उन्हें चुन लें। अन्यथा सूर्य उगते ही ये सभी कुम्हला जायेंगे। हजाम गंगिया वहाँ आया जहाँ बारात टिकी हुई थी। लोरिक वहाँ पहरा दे रहा था। सवा लाख बाराती सो रहे थे। नाऊ वहाँ पहुँचा। लोरिक ने उससे हाल चाल पूछा। कौन सी स्त्री आधी रात ढलने के बाद रो रही थी ? उस पर कौन सी मुसीबत पड़ी हुई थी। तब मल्ल गंगिया ने कहा—मालिक मेरी बात सुनिये। आपकी विवाहिता मण्डप के बीच बैठ कर रो रही थी। क्या जाने कौन सी मुसीबत पड गयी है। वह फूट फूट कर (ज़ार ज़ार) रो रही थी। मैं उससे कलशे का ठंडा जल माँग रहा था। वह ला नहीं रही थी। तुम्हारी सास ने तुम्हें बुलवा भेजा है। उन्होंने कहा है—एला की लता फूल चुकी है, बेइलि फूल चुकी है। चमेली और कचनार फूल चुके हैं। रात में अहीर उन्हें चुन ले जाय नहीं तो प्रातःकाल सूर्य के उगते ही ये सारे फूल कुम्हला जायेंगे।

अहीर लोरिक ने तत्काल जवाब दिया। मेरी सवा लाख बारात इस खेतार पर, जीर पर सोई हुई है। मैं अकेले पहरा दे रहा हूँ। मैं ससुराल करने कैसे जाऊँ ? गंगिया ने कहा—मालिक आप जाकर ससुराल कीजिए। मैं घूम घूम कर पहरा दूँगा। लोरिक अपने शरीर पर अँगरखा डालने लगा। पैर में उसने तम्बान (पायजामा) डाल लिया। तरकस लिये। फिर अपनी एड़ियों में जूते डाल लिये। उसका दुपट्टा साठ गज का है। वह सँभाल कर फेंटा बाँध रहा है। उसकी कटारी छप्पन छुरियों वाली थी। उसकी बगल में तलवार लटक रही थी। उसके बायें हाथ में ओढ़न तथा दाहिने हाथ में बिजली की तलवार थी। उसने सिर पर नर्मा की पगड़ी

बाँध ली जिसमें एक प्रकार का छत्र 'मेघडम्बर' लहरा रहा था। लोरिक बारात से चला जैसे झूमता हुआ हाथी जा रहा हो। द्वार पर चिराग जल रहा था, गैस जल रही थी। अहीर वहाँ आया पर सारे दरवाजे बन्द थे। एक-एक किवाड़ के पीछे लोहे के मूसल लगे हुए थे। दरवाजे पर द्वारपाल ने आवाज लगायी। खिड़की से कोतवाल ने कहा—तुम्हारे लिए भीतर का बुलावा है। यदि तुम्हारे अन्दर शक्ति हो तो तुम अंदर जाओ। द्वारपाल ने ऐसा कहा। खिड़की से कोतवाल ने भी ऐसी ही बात की। अहीर चार पग पीछे हटा फिर उसने एड़ी से जबर्दस्त चोट की। लोहे का मूसल टूट गया। खंड खंड होकर कपाट गिर पड़ा। लोरिक पहली ड्योढ़ी पर प्रवेश कर गया। दूसरे पर उसने धक्का मारा तो दीवार गिर पड़ी। अहीर वहाँ से आगे बढ़ा। मंडप में कुर्सी रखी हुई थी। वह बायीं कुर्सी पर बैठ गया। उसकी निगाह मुग्गे पर पड़ी। आजमगढ़ के बढ़ई ने दालान पर मुग्गे की रचना की थी। लोरिक की जितनी दौलत और पूँजी थी, वह सभी बरामदे में अंकित की गयी थी। पीतल का छोटा-सा घर था। भीतर बहुत से फल आदि थे। द्वार पर पीपल का पेड़ था तथा झंडा फहरा रहा था। वहाँ बायें और दाहिने दुर्गा का स्थान था। वहाँ सोने का मन्दिर बनवाया गया था। लोरिक वहाँ दोनों समय पूजा करता था।

अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर उसे देख कर क्रोध में खाक हो गया। उसने पलक उठा कर नहीं देखा और उसने गूंगी साध ली। उधर से महरिन गुजरीं लाड़ले लोरिक ने ज़रा भी नज़र नहीं फेरी। तब महरिन ने कहा—ऐ भइया, सुबच्चन आपने कैसा गूंगा वर ढूंढ़ दिया है। मंजरी भाग्य से हीन है। यदि मंजरी इतनी भारी थी तो इसे काट कर सोन नदी में फेंक देते। मेरी बिटिया कितने दिन जीवित रहेगी? यह कितने दिनों तक अगुलो के इशारे से बात करेगी। जब महरिन ने इतना कहा तो सुबच्चन बोल उठे—मेरी बहन सुनो। मेरी बात मानो। जिस समय हम लोग गउरा नगर में गये थे उस समय वर को हमने ठीक से चुना था। जैसे पिंजड़े में वहाँ तोता बोल रहा था वैसे ही वर भी 'सीताराम' बोल रहा था। अब न जाने इस अगोरी में क्या हो गया? मंजरी का भाग्य फूट गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक की सास महरिन अनुपी से बोलीं—तुम सिन्दूर और काजल कर लो। रत्न जटित घाघरा भी पहन लो और करगही नाच नाचो। नाचते हुए लोरिक के पास जाओ। उनके आगे ताल दो। उनके गले में गुदगुदी होगी और तब हमारे दामाद बोल उठेंगे। पुत्री अनुपी ने सिन्दूर-काजल किया तथा बत्तीस आभूषणों से अपने को अलंकृत कर लिया। फिर करगही नाच नाचने लगी। वह नाचते नाचते थक गयी पर अहीर ने पलक नहीं खोली, न नज़र उठाकर देखा। तब सास महरिन ज़िद में आ गयीं। अपशब्द उच्चारण करने लगीं। यदि रोटी की कमी थी तो ऐ वर, तुम गउरा मे ही रहकर बूढ़े क्यों नहीं हो गये? अहीर बोल उठा। सास मेरी बात सुनो—ऐसी ही रोटी की कमी थी तभी तो तुम्हारी लड़की ने मुझे निमन्त्रण भेजा। तुम्हारी सातवीं लड़की ने जो अन्तिम लड़की है, मुझे

सूचना भेजी है तब हम यहाँ तुम्हारे दरवाजे पर चढ़ाई करके आये हैं। तुम हमें ताने दे रही हो। अब अगोरी का हाल सुनिए। अनुपी ने यह बात सुनी। महरिन ताली बजाकर हँसने लगीं। अहीर बीर लोरिक कहने लगा—ऐ सास, ऐ अम्मा, मेरी बात सुनिए। यदि मैं बढ़ई को जीवित पा जाता तो मैं उसकी ठुड्डी पकड़ कर दो हिस्सों में तोड़ देता। जितना मेरा धन और पूँजी है उसने तोते में अंकित कर दी है। मेरे माता पिता को उसने एक साथ चारपाई पर सुलाया है। मैंने उसका चरित्र देखा है। मेरे शरीर में गुस्सा बढ़ गया है। यदि मैंने बढ़ई को जीवित देख लिया तो मैं उसको दो टुकड़ों में ढेर कर दूँगा। महरिन ने कहा अनुपी मेरी भतीजी सुनो। गद्दी आदि लगा दो। सोने की खाट सजा दो और मेरे लाड़ने को पलंग पर ले जाओ। मेरे प्रिय दामाद वहाँ सोयेंगे। आगे आगे अनुपा चली पीछे पीछे लोरिक चला। वह कोहबर में चला गया जहाँ सेज लगी हुई थी। लोरिक को सेज पर बैठाकर अनुपी वहाँ से चली गयी। अब मंजरी का हाल सुनिए वह सोलह शृंगार करने लगी। बत्तीस आभूषणों से सजकर वह दर्पण में अपना मुँह देखने लगी—। ऐसा लग रहा था जैसे दूज का चाँद उदित हो गया हो। हाथ में आरती का थाल लेकर मंजरी ठुमकती हुई धीरे धीरे चली आ रही है। वह आकर पलंग के पास खड़ी हो गयी। उसने लोरिक के दीर्घ जीवन के लिए खर उतारा उसके हाथ में पंच मेवा था। उसे खाकर उसने जल पिया। तब दोनों वहाँ बैठ गए। मंजरी की बाँह पकड़ कर लोरिक ने बैठाया और उसे सुला दिया। एक ओर स्वयं सो गया। मंजरी को उसने अपने हाथ से स्पर्श किया तब उसने कहा तुम्हें छोड़कर मैं दूसरे की नहीं होऊँगी तुम मेरी देह को क्यों छू रहे हो कल पूर्व में कौए शोर मचायेंगे फिर कल सूर्य के डूबते ही लोहा लग जायगा। यदि तुम्हारा शरीर अपवित्र हो जाएगा तो दुर्गा तुम्हारा साथ छोड़ देंगी। तुम मेरे और अपने बीच में तलवार रख दो, एक ओर तुम आनन्द करो तथा दूसरी ओर मैं आनन्द करूँ। हम लोग पलंग पर इस प्रकार सोयें जैसे भाई-बहन सोते हैं। तब दोनों सो गये। अहीर को नींद आ गयी। मंजरी उठ कर लोरिक का स्वरूप देखने लगी। वह दाँतों तले अँगुली दबाने लगी। हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा! तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया ?' मेरे जैसे—उच्छिष्टा के कारण जिसका ऐसा सुन्दर लाल जूझ कर मर जायगा ? वह मां हीरे का कण खाकर आत्मघात कर लेगी और मुझे बड़ा अपराध लगेगा। वह अहीर का स्वरूप देख रही है तथा भयभीत होकर अपनी तकदीर को कोस रही है। मन में कह रही है—बाबू तुमने किस जांत का पीसा खाया है ? किस तालाब का पानी पीया है ? मंजरी को किस चारपाई पर सुलाया है। तुम्हें वाध (मूंज की रस्सी) गड़ रहा होगा। मेरी जैसे उच्छिष्टा के कारण तुमने प्राण तज दिया। मंजरी इस प्रकार सोच रही है। सोचते-सोचते वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसके रोने से अहीर लोरिक भीग गया। उसकी नींद उचट गयी। उसके शरीर में कुछ गीला-गीला सा लगने लगा। तब उसने नम्रतापूर्वक कहा—"जिस दिन से मैंने अपनी खताओं को

गाँठ में बाँध लिया था, मैंने कोई पाप नहीं किये। बीच में न जाने कौन से अपराध मुझसे हुए कि महल टूट गया है, और पानी चू रहा है।'

भावार्थ--(२७०१—३०००)

ससुर का महल दुश्मन हो गया है, लगता है उसने टूटी झोपड़ी छवा दी है। मंजरी ने कहा—सइयां मेरी बात मानो, जिस दिन से तुमने गउरा छोड़ा है तुमने पापों का संग्रह नहीं किया। तुमसे कोई चूक नहीं हुई है और न मेरे पिता ने टूटी झोपड़ी छवाई है और न छत ही टूट कर चू रही है। मेरे रोने के कारण तुम्हारी दुलाई भीग गयी है। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो उसने हाथ में बिजली वाली तलवार पकड़ ली। कहने लगा दुष्टा, क्या तुमने मुझे लंगड़ा या पंगु समझ लिया है या मुझमें कोई कमी या नुक्स देख लिया। मेरे घर में धन या पूँजी की कमी है? क्या तुमने कुछ ऐसी खबर सुनी है? क्या सास और ननद की बातें सुनी हैं? किस गुण या अवगुण को देखकर तुमने सारी रात रुदन किया है। मंजरी ने उत्तर दिया, ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे पति, सुनिये। जब प्रातः काल होगा, पूर्व में कौवे शोर मचाना शुरू करेंगे, उस समय घाट पर युद्ध छिड़ जायगा। अगोरी में तलवारें चलेंगी। तब लोरिक ने कहा—मेरी विवाहिता, मेरा कहना सुनो। मैं गउरा में शांति पूर्वक रह रहा था। सुना कि अगोरी मे एक राजा बड़ा बली है। उसके जोड़ का कोई दूसरा नही है। मैं विशेष रूप से उसी का पौरुष देखने आया हूँ। तुमसे विवाह करने वाली बात तो साधारण थी। मैं सोचता हूँ जल्दी भोर होता तथा दो हाथ जम कर तलवारें चलतीं। राम जिसको शक्ति देगा वही विजय प्राप्त करेगा! क्षण मे ही झगड़ा तय हो जायगा। लोरिक वहाँ से चल पड़ा और अपने जाजिम पर आ गया फिर पहरे पर तैनात हो गया। सोने का जो गिलाल बनाया गया था और जिसकी पेंद में सोलह टोटियाँ बनायी गयी थीं। उसमें गउरा के लोग दारू पी रहे थे। उसे पीते-पीते सवा लाख बारात जाजिम पर लेट गयी। तब कठईत ने कहा—बेटा तुम इस स्थान पर पहरा पूरा करो। किसी का बिस्तरा कही गायब न हो जाय? जिसकी टूटी लकड़ी चली जाएगी वह प्रातः काल चढ़ने के लिए घोड़ा मांगेगा। जिसका टूटा हुआ डण्डा चला जायगा वह ढाल और तलवार की मांग करेगा। जिसका फटा हुआ कम्बल चला जायगा वह पूर्वी 'राल' नामक कम्बल की मांग करेगा। तुम दण्ड पा जाओगे। अतः घूम-घूम कर तुम बारात का पहरा दो। अब उस समय का हाल सुनिये। लोरिक की सास महरिन उठीं और चोर खरफरिया के यहाँ गयी। उसको बुलाया और कहा कि भइया खरफरिया, तुम मेरी बात सुनो। तुमने बहुत चोरियाँ की हैं एक चोरी तुम मेरे लिए कर लाते तो मैं तुम्हें रुपये-पैसे से अगोरी में आजाद कर देती। इतना धन देती कि तुम दो चार पुश्त बैठ कर खाते। आगे-आगे महरिन चलीं। पीछे-पीछे चोर चला। वह महर के आँगन में बैठ गया। महरिन ने उन्हें समझाकर कहा—देखो भाई सोने का गिलास गहरा है। उससे सवा लाख बाराती दारू पीते हैं। वह गिलास कहीं रखा होगा। भइया, वह गिलास

लाकर मेरे हाथ में दे दो। मैं तुम्हारा जीवन एकदम चिन्ता मुक्त कर दूंगा। जब महरिन ने इतनी बात कही तो चोर जीर पर चला गया जहाँ अहीर की सवा लाख बारात टिकी हुई थी। गिलास लोरिक की जांघ पर थी। लोरिक उसे उठाकर दारू पीता था और फिर उसे जांघ पर रख देता था। उसे देख कर चोर घर वापस लौट गया। उसने घर से सेंध काटना शुरू किया और अन्दर-अन्दर खोदते हुए उसे बाहर निकाल ले गया। जब वह जाजिम पर आ गया तब धरती के अन्दर से कहने लगा। ऐ मेरी आराध्या भगवती, तुम मेरी नज़र पर चढ़ जाओ। सोने का गिलास कहाँ है? तुम उसकी पहचान करवा दो। उसकी नज़र पर भगवती सवार हो गयीं। चोर आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगा। लोरिक की पल्थी पर गिलास दिखाई पड़ने लगा। वह द्वार तक चला गया, जाजिम काटा। अहीर अपनी पल्थी पर रख कर सो रहा था। खरफरिया चोर गिलास उठा कर सेंध में चला गया और सुरंग के रास्ते अन्दर-अन्दर घर पहुँच गया। गिलास महरिन के हाथ में दिया। वह नदी की ओर गयीं तथा गिलास को सोन भद्र के घाट पर फेंक दिया। गिलास बहकर हल्दी चला गया। वहाँ महीचन की सत्यवादी लड़की आधी रात में स्नान कर रही थी। गिलास उसके शरीर से छू गया। उसने गिलास को उठा लिया और उसे घर लायी। कच्चा पीतल निकाल कर वह सोनार के घर गयी। वहाँ गिलास बनवाया। दोनों गिलासों को लेकर उसने अपने भण्डार-गृह में रख दिया।

इधर लोरिक की नींद खुली तो (चिंतित होकर) उसने सोते हुए धर्मी संवरू को जगाया। कहा—भइया संवरू, सुनिये मेरे पहरे में चोरी हो गयी है। गिलास गायब हो गया है। प्रातः काल, पौ फटते ही उसकी मांग होगी। मैं गिलास कहाँ पाऊँगा? लोग कहेंगे—गउरा के लोग लालची थे। उन्होंने गिलास गायब कर दिया। उसी समय दोनों ने गंगिया नाऊ को जगाया। ऐ नाऊ, तुम सवा लाख बारातियों को देखो। हम लोग गिलास की खोज में जा रहे हैं। उन्होंने दुर्गा का स्मरण किया। दुर्गा चील पक्षी का रूप धारण कर प्रकट हुईं। उनके बायें पंख पर लोरिक बैठ गया। दाहिनी ओर मल्ल संवरू बैठ गये। मां दुर्गा वहाँ से उड़ीं तथा उन्हें स्वर्ग लोक इन्द्रपुरी में ले गयीं। अब वहाँ का हाल सुनिये। वहाँ चन्द्रमा प्रकाशमान होकर उदित थे। दोनों भाइयों ने उन पर हमला कर दिया और उनकी मुस्कान बन्द कर दी। देवता चन्द्रमा रोने लगे। वह स्वर्ग में सिर पटकने लगे। कहने लगे—ऐ अहीर, मेरे पहरे में चोरी नहीं हुई है। मैं कुछ यत्न नहीं कर सकूंगा। शुक्र देवता वहाँ उगने वाले हैं। वह तुम्हें चोरी के बारे में बता देंगे। दोनों ने चन्द्रमा का बन्धन ढीला कर दिया। शुक्र देवता को उन्होंने बांध लिया। उन्होंने रोकर कहा—मेरे पहरे में चोरी नहीं हुई है नहीं तो मैं चोरी का रहस्य बता देता। गोबर सइंती तारा उग रहे हैं। वह तुम्हें चोरी के बारे में बता सकेंगे। तब दोनों भाइयों ने शुक्र देवता का बन्धन ढीला कर दिया और वे 'गोबर सइंती' तारा के पास गये। उनसे लिपट

गये और उनको बांध लिया। इन्द्रासन में तारा गोबर सइंती ने चोरी के बारे में बताया। नम्रता पूर्वक कहा—ऐ वीर लोरिक, ऐ सांवर सुनो। तुम इतना कष्ट मत सहो। मेरा बंधन ढीला कर दो। तुम्हारी सास खरफरिया चोर को बुला लायी थीं। उसने गिलास के लिए मौके की तलाश की, सेंध खोली और महरिन के आंगन से जीर तक जहाँ बारात टिकी हुई है, सुरंग बनायी। ऐ लोरिक जहाँ तुम बैठे हुए थे वहीं तुम्हारी जांघ पर गिलास था। चोर तुम्हारे आगे सेंध काट कर गिलास ले गया। गिलास ले जाकर शीघ्र ही उसने तुम्हारी सास को दे दिया। सास ने गिलास को सोनभद्र नदी में फेंक दिया। वह बहता हुआ हल्दी चला गया। महीचन्द की भाग्यशालिनी बेटी वहाँ थी। वह आधी रात में स्नान कर रही थी। उसके शरीर से गिलास छू गया। उसने गिलास को हाथ में ले लिया। फिर घर से कच्चा पीतल लेकर सोनार की दुकान पर गयी और सोने के गिलास के आकार का हूबहू एक पीतल का गिलास बनवा लिया। दोनों गिलास तैयार कर के उसने अपने भंडार गृह में सुरक्षित कर लिया है। तुम लोग कष्ट मत सहो। हल्दी चले जाओ। उन्होंने 'गोबर सइंती' तारा का बंधन ढीला कर दिया। फिर पश्चिम की ओर चले। उन्होंने दुर्गा का स्मरण किया। कहा—ऐ दुर्गा, तुम्हारे बल और शक्ति के भरोसे हमने इस भयंकर देश में प्रस्थान कर दिया। हे माता, आपने ऐसा सब उल्टा-पल्टा कर दिया है कि उससे हम लोगों की हानि होगी। आप चील का रूप धारण कीजिए। हमें जीर का ठिकाना बता दीजिए। वह जीर के नीचे उड़ कर आ गयीं। अब वहाँ का हाल सुनिये। दोनों भाई वहाँ आकर टहलने लगे और वहाँ का हाल चाल देखने लगे। वहाँ सवा लाख बारात सो रही थी। उन्होंने गंगिया से कहा कि तुम बारात की देखभाल करो हम लोग हल्दी जा रहे हैं। वही गिलास गया है। मलसावर अपना सन्दूक खोलने लगे जिसमें दुशाला रखा हुआ था। उन्होंने दुशाला निकाला जिसमें हीरा और मोती के किनारे लगे हुए थे। उन्होंने दुशाले को बीच से फाड़ दिया। आधा लोरिक को दिया। फिर आधे को टुकड़ा-टुकड़ा कर कंथा बना डाला। सभी लोग तम्बू में सो रहे थे। सांवर ने हाथ में सारंगी उठायी। लोरिक ने हाथ में खंजड़ी ली। आधी रात ढलने पर वे हल्दी के घाट पर पहुँचे। उन्होंने योगी का रूप बनाया और मौज में गीत गाने लगे। महीचन्द की बेटी हल्दी के घाट पर पहुँची। वहाँ बांस पर धोती टंगी हुई थी। योगी मस्ती में गा रहे थे। महीचन्द की लड़की ने कहा—गोसाईं बाबा, मेरी बात सुनिये। दिन भर में तुम्हें कितनी भिक्षा मिली है। तुम लोग मुझे बताओ। मैं तुम्हें उससे अधिक दूँगी। तुम मेरे दरवाजे पर चल कर मौज के साथ गीत गाओ। योगी मौज में गीत गाने लगे। पूरा हल्दी शहर मुग्ध हो गया। महीचन्द की बेटी भी मुग्ध हो गयी। कहने लगी—बाबा आप लोग कौन नशा खाते हैं? मैं उसे मंगा दूँगी। तब योगी मलसांवर ने कहा। बच्चा, हमने गाँजा तम्बाकू छोड़ दिया है। जब से हमने सातों तीर्थों का पर्यटन किया है तबसे हमने सिर्फ एक ही नशा बचा कर रखा है। हम सिर्फ भट्ठी का दारू पीते हैं। अन्यथा हमने बहुत

तीर्थ किया है। हम लोगों के पास जो कुछ था उसको हमने संकल्प करके दान में दे दिया है। हम लोगों ने कोई बर्तन भी नहीं रखा है। बच्चा जब सोने का गिलास आ जायगा। तब हम तुम्हारे हाथ का दारू पीयेंगे। जब महीचंद की लड़की ने यह सुना तो वह.अपने महल में चली गयी।

भावार्थ—(३००१—३३००)

भंडार-गृह से पीतल का गिलास निकाला। जाकर उसे योगियों के हाथ में दे दिया। दोनों भाई गिलास देखने लगे। पीतल का यह गिलास हूबहू सोने के गिलास की भांति था। दोनों भाइयों ने गिलास को देखा। लोरिक को थोड़ा सन्देह हुआ। कहा—ऐ मेरी दुर्गा, तुम धन्य हो। तुम आदि के दिनों से ही मेरी आराध्या हो। तुम मेरी नज़र पर चढ़ जाओ। सोने और पीतल की पहचान करा दो। तब दुर्गा नज़र पर सवार हो गयीं। लोरिक आँखें फाड़ कर देखने लगा। पीतल का बर्तन पहचान में आ गया। अहीर ने उसे फेंक दिया और लड़की से कहा—तुम्हें कौन-सा अभिशाप दूँ? वह जल कर खाक हो गया। कहा—मैंने तुमसे सोने का ब्रर्तन माँगा तो तुमने मुझे पीतल का दे दिया। मैंने सोने का संकल्प किया था। तुमने पीतल मेरे हाथ से स्पर्श करा दिया। मैं सोने के बर्तन में छक कर दारू पीता। लड़की दूसरी बार भंडार गृह में गयी तथा उसने गिलास लाकर दे दिया। योगी गिलास उलट कर देखा। कहा—यही हमारा गिलास है। अब दोनों भाई गिलास में ढाल ढाल कर मद पी रहे हैं। उनकी आँखों में सुर्खी चढ़ गयी। फिर योगियों का हाल सुनिये। उन्होंने सारंगी पटक दी, खंजड़ी फेंक दिया। धूल झाड़ते हुए बीर वहाँ से चल पड़े। दोनों भाई गरजते हुए चले जा रहे थे। वे बत्तीस हाथ उछल रहे थे। एक घड़ी के अन्दर वे जीर के खेतार पर पहुँच गए जहाँ बारात टिकी हुई थी। प्रातःकाल हो गया। पौ फटने लगी। पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। महरिन ने सुबच्चन को पुकारा। सुबच्चन दौड़कर पास आ गये। कहा--भैया, सुबच्चन सुनो। मेरी बात मानो। जो गिलास बारात में गया था उससे सारे बारातियों ने मद पीया है। उस गिलास को जरा माँग लाते। मेरे (घराती) मेहमान उससे दारू पीयेंगे। मल्ल सुबच्चन वहाँ से चले तथा जीर पर पहुँच गए जहाँ अहीर की बारात सोयी हुई थी। मल्ल सुबच्चन ने कहा—ऐ वृद्ध कठईत, आप मेरी बात मानिए। ऐ समधी जो शाम को गिलास यहाँ आया था और जिससे तुम्हारी सवालाख बारात ने दारू पीया था उसकी माँग मेरी बहन ने की है। मेरी बहन ने हुक्म दिया है कि उससे इस समय घर वाले अतिथि (घराती) दारू पीयेंगे। उसे तुम मेरे हाथ में दे दो। समधी ने गिलास हाथ में दे दिया सुबच्चन गिलास लेकर चले गये। महरिन के हाथ में उसे दे दिया। महरिन ने जब उसे उलट कर देखा तो छाती पीटने लगीं। बातें बना बनाकर कहने लगीं—मैंने ऐसे अहीरों को नहीं देखा है। मैंने सारे संसार का भ्रमण किया है। जो पानी में गिलास डूब गया, बचा नहीं, उसको इन्होंने कैसे प्रकट कर लिया!

आधी रात ढल चुकी थी। इधर मंजरी ने नम्रतापूर्वक लोरिक से कहा—ऐ

स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ पति, मेरी बात सुनिए। यहाँ गोठानी में बड़े शक्तिशाली देवता हैं। तुम वहाँ चलकर हाथ जोड़कर पाँव पर गिरो। उनसे वरदान माँगो। तब अहीर वीर लोरिक ने कहा – ऐ मेरी विवाहिता, तुमने देवता देवता क्या किया है। चलो, हमें देवता को दिखला दो। मैं उनके पाँव पड़ता हूँ और वरदान माँगता हूँ। महर की पुत्री मंजरी ने जब यह बात सुनी तो वह आगे आगे चली उसके पीछे-पीछे लोरिक चले। वे सेमल के पास गये जहाँ शिवशंकर का मन्दिर था। मंजरी जाकर शिव के पाँव पर गिर पड़ी तथा वरदान माँगने लगी। उसने मस्तक पर विभूति लगा ली तथा दरवाजे से बाहर निकली। लोरिक से कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे पति, मेरी बात मानिये। आप महादेव शिव का पाँव पकड़िये तथा उनसे वरदान माँगिये। अहीर जाकर मंदिर के द्वार पर खड़ा हो गया। कहा—ऐ महादेव, सुनिये। यदि तुम्हारी मूर्ति में शक्ति है तो हँसकर, ठहाका मारकर बोलिए। नहीं तो ऐसे ऐसे पत्थर तो मेरे गउरा गाँव में बहुत हैं। यदि तुम मेरा गुस्सा बहुत बढ़ाओगे तो हाथ में तुम्हें लेकर यहाँ से फेंक दूँगा और जब मैं उठाकर फेंकूँगा तो तुम गउरा गाँव में जाकर गिरोगे।

अहीर लोरिक ने इतनी बात कही पर महादेव ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब उसने म्यान फेंक दी तथा दस्तगी तलवार तान ली जिससे चारों तरफ अंगारे फैल गये तथा अंगारों की लपट आकाश तक पहुँचने लगी। नीचे दावाग्नि फैल गयी तथा शिव मन्दिर उसमें छिप गया। तब पत्थर की मूर्ति हँस पड़ी। महादेव ठहाका मारकर हँस पड़े। कहने लगे—भइया लोरिक जाओ। मैं अगोरी में तुम्हारी जीत करा दूँगा। महादेव ने जब यह बात कही तो मंजरी ने अपनी तकदीर ठोक ली। कहने लगी—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया। जब से मैंने अगोरी में जन्म लिया है तब से मैंने शिव की बड़ी सेवा की है। मैंने उन्हें दूध और घी में स्नान कराया है पर मूर्ति कभी नहीं बोली। अब जब बराबरी का मुकाबला हुआ तब पत्थर की मूर्ति ठहाका मार कर हँस पड़ी। अब वहाँ का हाल सुनिये। दोनों वहाँ से चले। मंजरी नम्रतापूर्वक बोली। ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, सुनिये। एक यह बंसरा भवानी हैं। आप उनसे वरदान माँगिए। मंजरी आगे आगे चली। पीछे पीछे लोरिक चला। उसने बंसरा भवानी से कहा—यदि तुम्हारी मूर्ति में शक्ति है तो तुम उठ कर मुझसे दो शब्द बातचीत कर लो। अन्यथा मैं खड्ग खींच लूंगा तथा तुम्हें दो भागों में खंडित कर दूँगा। मूर्ति तब भी नहीं बोली। लोरिक ने तलवार खींच ली। उसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। लपट मन्दिर में प्रवेश कर गयी। तब भगवती हँस पड़ीं। नम्रतापूर्वक बोलीं। ऐ भाई अहीर, तुम जाओ। मैं अगोरी में तुम्हारी विजय करा दूँगी। तब महर की पुत्री मंजरी हँस पड़ी। मैंने बहुत दिनों तक भवानी की सेवा की। इनको दूध और घी में नहलाया पर मूर्ति खुलकर कभी नहीं बोली। अब जोड़ से काम पड़ा तब पत्थर की मूर्ति ठहाका मारकर हँस पड़ी। मंजरी नम्रतापूर्वक बोली—ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिंदूर के

मालिक, अगोरी के राजा के पास बारह मल्ल हैं। उनके जोड़ का संसार में कोई नहीं है। वे राजा की ड्योढ़ी पर निश्चित होकर खा रहे हैं। जो सबसे बड़ा मल्ल है उसके जोर का थाह नही। अखाड़े में जो नाल रखी हुई है तुम उसको पोरसे भर उठा लो तब मुझे तुम्हारी शक्ति का विश्वास होगा। बीर लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, तुम 'नाल नाल' क्या कह रही हो, तुम चलकर नाल दिखला दो। ज़रा देखूं कि नाल मुझसे उठता है या नहीं। मैं उसे पोरसे भर उठाता। आगे आगे महर की पुत्री मंजरी चली। पीछे पीछे लोरिक चला। मंजरी नाल के पास खड़ी हो गयी। सइंया, देखिए यही नाल है। अहीर ने अपनी कनिष्ठा अंगुली उसमें डाल दी और नाल को पोरसे भर उठा कर घुमाने लगा। कहने लगा—ऐ मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। तुम कहो तो मैं नाल को यहाँ से ऐसा फेंक दूँ कि वह जाकर गउरा गुजरात में गिरे। यदि नही तो तुम कहो तो मैं इसे सोन भद्र में फेंक दूँ कि नाल का घेरा टूट जाय। यदि नही तो तुम कहो, मैं इस नाल को किले पर फेंक दूँ ताकि किले का गुंबज टूट कर गिर पड़े। तब मंजरी ने नम्रतापूर्वक कहा—सइंया, राजा के बारह मल्ल हैं। ये बारहों देव के लाल हैं। जब वे अखाड़े में कसरत कर लेते हैं और जाकर इमली के पेड़ में धक्का मारते हैं तो इमली का पेड़ जड़ से हिलने लगता है। बीर लोरिक इमली के पेड़ के पास गया। दाहिनी अंगुली से उसे दबाया। पर इमली का पेड़ अभी सो रहा था। लोरिक घूमते हुए अखाड़े से होते हुए महर के घर गए।

अब वहाँ का हाल सुनिए। लोरिक ने सिर से पैर तक चद्दर तान ली। मंजरी के साथ वह वैसे ही सो गया जैसे नाते में भाई बहन हों। पलंग पर दोनों जमकर सो गए। अब राजा का हाल सुनिए हाथी का हौदा उन्होंने कसवा लिया। पचास गुंडे शहर में छोड़े गए। गुंडों ने महर का घर छेंक लिया। प्रातःकाल बहुत तड़के महरिन आँगन बटोर रही थी। अगोरी के राजा मोलागत दरवाजे से ही बोल उठे। ऐ भाग्यशालिनी महरिन, आप सुनिये। मेरी बात मानिए। शीघ्र मंजरी की पालकी सजवाइए मैं उसे अपने किले के भवन में ले जाऊँगा। महरिन ने कहा—मोलागत आप सुनिए। मेरी बेटी दीन थी। जिसने उसके सिर में सिन्दूर डाला है वह उसके साथ कोहवर में सो रहा है। सूबा दरवाजे पर गाली देने लगा। महरिन से सहा नहीं जा रहा था। वह कोहबर में गयी जहाँ दोनों सो रहे थे। दोनों चद्दर तान कर वहाँ सो रहे थे। वह अचानक जग उठा। उसने दरवाज़े पर फौज देखी तो उसे गुस्सा चढ़ गया। वह जिसका मुश्क पकड़कर खीचता उसके बत्तीस दांत टूट कर गिर जाते। किसी का पैर पकड़कर वह खीचता तो वह लंगड़ा और लुंज पुंज हो जाता था। राजा मोलागत वहाँ से भागा। उसने महावत को गाली दी। कहा—हाथी को सीधे भाला घोंप देते तो अपना प्राण बचाकर मैं किले के भवन की ओर नहीं भागता। हाथी भाग कर अगोरी के किले में आ गया। अब वहाँ का हाल सुनिए। अहीर वहाँ से भाग कर बारात में आ गया। उसके दो चार दोस्त और समवयस्क जग रहे थे। सवालाख बारात सो रही थी। लोरिक के दोस्त हँस पड़े। ऐ अहीर बात हमारी सुनो। शाम को तुम मंजरी के सिर में सिन्दूर डाला। आधी रात को ही ससुराल

कर ली ! लोरिक ने हाथ जोड़कर कहा—भइया, तुम लोग मेरी बात सुनो—यह बात या तो मैं जानता हूँ या तुम लोग जानते हो। सवालाख बाराती यह बात न जानने पावें। नहीं तो अगर कहीं मेरे काका कठईत इस बात को सुन लेंगे, धर्मी भइया संवरू सुन लेंगे, गुरु अजयी सुन लेंगे तो मेरा हृदय लज्जित हो जायगा।

प्रात:काल हुआ। पौ फटने लगी। पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। महरिन ने सुबच्चन की पुकार लगायी। सुबच्चन आकर द्वार पर खड़े हो गये। महरिन ने कहा—जाकर बारातियों को यह सूचना दे दो कि यदि वे गाय भैंस के इच्छुक हों तो मैं दहेज का अम्बार लगा दूंगी। पर्वत और पहाड़ खड़ी कर दूँगी। यदि उन्हें सोना और द्रव्य की भूख हो तो मैं मंडप में खोल में बांधकर उन्हें सोना और द्रव्य दूंगी। जो विवाहिता मंजरी के लिए इच्छुक है वह किले से पालकी उठा ले जाय। संवरू गाय और भैंस के लिए भूखे थे। उन्होंने ढोरों का पहाड एकत्र कर लिया। बाराती द्रव्य के भूखे थे। उन्होंने मंडप में द्रव्य एकत्र कर लिया। लोरिक विवाहिता के लिए भूखा था। उसने किले से डोली फंदवा दी। मंजरी रुदन कर रही थी। कह—रही थी—माँ मेरी बात सुनिए। हर रोज़ बहुत तड़के अँधेरे में ही मैं तुम्हारे लिए मक्खन मथती थी। आठ 'नेत (मथानी की रस्सी) दस कनिया' तथा दस मिट्टी के बर्तन (चरूई) यहाँ रोज़ फूटते थे। यदि इतनी क्षति गउरा में होगी तो सास ताना मारेंगी। कहेंगी—यदि ऐसे जबर्दस्त की बेटी होती तो तुम सोने की हांड़ी, तथा सोने का बर्तन अपने साथ लाती। मइया तुम मुझे इतना सामान दे दो।

भावार्थ—(३३०१—३६००)

तब पालकी में पैर रखूंगी। महरिन ने स्वीकृति नहीं दी। मंजरी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। अब सुबच्चन का हाल सुनिये। वह वहाँ गये। सुबच्चन ने कहा—बहन सुनो। भांजी घर से चली जा रही है। बर्तन की क्या कीमत है ? तुम मथानी की रस्सी (नेत) भी उसे दे दो ताकि वह उसे पालकी में रख ले और उसकी चिन्ता दूर हो जाय। माँ ने दहेज में सोने के बर्तन आदि दे दिये। मंजरी पालकी में चली गयी। फिर दरवाज़े पर गयी जहाँ पिता बैठे हुए थे। उनका पैर पकड़ कर मंजरी रुदन करने लगी। पिता, मेरी बात सुनिये। जहाँ आपने मेरी शादी की है वहाँ युद्ध का ही उठना बैठना होता है। युद्ध ही अहीर के प्राण का आधार है। यदि उसका पैर ऊंचा नीचा पड़ गया तो वह अपना मस्तक गँवा देगा। गउरा में मेरे ऊपर भारी विपत्ति आ जायगी। मैं वैधव्य कितने दिन भोगूंगी। (अब वहाँ का हाल सुनिये।) मंजरी ने महर के पैर पकड़ लिये। पिता बोल नहीं सके। उस समय मामा सुबच्चन उपस्थित हो गये। कहने लगे—ऐ बहनोई, ऐ महर सुनिये, भांजी जैसी चीज़ घर से निकली जा रही है। पगड़ी की क्या कीमत है ? तुम दहेज में उसे पगड़ी दे दो ताकि भैने पालकी में पैर रखे। मंजरी ने पगड़ी उठा कर रख ली उसमें हीरे और मोती के गोट लगे थे। यदि मंजरी पर कोई विपत्ति आ जायगी तो वह बैठ कर दो चार पुश्त खायेगी। इतना अतुल धन लेकर मंजरी पालकी में बैठ गयी। वहाँ से

पालकी उठी तथा पाँच पग चली फिर मैदान में आ गयी। लोरिक भी अब आकर सबका अभिवादन करने लगा। सास ने उसे सोने की किनारी वाली धोती दी, उसमें सोने की करधनी लपेट दी। वहाँ से अहीर बाहर आया। द्वार पर ससुर महर बैठे हुए थे। लोरिक ने झुक कर उन्हें प्रणाम किया। महर ने उन्हें जी भर कर आशीर्वाद दिया। जेब में हाथ डाली उसमें से साठ मुहरों का हार निकाला और अपने लाड़ले दामाद के गले में पहना दिया। वहाँ से मर्द आगे बढ़ा और पालकी के पास खड़ा हो गया। उसने अगोरी की बहुत सी गलियाँ देखीं। उसने अपने मन में कहा—मैं ऊँचा नीचा देख कर किसी गली या रास्ते से निकल जाऊँगा तो मोलागत सुनेगा और ताना मारेगा। वह कहेगा—अहीर चोर था। ऊँचा नीचा देख कर डोली लेकर वह भाग गया। उसने बत्तीस कहाँरों से कहा—डोली को किले के समीप से पार करते हुए ले चलो।

अब वहाँ का हाल सुनिये। मंजरी की डोली चली। इधर राजा मोलागत की कचहरी लगी हुई थी। उसकी नजर डोली पर पड़ी तो वह रक्त के आँसू बहाने लगा। हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया। हमने बचपन से इस पक्षी को जिलाया। भिगो कर चने की दाल खिलायी यह साला, कहाँ का परदेसी चढ़ आया और मेरे पक्षी को उड़ा कर लिये जा रहा है। यदि अगोरी में कोई मर्द होता तो अहीर के बाहर निकलते ही खेत पर उसे मार डालता। डोली को उठवा कर किले में लाता। मैं मंजरी के साथ रनिवास में भोग करता।

अब वहाँ का हाल सुनिये। दरबार लगा हुआ है। मन्त्री तथा अन्य लोगों ने राजा से कहा—हमारी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर कौन सी मुसीबत आ गयी है कि तुम फूट फूट कर रो रहे हो। इस भुनगे से लड़ने के लिए तुम्हारा सारा शहर और बाजार वहाँ पड़ा हुआ है। वे उसे सत्तू के नमक की भाँति चूर-चूर कर देंगे। जब मन्त्री ने इतनी बात कही तब राजा ने कहा। बारह मल्लों के सरगना को जिसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है जीर और खेतार पर भेज दो। वह जाकर अहीर को मार डालेगा। तब हर रोज की मुसीबत टल जायगी। अगोरी से सिपाही छूटे और भाँट के घर गये। उसके जोड़ का दूसरा मल्ल नहीं था। भांट की छोटी और बड़ी दोनों औरतें घर घर पूनी से चर्खा कात रही थीं। सिपाहियों ने भांट से कहा—'सूबा ने तुम्हें बुलावा भेजा है।' भाँट चाँदनी पर जा कर खड़ा हो गया। सूबा मोलागत ने उससे कहा—"मैं तुम्हें आधा राज्य दूँगा। आधा किला और महल दूँगा आधा गाँव और घाट दूँगा। गेहूँ जौ आदि के भण्डार से आधा दूँगा। आधे नौकरों को तुम्हें दे दूँगा। तुम मेरे आधे के पट्टीदार हो जाओगे।" पर भाई तुम इस अहीर को मार डालो। उसे रौंद कर सत्तू का नमक बना डालो। मंजरी की डोली जल्दी से उठा कर किले में लाओ। मैं उसके साथ रनिवास में भोग विलास करूँगा। भांट ने यह बात सुनते ही लौंड़ी (पत्नी वहाँ चर्खा कात रही थी।) मल्ल ने चरखे पर ठोकर मारी। चरखा पूनी समेत चटख कर टूट गया। बुजरो, मैं आधे का पट्टी दार हो गया हूँ। मैं अगोरी का राज्य पा गया हूँ। आधा किला और आधा महल

मुझे प्राप्त हो गया है । हाथी घोड़ों में आधा तथा नौकरों में आधा हमारा हो गया है । इस साले अहीर की क्या हस्ती है ? जाते ही उसको खेत पर पटक कर मार डालूंगा । लौंडी (पत्नी) ने जब यह बात सुनी तब उसे जवाब दिया । ऐ मेरे स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, सुनिये । मारने से अहीर नहीं मरेगा और न तो अग्नि में वह जल सकेगा । उसकी वाणी मधुर है । वह युद्ध में बाँका और जुझारू है । जो अहीर के दाव में पड़ जायगा उसकी विवाहिता राँड़ हो जायगी । भांट ने अपनी छोटी पत्नी का झोंटा पकड़ लिया । ऊपर से दो चार घूंसे भी लगा दिये । बुजरो, तुम मेरी बात मानो । गाँव घर के नाते अहीर तुम्हारा भर्तार है । तुम मेरे जैसे वीर के लिए अपमानजनक बात कर रही हो । ऐसा कहते हुए भांट वहाँ से रवाना हुआ । सीढ़ियों से नीचे उतर गया, जीर और खेतार पर गया । लोरिक की नजर उस पर पड़ी । मंजरी से मधुर वाणी में उसने कहा—मेरी विवाहिता सुनो । मेरी बात मानो । किले से एक मर्द आ रहा है । दायीं ओर शत्रु है । पहले मै तुम्हें सहेजूंगा फिर थोड़े समय में मैं तैयार हो जाऊँगा । मंजरी ने पाँच रंगों का पर्दा फेंक दिया, गर्दन निकाल कर देखा । लोरिक से कहा—मेरे स्वामी, मेरे सुखनन्दन, मेरे सिर के मुकुट, अभी तक किसी तरह जिन्दगी बच गयी पर अब तुम्हारी ज़िन्दगी नहीं बचेगी । यह मल्ल बेजोड़ है ।

अब भांट का हाल सुनिये । वह पालकी के पास पहुँच गया । झुककर माथा नवाया । लोरिक ने पूर्ण आशीर्वाद दिया । तुम अक्षय रहो, अमर रहो तथा लाख साल तक जीवित रहो । जैसे गंगा का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े । भांट ने कहा—तुम मंजरी की डोली छोड़ दो । मैं उसे किले में रनिवास का भोग कराऊँगा । मेरे बूढ़े राजा को स्त्री का ख्याल आया है । उनकी तरुणाई जागी है । यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं जबर्दस्ती तुम्हें इस खेत पर मार डालूंगा । मैं डण्डे से तुम्हारी खाल खिचवा लूंगा और उसमें भूसा भरवा दूंगा । तब अहीर ने नम्रता-पूर्वक कहा—ऐ वीर सुनो । शालि धान का डंठल कैसा होता है ? तुम उसका बोझा बना कर लाओ और मुझे दो । मेरे घर की झोपड़ी टूटी हुई है मैं उसे अपने घर ले जाऊँगा । मैं जाकर अपनी झोपड़ी ठीक करूंगा तथा अपनी विवाहिता की डोली सहज ही में छोड़ दूंगा । तुम इसे किले में ले जाओ और रनिवास भोग कराओ । भांट ने इस बात पर विश्वास कर लिया । वह घर लौट गया । हाथ में टांगी उठायी तथा गेरु पर्वत पर चढ़ गया । अच्छा-अच्छा (चुन कर) शालि धान काटा तथा उसका बोझा बनाया । बोझ लाकर उसने डोली के पास पटक दिया । कहा—ऐ लोरिक मैंने तुम्हारी बात मान ली । अब तुम मेरी बात मान लो । तुम मंजरी की डोली छोड़ दो । मैं रनिवास भोग के लिए उसे ले जाऊँ । लोरिक ने जब यह बात सुनी तो वह अपना गुस्सा संभाल नहीं सका । उसने उसके मुंह पर जबर्दस्त घूसा मारा । भांट के बत्तीस दांत टूट कर गिर गये । फिर अहोर ने अपनी गोजी उसके शरीर पर चलाना शुरू कर दिया । जहाँ-जहाँ गोजी लगती थी । भांट के शरीर से खून निकलने लगता

था। वह व्याकुल हो उठा। लोरिक को दुहाई देने लगा। मंजरी को भी वह लाख-लाख दुहाई देने लगा कहने लगा--हाय मेरा प्राण चला गया। तब बाहर निकल कर मंजरी ने लोरिक की कटि पकड़ ली। नम्रता पूर्वक बोली—स्वामी मेरी बात सुनिये। तीन जातियों को नहीं मारना चाहिए--एक तो ब्राह्मण, दूसरा भांट तथा तीसरा कहांर। इस भांट को मारने से बड़ा पाप लगेगा। इसको बचपन से ही पाला गया है। लोरिक बहुत ही हठी था उसने समझाकर कहा—मेरी विवाहिता सुनो। मेरी बात मानो। झोपड़ी की छत पर बछिया चढ़ जाय तो मैं कुत्ते और बिल्ली की खोज करूंगा।

अहीर ने धीरे से कहा—ऐ भांट सुनो। शांत चित्त जमीन पर बैठे रहो। उसने स्वयं बेल तोड़े और उनको डोली से परछ कर बड़ा सा गट्ठर बनाया तथा भांट के सिर पर उठा दिया। साले, तुम इसे लेकर किले में जाओ। रास्ते में कहीं एक भी बेल को फेंका तो किले में तुम्हारा मस्तक काट लूंगा। भांट वहाँ से चला। उसके मुँह से खून निकल रहा था। उसके मुँह में एक भी दांत नहीं रह गया था। वह रोते हुए घर जा रहा था। उस वक्त उसकी छोटी और बड़ी पत्नी ने आपस में झगड़ा किया। बडी ने कहा—लोरिक मेरे ननदोई हैं। उन्होंने बड़ी विदाई दी है।

भावार्थ—(३६०१—३६००)

इसी बीच भांट आ गया। आंगन में गठरी पटक दी तथा खाट पर भहरा कर गिर पड़ा। छोटी पत्नी झाड़ू लेकर पहुँची तथा उसे दो चार झाड़ू लगाये। उसने कहा—'ऐ दुष्ट, सुनो। तुमने कहा था कि गाँव घर के नाते से अहीर मेरे साथ बदमाशी करने वाला (भर्तार) है और मैं तुम्हारे जैसे जबर्दस्त पहलवान को नीचा दिखा रही हूँ। इस परदेशी अहीर को तुमसे अधिक सशक्त ठहरा दिया।' आज तुम दोनों का झगड़ा तय हो गया। यह तुम्हारी क्या दशा हो गयी? अब वहाँ का हाल सुनिये। कचहरी के लोग कह रहे हैं। ऐ मंत्री, सुनो। भांट खेत पर गया और दोनों ने समझौता कर लिया। भांट स्वयं आकर अपने घर में बैठ गया। उसने कुछ खबर तक नहीं दी। तब तुर्की और सिपाही वहाँ से छूटे। वे मल्ल के घर गये। उसका हाल देखा। सिपाही थर-थर कांपने लगे। उन्होंने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? हम सूबे की नौकरी छोड़ देंगे और किसी मुल्क में चले जायगे। नहीं तो वह ऐसे ही रण में भेज देगा और सबकी भांट जैसी दशा होगी। सिपाही भयभीत हो गये। भांट वहाँ से द्वार पर आया। भांट ने अपनी बड़ी पत्नी से कहा ऐ मेरी पत्नी सुनो, खिड़की पर प्रमाण पत्र रखा हुआ है। मैं उसे सूबा को सुपुर्द कर देना चाहता हूं। किसी प्रकार मेरी जिन्दगी बच जाती। मैं किसी प्रकार यहाँ से भाग जाता। भीख मांग कर खाता। भलाई की कोई आवश्यकता नहीं है। इधर राजा मोलागत रो पड़ा। चांदनी पर वह अपना सिर पटक रहा है। मंजरी मेरा राज्य छोड़ कर चली जा रही है। इस तोते को हमने बचपन से ही जिलाया है। भिगो कर चने की दाल दी है। यहाँ कहाँ का परदेशी चढ़ आया

है तथा मेरी सुग्गी को उड़ाये लिये जा रहा है। अगोरी में आज ऐसा कोई मर्द नहीं है जो खेत पर पटक कर अहीर को मार डाले। तथा डोली को किले में फंदवा दे। तब मन्त्री ने अपना मंतव्य प्रकट किया। चुगुली करने वालों ने समझा कर कहा—'ऐ राजा सुनिये। हमारी बात मानिये। अहीर मारने से नहीं मरेगा, न तो वह अग्नि की ज्वाला में जल सकेगा। सारी पल्टन को एकत्र करो। तब अहीर को मारो। चारों तरफ पत्र लिख कर राजाओं को बुलाओ। अगोरी की सारी प्रजा और अपनी जितनी सेना है, सब को खड़ा करो। अगोरी के जितने कर्णधार हैं सबको पलटन में खड़ा कर दो। बांके घोड़ों को अहीर के बीच ललकार दो। चारों कोनों पर सूबे रहेंगे अहीर का पूत कहाँ भागेगा? साले को रोककर जीर पर मार दो। रौदकर सत्तू के नमक की भांति उसे चूर-चूर कर डालो। अब वहाँ का हाल सुनिये। मंत्री ने सूबा को इस प्रकार की राय दी। सूबा ने कोरा कागज निकाला। हाथ में कलम और दावात ली। चारों कोने में पत्र लिखा। पहले पश्चिम दिशा में पत्र लिख कर बघेलों के राजा को निमन्त्रण भेजा जो तोप चलाने में सशक्त था। दूसरा पत्र उसने दक्षिण में लिखा तथा कोलों के राजा को निमंत्रित किया जो तीर चलाने में तेज था। फिर पूर्व के राजा को निमन्त्रित किया जो युद्ध में शक्तिशाली था। उत्तर देश के राजा को भी उसने पत्र भेजा। वहाँ के रकसेल राजा का बरछा बारह मन का था। वह अहीर को पटक कर मार डालेगा। अगोरी के राजा ने रच-रच कर पत्र लिखा। ऐसा कि यदि क्षत्रिय होगा तो अन्न ग्रहण करना बन्द कर देगा। वह जाकर रक्तपान करेगा जो भोजन कर रहा होगा वह भोजन छोड़ कर अगोरी में आकर हाथ धोयेगा। उसने लिखा—मेरा अगोरी का राज्य उजड़ रहा है।

परदेशी अहीर चढ़ आया है। उसने अगोरी में झगड़ा पैदा कर दिया है। राजा ने पत्र लिख कर सबको निमन्त्रण भेज दिया है। राजा के सिपाही छूटे। वे सम्पूर्ण अगोरी में बिखर गये। अगोरी की जितनी प्रजा थी और उसमें जितने जवान और बलवान थे उनको सूबा के लिए रण तैयार करा रहा है। उन्होंने जाकर जीर और खेतार पर मोर्चा बन्दी कर दी। फौज ने जाकर वहाँ घेरा डाल दिया। युद्ध का डका बजने लगा। जुझारू लकड़ी बजने लगी। सिंहनाद होने लगा। फौज चढ़ चली, सबकी सुध-बुध जाती रही। अगोरी का जीर और खेतार फौज से घिर गया। तब मंजरी ने नम्रता पूर्वक कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने भाग्य में क्या लिख दिया! एक फतिंगे के लिए इतनी फौज चढ़ कर चली आ रही है। चार कोने पर चार सूबे हैं। बीच में फौजों की सात कतार है। महर की पुत्री मंजरी ने लोरिक से कहा—हे स्वामी, हे सुखनन्दन, हे पति तुम आँखों से ओझल हो जाओ। मेरे पास विष है। तुम्हारे हटते ही मैं उसे खा लूंगी। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। अहीर आज फौज द्वारा मार डाला जायगा तब मेरा ठिकाना कैसे लगेगा। तब अहीर लोरिक ने कहा—मेरी विवाहिता, तुम मेरा कहना मानो। जहर की पुड़िया कहाँ है? ज़रा मुझे दिखाओ। हम दोनों मिलकर जहर खा लेंगे। हर दिन का झगड़ा मिट जायेगा।

मंजरी को इस बात पर विश्वास हो गया। उसने अपने आंचल से विष निकाला। लोरिक ने झुक कर विष की पुड़िया ले ली। अपनी तलवार से उसे काटा तथा तलवार को विषैला बना दिया। विष का कुछ भाग उसने नदी में फेंक दिया। मंगर मछली मार रहा था उस ओर विष प्रवाहित हो गया। कुछ विष लोरिक ने आकाश में फेंक दिया। आकाश लाल पीला हो गया। धरती पर जितना विष गिरा उससे विषैला 'कुचिला' का पेड़ तैयार हो गया। अब उस समय का हाल सुनिये। वहाँ मंजरी रो रही है। डोली पर अपना मस्तक पटक रही है। मेरे साथी, मेरे सुखनन्दन सुनिये, यहाँ मेरी बात मानिये। एक ही सहारा विष का था। तुमने उस विकल्प को भी समाप्त कर दिया। यदि कुछ गड़बड़ हो जायगा तो पापी मुझे किले में ले जायगा तथा रनिवास भोग करेगा। मैं तुमसे सच कहती हूँ। तब मेरी जिन्दगी को धिक्कार होगा। उस समय फौज ने चारों ओर से घेरा डाल दिया। लोरिक ने दुर्गा का स्मरण किया—'मां दुर्गा तुम्हारे बल और पौरुष के भरोसे मैं इस दारुण देश में चढ़ आया। मैया, यदि आपने मेरा साथ छोड़ दिया तो अगोरी में मेरा मस्तक चला जायगा। यदि इस रण में आपने विजय करा दी तो मैं आपकी पूरी-पूरी सेवा करूँगा। बकरा और भेड़ की क्या गिनती है? मैं पचास भैंसों को काटूंगा। सवा लाख मन का हवन तुम्हारे स्थान पर करूँगा। दुर्गा, आप प्रकट हो जातीं तो अगोरी में दो हाथ तलवारें चलतीं। उस समय दुर्गा प्रकट हो गयीं। वह लोरिक के दाहिने, बायें नाचने लगीं। अहीर को संतोष हुआ। उसने बिजली की तलवार फेंकनी शुरू की। सन सन कर तलवार चलने लगी। अब दुर्गा का हाल सुनिये। उन्होंने चील का रूप धारण किया। चंगुल में तलवार पकड़ी फिर लोरिक को दिया। कहा—ऐ मेरे उपासक प्रिय लोरिक, इसको रखो। मैं अगोरी में तुम्हारी जीत करा दूँगी। उस समय कट कट कर चलने लगे। सन सन करती हुई तलवारें चलने लगीं। गोलियों की बौछार होने लगी। गोले बरसने लगे। दुर्गा जीर-खेतार पर प्रकट हो गयी। अहीर के ऊपर अपना आंचल फैला दिया। गोलियां आंचल से गिर-गिर कर धरती पर आने लगीं। दुर्गा ने ऐसी शक्ति लगा दी कि शत्रु के मोर्चे फेल हो गये। तीर और बारूद लगी हुई तोपें ठण्डी पड़ गयीं। अब न तो गोली और बारूद ही चल रहे हैं और न रण में ही कुछ हो रहा है। तब अहीर लोरिक ने कहा—ऐ सूबा, सुनो, मेरी बात मानो। मैंने तुम्हारा पक्का वार संभाल लिया तुम ज़रा मेरा कच्चा हमला संभालो। (म्यान फेंका-फेंकी) लोरिक ने अपना म्यान फेंका तथा दस्तगी तलवार तान ली। वह चार अंगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज़ आकाश में गूंजने लगी नीचे दावानल फैल गया। ऊपर एक पोरसा तक लहरें फैलने लगी। सूबा की पलकें ऊपर उठीं। लोरिक की तलवार उसकी गर्दन से हो कर निकल गयी। वह पूर्व को काटती हुई पश्चिम चली गयी। फिर पश्चिम से दक्षिण चली गयी। जैसे कोईरी का कोड़ार फटता है वैसे अहीर का पुत्र सबको काट रहा है। उसने फौजों को लात से मारी। वहाँ खून की धारा बह चली। सारा लहू और पानी सोन नदी की धारा के साथ

बहा जा रहा है। अब वहाँ का हाल सुनिये। साँवर कोली के घाट पर थे। उन्होंने वहाँ से तीर चलाना शुरू किया। तीर अगोरी चला जा रहा था। दो दो सौ सिर काटते हुए तीर मंजरी की पालकी के पास गिरा। मंजरी बाहर निकली और तीर रोकने लगी। तीर साँप हो कर फुंफकारने लगा। उस पर लोरिक की नजर पड़ी। उसने कहा, ऐ मेरी विवाहिता सुनो। मेरी बात मानो। वह तीर तुम्हारे भसुर का है। मेरी सहायता के लिए भइया ने वह बाण मारा है। तुम उस तीर को मत छुओ। वह संवरू का तीर है। अब नगर अगोरी का सुनिये। सूबा मोलागत रोने लगा। उसकी सारी सेना रोने लगी। राजा ने कहा—मुझसे न तो अगोरी का राज्य छोड़ा जा रहा है और न मंजरी छोड़ी जा रही है। मैंने बचपन से ही इस पक्षी को जिलाया है। उसको भिगो कर चने की दाल दी है। भाई न जाने यह कहाँ का परदेशी चढ़ आया है तथा मेरी सुग्गी को उड़ाये लिये जा रहा है। अगोरी में ऐसा कोई मर्द नहीं है जो खेत पर उसे मारता तथा डोली को किले में पहुँचा देता। मैं मंजरी के साथ रनिवास भोग करता। मोलागत ने ऐसा कहा तो मन्त्री ने उत्तर दिया। हे राजा, हे महाराजा। मेरी बात सुनिये। मेरी बात मानिये। आप सात हथिनियों को भेज दीजिए उनके आगे आगे 'इनरावत' (ऐरावत) हाथी को भेजिये। उसके सूंड़ में लोहे का मूसल रख दीजिए। वह जाकर अहीर को घेर कर मार डालेगा। उसकी हस्ती ही क्या है ? हाथी अहीर को मार डालेगा और हर दिन का झगड़ा मिट जायगा।

[सुमिरन—गायक कहता है कि हे राम मैं रामायण कह रहा था मेरे हृदय में कैसे भूल पड़ गयी। तुम संगी और समवयस्कों को मत भूलो। माँ दुर्गा को भी मत भूलो।]

अगोरी का राजा विचार करने लगा। चुगुली करने वालों ने उसे समझाया अहीर मारने से नहीं मरेगा और न तो अग्नि की धार पर वह जल ही सकेगा। तुम सातों हथिनियों को भेज दो।

भावार्थ—(३९०१—४२००)

उनके सूंड़ में लोहे का मूसल डाल दो वे जीर और खेतार पर जायँगी तथा अहीर को घेर कर मार डालेंगी। रोज का झगड़ा मिट जायगा। उस दिन वहाँ से हथिनियाँ चलीं। सूवा का मन उदास हो गया। हथिनियों के सूंड़ में मूसल रखवा दिया गया। ऐरावत (इनरावत) हाथी भी वहाँ से चला और वह आकाश छूने लगा लोरिक की नजर उस पर पड़ी। वह नम्रतापूर्वक बोला। ऐ मेरी विवाहिता सुनो। यहाँ मेरा कहना मानो। इस जीर के खेतार पर पाँच पैरों वाला कौन सा जानवर आ रहा है ? मंजरी ने पर्दा उठा कर आँख उलट कर देखा। फिर नम्रतापूर्वक कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट सुनो। अभी तक तो किसी प्रकार तुम्हारा जीवन बचा रहा, पर अब तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी। राजा की

सात हथिनियाँ थीं। वे जीर खेतार पर घेरा डालने आ रही हैं। आगे आगे ऐरावत (इनरावत) हाथी आ रहा है। वह हमारी जान ले लेगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। उस समय भादों का वन निर्जन हो रहा था, शून्य हो रहा था। फाल्गुनी वृक्ष (मेंहुड़) लाल हो रहा था। मंजरी ने कहा—"ऐ स्वामी तुम वहाँ भाग जाओ। तुम व्यर्थ अपना प्राण त्याग रहे हो। गाँठ की पूँजी लगा कर तुम मुझसे भी सुन्दर स्त्री खरीद सकते हो। मेरी जैसी अधम के लिए तुम अपना अल्हड़ प्राण क्यों त्याग रहे हो? जिस माँ का तुम्हारे जैसा लाल युद्ध में मारा जायगा वह हीरे का कण खा कर आत्मघात कर लेगी।" मंजरी इस प्रकार कह रही है। अहीर वहाँ पल्थी मारकर बैठ गया। पल्थी पर उसने तलवार रख ली। तब तक हथिनियाँ वहाँ पहुँच गयीं। मंजरी डोली से बाहर आयी। ऐरावत हाथी का पैर पकड़ लिया और उससे कहने लगी—ऐ इनरावत हाथी, सुनो—सतयुग में हम तुम बहनें थीं। तुम मेरी ज्येष्ठ बहन थी। हम लोगों का जीवन बदल गया। ऐ बहन, तुमको हाथी का जन्म मिला। मुझे मनुष्य का जन्म मिल गया। ये तुम्हारे बहनोई हैं। तुम उसको कैसे छू सकोगे। तुम अपने छोटे बहनोई को कैसे मारोगे। मेरा सिन्दूर कैसे बिगाड़ोगे? इनरावत हाथी शांतचित्त से मंजरी की बातें कान खोल कर सुनने लगा, तथा सोचने लगा।

मंजरी ठीक कह रही है। सतयुग में हम दोनों बहनें थीं। एक ही पीठ से हमारा जन्म हुआ था। कठिन समय आया। हम लोगों का जीवन बदल गया। मंजरी को आदमी का जन्म मिला मुझे हाथी का जन्म मिला। मैं अपने छोटे बहनोई को नही स्पर्श करूँगा। ऐ मंजरी, तुम्हारा सिन्दूर नही बिगड़ेगा। हाथी इनरावत वहाँ से धूल उड़ाते हुए भागा। भाग कर किले और महल में पहुँच गया। अन्य हथिनियाँ भी भाग कर वहाँ पहुँच गयीं। उस समय राजा मोलागत बहुत क्रुद्ध हुआ। हाथी को फूहड़ गालियाँ देने लगा। दुष्ट, इनरावत सुनो। क्या अहीर तुम्हारा दामाद है कि तुमने उस मेरे शत्रु को खेत पर जीवित छोड़ दिया। उसको मारा नही। मैं हाथ में बन्दूक लेकर क्षण में तुम्हारा प्राण ले लूगा। चुगली करने वालों ने समझा कर कहा —राजा सुनिये। मेरी बात मानिये। हाथी और हथिनियों का शील ऐसे नहीं नष्ट होगा। तीनों भुवन और पृथ्वी भी लग जाय तो भी उनका शील नहीं टूटेगा। एक एक हथिनी को सात सात भट्ठी का मद पिलाइये। जब वे सभी नशे मे इतराने लगें तो उनके सूंड़ में मूसल रखवा दीजिए। तब वे जा कर अहीर को मार देगी। सारे दिनों का झगड़ा समाप्त हो जायगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। राजा ने भट्ठी जलवा दी। झूल और जंजीर मँगवा कर हथिनियों के पास रखवा दिया। 'दिलजरी' हथिनी को राजा ने बुलवाया। फिर महावत को बुलवाया। हाथियों को बोतल पर बोतल दारू पिलाये जाने लगे। एक एक हथिनी के पेट में सात सात भट्ठी का दारू चला गया। हथिनियाँ नशे में चूर हो गयीं। जब वे मदमत्त हो उठी, तब उनके सूंड़ पर मूसल रख

दिये गये। हथिनियाँ उन्मत्त हो कर जीर खेतार पर चलीं। लोरिक की नजर उन पर पड़ी। वह उठ कर तैयार हुआ। हाथ में बिजली की तलवार ली तथा अलग जाकर खड़ा हो गया। हथिनियों ने उसे घेर कर मूसल से मारना शुरू किया। भगवती धन्य है! दुर्गा धन्य हैं। उन्होंने लोरिक को सहायता दी। श्रेष्ठ लोरिक को लेकर यह आकाश में उड़ गयीं। इधर हथिनियों के मूसल छूटने लगे। वे धरती में गिर गिर कर चूर होने लगे। घड़ी और पहर बीतते ही अहीर आगे आकर खड़ा हो गया। इनरावत हाथी अहीर की ओर बढ़ने लगा। जाकर लोरिक के ऊपर उसने अपना सूंड़ रख दिया और उसे आकाश की ओर झटक दिया। मां दुर्गा धन्य हैं, उन्होंने लोरिक को आँचल में लोक लिया। हथिनियों को ज़मीन पर गिरा दिया। उनका ताप बढ़ गया। उनकी आँखों पर पर्दा पड़ गया। वे नशे में चूर थीं। हथिनियों का दल वहाँ से भागा तथा सोन नदी की धारा में कूद गया। आगे आगे इनरावत हाथी तथा पीछे सात हथिनियाँ थीं। अब लोरिक का हाल देखिये। वह वहाँ से उछलते हुए किले के पास जाकर बैठ गया। वह मौके की तलाश करने लगा। इसी बीच इनरावत हाथी की गर्दन चमक उठी।

तब दुर्गा ने कहा—ऐ प्रिय लोरिक, ऐ बटुक (उपासक) तुम मेरी बात मानो हाथी प्राणों का थोड़ा ही स्पंदन शेष है। तुम तलवार चलाओ और हाथी को दो खंडों में विभाजित कर दो। लोरिक नदी के तट पर बैठा हुआ था तब तक इनरावत हाथी का सिर चमका। अहीर लोरिक ने बिजली की तलवार खींची। उसके चार अंगुल बाहर होते ही आकाश में आवाज गूंजने लगी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर से ऊपर लहर चमक उठी। हाथी की पलकें घूम गयीं। खड्ग उसकी गर्दन पर जा लगी। गर्दन आगे जाकर गिर पड़ी हाथी अभी खड़ा रह गया। तब अहीर वहाँ से उठ कर नदी के किनारे कूद गया तथा हाथी की पीठ पर सवार हो गया। उसकी पीठ पर तलवार चलाने लगा। उसी समय राजा मोलागत ने उसे देखा। वहाँ सेना बिलख रही थी। मोलागत ने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया है। अहीर इतने दिनों तक जीर पर रहा। एक इनरावत हाथी से आशा थी उसको भी किले और महल में अहीर ने मार डाला उसकी गर्दन धरती पर गिर पड़ी। उसके शरीर पर वह तलवार भांज रहा है।

अब वहाँ का हाल सुनिये। राजा मोलागत चांदनी पर अपना सिर पटक रहे थे। कह रहे थे मुझसे अगोरी का राज्य छोड़ा नहीं जा रहा है और न मंजरी ही मुझसे छूट रही है। हमने छोटी सी चिड़िया को जिलाया था। उसे भिगोकर चने की दाल दी थी। यह साला कहाँ का परदेशी चढ़ आया। यह मेरी चिड़िया को उड़ाये लिये जा रहा है। ऐसा कोई वीर नहीं है जो अहीर को खेत पर पटक कर मारता। किले में डोली को लाता तथा मैं मंजरी के साथ रनिवास भोग करता। विचार-विमर्श होने लगा। चुगली करने वालों ने उसके दिमाग में यह बात बैठा दी। ऐ राजा, ऐ महाराजा सुनिये। यहाँ हमारी बात मानिये। अहीर इस

प्रकार मारने से नहीं मरेगा न तो वह अग्नि में जल सकेगा। आप कोरा कागज मंगाइये, पत्र लिखिये तथा संदेश वाहकों से कोट-भदोखरी गांव भेजिये। आपका भांजा निरम्मल वहाँ का राजा है। यदि वह आता तो अहीर को मार देता और सारे दिनों का झगड़ा समाप्त हो जाता। राजा ने हाथ में कलम और दावात ली। पहले कुशल-मंगल लिखा फिर दुख का समाचार लिखा। अगोरी का राज्य उजड़ गया है, यहाँ संघर्ष छिड़ गया है। अगोरी का सारा धन अहीर (लोरिक) ने लूट लिया है। अगोरी की स्त्रियां बिना पुरुष के गली-गली में मारी-मारी फिर रही हैं। इतना लिखने के बाद मोलागत ने लिखा कि ऐ भैने, यदि तुम क्षत्रिय हो तो हे अमर, तुम ठहर पर का भोजन छोंड़ देना और अगोरी में आकर हाथ धोना। अन्न खाना गऊ के बराबर है तथा पानी पीना रुधिर पीने के बराबर है। अगोरी में आये बिना अन्न खाना तुम्हारे लिए हराम है। ऐसा लिखकर मोलागत ने धावन को पत्र देकर दौड़ा दिया। धावन ने पश्चिम का रास्ता लिया। वह रात दिन दौड़ता रहा। उसने कहीं पड़ाव नहीं डाला। भदोखरी गांव पहुँच कर उसने निरम्मल का घर पूछा। लोगों ने धावन को निरम्मल का घर बताया। धावन वहाँ पहुँच गया। निरम्मल प्रातः काल ही गौना कराकर आया था तथा स्वयं अखाड़े में गया था। धावन ने दरवाजे से निरम्मल को पुकारा। महल से एक बुढ़िया निकली। वह निरम्मल की मां थी। हाथ में सोने की छड़ी लेकर टेकती हुई वह बाहर निकली। उसने धावन से नम्रता-पूर्वक पूछा—भैया, तुम्हारा वतन कहाँ है ? तुम्हारा मूल-स्थान कहां है। ऐ परदेशी तुमने कहाँ से चढ़ाई की है। तुम निरम्मल, निरम्मल क्यों चिल्ला रहे हो। तुम्हारा मेरे बेटे से कैसे परिचय हुआ ? तब धावन ने कहा—मेरा वतन अगोरी में है। वही हमारा मूल स्थान है। मैंने कोट की चढ़ाई की है। यहाँ कोट भदोखरी में निरम्मल को पूछते हुए आया हूं। वे राजा कौन हैं ? तब बुढ़िया ने कहा—भइया अभी गौना कराकर आये हैं। दुलहिन को कोहबर में बैठा दिया है तथा मुझे अभिवादन कर स्वयं अखाड़ा भाग गये हैं। भइया धावन, तुम अखाड़े में चले जाओ। वहीं मेरा बेटा अखाड़े में लड़ रहा है। धावन वहाँ से चला—अखाड़े मे पहुँचा। वहाँ मां के एक-एक लाड़ले थे। एक से एक सुन्दर सरदार थे। वे जोड़-तोड़ के थे। निरम्मल की पहचान नहीं हो सकी। धावन घर लौट आया जहाँ निरम्मल की मां बैठी हुई थी। कहा—माता अखाड़े पर एक से एक लाल हैं। उनमें निरम्मल की पहचान कठिन है। मैं कैसे जानूं कि सरदार निरम्मल कौन है ? बुढ़िया ने कहा—

भावार्थ—(४२०१—४५००)

मेरा बेटा ऐसा वैसा नहीं है। वह देव का लाल (दैवी पुरुष) है। अभी उसने गौना कराया है। उसके मस्तक पर प्रखर तिलक है। अखाड़े में उसकी आंखों में काजल और सूरमा लगा हुआ होगा। निरम्मल की मां ने धावन से कहा—कि उसकी आँख में काजल तथा सूरमा लगा होगा। जब वह ओट में ताल ठोकेगा तो ऐसा प्रतीत होगा जैसे भादों में दैव घहरा रहा हो। धावन लौटकर फिर अखाड़े पर

चला गया। अखाड़े में दो जोड़ों की लड़ाई हो रही थी। राजा निरम्मल ने उस समय ऐसा दाव मारा कि उसका जोड़ अखाड़े में भहराकर गिर गया। वीर निरम्मल वहाँ से ओट में जाकर ताल ठोकने लगा। ओठ घहराने लगा। धावन दौड़कर वहाँ पहुँच गया। तथा निरम्मल के हाथ में पत्र दे दिया। झुक कर धावन ने उन्हें प्रणाम किया। निरम्मल ने उन्हें आशीर्वाद दिया। भइया पूर्ण रूप से अमर रहो। तुम लाख वर्ष जीवित रहो। जैसे गंगा का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। तुम्हारा वतन कहाँ है ? तुम्हारा मूल-स्थान कहाँ है ? ऐ परदेशी, तुमने कहाँ चढ़ाई की है। किसको खोजते इस अखाड़े पर चले आये। धावन ने कहा—अगोरी मेरा वतन है। अगोरी ही मेरा मूल-स्थान है। मैंने कोट की चढ़ाई की है। मैं निरम्मल सरदार की खोज में हूँ। अगोरी से पत्र आया है वह पत्र मैं उनको दूँगा। राजा निरम्मल ने अपने हाथ पत्र लिया वहाँ से घर आया। वह पत्र पढ़ने लगा। अगोरी उजड़ चुकी है। वहाँ संघर्ष छिड़ गया है। स्त्रियाँ वहाँ बिना पुरुष के गली-गली मारे-मारे फिर रही हैं। अगोरी में कोई रास्ता रह नहीं गया है। भैने यदि तुम जाति के क्षत्रिय हो तो पत्र देखते ही घोड़ा कस देना। पत्र में यह भी लिखा था कि पत्र देखते ही अन्न को गाय खाने के बराबर समझना। पानी पीने को रुधिर पीने के बराबर समझना। भैने अगोरी आकर ही तुम जल ग्रहण करना। निरम्मल पत्र पढ़ते-पढ़ते किले में प्रविष्ट हुए। उन्होंने झटपट अपनी पवनी घोड़ी को कसा तथा बाहर निकाल कर बांध दिया। स्वयं कमरे में प्रवेश कर गये। अगरखा पहना। पैर में 'त्योरी' और 'तमाम' चढ़ा लिया, दिल्ली साही जूता पहना। अस्त्र-शस्त्रों के स्थान पर गये जहाँ उनकी सांग गड़ी हुई थी। जिस समय निरम्मल ने सांग उठायी। उस समय पृथ्वी में भूकम्प आ गया। कोट के सब लोग भयभीत हो उठे। लोग कहने लगे—राजा निरम्मल अमर है। उसने अपनी अमर सांग उठा ली है जिससे पृथ्वी में भूकम्प आ गया है। किसकी मृत्यु निकट आ गयी है ? आज वीर ने आक्रमण की तैयारी कर ली है। निरम्मल द्वार पर आये। फिर नम्रतापूर्वक बोले—लड़की, कल ही तो तुम्हारा गौना सम्पन्न हुआ है। पत्नी ने आंगन से निकल कर पवनी घोड़ी की लगाम पकड़ लिया। वह रानी जयकुंडल धरती पर मस्तक पीटने लगी तथा पति निरम्मल से कहने लगी ऐ मेरे मालिक सुनो। ऐ राजा तुमने गाड़ी हुई सांग हाथ में ग्रहण कर ली है। आज किसकी मृत्यु निकट आयी है ? राजा दइयवा की लड़की जो सदैव घर के भीतर रही थी, द्वार पर चली आयी। पवनी घोड़ी का लगाम पकड़ा और कहने लगी—स्वामी, मेरी बात मानिये। मुझे यहाँ लाकर तूने खूंटे में बछिया की तरह बांध दिया। स्वयं रण में चले जा रहे हो। मुझे कष्ट क्यों दे रहे हो ? मैं कोट के गाँव में कैसे रहूँगी ? तब राजा निरम्मल बोले—विवाहिता तुम मेरी बात मानो। तुम कोट भदोखरी में रहो। मैं अगोरी जा रहा हूँ। जब तक वहाँ झगड़ा तय नहीं हो जाता तब तक मैं घर लौट कर वापस नहीं आऊँगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये । रानी जयकुंडल ने घोड़े का लगाम नहीं छोड़ा । वह रो-रोकर कहने लगी । सैंया, तुम मेरे हाथ की दो कौर खिचड़ी खा लो। निरम्मल ने कहा—'विवाहिता, मेरी बात सुनो । मामा मेरे शत्रु हो गये हैं । अपने पत्र में उन्होंने शपथ दिलायी है कि मैं अन्न नहीं ग्रहण करूँ ।' मेरे लिए अन्न हराम' है । पत्र में लिखी बात को मैं कैसे टाल सकता हूँ ? मैं तुम्हारी खिचड़ी कैसे खा सकता हूँ ? जयकुंडल रो रही थी और कह रही थी कि तुमने मुझे कष्ट में क्यों डाला ? राजा निरम्मल ने कहा मैं तुम्हें भविष्य की सारी सूचनाएँ दूँगा । वह कुम्हार के घर गये । वहाँ से एक कच्चा घड़ा उठा लिया । कच्चा सूत लाये तथा उसे पत्नी के हाथ में बांध दिया । कहा - ऐ मेरी विवाहिता,—तुम रोज़ प्रात: काल उठना तथा कूद फांद कर कुंए पर जाना । जब तक मैं जीवित रहूँगा तुम कुएँ का जल खींच कर पानी पीओगी । जिस दिन मैं अगोरी में जूझ जाऊँगा उस दिन तुम्हारे हाथ का सूत्र टूट जायगा । पानी छूते ही घड़ा गल जायगा । तब तुम समझ लेना कि मेरा पति युद्ध में मारा गया । निरम्मल ने कहा मैं तुम्हें एक और संकेत देता हूँ । उसने एक बर्तन में 'कल्गेर' गाय का दूध भर दिया । उसमें ऊपर से तुलसी के पत्ते छोड़ दिये । कहा- ऐ विवाहिता, रोज स्नान कर तुम बर्तन खोल कर देखना । जिस दिन तक मैं अगोरी में जीवित रहूँगा उस दिन तक यह तुम्हारा दूध रहेगा, उसमें तुलसी की पत्तियाँ लहलहाती रहेंगी । जिस दिन पत्तियां कुम्हलाने लगें समझना कि कुछ गड़बड़ हो गया है । तब दूध खून के समान हो जायगा तथा तुलसी की पत्तियां कुम्हला जायेंगी । फिर तुम समझ लेना कि सरदार निरम्मल युद्ध में जूझ गया है, मारा गया है । निरम्मल ने लगाम पकड़ी तथा हाथ में हजारी सांग ले ली । घोड़ी का आसन हुआ । वह उड़ी और आकाश छूने लगी । हवा से बातें करने लगी । घड़ी भर में घोड़ी अगोरी पहुँच गयी । वहां सूबा मोलागत की कचहरी लगी हुई थी । घोड़ी वहां जाकर चू गयी । मामा मोलागत उठे तथा पवनी घोड़ी का बल्गा (लगाम) पकड़ लिया । निरम्मल ने झुक कर प्रणाम किया । उन्होंने आशीर्वाद दिया—तुम पूर्ण रूप से अमर रहो । भांजे, लाख साल तक जीयो । तुम्हें सारे संसार की आयु प्राप्त हो । उन्होंने निरम्मल से कहा—अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है । स्त्रियां बिना पुरुष के हो गयी हैं तथा गली-गली में अनाथ घूम रही हैं । जब निरम्मल ने सब कुछ देखा तो उसने दांतों तले अंगुली दबायी । राजा मोलागत ने उनसे कहा—भैने, तुम मेरी बात सुनो । पान का बीड़ा लगा हुआ है । मुख मे बीड़ा रख लो । खेत पर शत्रु बैठा हुआ है । उसे पटक कर मार डालो । भैने तुम मंजरी की डोली लाओ ताकि मैं उसके साथ रनिवास भोग करूँ । जब मोलागत ने इतनी बात कही तो निरम्मल ने पान का लगा हुआ बीड़ा मुंह में रख लिया । कन्धे पर उन्होंने हजारी सांग रख ली तथा सीढ़ी से नीचे उतरने लगे । बायीं ओर सुइया चिड़िया बोलने लगी । निरम्मल को तब शंका होने लगी । तब उसने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा आपने ललाट

में क्या लिख दिया। जिस समय राजा निरम्मल आगे बड़े तथा किले के उत्तर गये, सुइया बायें हाथ की ओर बोलने लगी। उसे शंका हुई कि मैंने घर में विवाहिता की बात टाल दी। बड़ा खराब आगम (भविष्य) दिखाई पड़ता है। सूबा को खटका पैदा हो गया। वह किले के बाहर गया तो लोरिक पालकी की रखवाली कर रहा था। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। कहा—विवाहिता तुम मेरी बात सुनो। किले से एक पुरुष आ रहा है। वह हमारा शत्रु है। मंजरी ने रेशमी पर्दा उलट दिया। पंचरंगा पर्दा ढक दिया। वह गर्दन निकाल कर सरदार निरम्मल को देखने लगी। लोरिक से कहने लगी—ऐ मेरे स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, अभी तक किसी न किसी प्रकार ज़िन्दगी बची रही। अब तुम्हारी जान नहीं बचेगी। यह अमर सूबा निरम्मल है। इसके जोड़ का व्यक्ति खोजने पर भी नहीं मिलेगा। उसकी मृत्यु नहीं लिखी है। ब्रह्मा से उसने मृत्यु का भय दूर करा लिया है। इसी बीच निरम्मल लोरिक के पास आ गया। लोरिक ने उसे प्रणाम किया। अमर निरम्मल ने उसे आशीर्वाद दिया। तुम पूर्ण रूप से अमर रहो। लाख साल तक जीयो। सारे संसार की आयु तुम्हारी जांघ और शरीर में लगे।

अब वहां का हाल देखिये। निरम्मल ने कहा—मामा पगला गये हैं। इन्हें तरुण युवती का ख्याल सता रहा है। उसने लोरिक से कहा—तुम डोली छोड़ दो। मैं मंजरी को ले जाऊँ। रनिवास भोग करें। वीर लोरिक ने कहा—निरम्मल मेरी बात मानो—मैंने चोरी नहीं की है न तो अगोरी में मैंने सेंध मारी है। अपनी गांठ की पूंजी लगाकर ग्वाल जाति में शादी की है। इसमें राजा की क्या क्षति हुई है ? उन्होंने पहले ही झगड़ा शुरू कर दिया। अहीर की बात सुन कर निरम्मल ने समझा कि अहीर उचित बात कह रहा है। सचमुच अहीर का कोई कसूर नहीं है। सभी कसूर मामा का है। मामा अगोरी के राजा हैं, प्रजा यदि शादी करती है तो उनकी रसद क्या घटती है ? किले पर वह बैठे रहते। उनकी प्रतिष्ठा बची रहती। अहीर की बारात आ जाती मामा हाथी घोड़ा सजा कर मिलान कर लेते। मामा, तुम विपत्ति में कैसे पड़ते ? तुम लोरिक को पत्र लिख कर भेज देते। लोरिक अपने घर खाता, अगोरी में आकर हाथ धोता। अहीर जहां-जहां जाता मामा की बड़ाई करता। निरम्मल ऐसा सोचते हुए वहां खड़ा था। कह रहा था कि अहीर का कोई अपराध नहीं है। मामा का क्या नुकसान हुआ है। लोरिक ने अपनी जाति में शादी की है, फिर उसने रुपया खर्च किया है। वह अपना गौना ले जा रहा है। मामा को झगड़ा करने की क्या पड़ी थी। सभी कसूर मामा का है।

भावार्थ—(४५०१—४८००)

निरम्मल कन्धे पर सांग धारण किये हुए खड़ा था। वह चांदनी पर लौट गया तथा मामा मोलागत से बातचीत करने लगा। मामा, क्या कहूँ और क्या नही कहूँ। मुझसे कहा नही जाता।

अब वहां का हाल सुनिये। निरम्मल ने कहा—ऐ मामा, तुमने अहीर से

बेकार झगड़ा मोल ले लिया। झगड़े का क्या प्रयोजन था। तुमने अपना राज्य उजड़वा दिया। स्त्रियाँ बिना पुरुष के अगोरी में मारे-मारे फिर रही हैं। मामा यदि आप समझते कि महर तुम्हारी प्रजा है तो वह शान-शौकत से विवाह करता। यदि उसकी रसद कम हो जाती तो तुम रसद उसको किले में पहुँचवा देते। गउरा के लोग खाते और तुम्हारी बड़ाई करते। ऐ मामा, तुम पसीना गिराते तो लोरिक अपना खून तुम्हारे लिये बहाता। राजा मोलागत ने यह बात सुनी तो जल कर राख हो गया। ऐ भांजे, तुम क्षत्रिय के घर व्यर्थ उत्पन्न हुए। तुमने खेत पर मेरे दुश्मन को छोड़ दिया। तुसने वंश डुबा दिया। आज तुमने क्षत्रिय होकर अहीर का पक्ष लिया। वह अपने हाथ में तलवार पकड़े हुए है।

मोलागत ने कहा—तुम व्यर्थ क्षत्रिय के घर उत्पन्न हुए। तुम्हें चमार होना चाहिये था। तुम दाँत से कीलों को निकालते। दुकान की रखवाली करते बैठे रहते। तुमने क्षत्रिय होकर मेरा पक्ष नहीं लिया, इसीलिए अहीर तलवार ग्रहण किये हुए है। निरम्मल ने जब यह बात सुनी तो उसकी आँखों से आसुओं की धारा बह निकली। मामा, अपने घर बुला कर तुम मुझे गोली मार रहे हो। मैंने घर पर अपनी विवाहिता का कहना टाल दिया। रोकर निरम्मल ने हजारी सांग उठा ली। उसे कंधे पर रख कर वह अगोरी लौट चला जहाँ पर अहीर बैठा हुआ था। वह अपनी पल्थी पर तलवार रखे हुए था। राजा निरम्मल सीधे अहीर के पास पहुँचा। और कहा—ऐ लोरिक, तुम मेरा कहना मानो। मेरा बूढ़ा मामा—विचलित हो गया है। उसको तरुण स्त्री की चिन्ता सवार है। तुम मंजरी की डोली छोड़ दो। मैं उसे किले में रनिवास भोगने के लिए ले जाऊँगा। तब लोरिक ने निरम्मल से कहा—देखो, मैंने चोरी नहीं की है और न तो मैंने यहाँ सेंध ही मारी है। अपनी गांठ से धन लगा कर मैं अपनी जाति और कबीले में विवाह किया है। इसमें सूबा मोलागत का कोई नुकसान नहीं हुआ है। उन्होंने झगड़ा व्यर्थ में लगा दिया है। मेरा कोई अपराध नहीं है। सारा कसूर तुम्हारे मामा का है। निरम्मल ने कहा कि मंजरी को छोड़ दो। वह किले में जा कर रनिवास भोग करेगी। इस पर बीर लोरिक क्रुद्ध हुआ। वह जल कर खाक हो गया। कहा—यदि तुम्हें मामा का बहुत मोह है तो अपनी बहन और बिटिया निकाल लाओ तथा किले में उसे चढ़ा ले जाओ वे सब रनिवास का भोग करेंगी। लोरिक की बात सुन कर क्षत्रिय क्रोध में जल उठा। बातों बातों में झगड़ा शुरू हो गया। दोनों खेतार पर पैंतरेबाजी करने लगे। भादों में जैसे भैंसे आवाज करते हैं वैसे ही वहाँ कोलाहल शुरू हो गया। दोनों एक दूसरे पर आक्रमण करने के लिए उतारू हो गये। वीर लोरिक ने कहा—ऐ निरम्मल तुम मेरी बात मानो। मैं पहले चोट नहीं करूँगा मेरे गुरु की शपथ है। पहले वार करना मेरे लिए अपराध है। अब क्षत्रिय का तमाशा देखिये। उसने हजारी सांग खींची तथा अहीर लोरिक पर लक्ष्य साध कर मारा।

भगवती धन्य हैं, दुर्गा जो आदि काल से ही पूज्य हैं, अहीर को लेकर आकाश

में कूद गयीं । हजारी सांग गिर कर निरस्त हो गयी । अहीर आकर आगे खड़ा हो गया । सूबा नजर उठाकर उसे देखने लगा । उसने दूसरी बार हमला किया । अहीर के पेट में लक्ष्य कर प्रहार किया पर बीर लोरिक दाव खेल गया । वह बायें से तिरछा हो गया । हजारी साँग फिर गिर गयो । सूबा निरम्मल झंखने लगा, वह दाँतों तले अंगुली काटने लगा । कहने लगा —हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने तकदीर में क्या लिख दिया ? मेरे दो आक्रमण निष्फल हो गए । अब तो दैव ही मेरा बेड़ा पार करेंगे । हे मनियाँ भगवती, आप मेरी नज़र पर सवार होइये । भगवती वहाँ प्रकट हुईं । सूबा की नज़र पर बैठ गयीं । जब उसने क्रोधपूर्वक देखा तो सामने माँ दुर्गा खड़ी थीं । वह दुर्गा रत्नजटित घाघरा पहने हुए थीं तथा लोरिक की बाँह पर नाच रही थीं । तब वीर निरम्मल ने कहा —'ऐ अहीर, मैं क्या कहूँ और क्या न कहूँ ? मुझसे कुछ कहा नहीं जाता । भाई देवो दुर्गा प्रकट हो गई है नहीं तो मैं तेरा पुरुषत्व देखता ।' अब अहीर के मन में विकार उत्पन्न हो गया । उसने ओछी बाते शुरू कर दीं । यदि मेरी जाँघ में शक्ति होगी । यदि मेरी भुजाओं में पौरुष होगा तो बिना भगवती की सहायता के मैं खेत पर तुम्हारा पौरुष देखूँगा ।

दुर्गा ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने उसका साथ छोड़ दिया । इधर निरम्मल ने हजारी साँग खीची तथा अहीर को लक्ष्य साध कर मारा । अहीर ने उसे अपने ओड़न से संभाला । ओड़न गिर पड़ा । अहीर के कंधे में दर्द प्रवेश कर गया, आँख के सामने पीलापन छा गया । अहीर खड़े-खड़े गिर पडा । उसके प्राण निकल गये । वह खड्ग पर लुढक गया । राजा निरम्मल वहाँ से चलने लगा । किले का रास्ता पकड़ा ।

अब दुर्गा का हाल सुनिये । भवानी वहा से उठी । पालकी के पास जाकर खड़ी हो गयी । कहने लगी-- मंजरी सुनो । मेरी बात मानो । अहीर की लाश बिगड़ने न पावे । इसकी रखवाली करो । दिन में इसको कौवे या कुत्ते नही देखने पावें । रात में दुम कटे हुए सियार इसको देखने न पावें । मैं पंडित के पास ठीक समय विचरवाने के लिए जा रही हूँ । अगोरी का सूबा इसे ले जाने के लिए आएगा । पालकी यही रह जाएगी क्योंकि यहाँ भद्रा होगा । देवी वहाँ से उड़ी तथा मोहनी पंडित के घर गयीं ।

अब इधर का हाल सुनिये । निरम्मल अगोरी की चाँदनी पर चढ़ता चला जा रहा है । जाकर उसने मामा से हाथ मिलाया तथा सारी बातें समझाकर कही । अगोरी के सूबा मोलागत के सिपाही छूटे । नौकर-चाकर पंडित के दरबार में पहुँचे । राजा ने आज्ञा दी थी —जाकर पडित को पुकारो और कहो कि मोहनी पंडित पोथी पत्रा साथ लेकर आवें और बतावें की मंजरी के लिए कब की सायत है ।

सुमिरन-- [गायक यहाँ राम का नाम स्मरण कर रहा है और कह रहा है—तुम राम का गुण गान करो । जिन्होंने राम का नाम

स्मरण किया तथा तुम्हारा नाम भजा उसका क्षण में दुख का भार हल्का हो जायगा।]

अब वहाँ का हाल सुनिए। मोहनी पडित राजा मोलागत के दरबार मे चले आए। मुहूर्त देखा। शुभ घडी नही मिली। देवी ने भद्रा डाल दिया है। तीन दिन तीन रात तक कोई सायत नही है। चौथे दिन दस बजे दिन चढने शुभ घड़ी होगी। उसी समय मजरी की डोली उठेगी। इधर मजरी लोरिक की लाश की देख-भाल कर रही है। दिन मे वह कौवे तथा सियार हाँक रही है तथा रात मे पूँछ कटे सियारो को देख रही है। दुर्गा स्वय इन्द्रासन चली गयी। सोने चाँदी का इन्द्रासन बना हुआ था। उसको दुर्गा ने फूंक दिया। कोयला और राख होकर इन्द्रासन गिरने लगा। ब्रह्मा का भगवा जलने लगा। ब्रह्माइन के रेशमी वस्त्र जलने लगे। देवी दुर्गा ने नीम के पेड पर हिंडोला डाल दिया तथा झूल झूलकर मौज म गीत गाने लगी। वहाँ ब्रह्मा और ब्रह्मानी पधारी। ब्रह्मानी (ब्रह्माइन) ने कहा— ननद देखा, यह तुम्हारे भाई हैं। तुम अपनी लपटो को बटोर लो। तब भगवती बोल उठी। हम लोग सात बहिने थी। ब्रह्मा ने हम सबको मृत्यु लोक मे उतार दिया। मुझे एक अहीर बटुक (उपासक) के रूप म मिला। वह उपासक खेत पर लडकर मर गया है। उस मरे उपासक को तुम अमर कर दो। तब मै अपनी लहर बटोरूँगी।

ब्रह्माइन ने कहा—ननद मेरी बात मानो। मे निरम्मल की आयु घटवाऊँगी। तुम्हारे उपासक लोरिक के हाथ मे आयु मै बढवा दूँगी पर तुम अपनी लहर बटोरो। देवी भगवती, फिर ब्रह्मा की कचहरी मे गयी। ब्रह्मा ने मृत्यु का लेखा जोखा लिया तो निरम्मल की मृत्यु नही लिखी थी। सर्वत्र ढूँढा पर उसकी मृत्यु का लेख कही दिखाई नही पडा। उन्होने दुर्गा से कहा—तुम्हारा लोरिक उठेगा। उसका मस्तक छै बार कटेगा। छै बार उसका सिर तीर्थयात्रा करेगा तथा लाश पतरा बदलेगी। सातवी बार जब लोरिक की गर्दन कटेगी तब इन्द्रपुरी मे आयेगी। उसकी गर्दन से जितनी खून की बूदे गिरगी उतने निरम्मल तैयार हो जाएँगे। तब एक दो लोरिक क्या पचास लोरिक भी लग जाएँगे तो निरम्मल मारा नही जा सकेगा। अब दुर्गा वहाँ से जीर-खेतार पर आ गयी। मजरी से दुर्गा ने कहा—तुम मेरी बात सुनो। इस बात को या तो तुम जानोगी या मे जानूगी। लोरिक इस रहस्य को जानने न पाये। उन्होने कानी अगुली काटकर लोरिक के शरीर पर छिडका। अहीर तब अगडाई लेकर उठा। नम्रतापूर्वक बोला - ऐ देवी दुर्गा सुनिए।

भावार्थ--(४८०१--५१००)

मुझे ऐसी नीद आ गयी थी कि इस जीर-खेतार पर मैं गाडी निन्द्रा में सो गया। तब मइया दुर्गा ने कहा—ऐ बटुक (उपासक) तुम ऐसी नीद मे सोये थे कि तुम्हारा शत्रु ही वैसी नीद सोये। अब वहाँ का हाल सुनिए। पण्डित का पत्रा आया, तथा डोले का मुहूर्त निकट आया। सूबा वहाँ बैठकर मुहूर्त की स्थिति देख रहे थे। उन्होने मोहनियाँ पण्डित से पूछा कि विवाहिता की सायत कितने दिनो मे निकलेगी

तुम मुझे इसके बारे में बाताओ। पंडित ने कहा तीन दिन और तीन रात तक भद्रा है जब चौथे दिन में सात घड़ी चढ़ जाय तब मंजरी के लिए शुभ मुहूर्त निकलेगा। शुभ घडी आ गयी। बत्तीस कहार डोला लेकर चले। सूबा मोलागत ने हाथी का हौदा कसवा लिया तथा दस पाँच आदमियों को साथ लेकर जीर तथा खेतार पर चले। डोली कुछ दूरी पर थी। वहाँ लोरिक को बैठे हुए देखकर राजा मोलागत भयभीत हो गया। महावत से कहा—हाथी को भाला पेल दो। मैं किले और अपने भवन में भागूंगा। मेरा भैने मेरा शत्रु हो गया है। उसने मेरा प्राण ले लिया। मुझसे उसने कहा कि मैंने शत्रु को खेत पर मार दिया है, मैं जाकर मंजरी की डांड़ी उठवा लाऊँ। यहाँ तो अहीर बैठकर डोली की रखवाली कर रहा है! किसी की मौत निकट आ गयी है। हाथी किले के आँगन में चला आया। मोलागत हाथी से उतरा तथा चाँदनी पर गया। वहाँ उसका भैने निरम्मल बैठा हुआ था। मोलागत रो रो कर कहने लगा—भैने मैं तुम्हारा कब का दुश्मन हूँ। आज तो तुम मेरी जान ही मरवा देते। तुमने मुझसे कहा कि मैंने दुश्मन को खेत पर मार डाला है। वह तो बैठकर डोली की रखवाली कर रहा है। राजा निरम्मल ने जब यह बात सुनी तो वह दाँतों तले अंगुली दबाने लगा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? मैंने घर पर विवाहिता का कहना टाल दिया। यह कैसी मृत्यु दिखाई पड़ रही है? मरा हुआ मुर्दा उठकर बैठ गया है। बुरा दिन निकट आ गया है। पुनः वीर ने हजारी साँग ली और वह किले की सीढ़ी से नीचे उतर गया, सीधे खेत की ओर भागा।

इधर वीर लोरिक ने मंजरी से कहा—मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। यह निरम्मल जो पहले आया था, वह फिर यहाँ आ रहा है। लोरिक ने उससे कहा—संगी, तुम खेत पर आ जाओ। मैंने तुम्हारे तीन आक्रमण संभाले हैं। मैंने तुम्हारी चोटें सह ली हैं। संगी, अब तुम मेरा आक्रमण संभालो। अब कचाकच तलवारें चलेंगी। वीर लोरिक उठा और निरम्मल को ललकारने लगा संगी, 'अवसर आया, अवसर आया' तुम इस प्रकार ललकार रहे थे। मैंने तुम्हारा आक्रमण बर्दाश्त कर लिया अब तुम मेरा आक्रमण बर्दाश्त करो। उसने म्यान को फेंक दिया और दस्तगी तलवार निकाली। चार अंगुल बाहर होते ही उसकी आवाज़ आसमान मे जाने लगी। धरती पर दावानल फैल गया। पोरसे भर ऊपर लहर फैल गयी। निरम्मल की पलकें घूम गयीं। लोरिक की तलवार उसकी गर्दन में घुस गयी। निरम्मल की गर्दन उड़ कर बदरी आश्रम चलीं गयी फिर समुद्र में जाकर गोते लगाने लगी। सभी देवताओं से भेंट कर गर्दन उड़ी और अगोरी में आकर निरम्मल के धड़ पर बैठ गयो। लोरिक ने फिर उसकी गर्दन काटी। गर्दन ठाकुर द्वारा गयी, देवताओं से भेंटकर उसने फिर समुद्र में गोता लगाया और अगोरी आ गयी। अहीर जमकर कूदा। तीसरी बार कटी हुई गर्दन फिर उड़ी। वह काशी विश्वेश्वर में गयी। गंगा में गोता लगाया देवताओं से भेंट कर गर्दन फिर निरम्मल के धड़ पर बैठ गयी।

अहीर ने कूदकर फिर हमला किया। इस बार गर्दन निकल कर गया में चली गयी फिर गंगा में गोता मारा, देवताओं से भेंट की, और वापस आ गयी। इधर निरम्मल का धड़ पैंतरा करने लगा और गर्दन से जुड़ गया। लोरिक ने पाँचवीं बार चोट की। इस बार गर्दन उड़ कर इन्द्रपुरी में आ गयी जहाँ ब्रह्मा का दरबार लगा हुआ है। गर्दन ने ब्रह्मा से कहा- तुमने कल ही मुझे अमर बनाकर भेजा। आज तुमने यह मेरी क्या दशा कर दी ? ब्रह्मा ने अपना मुँह फेर लिया। गर्दन भी उधर चली गयी। पूछा—तुमने मेरे भाग्य में विपत्ति क्यों लिख दी ? ब्रह्मा ने नम्रता पूर्वक कहा—ऐ निरम्मल की गर्दन, तुम सुनो। एक बार फिर जाओ। इस बार खून की जितनी बूंदें धरती पर गिरेंगी। उतने ही निरम्मल तैयार हो जायेंगे। तब एक दो क्या। पूरे पचास लोरिक भी लग जायं तब भी तुम मारे नही जा सकोगे। निरम्मल की गर्दन उड़कर वापस आ गयी तथा गर्दन पर बैठ गयी। अहीर छलांग मार कर कूदा और गर्दन पर चोट की। गर्दन स्वर्ग में उड़ गयी। दुर्गा धन्य हैं। उसी समय उन्होंने लोरिक को डाटा। कहा - सुनो मेरे उपासक, प्रिय लोरिक। इस बार निरम्मल की गर्दन इन्द्रासन में चली जायगी तो तुम्हारी खबर ले लेगी। तब लोरिक ने उछल कर निरम्मल की गर्दन पकड़ ली और उसे धरती पर गिरा दिया। इधर लाश कुछ ही घड़ी में धरती पर भहरा कर गिर पड़ी। निरम्मल की लाश ने एक बीघा ज़मीन घेर लिया।

निरम्मल द्वारा दिये गये संकेत

इधर उसकी पत्नी जयकुण्डल को अशुभ के संकेत मिलने लगे। कच्चा घडा टूट गया था। उसको लेकर वह कुएं में फांद गयी। उसका सूत टूक-टूक हो गया था। पानी चूते-चूते घड़ा गल गया। तब वह गवाक्ष की ओर दौड़कर गयी। दूध का डिब्बा खोल कर देखा तो वह खून के समान हो गया था। तुलसी का वृक्ष कुम्हला चुका था। जयकुण्डल खड़ी-खड़ी धरती पर गिर पड़ी। धरती पर वह सिर पटकने लगी। हे सास, हे अम्मा, मेरी बात सुनिये। आप अपना धन और पूंजी संभालिये। अपना किला और भवन देखिये। मेरे स्वामी अगोरी में युद्ध में जूझ चुके हैं (मर चुके हैं)। मैं भी अगोरी जा रही हूँ। मैं स्वामी की लाश खोजूंगी और उसे लेकर सती हो जाऊँगी। हर दिन की मुसीबत समाप्त हो जायगी।

अब रानी का हाल सुनिये। वह अस्तबल में गयी। विलायती घोड़े को खोल दिया तथा उसका जीन कस कर मुंह में लगाम लगा दिया। अपना सामान लिया। चुन-चुन कर धोतियाँ ली और फांद कर घोड़ी पर सवार हो गयी। जैसे ही वह घोड़ी पर बैठी, घोड़ी धरती से उड़ी तथा आसमान छूकर फिर बादल की रेखाओं में उड़ने लगी। जयकुण्डल को हवा खिलाते हुए घड़ी भर के भीतर घोड़ी ज़ोर के खेतार पर चू गयी।

लोरिक वहां बैठा हुआ था। रानी ने घोड़ी को पास बांध दिया तथा स्वयं लोरिक के पास पहुँची। हाथ जोड़ कर कहा—भइया, मेरे पति की लाश कहाँ है ?

मुझे बताओ। मैं लाश लेकर इस अगोरी नगर में सती हो जाऊँगी। तब वीर लोरिक ने कहा—रानी तुम मेरी बात सुनो—इस प्रकार की बात मत कहो। तुम मेरी भावज लगोगी। जयकुण्डल ने कहा—गाँव घर के नाते मैं तुम्हारी बहन या बेटी हूँ। मैं तुम्हारी बहन हूँ। मुझे लाश दे दो। उसे लेकर मैं सती हो जाऊँगी। वीर लोरिक ने कहा—तुम्हारे पति की लाश कैसी है? रानी जयकुण्डल ने रोते हुए कहा मेरे स्वामी ऐसे वैसे नहीं थे। ऐ वीर अहीर मेरे स्वामी दैवी पुरुष थे। मेरे स्वामी की मार को तुम अच्छी तरह पहचानते होगे। तुम्हें उनकी लाश भूलेगी नही। मुझे लाश के बारे में बता दो। तब अहीर वीर लोरिक लाश के पास गया तथा उसकी गर्दन दिखा दी। लाश एक बीघे में गिरी हुई थी। रानी ने धोती की काछ संभाली तथा अपने आंचल में पति का सिर रख लिया। एक हाथ में उसका पैर बटोर दिया एक हाथ उसके पखुरे के नीचे रख दिया। लाश लेकर वह सोन नदी में प्रवेश कर गयी। स्वयं शरीर मल-मल कर उसने स्नान किया फिर निरम्मल के शरीर को नहलाया। उनकी गर्दन को स्नान कराया। फिर खेत के डंडार पर आकर खड़ी हो गयी। लोरिक से कहा—ऐ भइया सुनो। यह जो पेड़ में बेलें लगीं है अपने खडग से टुकड़े-टुकड़े कर दो। इसी समय तुम हमारे लिए चिता सजा दो। लोरिक ने पेड़ के बेलों को काट कर चूर-चूर कर दिया तथा चिता सजा दी। रानी जयकुण्डल ने पल्थी पर लाश रख ली फिर गर्दन पर लाश रखी। ब्रह्मा का ध्यान किया तथा ऊपर आंचल फैला दिया। कहा—ऐ ब्रह्मा, ऐ नारायण आप लोग मेरी बात सुनिये 'यदि मैं एक बाप की बेटी हूँ, यदि एक पुरुष की स्त्री हूँ तो आप लोग आकाश से अग्नि बरसाइये। मैं उनको लेकर यहाँ सती हो जाऊँगी।' जयकुण्डल ने अपने सत को खोला। ब्रह्मा ने अग्नि की वर्षा की। जयकुंडल आंचल खोलकर चिता में प्रवेश कर गयी। सोन नदी के तट पर अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी। दोनों जल कर भस्म हो गये। दोनों ने नया जीवन धारण किया। बायें सती बेर का पेड़ हुई उसके दाहिने निरम्मल हुआ। इस बेर में न कभी फूल लगा न फल।

अब इधर का हाल सुनिये। मोलागत अब रो रहा है। धरती पर सिर पटक रहा है मुझसे अगोरी का राज्य त्यागा नहीं जाता। मंजरी रानी भी मुझसे त्यागी नही जाती। सुग्गी को मैंने नन्हें पन से ही जिलाया। भिगोकर उसे चने की दाल दी। आज न जाने कहाँ का परदेसी चढ़ आया। वह मेरे पक्षी को उड़ाये लिये जा रहा है। यह कह-कह कर मोलागत किले में फूट-फूट कर रो रहा है। मन्त्री ने उन्हें सलाह दी। चुगुली करने वालों ने उन्हें समझाया—हे राजा, हे महाराजा. हमारी बात सुनिये।

भावार्थ—(५१०१—५३१२)

अहीर इस प्रकार मारने से नहीं मरेगा न तो अग्नि की लपट में वह जलेगा। उसको धोखे से बुलवाइये तथा किले के भवन में मरवा डालिये। अब वहाँ का हाल सुनिये। अब अगोरी नगर का हाल देखिये। राजा के मन्त्री का हाल

देखिये। चुगुलखोर (चुगुला) सोनार ने कहा—ऐ राजा, ऐ महाराजा, सुनिये। आप अहीर महर को बुलवाइये वह जीर के खेत पर जाये और लोरिक को समझा कर कहे—'ऐ साधु वीर लोरिक, मंजरी फिर नैहर करने नहीं आयेगी न तो तुम्हीं ससुराल करने आओगे। तुम चल कर सबको प्रणाम कर लो और पांव छू लो।' मन्त्री और चुगुला ने राजा को समझाया कि यह अहीर मारने से नही मरेगा न तो वह अग्नि में जलेगा। तलवार ही उसका 'उठना' है और तलवार ही उसका 'बैठना' है। तलवार ही उसके प्राण का आधार है। उसको आप धोखे से किले में बुलवाइये और यहीं बांध कर पिटवाइये। मन्त्री की यह बात राजा के हृदय में बैठ गयी। राजा ने फौरन हुक्म दिया। सिपाही छूटे और महर के घर गये। कहा—सूबा ने तुम्हें बुलाया है। तुम किले के भवन मे चलो। आगे महर चले। उनके पीछे-पीछे सिपाही चले। महर ने राज दरबार की चांदनी पर पहुँचते ही राजा को झुक कर प्रणाम किया। मोलागत ने महर को आशीर्वाद दिया। फिर कहा—ऐ महर, मैंने तुम्हें इस लिए बुलाया है कि इस अगारी मे कोयला बो दिया गया है। कोई वीर जवान अब बचा नही है। पुरुष से हीन होकर स्त्रियां अगोरी में गली-गली मारी-मारी फिर रही हैं। अब तो मंजरी नहर करने नहीं आयेगी और न तो लोरिक ससुराल करने आयेगा। जाकर उससे कह दो कि तुम्हारी छै ज्येष्ठ बेटियां उसे किले में बुला रही है। वह छवों का छोटा बहनोई है। आकर वह सबका पांव छू जाय, प्रणाम कर जाय। महर वहां से उठा तथा किले से उतर कर जीर पर जाने लगा जहां मर्द वीर लोरिक बैठा हुआ था। उसकी पल्थी पर तलवार रखी हुई थी। उसकी नज़र महर पर पड़ी। उसने नम्रता पूर्वक कहा—ऐ मेरी विवाहिता, ऐ सौभाग्यशालिनी मेरी बात सुनो। आज तुम्हारे पिता किले से सीधे तुम्हारी डोली की ओर आ रहे हैं। मर्द वीर लोरिक खड़ा हो गया। महर ने कहा—भाई, किले पर तुम्हारा बुलावा है। चल कर तुम मेरी बेटियों से भेंट कर लो। अब तो मंजरी यहां नैहर करने नहीं आयेगी और न तो तुम ससुराल करने आओगे। सबका चलकर पैर छू लो। महर के यह कहने पर दोनो वहां से किले मे चले। आगे महर चल रहे थे। पीछे-पीछे लोरिक चल रहा था। जब वे पहली ड्योढ़ी पार कर गये तब दरवाजा बन्द हो गया। दरवाजे में लोहे के दो मूसल और अर्गला लगी हुई थी। जब वे दूसरी ड्योढ़ी से निकले तो वहां बुर्ज पर चार गुण्डे तैयार खड़े थे। जब कोने से छोटी तोपें छूटने लगीं तो दुर्गा प्रकट हो गयी। उपासक के ऊपर अपना आंचल ओढ़ा दिया। लोरिक के शरीर से गोले भहरा कर गिरने लगे जैसे पानी धाराओं में खंडित होकर गिर रहा हो। वीर लोरिक वहां आकुल हो उठा। वह संघर्ष मे उलझ गया। मन में वह सोचने लगा—यदि मैं अकेले अपना प्राण बचाकर भाग जाऊंगा तो कल प्रातः यहां बड़ी निन्दा होगी। मैं ससुर को किले मे लेकर गया तथा किले में उन्हें मरवा दिया। उसने अपने ससुर को कांख में दबाया और आंगन में कूद पड़ा। आंगन से कूद कर वह आकाश में उड़ गया फिर नाले के उस पार खेत पर गिरा जिसका

नाम 'गूदरिया' है । फिर लोरिक ने उठ कर ससुर की धूल झाड़ी और उन्हें वहां से प्रस्थान कराया । स्वयं जीर के खेतार पर डोली के पास गया फिर वहां से अहीर के दरबार में उपस्थित हो गया । वहां पर बत्तीस कहांर वैठाये गये थे । लोरिक ने उनको पुकारा । वे अपना सामान लेकर पालकी के पास उपस्थित हुए । मंजरी की डोली उठी तथा सोनभद्र के तट पर चली आयी । कगार पर झिमला मल्लाह की किश्ती लगी हुई थी । डोली नाव में चढ़ गयी फिर लोरिक उस पर चढ़ गया । झिमला ने खेकर उन्हें पार लगाया । डोली उतर गयी । केवट वहाँ घूमने लगा । तब तक लोरिक नाव से उतरा अपनी जेब में हाथ लगाया तथा उसमें से साठ मुहरों का हार निकाल कर झिमला को दिया । कहा--भाई मैं तुम्हें कुछ ईनाम न दूंगा । यह साठ मुहरों का हार ले लो । यह तुम्हारी खेवाई है । इसको ठीक से देख लो, अब मंजरी की डोली उठी । उत्तर दिशा में उसका प्रस्थान हुआ । कुछ दूर चलने के बाद मंजरी ने लोरिक से कहा—ऐ स्वामी मेरी बात सुनिए । अब हमें यहाँ नैहर नहीं करना है और न तुम्हें यहाँ ससुराल करनी है । अब तुम कुछ सतयुग का चिन्ह छोड़ दो ताकि कलियुग के लोग उसे देखें । मंजरी के यह कहने पर अहीर ने नम्रतापूर्वक कहा— ऐ मेरी विवाहिता, यहाँ कुछ सामान तो दिखाई नहीं पड़ रहा है । मैं अपना चिह्न कहाँ छोड़ूं ! यह पत्थर दिखाई पड़ रहा है । इसी पर तलवार गिर जाय तो अच्छा है । तब सौभाग्यशालिनी मंजरी ने कहा—स्वामी तुम बड़ी चीज कहाँ खोजोगे । खड्ग से इसको ही दो टुकड़े कर दो । लोरिक ने तलवार निकाली । उसके चार अंगुल बाहर होते ही आवाज आकाश में गूंजने लगी । नीचे दावानल छा गया । पोरसे भर से ऊपर लहर फैल गयी । पत्थर पर तलवार गिरी । उसके टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े । मंजरी ने कहा—स्वामी मेरी बात सुनिये । पत्थर के टुकड़े-टुकडे होकर बिखर गये हैं । इसमें कौन सा निशान रह जायगा ? कलियुग के लोग क्या देखेंगे ? स्वामी तुम दाहिने हाथ से खड्ग चलाओ तथा बायें हाथ से पत्थर के दोनों हिस्सों को रोक दो । जब दोनों पत्थर जुड़ जायेंगे तब कलियुग के लोग उसे देखेंगे । लोरिक ने अपनी दूधारी तलवार निकाली तथा पत्थर के बीच में आघात किया, बायें हाथ से दोनों टुकड़ों को पकड़ लिया तथा दाहिने हाथ से उनमें एक छोटा पत्थर डाल दिया । फिर पालकी से महर की बिटिया मजरी निकली । उसको पसीना हो रहा था । उसने सिंदूर पोंछा तथा घूम-घूमकर उसे पत्थर पर छिड़क दिया । जब मंजरी की डांड़ी उठी । उत्तर के रास्ते चली । रात दिन चलकर डोली गउरा की सीमा पर पहुँच गयी : गउरा के लोगों की नजर उस पर पड़ी । सब लोग उसे देखने लगे । अहीर के द्वार पर जाकर खोइलनि से कहा— माता खोइलनि सुनो, तुम्हारा बेटा गौना लेकर आ रहा है । तीन महीने तेरह दिन बीत चुके हैं । तेरहवें दिन डोली गउरा पहुँची । नाऊ और ब्राह्मण को बुलवा कर चौका चन्दन ठीक कराया गया । द्वार पर परिछन होने लगी । लोरिक और मंजरी का गठबन्धन हुआ । आगे-आगे मल्ल लोरिक चला, पीछे मंजरी चली । वे कोहबर में प्रविष्ट हुए । फिर हवन आदि सम्पन्न हुए ! दोनों ने दही-गुड़ खाये । अहीर का गठबन्धन खुला । वह उठकर सबको प्रणाम करने लगा । कोहबर को लोरिक ने प्रणाम किया फिर बाहर द्वार पर आकर खड़ा हो गया । देह का सारा सामान उतारा । उसका निगोट बन्द हो गया । लोरिक आनन्द पूर्वक डांकते-फांदते वहाँ से चला फिर कूद कर अखाड़े में पहुँच गया । ☐☐

२. संवरू का विवाह—सुराहुल की लड़ाइयाँ

होली का आगमन—लोरिक का गउरा में होली खेलना

भावार्थ—(१—३००)

अब उस दिन का और वहां का हाल सुनिए। अहीर अखाड़े से लौट आया। वह धीरे-धीरे दरवाज़े पर गया। गगिया की पुकार लगायी। गांगी हजाम आ कर खड़ा हो गया। लोरिक ने उससे कहा—मैं गउरा की गलियों में जा रहा हूँ। अच्छे-अच्छे वीर जवानों को मैं चुनूंगा मैंने तीन महीने और तेरह दिन तक अगोरी में लोहा लिया। आधे फागुन में घर आया। मेरे मन में फागुन की लालसा है। मैं गउरा में फगुवा खेलूंगा। तब मेरी इच्छा पूर्ण होगी। उसने गगिया को सहेजा—गांगी, मेरे हजाम सुनो। तुम सीधे बोहा चले जाओ। भइया मलसांवर को इस बात की खबर कर दो। वे मेरे लिए एक डफली मढ़वा दें और तुम्हारे हाथ भेजवा दें। आज ही तुम उसे घर लेकर आओ। हजाम गागी वहां से चला। भोर में ही वह पल्ली पर पहुँच गया। वहां मल सांवर कुश की चटाई पर बैठे हुए थे। गांगी ने झुककर प्रणाम किया। सांवर ने आशीर्वाद दिया—'तुम अक्षय रहो, अमर रहो। लाख वर्ष तक जीयो। जैसे गंगा का पानी बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े।' फिर उन्होंने गाँगी से पूछा—मेरा प्रिय भाई कब वापस लौटा। फगुवा खेलने के लिए द्वार पर कब निकला। कितने दिन उसके घर में आए हो गये। तुमसे कब समाचार भेजा। गांगी हजाम बोला—'मालिक कल सांझ को ही वह गौना लेकर आए है। प्रातःकाल ही मैं बोहा में कूद कर आ पहुँचा। लोरिक ने तुमसे डफली मांगी है। वह गउरा में घूम-घूमकर फगुआ खेलेगे। तब मल सांवर उठे। हाथ में धनुष बाण लिया और छिउली (पलाश बन) में चले गए। घूम घूमकर वह जंगली जानवरों को देखने लगे। मौका देखकर वह उनके आगे चले जाते थे। जब उन्होंने एक हिरण को झाड़ी से आते देखा तो खींचकर बाण मारा। जानवर के पास गए। खंजड़ी की नाप के बराबर उसका पेट नापा और चमड़ा काट लिया। बाण संभाला फिर छिउली के वन से खरका पर आ गये जहां उनके पशु रहते थे। हाथ में डफ लेकर नाऊ प्रातःकाल वहां से चला गउरा मे प्रिय लोरिक के पास पहुँच गया। लोरिक ने खंजड़ी देखी और अपने पलंग से उठ गया। गउरा गांव में गया। गउरा बारह पल्लियों का नगर था। तिरपनवें गली में अहीरों की बस्ती थी। लोरिक ने अच्छे-अच्छे जवानों को फगुवा खेलने के लिए छांट लिया। दस बीस पट्ठों को लेकर द्वार पर आया सबकी खातिरदारी की। सबने ढोली का मगही पान खाया। तब वीर लोरिक बोला—साथियों मेरी बात

सुनो। तीन महीने तेरह दिन दक्षिण में अगोरी में आग लगी रही आधे फागुन में मैं घर आया। मेरे मन में फाग खेलने की लालसा है। साथियों हाथ में अबीर लो हम चलकर गाँव में ललकार कर फगुवा खेलें।

अब वहाँ का हाल सुनिए। दस बीस पट्ठे जवान उठे। दरवाजे से फाग खेलना शुरू किया। वे घूम घूम कर गउरा में (फाग) गाने लगे। गउरा बारह पल्लियों का नगर है इसकी तिरपन गलियों में बाजार हैं।

वहाँ का हाल सुनिए। वीर जवान बावन गलियों में घूमे फिर तिरपनवें गली में पहुँचे। वे राजा के किले पर पहुँच गये। वहाँ द्वार पर फगुवा हो रहा था। राजा सहदेव-महदेव सबकी बड़ी खातिरदारी कर रहे थे। गाँजा और चिलम लेकर चरवाह दम लगा रहे थे। नशा,पान पत्ती, सोपारी खाकर सब लोग राजा को आशीर्वाद दे रहे थे। सभी जवान वहाँ से चले तथा घर की खिड़की से होकर गुजरे। वेश्या चनइनी हाथ में काठ का बर्तन परात लिए खिड़की पर निकल कर खड़ी थी। उसने मिट्टी और गोबर में पानी मिलाकर जवानों पर फेंका। पानी गली में जमीन पर गिर कर बह गया। जवान खड़े खड़े गलों में फगुवा गा रहे थे। अब लोरिक का हाल देखिए एक ओर खड़ा होकर लोरिक फाग गा रहा था। वेश्या (चनइनी) मिट्टी और पानी भर रही थी। उसने दुबारा सीधे लोरिक पर मिट्टी और पानी फेंका। अहीर लोरिक पक्का खिलाड़ी था वह बायें तिरछे हो गया। पानी गली में गिर पड़ा। वेश्या वहाँ से लौट गयी। अहीर क्रुद्ध हो गया। लोटा से उसने अबीर खींचा और चन्दा पर पिचकारी मारी। उसके दाहिने वक्ष में चोट आ गयी। वह धरती पर गिर पड़ी। उसकी मां सेल्हिया ने उसे देखा और वह दौड़ी। बेटी को झाड़-पोंछकर उठाया। फिर गम्भीरतापूर्वक बोली ऐ विक्षिप्त लोरिक, तुम इस प्रकार क्यों पागल हो गये हो? तुम्हारी बुद्धि हर ली गयी है। तुम दक्षिण देश में गये तब से तुम अपनी शान में हो। एक कमज़ोर राजा को तुमने मारा। अगोरी के किसानों को मारा, निर्बल हाथी को मारा और संसार में अपने खड्ग की पूजा कराने लगे! मैं तुमको मर्द तब समझूंगी जब तुम संवरू की शादी करवा लोगे। अगर तुम कठईत के पुत्र हो तो सुरहुल के मल्ल भिमलिया की बहन है सतिया। तुम सुरहुल में ढोल बजवा दो तब समझूंगी कि तुम कठईत के पुत्र हो। यह सुनकर लोरिक के मन में मलाल उठा, ठेस लगी। उसने अपनी इचकारी-पिचकारी फेंक दी, लोटे का अबीर झटक दिया, अम्फ-डंफ (खंजड़ी आदि) तोड़ दिया और सीधे घर के लिए रवाना हुआ। उसका पलंग सोने का था। बिछे हुए पलंग पर सिर से पैर तक चद्दर तानकर वह सो गया। फिर अन्न जल सब कुछ छोड़ दिया। प्रातःकाल हुआ, पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। पर लोरिक मन में गुमान किए हुए पैर फैलाये अभी भी सो रहा था, सात घड़ी के अन्दर-अन्दर खा लेने वाले लोरिक को दोपहर हो गयी। लोरिक अभी तक नही जागा, खोदने पर भी नही जागा। वह मौन था, जबान खोलकर कुछ कह नही रहा था। घर के सब लोग व्यथित हो उठे—क्या लोरिक को किसी ने मारा है? क्या किसी ने गाली दी है क्या किसी

ने ताने दिये हैं कि लोरिक ने अन्न जल छोड़ दिया है ? अब कठईत का हाल सुनिये। वह बेटे को जगाने गये उसके मुँह की चादर हटा दी। अहीर लोरिक अवाक् सा देख रहा था। कठईत वहाँ से चले और अजयी के पास गये। कहा—गुरु अजयी, घर में बड़ी हलचल मच गयी है। तुम्हारे चेले लोरिक ने अन्न पानी सब कुछ छोड़ दिया है। वह पलक खोलकर नहीं देख रहा है। तब गुरु अजयी आगे चला, पीछे-पीछे अजयी चले। वह जाकर उस पलंग पर बैठ गये जहां लोरिक सो रहा था। अजयी ने उसके मुँख से चादर हटायी तो वह अवाक् सा रह गया। गुरु ने कहा—चेला तुम गउरा में इतने बलवान थे कि तुमसे जबर्दस्त कोई नहीं था। चेला, तुम मेरी बात सुनो। तुमको किस शक्तिशाली व्यक्ति ने मारा है कि तुम हृदय से रो रहे हो। जब गुरु अजयी ने ऐसा करुणापूर्वक कहा तब लोरिक संतुलित होकर उठकर बैठ गया और गुरु से कहने लगा - गुरु मेरी बात सुनो, मैंने तीन महीने तेरह दिन तक अगोरी में लोहा लिया फिर गौना लेकर घर आया। देखो यहां फागुन उद्भासित हो रहा है। मेरे मन में गउरा में जाकर फाग खेलने की लालसा थी। मैं बावन गलियों में घूमा किसी ने 'रे' और 'तू' कहकर नही पुकारा। जिस समय मैं सहदेव की तिरपनवीं गली। में गया, वेश्या चनवा खिड़की से निकली और मिट्टी घोलकर जवानों पर फेंकने लगी। बीर जवान पक्का खेलाड़ी थे वे कूद कर आकाश में चले गये। पानी धरती में गिर गया। फिर उसने मुझ पर कीचड़ फेंका। गुरु, मेरा गुस्सा नही रुका। मैंने खींचकर पिचकारी मारी। अबीर का रंग उसके दाहिने वक्ष पर जा गिरा। जब अबीर से चनवा को चोट आयी तो वह धरती पर भहरा कर गिर पड़ी। गुरु तब उसकी मां सेल्हिया निकली। झाड-पोंछकर चनवा को उठाया। फिर उसने मुझे 'तू' और 'रे' कहकर अपमानित किया। कहा - मैं दक्षिण देश में गया। वहां के दुर्बल राजा और किसानों को मारा। कमजोर हाथी को मारा और मैं देश में अपनी बांह की पूजा कराने लगा। सेल्हिया ने कहा—'ऐ लोरिक, मैं तुम्हें तब मर्द बखानूंगी और तब कठईत का वंश समझूंगी जब झिमली की बहन सतिया से सुरहुलि में संवरू की शादी संपन्न करा लेने और वहां ललकार कर ढोल बजा दोगे।' गुरु मैं क्या कहूँ और क्या न कहूँ ? मुझसे कहा नहीं जाता। सुरावल का राज्य मेरा देखा हुआ नही है अन्यथा मैं इसी क्षण प्रस्थान कर देता। सुरहुल में जाकर ढोल बजवा देता। तब अजयी ने नम्रतापूर्वक कहा—चेला लोरिक सुनो ! तुम स्नान करो, खिचड़ी खा लो कटोरे की तरकारी खराब हो रही है। मेरा जन्म सुरावल का है। मेरी जन्मभूमि सुरावल है मैं तुम्हें सुरहुलि का रास्ता बता दूंगा। सुरहुलि के जो जो पंडित हैं, ऐ चेला मे उनका भी नाम बता दूंगा। तुम उठकर भोजन करो। मेरी बात सच है। गुरु के पास संतुलित होकर लोरिक ने सुरावल का भेद पूछा। गुरु, तुम्हारा जन्म सुरावल का है तुमने सुरावल के स्थान को कैसे छोड़ा ? तुम मेरे गउरा नगर में कैसे आये ? तुमने तो मुझे यहां चेला बनाया। तब गुरु अजयी ने कहा—चेला सुनो। मैं सुरहुल में बदी खेलता था। सोलह सौ लड़के बदी में खड़े हुए। भीमली अंतराल में खड़े हुए और नम्रतापूर्वक कहा—मैं

भी इस समय खेलूंगा। तब सुरहुलि के लड़कों ने कहा कि तुम राजा के लड़के हो। यदि तुम्हारा कान या सिर फूट जायगा तब राजा सारे बाल बच्चों को कोल्हू में पेरवा देंगे। लोरिक के आग्रह करने पर अजयी ने बताया कि मैं कैसे सुरहुलि से भागा। जब बदी हुई तो राजा के लड़के भिमलिया की गर्दन पर चढ़ गए। मेरे और राजा के बीच झगड़ा हो गया।

भावार्थ—(३०१—६००)

लड़के बदी के लिए अपनी जोड़ी बनाकर आ गए तथा पक्की बदी होने लगी। राजा भीमली गोटी हाथ में छिपाकर उसे खोजवाने लगा, उसके बारे में बुझवाने लगा। अजयी ने दाहिना हाथ पकड़ लिया। वह 'मरती' दाव में हो गया राजा ने 'चलनी' दाव बदी में रख ली। गउरा में ललकार कर बदी होने लगी। अजयी ने लोरिक को बताया कि जब मेरी देह झुकी तो सूबा ने थप्पड़ मारना शुरू किया। मैं एक बीघा दूर भाग खड़ा हुआ जब राजा भीमली ने उलट कर देखा तब वह वीर जमकर कूदा। खींच कर उसने जोर से मुझे पैर के पंजे से, एड़ी से मारा। मै धरती में गड़ गया। मेरे बारह जोड़ी साथी थे किन्तु राजा के चौदह जोड़ी साथी कूद पड़े। मेरे ससुर खदेरू ने मेरी जान बचा ली। मैंने छः महीने तक गाय का दूध पीया। फिर नगर सुरवली से अपना चोला उठाया और तुम्हारे गांव गउरा में आ गया। मैंने यहां तुम्हें चेला बनाया और मैं अब गउरा मैं आनन्द कर रहा हूँ। मैं सच बात कह रहा हूँ। तुम अपनी शक्ति बढ़ा लो। भीमलिया बलशाली है। पर कर्तव्य में ऐ लोरिक तुम सरदार हो। तुम्हारे सम्मुख मां दुर्गा हैं, देवी हैं जो आदि काल से ही पूजमान हैं। गुरु अजयी अहीर लोरिक को उत्साहित कर रहा है। वह कह रहा है—चेला, कोई हर्ज की बात नहीं है। सुरहुलि का रास्ता मेरा देखा हुआ है। मैं तुम्हें सागर के भीटे पर ले चलूंगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर लोरिक ने नम्रतापूर्वक कहा—गुरु तुम स्नान कर लो। गुरु ने तख्त पर बैठ कर स्नान कर लिया। फिर दोनों भोजन के स्थान पर बैठ गये। अहीर ने गिलास और बोतल सामने रख दिया। गुरु ने 'चिखना' उठाया। दोनों व्यक्तियों ने मिल कर भोजन किया तथा आपस में बात चीत की। जब खा पीकर वे संतुलित हुए तब अहीर के मन का बोझ बढ़ता चला गया। प्रातः-काल पूर्व में कौवों ने शोर मचाना शुरू किया। तब वीर लोरिक उठा। वह तेजी से बोहा में गया। वहाँ से बारह बैल लाया, तथा उनके गले में रस्सी डाल दी, टाट और पिटारा कस दिया, नथ के जोड़े पहना दिये। फिर स्वयं महल में चला गया, जाकर भंडार खोला तथा बटोर कर धन, पूंजी (रोकड़) बाँध ली। दरवाजे से बैल हांका तथा मेला और बाजार करने चला गया। बारह बैलों पर उसने सोपारी लद-वाई तथा दरवाजे पर ला कर उन्हें गिरा दिया। बैलों का बन्धन ढीला किया तथा टाट-पिटारी उतरवा दी। फिर अहीर ने बैलों को टिटकारा ये सभी बोहा में चले गये। वीर लोरिक गाँव गउरा में चला गया जहाँ अहीरों की बस्ती जम कर बसी

हुई थी। उन्होंने चौबीस जवानों को चुन लिया। वे अच्छे अच्छे पट्ठा थे। उनको लेकर लोरिक द्वार पर आ गया। फिर जलपान होने लगा। गोठहुल की चिलम पर जवान दम लगाने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। दम लगा कर जवान तैयार हुए। उन्होंने बैलों की जोड़ियों को कस कर तैयार कर लिया। उनके मुँह के जाब खोल दिये तथा चौबीसवीं गली का रास्ता नापा। लोरिक ने उन्हें हुक्म दिया और कहा—"ऐ न्यौता करने वाले मेरे भाइयों, कोई अपनी जाति का हो, या पर जाति का हो, आप लोग किसी को न छोड़िये। सब को मेरा न्यौता बांटिये। उसने बताया कि शुक्रवार को बारात चलेगी। लोरिक ने कोठरी में जा कर द्रव्य बांधे तथा एक दम सीधे बस्ती में चला गया। सात प्रकार के बाजे तय किये तथा सब को दिन और मुकाम बता दिया। शुक्रवार को बारात चलेगी यह कह कर अहीर घर लौट आया। जिस दिन निश्चित समय आया और सुबह हुई, उस दिन लोरिक ने दस बीस ग्वालिनों को बुलाया। उन्होंने जा कर तालाब पर स्नान किया फिर रसोईघर में गयीं। एक ओर पक्की रसोई बनने लगी। एक ओर कच्ची रसोई तैयार होने लगी। प्रात.काल का समय है, शुक्रवार का दिन। शुभ समय आ गया। कठईत के द्वार पर जाजिम गिर गया। गेंस जुटाये गये। वहाँ बड़ी सेना आ कर खड़ी हो गयी। अहीर मंडली बना कर वहाँ बैठ गये। कठईत मद्य-पान करने लगे। गोपी और ग्वाल सभी पीने लगे। बीच में गांजा और चिलम रखी हुई है। चरवाह चुटकियों पर ताल दे रहे हैं। भोजन भी तैयार हो गया, तब अहीर लोरिक आ कर जाजिम पर खड़ा हो गया। उसने कहा - ऐ मेरी जाति के लोगों, ऐ मेरे सजातीय बंधु बांधवों, 'ऐ मेरे अन्य जाति के भाइयों, आप लोग उठ कर एक साथ हाथ-पाव धोइये। आंगन में जा कर अलग अलग विभक्त हो कर बैठ जाइये। सामान परोस दिये। आग पर घी भी गरम किया जा चुका था। सीताराम बोल दिया गया। सब लोगों ने कौर उठाये। खा पीकर लोगों ने द्वार पर हाथ मुँह धोये। कुल्ला आदि करके लोग जाजिम पर चले गये। वीर लोरिक ने पान के बीड़ों का थाल सब को घुमवा दिया। लोग एक एक बीड़ा उठा कर ओठ में मगही पान कूँच रहे हैं। अब फिर वहां का, उस समय का हाल सुनिये। बूढ़े कठईत बोले—ऐ गांगी नाऊ, मेरी बात सुनो। भइया संवरू को जाकर बुलाओ। प्रात:काल धरमी की बारात चलेगी। गांगी नाऊ बोहा गया। संवरू कुश की चटाई पर लेटे हुए थे। गांगी ने झुक कर उन्हें प्रणाम किया। भइया ने उन्हें हृदय से आशीर्वाद दिया। गांगी हजाम ने कहा—धरमी मेरी बात सुनिये। तुम्हारे काका ने तुम्हें बुलाया है कल प्रात.काल सुरहलि मे बारात चलेगी। तुम्हारा इस समय तिलक चढ़ेगा। भइया, तुम पालकी में बैठ कर चलो, सुबह तक ही चलने का अवसर है। मल्ल धरमी आगे आगे चले। उन्होंने समझा कर नाऊ से कहा—तीन सौ साठ चरवाह हैं उनमें नान्हूँ अगुआ है। नान्हूँ को छोड़ कर मैं बारात में चल रहा हूँ। धरमी घर आये और एक दम घर के भीतर चले गये, जलपान किया

तथा भोजन के लिए ठहर पर बैठ गये। पंडित मोहनियां भी आ गये । उन्होंने रणभूमि का सारा आगम देखा । जिस वक्त सात घड़ी दिन चढ़ जायगा, तब परिछन का मुहूर्त है, ऐसा शकुन निकला ।

अब वहाँ का हाल सुनिये---सभी जाति पर जाति के लोग देह का वस्त्र लेने के लिए घर चले गये । पहन ओढ़ कर सब लोग अहीर के द्वार पर आ गये । सत-रंगा बाजा भी आ गया । सबसे पहले पुरहथ हुआ फिर अक्षत रख दिया गया । बाजा बजाने वालों ने ताल ठोका, ऐसी लकड़ी सजायी कि पृथ्वी से भार सहा नहीं गया । नीचे धरती डोलने लगी । ऊपर आसमान हिलने लगा । ऋषि मुनियों का ध्यान टूट गया । बाबा विष्णु का सुरधाम डोलने लगा । धरमी का परिछन हो रहा है । साथ ही साथ बारात प्रस्थान कर रही है । गांव की सीमा पार कर बारात टप्पे में, मैदान मे खड़ी हो गयी । तब अहीर लोरिक बोला—ऐ गुरु अजयी सुनो । हम लोग अभी धाप भर आये, आधा कोस ज़मीन पार की । अच्छा हुआ कि हमें अभी याद आ गया । मैं अभी घर जा रहा हूँ । मड़ई में बर के लिए पानी टँगा हुआ है । ऐ गुरु, सुरहुलि का रास्ता तुम्हारा देखा हुआ है । तुम मेरी बारात को ले चलो । बाजे-गाजे की ध्वनि के साथ बारात दक्षिण दिशा में चलने लगी । लोरिक लौट कर घर गया ।

अब वहां का हाल सुनिये । ब्रह्मा का इन्द्रासन डोलने लगा, विष्णु का सुरधाम हिलने लगा । अहीर लोरिक से उनको चिढ़ हो गयी । ब्रह्मा ने स्वर्ग से दूत भेजा, वह दूत मृत्युलोक में उतर कर आ गया । अहीर की बारात जा रही थी । दूत ने अपना एक ओठ धरती मे रख दिया । एक ओठ आसमान मे । बीच में सड़क दिखाई पड़ने लगी । बिहँसती हुई अहीर की बारात दूत के पेट में चला गयी । दूत ने मुँह बन्द कर लिया पहाड़ के रास्ते पर ऊपर चढ़ गया तथा फेंटा मार कर बैठ गया । अब अहीर लोरिक का हाल सुनिये । वह दौड़ते कूदते आया । सोचने लगा – बाजे की ध्वनि खामोश है । बारात दूर चली गयी है ? आगे शून्य निर्जन दिखाई पड़ रहा है । लोरिक चारों ओर देख रहा है । बारात दृष्टिगत नहीं हो रही है । अहीर शोकाकुल हो गया । कहने लगा---हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, आपने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया ? दैव के एक से एक लाल बारात में है । हमारी रीतियां तो महोबा जैसी बहादुरी की हैं । इतने व्यक्ति कहां गायब हो गये । मेरा अकेला प्राण बच रहा है । मैं गउरा में अपना मुंह कैसे दिखाऊँगा । जब गउरा के लोग पूछेंगे तब मैं क्या जवाब दूँगा ? वह कहने लगा—मां धरती तुम फट जाती तो अच्छा होता । मैं धरती में समा जाता । धरती दो भागों में फट गयी । अहीर खड़ा खड़ा उसमें कूद गया तथा पाताल में चला गया । वहां नाग और बेनिया नागिन सोई हुई थीं । अहीर वीर लोरिक ने कहा—ऐ नाग, ऐ नागिन, तुमने यह क्या कर दिया ? मुझे नाग से काम है । ज़रा सोते हुए नाग को जगा दो मैं उससे दो शब्द बातें करना चाहता हूँ । नागिन ने नाग को खोद दिया और वह फुफकार कर उठ बैठा । जब लोरिक की

और उसने फुफकार मारा, उसकी जांघ और शरीर कांपने लगा। तब दुर्गा गरज उठीं।

भावार्थ—(६०१—८००)

दुर्गा ने तुरन्त कहा—ऐ मेरे प्रिय उपासक लोरिक सुनो। तुम मेरी बात मानो। वह नाग है जिसने नेउरियापुर को बांध रखा है तथा बिठई की तरह फेंटा मारे पड़ा हुआ था तथा लड़कों ने उसके गुप्त द्वार को खोदा था। जब माता दुर्गा ने ऐसा कहा तब अहीर लोरिक गरज उठा—ऐ दुष्ट नाग, तुम पागल हो गये हो। तुम्हारी मति हर ली गयी है, तुम्हारा ज्ञान चला गया है। मैं अहीर लोरिक हूँ जिसने तुम्हें नेउरियापुर में बांध रखा था। जिस वक्त मैंने तुम्हारा फेंटा उलट दिया था लड़कों ने तुम्हारे साथ खेल किया। अब ऐ भाई, तुम्हारे पहरे में मेरी सवा लाख बारात गायब हो गयी है। तब नाग नेउरापुर की बात सोचने लगा। तुरन्त उसने अपना फँड़ जमीन पर रख दिया और रो-रो कर कहने लगा—भइया, अहीर लोरिक मेरी बात सुनो। ब्रह्मा सबसे शक्तिशाली हैं। उनसे अधिक शक्तिशाली कोई नहीं था। तुम उनमे भी अधिक शक्तिशाली हो गये। इस मृत्युलोक में नीचे उतर कर उसने ऐसे बाजे जुटाये कि उसका भार पृथ्वी से नहीं सहा जा रहा है। जिस समय तुम्हारे डंके बजते हैं पृथ्वी डगमगा जाती है। ऋषि मुनियों का ध्यान डिग जाता है। बाबा विष्णु का सुरधाम डोलने लगता है। ऐ अहीर, तुमसे ब्रह्मा क्रुद्ध हैं। उन्होंने रास्ते में एक दूत भेज दिया। उस दूत ने होठ धरती में गड़ाया तथा ऊपर बादल तक उसे सटा दिया। बीच में सड़क सी दिखाई पड़ने लगी। बारात उसके अन्दर प्रवेश कर गयी तब दूत ने अपना मुँह बन्द कर दिया तथा सीधे पहाड़ पर चढ़ गया फिर नीचे जाकर ढलान पर फेंटा मार कर बैठ गया। उसके पेट में सवा लाख बारात है। ब्रह्मा ने तुम्हें डण्डा दिया है उसे लेकर तुम झरिया घाट पर प्रतीक्षा करो। प्यास लगने पर वह दूत नीचे उतरेगा और खींच कर पानी पीयेगा। तब सवा लाख बारात मर जायेगी। अतः तुम जल्दी मृत्युलोक में चले जाओ। लोरिक वहाँ से खिसका फिर धरती पर आसमान के नीचे आ गया। वह इधर-उधर टहलने लगा तथा झरियवा घाट पर निगरानी करने लगा। घाट पर दस-बीस रास्ते दिखाई पड़ रहे थे। अहीर चिन्ता में पड़ गया। किस घाट को मैं अगोरूँ? क्या जाने किस घाट पर दूत उतरेगा। मेरी बारात नष्ट हो जायगी। दिन में वह भाग्यमान देवताओं को स्मरण कर रहा है, सबका नाम सुमिरन कर रहा है। कह रहा है—हे माँ दुर्गा, हे देवी, सहायता करो। मैं जाकर कौन-सा रास्ता रोकूँ। माँ अपनी वाणी सुनाओ। तब दुर्गा उसकी नजर पर चढ़ गयीं। दुर्गा जो आदिकाल से ही पूजमान हैं क्रोध भरी दृष्टि से देखने लगीं। कहने लगीं—मेरे उपासक, मेरे लाड़ले, तुम मेरी बात सुनो। जाकर बीच वाले घाट को अगोरो। दूत अभी जाकर अपना ओठ पानी में डुबायेगा। लोरिक तब घाट पर जाकर बैठ गया। ब्रह्मा का दूत वहाँ से चला। धरती से लेकर आकाश

तक एकदम वही दिखाई पड़ता था। लोरिक की जांघ थर-थर काँपने लगी। वह दाँतों तले अंगुली दबाने लगा। मेरा खड्ग तो चार अंगुल का है, बहुत छोटा है और यह दूत तो धरती और आसमान से लगा हुआ है। यदि मैं इसकी देह छोड़ दूं तो यह उलट कर मुंह खोलेगा तथा मेरी जिन्दगी समाप्त कर देगा। लोरिक ऐसा कह ही रहा था कि दूत ने पानी में ओठ डाला और पहला घूंट खींचा। फिर उसने दूसरा घूंट पीया। बारात सांसत में थी। दूत ने इतना पानी खींचा कि सड़क भीग गयी। जब उसने तीसरा घूंट पीया तो दुर्गा ज़ोर से गरज उठीं—'ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरे प्रिय लोरिक, मेरी बात सुनो। इस बार वह दूत इतना पानी पीयेगा कि सारी बारात मिट्टी में मिल जायगी, नष्ट हो जायगी।' मुझे भूख लगी है। दुर्गा के हाथ में खप्पर था। दुर्गा के ही संकेत पर लोरिक ने खड्ग खींचा जिसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर लहर उठ गयी। दूत की पलकें घूमीं और लोरिक का खड्ग उसकी गर्दन में प्रवेश कर गया। झरिया घाट पर गर्दन के गिरते ही दूत के पेट से सारा पानी निकल आया। जितने दुर्बल कमज़ोर लोग थे वे सब बाहर आकर झरिया घाट पर गिर पड़े। अहीर की बारात पानी से भीगी हुई थी। इधर सूर्य ने बादल घिरवा दिये। बारात जाड़े में ठिठुरने लगी, जवानों के दाँत कट-कटाने लगे, हिलने लगे। लोरिक ने तब गुरू अजयी से कहा—भाई, तुम्हारा रास्ता देखा हुआ है, इधर के गांव और बस्तियाँ तुम्हारी पहचानी हुई हैं। यदि पास में कोई गाँव हो तो जाकर तुम वहाँ से आग ले आओ। पास में जो सनई थी वह भीग चुकी है। सवालाख बारात काँप रही थी।

अब इधर ब्राह्मण का हाल सुनिये। वह अभी भी टेढ़े हैं, प्रसन्न नहीं हुए हैं। उन्होंने माया का ओसारा खड़ा कर दिया। उसमें धधकती हुई आग जला दी। उसमें एक डाइन को सुला दिया जिसने बुढ़िया का रूप धारण किया था। वह डाइन धीरे-धीरे कराह रही थी। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। उसने अजयी से कहा—एक बड़ी बखरी दिखाई पड़ रही है। उसके पीछे एक ओसारा है। वहाँ एक चारपाई भी नज़र आ रही है। गुरू तुम वहाँ से आग उठा लाओ ताकि सारी बारात ताप सके। गुरू अजई वहाँ से बखरी में गया। नम्रता पूर्वक बोला—यह किसका घर-द्वार है? इसका मालिक कौन है? ज़रा हमें आग दे दीजिए। मेरे लोग तम्बाकू पीयेंगे। तब डाइन ने चारपाई से कहा—भइया, यह घर तुम्हारा ही है? तुम आग ले जाओ। मुझे बारह बेल का ज्वर चढ़ा हुआ है। मुझे कोई चीज़ दिखाई नहीं पड़ रही है।

अब अजई का हाल देखिये। वह अपना एक पैर भीतर रख रहा है। जब वह झुक कर लुकाठी पकड़ने चला तब डाइन वहां से मुँह खोल कर कूदी और अजयी को खड़े-खड़े निगल गयी। फिर खाट पर जाकर सो गयी।

अब अहीर का हाल सुनिये। लोरिक बड़ी चिन्ता में पड़ गया। गुरू अजई ठण्ड महसूस कर रहा था। जाड़े में उसे पेट भर अग्नि मिली। बातचीत करते हुए वह भर पेट आग तापने लगा। लोरिक ने गंगिया हजाम से कहा—यह साला गुरू

अजयी, बदमाश है। वह बातों के भ्रम में आ गया है और तृप्त होकर आग ताप रहा है। गांगी तुम दौड़ कर जाओ और आग उठा लाओ। गांगी दौड़ कर ओसारे के दरवाज़े पर पहुँचा। वहां गुरू अजयी नहीं दिखाई पड़ा और न तो कोई साझीदार ही दिखाई पड़ रहा था। एक बुढ़िया खाट पर कराह रही थी। नाऊ बड़ी शंका में पड़ गया उसने खंखारा फिर कहा—ज़रा हमें आग दे दीजिए। डाइन ने खाट से कहा—यह घर तुम्हारा है। तुम अपने हाथ से आग उठा ले जाओ। हमें बारह बैल का ज्वर है। उठने का मौका नहीं है। नाऊ ने एक पैर बाहर रखा तथा एक पैर भीतर और ज्यों ही झुक कर वह अग्नि की लुकाठी लेने को उद्यत हुआ, डाइन मुँह खोल कर कूदी तथा गांगी को खड़े-खड़े निगल गयी, फिर खाट पर जाकर आराम से सो गयी।

अब लोरिक का हाल सुनिये। वह इसका अर्थ और माने बैठाने लगा। शायद गुरू अजयी को मेरा डर नहीं है और वह जाकर आग तापने लगे। पर नाऊ गांगी तो मेरा आज्ञाकारी है। वह हमारा कार्य जल्दी ही कर देता है। नाऊ इतनी देर नहीं करता। वह बारात में आ गया होता। ऐसा लग रहा है कि कुछ धोखा हो गया है।

अब वहां का हाल सुनिये। अहीर वहां से खड़े-खडे चल दिया तथा डाइन के घर पहुँच गया। द्वार से खंखारा तथा नम्रतापूर्वक बोला। वहां न तो गांगी नाऊ दिखाई पड़ रहा था और न तो गुरु अजयी। उसने ज़ोर से खंखारा और पूछा यह घर और बखरी किसकी है? मुझे ज़रा आग दे दो। तब खाट से डाइन नम्रतापूर्वक बोली। यह तुम्हारा ही घर है और तुम्हारी ही बखरी है। भइया तुम आग उठाकर ले जाओ। लोरिक वहां गया। एक पैर उसने ओसारा में रखा। जिस समय झुक कर उसने लुकाठी पकड़ी मुँह खोल कर डाइन कूद गयी तथा वीर लोरिक को निगलने लगी। इसी बीच दुर्गा गरज उठीं। कहने लगी मेरे उपासक, तुम मेरा कहना सुनो। तुम्हारी जेब मे छुरी और कटारी है। उसे भोंक दो ताकि डाइन का पेट खड़े-खड़े फट जाय। डाइन का पेट फट गया। उसमें से गुरू अजयी हँसते हुए निकला, नाऊ भी हँसते हुए बाहर आया। लोरिक अजयी की ओर झुका। कहने लगा, अगर तुम मेरे गुरू न होते तो तुम्हें दो भागों में खडित कर देता। इस तरह की गूढ़ कठिनाइयां थीं तो पहले क्यों नहीं बतलाया। मैं अपने स्थान पर रहता। तब गुरू अजयी ने कहा—चेला, तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर ब्रह्मा टेढ़े हो गये हैं, क्रुद्ध हो गये हैं। वे ही यह सब उपद्रव कर रहे है। उन्होंने तुम्हें कष्ट में डाला है। मुझसे तो कुछ कहा नहीं जाता।

अब अहीर का हाल सुनिये। वह अपने हाथ से लुकाठो बटोर रहा है। जितनी भी लुकाठी थी उसको बटोर कर वह बारात में चला आया। सवालाख बारात वहाँ काँप रही थी। लोरिक सबको आग बांट रहा है। दस बीस स्थानों पर उसने आग जलवा दी। सब लोग घूम-घूम कर आग ताप रहे हैं। अब ठांव-ठिकाना

होने लगा, विश्राम होने लगा। तम्बाकू आदि चढ़ाया जाने लगा। गांजा चिलम पर चढ़ गया। चरवाहे दम लगाने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने नम्रतापूर्वक कहा—दस बीस जवानों उठ जाओ तथा इसी क्षण बारात को गिन लो। कतार में खड़ा कर बारात गिनी जाने लगी। कुल संख्या ठीक उतरी। जिसके सिर पर बारात चल रही थी वह वर संवरू नहीं थे और न तो काका कठईत ही वहाँ थे। गुरू अजयी भी दिखाई नहीं पड़ रहे थे। बत्तीस कहांर भी वहाँ नहीं थे। लोरिक ने तब अपनी बिजली वाली तलवार ली झरियवा घाट के निकट पहुँच गया तथा म्यान खिसका कर फेंक दिया। लोरिक ने अपनी दस्तगी तलवार तान ली। वह चार अंगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज आकाश में चली गयी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर तक लहर उठने लगी। अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर का दल वहाँ से चला। पीछे पीछे डोली निकली।

भावार्थ—(८०१—१३००)

बाजा बजाने वाले बाजे पर अद्‌भुत ध्वनि निकालने लगे जिससे पृथ्वी डग-मगाने लगी। उत्तर में बारात रात दिन चलने लगी। रास्ते में कहीं पड़ाव नहीं पड़ा, कहीं विश्राम नहीं हुआ। सभी बरईपुर पहुँचे। सामने बड़ा भारी बागीचा दिखाई पड़ रहा था। आगे-आगे वीर लोरिक चल रहा था। पीछे सवालाख बारात थी। बरईपुर के बगीचे में बारात प्रवेश कर गयी। वहां डेरा डाल दिया गया। खाद्य सामग्री खोली गयी, जाजिम बिछा दिया गया। दल बादल, सेना का समूह खड़ा हो गया। सबको सीधा (आटा, चावल आदि) बाटा जाने लगा। गोप और ग्वालों को छोड़ कर सभी रसद पा गये। तब बूढ़े कठईत ने कहा—लड़कों अपने हाथ से बना कर खाओगे या मैं कहीं जा कर अपनी जाति बिरादर खोजूं। जब अहीर लोरिक ने यह बात सुनी तो वह जल कर खाक हो गया। काका, गांव-घर का कोई नहीं बच पायेगा। एक बार तूने गड़बड़ किया था। अहीर स्वयं ही भोजन बनायें। खुद रोटी ठोक कर खायेंगे। कोट भदोखरि गांव था, नगर बरईपुर। वहां का तमाशा देखिये। सभी बाराती भोजन कर रहे थे। खा पी कर संतुलित हो कर जिस समय वे जाजिम पर बैठ गये उस समय पान के बीड़े खुले। सभी वीर मगही पान खाने लगे। कस्बियां और पतुरियां वहां नाचने लगीं। भांड़ चुटकियों पर ताल देने लगे। जेठ का महीना था, आम पके हुए थे। जाजिम पर मालदह तथा लंगड़ा आम गिरे हुए थे। खटिक उनको अगोर रहे थे। गउरा के लोगों ने आम उठा कर मुँह में लगा लिये। खटिक क्रुद्ध हुए और कच्ची पक्की बातें करने लगे, गाली देने लगे। लोरिक ने उन्हें अपने कान से सुना। उसको ये बातें बुरी लगीं। उसने कहा—गउरा के तरुण जवानों, तुम लोग आम को बिखेर दो। पेड़ पर जितने आम पके हुए हैं उन्हें हिला कर तोड़ो और खाओ। जितने कच्चे आम बच रहें उन्हें झकझोर कर धरती पर गिरा दो। दस बीस जवान तैयार हो जाओ तथा पेड़ों को जरा घुमा दो, झटका

लगा दो तथा बगीचे में काठ का ढेर लगा दो। जवान उठे तथा वहां हालत खराब कर दी। खटिक रोने लगे। रोते हुए बरईपुर के राजा की चांदनी पर पहुँचे और कहा—राजा तुम बड़े जबर्दस्त थे। तुमसे अधिक बल वाला कोई नहीं था। आज न जाने कहां से और अधिक शक्तिशाली लोगों ने चढ़ाई कर दी है। उन्होंने बगीचे को तहस-नहस कर दिया है। हम लोग अपने बाल बच्चों का भरण पोषण कैसे करेंगे? तुम्हारा कर कैसे चुकायेंगे। बगीचा रह नहीं गया है। वहां डालियों और काठ का ढेर लगा हुआ है। पेड़ पर पत्ते नहीं रह गये हैं। वहां अहीर का जाजिम गिरा हुआ है। बारात वहां जलसा कर रही है।

अब वहां का हाल सुनिये। कठईत ने खटिकों को जा कर समझाया। उन्हें दुहाई दी। राजा ने यह बात कान लगा कर सुनी। वह अंगरखा, विशेष पाजामा, पैर में त्यौरी, तथा एड़ी में दिल्लीशाही जूता पहन कर तेग लिये हुए तथा झंडा फहराते हुए वहां से चला। जब बारात थोड़ी दूर रह गयी तब उसने डांटना शुरू किया। ऐ बारात वालों तुम कहां के हो? तुम्हारी बारात कहां टिकी हुई है। किसकी जांघ से तुममें बल आ गया है। किसकी भुजा से तुममें ताकत आ गयी है? किसके तालू में दांत जम आये हैं? तुम लोगों ने बगीचे को तहस-नहस कर दिया है। तब मर्द वीर लोरिक बोला, तुरन्त जवाब देने लगा। 'गउरा मेरा वतन है। वही मेरा स्थान है गउरा ही मेरो बुनियाद है। मैंने सुरहुल की चढ़ाई की है। यहां बरईपुर में हमने पड़ाव डाला है। बरई राजा की लड़की हठ में आ गयी। उसने निर्द्वंद्व होकर कहा—किसके दिमाग से तुमने यहाँ पड़ाव डाला और मेरा बगीचा उजाड़ डाला। दोनों तरफ से कहासुनी होने लगी। बात बात में झगड़ा बढ़ गया। शोरगुल होने लगा, पैंतरेबाजी शुरू हो गयी वैसे ही जैसे भादों में भैंसा चिल्लाता है। पैंतरे में मुठभेड़ हो गयी तथा धीरे-धीरे हमले की नौबत आ गयी तब मर्द लोरिक ने सूबा बरइनि से कहा—मैं पहले वार नहीं करूंगा पर पीछे चोट करने में चूकूंगा भी नहीं। मेरे गुरु ने शपथ दिलायी है। पहले मारने के लिए हाथ उठाना मेरे लिए कसम है। सूबा बरइनि ने तलवार निकाल कर कहा—मैं अभी अहीर का भर्ता बनाती हूँ। अहीर पक्का खिलाड़ी था वह बायें से तिरछे घूम गया। बरइनि की तेग धरती पर गिर गयी। तलवार की मूंठ संभालकर उसने अहीर को मारा। अहीर जमकर आसमान में उछल गया। तेग धरती पर गिर गयी। रानी बरइनि का तीसरा हमला भी खाली गया।

अब वहाँ का हाल सुनिए। लोरिक ने कहा ऐ सूबा बरइनि, तुम मेरी बात सुनो। मैंने तुम्हारी पक्की चोट बर्दाश्त कर ली है, तुम मेरी कच्ची चोट बरदाश्त करो। यह कहते हुए उसने म्यान खिसका कर फेंक दिया। उसने अपनी तलवार संभाली। जब वह चार अंगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। नीचे दावानल फैल गया और पोरसे भर तक लपट मंडराने लगी। बरइनि ने अपनी पलक फेरी। लोरिक का खड्ग बरइनि के सिर पर गिर गया। हे भगवती, तुम धन्य हो,

आदिकाल से ही तुम पूजमान हो। भगवती ने बरइनि की चोली फाड़ दी तथा लोरिक की नज़र पर वह चढ़ गयीं। उसने स्त्री का तन देखा। हाथ जोड़कर उसने भगवती से कहा—माता, तुमने मेरा धर्म बचा दिया। यदि स्त्री जाति मुझसे जूझती तो मेरे वंश का नाम डूब जाता। राजा बरइनि पुरुष वेश में थी अतः उसको पहचानना कठिन था।

अब उस समय और उस घड़ी का हाल सुनिए। जिस समय बरइनि की चोली फटी और उसका सीना दिखाई पड़ा तो लोरिक व्याकुल हो उठा। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? यहाँ आप लोग मेरे धर्म की रक्षा कीजिए। हे दुर्गा। आपकी शक्ति मेरी सहायता करे। स्त्री यहाँ खड्ग लेकर लड़ रही है। मेरा वंश डूब जाएगा। बरइनि ने खड्ग का प्रहार किया उसने लोरिक से कहा - मैं तुम्हारा पिंड नहीं छोड़ूँगी। तुम्हारा प्राण नहीं छोड़ूँगी। मेरा यही प्रण है कि जो मुझे युद्ध में नीचा दिखा देगा वही मेरा पुरुष होगा। मैं उसकी स्त्री हो जाऊँगी। भगवान ने मेरे प्रण की रक्षा कर ली। मैं तुम्हारा पिंड नहीं छोड़ूँगी! तुम्हारे साथ सुरावली नगर चलूँगी। तब लोरिक ने कहा—बरइनि मेरी बात सुनो। मैं तुझे छोड़ूँगा नही। जब मैं सुरहुलि से लौटूँगा। तब मैं तुझे अपने साथ ले लूँगा। सुरहुलि के लोग समझेंगे कि साथ में मैं अपनी बहन को लाया हूँ तब पद समझ कर वे दिल्लगी करेंगे। बरईपुर नगर में भी मेरी बड़ी हँसी होगी। सुरावलि में अयुक्त, असंगत बातें होंगी। लोग कहेगे लोरिक अपनी बहन को संग लेकर बारात में आया है। ऐसा कह कर लोग मेरी निंदा करेंगे। तब बरइनि बोली—मैं इस समय तुम्हारी जान नहीं छोड़ूँगी। मैं भी साथ में सुरावलि चलूँगी। अपने भगुर का विवाह ललकार कर करूँगी। वीर मर्द ने कहाँ - तुम बरईपुर में ही रहो और पान की दुकान करो। जब सुरावलि से लौट आऊँगा और भउजी की डाँड़ी फनवा लूँगा तब तुम्हारी भी डोली निकलवाऊँगा। जेठानी और देवरानी दोनों साथ गउरा गुजरात चलेंगी। लोरिक के इतना कहने पर बरइनि मन मार कर बैठ गयी। अहीर की बारात सज कर बरईपुर गाँव से उत्तर की ओर चल पड़ी। बारात रात में धीरे-धीरे चलती, दिन में दौड़ लगाती। रास्ते में कहीं पड़ाव या डेरा नहीं डालती। बाजे गाजे की ध्वनि के साथ बारात सुरवलि नगर चली जा रही थी। जब थोड़ी दूर जमीन रह गयी तथा बारात सुरवलि गाँव पहुँच गयी तब भीमली कीं नींद शुरू हुई। ६ महीने की उसकी नींद होती थी। अभी भीमली गाढ़ी नींद में सो रहा था तब तक बाजे की तुमुल ध्वनि होने लगी। भीमली का पिता बमरी उस दिन रोने लगा। तख्ते पर मस्तक पटकने लगा। कहने लगा—'हे देव, हे नाराण हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया? मेरा बेटा मेरा शत्रु पैदा हुआ है इसे कुंभकर्ण को नींद लगी हुई है। न जाने कहाँ से सूबा ने चढ़ाई कर दी है। सुरवलि में बाजे बज रहे हैं। सुरवलि का राज्य उन्होंने लूट लिया। मुझसे कुछ कहा नहीं जाता।' बारात चली और शम्भू सागर की भित्ति पर पहुँच गयी। भीटे पर जाजिम गिरा तथा सेना का दल वहाँ खड़ा हो गया। चारों कोने पर गैस

चढ़ा दी गयी। बीच में झूंपू गैस लटका दी गयी। गउरा के लोग वहाँ मंडली बना कर बैठ गये। अब वहाँ का हाल सुनिये। मुरवली में बारातियों का जलसा होने लगा, कस्बिनें और पतुरियाँ नाचने लगी भांड़ चुटुकी पर तान तोड़ने लगे। गउरा के लोग उन्हें घेर कर बैठे हुए थे और मगही पान कूँच रहे थे। भींटे पर जलसा हो रहा था। शत्रु किले में ६ महीने की नींद सो रहा था। तीन महीने आठ दिन बीत चुके थे। अब लोरिक का हाल देखिये। उसने गुरु अजयी से कहा—गुरु तुमने कहा था कि चलकर विवाह कराऊँगा और सतिया की डोली निकलवाऊँगा। पर यहाँ तो तीन महीने बीत चुके हैं। अभी तक कुछ आहट ही नहीं मिल रही है। कब खेत पर शत्रु जायेंगे। कब झगड़े का निपटारा होगा? हम तो बहुत कम खर्च लेकर चले हैं। खर्चा कम पड़ गया है। मुरुहुलि तुम्हारी जन्मभूमि है। ज़रा तुम नगर में जाते और खर्चा जुटा लाते। नहीं तो सवालाख बारात क्या खायेगी? तब गुरू अजयी मुरावल गये। मुरावल में प्रवेश करते ही गली से महीचन साह के दरबार में पहुँचे। महीचन ने जब गुरू अजयी को देखा तो बैठने के लिए काली कुर्सी दी तथा झुककर उन्हें अभिवादन किया। अजयी ने हृदय से आशीर्वाद दिया। महीचन ने पूछा—गुरू आजकल तुम्हारा वारा स्थान कहाँ है, तुम्हारी बुनियाद कहाँ है? गुरू ने कहा—जब से मैंने सुरहुल नगर छोड़ा है, मैं गउरा-गुजरात चला गया हूँ। मैंने वहाँ एक गोप ग्वाल को अपना चेला बनाया है उसका प्रिय नाम लोरिक है। बल में भीमली है तो कार्य में लोरिक चतुर है। देवी दुर्गा उसकी पूजमान हैं। वह दुर्गा के ही बल पर चलता है। वह शीघ्र ही शत्रु को मार डालेगा। सतिया का विवाह हम लोग ललकार कर करेंगे। हम गुरू चेला कम खर्च लेकर चले थे। हम लोगों को खर्च दे दो। हमारी सारी बारात खायेगी। जिस समय नगर गउरा में चेला लौटेगा, घर पहुँचेगा तो जोड़ कर सारी पूंजी तुम्हें भेज देगा। गाड़ी और छकड़े पर वह रुपये भिजवायेगा। तब साहु महीचन ने कहा—गुरू, मैं ऐसी स्वीकृति नहीं दूंगा नहीं तो राजा भीमली बहुत बली है। सुनेगा कि मैंने उसके शत्रु को खर्चा पानी दिया है तो मेरे बाल बच्चों को कोल्हू में पेरवा देगा। जब मैं लोरिक का रूप देख लूंगा तब मुझे थोड़ा एतबार होगा। तभी मैं शम्भू-सागर के तट पर लोरिक को खर्चा दूंगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। गुरू अजई ने महीचन से नम्रतापूर्वक कहा—'चेला, मेरी बात सुनो। तुम मेरे साथ अभी चलो। मेरा चेला लोरिक बैठा हुआ है। आगे गुरू अजई चला। साथ में दो चार महाजन भी चले। जब वे शम्भूसागर के तट पर पहुँचे, भीटे पर चढ़े तब साहु महीचन भी ऊपर चढ़ा। जब उसने गउरा के लोगों का दंगल देखा तो उसकी जांघ कांपने लगी, शरीर थर्राने लगा। वहाँ एक से एक लाड़ले है, एक से एक सुन्दर सरदार बैठे हुए हैं, मगही पान खा रहे हैं। महीचन की वहाँ जाने की हिम्मत नहीं हुई। जाजिम के बाहर ही वह डर से काँप रहे हैं। गुरू अजई लोरिक के पास चला गया और कहा—चेला लोरिक तुम मेरी बात सुनो। नौ लाख की सम्पत्ति वाला साहु खड़ा है पर उसकी हिम्मत भीटे पर

चढ़ने की नहीं हो रही है, तुम उसको अपने पास बैठा लो—अजयी ने लोरिक से इस प्रकार कहा। मर्द बीर लोरिक उस वक्त उठा, साहु के पास गया और उसका हाथ पकड़ कर उसे ले आया और अपने पास बैठा लिया। चेला लोरिक बोला—ऐ साहु सुनो। हमारा खर्चा घट गया है।

भावार्थ—(१३०१ –१६००)

गुरू अजयी ने हमें तसल्ली दी। उन्होंने कहा कि सुरवलि में पहुँचते ही सतिया से मलसांवर का विवाह करवाऊँगा तथा उसकी डोली निकलवाऊँगा। पर यहाँ तीन महीने बीत गये। मेरे पास खर्चा कम था सवा लाख बारात यहाँ बैठ कर खा रही है। पास में जो खर्चा था वह घट चला है। साहु तुम मुझे खर्चा दे दो। यहाँ सारी बारात खायेगी। जिस दिन मैं सुरहुलि से गउरा-गुजरात पहुँच जाऊँगा, सब जोड़ कर तुम्हें रकम भेजूंगा। तब साहु महीचन ने कहा—भइया रुपये पैसे की क्या ज़रूरत है। मैं सुरावलि के बाजार को वहाँ घेर कर बैठवा दूंगा। जिसकी जैसी इच्छा होगी वैसा भोजन कर लेगा। जब तुम गउरा पहुँच जाना तब चिट्ठा-पुर्जा जोड़ कर मेरा कर्ज उतार देना। गउरा पहुँच कर जोड़ कर मेरा सारा खर्च भेज देना। ऐसा कह कर महीचन साहु सुरवली में चला आया। गली में जो मुखिया था, मुखबीर था, उसके नाम से डुग्गी पीटवा दी गयी। सुरवलि के बाज़ार मे जितने महाजन हैं सभी सागर के भींटे पर चलें। अहीर की सवा लाख बारात वहाँ टिकी हुई है वहाँ तुम लोग खर्चा पानी जुटा दो, इसमें बहुत लाभ है। इतना द्रव्य मिलेगा कि तुम्हारे बाल बच्चे बैठ कर खायेंगे। डुग्गी पिटवा दी गयी। मुरहुलि का बाज़ार उजड़ गया। सबने जाकर सागर के भींटे को छेंक लिया। राजा बमरी उस दिन रोने लगा। धरती पर सिर पटकने लगा। हाय, मुरहुल की मेरी बस्ती उजड़ गयी। यहाँ बंड़वा सियार रो रहें हैं। तख्त पर सिर पटकते हुए बमरी ने कहा—मेरा बेटा मुद्दई होकर पैदा हुआ है। उसे कुम्भकर्ण की नींद लगी हुई है। यह कहाँ का सूबा आकर टिका हुआ है। इसने सुरवली की बस्ती उजाड़ दी है। मुरहुलि के जो श्रेष्ठ लोग थे उन्होंने सागर के बीच जाकर डेरा डाल दिया है। गाँव में दिन में ही सियार रो रहे हैं। मुझसे कुछ कहा नहीं जाता। स्त्रियों ने भी जाकर वहाँ डेरा डाला है। अपने भरे हुए घड़ों का पानी उन्होंने गिरा दिया है जिससे पानी की धारा बह चली है।

अब यहाँ का हाल सुनिये। गउरा के सरदार घूम-घूम कर सब कुछ देख रहे हैं। लोरिक ने गुरू अजयी से कहा—किसी (ओढ़रा) अपहृत की हुई से झगड़ा लग जाता तो मेरा शत्रु जग जाता तथा खेत पर दो हाथ तलवारें चल जातीं। राम जिसकी सहायता करता उसकी विजय होती। फिर लोरिक ने अभद्र बोली बोलते हुए कहा—ऐ गउरा के लोगों, एक-एक स्त्री पर तीन-तीन आदमी लग जाओ पार कर जाओ। ये हल्ला मचाते हुए भाग जायेंगी तथा किले में आग लगायेंगे। सूबा वहाँ से चढ़ाई करेगा। लोरिक का हुक्म पाते ही जवानों में खलबली मची। कहने लगे—एक-एक स्त्री पर दो-दो तीन-तीन मर्द चढ़ जाओ। सुरवलि की स्त्रियाँ रोने

लगीं। हे देव ! हे नारायण ! यह कहाँ का दुश्मन टिका हुआ है ? उसने हम लोगों की इज्ज़त ले ली है। स्त्रियाँ रोते हुए चलीं। वे किले का रास्ता पकड़े हुए चली जा रही थीं। बूढ़ी और पुरनियाँ स्त्रियों ने कहा—ऐ राण औरतों ! ऐ बेटों को खा जाने वाली स्त्रियों, तुम लोग सुनो। अपने दामादों को जगाने जा रही हो ! अपनी तकदीर ठोको, करम को ठोको। जिस फल को किसी ने नहीं खाया उसको तुम लोगों ने परदेशियों को चखा दिया। तुम लोग भींटे पर लौट जाओ। स्त्रियों ने दल बनाकर सागर के भीटे को छेंक लिया। वहाँ कस्बियाँ, पतुरियाँ चुटकियों पर तान तोड़ रही थीं। सागर पर जलसा हो रहा था अभी उनका शत्रु भीमली नहीं जागा था। दस पन्द्रह दिन और बीत गये। दिन के बारह बजे थे। मुरहुलि के सारे गड़ेरियों ने सागर के भींटे पर अपनी भेड़ें और बकरियाँ छोड़ दी। तब लोरिक ने गउरा के लोगों से कहा—जवानों उठ जाओ तथा भींटे पर फैल जाओ। जितनी भेड़ें और बकरे हैं उन्हें मारकर जंगल में फेंक दो जितनी भेड़ें आदि बची हों उनको मार कर धरती पर फेंक दो। ये साले रोते हुए किले पर जायेंगे और गुहार करेंगे। तब शत्रु जाग उठेगा तथा खेत पर दो हाथ जम कर तलवारें चलेंगी। राम जिसकी सहायता करेगा उसकी विजय होगी। क्षण में झगड़ा खत्म हो जायगा। इधर मूबा बामरी रो रहे हैं। तख्त पर सिर पटक रहे हैं। मेरा बेटा शत्रु होकर उत्पन्न हुआ है। वह कुम्भकर्ण की नींद सो रहा है। इस बीच मुरहुल का राज्य उजड़ गया। सभी लोग सागर के भीटे पर चले गये हैं। यहाँ दिन में वांड़ा सियार रो रहे हैं। राजा बमरी यह कह कर तख्त पर बैठे रो रहा था। मंत्रियों ने उसे बताया तथा चुगुली करने वालों ने उसे समझाया। जब तक दिन और अवधि पूरी नहीं हो जायगी तब तक तुम्हारा बेटा नहीं जगेगा। राजा, तुम सात हाथियों की दँवरी चलवा दो। महावत को उन्हें घुमाने दो। राजा ने हाथियों को मंगवाया तथा दंवरी घुमवा दी। हाथी भीमली के शरीर को रौंदने लगे। दिन पूरा होने को आया। भीमली के शरीर का गठन हलका था। उसने शरीर घुमाया तथा अपनी करवट बदली। फिर तेरह हाथियों को लेकर उसका शरीर रौंदा गया। तीसरे दिन में थोड़ा समय रह गया तब शरीर पर कुछ रेंगने का आभास हुआ। भीमली अंगड़ाई लेकर जाग उठा। उसने चाँदनी पर शरीर के अगले भाग से ऐसी चोट की कि उसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। जब भीमली ने ताल ठोका तो उसकी आवाज़ सागर के भींटे पर पहुँच गयी। सुरहुलि के लोगों ने सुना बारात में बैठे हुए लोग कहने लगे—भाइयों, आज सूबा भीमली जाग गया है। उसने ताल ठोकी है जिसकी आवाज़ सागर के भीटे तक पहुँच गयी है। राजा भीमली ने पिता का रुदन सुना, पिता ने उसे बताया कि मुरावल की बस्ती उजड़ गयी है। मेरा राज्य उजड़ गया है। मुरावल की सारी सम्पत्ति सागर पर छेंक ली गयी है। न जाने कहाँ से आकर वहाँ परदेशी टिके हुए हैं जिन्होंने मुरावल को उजाड़ दिया है। यहाँ दिन में ही पुच्छहीन सियार रो रहे हैं। सूबा बमरी झंख रहे हैं, फूट-फूट कर रो रहे हैं।

जब भीमली ने यह सुना तो वह अपने किले में प्रवेश कर गया। हाथ में

अपनी हजारी ली। कन्धे पर सांग जमा कर रखी तथा जल्दी से सागर पर गया। चार बीघा और जाना था कि वहीं से भीमली कड़क कर बोला—भाई तुम्हारा वतन कहाँ है, तुम्हारा वास स्थान, तुम्हारी बुनियाद कहाँ है ? तुमने कहाँ की चढ़ाई की है ? सुरवली के राज्य को क्यों उजाड़ दिया है ? किसकी जांघ की शक्ति से तुम किले के भीटे पर आ टिके हो। किसके तालू में दांत जमा है कि मेरे शहर को उजाड़ दिया है। भीमली की डांट गउरा के सभी लोगों ने सुनी। लोरिक ने तत्काल जवाब दिया — गउरा मेरा वतन है, गउरा वास स्थान है, गउरा में बुनियाद है। सुरहुलि की मैंने चढ़ाई की है। अपनी जांघ की शक्ति से, अपनी भुजाओं के बल से हम सुरवलि में टिके हुए हैं। भाई सुनो, मेरे ही तालू में दांत जमे हुए हैं। मैंने ही बस्ती उजाड़ी है।

अब वहाँ का हाल सुनिये। दोनों के बीच कहा सुनी शुरू हो गयी। भीमली ने कहा—ऐ दक्षिण के राजा मेरी बात सुनो। जिस ओर से चाहो हाथ मिला लो और बल की परीक्षा कर लो। लोरिक नम्रतापूर्वक बोला—चाहे कुश्ती मे हाथ मिला लो। चाहे युद्ध में हाथ का अंदाज़ ले लो। जब लोरिक ने यह बात कही तो भीमली ने अपनी हजारी सांग फेंकी। ताल ठोका। लोरिक ने भी अपनी बिजुली वाली तलवार फेंकी। दोनों ने खेत पर ताल ठोक दिये तथा पैंतरेबाजी करते हुए दोनों लड़ गये। जिस समय भीमली ने दाव मारा अहीर धरती पर गिर पड़ा। लंगड़ी दाव मारकर मल्ल भीमली ने जबर्दस्त कुश्ती छेड़ दी। लोरिक की हड्डी तड़-तड़ तड़कने लगी। तब धरमी भइया संवरू दौड़े। उन्होंने भीमली को नीचे कर दिया तथा झगड़ा निपटा दिया। दोनों मर्द अलग-अलग हो गये तथा अपने हथियार ले लिये। दोनों खेत पर पैंतरा करने लगे जैसे भादों में भैंसा चिल्ला रहा हो। वे ऐसा पैंतरा कर रहे थे कि उससे पेड़ के सभी पत्ते जो आगे पड़ते थे गर्द में मिल जाते थे। सूबा भीमली ने कहा—लोरिक मेरी बात सुनो। जब मैं तुम्हारे वार में आ जाऊँगा तब तुझे मार डालूंगा। मर्द वीर लोरिक ने कहा—भीमली तुम मेरी बात सुनो—मैं पहले चोट नही करूंगा। न पीछे से चोट करूंगा। मेरे गुरू ने शपथ दिलाई है। मेरे लिए यह हराम है। इतना सुनते ही भीमली ने ललकार कर हजारी सांग खींची तथा अहीर के सिर की ओर आघात किया। माता भगवती तुम धन्य हो। उन्होंने आंचल फैला दिया। वह अहीर के साथ धरती पर गिर पड़ीं। लोरिक फिर सामने खड़ा हो गया। भीमली ने दूसरा वार किया और लोरिक की कमर में मारा। लोरिक गउरा का खेला हुआ मर्द था। वह बांये से थोड़ा तिरछे हो गया। फिर भहरा कर गिर पड़ा। इस प्रकार उसने दो हमले निरस्त कर दिये। जब सूबा ने तीसरी बार हमला किया तब लोरिक ने अपनी ढाल (ओड़न) संभाली। इस प्रकार तीन हमले हो चुके। लोरिक ने तीनों हमलों को विफल कर दिया। उसने कहा—ऐ सूबा, तुम्हारी पक्की चोट मैंने बर्दाश्त की अब तुम मेरी कच्ची चोट बर्दाश्त करो। उसने म्यान से तलवार निकाल कर म्यान फेंक दिया और अपनी दस्तगी तलवार तान ली। तलवार चार अंगुल बाहर

हुई तो उसकी आवाज आकाश में गूंज गयी। नीचे दावानल फैल गया तथा पोरसे भर तक लपट भभकने लगी। उस समय भीमली की पलक घूमी और उसकी गर्दन पर तलवार गिर गयी।....सती चाँदनी पर सिर पटकने लगी। हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा आपने मेरे ललाट में क्या लिख दिया ?

भावार्थ—(१६०१—१८००)

इस सागर पर कहाँ से दुश्मन आ गये ? ये सारे राज्य को उजाड़ रहे हैं। मेरी दाहिनी बाँह टूट गयी। मेरी अकेली ज़िन्दगी बच गयी। मेरे भाई सागर पर जूझ गये। सतिया ने वहाँ से प्रस्थान किया तथा अपने सत का स्मरण करने लगी। माया की उसने पिटारी (झंपोली) खोली। जिस समय उसने सत का बीड़ा उठाया वहाँ छत्तीस नाग उठ कर खड़े हो गये। सतिया ने उनसे कहा—तुम लोग इस पिटारी को छोड़ो तथा सागर के तट पर जाकर फैल जाओ। घूम-घूम कर बारात को डंस लो। जैसे मेरे भाई कट गये वैसे ही गउरा के सभी लोग मर जायं। दुर्गा तुम धन्य हो। आदिकाल से ही तुम पूजमान हो। लोरिक ने कहा—हे देवी ! तुम्हारे ही बल और पौरुष के सहारे मैंने इस दारुण देश मे आया। देवी, तुम मुझे पाठ दो, शिक्षा दो। मेरी सवा लाख बारात गायब हो गयी। दुर्गा ने एक लड़की का रूप धारण किया तथा रत्नजटित घांघरा पहन कर उसकी दाहिनी बांह पर छमकने लगीं। कहा—ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरे प्रिय लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। सवा लाख बारातियों के शरीर को अपनी शक्ति से बटोरो और मिट्टी की निगरानी करो। दिन में कुत्तों और कौवों को हांको तथा रात में पूंछ कटे सियारों को। मैं सतिया की चांदनी पर जा रही हूं। मैं उसकी मति फेर दूंगी। आधी रात ढल जाने के बाद देवी भगवती उड़ी और इधर-उधर घूम कर दरवाज़े के अन्दर प्रवेश कर गयी और दरवाज़े को बन्द कर दिया। अन्दर सतिया कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह नम्रतापूर्वक बोली—क्या तुम ठग हो ? चोर हो ? शहर के गुण्डे हो जो आधी रात ढलने के बाद यहाँ लड़ रहे हो, शोर कर रहे हो तथा मेरा दरवाज़ा पीट रहे हो। तब भगवती जो लोरिक की पूजमान थीं, बोलीं—ऐ सती, तुम मेरी बात सुनो। मैं न तो चोर हूँ और न तो बदमाश हूँ, न तो शहर का गुण्डा हूँ। मैं तो लोरिक की माँ दुर्गा हूँ मैं आदि युग से उसकी पूजमान हूँ। तुम्हारे ही कारण मैं यहाँ चढ़ आयी हूँ। सवा लाख बारात नष्ट हो चुकी है। सतिया नम्रता पूर्वक बोली। ऐ भगवती सुनो—यह बात साफ़ है, हम माँ की दो सन्तानें थीं। भाई बहन का दोनों का जोड़ा था। भइया भीमली जूझ गये। मैं अकेली हो गयी। मुझसे गुस्सा संभाला नहीं गया। मैंने सत को पुकारा। तब पिटारी बिखर गयी। नागो को मैंने हुक्म दे दिया। ऐ देवी, तब नाग उस समय छत्तीस की संख्या में हो गये वे सागर के तट पर घूमने लगे तथा सवा लाख बारात को उन्होंने क्षत कर दिया। लोरिक अकेला बचा है और उसके बदन पर माँ दुर्गा हैं। जब नाग ने लोरिक की ओर फण ताना, आग कड़की। नाग ने अपना फण खीच लिया। बातों बातों मे सतिया ने दुर्गा को भ्रम में डाल दिया तथा उसने अपना सत

प्रकट किया। दुर्गा ने अपनी शक्ति बढ़ाई। सतिया के सिर पर चढ़ गयीं और उसे वश में कर लिया। पूज्य दुर्गा कहने लगीं—ऐ मंदाकिनी की भाँति पवित्र सती, तुम सुनो। यहाँ मेरी बात मानो। तुम्हारे कारण यहाँ मेरी सवा लाख बारात मर गयी है। यदि तुम इतनी बारात को नहीं जीवित करोगी तो तुमको बहुत अपराध लगेगा। और यह अपराध युग-युग तक तुम्हारे हाथ से नहीं छूटेगा। हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारे लिए बन्धन हो गया है। अब सती का हाल सुनिये। उसने नम्रतापूर्वक कहा—जो अमर सिंदूर है और जिसे ब्रह्मा ने मुझे दिया है, वह सात समुद्र के पार, जहाँ वह रखा हुआ है। वहाँ अगिया-कोइलिया मौसी हैं। उनके हाथ में मेरा सिंदूर है। वहाँ बत्तीस गाँव का भण्डार है जिसमें मेरा सिंदूर रखा हुआ है। कौन इतनी युक्ति करेगा ! ऐ दुर्गा, मेरा विवाह कैसे सम्पन्न होगा ?

अब वहाँ का हाल सुनिये। माँ दुर्गा प्रकट हुईं। एक ओर देवी भगवती बैठ गयीं दूसरी ओर सती बैठ गयी। उन्होंने सती की मति फेर दी। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मंदाकिनी की भाँति पवित्र सती, अपना सत तुम बटोर लो। जो तुम्हारे छत्तीस नाग हैं उनको तुम हुक्म दे दो। उन्होंने बारातियों की जाँघों में जहाँ-जहाँ दंश किया है वहाँ से वे विष निकाल लें। अहीर की बारात जीवित हो उठे। सागर के भींटे पर वह संतुलित हो जाय। सती ने अपना पिटारा उतारा, सत का स्मरण किया। नाग फुफकार कर उठे। सती ने उनसे कहा—तुम लोगों ने जहाँ-जहाँ दंश किया है, वहाँ से खींच कर बारातियों का विष निकाल लो। नाग इधर-उधर फैल गये। बारातियों का विष निकाल लिया। गउरा के सब लोग उठ कर बैठ गये। जवान लोरिक आश्चर्यचकित होकर कहने लगा—माँ ! शत्रु इस प्रकार सागर पर लग गये कि मैं नींद में विभोर होकर सो गया। तब माँ दुर्गा जो आदिकाल से ही पूजमान हैं बोल उठी—ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरे प्रिय लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। जैसी नींद में तुम सोये थे वैसी नीद में तुम्हारा शत्रु सोये। अब सिंदूर लाने कौन जायेगा ? बारात की देखभाल कौन करेगा ? दुर्गा ने कहा—यहाँ तुम्हारी सवा लाख बारात को पहरेदार संभालेंगे। तुम अमरपुरी में सिंदूर लेने चले जाओ। तुम्हारे साथ मेरी शक्ति है। तब अहीर अपना अंगरखा पहनने लगा पैर में तंब्रान (पाजामा) बदन में तरकश तथा डोरी संभाली। पैर में जूता डाला, साठ गज़ का दुपट्टा लिया। अपनी पेटी संभाली। छप्पन पेंचों वाली छूरी और कटार ली। बगल में तलवार लटकायी तथा मुलायम नरमा की पगड़ी धारण की जिसमें मेघडम्बर छत्र लगा हुआ था। सबसे ऊपर कवच था जो नौ मन लोहे का बना हुआ था। बायें हाथ में ओड़न तथा उसके दाहिने हाथ में तलवार थी। वह चलते-चलते समुद्र के पास पहुँचा। वहाँ कदम के पेड़ की छाया में बैठ गया। ऊपर हंस-हंसिनी का घोंसला था। वहाँ पेड़हरियां नामक नाग भी था। वह हर दिन पेड़ पर चढ़ता था। जिस समय वह कदम के पेड़ पर चढ़ रहा था लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। मर्द वीर उठा। हाथ में तलवार खींची। फिर डांट कर उसे मार दिया। नाग वहाँ से खिसक कर गिर पड़ा।

अब वहाँ का हाल सुनिये हंस और हंसिनी दिन भर चुन कर संध्या को अपने घोंसले में बच्चों के यहाँ आने लगे । हंस हंसिनी ने घोंसले में आकर अपने बच्चों से पूछा—बच्चों आज तुम क्यों खा नहीं रहे हो ? बच्चों ने हंस हंसिनी से पूछा—पहले यह बताओ कि तुम्हारे आगे कौन है ? हंस हंसिनी ने कहा—बच्चों, हमारी बात सुनो । रात को अण्डे बच्चों की सेवा करके हम लोग चले गये आज जब लौट कर हम लोग आये तो तुम लोगों को ममता से हीन निर्मोह देख रहे हैं । आज क्या बात हो गयी है कि घोंसलों में ज़रा भी मोह-ममता नहीं है । बच्चों ने कहा—माँ ज़रा नीचे देखो । हंस और हंसिनी ने नीचे देखा । वहाँ नीचे पल्थी मार कर एक मर्द बैठा हुआ है । जो नाग अण्डे और बच्चों को खा जाता था वह दो टुकड़ों में होकर गिरा हुआ है । हंस हंसिनी उड़ कर बाजार गये । एक दूकान से मिठाई का थाल अपने चंगुल में भर लाये । फिर लोरिक के पास जाकर कहा—भइया, तुम पहले भोजन कर लो तब हमारे अण्डे बच्चे खायेंगे । बीर लोरिक भोजन करने लगा उसके बाद बच्चों ने खाया । हंस हंसिनी ने लोरिक से कहा—भइया, सुनो । तुमने हमारे साथ बड़ी नेकी की है । तुम हमसे कुछ वर माँग लो । बीर लोरिक ने कहा—पक्षियों मेरी बात सुनो । तुम्हारी जाति पक्षी की है । तुम लोग कौन सा वर दोगे । हंस हंसिनी ने कहा—जो कुछ तुम्हारी माँग होगी हम पूरा करेंगे । लोरिक ने कहा—सात समुद्र पार जहाँ अगिया और कोयलिया हैं वहाँ बत्तीस नगर हैं उसमें सोहाग का सिंदूर है, मुझे उसे लेने जाना है । तुम लोग हमें उस पार कर दो । हंस हंसिनी ने कहा—भइया अहीर लोरिक सुनो । पत्तों के सात दोनों में माँस रखा जायगा और हमारे साथ चलेगा । लौटते समय भी सात दोनों में मांस चढ़ेगा । चौदह दोने मांस का प्रबन्ध करो तब हम तुम्हें पार डका देंगे । बीर मर्द उठा । उसने नाग की बोटी गोटी काटी । तेरह दोने तैयार हो गये । पर एक दोना मांस घट गया । हंस-हंसिनी दोनों अहीर के पास गये उन्होंने वहाँ अपना डैना फैला दिया । उस पर मांस रख दिया गया । अहीर बीच में बैठ गया । उसने हाथ में बिजली का तलवार रखी थी । पक्षियों ने वहाँ से उड़ान भरी तथा उसे पार डँका दिया । सात हिस्सों को पार करा कर लोरिक को पक्षी कदम के वृक्ष पर लाये । बीर लोरिक वहाँ से उतरा तथा रेती में चला गया । वहाँ अगिया और कोइलिया बहिनें थी । वहाँ झूला पड़ा हुआ था दोनों मौज में गीत गा रही थीं । लोरिक ने जाकर उन्हें झुककर सलाम किया । वहाँ रात में कुररी पक्षी आश्चर्य प्रकट करने लगी, दांतों तले अंगुली दबाने लगी ।

भावार्थ—(१६०१—२२३३)*

अहीर ने वहाँ डाइनियों से मेल कर लिया । दोनों अहीर के साथ ठहर पर भोजन करती थीं । इस प्रकार दस पाँच दिन ही रह गये तब उन्होंने लोरिक से

*त्रुटि सुधार—पृष्ठ २२० पर लाइन नं० २१०० के स्थान पर ३००० मुद्रित है यहाँ से पृष्ठ २२४ तक लाइनों का क्रम सुधार कर पढ़ें ।

कहा—ऐ भइया, परदेसी सुनो। तुम यहाँ चारो ओर बहुत घूमे। चलो, अब नाव पर आनन्द से बैठें स्नान करें। लोरिक ने उनसे कहा—मैं रास्ते में बहुत थक गया हूँ। नाव पर स्नान करने नहीं जाऊँगा। मैं यहाँ रामरसोई बनाऊँगा। तुम लोग स्नान कर आओ। दोनों बहनें डोंगी लेकर स्नान करने चली गयीं। वे समुद्र में नौका-बिहार करने लगीं। इधर लोरिक भंडार में प्रवेश कर गया। उसने सिंदूर उठा लिया तथा उसे लेकर कदम्ब के वृक्ष पर चला गया। हंस-हंसिनी उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने एक धारा पार किया, फिर दोने का मांस खाया। दूसरी धार को डाँका, फिर मांस खाया। इसी प्रकार तीसरे दोने का मांस छक कर खाया चौथे, पांचवे तथा छठे दोनों का मांस खाकर वे आगे बढ़ती रहीं। जब सातवीं धारा में आयीं तब उन्हें बड़ी भूख लगी। उनका मुँह सूखने लगा। लोरिक ने पूछा—इस बीच समुद्र की धारा में क्या तुम लोग मेरा प्राण ले लोगे। हंस हंसिनी ने कहा—हमें थोड़ी भूख लगी है। इस कारण हम तीनों समुद्र में गायब हो जायेंगे। तब लोरिक ने जेव में हाथ डाला, चाकू निकाला तथा उसी वजन का मांस (अपने शरीर से) काटा। हंस हंसिनी ने उसे खाया और लोरिक को धारा के पार करा दिया। लोरिक समुद्र पार होकर बारात की ओर चला। घण्टा-पहर भर में वह शम्भू सागर के तट पर पहुँच गया। माँ भगवती उसको देख रही थीं। वह मुँह फाड़कर, खंखार कर उसके पास दौड़ी। उन्होंने चेले की जांघ चाट दी वह यथा पूर्व हो गयी। लोरिक ने कहा—ऐ मुरहुलि के लोगों, मेरा हुक्म लेकर जाओ और बमरी से कह दो कि वे जल्दी अपने दरवाज़े पर विवाह का इन्तज़ाम करें। मेरी बारात दरवाज़े पर लगेगी। वे अहीर के पांव की पूजा ठीक से करें। सूबा बमरी तख्त पर बैठे हुए मगही पान खा रहे थे। धावन उसी समय वहाँ पहुँचा। बमरी ने कहा- धावन मेरी बात सुनो। मेरी जाति क्षत्रिय की है। वह अहीर ग्वाल है। मैं अहीर के पांव की कैसे पूजा करूँगा? मैं (सतिया की) शादी कैसे करूँगा? यह बात सुनकर धावन शम्भू सागर पर लौट आया तथा लोरिक को बमरी का हुक्म सुना दिया। अहीर लोरिक ने धावन से कहा कि जाकर उन्हे समझा दो। यदि वह ठीक से पांव पूजा करेंगे तो उनको प्राण दान मिलेगा। नही तो मैं अपनी दोगाही तलवार खीचूंगा तो उससे बमरी को दो भागों मे काट कर ढेर कर दूँगा। लोरिक ने हुक्म दिया—ऐ मेरे सवा लाख बारातियों, तुम लोग अपना सामान कस लो। शक्ल-सूरत, ठाट-बाट बना लो। चलकर बमरी के यहाँ द्वारचार करो। सारे मर्द तारों की भाँति चमक उठे। लोरिक सागर पर चाँद की भाँति उगा हुआ था। अहीर ने हुक्म दिया। बारातियों, बमरी के द्वार पर चढ़ चलो। ऐ बाजा बजाने वालों, सुनो। तुम लोग ऐसी लकड़ी बजाओ, ऐसी ध्वनि निकालो कि मुरहुलि नगर में कोलाहल फैल जाय।

अब बांठा का हाल सुनिये। उसने आजाद होकर लकड़ी बजानी शुरू की। चमारों ने लकड़ी बजाना, बाजों पर ध्वनि निकालना शुरू कर दिया। सात रंगों का बाजा बजना शुरू हुआ। उस समय पृथ्वी डगमगाने लगी; विष्णु लोक कांपने

लगे। बारात द्वार पर लगी। ठाट से द्वारचार होने लगा। पाँव पूजा होने लगी। सतिया की माँग में सिंदूर पड़ गया। अहीर का विवाह ठाट से सम्पन्न हुआ। तब फिर अहीर बीर लोरिक बोला—ऐ ससुर बमरी, हम खिचड़ी और भात की रस्म एक साथ सम्पन्न करेंगे। तब रुखसदी होगी। मुहूर्त आ गया है। बारात शम्भू सागर पर जाकर मण्डली बनाकर बैठ गयी। मुरहुलि में जलसा होने लगा। कस्बिन और पतुरिया नाचने लगीं। भांड़ चुटकी पर ताल देने लगे। सूबा बमरी के यहाँ रसोई तैयार हो गयी। बारात में आज्ञा कर दी गयी कि जितने गोप और ग्वाल हैं वे उठकर खिचड़ी खायें। सभी काम एक साथ निपट जाय तब विदाई होगी।

अब वहाँ का हाल देखिये। अहीर खरभरा कर उठे। गोप और ग्वाल वहाँ से चले। अब दूल्हा सांवर खिचड़ी और भात खाने चलेंगे। गउरा के जवान उठे। गोप आँगन में पहुँच गये। अहीरों का पत्तल बिछ गया। सोलह प्रकार के सामान पत्तल पर गिरने लगे। सब लोग मंडली बना कर बैठे हुए थे। बीच में आग रखी हुई थी। कटोरों में सब्जियाँ रखी हुई थी। पानी आदि भी हाथ मुँह धोने के लिए दे दिया गया। तब चौधरी ने कहा—पंचों, कोर उठाओ, सीताराम करो। अहीर गर्दन झुका कर भोजन करने लगे। खिचड़ी-भात खा कर, हाथ मुँह धोकर वे मगही पान खाने लगे। ऊपर से सूर्ती और सोपारी ठोंकने लगे। मुरहुलि मे जलसा हो रहा था। लोरिक ने भी भोजन कर लिया था। उसने बमरी से कहा—ऐ मेरे ससुर, देखो, सायत आ गयी है। सतिया की विदाई इसी क्षण कर दो। मुहूर्त की घड़ी में हम लोग प्रस्थान कर देंगे तथा दक्षिण की ओर चल देंगे। तब धरमी की विदाई होने लगी। सावर बमरी के दरवाजे पर गये। जितने लोग बमरी के अपने थे वे पाँव लगी करने गये, प्रणाम करने लगे। धरमी सावर ने भी बमरी को प्रणाम किया। बमरी ने उन्हें हृदय से आशीर्वाद दिया। तुम लाख वर्ष जीवित रहो। तुम्हारा शरीर, तुम्हारी जाँघ बढ़े। उन्होंने साठ मुहरों का हार संवरू के गले मे पहना दिया पाँवलगी और आशीर्वाद के बाद सतिया की डोली उठी। आगे-आगे सतिया की डोली चली। पीछे पीछे बारात चली। सभी लोग रात को चलते रहे, दिन में दौड़ते रहे। कही उन्होंने डेरा नही डाला, न विश्राम किया। चलते चलते वे बरईपुर पहुँचे। वहाँ गद्दी से बरइनि उठी। वह मगही पान बेच रही थी। लोरिक से उसने ललकार कर कहा—ऐ मेरे सैंया, ऐ मुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मालिक, यही तुमने बात दी थी, यही तुमने करार किया था कि जिस दिन मुरहुलि से भउजी की शादी कर लौटूंगा और गउरा जाते समय बरईपुर में जब बारात आयेगी तब मैं तुम्हारी डोली ले चलूंगा। दोनों डोलियाँ गउरा गुजरात चलेंगी। तब बीर अहीर लोरिक ने कहा—बरइनि मेरा कहना मानो। युद्ध गा उठना बैठना है, लाहा लेना ही मेरे प्राण का आधार है। यदि मैं मेहरियों के काम-धाम में फँसू तो क्या करूँगा और क्या खिलाऊँगा? ऐ बरइनि, तुम अपना काम देखो। ढोली का मगही पान बेचो। जब लोरिक ने यह बात कही तो बरइनि की आशा टूट गयी। बारात वहाँ से दक्षिण

चली। रात में बारात चलती रही, दिन में दौड़ती रही। उसने कहीं डेरा नहीं डाला। विश्राम नहीं किया। चलते चलते बारात गउरा पहुँच गयी। गउरा की सीमा पर जब बारात पहुँची तब अहीर वीर लोरिक ने कहा—ऐ बाजा बजाने वाले चमार, सात रंग का बाजा बजाओ। ऐसी लकडी बजाओ कि गउरा में उसकी ध्वनि स्थिर हो जाय। तुम लोग अपना पैसा, कौड़ी, अपनी मजूरी ठोक बजा कर ले लो। उसके बाद मैं बिदायी दूंगा। मैं सब को एक-एक बछिया दान में दूंगा। गउरा में लकडी बज उठी। अहीर के घर तक बाजों की ध्वनि पहुँची। सभी लोग बाहर निकल कर बारात की राह देखने लगे। जब गाँव निकट आ गया तब चारों ओर उज्ज्वल प्रकाश फैलने लगा। सवा लाख बारात गउरा उमड़ती चली आ रही थी। घड़ी भर के भीतर वह दरवाजे पर आ गयी। दूल्हा सांवर पालकी पर चढ़ गये। परिछन होने लगा। दूल्हा और दुलहिन उतर कर कोहबर में चले गये। वहाँ पूजा हुआ। उन्हें गुड घी खिलाया गया। कोहबर में दोनों की गाँठ खुली। वर अपने आसन से उठा, सब को प्रणाम किया। फिर बारात में चले गये। खिचड़ी और भात खाया। दो एक दिन घर में रहे। तदुपरान्त मल सांवर बोले · काका मेरी बात सुनो। छः महीने तथा आधा पक्ष सुरवली में बीत गये। मुझे लक्ष्मियों की (गायों) की चिन्ता है। मैं उनके पास जाऊँगा। तब सतिया सत के साथ बोली—ऐ मेरे स्वामी, दूसरे की बछिया यहाँ लाकर तुम अलग क्यों हो रहे हो? मैं भी बोहा में चलूंगी। गायों का गोबर होगा, उपले होंगे। मैं भी गायों से दोनों समय भेंट करूंगी। उस समय दोनों बोहा में चल पड़े। वहाँ जाकर सांवर ने तम्बू तान दिया। सतिया उसमें प्रवेश कर गयी। धरमी स्वयं वहाँ से चल पड़े और जाकर कुश की चटाई पर बैठ गये।

□ □

३. हल्दी—चनवा का उद्धार

भावार्थ—(१—३००)

सुमिरन—गायक कहता है—शाम को संझेश्वरी देवी की पूजा करो। आधी रात में देवताओं से अर्ज करो। भोर में देवताओं के दूतों का स्मरण करो। ये ही तीन धर्म-कर्म के जुअे हैं। हे राम, तुमसे रामायण की रचना हुई। लक्ष्मण ने काशी प्रयाग छोड़ दिया। सीता ने अपना नैहर छोड़ दिया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोड़ा।

गायक कहता है अब उस समय का हाल सुनिये। जब अहीर सुरहुल में गया हुआ था और जब संवरू का विवाह और गौना सम्पन्न हुआ था, उसी समय सेवरिया के साथ चनवा का विवाह सम्पन्न हुआ। वह चनवा को बिजरिया गाँव में ले गया।

गायक की दुर्गा से गायन में सहायता करने की प्रार्थना

हे मैया कंठेश्वरी, हे श्री सम्पन्न भगवान मेरे हृदय में बैठिये। जिह्वाग्र पर, ऐ माँ दुर्गा, भूली हुई कड़ियों को जोड़ दीजिए। ऐ देवी, यदि एक भी शब्द छूट जायगा तो मैं फिर से तुम्हारा नाम नहीं लूंगा। सतयुग में जितनी भी कीर्ति गायी गयी है वह इस क्षण, हे माता दुर्गा, जोड़ दो। तुम्हारी शक्ति को मैं जानता हूँ।

जिस दिन चनवा का गौना हो गया, वह बिजरिया गाँव चली गयी। गौना कराकर सेवहरि चला गया और दुलहिन को उतारा। उसने दूध दूहा, वर्तन उठाया और गायों के अड़ार पर चला गया। अब वेश्या का हाल सुनिये। उसने भोजन की तैयारी की। बुढ़िया सोयी हुई थी। चनवा ने उनसे नम्रतापूर्वक कहा। मेरी बात सुनो। मेरे स्वामी गायों के अड़ार से लौटते होंगे मैं अब रामरसोई बनाती हूँ। सास ने कहा—पुत्री, तख्त पर बैठ कर स्नान कर लो तथा अन्दर जाकर रसोई बनाओ। उस समय सेवहरि मल्ल वापस आ गया तथा दरवाजे पर खड़ा हो गया। घर से वेश्या चनइनी निकली और अहीर के आगे पहुँच गयी। दोनों बर्तन, दोनों छोटे घड़े लेकर सेवहरि घर के अन्दर चला गया तथा दूध को अगीठी पर बैठा दिया।

फिर ज्योनार की तैयारी होने लगी। राम रसोई समाप्त हुई। पानी गर्म करके सेवहरि के पास आया। जब अहीर ने गर्म किया हुआ पानी देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गया। कहने लगा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया। खौलता हुआ पानी यहाँ रखा गया है। जब यह मेरे शरीर पर पड़ेगा तो मेरा शरीर जल जायगा। मैं तप्त पर स्नान नहीं करूँगा। यह वेश्या मेरी शत्रु हो गयी है। इसने मुझे मारने के लिए यह कार्य किया है। उसने स्नान किया फिर हाथ मुँह धोकर भोजन करने के स्थान पर जाकर बैठ गया। उसने ठहर पर की ज्योनार देखी। बारह प्रकार की तरकारियाँ तथा छत्तीस प्रकार के व्यंजन हैं। दइयंवा की लड़की ने ठाट से ज्योनार बनायी है। सब ठाट देखकर सेवहरि ने कहा—यह आते ही मेरी जड़ के लिए, जीवन के लिए काल बन गयी। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरी तकदीर में क्या लिख दिया ? यह बुजरी, वेश्या मेरे लिए शत्रु हो गयी हैं। लगता है यह मेरी जान ले लेगी। छत्तीस दोने में तरकारी रखी हुई है। न जाने किसमें इसने विष डाल दिया है। मैं किसमें का विष खा जाऊँगा तथा क्षण में ही पीढ़े पर उलट जाऊँगा। मल्ल सिवहरि ने कहा—ऐ बुजरी वेश्या चनइनी, तुमने इस प्रकार से क्यों बनाया है। मैं तो बासी भात का खाने वाला हूँ। रोज बासी मट्ठा खाता हूँ। तुमने छत्तीस दोने में विष रखा है। न जाने कौन मुझे मीठा लगेगा। कोई दोना मैं उठाकर खा लूंगा और सहज में मेरी ज़िंदगी चली जायगी। तुम मेरे घर में शत्रु आयी हो। चनवा ने कहा—घर में खुशी बिखेर कर दो चार कौर भोजन कर लो। अहीर ठहर से उठ गया। उसने हाथ मुंह धो लिया। फिर वह आँगन में चला गया। कम्बल बिछा लिया तथा बीच आँगन में सो गया।

अब चनवा का हाल सुनो। उसने अपनी सासु को बुलाया। सास पतोहू ने मन भर कर भोजन किया। भोजन करने के बाद चनवा ने सास का पलंग लगाया और उस पर उन्हें सुला दिया। फिर उसने अपना बिछौना ठीक किया, धोती का काछ बांधा तथा सीधे आंगन में चली गयी जहाँ मल्ल सिवहरि सो रहा था। उसकी गर्दन में हाथ लगाया और उसे उठा दिया। उसे ले जाकर पलंग पर लेटा दिया। मल्ल सिवहरि सो गया। इधर चनवा आभरण ठीक करने लगी। फिर आरती सजाकर सिवहरि की शैय्या पर चली गयी। थोड़ी रात रह गयी, भोर के झुटपुटे में सिवहरि उठा तथा दूध दूहने वाला बर्तन लेकर गायों के अड़ार पर चला गया। अड़ार पर चरवाह के छोटे-छोटे बच्चे थे। उन्होंने सिवहरि से कहा—ऐ मालिक, हमें भूख लगी है, (बट) बर के पके हुए फलों को आप हमें खिलाइये। सिवहरि बर (बट) के पेड़ पर चढ़ गया। खोद खोद कर फलों को गिराने लगा। लड़के चुन-चुन कर फलों को खाने लगे। जब वे पूर्ण रूप से तृप्त हो गये तब कहने लगे—मालिक, अब हमसे जबर्दस्ती खाया नहीं जायगा। इधर वेश्या चनैनी निकल कर आँगन में खड़ी हुई। उसने सास से कहा—हे अम्मा, हे सासू, आज मैं महल में सो रही थी तो मैंने एक विचित्र सपना देखा। मेरे पिता अचेत हैं और उनको ज़मीन पर उतारा

गया है। मेरे भाई महादेव चारपाई पर पड़े हुए हैं। मैं जल्दी गउरा जाना चाहती हूँ और बाप-भाई का मुंह देखना चाहती हूँ। नही तो मेरे नाम पर कलंक लगेगा। लोग मेरी निंदा करेंगे। सिवहरि की माँ घर से निकली और अपने बेटे के पास बैठ गयी। उससे कहा—दुलहिन भवन में सो रही थी तो उसने विचित्र सपना देखा। उसके पिता सहदेव मरणासन्न चारपाई पर पड़े हुए हैं। उनके भाई महदेव को गउरा में जमीन पर लेटा दिया गया है। जल्दी से दुलहिन को नैहर पहुँचा दो वह जाकर बाप और भाई का मुंह देखे। नहीं तो उसकी बदनामी होगी और हमेशा के लिए उसको कलंक लग जायेगा। माँ की यह बात सिवहरि के हृदय में बैठ गयी। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया ? यह बुजरी मेरी मुद्दई है। यह किसी तरह से यहाँ से हट जाती तो मेरे सिर की बला टल जाती। आगे-आगे चन्दा चली। उसके पीछे सिवहरि चला। वे जंगल में प्रवेश करते गये। दोनों बड़ी तेज़ी से पैर बढ़ा रहे थे। वे बेबरा नदी पर पहुँचे। वहाँ नदी फुफकार रही थी वहाँ कोई नाव या पतवार नहीं दिखाई पड़ रही थी। दोनों तट पर खड़े थे। तब वेश्या चनैनी बोली—हे स्वामी, रात को यह मेरा शरीर तुम्हारा है, दिन में यह शरीर मेरा है। तुम उलट कर पीछे देखते रहो। मैं ज़रा नदी में स्नान कर लूं। रात में मैंने भोजन बनाया दिन में मेरे शरीर की ओढ़नी महक रही है। सिवहरि उलट कर पीछे देखने लगा। तब तक चनवा ने अपनी धोती का काछ संभाला और नदी में ऐसी डुबकी लगायी कि वह आधी नदी पार कर गयी। फिर उसने जमकर डुबकी मारी। उसने कहा—सैयां, मेरी बात सुनो तुमने अपनी गांठ को रोक करके मुझे अपनी पत्नी बनाया। मैं गउरा में तुम्हें धिक्कारूँगी। सिवहरि ने दुख से कहा—हे ब्रह्मा, हे नारायण, तुमने मुझे सारा गुण दिया पर तैरने का गुण मेरे पास नहीं है। नही तो चार हाथ तैर कर मैं नदी के पार हो जाता। और इस भागने वाली का जोश देखता। इतना कह कर वह अपने घर चला गया। चनवा उस पार चली गयी। उस पार पहुँच कर उसने अपनी दो भीगी धोतियों को हाथ में उठाया तथा पानी निचोड़ कर उन्हें सुखाया। हाथ पैर संभाल कर वह वहाँ से भागी तथा जंगल और झाड़ी की ओर आगे बढ़ गयी। जब वह आधे जंगल में चली गयी तब बांठा ने जो वहाँ शिकार खेल रहा था, उसे देखा। उसके पास आठ धनुष थे। वह धनुष के साथ कुत्तों का पीछा कर रहा था। वह हँसते हुए चंदा के पास पहुँच गया और उसका पीछा करने लगा। आगे आगे चनवा भागी चली जा रही थी। पीछे चमार बांठा उसका पीछा कर रहा था। जंगल मे कुछ दूर जाने के बाद जब चनवा थक गयी तब अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए उसने नम्रतापूर्वक कहा—हे चमार, हे मेरे पति, तुम हमारे मालिक हो। मैं तुम्हें छोड़ कर किसी और की नहीं होऊँगी किन्तु आज मैं इतवार का व्रत रख रही हूँ। यदि तुमने मेरी देह में कुछ गड़बड़ी कर दी तो मेरा व्रत भंग हो जायगा। जब चंदा ने यह कहा तब चमार बांठा ने कुछ धैर्य धारण किया। फिर वेश्या चनइनी ने कहा—हे मेरे बांठा, दिन का

थोड़ा समय रह गया है अब मैं यहाँ फलाहार करूँगी । यहाँ तूत का फल फला हुआ है तुम उन्हें उठा कर लाओ । बांठा वहाँ से चला और पेड़ के नीचे पहुँच गया ।

भावार्थ—(३०१—६००)

तोता और चिड़ियों ने चाट कर तूत के फलों को नीचे गिरा दिया था, चमार बांठा ने उन्हें अपने गमछे में बटोर लिया और चनवा के पास पहुँचा दिया । जिस समय बंठवा ने तूत के फलों का कूट लगाया उस समय चनवा क्रोध में जलकर खाक हो गयी । उसने कहा—चिड़ियों का जूठा किया हुआ फल है मैं उससे कैसे फलाहार करूँ ? मेरा व्रत खण्डित हो जायगा । मैं भूखी ही रहूँगी । चनवा ने कहा—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, तुम जूठे फल लाये । आज मेरा व्रत रखना व्यर्थ हो जायगा । तुम पेड़ पर जाओ तथा तूत के फल तोड़ लाओ । जिस समय बांठा तूत के पेड़ पर चढ़ गया उस समय चनवा ने अपना सत-स्मरण करना शुरू कर दिया । उसने कहा—हे गउरा की देवी मैं तुम्हारा सुमिरन करती हूँ । बोहा की देवी कनिका मुरारी मैं तुम्हारा स्मरण करती हूँ । लोरिक की भवानी, मैं तुम्हारा सुमिरन करती हूँ । हे दुर्गा, देखिये मेरी इज्जत चली जा रही है । तब पेड़ की डाली बढ़कर आकाश में चली गयी । डाल से लता निकली और उसने बांठा चमार को लपेट लिया । वह उसी में बंधा रह गया । वेश्या चनइनी वहाँ से भागी तथा सीधे गउरा चली आयी ।

अब वहाँ का हाल सुनिये । चन्ना जब कोस भर आ गयी तब अपने मन में सोचने लगी और कहने लगी—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया ? यदि वह चमार बंधे-बंधे मर जायगा तो हमेशा-हमेशा के लिए हमारा पूजमान बन जायगा । फिर उसने गउरा की देवी को स्मरण किया । बोहा की कनिका मुरारी देवी का स्मरण किया । लोरिक की भवानी का स्मरण किया और उनसे सहायता मांगी कि चमार की बौंड़ (लता) कट जाय । बांठा धरती में भहरा कर गिर जाय । तब दुर्गा ने प्रकट होकर लता का घेरा काट दिया चमार बांठा आकाश में जाती हुई डाली से गिर कर धरती पर आ गया । उसने अपनी धूल झाड़ी । हाथ में धनुष उठाया, तथा चंदा के पीछे-पीछे दौड़ने लगा । आगे-आगे चनइनी चली जा रही थी । जब वह गउरा की सीमा पर पहुँची तो उसे सामने कुछ भेड़िहार दिखाई पड़े । वे भेड़ों का समूह लिये खड़े थे । चमार बांठा वहाँ चिल्लाया । भइया चरवाह सुनो । मैंने शाम को गौना कराया । प्रातः काल मेरी विवाहिता भागी जा रही है । ज़रा तुम उसको आगे जाकर रोको । मैं जल्दी उसके पास पहुँचूंगा । तब वेश्या चनैनी ने कहा—भइया अहीर सुनो । मैं तुम्हारे रोकने से नहीं रुकूँगी । यदि दिन-दोपहर का समय हो जायगा तब तुम्हारे पशुओं को खाज हो जाएगी । उससे तुम्हारी क्षति होगी तथा तुम्हारे बाल बच्चे मरने लगेंगे । तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जायगा । गड़ेरिया तब वहाँ रुक गया । चन्दा आगे चली गयी ।

बांठा ने हलवाहों को आवाज़ लगायी। भइया हलवाह मैंने शाम को गौना कराया और प्रातः काल मेरी विवाहिता भागी जा रही है। ज़रा आगे जाकर उसको रोको। वेश्या चनइनी ने उनसे कहा मैं तुम्हारे रोके नहीं रुकूंगी। किसान खेत पर आयेगा। तुमसे काम के बारे में पूछेगा। जब काम नहीं दिखाओगे तो तुम्हारी हलवाही समाप्त हो जायगी। तुम्हारे बच्चे मरेंगे। इसमें कौन सी अच्छाई है। यह कहकर चनइनी वहाँ से भागी। वह गउरा गुजरात पहुँच गयी। आगे गाँव की सीमा थी। चनइनी को एक बछड़ा दिखाई पड़ा। उसने बछड़े से रो-रोकर कहा—ऐ मेरे बछड़ा पिढ़इया, सुनो। मैं बिजरिया नगर से भागी हूँ। बेवरा नदी पार कर यहाँ आयी हूँ। जब मैं आधे जंगल में आयी तो बांठा आठ कुत्ते तथा नौ धनुष लेकर जंगल में शिकार खेल रहा था। उसने मेरा पीछा किया। मैं आगे-आगे भाग आयी। तुम ज़रा उसको रोको तो मैं किले में पहुँच जाऊँ। इसी बीच बांठा चमार भी वहाँ पहुँचा। जब वह पास आया तो बछड़ा उसकी ओर तेजी से झुका। बांठा चमार भागा। बछड़ा शक्ति लगाकर तेज़ी से उसके पीछे दौड़ा। चनवा इस बीच अपने किले में प्रवेश कर गयी। बाद में बांठा चमार सागर के भींटे पर चढ़ गया। वहाँ साठ पोर का बांस झंडे के साथ गाड़ दिया। तथा अपने हाथ में गुलेल और गोली ले ली। कहने लगा—जैसी जिसकी बाँह है वैसे ही वह दूध से सागर भर दे, नहीं तो साठ पोर के बांस के वज़न के बराबर सोना दे। या चन्दा को विवाह के लिए घर से बाहर निकलवावे। तभी सागर के नींव में पानी पीने दूंगा। वहाँ के राजा सहदेव ने सोलह सौ नौकरानियों को वहाँ भेजा। वे अपने हाथ में घड़े लेकर वहाँ पहुँची। जब वे सागर के भींटे पर पहुँची तब चमार बांठा ने गिन-गिनकर गोली मारनी शुरू की। घड़ों के सतरह-सतरह टुकड़े हो गये। वे सभी राजा के यहाँ पहुँचीं। राजा सहदेव अपनी चांदनी पर बैठे हुए थे। उनसे दो लौंडियों ने जो पनिहारिन का काम करती थी कहा—हे राजा तुम गउरा में बड़े शक्तिशाली थे। तुमसे बढ़कर कोई और दूसरा शक्तिशाली नहीं था। आज तुमसे भी अधिक जबर्दस्त राजा चढ़ आया है तथा सागर के भींटे पर टिक गया है। उसने साठ पोर का बांस गाड़ दिया है तथा पल्थी मार कर वहाँ बैठ गया है। उसका कहना है कि साठ पोर के बांस के बराबर सोना दो या पोखरे के बराबर दूध भर दो या चन्ना को बाहर निकाल कर शादी करवा दो। तभी सागर के नीचे वह पानी पीने देगा। चमार तीन दिन तीन रात तक उपद्रव करता रहा। इधर लोरिक सुरहुल के युद्ध के बाद विश्राम कर रहा था। अपनी विवाहिता के साथ वह कमरे में सो रहा था। बांठा गउरा के सभी कुंवों में हड्डियाँ और गोबर डाल देता था। गउरा का एक ही कुंवा बच रहा था। वह लोरिक के दरबार का कुंवा था। बांठा बड़ा उपद्रव कर रहा था।

इधर राजा सहदेव और उनकी पत्नी ने आपस में बात चीत की तथा प्रातः-काल बहुत तड़के ही रानी को लोरिक के पास भेजा और समझा कर कहा कि जाकर लोरिक से कहो कि वह चमार बांठा को मार डाले तो हमेशा का झगड़ा समाप्त हो

जाएगा। नहीं तो चमार चन्दा को निकाल ले जायगा और भोग विलास करेगा। रानी लोरिक के घर प्रातःकाल पहुँची उनकी छोटी बखरी पीतल की थी। भीतर फलों का ढेर था। सोने से जड़ित उसका पलंग था। लोरिक उस पर सो रहा था। मंजरी उठ कर आँगन साफ कर रही थी तथा दरवाजे की ओर जा रही थी। उसी समय अम्मां सास पहुँची और नम्रतापूर्वक बोलीं—ऐ दुलहिन मांजरि, भइया लोरिक कहाँ हैं ? उनका पता-ठिकाना नहीं लगता। दावन मंजरी ने कहा कि वे अभी पलंग पर सो रहे हैं। उन्हें जगा कर मतलब की बात कर लो। सेल्हिया रानी वहाँ गयी। लोरिक चद्दर ताने शैया पर सो रहा था। उसे रानी ने इधर-उधर हिलाया पर वह कुछ बोल नहीं रहा था। रानी ने चिकोटी काटी फिर भी अहीर का पूत जाग नहीं रहा था। रानी क्रुद्ध हुई। मंजरी के पास गयीं और कहा—दुलहिन बेटा कैसे जागेगा ? मंजरी ने कहा—सास मेरी बात सुनो। धोती तुमने पहन रखी है उसे डाल पर लटका दो और मेरे सइयां के पास सो जाओ तब वह जग जायेगा। रानी ने डाल पर धोती रख दी तथा वह लोरिक के बगल में सो गयी। जब सेल्हिया का बदन छू गया तब अहीर लोरिक जग गया। उसको रोमांच हो आया। उसने सेल्हिया की टांग पर अपनी टांग रख दी। सेल्हिया ने उसे डाँटा—लोरिक तुम बिगड़ गये हो, पागल हो गये हो। तुम्हारा ज्ञान और बुद्धि हर ली गयी है। जिस तन से निकले हो उसको खराब करना चाहते हो। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो हाथ से तलवार खींच ली। बुजरो, मेरी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर क्या विपदा आयी है ? कौन मुसीबत आयी है कि तुम मेरी शैया पर आ कर सो गयी। सेल्हिया ने कहा—मेरी बेटी चनवा भाग कर बेवरा के पार आ रही थी। आधे जँगल में वह आयी तो बांठा चमार की दृष्टि उस पर पड़ी। वह वहाँ शिकार खेल रहा था। धनुष से कुत्तों को मार रहा था। उसने मेरी बिटिया का पीछा किया और गउरा तक आ गया। उसने यहाँ के सारे कुओं में हड्डियाँ और गोबर भर दिया है। सागर का पानी साफ है। वहाँ चमार बैठ कर रखवाली कर रहा है। अन्न और पानी के बिना गउरा के लोग मर रहे हैं। यह तुम्हारा कुआँ इसलिए बचा है कि चमार तुमसे डरता है। तब लोरिक ने सेल्हिया से कहा। तुम अपने घर जाओ। किले का काम देखो। अब सात घड़ी दिन चढ़ेगा। नहाने का समय होगा उस समय मै सागर पर चढ़ाई करूँगा और सागर में स्नान करूँगा।

भावार्थ—(६०१—८००)

मैं देखूंगा कि कौन मर्द रखवाली करता है ? आज ही झगड़ा निपट जायगा ऐ बुढ़िया, तुम घर जाओ। मैं तैयार हो कर दस बजे तालाब पर आऊँगा। सेल्हिया घर लौट आयी। उस समय वीर लोरिक उठा, दिशा-मैदान (शौच आदि) के लिए गया, हाथ-मुँह धोया, कुल्ला किया, जल पान किया। मगही पान खाया, फिर हाथ में एक मिट्टी का पात्र लिया तथा आ कर सागर पर चढ़ गया। टोकरी में झुक-झुक कर पानी भरने लगा। बांठा के कानों में आवाज पहुँची तो वह ललकारने लगा

कहने लगा—हे देव, हे नारायण; हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया। यह कौन है जो अपनी जांघ के बूते पर चढ़ आया है। किसके तलुये में दांत जमा है? वीर लोरिक ने कहा – सागर के इस भींटे पर ऐसा गीदड़ आ गया है कि वह साला हुँवा हुँवा चिल्ला रहा है। बातों बातों में संघर्ष छिड़ गया दोनों वहाँ पैंतरा करने लगे जैसे भादों में भैंसा चिल्लाते हैं वैसे ही वे चिल्लाने लगे। लोरिक ने उस पर वार किया। चमार निकल कर आकाश में उड़ गया आत्म रक्षा करते हुए वह फिर धरती पर आ कर खड़ा हो गया उसने लोरिक पर अपना दाव मारा। लोरिक भी उड़ कर आकाश में चला गया। पुनः पीठ के बल धरती पर आ गया। वह चित्त नहीं हुआ, उसकी पराजय नहीं हुई। लोरिक ने कहा—ऐ मेरे वीर भाई बांठा, मेरी बात सुनो। घंटे भर के लिए झगड़ा बन्द कर दो। मुझे अवकाश दो। मैं जरा पान खा लूं। लड़ाई बन्द हो गयी। अहीर गउरा गया और क्रुद्ध हो कर सीधे गुरू अजयी के घर गया। चुपके से अजयी अपने कमरे में चला गया। लोरिक दरवाजे पर खड़ा हो गया। गुरू अजयी की पत्नी विजवा ने उसे बैठने के लिए काली कुर्सी दी। उसने कहा —हे देवर, तुम्हारे गुरु अजयी घर में नही हैं। वह तुम्हारे जाजिम पर चले गये हैं। तुम्हारा गुरु से क्या प्रयोजन है? ऐ अहीर, तुम बताओ। लोरिक ने कहा—ऐ विजवा धोबिन सुनो। लोरिक की जांघ की शक्ति से गुरु के अनेक गदहे चर रहे हैं। किन्तु गुरु अजयी ने मुझको और बांठा को दोनों को एक ही दाव दिया है। हम दोनों दिन भर लड़ते रहे पर किसी की पराजय नही हुई। यदि मैं अजयी को पा जाऊँ तो दो भागों में खण्डित कर दूं। धोबिन ने कहा—देवर, कुर्सी पर बैठ जाओ। तुमने गुरु अजयी से सभी गुण सीखे। अब एक गुण यहाँ हम से सीख लो। धोबिन कोठरी में गयी और उसने दो बीड़ा पान लगाया। एक बीड़ा उसने अपने मुँह में दबाया और एक बीड़ा लोरिक के हाथ में दिया। वीर लोरिक ने उसे अपने मुँह में दबा लिया। अब विजवा और लोरिक के बीच पैंतरा होने लगा। जब लोरिक ने उस पर वार किया तो विजवा ने उसकी जांघ पर मुँह से पान का रंग फेंक दिया, पिचकारी मार दी। कहने लगी—देखो, कैसे रुधिर की धारा बह रही है? लोरिक उधर देखने लगा। तब विजवा ने उस पर वार कर दिया। उसके शरीर पर हमला हो गया। विजवा ने दस पाँच झाड़ू उस पर और प्रहार किये। फिर समझा कर उसने लोरिक से कहा—ऐ लंवडू देवर! जा कर इसी प्रकार झगड़ा करो फिर धोखे से उस पर मार कर दो। बाद में बिजली की तलवार उस पर गिरा दो। तब क्षण में ही झगड़ा निपट जायगा। लोरिक ने दो बीड़े पान लिये और उन्हें अपनी गाँठ में बाँध लिया। सागर पर आकर खँखारा। बाँठा और लोरिक की जोड़ी वहाँ खड़ी हो गयी। लोरिक ने कहा—आज हमारा तुम्हारा झगड़ा निपट जायगा। दोनों वहाँ पैंतरा करने लगे। दोनों तरफ से एक दूसरे पर हमले होने लगे। अहीर ने खींच कर मुँह से पान की पिचकारी मारी और कहने लगा—भाई बांठा, मेरी बात मानो। हम और तुम पैंतरा चाल चल रहे हैं। तुम्हारी जाँघ से खून की

धारा कैसे फूट कर बह रही है। बांठा उलट कर जाँच देखने लगा। इसी बीच लोरिक ने बिजली की तलवार खींची और बांठा पर प्रहार कर दिया। उसके हाथ कट गये। वह धरती पर भहरा कर गिर पड़ा। लाश ने गिरते हुए कहा—ऐ गुरु भाई सुनो। मेरी बात मानो। आखिर तो तुमने मुझे मार ही दिया एक बुंद तुम मुझे पानी पिला दो। लोरिक सीधा आदमी था। वह सागर में चला गया और दोनों हाथों से पानी उठाने लगा। इधर बांठा ने बायाँ हाथ फैला कर हाथ से एक हड्डी खींची और अहीर पर प्रहार कर दिया। अहीर पानी ले कर आ रहा था। उसका दाहिना पैर टूट गया। बांठा अहीर की गर्दन काटने को तैयार हो गया। तब माँ दुर्गा उधर झुकीं। अहीर को लेकर उड़ीं तथा गाँव की सीमा के बाहर चली गयीं। उनकी अंगुली में अमृत था। उससे लोरिक का शरीर उन्होंने .सामान्य) सम-तूल कर दिया। इधर चनवा ने बांठा चमार को गिरते हुए देखा तो वह चाँदनी से उतरी। उसकी पगड़ी उतार कर अपने हाथों से उसके दोनों कंधों और बाहों को उसने जोड़ दिया। बांठा का हाथ घूमा और चनवा के स्तन पर चला गया। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। उसने चन्दा को डाँटा और कहा—तुम्हारी जाति वेश्या की है। तुम्हारा सारा परिवार वेश्याओं का है। यदि वह दामाद तुम्हारा सम्बन्धी रहा, हितू रहा तो तुम लोगों ने मेरा उससे झगड़ा क्यों करवा दिया? मैंने उस गुरुभाई को काट दिया। उसकी मृत्यु हो गयी। लोरिक वहाँ से चला और अपने घर के दर-वाजे पर आ गया। तब चौधरी ने गाँव में न्यौता घुमाया। सारे अहीर और उनके परिवार एकत्र हुए। महफिल मण्डली बना कर बैठ गयी। जब राजा सहदेव और महदेव वहाँ पधारे। मुखिया चौधरी ने जो जाति बिरादरी के रक्षक थे, कहा—ऐ अहीरों सुनो। तुम लोग यहाँ बैठो तो सवाल हल हो जाय। उन्होंने सहदेव से कहा—तुम्हारा काम राजा का है। हे राजा, मैं इस जाति का चौधरी हूँ। तुम्हारी लड़की चमार के साथ आयी है। उसको माँस खाने का पाप लगा है। तुम शपथ लो तथा कथा पुराण सुनो। भाई बन्धुओं को निमन्त्रित करो। उन्हें कच्चा-पक्का भोजन बना कर खिलाओ तब तुम्हें बिरादरी में रहने दिया जायगा। जब चौधरी ने यह बात कही तो राजा सहदेव ने यह दण्ड मन्ज़ूर कर लिया। शुक्रवार का दिन तय हो गया। उन्होंने कथा-पुराण सुना। शपथ ली। सभी जगह निमन्त्रण बाँटे तथा दरवाजे पर जाजिम बिछवा दिया। भारी संख्या में वहाँ गोप और ग्वाल एकत्र हुए। वहाँ चावल के माँड़ की नदी बह गयी। लोरिक भी वहाँ आया। आगे आगे कठईत थे। उनके पीछे संवरू थे। सरदार लोरिक पीछे था। जब उन्होंने अहीरों का हाल देखा कि वे जूठे माँड़ में डूबे जा रहे हैं तो कठईत का मन खिन्न हो गया। उन्होंने कहा कि चार कौर भोजन के लिए कौन धर्म गँवाये? सहदेव के यहाँ हम भात नहीं खायेंगे और न हम माँड़ में पैर ही रखेंगे। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो उसने काका को बायीं काँख में दबा लिया तथा दाहिने अपने भाई सांवर को दबा लिया फिर उछल कर उस पार जा कर खड़ा हो गया। चाँदनी से चनवा

इसको देख रही थी। वह आश्चर्य चकित हो गई। हे दैव, हे नारायण, लोरिक गउरा में कर्णधार बन गया, नेता बन गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर वहाँ मण्डली बना कर बैठे हुए थे। बीड़ी और तमाखू वहाँ रखा गया था। जाजिम पर फर्शी हुक्का भी रखा गया था। अहीर गड़गड़ा नामक बड़ा हुक्का खींच रहे थे। बुटवल का गाँजा वहाँ एकत्र किया गया था। धरमी सांवर चिलम पर दम लगा रहे थे। दरवाजे पर जलसा हो रहा था। जब राम रसोई तैयार हो गयी तब घर के अन्दर से खबर आयी, पुकार हुई पंचों, भोजन तैयार है। चल कर ठहर पर भोजन करो। अहीर हाथ पाँव धोने लगे। आँगन में मुँह साफ करने तथा कुल्ला करने का क्रम चला। मण्डली बना कर अहीर वहाँ बैठ गये। चाँदनी की दीवाल के पास सभी लोग बैठे हुए थे। अन्त में कठईत बैठे हुए थे। इस ओर धर्मी साँवर थे। बीच में लोरिक बैठा हुआ था। सामने झरना की झाँकी थी। चनवा झाँकी से सबको देख रही थी। सोलह प्रकार का भोजन वहाँ परोस दिया गया। पत्तल पर घी भी चला दिया गया। 'सीता राम' हुआ और अहीरों ने कौर उठाया। लोरिक ने अपना कौर टाल दिया फिर कौर सामने लगा। तब खिड़की से चनवा कंकड़ फेंकने लगी। कंकड़ जाकर अहीर के पत्तल पर गिरने लगे। लोरिक लोटे से पानी पी रहा था तथा चाँदनी की ओर देख रहा था। चनवा अपना आँचल खोल कर दिखा रही थी। वह अहीर की चित्त में बसती जा रही थी। लोरिक भोजन कम कर रहा था। और पानी अधिक पी रहा था।

भावार्थ—(८०१—१२००)

चौधरी ने लोरिक को देखा तो कहा—लोटे से वह बहुत अधिक पानी पी रहा है क्या उसने कुछ अधिक कोदो खा लिया है? बूढ़े कठईत ने तुरन्त कहा—यह मेरे कुल का बुरा स्वभाव है कि हम कोदो कम खाते हैं और पानी अधिक पीते हैं। अब आगे का हाल सुनिये। ग्वालों ने खाना खा लिया। मुँह धो लिया तथा तैयार हो कर जाजिम पर बैठ गये। रानी सेल्हिया अब अपने हाथों से पान का बीड़ा लगा-कर सब वीरों को बाँट रही हैं। वीर मगही पान खा रहे हैं। सेल्हिया वीर लोरिक को मार डालने के लिए पान के पत्ते पर सिंहिया (संखिया) विष डाल रही है। वह सोच रही है कैसे शत्रु लोरिक को मार डाला जाय कि उसका बड़ा नाम समाप्त हो जाय। वेश्या चनवा ने यह देखा। वह अहीर के आगे गयी तथा पान का बीड़ा छीन लिया और उसे पास में बँधे हुए बकरे के पास धरती पर फेंक दिया। बकरा उसे चबा गया तथा घंटे-पहर भर में मर कर धराशायी हो गया। अहीर भात खा कर अपने अपने घर जाने लगे। चनवा ने लोरिक से नम्रतापूर्वक कहा कि तुम अपनी वीरता की लज्जा रखो तथा चलो हम पूर्व देश में चलें। चनइनी ने जब यह कहा तो लोरिक मन में हँसा, मुस्कराया। वह वहाँ से घर चल पड़ा और अपना काम-धाम देखने लगा। वह भड़भूजे के यहाँ गया तथा उससे जौ की लाई (बहुरी) तैयार

करवायी। बनियों के पास जा कर गुड़ की छोटी छोटी डलियाँ ले लीं। प्रातःकाल होने पर वह सोलह सौ लड़कों के पास गया और उनसे कहा कि तुम लोग छिवली वन में जाओ वहाँ कांस नामक घास उगी हुई है। वहाँ से कांस की मूठ बना कर मेरे पास लाओ। जितना मूठ घास लाओगे उतनी जौ की लाई (बहुरी) मैं तुम्हें दूँगा। वह स्वयं पलाश के पेड़ पर जाकर बैठ गया। कांस की मूठ से वह रस्सी तैयार करने लगा। उस वक्त चमार के लड़के आकर कहने लगे। ऐ मालिक, हमसे कांस-कुश काटा न जायगा। हम लोग चमड़ा तैयार कर देंगे। लोरिक ने चमार के बच्चों को छुट्टी दे दी। जो रस्सी या बरहा तैयार हुआ उसको लोरिक बांठा के परिवार वालों के पास ले गया। उन्होंने रस्सी को सँवार दिया। उसे लेकर उसने अपने द्वार पर टाँग दिया। उसकी पत्नी मंजरी ने उसे देखा तो उससे पूछा कि इस रस्सी का क्या काम है ? तब लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता तुम मेरी बात सुनो। साँवर भइया का हुक्म हुआ है। उन्होंने मजबूत रस्सा माँगा है। उससे वे बछड़ों को बाँधेंगे और उनके अंडकोश कुटवायेंगे। जब दिन का थोड़ा भाग शेष रहा तो लोरिक रस्सा लेकर महीचन तेली के घर गया। वह बाल बच्चों के साथ ठहर पर भोजन कर रहा था। उसने महीचन से कहा कि इस रस्से में तेल डाल दो। मेरा रस्सा रात भर तेल खायेगा। महीचन ने नम्रतापूर्वक कहा — मालिक मेरे बाल-बच्चे भोजन कर रहे है। तुम रस्से को आँगन में रख दो। खा पी कर जब तैयार हो जाऊँगा तो लोहे के बर्तन में जो तेल रखा हुआ है उसको तुम्हारे रस्से पर गिरा दूँगा। अहीर रस्सा महीचन के आँगन में छोड़ कर घर चला आया।

महीचन के सारे बच्चे रस्से में लिपट गये और उसे ठीक करने लगे। तेली महीचन फूट-फूट कर रोने लगा। प्रातःकाल झुटपुटे में, जब कौवे बोलने लगेंगे तब वीर लोरिक यहाँ आयेगा। यदि रस्से को वह सधा हुआ नहीं पायेगा तो वह खड़ा कर हमें कोल्हू में पेरवा देगा। मेरा निर्बल प्राण उसी क्षण निकल जायगा। उसने अपनी पत्नी से कहा—देखो, यह रस्सा अचल होना चाहिए। यह जुंबिश न खाये। यह कह कर महीचन मध्य रात्रि में रोने लगा। इधर अहीर भोजन कर सो रहा था। मंजरी सोच रही थी। मेरी प्रजा तेली क्यों रो रहा है ? उसके घर में क्या मुसीबत आ गयी है ? वह महीचन के घर गयी। जा कर पूछा— तेली, किस चिन्ता में तुम मध्य रात्रि में रो रहे हो ? किसका तेलहन खा डाला है ? वह किसान कौन है जो तुम्हें मार रहा है ? तेली ने कहा— बहन मंजरी सुनो। यह बरहा प्रिय लोरिक का है। हम लोग कल भोजन कर रहे थे तो वह इसे यहाँ लाये। मैंने उन्हें कह दिया कि ऐ मालिक, खा कर उठते ही इस बरहे को तेल में डूबा दूँगा। मैं और तथा मेरे सारे बाल बच्चे इसमें लग गये कि कहीं बरहा कमजोर न रह जाय (पर यह उठ नहीं रहा है।) मंजरी बरहा के पास पहुँची। दाहिने हाथ में पकड़ कर उसे तेल के कोठिले में डाल दिया। मंजरी ने उससे कह दिया कि लोरिक को यह मत बताना कि मंजरी ने इस बरहे को कोठिले में डाला है। कह देना कि इस सूखे बरहे

को मेरे बाल बच्चों ने कोठिले में डाला है। यह रात भर तेल में पड़ा रहा है, अब यह अचल है, अटूट है। ऐ लोरिक अब तुम इसे जा कर निकाल लो। यह बरहा हम लोगों से नही निकलेगा। प्रातः काल हुआ। पूर्व में कौवों ने शोर मचाया। बीर मर्द लोरिक उठकर तेली के घर गया तथा उससे बरहे के बारे मे पूछा तेली की पत्नी ने लोरिक को बताया कि ऐ मालिक, तुम्हारा मूखा बरहा हम लोगों ने तेल के कोठिले में डाल दिया। वह रात भर तेल खाता रहा। अब तुम अपना बरहा निकाल ले जाओ। मजरी फिर तेली के घर गयी और पूछा ऐ तेली महीचन, तुम क्यों रो रहे थे। तुम्हें किसने जबर्दस्ती दबा रखा है। महीचन ने कहा—ऐ मलकिन मेरी बात सुनिये। एक तो सहदेव गउरा में शक्तिशाली हैं और इधर तुम्हारे लोरिक शक्तिशाली है। मैंने उनका सामान लिया है। ऐ भाग्यशालिनी, मंजरी तुम उसे तेल से निकाल दो। मंजरी ने कहा—चेला तुम मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारा बरहा उठा दूँगी किन्तु मेरा नाम कोई सुनने न पावे। यदि मेरे मुखनन्दन मेरा नाम सुनेंगे तो मेरी अल्हड़ ज़िंदगी समाप्त कर देंगे। महीचन ने कहा—मुझे अपने काम से काम है। कहने की मुझे क्या ज़रूरत है? तब महर की पुत्री ने कनिष्ठिका से, कानी अंगुली से रस्सी उठाली तथा लोहे का कुठिला गिरा दिया। दूसरे दिन लोरिक बरहा के पास पहुँचा। प्रातः काल तड़के उसे लेकर वह घर आया। मंजरी उसे देखकर जलभुन गयी, क्रुद्ध हुई। पूछा—मेरे मुखनन्दन, मेरे मालिक, इस रस्से का क्या होगा? मुझे सचसच बताओ। लोरिक ने कहा—सांसड़ बोहे से मेरे भाई संवरू ने खबर दी है कि पशुओं के झुंड में बछड़े उत्तेजित हो उठते हैं तथा बछियों का पीछा करते हैं। बछड़ों का बधिया कराना है। फिर उस समय का, उस स्थान का हाल सुनिये। अहीर के चित्त में चनइनी चढ़ गयी है। रात में एक घंटा व्यतीत हुआ। पूर्व में पुरवाई चलने लगी। पछुवा हवा भी झकझोरने लगी। उत्तरी हवा भभकने लगी और दक्षिण दिशा में मूसलाधार पानी बरसने लगा। आर्द्रा नक्षत्र की वर्षा होने लगी। लोरिक वहाँ से बरहा लेकर चला तथा गउरा गाँव में प्रवेश कर गया। चनवा की चाँदनी पर पहुँचा। उसने बरहे का एक छोर अपने पैर के नीचे रखा। उसका आधा अपने हाथ में उठा लिया और झटक कर उसे ऐसा फेंका कि बरहा चाँदनी पर जाकर गिरा। चनवा चारपाई से उठ बैठी। उसने बरहे को धरती पर गिरा दिया। लोरिक ने उसे हाथ में उठा लिया। पिछवाडे से उसने तड़क कर कहा—ऐ वेश्या चनइनी, तुम विक्षिप्त हो, बावली हो। तुम्हारी मति और तुम्हारा ज्ञान हर लिया गया है। बुजरो, यदि तुमने इस बार बरहा फेंका तो तुम्हारी निंदा हो जायगी। यहाँ मैं कील और काँटा गाड़ दूँगा तथा उसमें आधा बरहा बाँध दूँगा। आधा काटकर घर ले जाऊँगा। जब प्रातःकाल होगा, भोर होगा, पूर्व में कौए शोर मचाना शुरू करेंगे तब गउरा के लोग इसे देखेंगे। तुम्हारी निंदा होगी। फिर लोरिक ने दुहराकर रस्सी फेंकी। वह चाँदनी पर जाकर गिरी। चनवा ने उसे खंभे में तथा चारपाई के पावों में घुमा घुमा कर बाँध दिया।

भावार्थ—(१२०१—१५००)

अहीर की रस्सी लटकने लगी लोरिक ने उसे हाथ से पकड़ा और उसको तीन बार झटका दिया पर रस्सी अचल रही, अडोल रही। फिर वह रस्सी पर चढ़ने लगा और चांदनी पर ऊपर जाने लगा। जब वह शून्य में आधी दूर तक चढ़ गया तब नीचे ज़मीन की ओर देखने लगा। उस समय वह भयभीत हो गया। दांतों से अपनी अंगुली काटने लगा। कहने लगा--हे मैया दुर्गा, तुम आदि काल से ही पूज्य हो। हे देवी, यदि रस्सी आधे में टूट गयी तो मैं चांदनी से गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाऊंगा। तब वह गर्हित व्यक्ति भी मेरी निंदा करेगा जिसके मल द्वार से निकला हुआ मल कौवा भी नहीं खाता। कहेगा, साला चढ़ना जानता नहीं था और राजा की चांदनी पर चढ़ गया। उसकी हड्डी पसली टूट कर बिखर गयी। ऐसा कहते हुए वह चढ़ता चला गया और जाकर चांदनी पर खड़ा हो गया। तब चंदा उससे बात-चीत करने लगी, सवाल जवाब करने लगी। अहीर तुम मेरी बात सुनो। गांव घर के नाते मैं तुम्हारी बहन लगूंगी। किन्तु अहीर उसके शरीर के पास पहुँच गया। चंदा ने उसे डांटा फिर कहने लगी, ऐ सइंया इसमें कोई झगड़े की बात नहीं है। तुम मेरा संग छोड़ दो। किन्तु अहीर ने चंदा पर चढ़ाई कर दी। चंदा उसको डाँटती रही। फिर चंदा ने कहा—अहीर तुम शपथ ग्रहण करो कि फिर तुम मेरी सेज के पास न आओगे। अब अगर अपनी पत्नी मंजरी का साथ छोड़ दोगे तभी मेरी शैया पर पैर रखोगे। घर पर भाई और माँ को भूल जाओ तब तुम मेरी सेज पर पांव रखो। गुरु अजयी का मोह छोड़ दो, तब मेरी पलंग पर पैर रखोगे। हम लोग पूर्व दिशा में चल देंगे। अहीर लोरिक ने कसम खाली। जब फिर चढ़ाई का समय आया तब वेश्या चनैनी ने कहा—संवरू का साथ छोड़ दो। लोरिक ने शपथ लेली। जब लोरिक ने सेज पर पांव रखा पलंग के पाये टूट कर चूर चूर हो गये चंदा चांदनी पर सिर पटकने लगी। यह मेरे भाई की चारपाई है। इसके पैर टूट गये। प्रात:काल हो गया, पौ फटने लगी। कौवे शोर मचाने लगे। अब झगड़ा लगने की नौबत आ गयी थी। लोरिक शपथ ले चुका था। उसने चनवा से कहा—तुम रुखानी और बसुला लाओ मैं चारपाई के चूरों को ठीक कर दूँ। वह बढ़ई की कर्मशाला में गयी और वहाँ से रुखानी तथा बसुला लाकर उसने लोरिक को दे दिया। लोरिक ने चारपाई के चूरे ठीक कर दिये। फिर लोरिक ने चंदा पर चढ़ाई कर दी। चंदा रोने लगी। उसने लोरिक से कहा—तुम अपने दांतों से मेरा शरीर का मांस क्यों काट रहे हो? तुम मेरा प्राण क्यों ले रहे हो। यह तुम कितनी बार कर चुके कितनी बार और करोगे? लोरिक ने कहा मैं एक सौ साठ-बार कर चुका हूँ, एक सौ साठ-बार और करूंगा। फिर गंगा में जाकर स्नान करूंगा। जाकर पत्नी के पास सोऊंगा तब मैं संतुष्ट होऊंगा, प्रात:काल मेरा शरीर निर्मल होगा। चन्दा ने उससे कहा—तुम मुझसे दिन और समय बताओ कि तुम पूर्व में कब चलोगे? तुम मेरे सुंदर शरीर के मांस को क्यों काट रहे हो? लोरिक ने कहा—मेरी स्त्री सुनो। जब

पूर्व के ग्राहक आयेंगे, खरीददार आयेंगे। बोहा के दसबीस बछड़ों को बेचूंगा, पास में पूंजी जमा कर लूंगा तब गउरा छोड़ूंगा और भोग-विलास करूंगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक वहाँ कल्लोल कर रहा था। दोनों ने चद्दर तान लिये थे। चंदा आधी रात को उठकर चलने वाली थी। वही समय था जब सेल्हिया (चंदा की माँ) उठकर मट्ठा मथा करती थी। मुँगिया लौंड़ी से कहा जाकर देखो। अभी तक मेरी बेटी चंदा नहीं उठी। भोर का झुटपुटा हो चुका है, बिहान हो चुका है। सेविका चाँदनी पर गयी। उसने देखा वहाँ भैंस और भैंसा चद्दर तान कर पड़े हुए हैं तथा खून से लथपथ हैं। लौंड़ी वहाँ से भगी। लोरिक चाँदनी में उठा, जूते पहने, चंदा की चादर बटोरी, रस्सी लटकाई तथा ज़मीन पर उतर कर खड़ा हो गया। चंदा ने रस्सी खोल दी लोरिक ने उसे संभाल लिया। वह गउरा गाँव की ओर चला। प्रातःकाल हो रहा था। हलवाहा जाग उठा था। वह आगे मिला। उसने पूछा—'मालिक सारी रात कहाँ गुजारी। लोरिक ने नम्रता पूर्वक कहा—भैया संवरू ने खबर दी थी। मैं मजबूत रस्सी लेकर गया था। बछड़े बहुत ही उन्मत्त हो रहे थे। मैंने उन्हें पकड़ कर खूंटे में बाँध दिया। अब मैं घर लौट रहा हूँ। हँसकर हलवाहा बोला मैं तुम्हारा हाल जानता हूँ। चांदनी पर बछिया उन्मत्त थी। उसे तुम्हारी हवा जो लगी थी। बीर मर्द लोरिक अपनी बखरी में चला गया और कुर्सी पर बैठ गया। मंजरी धीरे धीरे आंगन बटोर रही थी। वह लोरिक के पास पहुँची और उससे तुरन्त सवाल जवाब करने लगी। कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुख-नंदन, ऐ मेरे सिर मौर। तुम्हारी रात कहाँ बीती है? हमें सचसच बताओ। लोरिक ने कहा—विवाहिता मेरी बात सुनो। सांवर भैया ने खबर भेजी कि बछड़े उन्मत्त हैं। कलोर बछियों को वे तंग कर रहे थे, लाँघ रहे थे। हमने पकड़ कर बछड़ों को कुटवाया, पकड़कर उनको बाँधा। तब घर आ रहा हूँ। मंजरी बोली—यह चादर तो चनवा की है? तुम मुझे सचसच बताओ। अहीर लोरिक ने कहा—मैं गुरु अजयी के यहाँ गया था। बोहा—जाते समय मैंने बिजवा से चद्दर मांगी। बिजवा ने चन्दा की चद्दर दी। मैंने उसी चादर की पगड़ी बाँध रखी है। तब मजरी बोली—सैंया, तुम्हारे गाल पर टिकुली चिपकी हुई है। तुम मुझे सच्ची बात बताओ।

लोरिक ने कहा—गुरु अजयी के घर गया था। भउजी बिजवा निकली। उसने मेरे ऊपर सिन्दूर और टिकुली डाली। हो सकता है उसकी टिकुली मेरे शरीर में लिपट गयी हो। मंजरी बोली—तुम इधर उधर की व्यर्थ की बात कर रहे हो। तुम्हारे शरीर में खून क्यों लगा है? बीर मर्द अहीर लोरिक ने कहा—मेरी पत्नी सुनो। मैंने बछड़ों को बोहा में पटक पटक कर मारा। किसी का सींग टूटा, किसी का बंसा (एक प्रकार की टेढ़ी सींग) टूटा। इसी कारण मेरे पीछे रंग लगा हुआ है। मंजरी ने मचिया पर बैठी हुई अपनी सास से कहा कि लोरिक चंदा उढ़ार करेंगे और पूर्व दिशा में हल्दीपुर जायँगे। गउरा में मेरे ऊपर विपत्ति पड़ेगी और मैं विधवा की

तरह विपत्ति झेलूंगी। प्रातःकाल हुआ। झुटपुटे में पूर्व दिशा में कौवे शोर करने लगे। वेश्या चनैनी उठी दस सेर धान को गंठियाया। फिर सहदेव की बेटी (चन्दा) कोइरियों के कोड़ार में चली। कोइरी के यहाँ उसको रख दिया और स्वयं लोरिक के घर चली। मंजरी प्रातःकाल घर में धीरे धीरे झाड़ू दे रही थी। दरवाज़े पर वेश्या चनैनी खड़ी हो गयी। बोली—भउजी माँजरि सुनो। आजकल भैया लोरिक दिखाई नहीं दे रहे हैं। यह सुनकर मंजरी खाक हो गयी। कहने लगी—इस गउरा में आग लग जाय। यहाँ कोयला बरसे। लोग रात में यहाँ पत्नी और भर्तार हो जाते हैं तथा दिन में भाई बहन। महर की बेटी मंजरी की यह बात सुनकर चनवा वहाँ से भगी तथा झगड़ू कोइरी के कोड़ार में पहुँच गयी। चार पसेरी धान गंठिया कर वहाँ मंजरी भी पहुँच गयी। दोनों स्त्रियाँ वहाँ उदास बैठ गयीं। फिर चनवा बोली—ऐ कोइरी झगड़ू मेरी बात सुनो। जैसा जिसका शरीर है उसको वैसा ही बैगन तुम दो। चनवा का शरीर गोरा था। मंजरी का शरोर सांवला था। जब उसने यह बात सुनी तो धीरे से कहा—ऐ झगड़ू कोइरी मेरी बात मानो। जिसके पति जैसे सुन्दर हों उसको वैसा ही सुन्दर बैगन दो। जिसके पति काने हों उसको सड़े हुए बैगन दो। लोरिक सुन्दर था अतः कोइरी ने उसके लिए सुन्दर बैगन छाँटने शुरू किये। चनवा का पति मल्ल सिवहर काना था। उसको कोइरी ने चुनकर सड़ा हुआ बैगन दिया। बातों बातों में दोनों में झगड़ा हो गया। दोनों स्त्रियाँ झगड़ू कोइरी के कोड़ार में झगड़ पड़ीं जिससे नेवार मूली के पेड़ टूट गये, पोस्ता के पेड़ टूट गये जो एक रुपये सेर बिकता है। कोइरी वहाँ रोने लगा। कोड़ार में सिर पटकने लगा। दो स्त्रियाँ लड़ रही हैं। मैं किसको डांटू। कैसे झगड़ा निपटाऊँ ? एक शक्तिशाली व्यक्ति की बेटी एक जबर्दस्त व्यक्ति की बहू है। उसने किसी से कुछ नहीं कहा और सीधे अखाड़े पर चला गया जहाँ बीर लोरिक था। झगड़ू ने लोरिक से कहा—दो स्त्रियाँ लड़ पड़ी हैं। जबर्दस्त झगड़ा हो गया है। मेरा खेत नष्ट हुआ जा रहा है। मैं अपने बाल बच्चों को कैसे जिलाऊँगा ? कैसे कर चुकाऊँगा ? लोरिक ने गुरु अजयी से नम्रतापूर्वक कहा—। गुरु मेरी बात सुनो और जाकर जरा झगड़ा निपटा दो।

भावार्थ—(१५०१—१८००)

गुरु अजयी ने कहा—चेला, मेरी बात मानो। दो स्त्रियाँ झगड़ू कोइरी के कोड़ार में जा कर लड़ रही हैं। वे दोनों वहाँ नंगी हैं और उनका शरीर उघरा हुआ है। मैं झगड़ा कैसे निपटाऊँ ? हमें जिनकी परछाईं नहीं देखनी चाहिए, मैं भाई की उन बहुओं का ललाट देखूं। ऐ लोरिक, तुम जाकर स्वयं झगड़ा निपटाओ। मर्द वीर लोरिक यहाँ से चला तथा झगड़ू के घर की ओर गया और दूर से ही खँखारा। मंजरी के कानों में शब्द पड़ा। इसी बीच उसने चनवा को दाव मारा। चनवा धरती पर भहरा कर गिर पड़ी महर की धिया मंजरी वहाँ से भागी। आकर अपने महल में प्रवेश कर गयी। वेश्या चनैनी ने अपनी धूल झाड़ी। फिर वह कोने

में बैठ गयी, मूली के पत्ते निकाल निकाल कर खाने लगी। जब वह स्वस्थ हुई तो अहीर खेत पर पहुँच गया। सहदेव की बेटी जिसका सुन्दर नाम चनवा था, बोल उठी—"ऐ अहीर लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। मंजरी आज गर्म हो गयी थी। उसने मुझे कटु बातें कही। इसलिए अब तुम पूर्व की ओर मेरा उद्धार करो। हम लोग हरदीपुर की बस्ती में चलें। इधर गउरा में विपत्ति पड़े तथा मंजरी राँड़ का कष्ट भोगे।" लोरिक ने कहा—जरा मौसम आ जाने दो ताकि मैं बछड़ों को बेचूं। जिससे रास्ते के लिए खर्च मिल जाय। मैं खर्चा एकत्र कर लूं ताकि विपत्ति आवे तो हरदीपुर में बैठ कर खाऊँ। वेश्या चनैनी ने कहा—खर्चे की कोई चिन्ता नहीं है। मैं पिता का धन ले लूंगी, उनकी पगड़ी ले लूंगी जिसमें हीरा और मोती जड़े हुए हैं। यदि कहीं रास्ते में विपत्ति पड़ी तो बैठ कर हम दो चार पुश्त खायेंगे। उसने कहा—मैं सोना और द्रव्य ले लूंगी। हम लोग हल्दी में चल कर दो चार पुश्त खायेंगे। ऐ लोरिक, तुम दिन और मुकाम तय कर लो ताकि हम हल्दी निकल चलें। वीर लोरिक ने कहा—आज और कल का दिन बीत जाने दो। परसों शुक्र-वार का दिन होगा। तब हम हरदो बाजार के लिए प्रस्थान कर देंगे। रास्ते में सुरहानाल है, वहाँ पीपल का वृक्ष है। वहाँ हमारा मुकाम रहेगा। जो व्यक्ति घर से पहले निकलेगा वह ताल के भीटे पर बाट देखेगा। दिन और स्थान निश्चित हो गया कि आधी रात ढलने पर जो घर से पहले निकलेगा पीपल के पेड़ के नीचे आकर प्रतीक्षा करेगा। अब वेश्या चन्दा अपने किले में चली गयी। वीर मर्द लोरिक ने जाकर तख्त पर स्नान किया, पानी पिया, फिर भोजन के लिए चला गया। वह खा पीकर तैयार हुआ। फिर सोने चला गया। वह चारपाई पर झूठमूठ सो गया, नाक बजाने लगा। मंजरी इधर सोच में पड़ी हुई है। मेरे पति कहाँ से थक कर आये हैं कि विकट निद्रा में सो गये हैं। वह अपना पलंग बिछाने लगी। लोरिक के सिर की ओर बिजली की तलवार टंगी हुई थी। मंजरी ने उसको अपनी गर्दन के नीचे रख लिया। उसका तकिया बना लिया, फिर वह सो गयी। इधर लोरिक उठ उठ कर देखता रहा। आधी रात ढल जाने पर उसकी विवाहिता पहरा देने लगी। उसकी आँखों में नींद नहीं आ रही थी। वह पलंग पर एक टक देख रही थी। इधर आधी रात के बाद लोरिक उठ उठ कर देख रहा था। मंजरी अपने पलंग पर टकटकी लगाये देख रही थी। वह पूरी तरह से पहरा दे रही थी कि देखें लोरिक कैसे पूर्व देश में जाता है।

अब आगे का हाल सुनिये। लोरिक घर से बाहर निकला। उसका खड्ग खूंटी पर टंगा हुआ था। उसने टूटा खड्ग लेकर सुरवली ताल की ओर प्रस्थान किया। पीपल के पेड़ के पास जा कर देखा तो वहाँ कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था मंजरी रोती रही, अपने भाग्य को कोसती रही। अहीर लोरिक सुरवली ताल में जाकर खड़ा हो गया। महर की धिया मजरी उसकी खोज में निकल पड़ी। इधर वेश्या चनैनी का हाल सुनिये। उसने द्रव्य बटोर लिया और आगे जाकर पीपल के

पेड़ के नीचे पहले ही जा बैठी, फिर कहीं छिप गयी। अहीर ने इधर-उधर घूम कर देखा फिर वह अपशब्द कहने लगा। यह चनैनी वेश्या जाति की है। उसका सारा परिवार वेश्या का है। मैं उस वेश्या के चक्कर में पड़ गया। मेरे घर में विवाहिता है। ऐ बुजरो चन्दा, मैं अब घर लौट जाऊँगा। मैं हल्दी नहीं जाऊँगा। अहीर लौटने लगा तब चनवा हँस पड़ी। वह वेश्या झाड़ की आड़ में छिपी हुई थी। हँसते हुए वह रास्ते पर आ गयी। तब बीर अहीर लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, मेरी पत्नी मजरी पूरी पहरेदारी कर रही है। उसने अपने सिर के नीचे बिजली वाली तलवार रख ली है। मैं टूटी हुई तलवार हाथ में लेकर सुरवली ताल में आ गया हूँ। मैं निश्चित किये हुए स्थान पर पहुँच गया हूँ। हम परदेश कैसे चलेंगे। कोई सम्बन्धी मिल जायेगा तो मैं कौन सी युक्ति निकालूंगा। इस टूटे खड्ग की क्या हस्ती है ? इससे मैं कैसे बड़ी लड़ाई करूंगा। जब लोरिक ने ऐसा कहा तब चनैनी बोल उठी। ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, तुम भगवती का सुमिरन करो जो आदिकाल से ही तुम्हारे लिए पूजमान हैं। दुर्गा मंजरी को निद्रा में विस्मृत कर दें। दुर्गा ने अपनी शक्ति बढ़ायी। मंजरी की आँख में उन्होंने उसी क्षण निद्रा भर दी। अहीर ताल से लौट गया। वह कमरे में गया, मंजरी के सिर के नीचे रखी हुई तलवार उसने खींच ली तथा वहाँ टूटी हुई तलवार रख दी। बिजली वाली तलवार लेकर वह द्वार से चला। चन्दा और लोरिक दोनों पूर्व की ओर बढ़े। वे रात दिन चलते रहे। रास्ते में उन्होंने कहीं विश्राम नहीं किया, कहीं डेरा नहीं डाला। इधर मंजरी की आँख खुली, वह आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगी। टूटी तलवार रखकर बिजली की तलवार कौन ले गया ? वह ज़ोर-ज़ोर से रुदन करने लगी। घूम-घूम कर हाथ में गैस लेकर उसे खोजने लगी। वह बाहर देखने गयी। घनघोर वर्षा हो रही थी। उत्पात मचा हुआ था। घर बहा जा रहा था। सास खुइलनि से मजरी ने कहा—अम्मां बात सुनो। लोरिक और चन्दा, इन दोनों ने उढ़ार किया है वे हल्दीपुर पार जा रहे हैं। ये दोनों आधे जंगल में पहुँच गये। आंवला का पेड़ फला हुआ था। पेड़ ने कहा—चनइनी जाति की वेश्या है। उसका सारा परिवार वेश्या है। इसने विवाहित पति को छोड़ दिया है। पर पुरुष के साथ वह हल्दी जा रही है। आंवले के पेड़ ने फिर कहा—ऐ वेश्या चनैनी सुनो। तूने अपने विवाहित पति को छोड़ दिया, पर पुरुष के साथ तुम हल्दी जा रही हो। वेश्या चनैनी ने लोरिक से कहा—सैया मेरी बात मानो। तुम अपनी तेज़ तलवार निकालो तथा आंवले के पेड़ को धराशायी कर दो।

बीर लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, ऐ स्त्री सुनो। तुम रास्ता चलते झगड़ा करती रहती हो। कहाँ-कहाँ लोरिक तलवार उठायेगा ? दोनों आगे बढ़े। पूर्व की ओर सीधे चले। वे बोहा के पास पहुँचे। वहाँ एक कल्याणी गाय बछड़ा दे रही थी। वेश्या चनैनी ने लोरिक से पूछा—यह किस अभागे की गाय है कि जंगल में बछड़ा दे रही है, झाड़ी में ब्या रही है। कल्याणी गाय ने कहा—हम अभागे लोरिक की

गउवें हैं, हम जंगल झाड़ी में बछड़े देते हैं। गाय ने फिर नम्रतापूर्वक कहा—धर्मी संवरू की गायें हैं जो पशुओं के बाड़े में बंधी हुई हैं और वे वहाँ बछड़े देती हैं। इतना सुनते ही लोरिक गाय के पास गया। अपनी गोद में बछड़े को उठा लिया तथा अड़ार की ओर चल पड़ा। पीछे-पीछे गाय चन्दा को भगाने लगी। संवरू की गायें बिगड़ उठीं। गायों के झुण्ड में खलबली मच गयी। मल्ल संवरू ने कहा—नान्हूँ तुम मेरी बात सुनो। तुम पलाश के वृक्ष पर चढ़ कर देखो। क्या वन में कोई लकड़-बग्घा आ गया है? या वन बिलाव आ गया है। छिउली के पेड़ पर चढ़ कर नान्हूँ चारो ओर देखने लगा। फिर उस ढोर के चरवाहे नान्हूँ ने कहा—ऐ बहनोई, धर्मी संवरू सुनो। आगे-आगे बहनोई लोरिक बछड़े को लिये चले आ रहे हैं। पीछे से चन्ना को गाय खदेड़े लिये आ रही है। जब संवरू ने यह सुना तो नान्हूँ से कहा—नान्हूँ, इतना समय बीत गया पर तुमने कभी ऐसे कटु शब्द नहीं कहे। पर आज क्या बात हो गयी है जो ऐसी बात कर रहे हो? अभी इस प्रकार की बात हो ही रही थी कि लोरिक वहां आ पहुँचा। बछड़े को अड़ार पर उतार दिया तथा स्वयं धर्मी संवरू के पास पहुँच गया। चनवा छोटे तम्बू में चली गयी। सहदेव की वह बेटी मैना चन्दा वहीं बैठ गयी। लोरिक ने संवरू को झुक कर अभिवादन किया। उन्होंने जी भर कर लोरिक को आशीर्वाद दिया। ऐ लोरिक तुम अमर रहो, लाख वर्ष जीयो। जैसे गंगा का पानी बढ़ता है।

भावार्थ—(१८०१—२१००)

वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। बोहा में दोनों भाई मिले। संवरू ने लोरिक से कहा—हम यहाँ सुरक्षित बैठेंगे तथा बोहा में आनन्द करेंगे। तब वीर लोरिक ने कहा—मेरे भाई संवरू सुनो। मैंने चोरी की है। मैंने सहदेव की बेटी को हड़प लिया है और उसको लेकर पूर्व देश में भाग रहा हूँ। दस दिनों में में हल्दी पहुँच जाऊँगा।' यह सुनकर मल संवरू ने चरवाहा नान्हूँ से नम्रतापूर्वक कहा—तुम दो भैंसों को छोड़ दो उनका दूध दूह लो ताकि ये दोनों छक कर पीयें। ये हल्दी बाजार जायेंगे। लोरिक ने कहा—'भइया यदि तुम दूध नही दोगे तो रास्ते में मुझे और कौन दूध देगा! क्या जाने रास्ते में लड़ाई ही छिड़ जाय तुम मुझे थोड़ी दूर पहुँचा दो। यह सुन कर संवरू जल गये। कहा—लोरिक मेरी बात सुनो। मैं दूध दे रहा हूँ। यदि आगे लड़ाई छिड़ जाय तो तुम दोनों आदमी आपस में मुकाबला कर लेना। इतनी बातचीत के बाद लोरिक बोहा से आगे बढ़ गया। वेश्या चनैनी आगे-आगे चली, पीछे-पीछे लोरिक चला। वे पूर्व दिशा में चलने लगे, जंगल और झाड़ियों को पार किया तब बेवरा नदी मिली। बेवरा नदी पर कोई नाव दिखाई नहीं पड़ी। नदी के दोनों कगारों पर जल उफन रहा था। लोरिक ने चनवा से तुरन्त बातचीत शुरू की, सवाल जवाब किया। ऐ स्त्री, तुम किनारे पर बैठो। मैं सूखे पेड़ और लकड़ियाँ एकत्र

करूँ तथा उनकी नौका बनाऊँ तथा हम दोनों खेकर उस पार चलें। चनैनी वहाँ बैठी रही अहीर जंगल में प्रवेश कर गया। उसने जंगल झाड़ी से मोटी लकड़ियाँ प्राप्त कीं फिर पेड़ की लताओं को काटकर उन्हें बाँधा। नदी में कुंदों को डाल दिया गया कुंदों की नाव चल पड़ी। लोरिक ने खेने के लिए एक लग्गी बनायी। चनवा को बैठा लिया। फिर उसे बीच धार में खेने लगा। इधर से तेजी से एक बोझ सा बहा चला आ रहा था। उसमें एक बड़ा सा चूहा था। चूहा बहता हुआ आकर लकड़ी के कुंदों से टकरा गया। चनवा ने चूहे को देखा उसने उसे कुंदों पर रख लिया। थोड़ी देर में जब धूप में चूहे को कुछ आराम मिला तथा उसका शरीर शान्त हुआ तब वह कुन्दों के जोड़ों और बन्धनों के बीच चला गया। कुन्दों के बन्धनों को वह काटने लगा। तीन बन्धनों के कट जाने से कुन्दों के दो भाग हो गये। एक देश की ओर वेश्या चनैनी बहने लगी दूसरी ओर लोरिक उछलने लगा। उसने चनवा से कहा— वेश्या, मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारे चक्कर में पड़ गया। तुम्हारी बात मान ली। अपनी विवाहिता को घर पर छोड़ दिया। तुम हमेशा ऐसा ही काम करती रहोगी तो लोरिक कब तक युद्ध करता रहेगा? लोरिक ने यह कहते हुए कुन्दों को फिर जोड़ दिया। जब कुन्दों का जोड़ ठीक हो गया तो लोरिक ने उसे खेना शुरू किया वे बेवरा नदी के उस पार उतर गये। तट पर सेमल का वृक्ष था उसके नीचे दोनों ने डेरा डाला। भोजन बनाने के लिए उन्होंने उपले तैयार किए।

अब चनवा के पति सिवहरि का हाल सुनिये। वह बिजरी गाँव छोड़कर राजा सहदेव के पास आया। वहाँ जाकर लोटने लगा पहले तो सहदेव को इसका कारण समझ में नहीं आया। बाद में उन्होंने कहा—तुम उढ़ार करने वालों का पीछा करो। यदि रास्ते में उनसे भेंट हो जाय तो लड़ाई में लोरिक का सिर तोड़ दो। तीन सौ साठ तीरों को एकत्र कर सिवहरि वहाँ से चला, सांसड़ बोहा में पहुँचा जहाँ मल्ल सांवर बैठे थे। उसने कहा—ऐ धर्मी मल सांवर, क्या तुमने उढ़री उढ़रा (स्त्री भगाने वाले लोरिक तथा भागी हुई स्त्री चन्दा) को देखा है। मल सांवर ने कहा—ऐ संगी सिवहरि, मैंने दोनों को देखा है। वे बेवरा नदी के उस पार पहुँच गए हैं। सिवहरि ने सांवर से उपाय पूछा कि मैं कैसे दोनों से भेंट करूँ? सांवर ने कहा—इधर बोतल टंगी हुई हैं। दो बोतल शराब डट लो फिर जूता पहन कर शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाओ। सिवहरि ने मद पीया। अपना ठाट बनाया। जूते पहने तथा भीम बनकर तेजी से दौड़ा। क्षण में वह डगमगा कर गिर गया फिर तीन सौ साठ बाणों को लेकर बेवरा नदी पर पहुँचा। उसने उढ़ार करने लाले लोरिक चन्दा का हाल देखा। वहाँ आग सुलग रही थी। दोनों भोजन की तैयारी कर रहे थे। तब सिवहरि ने अपना बाण साधा तथा सेमल के पेड़ की ओर उसे फेंकने लगा। किन्तु बीर मर्द लोरिक खेलाड़ी था। वह वहाँ से हट गया। सेमल का वृक्ष धरती पर गिर कर चूर-चूर हो गया किन्तु जब उसने दूसरा बाण निकाला तो वह बेकार था। और बाण भी बेकार थे। वह आश्चर्य में पड़ गया। अब क्या करूँ? सिवहरि कहने लगा—हे देव, हे नारायण

आपने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया ? मुझे सारा गुण दिया पर तैरने का गुण नहीं दिया, नहीं तो मैं तैर कर बेवरा को पार कर जाता। लड़ाई करके लोरिक का मुँह तोड़ देता। यह कहते हुए वह लौट कर घर आने लगा। लोरिक और चंदा दोनों की जोड़ी आगे बढ़ी। वे पूर्व की ओर चलने लगे। वे दिन-रात चलते रहे, उन्होंने कहीं डेरा नहीं डाला। हल्दी के भीटे पर पहुँच कर पनघट पर उन्होंने डेरा डाला, तम्बू खड़ा किया। फिर चनवा से उसने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मेरी विवाहिता मेरी बात सुनो। हम लोग रास्ता चलते रहे अतः मुझे थकान लग रही है। तुम यहाँ खाना बनाओ। मैं हल्दी जा रहा हूँ। हल्दी में मद की दुकान है। मैं वहाँ जाकर मद पीऊँगा। इतना कह कर उसने अपना बक्सा खोला। शरीर पर अंगरखा डाला, पैर में जामा पहिना, तर्कश धारण किया तथा विशेष प्रकार का जूता पहना। उसने छप्पन पेंचों वाली छूरी तथा कटारी ली, फिर तलवार संभाली। जैसे हथिनी झूमते हुए चलती है वह झूमते हुए चल पड़ा। पूछते-पूछते हल्दी बाजार में वह कलवार के घर पहुँचा, भट्ठी पर पहुँचा। भट्ठी पर दस पाँच पीने वाले मद पी रहे थे। लोरिक दरवाजे पर खड़ा था। जमुनी वहाँ गद्दी पर बैठी थी। उसने जब लोरिक को देखा तो आश्चर्य में पड़ गयी। दांतों तले अंगुली दबाने लगी। कहने लगी—हे दैव, हे नारायण तुमने ललाट में क्या लिख दिया ? इस व्यक्ति ने किस जांत का पीसा हुआ खाया है। किस सरोवर का जल पीया है। इसको किस प्रकार की चारपाई पर सुलाऊँ ! चारपाई का बाध इसको गड़ेगा। जमुनी कलवारिन ने उससे पूछा—'तुम्हारा वतन कहाँ है, तुम्हारा मूल स्थान कहाँ है ? ऐ दूर देश के वासी तुमने कहाँ की चढ़ाई की है। इस भट्ठी के पास आकर कैसे खड़े हुए ?' लोरिक ने कहा—गउरा मेरा वतन है, गउरा मेरा मूल स्थान है। मैंने हल्दी की चढ़ाई की है। खोजते-खोजते मैं तुम्हारी भट्ठी तक पहुँचा हूँ। इतना सुनकर जमुनी अपनी गद्दी से उठ गयी। जाकर उसने अन्दर से काली कुर्सी निकलवायी तथा अहीर लोरिक को बैठने के लिए दिया। जमुनी बोतल भरने लगी फिर हाथ में गिलास लेकर वह उसे लोरिक के पास ले गयी। लोरिक ने बोतल उठाया तथा गिलास में दारू उड़ेलने लगा। उसने ज्यों ही एक घूंट मुँह में डाला उसको बाहर निकाल दिया। उसने गिलास को बाहर फेंक दिया तथा जमुनी पर क्रुद्ध हो उठा। अरे कलवारिन, तुम दुष्ट हो। भट्ठी की मलकिन, मैं ऐसा-वैसा पीने वाला नहीं हूँ। तुम लौग और काली मिर्च से भट्ठी में शराब बनाओ। मैं तुम्हारी वही शराब पीऊँगा, फिर सागर के भींटे पर जाऊँगा। मेरी विवाहिता भोजन बना कर हल्दी के सागर के भींटे पर मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। जमुनी कलारिन ने कहा—ऐ ग्राहक, सुनो। तुम कुर्सी पर हाथ रख कर बैठो मैं तुरन्त भट्ठी लगा रही हूँ। जैसे ही दारू तैयार हो जाता है, मैं तुम्हें दूंगी।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक को रात में वहाँ देर होने लगी। चनवा भोजन बनाकर दारू पीने वाले लोरिक की प्रतीक्षा कर रही थी। जमुनी की भट्ठी

उतरी। गिलास भर कर वह लोरिक के पास गयी और उसे उसके हाथ में दे दिया। जब उसने जमुनी का दारू मुँह में डाला तो उसका शरीर गमगमा उठा। दारू का घूंट पीकर वह जमुनी की ओर देखने लगा। जमुनी अपनी गद्दी से उसे देखने लगी। दोनों की नजरें एक दूसरे से लड़ गयीं, मिल गयीं। फिर जमुनी हँस पड़ी। जब उसकी बत्तीसी चमकी, लोरिक मूर्च्छित हो उठा, कुर्सी से गिर पड़ा।

भावार्थ—(२१०१—२४००)

कलारिन जमुनी वहाँ दौड़ पड़ी। हल्दी में जितने पीने वाले थे वे गुहार करने लगे। उन्होंने कहा—ऐ पीने वालों, चलो हम राजा महुवरि के दरबार में चलें। जमुनी ऐसी टोनहिन हो गयी है कि अपने द्वार पर आये हुए परदेशी पर जादू मार दिया है। वह कुर्सी से गिर पड़ा है। चलकर सूबा के यहाँ शोर मचाओ ताकि वह जमुनी को गड्ढे में भरवा दे। जमुनी यह बात सुन रही थी। वह डर गयी। सचमुच प्रजा राजा से जाकर यह बात कह देगी। मेरी बड़ी निंदा होगी। जमुनी ने लोटे में पानी ले लिया तथा हाथ में पंखा उठा लिया और जाकर उसने लोरिक के हाथ मुँह धोये, फिर हाथ से पंखा झलना शुरू किया। जब उसका मिजाज़ कुछ शांत हुआ तब लोरिक उसके सम्मुख बैठ गया। वह कहने लगा—मैंने पान-सोपारी खायी, जर्दा कुछ तेज़ हो गया तुम्हारी कुर्सी पर मुझे गर्मी लग गयी। मैं धरती पर गिर पड़ा। अब लोरिक फिर बोतल से खेल करने लगा। जमुनी उसे बोतल भर-भर कर देने लगी। लोरिक उसे पीता जाता था। जब वह दस-पाँच बोतल पी गया तो उसकी नज़रों पर नशा चढ़ने लगा किन्तु उसने पीना-बन्द नहीं किया। वह कुर्सी से ज़मीन पर गिर पड़ा। रात के तब तक बारह बज गये। जमुनी ने दुकान बन्द कर दी, भट्ठी बुझा दी, दरवाज़ा बन्द कर दिया। उसने घर जाकर दरवाज़ा खोला तथा पानी गर्म करने लगी, खाना बनाने लगी। भोजन लेकर वह अहीर के पास पहुँची। उसका रूप देखा। वह ज़मीन पर पड़ा हुआ था। घर से चाभी लाकर कमरे का ताला खोला। गद्दी का तकिया उठाया। उसे गर्दन पर रख दिया। फिर उसने अपनी साड़ी का काछ संभाला तथा दरवाजे पर चली आयी ज़हाँ मर्द लोरिक गिरा हुआ था। उसके दोनों पैरों को बटोर कर उनमें अपना हाथ डाल दिया। दूसरा हाथ उसने लोरिक की गर्दन में डाला। उसको टांग कर ले गयी और पलंग पर सुला दिया। आधी रात के बाद एक घड़ी और बीत गयी थी। इधर चनवा लोरिक का रास्ता देख रही थी। पीने वाला लोरिक कहाँ गिर गया? अभी तक वह नहीं आया।

इधर जमुनी का हाल सुनिये। उसने सोलह शृंगार किये तथा मुख पर बत्तीस आभरण चढ़ा लिये। जाकर पलंग पर सो गयी। लोरिक के आगे गिलास था। जब वह आँख खोलता था तो गिलास में दारू उड़ेलता था तथा उसे पी लेता था। इसी बीच उसने जमुनी से कहा—ऐ कलारिन, मेरी विवाहिता सागर पर भोजन बनाकर मेरी प्रतीक्षा कर रही है। आधी रात ढल चुकी है। मैं वहाँ कैसे जल्दी पहुँच जाऊँ? जमुनी ने कहा—भैया मेरी बात सुनो। तुम पलंग पर सोये रहो। मैं तुम्हारी

विवाहिता को यहाँ ला रही हूँ। इतना कह कर उसने गिलास में और शराब उड़ेल दिये। अहीर वह भी पी गया तथा पलंग पर सो गया। जमुनी वहाँ से सागर के भींटे पर गयी। चनवा दीप जलाकर बैठी हुई थी, हल्दी की राह देख रही थी। जमुनी ने खंखारा। फिर विनम्रता पूर्वक बोली—अरे भाई, इस तालाब पर कौन परदेशी है? यहाँ किसने धूनी रमाई है? तुम्हारा वतन कहाँ है? आदि स्थान कहाँ है? वेश्या चनैनी ने कहा—स्त्री सुनो, गउरा मेरा घर है, वहीं मेरी बुनियाद है। हमने हल्दी की चढ़ाई की है तथा हल्दी के इस सागर के भींटे पर हम टिके हुए हैं। मैं यहाँ भोजन बनाने लगी। मेरे स्वामी पीने गये हैं, न जाने खा पीकर कहाँ गिर पड़े हैं। मुझे यहाँ चक्कर आ रहा है। कलारिन जमुनी ने कहा—जितना तुमने खाना बनाया है उसमें से भर पेट खा लो। जो बच जाय उसको यहीं रख दो। फिर बर्तन आदि साफ कर लो। चलो मैं तुम्हारे पीने वाले का पता बता दूं। खाना खाकर तथा बर्तन साफ कर उसने उन्हें संभाल लिया। छोटे तम्बू की रस्सी काट कर उसे बटोर लिया। जमुनी ने उसे अपनी कांख में दबा लिया। चन्ना ने बर्तनों का पिटारा स्वयं ले लिया। दोनों जमुनी के घर पहुँचीं। जमुनी ने तम्बू को आँगन में रख दिया। उसने दूसरा दरवाजा खोल दिया उसमें डेरा, पिटारा आदि रख दिया गया। सोलह प्रकार की खाद्य सामग्री रख दी गयी। जमुनी ने चन्ना से कहा, तुम यहाँ विधिपूर्वक भोजन बनाओ तब तक तुम्हारे पीने वाले यहाँ आ जायेंगे।

चन्ना ने नम्रता पूर्वक पूछा—मेरे स्वामी कहाँ गिरे हैं? वे हमारे घर कैसे आयेंगे? जमुनी ने कहा—तुम केवल भोजन की चिन्ता करो। तुम्हारे पीने वाले कहीं होंगे। यहाँ आ जायेंगे और ठहर पर आकर भोजन करेंगे। वह स्वयं लोरिक को लेकर शैया पर सो गयी। वहाँ बिहार होने लगा। जब लोरिक का नशा उतरा तब वह अलग हो गया। जमुनी ने फिर लोरिक को ले जाकर कमरा बता दिया। वह कमरे के दरवाजे पर जाकर चनवा को झांकने लगा। चनवा बोल उठी—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया! मैंने एक सौत को गउरा में छोड़ा, हल्दीपुर पाल आयी। यहाँ भी एक सौत तैयार हो गयी। जमुनी यह सुन कर मुस्कराती रही। प्रातः काल हुआ, झुटपुटे के समय कौवे बोलने लगे। लोरिक ने कलारिन जमुनी से कहा—तुम अपनी गद्दी आदि संभालो। अपना घर संभालो। मैं अब काम खोजने जाऊँगा। जमुनी ने पूछा तुम्हारी जाति क्या है? लोरिक ने कहा—मेरी जाति ग्वाल की है मैं गाय भैंस का चरवाहा हूँ। अपने लिए काम मैं ढूंढ़ लूंगा। जब मैं जीने खाने का उपाय कर लूंगा तब हरदीपुर में रहूंगा। नहीं तो कहीं आगे जाऊँगा तथा जल्दी से नया मुल्क देखूंगा। कलारिन जमुनी ने उससे विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर, शाम तक यहाँ बैठे रहो। *मैं महुअरि के दरबार में* जा रही हूँ। मैं जाकर दरखवास्त दूँगी तथा तुम्हारे लिए रोजगार खोज दूँगी। कलारिन जमुनी वहाँ से चली। हल्दी में सूबा की कचहरी लगी हुई थी। महुअरि वहाँ बैठे हुए थे। जमुनी ने उनसे कहा—राजा मेरी बात सुनिये। एक परदेशी आया

हुआ है वह अपने लिए रोज़गार खोज रहा है। वह तुम्हारे हल्दी के बाजार में टिक कर रहेगा। महुअरि ने कहा— ऐ धनिया, तुम अहीर को बुलवा लो। उसको मैं रोजगार दूंगा। जमुनी वहाँ से अपने महल में वापस आयी। लोरिक से कहा कि— 'ऐ परदेसी तुम्हें सूबा ने बुलाया है।' आगे जमुनी चली। पीछे लोरिक जा रहा है। उसने लोहे का सामान (कवच अस्त्र-शस्त्र आदि) उतार रखा था। सादे कपड़े उसने पहन लिये थे। दरबार लगा हुआ था। लोगों की नज़र अहीर पर पड़ी तो कचेहरी काँप गयी, चकित हो उठी। लोगों ने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने ललाट में क्या लिख दिया! इस वीर ने किस जाँत का पीसा खाया है? किस सरोवर का इसने जल पीया है। अहीर वहाँ खड़ा हो गया। महुअरि ने उससे उसका स्थान आदि पूछा, गंतव्य पूछा, हल्दी में टिक जाने का कारण पूछा। यहाँ तुम कौन सा रोजगार करोगे? वीर लोरिक ने कहा—'राजा मेरी बात सुनिये। हल्दी शहर में जितनी तुम्हारी प्रजा बसी हुई है, सबके पास लक्ष्मी गायें हैं। राजा और प्रजा सबकी गायें कल प्रातः गिनवा दीजिए (मैं उनकी चरवाही करूँगा)। इससे मेरा खर्चा चलेगा।' अहीर घर गया, हाथ मुँह धोया, मगही पान खाया। दूसरे दिन प्रातः काल गायें खुल गयीं, अहीर को गायें गिनवा दी गयीं। सब लोग गाय गिनवा कर वापस लौट गये। अहीर ने पशुओं को बटोर लिया। जितनी भी गायें और भैंसें थीं सबको लेकर लोरिक गाँव की सीमा पर पहुँचा। पके हुए गेहूँ और गोजई के खेतों में वह सात घड़ी तक गायें चराता रहा। गायें गर्दन उठा कर देखती रहीं। चारो ओर हरियाली दिखाई पड़ रही थी। लोरिक पशुओं को चराकर हल्दी वापस आया। हल्दी में धूल उड़ने लगी, सारी चीजें गर्द में मिल गयीं। खेत में पके हुए गेहूँ और गोजई की दुर्दशा देख कर किसान गिर पड़े। रक्त के आँसू बहने लगे। वे एकमत होकर राजा की चाँदनी में गये। गुहार करने लगे। हे राजा महुअरि सुनिये।

भावार्थ—(२४०१—२७००)

प्रजा ने कहा—आपने प्रातःकाल ही चरवाह नियुक्त किया। उसने दोपहर में ही धूल उड़ादी। गेहूँ और गोजई जो पक रही थी, नष्ट हो गयी। हम लोग अपने बाल बच्चों को कैसे जीवित रखेंगे? तुम्हारा कर कैसे अदा करेंगे। जब इतनी बात कही गयी तो राजा क्षीण पड़ गया। उसने कहा—ऐ हल्दी के किसानों, डंडा और लाठी हाथ में ले लो तथा जाकर अहीर को खेत पर मारो। किसान उत्तेजित हो उठे। चलकर अहीर को जबर्दस्ती पीट डालेंगे। वे हल्दी की सीमा पर पहुँचे। अहीर डंडार—पर बैठा हुआ था। लोग एक बीघा फासले पर थे, पर किसी की आगे बढ़ जाने की हिम्मत नहीं थी। लोरिक ने कहा—ऐ हल्दी के लोगों, मैंने कभी गाय भैंस की चरवाही नहीं की है और न कभी मांग कर खाना खाया है। लोहा ही मेरा उठना है और बैठना है। युद्ध ही मेरे जीवन का आधार है। कहीं राजा पर विपत्ति आये तो वह मुझे रण में खड़ा कर दें! जब आमना सामना हो जायगा तब खेत पर तलवारें चल जायेंगी। अब दो सिपाही छोड़े गये। वे जमुनी के घर चले गये।

उन्होंने लोरिक से कहा—तुम्हें राजा महुअरि ने चाँदनी पर बुलाया है। लोरिक राजा के किले की ओर चला। वहाँ कचहरी लगी हुई थी। मंत्री ने कहा—'ऐ राजा, नेउरी की तुम्हारी प्रजा ढीठ हो गयी है। उसने तुम्हारा धन रोक रखा है। तुम अहीर को नेउरी में भेज दो। वह जाकर सारा लगान वसूल कर लाये। वहाँ जाकर वह जूझ मरेगा। तब हर दिन का झगड़ा मिट जायगा। अहीर सुंदर है, जैसे द्वितीया का चंद्र उगा हो। वह युद्ध में समाप्त हो जायगा। उसकी स्त्री को लाकर आप रनिवास भोग कीजिए।' राजा महुअरि ने विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर, तुम नेउरापुर जाओ। वहाँ की प्रजा ढीठ हो गयी है। तुम जाकर लगान वसूल कर लो तथा हल्दी बाजार में बैठ कर खाओ। मैं तुम्हें हल्दी का आधा राज्य दे दूँगा। आधा किले का महल दे दूँगा। यदि तुम नेउरापुर से जाकर लगान लाओ तब जानूंगा कि तुम अहीर वंश के हो। लोरिक ने कहा—राजा महुअरि, सुनो। मैं नंगे पैर नहीं जाऊँगा। मेरे साथ सरदार रहेंगे। वे सदा पहरे पर तैनात रहेंगे। इधर हल्दी का हाल सुनिये। कचहरी के लोग आपस में विचार करने लगे। उन्होंने राजा से कहा—ऐ राजा, सुनिये। किसी के लिए मृत्यु खोजी जाती है। इसकी मृत्यु सहज ही में आ गयी है। इसे काट खाने वाला घोड़ा जरूर दे दीजिए। जब घोड़ा मंगर का ढक्कन लोरिक खोलेगा तो घोड़ा उसका प्राण ले लेगा। सहज ही में झगड़ा निपट जायेगा। तब तुम चंदा को लेकर रनिवास भोग करना। राजा महुअरि ने लोरिक से कहा—ऐ लोरिक, घुड़साल में पचास घोड़े बंधे हुए हैं। तुम उनमें से जाकर एक घोड़ा चुन लो। अहीर घुड़साल में गया और अंदाज़ लेने लगा। कोई घोड़ा हाथ रखते ही धरती पर गिर गया। किसी की कटि पर उसने हाथ रखा तो उसकी पीठ नीचे झुक गयी। अंदाज लेते लेते लोरिक पूर्व की ओर निकल गया। वहाँ भिलासी घोड़ी बंधी हुई थी। उसने जब घोड़ी की पीठ पर हाथ रखा तो उसने धीरे से कहा—'ऐ भैया बीर लोरिक, मेरी बात सुनो। तुमने मेरी पीठ पर हाथ रख दिया। जिस दिन मेरे बेटा पैदा हुआ उसने पृथ्वी पर पैर रखा। यह पहले से लिखा हुआ है कि उस पर अहीर बीर लोरिक ही चढ़ेगा। दूसरा उस पर कोई नहीं चढ़ेगा। दूसरे के लिए वह घोड़ा काट खाने वाला बन गया है। अहीर के लिए वह पूज्य है। घोड़ी ने लोरिक से कहा कि घोड़ा मंगरू क्षत्रिय वर्ग का है। उसका मालिक तेली है।' अहीर अब उस चाँदनी पर गया जहाँ राजा महुअरि बैठा था। उसने कहा—ऐ राजा, तुम मुझे तुरन्त घोड़ा दो कि हम नेउरीपुर जायें। मुझे काट खाने वाला घोड़ा दो। मैं नेउरियापुर पाल जाऊँगा। मंत्री ने यह बात पहले ही सुझायी थी। कचहरी के सभी लोग हँस पड़े। किसी के लिए मौत खोजनी पड़ती है। अहीर की मृत्यु स्वतः निकट आ गयी है। लोगों ने कहा—जाकर घुड़साल का ताला खोल दो। लोरिक घोड़े को देखेगा, ढक्कन उठायेगा। घोड़ा मंगर उसे खा डालेगा। हर रोज की मुसीबत टल जायगी। राजा महुअरि ने कहा—ऐ अहीर मैं तुम्हारी बात नहीं मानूंगा। मैं तुम्हें काट खाने वाला घोड़ा कैसे दे दूँ। शायद वह तुम्हारी

ज़िदगी ले ले । मैं उसकी जिम्मेदारी नहीं लूंगा । लोरिक ने कहा—वह कैसे काट कर मेरी ज़िदगी ले लेगा ? मैं उस काट खाने वाले घोड़े को देखूंगा । ताला खोलकर वह कोठरी के अंदर जल्दी से चला गया । तख्ते उठाये । दोनों पास पास हुए । लीद के कारण बलशाली घोड़ा वहाँ शिथिल पड़ गया था उसकी आँखों में कीचड़ बह रहा था । लोरिक गड्ढे के अंदर चला गया । दोनों ओर से लीद हटायी, पेटी खोली, घोड़े के पेट पर हाथ रखा । उसको ऊपर लाया । लीद के ऊपर आकर घोड़ा खड़ा हो गया । लोरिक उसकी बगल में खड़ा था । उसकी पीठ पर जितने बाल बढ़े हुए थे उनको चाकू से काटा, आँखों का कीचड़ साफ़ किया फिर उस घोड़े का चूल पकड़ कर उसे बाहर निकाला । उसको लेकर तालाब के भीटे की ओर ले चला । हल्दी के लोग उसे देखने लगे । घर घर मे लोगों ने दरवाज़े बंद कर लिये, टाट चढ़ा लिये । काट खाने वाला घोड़ा छूट गया है । किसकी मृत्यु निकट आ गयी है । लोरिक घोड़े को लेकर जमुनी के पास आया । हाथ में एक कूँचा लेकर घोड़े को सीधे ले जाकर तालाब पर खड़ा किया । उसको खूब ठीक से धोने लगा । उसने घोड़े की आँखों का कीचड़ धोया । जमुनी के घर उसे वापस लाकर दूध और काली मिर्च दिया । उसकी गद्दी और लगाम ठीक किया फिर उसकी पीठ पर बैठ गया । उसके सामने गर्म चना रखा गया । लोरिक कहने लगा, ऐ बलवान मंगर, तुम इसे खालो । दस दिनों तक घोड़े की सेवा होती रही । जब घोड़े मे कुछ शक्ति आयी तो वह हल्दी में ठुमकने लगा । हल्दी के लोगों ने उसे देखा और घर के दरवाज़े बंद कर दिये । सब आश्चर्य में पड़े हुए थे । कट्हा घोड़ा जो सबको काट खाता था, लोरिक का पूज्य हो गया है । लोरिक ने मंगर की सेवा की । उसका शरीर यथापूर्व हो गया । वह चने की दाल खाता था एक नाद में दूध और मिर्च खाता था । जब मंगर स्वस्थ हो गया तो उसने लोरिक से कहा—ऐ लोरिक, मेरी बात सुनो । तुम राजा की चाँदनी पर जाओ और मेरा सारा सामान उससे माँग लाओ । मैं ज़रा अपने बल का अंदाज़ लेना चाहता हूँ । लोरिक जमुनी के घर से महुअरि की चाँदनी पर गया । जमकर वहाँ दरबार लगा हुआ था । उसने कहा--राजा सुनो । घोड़ा अपना सामान माँग रहा है । राजा महुअरि ने कहा—एक दो सामान की क्या गिनती है ? यहाँ तो पचास साजो सामान टंगे हुए हैं । तुम जाकर देख लो । जो सामान तुम्हें भाये उसे यहाँ से शौक से ले जाओ । लोरिक ने अच्छा सा सामान चुन लिया । उसे लेकर चाँदनी पर आया । जब घोड़े के पास वह सामान ले गया तो घोड़ा जलकर खाक हो गया । उसने कहा—चेला तुम पागल हो गये हो । तुम्हारी बुद्धि हर ली गयी है । तुम मेरा बंधन ढीला कर दो । मैं राजा का पौरुष देखूं । तुम यह टूटा हुआ सामान लाये । तुम ऐसा सामान मुझे क्यों दे रहे हो ? मेरी पाखर सोने की है । मेरा कवच (ज़िरह) सोने का है । बाहर तार में पिरोये हुए मोती हैं । मेरे पैर के घुंघरू हैं । जब मैं उन्हें बाँधता हूँ तो उनकी आवाज़ साठ कोस तक जाती है । लोरिक राजा महुअरि के यहाँ गया । कहने लगा—राजा तुम जल्दी से

घोड़े का सामान दे दो। नहीं तो मैं तुम्हरी अल्हड़ ज़िदगी समाप्त कर दूंगा। तुम सारी सामग्री दे दो ताकि मैं नेउरीपुर चाल जाऊँ। राजा महुअरि ने सामान दे दिये। लोरिक ने सामान लाकर घोड़े के सामने रख दिये। घोड़ा मंगर हंस पड़ा। अहीर घोड़े का सारा सामान कसने लगा। पाखर सजा कर उसके मुँह में लगाम कस दिया। उसके माथे पर कवच जड़ दिया जिस पर गोली के वार बेकार जाते थे। फिर झालरें पहना दी जिनमें मोती जड़े हुए थे। उसके पैर मे नूपुर बंध गये जिनकी आवाज़ घनी थी। अब घोड़े का हाल देखिये।

भावार्थ—(२७०१—३०००)

द्वितीया का चन्द्र उगा हुआ है। सूर्य की ओर तो देखा जा सकता है। पर मंगर घोड़े की ओर ताका नहीं जाता। अहीर अब तख्त पर स्नान करने लगा फिर जाकर ठहर पर भोजन करने लगा। उसने दोनों स्त्रियो से कहा—तुम लोग यहाँ दहाड़ती रहो मैं नेउरीपुर जा रहा हूँ। यदि मैं वहाँ जूझ गया तो हमेशा का कष्ट समाप्त हो जाएगा। यदि मैं नेउरी से हल्दी लौट आया तो आधा हल्दी का राज्य ले लूँगा। किले में भी आधा बँटवारा कर लूँगा। मैं आधे का हिस्सेदार बन जाऊँगा। अहीर खा पीकर तैयार हुआ, मुख मे पान का बीड़ा डाला तथा अपना बाक्स खोलकर वह अस्त्रशस्त्र से सुसज्जित होने लगा। आगे लम्बा कुर्ता अंगरखा पैर में विशेष पायजामा, एड़ी मे लोहे की कील वाला जूता तथा उसने तर्कश धारण किया। साठ गज का दुपट्टा उसने संभालकर अपनी पेटी में बाँध लिया। उसने छप्पन पेचों वाली छूरी तथा कटारी ले ली। उसकी बगल में तलवार झूल गयी। उसने साठ गज कपड़े की नरमा की पगड़ी बाँधी जिसमें कलँगी सुशोभित थी उसने दाहिने हाथ मे बिजली की तलवार ली तथा आसन पर बैठ गया। घोड़ा धरती और वायु मण्डल में घूमने लगा। फिर हल्दी की परिक्रमा करने लगा। वहाँ के लोग भयभीत हो उठे। आश्चर्य करने लगे। हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा आपने हमारे ललाट में क्या लिख दिया है! ऐसा दुर्दिन आ गया है। कट्टहा घोड़ा छूट गया है। हल्दी बाजार में किसकी मौत आ गयी है? घोड़ा उडान भर कर आकाश में चला गया। वह बादलों को चीरता हुआ नेउरियापुर में पहुँच गया। छिउली वन में जाकर वह उतर गया। लोरिक ने उतर कर घोडे को छिउली के पेड़ से बाँध दिया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। राजा हरेवा-परेवा जंगल में शिकार खेलने गए थे। उनकी दृष्टि उस घोड़े पर पड़ी जो छिउली की डाल से बँधा हुआ था। उन्होंने पहरेदार से कहा—तुम पलाश (छिउली) वन की ओर जाओ और घोड़े का पता ठिकाना लो। क्या कोई राहगीर है जो रास्ता भूल गया है? या घोडे का सौदागर है जो घोड़ा बेचने आ रहा है। पहरेदार भींटे पर गया, पलाश के पेड़ के पास जाकर खड़ा हो गया। वहाँ अहीर वीर लोरिक सो रहा था। उसने घोड़े को छिउली की डाल से बाँध रखा था। पहरेदार वहाँ पहुँच गया तथा धीरे से बोला—भैया, तुम्हारा वतन कहाँ है? तुम्हारा मूलस्थान कहाँ है? ऐ परदेशी, तुमने इस धूप में कहाँ की चढ़ाई की

है ? तुम धूप में आगे चले जा रहे हो ? अहीर बीर लोरिक ने कहा—संगी मेरी बात सुनो। गउरा मेरा वतन है, मूलस्थान है। मैंने नेउरी की चढ़ाई की है। यहाँ छिउली वन में मैं उतर गया हूँ। पहरेदार ने कहा—भैया, मेरी बात सुनो। जब तुम्हारा घर गउरा में है तो तुम वहाँ के अपने किसी हितू या मित्र के बारे में बताओ। अहीर ने तुरन्त जवाब दिया। गउरा गुजरात में हमारा एक मित्र था और हम दोनों साथ में मिलकर गुल्ली डंडा खेलते थे। वह हमारा मित्र साहु बना, मैं चोर बना। मैंने गुल्ली टेढ़ी मारी जो भकताल में चली गयी। तब तक मेरा मित्र दौड़ा और हाथ में उसने गुल्ली लेकर चंपा मारा गुल्ली आकर मेरे माथे में गड़ गयी। खून बहने लगा। मेरा मित्र देश छोड़कर भाग गया। फिर उसका कोई पता ठिकाना नहीं है। मैं नेउरी में आया हूँ। पहरेदार ने कहा—लोरिक मेरी बात सुनो। मैं ही वह मित्र हूँ। तुम्हारे डर से मैं गउरा छोड़कर भाग आया तथा नेउरीपुर में आकर टिक गया। फिर गउरा वापस नहीं हुआ। फिर दोनों गले मिलकर रोने लगे। उनके रुदन से वृक्षों के पत्ते झर झरकर गिरने लगे। लोरिक ने कहा—मित्र सुनो। नेउरी में लगान रोक लिया गया है। तुम्हारा राजा यहाँ बड़ा बलवान हो गया है। तीन साल हो चुके हैं उसने हल्दी में मालगुजारी नहीं दी है। अब मैं उसे उगाहने के लिए आया हूँ। मित्र, मेरी बात सुनो। तुम्हारे राजा के लोहे के हथियार कैसे हैं ? उसके पास कौन-कौन से हथियार हैं ? मित्र पहरेदार ने समझाकर कहा—मित्र लोरिक मेरी बात सुनो। तुम्हारा घोड़ा जब आकाश में रहेगा तो राजा पहले अपनी सभी कुतियों को छोड़ेगा। वे घोड़े का लिंग पकड़कर उसे नीचे गिरा देंगी। तुम धरती पर गिर पड़ोगे तब तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा। दूसरा लोहा और तेज है उससे बड़ा कोई और लोहा नहीं है। तुम्हारा सिर ब्रह्म-फाँस में फँस जाएगा अंधकारमय है उसमें तुम्हारी जान नहीं बचेगी। लोरिक ने पूछा—मित्र, तब उपाय क्या है ? जो भी रास्ता हो तुम मुझे बताओ। पहरेदार मित्र ने कहा—जब तुम ब्रह्मफाँस में गिरो तो सरकंडों के पास चले जाना। यदि तुम सरकंडों को काट दोगे तो ब्रह्मफाँस गिर पड़ेगा। तब तुम्हारा अवसर आ जाएगा। लोरिक ने मित्र की बात ध्यान से सुनी। उसने कहा—देखना, भेद खुलने ना पावे। पहरेदार अब राजा के घर की ड्योढ़ी के लिए चला। वहाँ युद्ध की तैयारी हो रही थी। राजा ने पहरेदार से पूछा—मित्र, क्या राहगीर रास्ते की धूप से छाँह में रुक गया है तथा घोड़े को उसने छोड़ दिया है। उसे बाँधकर आराम करने लगा है ? पहरेदार ने कहा—मैं पलाश के वन में गया था। मैंने उससे स्पष्ट रूप से सारा हाल पूछा। वह घोड़े का सौदागर नहीं है। वह कहीं घोड़ा बेचने नहीं जा रहा है। वह तुम्हारा हित या मित्र नहीं है। वह भेंट मुलाकात करने नहीं आया है। वह राजा तुम्हारा दुश्मन है। हल्दी के राजा की तुमने जबर्दस्ती कौड़ी (मालगुजारी) रोक रखी है। वह उसे वापस लेना चाहता है। हल्दी का मालिक आया है, नेउरी में वह अपनी मालगुजारी वसूल कर लेगा दोनों भाई, हरेवा-परेवा ने यह बात कान लगाकर सुनी। हरेवा ने परेवा से कहा—गाँव के पास शत्रु आ गया है। नेउरी में जबर्दस्त

झगड़ा मचेगा । इधर लोरिक ने घोड़े का शृङ्गार करना शुरू किया । उसने सोने की झूल और कवच तथा बकसुवा आदि को पहनाया । माथे का सिरस्त्राण भी उसने सजा दिया । सिरस्त्राण पर गोलियों का निशाना चूक जाता था । लोरिक उस पर सवार हुआ । उसके सवार होते ही घोड़ा धरती से आसमान पर उड़ गया । वह बादलों को चीरने लगा । मंगर पैर उठाकर नाचने लगा । वहाँ का राजा दुरबीन लगाकर उसे देखने लगा । वह कुतियों के पास गया । सकुली कुतिया को उसने छोड़ दिया । उसने जाकर घोड़े का लिंग पकड़ लिया । और उसको नीचे खींचने लगी । तब बीर लोरिक ने कहा—ऐ मंगर स्वर्ग का घोड़ा कैसे मुझे नीचे लिए जा रहा है । मंगर ने धीरे से कहा—मेरे मालिक, दातों से मेरा लिंग पकड़कर कुतिया झूल रही है । लोरिक ने वहाँ नीचे लटककर देखा कि कुतिया ने घोड़े का लिंग पकड़ लिया है । उसने म्यान से कटार निकाली और तुरन्त कुतिया की गर्दन काट दी । नेउरी में रक्त की धारा गिरी, कुतिया की गर्दन स्वर्ग में उड़ने लगी ।

अब वहाँ का हाल सुनिये । घोड़ा आकाश में पैर उठा उठाकर नाच रहा था । इधर जब अमर कुतिया नेउरी में कट गयी तो फिर राजा ने लोरिक पर आक्रमण करने की तैयारी की । दोनों भाइयों ने (हरेवा और परेवा) आपस में बैठक की । फिर ब्रह्मफाँस को बढ़ाकर घोड़े पर फेंका दुर्गा धन्य हैं, आदिकाल से ही पूजमान हैं । उन्होंने जाकर रक्षक का काम किया, अपना पहरा लगा दिया । घोड़ा मछली बनकर पार हो गया । ब्रह्म जाल गिर पड़ा । मंगर आकाश में नाचने लगा । हरेवा परेवा ने घर से ब्रह्मफाँस को छोटा करके फेंका । देवी दुर्गा ने अपना रूप प्रकट किया । वह फिर रक्षक बन गयीं । ब्रह्मफाँस एकदम छोटा हो गया । तीसरी बार राजा हरेवा क्रुद्ध हुआ, बुजरो यह ब्रह्म का फाँस है । अब तुम अपनी पूरी शक्ति लगाओ । आज मैं फिर जाल फेंक रहा हूँ । आकाश में मेरा शत्रु फँसेगा । नहीं तो मैं इस जाल पर मूत कर इसे फेंक दूंगा । ब्रह्म की निंदा होगी । अब दुर्गा का हाल सुनिये । दुर्गा की शक्ति लोरिक को सहायता कर रही थी । नेपथ्य में हाथ फैलाकर वह नाच रही थीं । वह यह सोच रही थी कि ब्रह्म उनके बडे भाई हैं, पिता हैं । यदि उन्होंने अपनी जबान हिला दी तो मेरा यहाँ रहना कठिन हो जाएगा । अब दुगा सूबा के अनुकूल हो गयीं । उसने फाँस बनाकर फेंका । घोड़ा उसमें फँस गया । खींचने पर फाँस और संकुचित होता चला गया । नीचे लोरिक का मित्र पहरेदार खड़ा था ।

भावार्थ—(३००१—३३००)

वह आश्चर्य में पड़ गया । सहज ही मेरा मित्र लोरिक कट जाएगा । दिन भर में ही झगड़ा समाप्त हो जाएगा । उसने धरती से ही चिल्लाया । मित्र सुनो, यह सूबा तुम्हारा हत्यारा बन जाएगा । तुम्हारे पास गाँठ में जो कुछ हो उससे शलाका को काटो । अहीर यह बात भूल गया था । उसने अब अपना कौतुक दिखाया बगल से उसने कटारी निकाली । जाल की शलाका को काट डाला । शलाका के कटते ही जाल धरती पर गिर पडा । घोड़ा कूदकर अलग हो गया । फिर अगला पैर फैलाकर करगही

नाच नाचने लगा। अहीर ने कहा—अब अवसर आ गया है। अवसर पनिहारिन से कुएँ पर पानी भरवाता है। सूबा, तुम्हारा कठिन आक्रमण मैंने बर्दाश्त कर लिया। तुम मेरा साधारण हमला संभालो। लोरिक ने म्यान फेंक दिया तथा अपनी तलवार खींच ली। उसको चार अंगुल बाहर निकाला तो उसकी ध्वनि आकाश में गूँजने लगी। नीचे आग की लहर फैल गयी और पोरसे भर ऊपर लपलपाने लगी। सूबा की पलकें घूम गयीं। उसका खड्ग धूल में मिल गया। लोरिक पूर्व से पश्चिम की ओर काटने लगा। पश्चिम से फिर दक्षिण घूम गया। जैसे कोइरी कोड़ार का खेत काटता है वैसे ही कठईत का पुत्र, जिसका दुलारा नाम लोरिक है; सबको काट रहा है।

लोरिक ने इस प्रकार काटना शुरू किया कि वहाँ कोई बच नहीं पाया। जो स्त्रियाँ बची थीं उनको भी लोरिक खोज-खोजकर काटने लगा। शायद उनके पेट में शत्रु हों जो कभी बैर साधें। ऐसा कहते हुए उसने लोगों को काटना शुरू किया। जो स्त्रियाँ बिना पुरुष के हो गयी थीं वह गली-गली में बेचैन होकर घूमने लगीं। लोरिक ने नेउरी की सारी सम्पत्ति हर ली। अहीर अब हल्दी का मालिक बनेगा। उसका भाग्य खुल गया। लोरिक नेउरी के जेल में गया। वहाँ उसने पांच सौ कैदियों को छुड़ाया। उन्होंने लोरिक को घेर लिया। वे कहने लगे—ऐ मालिक लोरिक, हमारी बात सुनिये। हमारा भाग्य था कि तुमसे भेंट हुई। तुमने हमें जेल से मुक्ति दिलाई। लोरिक ने पांच सौ कैदियों से कहा—तुम लोग अब छूट गये हो। तुम सब लोग कुछ काम करो। तुम लोगों को हल्दी चलना है। सभी कैदी नेउरीपुर गांव में दल बनाकर प्रवेश कर गये। बारह बैलों पर कर्ण फूल, झुलनी और नँथिया आदि अलंकार तथा अन्य सामानों को लोरिक ने लदवा लिया। उसने नेउरी का सारा धन बटोर लिया। वहाँ के राजा का सारा धन उसने ऊंट पर लदवाया। उसने कैदियों से कहा—ऐ भाई, तुम लोग मेरी बात सुनो। हमने तुम्हारा बन्धन तुड़वा दिया है। तुम लोग अपने घर जाओ और अपने बाल बच्चों की देखभाल करो। कमाई करो और खाओ। कैदियों ने लोरिक से कहा— हम लोग जीते जी तुम्हारा पिन्ड नहीं छोड़ेंगे। ऐ अहीर, हम लोग तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ तुम्हारे लिए ये कैदी अपना खून दे देंगे। जब अहीर के बैल लद गये तो उन्होंने हल्दी की राह ली। ऊँट, हाथी, घोड़े सब पर नेउरी का धन लाद कर हल्दी लाया गया। वहाँ के राजा महुअरि ने लोरिक से हाथ मिलाया उसने विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर लोरिक, सुनो। तुम हल्दी का राजा हो जाओ। मैं तुम्हारी प्रजा बन कर रहूँगा। तुम चनइनी को लेकर दोनों वक्त कचहरी करो तथा छक कर मदिरा पीओ। जब महुअरि ने ऐसा कहा तो लोरिक अपने मन में मुस्कराने लगा। शहर में डुग्गी पिट गयी, 'भाइयों, आज राज्य में परिवर्तन होगा'। महुअरि आज प्रजा बन रहा है। अहीर लोरिक अब राजा बन रहा है। लोरिक हल्दी का राजा बन गया, मालिक बन गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। जिस दिन नेउरी में झगड़ा लगा हुआ था उसी दिन बोहा में भी युद्ध हो रहा था। भगवती दुर्गा ने लोरिक से कहा—मैं किस दल को संभालूं। दंगल में मैं किसका साथ दूं? लोरिक रो पड़ा। माता, कौन सा दंगल? तुम क्या कह रही हो? तुम किसकी पूजमान हो? देवी, तुमने हमारे हाथ का गुड़ और घी खाया है। तुमने हमारी की हुई पूजा को स्वीकार किया है। तुम मेरा पक्ष संभालो। दूसरे पक्ष को संभालने का कोई प्रयोजन नहीं है। इधर बोहा में लोहा लगा हुआ है। कोलों ने मल संवरू को रोक लिया है। संवरू ने नन्हूवा से कहा—हाथ में डण्डा ले लो तथा कोलों का आगे बढ़ना रोक दो। मैं भी सावधान हो रहा हूँ। खेत पर आक्रमण हो रहा है। तलवार ले लेकर कोल दौड़ रहे हैं। बोहा में कोलों का दल एकत्र हो चुका है। नरानापुर गाँव के उमराव भी उनके साथ शामिल हैं गाजनगढ़ के तुर्क भी गढ़पीपरी के कोल और चंड़ारों से मिल गये हैं। चारों दल के लोगों ने एकजुट होकर बांट-बांट कर पत्थी पर भात खाया है। कोल तलवारें ले लेकर दौड़े। नन्हूवा ने आगे जाकर उनको रोका। जिस समय वह लाठी लेकर-ब्याल्मिम हाथ दौड़ा तो कोल भाग खड़े हुए। नान्हूं ने उन्हें पीपरी में भगा दिया। नदी के किनारे आकर वह बैठ गया। पीपरी का राह देखने लगा।

अब इधर संवरू का हाल सुनिये। उन्होंने नम्रता पूर्वक कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने भाग्य में क्या लिख दिया? कोलों का दल आ रहा है। उन्होंने तीर और धनुष हाथ में उठा लिया। जाकर समर में डट गये। नान्हूं को समझा कर कहा—तुम कोलों के दल को छोड़ दो। आज ज़रा लोहा लग जाने दो। नान्हूं ने कहा—धरमी मेरी बात मानो। जब तक बहनोई लोरिक हल्दी से नहीं आ जायेंगे तब तक मैं बेवरा का घाट नहीं छोड़ूंगा। जब धरमी सांवर ने यह सुना तो वह तड़प कर बोले। नान्हूं चरवाह सुनो। बाद में लोरिक बहुत भाई का प्रेम दिखायेगा। वह रण में क्या काम आयेगा? तुम कोलों को छोड़ दो। ज़रा दो हाथ तलवार चल जाय। कोलों का दल चढ़ आया। तलवारें झनझना उठीं। इधर तीन सौ साठ चरवाह थे। वे जवान पट्ठे थे। वे बोहा में तत्पर हो गये। कोलों से उनकी लड़ाई छिड़ गयी। जब संवरू के हाथ से बाण छूटे तो सौ दो सौ कोल भहरा कर गिर पड़ते थे। तीन सौ साठ चरवाहे उनकी टांगें पकड़ कर बेवरा नदी में फेंकते जाते थे। नदी में लाशें बही जाती थीं। कोल तलवारों से आक्रमण किये जा रहे थे। मार करते-करते संवरू के हाथ थक गये। पानी के बिना उनका कंठ सूखने लगा। उन्होंने कोलों से कहा—मैं औरों के मारने से नहीं मरूंगा और न मैं यहां से भागूंगा। जब मेरे भाई सुबच्चन यहाँ आयेंगे, बोहा में लड़ेंगे, तब उनके हाथों मेरी मृत्यु होगी। सती ने यह बात सुनी। वह कलश में पानी लेकर चली, संवरू के पास गयी। तब तक कोलों की भवानी वहां पहुँच गयीं। उन्होने सती का हूबहू रूप धारण कर लिया। संवरू से कहा—मेरे स्वामी, मेरे सुखनन्दन, मेरे सुहाग, मेरो बात सुनो। कोलों का तीर कहाँ-कहाँ लगा है? मुझे शीघ्र बताओ। संवरू ने कहा—मेरी विवाहिता, सारे

शरीर में तीर लगे हैं। पर कहीं पीड़ा नहीं है। केवल एक तीर कलेजे में लगा है, वही थोड़ा दुख दे रहा है। कोलों की भवानी ने उसे देखा और उसी रास्ते अन्दर प्रवेश कर गयीं, संवरू के मस्तक पर चली गयीं। वे अन्धे हो गये। कोल प्रहार किये जा रहे थे। संवरू भी अपने आसन से तीर फेंक रहे थे। उनके छोड़े हुए तीर से सौ दो सौ कोल धराशायी हो जाते थे। उन्होंने कोलों से कहा—इस तीन भुवन में कोई मुझे मार नहीं सकता। जब पीपरी से मेरे भाई सुबच्चन आयेंगे तब तुरन्त मेरी मृत्यु होगी। उन्हीं के मारने से मैं मरूंगा। वहां से दस पांच कोल पीपरी के लिए चले। दिन रात चलकर वे पीपरी सुबच्चन के पास पहुँचे। मल सुबच्चन से एक कोल ने तुरन्त बातचीत की, तुरन्त सवाल जवाब किया। उसने कहा—भइया सुबचन, सुनो।

भावार्थ—(३३०१—३६००)

तुम्हारे भाई सांवर ने तुम्हें बुलाया है, बड़ा जरूरी काम है। सुबच्चन ने कहा—दूसरी पुकार में मुझे भेजो। मैं भाई को मारने के लिए नहीं जाऊँगा। इस पृथ्वी पर मेरा तीन बार जन्म हो तो भी ऐसा नहीं करूंगा। कोल यह सुन कर बिगड़ उठे। कुल मिलकर उनसे लिपट गये। उनको उठा कर बोहा में लाये। सुबच्चन मल सांवर के पास गये। दोनों भाई फूट-फूट कर रोये। फिर मलसांवर ने कहा—मैं इन कोलों के मारने से नहीं मरूंगा। मेरी मृत्यु तुम्हारे हाथों लिखी है। मैं तुम्हारे मारने से ही बोहा में मरूंगा। सुबच्चन ने कहा—भइया मलसांवर मेरी बात सुनो। हम दोनों भाई एक हो जायं। कोलों को बोहा से मार भगायें। मल्ल सांवर ने धर्म की बात कही। भैया, मैंने अहीर का नमक खाया है। मैं अहीर के लिए लड़ूंगा। सांवर ने कहा—तुमने कोलों का नमक खाया है तुम कोलों के लिए लड़ जाओ। मल्ल सुबच्चन रो पड़े। भैया, तुम इस प्रकार बैठे रहोगे तो मेरा बाण कैसे छूटेगा? कोल आपस में विचार करने लगे। सुबच्चन वैसे नहीं मारेंगे। उनके लिए गड्ढा खोद दो और उसमें इन्हें गाड़ दो। इनकी आँखों में पट्टी बाँध दो। हाथ में तीर पकड़वा दो वे सीधे प्रहार करेंगे और मलसांवर की मृत्यु हो जायगी। बोहा में सभी कोलों ने इस प्रकार की योजना बना ली। उन्होंने धरती में हाथ भर गहरा गड्ढा खुदवा दिया, सुबच्चन की आँखों में पट्टी बाँध दी तथा उनके हाथों में तीर और धनुष दे कर गड्ढे में खड़ा कर दिया। सुबच्चन ने तीर मारा तो वह आकाश में चला गया। पछुवा हवा थी। वह तीर को पूर्व की ओर लिये जा रही थी। तीर फिर नीचे आया। पूर्वी हवा झकझोर उठी। पूर्व की ओर मुँह करके मलसांवर बैठे हुए थे। तीर वहाँ से उड़ते हुए आकर सांवर के कलेजे में लग गया। धर्मी सांवर ने नम्रता पूर्वक कहा—पंचो, आज मेरी मृत्यु आ गयी है। इसके बाद वह मुँह से 'सीताराम' का उच्चारण करने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। जिस समय सांवर को तीर लगा, गाय का उदर फट पड़ा। उसने दूध की धार मारना शुरू कर दिया। बंध्या गाय का थन सूख गया। लाश बोहा में तैरने लगी। कोल पश्चिम दिशा में पशुओं को हांकने लगे।

पर बोहा उन्होंने नहीं छोड़ा। संवरू का प्राण पखेरू उड़ गया। कोल तमाशा देख रहे थे। धर्मी सांवर का प्राण फिर उनके शरीर में वापस आ गया। उनकी मिट्टी नम्रता पूर्वक बोल उठी। उन्होंने कहा—ऐ वीर कोलों, हमारा कहना मानों। तीनों भुवन उलट जायं पर बोहा की गायें बोहा से ऐसे नहीं जायेंगी। तुम लोग मेरा सिर काट कर धनुष में लटका लो। उसे लेकर आगे-आगे पीपरी भागो। पीछे से लक्ष्मी गायें चली जायेंगी। ऐसा कहते हुए संवरू का प्राण इन्द्रपुरी में चला गया। कोलों ने उनका सिर धनुष में लटका लिया। आगे-आगे कोल चंडार चले। पीछे से गायें दौड़ी जा रही थीं। वे पीपरी में प्रवेश कर गयीं। कोलों के यहां विहार करने लगीं।

इधर हल्दी का हाल सुनिये। यहां लोरिक दोनों समय कचहरी करता था। तख्त पर स्नान करता था। जमुनी के घर जाकर मद पीता था। उसकी गोद में जाकर सोता था। वह वहां आनन्द कर रहा था। यहां गउरा-गुजरात में मंजरी पर विपत्ति पड़ गयी। जो मंजरी घंटे-घंटे पर कपड़ा बदलती थी उस पर ऐसी विपत्ति आ गयी कि घूरों की लताएँ बटोर कर, पैबन्द जोड़कर वह तन ढकने लगी। उसको कूटने पीसने का काम भी नहीं मिलता था। उसकी विपत्ति का अन्त नहीं था। वह हर समय रक्त के आंसू गिराती थी। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, तुमने भाग्य में क्या लिख दिया? मैं कितने दिनों तक गउरा में विपत्ति भोगूंगी। मंजरी झंख रही थी। उसके पेट में गर्भ के लक्षण दिखाई पड़ते थे।

अब गउरा का हाल सुनिये। उसको एक रात दाना पानी नहीं मिला। प्रातः काल वह उठी तथा नाई के घर चली। उसके दरवाजे पर दुखी होकर बैठ गयी। नाई से बोली—गांगी, तुम सुनो। हमारा तुम्हारा बहुत दिनों का साथ है। मेरे स्वामी के तुम बड़े प्रिय थे। उनके कारण तुम्हारे पास गाय भैंसों का झुण्ड जमा हो गया। आज तुम इस गाँव में हो। मेरे ऊपर गउरा में विपत्ति आ गयी है। वे हल्दीपुर में हैं। उनका पता नहीं चलता तुम गोरोचन लेकर हल्दी पहुँचा दो। यहाँ की विपत्ति लोरिक को समझा दो। शीघ्र ही अहीर गउरा गुजरात आयेंगे फिर मेरा दिन लौट आयेगा। मैं तुम्हारा मान रखूंगी। गांगी, तुम गउरा की विपत्ति देख रहे हो। तुम जाकर उनसे समझा कर यहां की विपत्ति कह दो। कह दो कि मंजरी के गले में जो नवलखा हार सुशोभित हो रहा था वह कोलों के घर पहुँच गया है। छाती पर पैर रख कर उन्होंने हार, तथा भारी करधनी ले ली। ऐसा दिन आ गया है कि वह हार कोलिनों के गले में चमक रहा है। गांगी मंजरी के घर आया। मंजरी ने कोरा कागज निकाला। हाथ में कलम और दावात ली तथा अपनी विपत्ति लिखने लगी। पत्र लिखकर उसे लपेट दिया। गांगी ने उसे हाथ में उठा लिया। गांगी पूर्व की ओर तेजी से चला। रास्ते में उसने कहीं विश्राम नहीं किया। चलते-चलते वह हल्दी पहुँचा। वह लोरिक का घर पूछते जा रहा था। गांव के लोगों ने घर बता दिया। नाई जमुनी के घर गया। अहीर कचहरी के दरबार में गया हुआ था। दरवाजे पर नाई को देखकर चनवा दौड़कर वहाँ आ गयी। उसकी बाँह पकड़ कर

उसे ले गयी और प्रेम से उसे बैठा दिया। वह नाऊ से हाल चाल पूछने लगी। मेरे पिता सहदेव कैसे हैं ? मेरे भाई कैसे हैं ? मेरी माँ सेल्हिया कैसी हैं ? मेरी ससुराल के लोग कैसे हैं ? मेरी सास खोइलनि कैसी हैं ? मेरे श्वसुर सांवर कैसे हैं ? नाई गांगी ने कहा—गउरा गाँव में कुशल है। वहाँ के सभी लोग आनन्द से हैं। अहीर के यहाँ कुशल नहीं है। उसके घर मुसीबत आ गयी है। सारी बातें लिखकर मंजरी ने जो पत्र दिया था उसे नाई अपने पास रखे हुए था। उसने चनवा से कहा—मलकिन, गाँव व घर का समाचार अच्छा है। अहीर के घर कुशल नहीं है। मल सांवर मार डाले गये हैं। सारी गायें हर ली गयी हैं। नरानापुर गांव कोलों से मिल गया है। गाँव के उमराव उनसे मिल गये हैं। गढ़ गाजन के तुर्क भी मिल गये हैं। गढ़ पीपरी के कोल-चंड़ार सभी ने मिल कर बोहा पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने सुभग सरदार सांवर को मार डाला। सारे घर को लूट लिया। लोरिक के घर में विपत्ति आ गयी है। खोजने पर भी लोगों को कूटने-पीसने का काम नहीं मिल रहा है। वेश्या चनैनी ने यह सुना। उसने कहा—नाई मेरी बात सुनो। जो बात तुमने मुझसे कही है वे मेरे स्वामी न जानने पावें। मैं तुम्हें बहुत मछली भात खिलाऊँगी तथा तुम्हारी विदाई अच्छी तरह करूँगी। गांगी नाई ने कहा—मलकिन, मैं लोरिक से क्या कहूँगा ? तुम मुझे वे बातें बता दो। वेश्या चनैनी ने नम्रता से कहा—गांगी, नाई की छत्तीस बुद्धि होती है। तुम कोई अपना ज्ञान फैलाओ। गांगी हजाम ने कहा मलकिन, इस समय मेरी छत्तीस बुद्धि बेकार हो गयी है। मुझमें एक भी बुद्धि नहीं रह गयी है। चनइनी ने कहा—जिस समय मेरे पति तुमसे पूछें तुम पूरा समाचार देना। जब भाई सांवर का समाचार पूछें तो उन्हें समझा देना कि वे कुशल से हैं। बकेन गायें भी ठीक हैं। कहना—भइया के बेटा उत्पन्न हुआ है। बधाइयाँ बज रही हैं। लोरिक ने जैसा बोहा छोड़ा है वैसा ही एक और बन गया है। बोहा में इतनी गायें हो गयी हैं कि स्थान की कमी पड़ गयी है। चनइनी की यह बात गांगी ने स्वीकार कर ली। नाई के लिए वह मीठा जल लायी। बाजार में उसके लिए मछली खरीदने गयी। उसने दाल, भात, तरकारी बनायी। ऊपर से मछली तैयार की। इधर बारह बजा। अहीर की कचहरी उठ गयी। अहीर जमुनी के घर गया। तख्त पर स्नान किया। मचिया पर बैठकर जमुनी लौंग और मिर्च का दारू उड़ेलने लगी।

नशा खाकर अहीर घर के लिए चला। जब घर के द्वार पर खड़ा हुआ तो अन्दर गंगिया बैठा हुआ था। अहीर की नज़र उस पर पड़ी। वह दौड़ा। गंगिया उसे पहचान कर खड़ा हो गया। अहीर उसे जी भर कर आशीर्वाद देने लगा। गंगिया, तुम अजर अमर रहो। तुम लाख वर्ष तक जीओ। जैसे गंगा का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। तुम गउरा का समाचार बताओ। गउरा के लोग कैसे हैं। मेरे धरमी भैया कैसे हैं।

भावार्थ—(३६०१—३८००)

मेरी मैया खोइलनि कैसी है ? काका कठईत घर पर कैसे हैं ? बकेन गायें

कैसी हैं। तब गांगी हजाम बोला—गउरा गाँव में कुशल मङ्गल है। गउरा के सभी लोग सकुशल हैं। तुम्हारी लक्ष्मी गायें कुशल हैं। धरमी को पुत्र पैदा हुआ है। बोहा में आनन्द और बधाई हो रही है। उसने कहा—तुम बहुत कम गायें छोड़ कर आये थे। अब उनकी संख्या बहुत हो गयी है। जब एक बोहा में गायें नहीं समा सकीं तो धरमी ने दूसरा बोहा बनाया है। एक ही कुशल नहीं है। मंजरी ने दूसरा पुरुष कर रखा है। लोरिक यह सुन कर मन में मुस्कराया। धरमी भाई कुशल हैं। हमारे बछड़े कुशल से हैं। बोहा की लक्ष्मी कुशल से हैं। गउरा के लोग आनन्द से हैं। बुजरी, मेरी औरत चली गयी। हमने दो औरतों को रखा है। जब मैं लौट कर वापस जाऊँगा तो विवाहिता के साथ रंगरेली करने वाले पुरुष को देखूंगा। इधर भय से गांगी का प्राण काँप रहा था। मैंने बातों को इधर-उधर कर दिया। कोई आ जाय और कहीं सच्ची बात न कह दे। जब अहीर सब बातें सुनेगा तो मेरे शरीर को काट डालेगा। नाई डर रहा है। उसने लोरिक से कहा—मालिक मेरी बात सुनिये। हमारे देश में सूखा पड़ा हुआ है। खोजने पर भी चारा नहीं मिलता। तुम मेरे बाल बच्चों के लिए आहार जुटा दो। मैं कल के दिन यहाँ नहीं ठहरूँगा। मैं गउरा जाऊँगा। अहीर लोरिक ने कहा—मेरे नाई गांगी सुनो। तुम आज ही मेरे घर आये हो। तुम कल हल्दी में रुक जाओ। कल तुम्हें लेकर बाजार चलूंगा। तुम्हारे लिए कुछ सामान बनवाऊँगा। परसों सवेरे उठ कर तुम चले जाना। लोरिक की बात हजाम ने मान ली। उसको भोजन बनवा कर उसने खिलाया, बड़ा सम्मान दिया। प्रातःकाल होते ही उसको शहर में ले गया। उसके शरीर के लिए कम्बल दिया। फिर कुर्ता बनवाया। धोती का जोड़ा दिया। हजाम ने झोली में सोना और द्रव्य कस कर भर लिया। नाई का घोड़ा लद गया। लोरिक ने उसे रास्ता बता दिया। नाई घोड़े पर बैठ गया। वह पश्चिम की ओर चला। हल्दी की अन्तिम सीमा आयी। राजा वहाँ दल बल के साथ कुर्सी पर बैठा हुआ था। तीन चार नौकर थे। राजा ने निगाह उठा कर देखा। नाई ने कौन सी बात बता दी है कि अहीर को इतनी प्रसन्नता हो गयी है। उसने नाई को इतनी बड़ी बिदायी दी है जैसे देश में विवाह का उत्सव हो रहा हो। राजा ने नौकरों को दौड़ाया। उन्होंने घोड़े का लगाम पकड़ लिया। सोनवा नाइन ने गंगिया से पूछा—तुम ने कौन सी शुभ बातें बतायीं हैं कि लोरिक तुम से प्रसन्न हो गया है। उसने इतनी बिदायी दी है। वह नाई से पूछती रही, किन्तु नाई चुप्पी साधे रहा। उसने मुँह से आवाज नहीं निकाली।

अब शोभा का हाल सुनिये। उसने जदुआ बारी को हुक्म दिया। तुम सोलह सौ बैलों को हल्दी जाने के लिए लदवा दो। फागुन का महीना था। गेहूँ तथा जौ कट रहा था। शोभा ने अपने बैलों को हल्दी के लिए छोड़ दिया। बैलों ने हल्दी में धूल उड़ा दी। वहां के किसान फूट फूट कर रोने लगे। धरती पर सिर पटकने लगे। उन्होंने लोरिक से कहा—लोरिक तुम बड़े शक्तिशाली थे। तुम से अधिक कोई बल-

शाली नहीं था। न जाने कहाँ से आ कर यह जबर्दस्त राजा टिका हुआ है। उसने सोलह सौ बैलों को हल्दी की सीमा में हाँक दिया है। बैलों ने पके हुए गेहूँ और गोजई को धूल में मिला दिया है। हम अपने बाल-बच्चों को कैसे जिलायेंगे। तुम्हारा लगान कैसे देंगे ? लोरिक सब कुछ ध्यान से सुन रहा था। प्रजा ने पुकार की। अहीर अपनी चाँदनी से उतरा। उसने प्रजा से कहा—तुम लोग हल्दी में चल कर बैलों को हाँको। मैं भी साथ में चल रहा हूँ। वह कौन सा जबर्दस्त राजा है, मैं देखूंगा। लोरिक हल्दी के सागर पर गया। वह बैलों को हंकवा रहा था। फिर उसने अपनी नजर दौड़ायी। उसने देखा कि सामने घोड़ा बंधा हुआ है। अहीर हार कर उसके पास गया। वह आश्चर्य में पड़ गया। उसको ज्ञान हुआ। यहाँ का राजा शक्तिशाली है। गउरा से जो नाई, हजाम आया था, उसकी मैंने बिदायी की। वह घोड़ा यहाँ बाँसवारी में बंधा हुआ है। लगता है इस राजा ने नाई को मार कर फेंकवा दिया है। लोरिक और पास गया और धीरे से बोला। भैया परदेशी सुनो। किसके बलबूते पर तुमने हल्दी में धूल उड़ा दी है ! शोभा बोला कि मैंने अपने बल-बूते पर हल्दी को धूल में मिला दिया है। बातों बातों में दोनों में झगड़ा हो गया। बात करते करते वे बैलों के पास पहुँच गये। तब नायक मुस्करा उठा। शोभा नाई हँस पड़ा। उसकी बत्तीसी खिल गयी। तब लोरिक शक्ति आजमाने की बात छोड़ दी। दोनों मर्द मिल गये। फूट फूट कर रोने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। शोभा नायक ने कहा। मेरे लोरिक भाई सुनो। मेरी बात मानो। गंगिया गउरा से आया। हल्दी में तुम्हारे घर ठहरा। न जाने घर में कुशल मंगल का क्या समाचार उसने दिया—कि तुम्हारे शरीर में प्रसन्नता छा गयी। तुमने उसको इतनी विदायी दी। मैंने उसका घोड़ा ले लिया है। तब अहीर ने कहा—संगी, तुम मेरी बात सुनो। नाई हरामी है उसने कहा है कि गउरा गाँव में कुशल है ! गउरा गाँव के लोग, खोइलनि, मेरे काका, भइया संवरू सब कुशल से हैं ! मेरी गायें ठीक हैं। संवरू को बेटा पैदा हुआ है। बोहा में बधाई बज रही है। मैं एक ही बोहा में गायें छोड़ कर आया। वहाँ बहुत गायें बढ़ गयी हैं। धरमी वहाँ घूम घूम कर दूसरे बोहा की निगरानी करते हैं ? दो-दो बोहा में गायें एकत्र हो गयीं। घर में बधाई बज रही है। उसने मुझसे कहा एक ही कुशल नहीं है कि मंजरी ने दूसरा पुरुष रख लिया है। लोरिक ने कहा—नाई ने मुझसे कहा है कि धन-जन सभी सुखी हैं। मेरी बुजरी विवाहिता चली गयी है। उसने दूसरा विवाह किया है। मैं चल कर उसके पुरुष को देखूंगा। शोभा ने उसे समझाया। संगी, वीर लोरिक सुनो। तुम्हारा घर नष्ट हो चुका है नरानापुर गाँव और उसके उमराव मिल गये। गढ़ गाजन के तुर्क मिल गये तथा पिपरी के कोल चंड़ार मिल गये। चारों दलों ने एक होकर एक परात में खाना खाया तथा बोहा पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने सुभग सरदार सांवर को मार डाला। गउरा में सब कुछ विपरीत हो गया है। सारी गायें नष्ट हो गयी हैं।

मंजरी जब खेत में जाती थी तो घंटे-घंटे पर पुराने कपड़े बदलती थी। उसको अब कपड़े नहीं मिलते। आज वह नंगी और कपड़ों के बिना है। वह पुराने कपड़े घरों से बटोरती है और पैबन्द जोड़ कर उनको पहनती है। बारह मन का मूसल उसके हाथ में घिस गया है। गउरा में कहीं कुटौनी-पिसौनी का काम भी नहीं मिलता। तुम्हारी विवाहिता दाने दाने के लिए मर रही है। यह सुन कर अहीर लोरिक का हृदय चीख उठा। वह हल्दी में डूबने लगा। वह चाँदनी पर चढ़ गया। कचहरी में लोग बैठे हुए थे। जाकर अहीर ने कहा - पंचो, राम राम बोलो। मेरे घर भारी आपत्ति आ गयी है। मेरा गउरा गाँव लुट गया है। गउरा का सारा धन और पूँजी लुट गयी है। कोल चंड़ारों ने उसे बाँट कर खा लिया है। मेरी विवाहिता जो हमेशा नौलखा हार पहनती थी, उसका हार पिपरी की कोलिनों के पास पहुँच गया है। उसकी छाती पर पैर रख कर कोलों ने छीन लिया है। दुर्दिन आ गया है, कोलनियों के गले में हार सुशोभित हो रहा है। अहीर ने कचहरी में ऐसी बात कही। हल्दी के लोग वहाँ एकत्र हैं। उसनें कहा हिन्दुओं, राम नाम धारण करो। जो तुर्क हैं वे सलाम करें। मेरे घर पर मल सांवर मारे गये हैं। मेरी सारी बकेन गायें हर ला गयी हैं। मैं जाकर भाई का बदला लूंगा, वैर साधूंगा। तभी मेरे कुल की प्रतिष्ठा रहेगी। कोलों से मेरा संघर्ष होगा। जिसको राम विजय देगा वही प्राप्त करेगा। मैं जाकर पिपरी में जूझ जाऊँगा। हर दिन का झगड़ा समाप्त हो जायगा और कहीं वहाँ से जीवित लौटा तो अड़ार की सारी गायों को वापस कर लूंगा। जब उनको अपनी जगह पर स्थिर कर लूंगा तब फिर हल्दी वापस आऊँगा। लोरिक ने प्रजा से सारी बातें कहीं। वहाँ से उठ कर घर आया। उसी समय अस्तबल में गया जहाँ घोड़ा मंगर बँधा हुआ था। उसने उसकी जीन कसी। मुख में लगाम डाला। उसके बाल में मोती गुंथवा दिये। पैर में नूपुर बाँधा जिसकी आवाज साठ कोस तक जाती थी। मस्तक में कवच बाँधा जिस पर गोलियों के निशाने चूक जाते थे। घोड़े का लगाम उसने छोड़ दिया। विवाहिता से उसने बात तक नहीं की। वह घोड़े पर कूद कर बैठ गया। घोड़ा धरती छोड़ कर आसमान में उड़ने लगा।

भावार्थ—(३८०१—४०१३)

वह दिन भर चलता था। शाम को वह हल्दी में चू जाता था। बीर अहीर लोरिक ने कहा—मंगर, तुम मेरी बात सुनो। तुम दिनभर चलते रहे फिर तुम हल्दी में आ गये। मंगर घोड़ा ने तुरन्त कहा— लोरिक, मदिरा ले लेकर तुम बहुत दिनों तक जीवन्त रहे मस्त रहे। जमुनी के पैर के नीचे सोते रहे। पर तुमने जमुनी से बात भी नहीं की और तुम गउरा की ओर चल पड़े। जमुनी का जादू तुम्हें खींच रहा है। तुम्हें हल्दी के बाजार में पटक रहा है। तुम दिन भर किसी भी शहर में उड़ते रहोगे, शाम को जमुनी के घर आ जाओगे। अब वहाँ का हाल सुनिए। अहीर का घोड़ा चला तथा जमुनी के पास आ गया। जमुनी अपनी गद्दी पर बैठी हुई थी। दुकान पर सामान बेच रही थी। अहीर उदास होकर उसके पास

गया। उसके चरण पकड़ लिये। कहा—जमुना, तुम मेरी बात मानो। मैं हल्दी जा रहा हूँ। मैंने सुना है कि मल सांवर मारे गये हैं। मेरी सारी बकेन गायें हर ली गयी हैं। कोल सारे पशुपक्षियों को खा गये। गुड़-अन्न का संग्रह तथा सभी धन और पूँजी वे लूट कर खा गये। आज मेरे घर में कोई सहारा नहीं है। इसीलिए घर जाने की मैं तैयारी कर रहा था। तब जमुनी कलवारिन ने कहा—हे मेरे स्वामी, हे सुखनंदन, हे मेरे सिंदूर, मेरी बात सुनो। तुम मेरे घर में टिके हुए थे। तुमने यहाँ झगड़ा मोल ले लिया। शत्रु तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे जाने की बात देख रहे हैं। यदि कोई मुसीबत आ जायगी तो हम लोगों की बड़ी यातना होगी। मुझसे लोग कहेंगे बुजरो तुमने अहीर जमाई को अपने यहाँ टिका रखा था। इस देश का ध्वंस करा दिया। लोग बड़ी बड़ी माँग करेंगे। मैं कुछ कहने में असमर्थ हूँ। बीर लोरिक ने कहा—ऐ मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। मैं पीपरी में जाते ही युद्ध करूँगा। मैं पीपरी के कोलों को मार डालूंगा फिर बकेन गायों को खदेड़ लाऊँगा। जब तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आयेगी या कोई शुभ होगा। तो गउरा गुजरात में ठहर का भोजन छोड़ कर मैं हल्दीपुर पाल आ जाऊँगा और यहाँ हाथ धोऊँगा। जमुनी ने लोरिक को छुट्टी दे दी। लोरिक घोड़े पर कूद कर चढ़ गया। वेश्या चनइनी यह बात सुन रही थी। वह महल से बाहर निकली। राजा के अस्तबल में गयी। बेलसिया घोड़ी को खोल कर उस पर उसने आखर और पाखर (घोड़े का साज और सामान) सजा दी। मुँह में लगाम लगा दिया। फिर उसने अपना वस्त्र छोड़ कर मर्द का वेश बना लिया। उसने अंगरखा धारण किया पैर में रेशमी पैजामा पहना, दिल्ली शाही जूते कसे, हाथ में तलवार ली। फिर जमकर घोड़े पर बैठ गयी। चनवा के आसन पर बैठते ही घोड़ी उड़ चली। फिर उसने सीधे चलना शुरू किया। अहीर के सामने जब घोड़ी आ गयी तब उसने अपने मन में कहा—यह कहाँ का शूरमा है। यह साथ साथ चल रहा है। क्षत्रिय के रूप में है। लोरिक ने उसे झुककर प्रणाम किया। चनवा मुसकराने लगी। उसने दो धारों वाली तलवार निकाली। लोरिक आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया? मैं वेश्या के चक्कर में पड़ गया। मेरा सारा धन गायब हो गया। बीर लोरिक अपने मन में सोच रहा था। चनवा तुम्हारी जाति वेश्या की है। तुम्हारा संपूर्ण परिवार वेश्या का है। मैं तुम्हारे मत में आ गया। मेरे गउरा में सारा विध्वंस हो गया। चनवा पर्दे में सब कुछ सुन रही थी दोनों घोड़ा उड़ाये चले जा रहे थे। कुछ समय बीतने के बाद वे बोहा में चू गये।

□ □

हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी
पीपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

भावार्थ—(१—३००)

अब वहाँ का हाल सुनिये। हल्दी से सारा सामान लद गया हाथी और घोड़े वहाँ से चले। तम्बू और कनात सब सज गये। महुअरि ने सारी सामग्री लदवा दी। थोड़े समय में हल्दी से सब लोग बोहा पहुँचे। बोहा में तम्बू और कनात ताने जाने लगे, डेरा डाल दिया गया। महुअरि ने हल्दी के उर्दू-बाजार का तम्बू दिया था। अहीर का बाजार वहाँ लग गया। रंग-रंग के सौदे, क्रय-विक्रय की सामग्री, वहाँ सजा दी गयी। अहीर लोरिक ने कहा कि बड़ा तम्बू छोड़ दो। वह तम्बू मालिक का है। वहाँ लोरिक का पलंग डाल दिया गया। वह वेश्या के साथ बैठा हुआ था। घोड़ा बोहे में बाँधा गया था। अहीर उठा और घूम-घूम कर बोहा देखने लगा। कहने लगा—मेरी तकदीर फूट गयी। मेरी गायें किस देश में चली गयीं। मेरे भाग्य में भारी विपत्ति लिखी हुई है। अहीर यही दिन-रात सोच रहा था। अब आगे का हाल देखिये। लोरिक ने कहा—ऐ सिपाहियो, ऐ नौकरो, तुम लोग गउरा नगर में चले जाओ। वहाँ डुग्गी पिटवा दो। 'गउरा में जितना मक्खन और दूध है उसको लेकर लोग बोहा आवें। वहाँ पूरब का राजा आया हुआ है। दूध और मट्ठा की खोज हो रही है।'

गायक राम का नाम सुमिरन करता है। तुम अपने संगी और समान उम्र वालों को न भूलो। दुर्गा माँ को मत भूलो। हे दुर्गा, मैं तुम्हारे ही बल और पौरुष के दम पर तुम्हारा नाम हरदम लेता हूँ। माँ तुम मेरे छोटे प्राण को न बिसारो। मुझे रास्ते पर लगा दो। अब वहाँ का हाल सुनिये। गउरा बारह पल्लियों का है। वहाँ तिरपनवें बस्ती में अहीर बसे हुए हैं। वहाँ घर घर में डुग्गी पीट दी गयी। कि लोग मट्ठा महकर सबेरे चलें। मंजरी ने अपनी सास से कहा—मेरी सास, सुनिये, ज़रा आप कहीं से थोड़ा मट्ठा खोज लाइये। आधे आधे मुनाफ़े पर मट्ठा लाइये। जब बोहा से मैं अधिक पैसे लाऊँगी तो पैसे में आधा-आधा बाँट लेंगे। बिक्री में आधा हमारा होगा। बाल बच्चों के साथ हम दरवाज़े पर बना कर भोजन

करेंगे। सबेरे बहुत तड़के अहीरिनें घर घर में मट्ठा मह रही थीं। मंजरी सबेरे जाकर एक बर्तन उठा लायी और उसे अपने घर में रख लिया। सब लोगों ने हाथ मुँह धोया, कुल्ला किया, जलपान किया। सभी ग्वालिनें दूध, मट्ठा, दही तथा मक्खन लेकर बोहा चलीं। नदी पर पहुँच गयीं। लोरिक कुर्सी पर बैठा हुआ था, गोपियों का हाल देख रहा था। सभी मट्ठा ले लेकर पार जा रही थीं। पहले सभी ग्वालिनें चढ़ गयीं। मंजरी भी ऊँचे बैठ गयी। उस समय वीर मर्द लोरिक ने सिपाहियों से कहा—आगे से गोपियों में दस को छोड़ दो तथा पीछे से पाँच को छोड़ दो। बीच में जो चिड़िया है उसका मट्ठा उठा लाओ।

अब वहाँ का हाल सुनिये। सब लोगों का मट्ठा ले लिया गया। सब का मट्ठा बिक गया। मंजरी ने अपनी डाली उतारी चार चार अंगुल का पैबंद पहने हुए वह घूम रही थी। वह चारो ओर घूमने लगी। तब वेश्या चनैनी ने कहा– ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनंदन, ऐ मेरे मुकुट, मैं क्यों न इस गोपी का मट्ठा ले लूं और दाम दे दूँ। लोरिक ने कहा -नीचे सोना या द्रव्य रख दो तथा ऊपर रोकड़ रख दो। उसके ऊपर चावल रख दो। मिट्टी का बर्तन निकालकर उसमें अच्छा बर्तन रख दो। गोपी ग्वालिन वहाँ आयेगी। अपनी डाली उठा ले जायगी। चनवा ने डाली में पर्याप्त चावल भर दिया, सोलह प्रकार के द्रव्य उसमें रख दिये। फिर उसके ऊपर दस पाँच सेर चावल भर दिया ताकि द्रव्य छिप जाय। अपनी डाली लेकर मंजरी ने बेवरा नदी के पार गयी। केवट ने उसे पार उतार दिया। सभी ग्वालिनों ने आगे जाकर आपस में परामर्श किया कि एक दूसरे की टोकरी और बिक्री को देखें। सब ने अपनी टोकरियाँ उतारीं और जाँच पड़ताल शुरू हुई। जब मंजरी की डलिया देखी गयी, और चावल में हाथ डाला गया तो उसमें से सोने के रुपये मुट्ठी में निकले। जब टोकरी में झंकार हुई तब गोपियों ने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने भाग्य में क्या लिख दिया। मंजरी ने इतने दिनों तक अपना सत कायम रखा पर बोहा में जाकर उसने अपना सत गंवा दिया। सभी ग्वालिनें गउरा चली आयीं। मंजरी को पास से जाकर देखने लगीं। उसके घर में लोरिक का जन्म हो चुका था। उसकी गोद का लड़का अभी छोटा और कोमल था। बुढ़िया खोइलनि नाती को टाँगे हुए थी। तब तक ग्वालिनें बोहा से वहाँ पहुँच गयीं। बुढ़िया खोइलनि से वे कहने लगीं— मंजरी ने इतने दिनों तक सत रखा। आज बोहा में जाकर उसे गंवा दिया। जब बुढ़िया खोइलनि ने यह सुना तो हाथ में कोरा बाँस लेकर मंजरी को खदेड़ा। सहदेव की बेटी जिसका नाम दावन मंजरी था, बोली—सास, यदि तुम्हारा मन ऐसे नहीं मानता तो तुम कड़ाही चढ़ा दो। उसमें बिक्री का सारा धन रख दो, सारा रोकड़ रख दो। यदि मैंने सत गवाँ दिया है तो मेरा हाथ उसमें जल जायेगा। अगर मुझमें सत है, सत्पुरुष का सत्य है तो (खौलती) कढ़ाही से मैं सारा धन निकाल लूंगी। खोइलनि ने कड़ाही चढ़वा दी। उसमें

बिक्री वाली सारी चीज़े छोड़ दी गयीं। कड़ाही की पेंदी में आग तेज़ हुई। उसमें दो एक रुपये फेंक दिये गये। मंजरी कड़ाही की ओर झुकी। उसने कहा—'हे देव हे नारायण, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया। यदि मैं एक ही बाप की बेटी हूँ, यदि एक ही पुरुष की स्त्री हूँ। यदि उसके सत धर्म पर स्थिर हूँ तो मैं रुपये निकाल लूं।' मंजरी ने कड़ाही में हाथ डाल दिया। रुपयों की खोज की। उसके हाथ में दाग नहीं लगी। सभी ग्वालिनों का मन उदास हो गया। खोइलनि ने फिर मट्ठा ला दिया। मंजरी को फिर बोहा भेज दिया। सारी ग्वालिनें चलीं, मंजरी पीछे पीछे चली। दूसरे दिन जब बेवरा का तट आया तो आधी-तिहाई ग्वालिनें उस पार चली गयीं। अहीर ने केवट से कहा—तुम मेरी बात सुनो। तुम सभी ग्वालिनों को पार उतारो जो सबसे पीछे आ रही है, उसको पार मत उतारो। जब वह नाव पर अपनी टोकरी रखे तो तुम उसे ज़मीन पर उतार दो। उसको नाव पर मत चढने देना। वह अपनी टोकरी पार न लाने पावे। अहीर लोरिक ने यह बात वहाँ कह दी। भीमली नाव इस पार खेने लगा। जब मंजरी नाव पर बैठ गयी तब उसका हाथ पकड़ कर नाव से उतार दिया। उसने कहा—मैं तुझे पार नहीं करूँगा। राजा की आज्ञा है। मंजरी रोने लगी। रक्त के आँसू गिराने लगी। आज बहुत दिनों पर शुभ-लक्षण दिखाई पड़ रहे थे। पर दुख ने ऐसा पीछा कर लिया है। शरीर पर ग्रह अभी लगा हुआ है। मंजरी रो रही है, और अपने सत का सुमिरन कर रही है। कह रही है—'मैं गउरा की गउराइनि का स्मरण करती हूँ, बोहा की भवानी दुर्गा का स्मरण करती हूँ जो सब दिनों की पूजमान हैं। यदि मेरे अंदर 'सत' शेष है तो मैं नदी पार कर जाऊँ।' उस समय दुर्गा प्रगट हुईं। बीच में उन्होंने कंकालों का दो दल खड़ा कर दिया। नदी की धारा दोनों ओर रुक गयी। मंजरी टोकरी लेकर बोहा में चली गयी। जैसे ही उसने मट्ठा उतारा, लोरिक के सिपाही छूटे। कहा—तुम अपनी टोकरी लिये चलो। मालिक तुम्हारा मट्ठा रोज रोज खायेंगे। मंजरी ने कहा—भइया सिपाही सुनो। मेरे एक छोटा लड़का है। उसने हाथ में रोटी लेकर उसको इस टोकरी में गिरा दिया है। यह मट्ठा राजा के योग्य नहीं है। तुम दूसरी ग्वालिन का मट्ठा वहाँ ले जाओ। बहुत कहने पर वह बात मान गयी तथा बुलावा मान कर चलने को तैयार हो गयी। आगे आगे राजा के सिपाही चले। पीछे से इधर उधर नज़र दौडाती हुई मंजरी चली। उसने दरवाज़े पर मट्ठा रख दिया फिर पीछे हट गयी। इधर लोरिक का हाल सुनिये। नीचे बिजली की तलवार रखी हुई थी उसने उसे द्वार पर लटका दिया।

अब वहाँ का हाल देखिये। बीर लोरिक ने चनवा से कहा—विवाहिता, उस मंजरी से बात कर लो। सूबा उसका मट्ठा खरीदेगा। मंजरी ने विनम्रता पूर्वक कहा—वेश्या, मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस, मुझे यह बिजली की तलवार मिल जाय। वह अपने मन में झंख रही थी। जैसी हमारी बिजली की तलवार थी वैसी ही यह तलवार है। शायद इस सूबे से मेरे स्वामी की लड़ाई हुई। उसने मेरे पति को

जबर्दस्ती मार डाला। उनकी हड्डी और मांस को ले लिया। नम्रता पूर्वक तब लोरिक ने कहा—ग्वालिन सुनो। तुम इस तलवार को उतार कर ले जाओ। मंजरी उसी क्षण तलवार के पास गयी। हाथ में बिजली की तलवार लेकर वह अलग जाकर खड़ी हो गयी। उसने कहा—ऐ पूर्वी राजा, मैं बोहा में लकड़ी जुटाऊँगी फिर बेवरा के तट पर उसे सजाऊँगी। बेवरा में स्नान करूँगी। यदि मैं एक बाप की बेटी हूँगी। यदि एक पुरुष की स्त्री हूँगी तो हे ब्रह्मा, तुम सरजू से संगरा नामक लकड़ी छोड़ देना। मैं उसे लेकर सती हो जाऊँगी। लोरिक इधर माँ दुर्गा का स्मरण कर रहा था। कह रहा था—दुर्गा, सुनिये। मेरी विवाहिता चिता पर चढ़ रही है। आप ऐसी शक्ति बढ़ा दीजिए कि मेरी विवाहिता जलने न पावे। इतना कह कर लोरिक ने नदी पर चिता सजवा दी। उसी समय मंजरी ने तलवार लेकर बेवरा नदी में गोता लगाया। उस दिन केवट भीमलिया रोने लगा। रो रोकर मंजरी के पैर पकड़ने लगा। तुम मेरी आजीविका छोड़ दो।

भावार्थ—(३०१—६०२)

केवट ने कहा—मुझसे गलती हो गयी। किसी के कहने से तुम्हारे साथ मैंने ऐसा व्यवहार किया है। मैं तुम्हें विपत्ति में नहीं डालना चाहता था। राजा ने बोहा में हुक्म दिया। तभी मैंने नाव को उस पार नहीं किया। उसने मंजरी से कहा—यदि मेरे बाल बच्चे मर गये तो तुम्हें कितना पाप लगेगा। मैं मालगुजारी कैसे दूँगा? इधर चिता की आग सुलग गयी। मंजरी उसमें छिप गयी, प्रवेश कर गयी। वेश्या चनवा ने जब यह देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गयी, दाँतों तले अंगुली दबाने लगी। कहने लगी—हे दैव, हे नारायण, तुमने मेरे ललाट में क्या किया, क्या लिख दिया? जिसकी विवाहिता जल रही है और जिसके हृदय में तनिक भी दर्द नहीं है, उसकी दृष्टि से हमारी अपहृता की, उढ़ारी हुई स्त्री में क्या गिनती है? हे दैव, हमारी पूछ कौन करेगा? लोरिक वहाँ से कूदा और जाकर उसने मंजरी की कलाई पकड़ ली। उसने ठोकर मारी तथा आग इधर उधर बिखर गयी। मंजरी को लेकर वह तम्बू में प्रवेश कर गया। वहाँ जाकर उससे हाल चाल पूछने लगा। मंजरी ने कहा—हे दैव, हे नारायण, तुमने मेरे माथे में क्या लिख दिया। कल खोइलनि ने मेरे ऊपर विश्वास नहीं किया। आज बोहा में भी ऐसी नौबत आयी। कल से ही राजा उसके पीछे पड़ा हुआ था। आज वह उसको तम्बू में ले गया। बोहा से ग्वालिनों ने जाकर खोइलनि को यह बात बतायी। कल की सी बात आज भी हुई। गुण्डा मंजरी का शरीर खरीद ले गया। तम्बू में वह दिखाई नही पड़ी। न जाने वह किस गाँव, किस मुल्क में चली गयी। जब उन्होंने खोइलनि से यह बात कही तो खोइलनि ने नम्रतापूर्वक कहा। हमारा नाम गीदड़ हो गया है। हमारा यह छोटा बच्चा परेशान है। लड़के को लेकर बुढ़िया खोइलनि अजई के घर गयी। कहा—बेटा अजई सुनो। बोहा में लोरिक की

बहू हर ली गयी। उसका कुछ पता ठिकाना नहीं है। जब भइया लोरिक यहाँ नहीं हैं तो ऐरे गैरे सभी लोहा ले रहे हैं, लड़ाई कर रहे हैं। लोरिक के बल पर तुम्हारे गदहे उपद्रव किया करते थे। उसकी विवाहिता बोहा में हर ली गयी है। उसका तुम पता लगाओ। शायद कभी अहीर फिर लौटे। तुमसे दो चार बातें पूछे, हाल चाल पूछे। तब तुम कौन सी बात, किसके झगड़े की बात बताओगे। तुम कैसे बताओगे कि ऐ चेला, तुम्हारी विवाहिता हर ली गयी है। खोइलनि की इस बात पर अजयी थू थू करने लगा। ऐ बुढ़िया मैं बोहा में नहीं जाऊँगा। तुम्हारे कार्य का ध्यान नहीं करूँगा। मैं दौड़कर सागर पर गया था। फिर सारा बोहा उजड़ गया। कोलों ने तीर मारा मैं वहाँ से गउरा भाग आया। घर पर मैंने बाण निकलवाया, छः महीने तक हमें गाय का दूध पीना पड़ा। धोबी इतना कह रहा था पर मन में यह सोच विचार कर रहा था, हे देव, हे नारायण, मैं मर्द क्या हुआ! यदि चेला लोरिक गउरा लौट आया तो मैं उसे अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा? जिसकी विवाहिता हर ली गयी है, उस चेले को कौन सा जवाब दूँगा। तब अजई ने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मेरी पत्नी बिजवा, मेरी बात सुनो। सारा हाल सुनकर धोबिन ने नम्रता से कहा—सैंया, तुम व्यर्थ में मर्द हुए। तुम औरत का वेश धारण कर लो, मेरा पोशाक लेकर पहन लो मैं सांसड़ बोहा में जा रही हूँ। मैं अपनी देवरानी का पता लगाऊँगी। फिर गउरा गांव आऊँगी। अजयी ने अपना पोशाक छोड़ दिया, धोबिन की साड़ी पहन ली और घर पर बैठ गया। धोबिन ने गोरे बदन पर अंगरखा और पैजामा डाल लिया। हाथ में मजबूत डंडा लिया वह ब्यालिस हाथ उछल पड़ी। जब वह गांव के बाहर निकली तो वहाँ सेमल का एक पेड़ मिला। तेजी से कूदकर बिजवा ने सेमल के पेड़ पर वार किया। पेड़ टूट कर गिर पड़ा। धोबी के कानों में आवाज़ पड़ी। उसी समय वह घबराकर बाहर निकला। साड़ी फाड़कर उसने उतार दिया। जाकर उसने बिजवा को हाथ जोड़ा। फिर बोला—विवाहिता, मेरी बात सुनो। तुम मुझे मेरा पहनावा दे दो। मैं जाकर सब कुछ पता लगाऊँगा। स्त्री जाति होकर जब तुम रण जीत कर आओगी तो मेरे वंश का नाम डूब जायेगा धोबी वहाँ से चला। झरिया मैदान के पास गया। वहाँ हाथी, घोड़े तथा भेड़ें चरती थीं और जाकर सभी झरने में पानी पीते थे। अजयी गायों की आड़ में गया। फिर एक खोखले पेड़ में जाकर छिप गया। प्रातःकाल हुआ। झुटपुटे में कौवे शोर मचाने लगे। हाथी और घोड़े फिर बोहा में छूटे। अजयी ने अपनी बर्छी (शाल) लेकर घोड़ों की पूँछ काट दी। ऊँटों के दोनों कान काट दिये। हाथियों के भी पेट और कान काट दिये। हाथी ऊँची चढ़ाई पर जाते थे पर वहाँ तो एक घड़ी में विध्वंस शुरू हो गया। लोरिक के पास यह शिकायत पहुँची। मालिक, सुनो। बोहा में केवल तुम्हीं शक्तिशाली थे। तुमसे अधिक शक्तिशाली कोई दूसरा नहीं था। न जाने कहाँ से एक और शक्तिशाली आकर यहाँ टिक गया है कि हाथी और घोड़ों का संहार हो गया है। सूंड़ और कान के बिना हाथी और घोड़े क्षत विक्षत होकर भाग गये हैं। तब वीर लोरिक हाथ में तलवार लेकर वहाँ से चला। वह बोहा

में घूमने लगा। घूमघूमकर घड़ी घड़ी वह गायों को देखता था। उसने कहा—ऐ बाँके लड़ाके, सुनो। तुम मैदान में निकल आओ। जब गुरु अजयी ने यह सुना तो वह खोखले पेड़ से खड़खड़ा कर निकल आया। दोनों में पैंतरेबाजी होने लगी। दोनों एक दूसरे पर वार करने के लिए पास आये। तब गुरु अजयी ने कहा—राजा तुम मुझे मारो जितनी शक्ति हो, तुम लगाओ। तब अहीर ने दुहराकर कहा—राजा तुम मेरी बात सुनो। मैं पहले चोट नहीं करूँगा। पीछे मैं कुछ उठा भी नहीं रखूँगा। मुझे अपने पशुओं को शपथ है। यदि मैं पहले आक्रमण करूँगा तो गाय मारूँगा। अजयी यह सुन रहा था और अपना चक्र फेंकता जा रहा था। लोरिक बच गया तो अजयी उसके पास पहुँचा। लोरिक ओड़न का प्रहार रोक रहा था। जब पहली चोट लगी तो भय से काँप गया। उसने अजयी से कहा—भाई मैं चारों ओर घूम आया। ऐसी चोट किसी ने नहीं की। ऐसी चोट मेरा गुरु अजयी ही करता था। दुनिया में और कोई ऐसी चोट नहीं कर सकता था। जब गुरु अजयी ने यह बात सुनी तो उसने अपना डण्डा खींचकर हटा लिया। दोनों गले मिल कर रोने लगे। लोरिक ने उससे नम्रता पूर्वक पूछा—गुरु अजयी तुम्हारा आक्रमण इतना जबर्दस्त है फिर सरदार संवरू कैसे जूझ गये ? अजयी ने तुरन्त जवाब दिया। चेला, संवरू ने गुहार की थी। मैं युद्ध में खड़ा हुआ। पर जब कोलों ने तीर चलाये तो उससे कलेजा बिंध गया। मैं किसी प्रकार घर आया, तीर निकाला। खाने पीने से, गुड़ घी के सेवन से किसी प्रकार जान बची। लोरिक ने कहा—गुरु अजयी मेरी बात सुनो। मेरे सम्बन्धी, हाथ पाँव सहायक कहाँ हैं ? गुरु अजयी ने बताया—चेला, नन्हुवाँ जो तुम्हारा चरवाहा था और तुम्हारी लक्ष्मियों की देखभाल करता था, वह गउरा की गली में है। और वह भड़भूजे के यहाँ भाड़ झोंक रहा है।

अब लोरिक का हाल सुनिये। प्रातःकाल बहुत सबेरे उसने नौकरों और सिपाहियों को गउरा जाने का आदेश देकर कहा कि गउरा की गली में भड़भूजे के यहाँ जो नौकर भाड़ झोंक रहा है उसे जा कर कह दो कि जो पूर्वी राजा यहाँ आ कर टिका हुआ है उसने तुम्हें बुलाया है। सिपाही वहाँ छूटे तथा भड़भूज के दरबार में गये।

अब भड़भूजे का हाल सुनिये। उसने सिपाहियों को समझा कर कहा—मैंने नान्हूँ को जिलाया है। तुम्हारी बातें हमारे कलेजे में लग रही हैं। चाहे कोई भी राजा बुलावे, इनको हम बोहा में नहीं जाने देंगे। जब उसने ऐसा कहा तो सिपाहियों ने नन्हुवाँ को जबर्दस्ती पकड़ लिया। उसे खींच कर बोहा ले जाने लगे। चरवाह नान्हूँ बोहा से तम्बू में गया जहाँ अहीर लोरिक था। लोरिक सामने पड़ गया। नान्हूँ देखते ही उसको पहचान गया।

अब चरवाहा का हाल सुनिये। उसकी आँखें लोरिक पर टिक गयीं। लोरिक उठा। तुरन्त प्रश्न करने लगा। कहने लगा 'नान्हूँ चरवाह, मेरी बात सुनो। घर

का कुशल मङ्गल कहो। घर के लोग कैसे हैं। नान्हूँ ने नाराज हो कर कहा—'मेरे बहनोई लोरिक सुनो। मैं जिस दिन से बोहा में टिका हूँ, बड़ी बड़ी यातनाएँ सहनी पड़ी हैं। मैं दूध और मट्ठा खाया करता था अब अन्न का पानी (धोवन) मेरे लिए हराम हो गया है। देश में जब कोई काम नहीं मिला तब मैं भड़भूजे का भाड़ झोंक रहा हूँ। तब मर्द लोरिक ने कहा—तुम पिपरी चले जाओ और पता लगा लाओ कि गायें कैसी हैं ? कितनी गायें बची हैं ? चरवाह नन्हुँवा ने कहा—बहनोई, मेरी बात सुनो। जब हम दो आदमी पीपरी कोलों के घर जायेंगे तो वे हमें पहचान कर मार डालेंगे। नान्हूँ ने कहा—ऐ लोरिक, तुम घर जाओ। तुम्हारी जो एक विवाहिता पत्नी है, उससे भेंट करो। जब वह स्वामी को पहचान नहीं पायेगी, तब समझना कि कोल चंड़ार तुम्हें पहचान नहीं सकेंगे। नान्हूँ चरवाह पीपरी चला। तेजी से रास्ता नापा, पीपरी पहुँचा, गायों के अड़ार गया जहाँ कोल-चंड़ार रहते थे। वह गायों के अड़ार पर बैठ गया। देवसिया ने नान्हूँ का रूप देखा और उसे थोड़ा थोड़ा पहचान गया। लगता था वह अहीर के वर्ग का है, गउरा से आया है, अहीर की पीठ का है। देवसिया ने मन में कहा—इससे स्पष्ट रूप से पूछें। (५८५ से ६०२ तक पाठ में पुनरावृत्ति है)।

भावार्थ—(६०३—८००)

अब नन्हुवा का हाल सुनिये। उसने नम्रतापूर्वक कहा—मेरे ऊपर बहुत मार पड़ी, विपत्ति पड़ी। मैं गउरा में गायें चराया करता था। दोनों समय दूध खाता था। अब मेरे लिए मट्ठा सपना हो गया है। सारी गायें चली गयी। मेरा जीवन दूभर हो गया है। मैंने कहा अब पीपरी चलूंगा। कोलों का साथ करूंगा, गायों का दूध पीऊँगा।

अब देवसी का हाल सुनिये। उसने कहा—'ऐ नान्हूँ चरवाह, तुम मेरी बात सुनो। तुम जाति पांति में रहते तो पीपरी में रहते। तुम्हारा दल अहीरों का है। हमारा दल कोलों का है।' तब नन्हुँवा ने नम्रता से कहा—देवसी मेरी बात सुनो। मैं जाऊँगा नहीं। मैं यहीं कोलों में रहूँगा। उसने जमा कर बात कही। मैं कोल-चंड़ार हो कर रहूँगा। मैं गायों का दूध दोनों वक्त पीऊँगा। कोलों ने नान्हूँ को वहाँ स्थान दे दिया। उन्होंने आपस में कहा—जा कर भट्ठी से शराब लाओ नान्हूँ को जाति-पाँति में मिला लो। समय तय हो गया। कोलों ने दिन निश्चित कर दिया। उन्होंने भट्ठी चढ़वा दी। सभी कोल वहाँ पहुँचे। शाम को अलाव पर सभी बैठे। दोने में भर भर कर दारू पीने लगे। नान्हू भी पास में बैठा हुआ था, दोना लिए हुए थे। वह दारू अलग रख देता था तथा दाँत से दोना पकड़े हुए था। यह झूठमूठ मुँह में दोना लगाये हुए था। दारू पीने से व्यक्ति नर्क में जाता है। नान्हूँ ने कहा—चौधरी, मेरी बात सुनो। तुम लोग भोजन परोसो। फिर मेरा भोजन होगा। नान्हूँ

ने बोतल लिया और कोलों के बर्तन में दारू उड़ेलने लगा। कोलों ने पहले पीया। अलाव के पास वे शोर करने लगे। कुछ इधर लेट गये, कुछ उधर गिर पड़े। नान्हूँ उठा। उसने खोद कर आग को और तेज कर दिया। कोलों का मुँह पकड़ पकड़ कर उन्हें अलाव के पास कर दिया। बहुत से कोल जल गये। नान्हूँ वहाँ से अड़ार पर आ गया जहाँ कल्याणी गाय थी। उसने गाय से कहा—गाय सुनो। तुम्हारा सेवक यहाँ आया हुआ है, बोहा के बीच टिका हुआ है। उसने मुझे यह जानने के लिए पीपरी में भेजा है कि यहाँ कितनी गायें हैं।

कल्यानी गाय ने कहा—'नान्हूँ मेरी बात सुनो।' कोलों के जितने सम्बन्धी थे, उन्होंने गायों को नाथ कर यहाँ हँकवा दिया। कोलों की बेटियों का गौना है। लड़कियों के गौने की शुभ घड़ी सातवें दिन है। उनका एक साथ गौना होगा। सारी गायें एक साथ चली जायेंगी, बिखर जायेंगी। फिर सरदार लोरिक क्या करेगा? हम लोगों का मालिक पीपरी में बाद में आकर क्या करेगा? नान्हूँ वहाँ से उसी क्षण रवाना हुआ, बोहा का रास्ता पकड़ा। और वहाँ आ पहुँचा।

अब लोरिक का हाल सुनिये। वह कुर्सी पर बैठा हुआ था। नान्हूँ उसके पास जा कर बैठ गया। उसने कहा—बहनोई लोरिक सुनो। गायों ने यह बात कही है कि कोलों ने मुहूर्त निश्चय किया है। वे गायों को दहेज में दे देंगे। आज से सातवें दिन कोल गायों को इधर-उधर कर देंगे। जब नान्हूँ चरवाह ने यह बात कही तो लोरिक निराश हो गया। उसने दो नाइयों से नान्हूँ की दाढ़ी और नाखून काटने के लिए कहा। एक ने बँगला शैली में उसका बाल काटा। उसके लिए सारा सामान तैयार हुआ। उसको जोड़े की धोती मिली! देह के लिए कुर्ता और कमीज मिली। उसका शृंगार बन गया। वीर मर्द लोरिक ने कहा—नान्हूँ तुम बोहा में बैठे रहो। मैं जा कर गायों को लौटा लाऊंगा। तब मेरे परिवार की प्रतिष्ठा रहेगी। उसने मंगर को सोने की झूल से सजा दिया। सोने का उसका लगाम लगा दिया। सोने का कवच पहना दिया। स्वयं पगड़ी पहनी जिसमें कलंगी लगी हुई थी। अपने पैरों के शृंगार भी उसने पहन लिये। फिर घोड़े के सिर पर बारह तारों की मोतियों की झालर सजा दी। उसके पैर में नूपुर बाँध दिये। सूर्य की ओर देखा जा सकता है पर घोड़े की ओर नहीं देखा जा सकता। आधी रात ढल जाने पर घोड़ा पश्चिम की ओर तेजी से भागा। फिर मंगर आसमान में उड़ा। लोरिक हवा खाने लगा, हवा में उड़ने लगा।

अब पीपरी का हाल सुनिये। वहाँ ककरउवां कोल आराम से सो रहा था। तब उसकी पत्नी बिरिन्हिया ने कहा—स्वामी मेरी बात सुनो। मैं महल में सोते हुए अजीब सपना देख रही हूँ। लगता है जैसे अहीर पूर्व से लौट आया है। उसका घोड़ा आकाश में नाच रहा है। कोलों ने तीर और धनुष उठा लिया है। घोड़ा टाप मारते हुए आकाश में उड़ रहा है। उसको लेकर लोरिक पीपरी में गिरा है। वह बिरन्ही

से कह रहा है—बिरन्ही तुम सुनो। मैं पूर्व से, हल्दी से यहाँ आ गया हूँ। मेरे गाँव गउरा में विपत्ति पड़ी है। मैंने सम्पत्ति और विपत्ति का भोग कर लिया है। बिरन्ही माता मेरा कहना सुनो। मैं दूध और घी का खाने वाला हूँ। मेरे लिए अब मट्ठा भी सपना हो गया है। मेरा जीवन अकेला है। मैं कोलों से मिल कर रहूँगा। दूध आदि खाऊँगा।

मैंने ऐसा सपना देखा है। उसने हमारा मकान छुड़वा दिया है। बाण संधान हो चुका है। घोड़ा लेकर लोरिक पीपरी में आ गिरा है। मैं आँगन में खड़ी हूँ। तब बिरन्ही ने कहा है—भैया मेरी बात मानो। तुम्हारी जाति अहीर की है तुम अपनी बुद्धि से काम लो। हमारी जाति बेवकूफ कोलों की है। तब लोरिक ने होशियारी से यह बात कही है। भाई कोल चंड़ारों, यह बात सुनो मैं अपनी जाति पांति वापस ले लूंगा। मेरा जीवन बचा हुआ है। बिरन्ही को उसकी बात पर विश्वास हो गया है। अहीर बच गया है, पीपरी गाँव में युद्ध के लिए आ गया है। वह गायों पर पहरा डाल देगा। लोरिक नम्रता पूर्वक कह रहा है। बिरिन्हिया सुनो। मैं तुम्हारे हाथ में आ गया हूँ। घोड़े को तुमने मरवा दिया है तुम उसको जीवित कर देती तो उसे पीपरी में बँधवा देता। यदि कहीं गाढ़ी मुसीबत पड़ जायगी तो मैं अपना काम निकाल लूंगा। जब अहीर ने यह बात कही तो बिरिन्हिया बोल उठी। कानी अंगुली में अमृत है। वह अमृत घोड़े पर छिड़क रहा है। जब घोड़े की नाक में अमृत पड़ गया तो घोड़ा फिर खड़ा हो गया। वह पीपरी में थिरक उठा।

अब अहीर आँगन में खड़ा है। बिरिन्हिया से कह रहा है—मुझे ऐसी प्यास लगी है कि मेरा कलेजा दुख रहा है। तुम ज़रा मुझे ठण्डा पानी का घूंट पिला दो ताकि मेरा शरीर शीतल हो जाय। वह गगरा (घड़ा) और रस्सी लेकर कुँए की जगत पर गयी। गगरा को ज़मीन से छोड़ा और आवाज़ हुई तो अहीर कुँए पर पहुँच गया। उसने जमा कर बात कही—पानी कितना नीचे है? कितनी गहराई में है। उसने छोटी गड़ारी (घिरनी) से घड़ा डुबाया। लोरिक ने अपनी बिजली की तलवार खींची। फिर तलवार बिरिन्हिया पर गिर पड़ी। उसकी गर्दन कुँए में चली गयी। उसका धड़ जगत पर गिर पड़ा। अहीर वहाँ से चला और उसने गायों को खोल दिया उन्हें पीपरी से बाहर कर दिया। पीपरी सोने की थी। कोलों ने उसे मिट्टी से पाट दिया था। वहाँ समर की तैयारी होने लगी अहीर ने गायों के पैर खोल दिये। वे पीपरी से दौड़ीं और गाँव की सीमा पर पहुँच गयीं। पीपरी में आग लग गयी। वहाँ का देवसी जंगल में शिकार खेलने गया था। बारह मन का सुअर मार कर उसने उसे कन्धे पर लटका लिया था। उसने पीपरी में धुँवा उठते देखा तो वह झंखने लगा। क्या बिरिन्ही मर गयी है और उसको चिता पर रख दिया गया है। या अहीर पूर्व से लौट आया है जिसने युद्ध करके आग लगा दी है। पीपरी जल रही है। उसने सूअर को रास्ते में पटक दिया। फिर आगे बढ़ गया। पशुओं को आगे से रोक

मूलपाठ की नामानुक्रमणिका

□ □

संक्षिप्त पुस्तक सूची

उपाध्याय, कृष्ण देव :

भोजपुरी ग्राम गीत—(भाग १, २) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् २००० ।

उपाध्याय, कृष्ण देव :

भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी १९६० ।

गुप्त, माता प्रसाद :

चांदायन—प्रामाणिक प्रकाशन आगरा, १९६८ ।

चतुर्वेदी, परशुराम :

भारतीय प्रेमाख्यान—भारती भण्डार, इलाहाबाद १९६५ ।

सूफी काव्य संग्रह—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

तिवारी, उदयनारायण :

भोजपुरी भाषा और साहित्य—बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना १९५८ ।

तिवारी, नित्यानंद :

मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १९७० ।

त्रिपाठी, रामनरेश :

कविता कौमुदी—(भाग ५) हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद १९२९ ।

परमार, श्याम :

भारतीय लोकसाहित्य—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५४ ।

पाण्डेय, त्रिलोचन :

कुमाऊँनी लोकसाहित्य की पृष्ठ भूमि—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद १९७९ ।

पाण्डेय, वैद्यनाथ तथा शर्मा राधावल्लभ :

अंगिका संस्कार गीत—बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना १९६८ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान—इलाहाबाद, (द्वितीय संस्करण) १९८२ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

लोकमहाकाव्य चनैनी—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद १९८२ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

लोकमहाकाव्य लोरिकी—साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद १९७९ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :
सूफी काव्य विमर्श—विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा १९६८।

राकेश, राम इकबाल सिंह :
मैथिली लोकगीत—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् २०१२।

सक्सेना, बाबूराम :
अवधी का विकास—प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी।

सत्येन्द्र :
जाहर पीर-गुरु गुग्गा हिन्दी विद्यापीठ, आगरा १९५६।

सत्येन्द्र :
ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन—साहित्य रत्न भण्डार, आगरा १९५०।

सत्येन्द्र :
लोकसाहित्य विज्ञान—शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा १९७१।

सिन्हा, सत्यव्रत :
भोजपुरी लोकगाथा—हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद १९५८।

श्रीकृष्ण दास :
लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद संवत् २०१३।

□ □

A Selected Bibliography

Abraham S. D. Roger and Foss George.
Anglo American folksong style :
New Jersey, Prentice Hall inc, 1966.

Barber, Richard.
The Knight and Chivalry :
London, Sphere books Ltd. 1974.

Beck Brenda E. F.
The Three Twins :
(The Telling of a South Indian folkepic) : Bloomington, Indiana University Press, 1982.

Biebuyck, Daniel and Matteene Kahombo.
The mwindo epic :
From the Banyanga, Congo Republic, Berkley, University of California Press, 1971.

Bowra, C. M.
Heroic Poetry :
London, Macmillan and company Ltd. 1964.

Chadwick, H. M.
The Heroic Age :
Cambridge, Cambridge University Press, 1975.

Chadwick, H. M., Chadwick Norak.
The Growth of Literature (3 volumes) :
Cambridge, Cambridge University Press, 1968.

Child, Francis James.
The English and Scottish Popular Ballads (5 volumes) :
New York, Dover Publications, 1965.

Dan Ben Amos and Kenneth S. Goldstein.
Folklore :
(Performance and Communication): the Hague, Mouton 1975

Deg, Linda.
Folk Tale and Society :
(Story telling in a Hungarian peasant community) : Bloomington, Indiana University Press, 1969.

Dorson, Richard M.
African folklore :
Newyork, Anchor books, 1 972.

Dorson, Richard M.
Folklore :
(Selected Essays) : Bloomington, Indiana University Press, 1972.

Dundes, Alan.
Essays in Folkloristics :
Meerut, Folklore Institute, 1978.

Dundes, Alan.
The Study of Folklore :
Englewood, Cliffs, N.J. Prentice-Hall, inc. 1965.

Edmonson, Munro S.
Lore :
(An Introduction to the Science of Folklore and Literature)
Newyork, Holt Rinehart and Winston, Inc. 1971.

Emeneau M. B.
Toda songs :
Oxford, Clarendon Press, 1971.

Finnegan, Ruth.
Oral Literature in Africa :
Oxford, Clarendon Press, 1970.

Finnegan. Ruth.
Oral Poetry :
(Its Nature, Significance and Social Context) Cambridge, Cambridge University Press, 1977.

Ghosal, Satyendranath.
Beginning of Secular Romances in Bengali Literature :
Santiniketan, 1959.

Hayes, E. Nelson and Hayes Tanya (ed).
Claude Le'vi-strauss :
(The Anthropologist as Hero) : Cambridge, Massachusetts, 1970.

Henige, David P.
The Chronology of Oral Tradition :
Oxford, Clarendon Press, 1974.

Jacobs, Melville.
The content and style of an oral literature :
Newyork, Viking tund Publications in Anthropology, 1959.

Jakobson, Roman.
Selected Writings :
Vol. IV. The Hague, Mouton and Co. 1966.

Jan Vansina.
Oral Tradition :
Harmondsworth, Middlesex, England, Penguin Books Ltd. 1976.

Kailasapathy, K.
Tamil Heroic Poetry :
Oxford, The Clarendon Press, 1968.

Ker W. P.
Epic and Romance :
(Essays on Medieval Literature) : Newyork, Dover Publications, 1957.

Kunene, D. P.
Heroic Poetry of Basotho :
Oxford, Clarendon Press, 1971.

Levi Strauss, Claude.
From Honey to Ashes :
Translated from the French by John and Doreen Weightman. London, Jonathan Cape Ltd. 1973.

Levi Strauss, Claude.
The Raw and the Cooked :
Translated from the French by John and Doreen Weightman, London, Jonathan Cape Ltd. 1969.

Levi Strauss Claude.
The Savage Mind :
London, Weidenfield and Nicolson, 1974.

Levi Strauss, Claude.
Structural Anthropology :
Translated from the French by Claire Jacobson and Brook Grundfest Schoepf, England, Penguin Books, 1972.

Lomax Alan.
Folksong Style and Culture :
Washington, American Association for the Advanced Science, 1968.

Lord, Albert.
The Singer of Tales :
Newyork, Athenaeum Edition. 1965. Maranda Elli Kongas and Maranda Pierre.

Structural Models in Folklore and Transformational Essays :
The Hague, Mounton, 1971.

Neto, Carvalho.
The Concept of Folklore :
Translated from Spanish by Jacques M. P. Wilson, Florida, University of Miami Press, 1971.

Niane.
Sundiata :
(An Epic of Old Mali) : Translated by G. D. Pickef. London, Longmans Green and Co. Ltd., 1969.

Oinas, Felex J.
Heroic Epic and Saga :
Bloomington, Indiana University Press, 1977.

Pandey, Shyam Manohar.
Abduction of Sita in the Ramayana of Tulsidasa :
Orientalia Lovaniensia Periodica, Leuven, Belgium, 1977, Vol. 8.

Pandey, Shyam Manohar.
Maulana Daud and his Contributions to the Hindi Sufi Literature :
Annali Istituto Universitario Orientale, Napoli. Italy, 1978 (3S—1).

Pandey, Shyam Manohar.
The Hindi Oral Epic Loriki :
Allahabad, Sahitya Bhawan Private Ltd. 1979.

Pandey, Shyam Manohar.
Some Problems in Studying Candayan :
In current research in early bhakti literature, Leuven, Belgium, 1980.

Pandey, Shyam Manohar.
Hindi Oral Epic Canaini :
Allahabad. 1982.

Pandey, Shyam Manohar,
Love Symbolism in Candayan :
In Bhakti in current research. (ed.) Monika thiel Horstmann, Berlin. 1983.

Paredes, Americo and Bauman Richard (Ed.).
Towards new perspectives in folklore :
Austin, the University of Texas Press, 1972.

Parry, Adam (Ed.).
The making of Homeric Verse :
(The collected papers of Milman Parry) : Oxford, 1971.

Parry, M. and Lord A. (Ed.).
Serbo Croatian Heroic Songs :
Vol. I, Massachusetts. Harvard University Press, 1954.

Propp V.
Morphology of the folktale :
Austin, University of Texas, 1971.

Roghair Gene H.
The epic of Palnadu :
(A study and translation of Palnati Virul Katha) : Oxford, Clarendon Press, 1982.

Sen, Sukumar (Ed.)
Vipradas, Manasa Vjiaya :
Calcutta, the Asiatic Society, 1953.

Sidhanta N. K.
The Heroic Age of India :
London, Kegan Paul, Trench Trubner and Co. Ltd. 1929.

Sokolov, Y. M.
Russian Folklore :
Detroit Folklore Associates, 1971.

Thompson Stith.
The Folktale :
Berkley, University of California Press, 1977

Thompson Stith.
Motif Index of Folkliterature :
6 Volumes. Bloomington, Indiana University Press, 1966.

Thompson Stith and Roberts, Warren, E.
Types of Indic Oral Tales :
Helsinki, 1960.

Watts, Ann Chalmers.
The Lyre and Harp :
(A Comparative Reconsideration of Oral Tradition in Homer and old English Epic Poetry), New haven, Yale University Press, 1969.

Wimberly, Lowry Charles.
Folklore in the English and Scottish Ballads :
Newyork, Dover Publications, 1965.

□ □